ठाणांगबा

श्रीवीरं जिननाथं नत्वा स्थानांगकतिपयपदानां ॥ प्रायोन्यशास्त्रदृष्टं करोम्यहं विवरणं किंचित् ॥१॥ अथ तस्य नाम निःक्षेपा
जिहां वस्तुना निःक्षेप समस्त जाणीइ तिहां ते सर्व वस्तुना निःक्षेपा कीजइ अनइ जिहां निःक्षेपा समर्थ न जाणीइ ॥ तिहां च्यारि नि
क्षेपा तो कीजइ जि तिहां नाम अनइ स्थापना सूत्र प्रसिद्ध ॥ अनइ द्रव्य आगम अनुपयुक्त० उपयोग विना सूत्र भणता निकुइ
अथवा पत्र मइ पुस्तकनइ विषइ लिखीउं तेइ द्रव्यश्रुत कहीइ ॥ भावश्रुत ते श्रोत्रेंद्रियनइ विषइ उपयोगसहितनइं जुइ
इहां श्रोत्रेंद्रिय उपयोग लक्षण भावश्रुत तेनउ अधिकार ॥ तथा आउसंतेण जीवितव्य तेना मादि दस भेद दिखाडइ ॥ तद्यथा ॥
नाम १ ठवणा २ दविए ३ उघे ४ भव ५ तब्भव ६ भोग ७ संजम ८ जस ९ कित्ती १० जीवियं च तं सम्मत्तीक्सयत्ता ॥१॥ सचित्तना
दिद्रव्यजीवितव्यना हेतु प्राणी द्रव्यजीवित ॥ ३ ॥ नारकादि भव विना आयुःद्रव्यमात्र सामान्य जीवित ॥४॥ नारकी
दि भव एहवा विशेषसहित जीवित भवजीवित ५ पुर्वे सवलु उत्पन्ना तिणइ तेजि जीवित ते तद्भवजीवित साधुनो संयमजी
जिम मनुष्य मरी मनुष्य थयउ तेहनइ तद्भवजीवित ६ नारकादि भव एहवी विषयग्रस्तहित भवजीवित ५ चक्रवर्त्यादिकनो
गजीवित ७ साधुनो संजमजीवित ८ यशोजीवित ९ अनइ कीर्त्तिजीवित १० यम महावीरनो ॥ इहां संयम आउखानो अधिका
जसकीर्त्ति आउखानउ अधिकार ॥ इहां सुधर्मस्वामी जंबुनाम शिष्यनइ कहइ छइ ॥ सुयं० ॥ सांभल्युं ॥ मे० मइ आउसं० आउखावंतसि

नमोअरिहंताद्वाय सुयं मे आउसं तेणं

यम युक्त प्रसस्त अथवा घणुं जीवइ तेहनइ पोतइ छइ ॥ ते आउखानक० तेहनुं आमंत्रण हे आउखावंतशिष्य ॥ तेणं० जेटलइ काल
सूक्ष्मबादर ॥ बाह्याभ्यंतरिक सर्वपदार्थ निश्चइ ॥ अविघट मानवाक्य करी वीतरागपणइ प्रसिद्ध छइ ते णइ ॥ अथवा पुर्व सर्वन
य हितं तीर्थंकरनामकर्मादि नाणपरमसुखनउ आधार समुद्र जाणइ ॥ विलयइ ॥ गइ ॥ अनादि कालनी संलग्न मिथ्यात्वनी वासना
जेहनी परिहरि रहि मांहा राग जेणइ ॥ देवादिक उपसर्गना समुद्रनो संसर्ग थयो जेहनइ ॥ तउपि पणि ध्यानमार्ग थकउ चल्या नहीं जे ॥
यनी परिघ तथा तीव्र कर्मरूप घन ॥ निविडा ॥ घनं घनः घातिनी पटल० समुहनइ ॥ षट्पद० ~~भ्रमरनो पटल~~ ॥ विध्वंसइ ॥ उत्पन्ना
त० ॥ उदयकं निर्मल केवलरूप सूर्यमंडल जेहनइ ॥ विबुधपति० ॥ इंद्ररूप ॥ षट्पद० भ्रमरनो पटल समुहइ करी ॥ कृत० ॥ सेवु
चरणकमल जेहनुं ॥ मध्यमा नामनगरीनइ विषइ प्रथम तीर्थ प्रवर्त्तावि जेणइ ॥ एहवो पुरुषोत्तम विसेषण युक्त जिन माहावी
रतेणइ ॥ १

भगवता० अष्टमहाप्रातिहार्यरूप सर्व ऐश्वर्य ॥ युक्तं तेणइ भगवंते ॥ एवं० एणइ प्रकारइ माता० कहीसि तिइ किंगातानइ प्रका
रि ॥ आख्यातं० जीवाजीवादि समस्त वस्तुनइ विस्तारि कहिउं ॥ इहां अथ ते० सांभलिउं इम जि कहिउं ते एतला सणा जे अव
धरिउं इजि अनेरा निकाहवाइ ॥ अरा अवधारिउं कहता प्रत्यक्षता पाय० अनर्थ कुड पहवउ गवा सणा ॥ उक्तं च ॥ किं
एत्तो पावयरं ॥ सं मं अत्ता हियं धम्मसब्भावो ॥ अन्नकुदेसणाए कद्दयरागंमि पाडेइ त्ति ॥ वोसा ॥ किस्यो एउपरांत अतिपाप
छइ ॥ ज्य सम्यग वस्तुनु स्वरूप पोतइ न घीजाणुं ॥ अनइ एहवो छतो अनेरानइ कहतउ कष्ट माहि पाडि ॥ इति गाथार्थः ॥ तथा मे०
मइ एतलइ कहिवइ ॥ उपक्रमद्वारनइ विषइ कहिउं जे नावप्रमाणद्वार तिहां आत्मागमादि त्रिविधि दिइं आगम छइ ५ तेह मा
हि एग्रंथ अर्थथकी अनंतरागम अनइ सूत्र थकी आत्मागम इसुं जणावइ छइ आयुष्मन् एहवइ आमंत्रणा करवइ कोमलव
चनइ करी शिष्यनइ प्रह्लाद उपजावतइ ॥ आचार्य उपदेस दीधो इम कहिउं छइ उक्तंच ॥ धम्ममइएहिं अइसुंदरहिं ॥ कार
णगुणोवणीएहिं ॥ पल्हायंतो मणं ॥ सीसं चोदिए आयरिउत्ति ॥१॥ व्याख्या ॥ धर्ममय अतिसुंदर कारण गुणइ करी ५ उपनीत
० सहित एहवइ वचनिकेरी मननइ आह्लाद उपजावतो ॥ आचार्य शिष्यनइ चोदइ० प्रेरइ इति गाथार्थ ॥ आउष्मन् एसए

भगवया एवमक्खायं

अत्यंत आह्लादकारी छइ प्राणनि आउखुं वाल्हा लुं तेसणी हे आयुष्मन् इम कहिउं ॥ अथवा आयुष्मन् एणइ कहेवइ
॥ ग्रहबाधरवादिगुणयुक्त शिष्यनइ सार्थ्यादिक उ इम कहिउं ॥ यसणां सर्व गुणनउं आधार आउखुं छइ ॥ ज्यो ए गुण तिआउ
खाना उपलक्षण छइ तेसणी विरागुल लक्षणगुणइ करी शिष्यनइ आमंत्रणा कीधी ॥ तथा अजोग्यनइ सूत्रार्थ देता दोष ॥ आ
हाच ॥ आयरिए सुत्तंमिय परिवाउ सुत्तअत्थ पलिमंथो ॥ अन्नेसिंपि य हाणी ॥ पुढविणट्ठ वंदावंझति ॥१॥ व्याख्या ॥ अयोग्य
इ अर्थ देतां आचार्यनो अनइ सूत्रनो अपवाद लोकमाहिं थाइ अनइ सूत्र अर्थनो पलिमंथ थाइ ॥ अजोग्यनइ देतां अजोग्यनइ अंतरा
य थाइ ॥ घ पुढी ॥ पुढवी० टटवालीछती पाणिवा रूणी गाइ नदुहइ निम अजोग्य शिष्य पासिं सूत्रार्थ दीजतो गुणइ न वडइ इति गाथा
र्थः ॥ तेणं० तेणइ एक कहिवइ ॥ वीतराग गुणइ प्रसिद्ध तेणइ । एतलुं कहिवइ प्रारंभित अध्ययन सुप्रमाणपणुं कहिउं ॥ त
न्न णं अर्हत वचन सार्वप्रमाणकरइ ॥ भगवता० भगवंतइ एणइ कहिवइ प्रारंभित अध्ययननु ग्रहवा ज्योग्यपणुं कहइ छइ । यस

ठाणांगसू

णी अतिशयवंत अर्थ देवा योग्य छइ अनइ तेहनुं वचन पणि ग्रहवा योग्य छइ ॥ तेसणी अथवा ॥ तेणं भगवता ० तेणइ भगवं
तिइं इमकहिवइ करी ग्रंथनु समस्त्याजन पणउ बताव्यो ॥ तेसणी भगवंत सप्रयोजन बोलइ ॥ पणि निःप्रयोजन नबोलइ ॥
निःफलवाक्य बोलतां भगवंतनुं मनुष्यत्व हाणि थाइ तेसणी एवं ० इम एणइ कहवइ पोताना वचननुं प्रमाणपणुं कहिउं
इ जे सणी कुं सर्वज्ञना वचननइ अनुसारि कहुं छउं तेसणी अतथा एवं ० । इमकहइवइ एकादिगणानी सापेक्षपणुं कह
रिउं ॥ एहकादिगणानिरपेक्ष नथी ॥ एहवी श्रोतानी सकाटाली ॥ आख्यातं ० ॥ कहिउं ॥ एहवइ कहइवइ एतलइ आ
प्ति वचन छइ महांत ऋषिनी वाणी तेआप्तिवचन कहीइ पणि पौरुषेय वचन नथी ॥ सामान्यपुरुषनी वाणी ते पौरुषे
य वचन कहीइ ॥ अथवा आख्यातं भगवता एक हिउं ॥ पणि सीतादिमादिकी नीसरी जे वाणी तेणइ सहुइ ए ग्रंथ
नथी बाधिउं ॥ तेसणी सीतादिमादिकी जे सहु उपजइ ते आप्तवचन कहीइ । अनइ तेहुण सहु विश्वास आणी अंगीका
रनकरि ॥ अनइ एतो ग्रंथ आप्तवचन छइ एहवइ विषइ विश्वास आणी अंगीकरिवो तेसणी पयुंजामि ॥ इत्यादि सर्व वि
देइ करी ॥ पोतानइ उद्धतपणाइ परिहरिवइ गुरुगुणनइ विषइ तत्पर इं ॥ इमासिष्यनइ अर्थदेवाइ सूत्रनी आज्ञा ॥ वत्रं ॥ सु
यंमि ० इत्यादि कहतां गुरुनइ विषइ भक्ति कहइ । अनइ विश्वास फल कहइ ॥ यदुक्तं ॥ तेसीए जिणवराणं ॥ रविसुता
युबसंविया कमा ॥ आयरियनमोकारेण ॥ विद्या मंता या सिद्धि ॥ १ ॥ सुगमाख्यानवरं । रविजतिः हीयतनाइ ॥
अथवी आउसं तेणं ० भगवंतनुं वासस्थेण ॥ आयुष्मता ॥ भगवता ० चिरंजीवी भगवंत निइ । इम कहवइ । भगवंत
नइ बहुमानदीधुं तेरूप मंगलकहिउं ॥ जेसणी भगवंतनइ बहुमानदेवउं ते परममंगल कहइ । तेसणी अथवा आ
युष्मतां ० पराप कार । निमित्तइं प्रसस्त आउखानइ धरणहार ॥ पणि मुक्ति जइ पीतानां लाधनी पीडा दृष्टी वली अवतार
ल्यइ । ते ताइ एनथी कहिउं ॥ जेसणी मुक्ति जईशासननां संसारलंकरिवावली अभिमानथकी आशां आवइं जेवली
हिइ ॥ स्यासननी पीडा देखी ॥ तीर्थनी ससार करिवावली आवी आही अवतार ल्यइ ॥ इमकहितां तेहना दिवनइ रा २
गादि दोष नो

अनइ उन्मीलितउथयो तेसणी तेहनुं वचन साचुं नही ॥ जेसणी निःशेष सर्वनइ रागादि रागादिउ मूलिवइ वलीइहां आववानो संस
वकिहांथकी तेसणी अथवा आयुष्मता प्राणधरवा मउस्वभाव छइ तेणइ ॥ यसणी सदानिर्मलिइं स्थिर हितसिद्धनइ बोलवानो संसव
नथी तेसणी अथवा आवसंतेणं ॥ एसद्दहं मइ एसद्दनुं वित्तसंपणुं छइ ॥ तेअर्थइम क ० गुरुदर्शननी मर्यादाइं करी गुरुकुलवासइ वसत
इ मइ । एहवइ कहिवइ गुरुकुलवासनी मर्यादि वीतीपणइ कहइ एमकहिउं अनइ गुरुकुलवास सेववो अर्थथकी इमजणाव्युं अथवा आउसं
तेणं ॥ भगवंतनां चरणकमल भक्तिथकी करतलयुगलादिकइ करी फरसतां ० फरसतइ एहपणि सद्द मइ । एसद्दनो विसेषणजाणवउं
एतलइ सर्वसाक्षनइ जाणइ पणि इं गुरुवी सामणादि विनयन मुक्तवो एहवो कह्युं अथवा आउसंतेणं ॥ साधुनी मर्यादिकरी गुरुनइ सेव
तइ मइ एतलीच धिइं करी जोग्यस्थानकि रहिवुं गुरुकन्हे सांभलिवुं पणि जिमतिमनही । एहवुं जणाविउं ॥ यतः आह ॥ निद्दा विगहा परि
वजिएहिं ॥ गुत्तेहिं पंजलिउडेहिं ॥ सत्तिबहुमाणपुव्वं ॥ उवउत्तेहिं सुणेयव्वं ॥ १ ॥ हिवइ जे एमकहिउं कुंतेउ । भगवंतिइं मकहिउं तेसकहि
उंति कहइ छइ ॥ तिहां सम्यग मिथ्याज्ञानश्रद्धाअनुष्ठानादि सर्वपदार्थनइ विषइ जीवइ जितउपयोग प्रवर्तिइ ॥ तेसणी सर्वविस्त्रमाहि
जीवप्रधानछइ तेमाटिइ जीव ॥ आत्मानो विचा **एग आया** रकहिउं छइ ॥ एगे आया ० एकपणि छइ तेआदिनथी ॥ नित्यवस्तुनइ
इजाणइ ते आत्मा जीव ॥ जीवउपयोगलक्षण ... णथकी ॥ सिद्धि अनइ संसारी जीव एबिहुनइ ज्ञानपणाथकी स
दाइ जीवइ ० अजीवनइ जीवतापणानी असावथकी जीवनक ० अथवा सदाइं पोतानइं नाना पर्यायनइ पहुंचवइ तेआत्मा क ० तो आ
कासादि पणि पोतानाव पर्यायनइ पहुंचइ छइ ॥ तेसणी तेआत्मापणि क ० इमनही जेसणी जीवउपयोगसहित छइ । अनइ आकासादि
तो अचेतनपर्याय छइ । तेसणी जीवनइ आत्मा क ० पणि आकासनइ नक ० अथवा नानागतिनइ विषइ जाइ तेआत्मा क ० एससारी जी
वनी अपेक्षाइं ॥ अनइ सिद्धनइ पुर्वि नानागतिपणुं अनुं संयुक्तं तेसणी आत्मा क ० एहनइ इत्यर्थपणि क ० ... सिद्ध
एहनइ इत्यर्थवणिइ ० एकपणइं इति ॥ जेसणी षद्द्रव्य माहि जीवद्रव्य एकइ जगणाइ तेसणी एक आत्मा ॥ असंख्यप्रदेस पणाथकी अनेक
आत्मापणि क ० आत्माउ प्रदेस हितपणुं अंगीकरिवुं ॥ यसणी समस्तादि अवयवसर्वक्रीडा छइ ॥ अनइ समस्तप्रदेश अवयवइ चेतनपणुं छइ त
ताबइ जीव प्रदेस बइसघलइ छइ ॥ ... तेसणी अथवा सत्ता २ प्रतिकालनी कीधीकुमार तरुण मनुष्यनारकादि अवस्था पलटाव
इ तथा कपडइ विणसतइ पणि इव्यार्थपणइ एकजीवइ अइजिगणाइ तेसणी एक आत्मा ॥ अथवा ॥ जिननइ सर्वथा कोई एवस्तुनुं एकांति
एकपणुं के अनेकपणुं नथी जेसणी ॥ सामान्य विसेषरूप वस्तु छइ ॥ तेसणी एकांति न कहिवाइ ॥ सामान्यरूपइ आत्मा एक ॥ विसेषरूपिइं अनेक
आत्मा तेसणी एक आत्मा ॥ आत्मा सर्वत्र छइ ॥ यसणी उपयोग लक्षणजीव छइ ॥ तेउपयोगरूप लक्षण कोई जुजुउं नथी तेसणी सर्व आत्मा
इ कहिउं ० इमजीवानां एकलक्षणपणा थकी एक आत्मा क ० अथवा जन्ममरणादि सर्वदुःख सहवाना रहितपणकला ... तेसणी एक आत्मा । हिवइ

Digitized with financial assistance from the Government of Maharashtra on 11 June. 2017

कोइएकजीवमानइप्रतिजीवनिःक्रियानमानि॥ तेमतऊथापवाजीवनुंक्रियासहितपणुंकहतउ॥ पछिलुंदंडकइहुइछइ। यतलाणीत
थोडाडइकलीकोजइ तेलणीक्रियापछइकहीस्यइ॥ एगेदंडे॥ समुच्चइ॥ विसपलेषवीइनही तिवारिइएकदंडकहीइ॥ दंडीइ॥ एण
इकरीआत्माक्रियाकरइ॥ तेक्रियासुलतलुसीलाजीइ तेलणीदंडउ॥ तेलणीइआपघकोडोडोसावधकोमनआदिदुष्ट॥ दंडइकरी
आत्माक्रियाकरि तेक्रियाकहइछइ॥ एगाकिरिया॥ समुच्चइएक विसेषविनाजेकोईकरिवुंतेक्रियाकहीइ॥ तेकायिकाआदि॥ अथवा ए
गेडंडेएगाकिरिया॥ एवडुईस्वुत्रइकरीआत्मानुंअक्रियापणुंकहिऊं॥ जेणीदंडक्रियास्प्ष्टइकरीतेरक्रियास्थानककहियां॥ तिहांअ
र्थदंड१ अनर्थ२ हिंस्यादंड३ अकस्मादंड४ दिष्टिविपर्यासदंड५ परप्राणहतिवारूपसमुच्चयइवधनापकपणाथकीएपाषवक्रियादंड
सघइग्रहीं॥ मृषाप्रत्यया१ अदत्तादानप्रत्यया२ आध्यात्मीक्रिया३ मानप्रत्यया४ मित्रद्वेषप्रत्यया५ मायाप्रत्यया६ लोभप्रत्यया७
इर्यापथिकी८ वस्तुनुंकरिवुंतेक्रीया॥ एसमुच्चयइ८ आवक्रिया क्रियासग्रहइग्रही॥ हिवइजेजीवमइक्रियारहितपणुंमानतीना
स्तिकछता॥ तेणकोगवइ तेक्रियावंत॥ नामक॥ हवइजेकहइ तिआत्मातेहनोआधारकहिकरइछइ॥ एगेलोए॥ एक विसेषर
हितसमुच्चयइएकक॥ केवलज्ञानियकेवलीइदेषीइतेलोकक॥ धर्मास्तिकायादिद्रव्यनुंआधारस्त॥ आकासइजेलोककहो

एगदंडे। एगा किरिया। एगेलोए। एगेअलोए। एगेधम्मे। एगेअहंमे।

इअथवानामादिअष्टप्रकारिलोकक॥ नामंठवणादविए॥ खेत्तकालेसखेयसावए॥ पजवलोएयतहा॥ अठविहोयलिखवोति॥१॥
नामस्थापनासुगम॥ जीवाजीवद्रव्यमयद्रव्यलोक॥ सर्वआकासिअनंतप्रदेसमयक्षेत्रलोक॥ समयाविलकादिकाललोक॥ नारकी
आपाणि२ नविद्यवर्ततासव्यलोकक॥ यमनुष्यलोकदेवलोकिइति॥ उदयिकादिइभावतेभावलोककहीइ॥ द्रव्यनापर्यायपर्य
वलोककेवलज्ञानइकरीसमुचइदेषवायोगपणाथी॥ एहमइएकपणो लोकनोप्रतिपक्षस्तअलोकछतइकहइ॥ तेलणीतेकहिइछइ
एगेअलोए॥ अनंतप्रदेसमयवताइछतइइ॥ लिदअणलेषवाधकीएक॥ ईहांइमकल्पनानकीजइ॥ जेकेवलीइदेषीइतेलोक॥ के
वलज्ञानिकरीसमुचइअकारआव्यामाटइ॥ केवलीनदेषीइतेअलोक॥ ईहांएमजाकहिवुं॥ जेलोकनोप्रतिपक्षतेअलोक॥ हिवइलोकअ
नइअलोकनालक्षणकारताधर्मास्तिकायकहइछइ॥ एगेधम्मे॥ असंख्यप्रदेसमयपणाइछतइइद्रव्यापणिपणाइएक॥ धर्मास्तिकायजीवन
इपुदगलनइगतिनेउपस्तंभआधारछइ॥ साहाय्यरूपस्वभावधरवाथकीधर्मकहीइ॥ अस्तिक॥ प्रदेसअनइप्रदेसनासमुदायपणाथकी
कायक॥ धर्मास्तिकायनेउप्रतिपक्षेकहइछइ॥ एगेअहंमेक॥ एकअधर्म॥ द्रव्यथकीएक१ धर्मास्तिकायनहीतेअधर्म॥ अधर्मास्ति २
कायजीवपुदगलनइरहितआधारहोइ॥ अथगतिपरिणामइपरिणम्याजीवपुदगलनइधर्मास्तिकायगतिनेआधार॥ जिमम[illegible]

लनोआधार॥ स्थितपरिणामइपरिणम्याजीवपुदगलनइरहिताअधर्मास्तिकायआधार॥ जिममत्स्यादिकनइजलथकीआदिकनोआ
धार॥ धर्मास्तिकायअधर्मास्तिकायलोकमाहिछतामानीइ॥ जेतलणीएहतानमानीइतो लोकअलोकमाहिइफरस्यउ तेतलणी
अधर्मास्तिकायइउपस्तंभग्रहीत॥ आधारहीधमे एहवोजीवनइकर्मनइबंधपइं तेतलणीबंधकहइछइ॥ एगेबंधे॥ सकषायपणाथकीजी
वकर्मयोग्यपुदगलनइ तेबंधतेप्रकृतिआदिच्यारिभेदइ॥ पणाइसमुच्चयइएक॥ अथवासिद्धिनइवलीबंधसबुंनथी एहवुंसमुच्चय
बोलवासकीएक॥ अथवाइसबंधअठीआदि॥ नावबंधकर्मतेबेकूइंसमुच्चयइजिक॥ तेतलणीएकइहांजीवनइकर्मनोसंजोगआ
दिसहितछइईमनककहिवउं॥ जेतलणीइमकहइताविणविकल्पऊपजइछइ॥ तिहांपहिलोजीवअनइपछइकर्मएमकहितांमिलणन
ही॥ जेतलणीकर्मपापिपहिलुंउपजामोकिणइ॥ तेतलणीएपहिलउपज्ञ॥ पहिलउकर्मअनइपछइजीवइमकहितांमिलणन
ही॥ जेतलणीजीवविनाकर्मकोणकिणइ॥ जोकरणहारपाषिकर्मलागइतोसिद्धनइपणिलागिइं तेतलणीएबीजउपदे तथाजीव
सदाइकर्मरहितइजिछइ ईमकहितांमिलइनही॥ जेतलणीजउबंधइजनथीतोसिधमइंकर्मक्षयनोवांकोमांकुनीवोछीस्यातलणी
कीजइछइ तेतलणीएबीजोपक्षमाहिसलइलागो॥ समकालिजीवअनइकर्मउपनांईमइनमिलइ॥ जेतलणीकर्मपापइजीवाकेणइ
उपजाव्यो॥ जीवपाछिकर्मकेणइउपजाव्यां॥ एकर्मनउकरणहार एकर्मएहवउव्यवहारसमकालिउपजतांप्रवर्तनही तेतलणीए

एगेबंधे। एगेमोक्खे।

तीजउपक्षतउकिमक॥ आदिरहितअपश्चानुपूर्वीइजीवनेइअनइकर्मनेउसंयोगछइ॥ इमक॥ अनादिकमविंधछतइइहांएकलव्यनइ
कर्मनेउमोक्षछइ तेलणीतेकहइछइ॥ एगेमोक्खे॥ कर्मपासथकीछुटवोतिमोक्ष॥ ज्ञानावरणीआदिअष्टविधकर्मनीअप
क्षाइछुटवुं॥ अष्टविधपणिमुंकावानउसमुच्चयइपणाथकीएक॥ अथवामुंकायाअनइवलीमुंकावानाअभावथीवलीअथवाई
प्रतस्ताआहारनाममाकइद्व्यार्धिएक तेहनीअपेक्षाएक॥ तथाइव्यथीअगलथीमुंकावुं॥ नावथीकर्मथीमुंकावुं तेबेऊइमिली
समुच्चयइएकमोक्ष॥ जीवअनइकर्मनउसंजोगअनादिनोछइ॥ जिमजीवअनइआकासनोसंजोगअनादिनउछइ॥ तिमए
एवाजीवमइकर्मनउमोक्षकिमघाटइ तेकहीइछइ॥ जिमधातुनइअनइ मानानइअनादिनोसंजोगछइ॥ पणिअग्नि
दिकपायइअत्रुतीसंजुजुआथाइ॥ तिमज्ञानदर्शनचारित्रइजीवकर्मजुजुआंथाइ॥ कर्मजीवजुआथयामाटइजीवनोनासनथीइ

ठाणांग

जिम सोनानी मुद्रिका नागीइ मुद्रिकाना आकारनो विणासमथयो पणि सोनानो विणास नहीं तिम मोक्षपुन्यपापना क्षयथकी कुहइ तेहणी पुन्यपापक्षयहइ छइ तिहां मारि अनइ पुन्यनइ सुखपणाथकी पाहिलु पुन्य कह्यछइ ॥ एगे पुन्ने ॥ जीवनइ सुखकरइ अथवा पवित्रकरइ ते पुन्य कहीइ ॥ एहनां ४२ भेदछइ । तोपणि प्राणीप्रति २ आपापणा २ पुन्यछइ तेहणी अनंतछइ हिवु पुन्य । पणि समुच्चयइ एक ॥ तथा कोइ एकइ म कहइ कर्म हइ जिजीवनइ मोतइ नथी । ऊश्म कहइ ते ० जुवक । तेहणी बीज विना अंकुरो न ऊपजइ तिम जीवसर्व दुःखसुख लागवइछइ । न कर्म इकरी कर्म विनाइ इविषयनी प्राप्ति नथाइ तेहणी एणाइ हेत इ कर्म अनइ पुन्य जीवनइ थातइ छइ जि ॥ तथा जीवनइ कर्म थातइ छइ तो पाप छइ पणि पुन्यनथी इम तपणि एकांतिन कं० ऊपनणी पापनइ प्रभावइ दुःखलोगवइछइ ॥ अनइ कोइ सुखफल लोगवइछइ ते पुन्यनो प्रभाव तेहणी पुन्य पणि छइ जिम अत्यंत अपथ्य आहारना सेववाथी मरोगपणउ हुइ पथ्य इ जिम २ अपथ्यघटइ तिम २ आरोग्य पणुं वधइ जिवारि इ

एगे पुन्ने | एगे पावे | एगे आसवे |

किंचित् पथ्याहार तिवारि घणुं नीरोगपणुं अनइ सर्व आहारनइ त्यागइ मृत्यु हुइ तिम अपथ्याहार तुल्य पापतेहनइ सर्वथा क्षय इ मुक्ति हुइ ॥ पुन्यनो प्रतिपक्ष पापकहइछइ ॥ एगे पावे ० आत्मानइ रंजना परिघरइ । अथवा आत्मानो आनंदरस सोषइ ॥ ते पाप तेह ज्ञानावरणी आदि ८२ भेदइ पणि ॥ अथवा अनंत जीवनइ पापआश्रीछइ तेहणी अनंत भेदइ पाणि अनुसना समुच्चयपणाथकी एक ॥ इहां इम न कहिवउं ॥ कर्म नइ हणतां पणाइ जीवनइ थातइ एकांति पुन्यछइ पणि पाप नथी । थेरु णी संसार माहिलो कोइ एक दुःखीपणि हुइ ॥ तथा ... उप्रजावउ पणि जिम अत्यंत पथ्याहार सेववाथी पुरुषनइ आरोग्यपणुं ते रूप सुखहुइ अनइ यम २ पथ्य कारि आहार घटाडिइ तिम २ नीरोगपणुं ऊछउं थाइ ॥ पछइ जिवारि सर्वथा आहार वर्जीइ तिवा र मरण हुइ । पथ्याहार तुल्य इहां पुन्य जाणिवउ तेजीवनइ सुखदाई छइ । अनइ सर्वथा पुन्य जिवार क्षय जाइ तिवार मुक्ति हुइ ॥ पुन्यपापनो बंधनउं कारण आश्रव छइ तेहणी तेकहिछइ एगे आसवे ० जीवनइ विषइ एणाइ करी ८ कर्म पइसइ ते स्यो आश्र व धइ ते हिइं समुच्चय एक अन्याइ लगतनावा माहि छिद्रइ करी पाणीनो प्रवेश तेइ आश्रव ॥ जीवनइ इंद्रिया दि छिद्रइं करी कर्मजिल नव्रसं वयात आश्रव इम बहु विधि पणि समुच्चय एक आश्रवनउ निपकसंवर ते कहइछइ ४

एगे संवरे ० प्राणातिपातादि कर्मना कारणइ रुंधीयइ जेणइ करी ते संवर ते सतावनभेदइ पणि अथवा उत्तराध्ययन मां बादि कना केणइ एकइ उभाइं करी पाणी आववानां छिद्र ढांकवुं तेह असंवर अनइ जीवनइ विषइ आवता कर्म जलनइ ऊंधलिइ इ इंद्रियादिक तेहइं सुं समित्यादिकइं करी रुंधवुं ते भावसंवर ते बिहुं विधि पणि सामान्यइं थी एक ॥ संवरनइ विषइ पणि क र्म वेदइ छइ तेहणी वेदना कहइ छइ ॥ एगा वेयणा ० स्वभावइ अथवा ऊदीरणा करवइ उदय आवा कर्मनो लोगविवुं ते वेदना ते ज्ञानावरणीयादि कर्मनी आपेक्षाइं आठ भेदइ पणि अथवा विपाकथकी ऊदय ॥ जीवना प्रदेशथकी ऊदय इम द्विविध पणि ॥ अथवा सिरिलो बादिक कर्मनी अपेक्षाइं उदेराय कहलीइं छइ । ते आसुणमिकी वेदना अनइ स्वइ वर्ग रोगादिक इ ऊपजावी वेदना ऊपक्रमिकी । क० इम द्विविध पणि समुच्चयइ ॥ एक वेदनाइं करी कर्मनउ रस लोगवुं ते वार प्रदेशथकी क र्मनि ज्जरा २ ॥ अलगा थाइ तेहणी ते कहइछइ ॥ एगा निज्जरा ० कर्मनउं क्षय पवुं ते ज्ञानावरणादि निआपक्षाइं ८ भेद पणि अथवा द्वादश भेद ॥ तपइ करी कर्म निर्जरीयइ तेहणी द्वादश भेदइ पणि निर्जरा अथवा अकामयुधक्षुधादिसीत तापदंसमंसक मइल

एगा संवरे | एगा वेयणा | एगा निज्जरा | एगा जीवे पाडिकएणं | सरीरएणं |

तुसहिवुं ब्रह्मचर्य आदि अनेक कारणइ कर्मना निर्जरवाथकी अनेक विध निर्जरा पणि समुच्चयइ एक अथवा लुगडाना मइल लुछवुं तेह अनिर्जरा कर्म निर्जरा लवुं ते भावनिर्जरा इम द्विविधि पणि समुच्चय एक निर्जरा अनइ मोहनो विशेष थकी कर्मनउ क्षय तेहजि निर्जरा ॥ सर्व कर्मनउ क्षय तेमाहि विशिष्ट निर्जरा प्रत्येक सरीरीनइ हुइ पणि साधारण सरीरीनइ तेह बोलिवो । एहणी प्रत्येक शरीरी जीवनउं स्वरूप कहइछइ ॥ एणाइ संबंधि इ आगल्युं सूत्र आव्युं ॥ अथवा सामान्य जीवादि पदार्थ कह्या हि वइ जीवादि पदार्थ विशेष इ कहइछइ एहणी आगिला सूत्रनो संबंध कहइछइ ॥ एगा जीवे ० जीवु जीवेसि तेजी वस्यउते जीवा ॥ सालि २ विसरा लघाइ ते मरी २ ॥ प्रत्येक सरीर नाम कर्मना उदयथकी ॥ पाडि... कएणं ० जुआ इ २ सरीरइ एक कोजी वछइ ॥ किहां एकि पाडिक्कएणं एहवो पाठ छइ तेहनो अर्थ इ विकार कहइछइ जुजीणातो नथी ॥ तथा वाचनांतर घणा छइ पंघली वाचनाना प्रावमो अर्थ कहीनसकउं तेमाहिइ तेमाटइ कोइ एक वाचनानउ अर्थ कहिस्यु

एगा जीवाणं अपरियाइत्ता० ॥ वउकि फेरवीना छिरलापुद्गल विक्रियसमुघातइं करी अणलीधइ ॥ उत्तिकुर्वीण० रचयस्वरणीय ॥ वि
क्रियसरीरनी रचनापोतानइ पोतानइ स्थानकइ इ,पजती बेलाइं जे जीवइ कीजइ ॥ तएक इ जि ॥ तेतलोनं रचय रणी यप्रत्यन्ते एकइजि
हइ ॥ अथवा सर्व विक्रियस्सरीरनी अवस्था आपदीइं रचयस्वरणीयसरीरनइं एकइ जि स्वरूप छइ । पणि मुंउत्तनघी । त्यतलीयबा
ह्यपुद्गलग्रही उत्तर विक्रियसरीरनी रचनाकरइ तयोतानी इछाइं नानाप्रकार करइ तेसरीर एक जीवनइ पणि अनेक विधिइं
तेतलो । इणि कारणि रचयस्वरणीयनु एकइ जि स्वरूप ॥ एगा मणे० आणीइ एणइ करी तेमणो मन तेसत्यमन आदि अनेक छि दि
इं पणि अथवा संख्यातसंज्ञीनी अपेक्षाइं असंख्यातदिइं पणि समुचयइं घकी एक ० एगावई ० उदारीक विक्रिय आहारक सरीर
इ व्यापारि करीला ध्य वचनद्रव्यसमुह तेवचनक ० एसत्या सत्यादि अनेक विधइं पणि सर्ववचनसमुहघकी एक ० तेसणो उप
वयइं करीइ इति लाणी कायक ० काय ० सरीर । तेहनउ व्यायाम ० व्यापार तेकायव्यायाम ॥ उदारीकादिसरीर स्कृहितजीवना वी
र्यनउ परिणाम विशेष जाणिवो तेउदारीकादिस्सरीरनी अपेक्षाइं सात विधि पणि अथवा अनंत जीवनी अपेक्षाइं अनंतातविधि

एगा जीवाणं | अपरियाइत्ता | विगुव्वणा | एगे मणे | एगा वई | एगे काय वायामे | एगा उप्पा | एगा वियती एगा
वियच्चा

पणि काय व्यायामनो समुचयपणा घकी एक ० एककालनइ विषइ मन आदिनुं एकपणुं तेसूत्रनइ विषइ जि वि
सेषिइं कहइ छइ ॥ एगा मणे देवा ० इंहा समुच्चयपणा घकी इ जि एक पणुं कहि उं छइ ॥ उप्पा ० ऊपजवुं ॥ ते
एक समयनइ विषइ एकजि वस्तु पणिइ ऊपजइ त्यसमकालइ नारकी तिर्यंचपणाइ जीव न ऊपजइ तेतणो एक ॥ विय
इ ० विगति मरिवउं ॥ ते पणि समकालि एकइ ऊपणइ मरीयइ । जिम मनुष्यक्ता मनुष्यपणाइ मरिइं ॥ पणि मनुं
ष्य अनइ तिर्यंच विकुपणाइ मरिइं तेतणो एक ॥ तथा वियइं सहनो ॥ विकृति ॥ वितति । इत्यादि संसकार णि
थाइ तेहनो अर्थ युक्तोऊइ जिमजो डिवउ पदतिकार तुंक हिए ॥ वियच्चा ० मुआनो सरीर ते विताबिक । अथवा वि
र्यञ्चा ० एहवो संस्कार थाइ तेहनउ त्यर्थ ॥ विवार्चा ० विसिष्टउ पजवा नीपद्धति ॥ अथवा विसिष्टलेसा तदनासमु ५
चयइ पणा घकी एक ॥

आगइ ० नरकादिकवक्त्री नीसरी अनेरी गति माहिं आववुं ते समकालि इ एकइ जि गतिमाहिं आवइ तेतणो एक ० चयणे ०
जोतिष्क विमानिक नु मरण तेएक जीवनी अपेक्षाइ एक ॥ अनइ नाना जीवनी अपेक्षाइं पणि जेतणो मरणावसरइ एक े
वपणाइं जिमरिछइ तेतणो ॥ उववाए ० देवनारकीनुं ऊपजवउं तेसमकालि इ एकइ जि पणाइ ऊपजीइ तेतणो एक ॥ तक्का ० वि
चारणा ते समकालि एकइ जि विचारि उइ तेतणो एक ० ॥ सन्ना ० मइज्ञाना वग्रह घकी आगलिका लिउं मतिज्ञान इ तेसंज्ञा क ० अथवा
आहारादिसंज्ञा ॥ अथवा संज्ञा नाम तेसमुचयइ घकी एक ॥ मन्ना ० मनिएतलइ सुरूमस्वरूप आलोचवारूपबुद्धि ॥ कोइएक कहइ छइ
मति ॥ आलोचवु अथवा मन्ना ० अंगीकार करिवु तेसमुच्चय एक ॥ एगा विन्नु ० पंडित ॥ उत्पन्न जाणवा घकी । एक । एतलइ जाणपणो एए
हुवा समुच्चयवाक्य घकी एक ॥ तथा उत्पादइ इंमो अर्थ पुर्वकी ... क हिउ तेहनो प्रतिज्ञा णिवो ॥ एका विद्या ज्ञा । अथवा ए
का विज्ञाता एहवा पणि संस्कार थाइ तेहनउ अर्थ समुचयइ पंडितादि ॥ एकी वेयणा ० पुर्वे सामान्यघकी कर्मनो अनुभववुं ते
वेदना कहीइ इहांवेदमा कहीता पीडा तेसमुचय घकी एक ॥ वेदनानाइ जे कारण कहइ छइ ॥ छेयणा ० सरीरनुं अथवा अने

एगा गती | एगा आगती | एगे चयणे | एगे उववाए | एगा तक्का | एगा सन्ना | एगा मन्ना | एगा विन्नु | एगा वेयणा
एगे छेयणे | एगे भेयणे | एगे मरणे | अंतिमसारीरियाणं | एगे संसुद्धे अहाभूए पत्ते | एगे दुक्खे जीवाणं |

रीवस्तुनुं पउगिछेदवु समुचयघकी एक ॥ भेयणा ० भालादिकइं भेदवुं अथवा कर्मनी स्थितिनो घात तेछेदवुं कहीइ रसनो
घात ते भेदवुं क ० विसघना अगालिपवचा घकी एक वेदनादिकघी मरणकरइ ॥ एतणो तेक हइ छइ ॥ एगे मरणे ० चरमस
रीरीनइ एक मरण प्रसिद्ध अंतिम सरीरी स्नातक नियठउ पोहोचीम रइ तेक हइ छइ ॥ एगे संसुद्धे ० सबलार दितचारित्र
नाकषायरहित चारित्र तेतणो एक संसुद्ध ॥ एतलइ यघास्त ततत्र्यचारित्रनउ धणी ॥ पात्रनी परिपात्र पणि केहनु ज्ञाना
दिगुणरत्ननुपात्र ॥ अघव्यतिहिं गुणनइ पोहोतो तेतणो प्राप्त ॥ ॥ छेदलासवग्रहणा घकी कपनु त्रिठुष तेउष तेहनइ ॥
होइ तेएक इ घक ० एगदुक्खे ० एपांगीतरइं तेहनो एअर्थ । एके इउ प्रकार ॥ आरख्या ॥ नाम कहइ छइ एतलइ कषायना अभावथी
दइ संसुद्ध एहवो एक नाम पणि असंसुद्ध ॥ संसुद्धा संसुद्धइ त्यादि नामांतर नही अथवा एक श्रुत ॥ एहवउ संस्कार तेहनउ अर्थ ॥ एकजि
अहो ० जीव इइ जेहनइ ॥ त्यतणो प्राणी एक लउ छइ तेतणो एक ध्यक के ० अथवा सर्वजपरिसमत्ता स्वप्रवर्ते एकोतिहि उक्त

ठाणांग बालाo

वर्त्तइ तेतलो एकधर्मरूक० ॥ पुर्वोक्ति अधर्मस्नातक रूप दिलेवा ॥ संयुद्ध स्नातक नियंगवक्की अन्य जीवनुं स्वरूप कहइ छइ ॥
वलि० स्वरूतफलत्तोगव वाघ्रको जीवनइ इं उक्तो रुडपछइ ॥ केहवंव कं दुष्ट तेकहइ छइ ॥ एगा कृतं० पोतानां प्राणी महितलोली
नावतु पछइ पणि सांख्यमतीनी परि बाह्याद्युः मनमी ॥ दुष्टता अधर्मप्रक्की जाइ तेतलातेह कहइ छइ ॥ एगा अहम्म० दुर्गतिइजा
तोजीवनइ राषइ अथवा सुगतिनइ विषइ स्थापइ तेसणी श्रुत चारित्र रूपधर्मक० तेहनो प्रतिपक्ष अधर्मक० तेहनी प्रतिमा
० प्रतिज्ञा ते अधर्म प्रतिमा ॥ अधर्म युक्त सरीर ॥ अधर्मप्रतिमा क० ते सर्वनइ दुष्पनुं कारण छइ तिणी समुच्चयइ एक० एह
उत्तर्णी कहइ छइ ॥ जं० जेणइ कारणइ ॥ स० ते अधर्म प्रतिमा वेत ॥ परि० रागादिकइ क्लेश पामइ ॥ जे सिप्पमागंतरनो अर्थ
अधर्मप्रतिमानइ विषइ आत्मा क्लेश पाइ ते एक हइ जि एह थकी विपरीत कहइ छइ एगा धम्म० सुगम ॥ पज्जव० ज्ञानादि
कपर्यायिक पनाजेहनइ ॥ ति पर्यवजातक० एह बउ थाइ ॥ निर्मल उथाइ इत्यर्थः ॥ अर्थ बापर्यायनइ ॥ अथवा पर्यवनइ वि

एगासुत्त एगा अहम्मपडिमा जं से आया परिकिलेसति एगा धम्मपडिमा जं से आया पज्जवजाए एगा म
णे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि एगा वती देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि एगे काय वायामे

षइ ॥ जात० पोहोतो ते पर्यवजातक० अथवा पर्यवं० जीवना थवाना ज्ञानादि कृतो ते पर्यवियातक० ॥ धर्मयोग त्रिणि थकी जाइ ते
णी तेकहइ छइ ॥ एगा मणे० इत्यादि त्रिणि सुत्र तिहां मनोयोग त्य त्य कालनइ विषइ विचारीयइ ॥ ते ते कालनइ विषइ एक
जि ॥ पणि कोइ एक कालनइ विषइ बेआदि मन नकूइ जेसणी एक समयइ एकरूप उपयोग हुइ तेसणी ॥ त्य सी ते उत्तर
वेदतो बिरूप योगदी सइ छइ ते एक रूप उपयोग छइ जे सणी समयावली सूक्ष्म छइ तेसणी इणि कारणि समकालि एकरूप उपयोग
॥ ते वली मन एक वस्तुनइ विषइ उपयोगि पोहोतो हुती ॥ बीजा वस्तु जाणइ छइ ॥ तदो किमन्यत्रगत चित्ता० ति वा रिकोइ एक अ
नेक विषइ गामइ गयुं चित्त जेहनुं ते एहवो हुतो जे आगलि हाथी ऊतउ हुइ तउ पणि न जाणइ तेसणी एकरूप योग अथ
वा इत्यादि ॥ मनमां दि० लु समकालि एक मन हुइ पणि बे आदि न उ अससवा केहनइ मन हुइ तेकहइ छइ ॥ देवा० क्रीडादि
क करिल देव ॥ ते ज्योतिषी वैमानीक जाणवा ॥ असुरा० भवनपति व्यंतर ॥ मनुष्या ॥ तेहनइ एक मन ॥ तथा वचन योग पणि एकनइ
समकालि एक जेसणी मनपूर्वक वचन छइ अथवा सत्यादि ४ वचनमाहि लु एक वचन हुइ ॥ तथा वृउइ गणइ क हिस्यइ ते एक समयइ
बोलानइ लाइ तेसणी कायवायाम ॥ काय योग तेहनइ एक कालि एक हुइ ॥ काय योग माहिलो ॥ तथा औदार आहा ६

र क सरीर करइ ॥ तिवारि पणि उदारिक छइ तो किम समकालि बिकायजोग न हुइ ॥ तो उदारिक अउत्तिक उत पणि तिवा
र उदारिकनो व्यापार नथी आहारकनउ व्यापर छइ तेसणी अथवा उदारिक पणि तिवारि व्यापारीयइ तो जिम केवलसमु
घात इ सातमइ अनइ छठा इ समय उदारिक मिश्र तिम मिश्र योग थाइ ॥ तउ अनइ तत आहारक नउ व्यापार न लाभइ ॥ इम
सात विध काय जोग माहिलो एक इ जिला हुइ ॥ तथा वक्र वलि वैक्रिय सरीर करइ तिवारइ पणि एक सरीरनो व्यापार हुइ ॥ उ
उ बिकुनउ हुइ तो केवल समुघातनी परि इं मिश्र उपयोग हुइ ॥ इम पणि समकालि एक व्यापार ॥ काय योगना पणि उदारि
क पणाइ अनइ वैक्रिय पणाइ ॥ बृहद् उदारिकादि काय योगइं करी लीधा मनो द्रव्य वचन द्रव्य तेजीव व्यापार रूप प
णा थकी ॥ काय योग पूर्वक मन इ जे मनो द्रव्य वचन द्रव्य नइ पुद्गल हि उ जे एकेप णे तेउणा वि ए सरा वउ जो नस
मुहाइ तो ही ती र्थकरनी आज्ञाइ सद्दहिवउ इति ॥ पुर्वे इ मन योगादि सावसम कहि उछइ इहां पावाफेर इकोर विसम यइ क

देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि एगे उट्ठाणकम्मबलवीरियपुरिसकारपरक्कमे देवासुरम
हि कृषइ ते न लाणुं उक्त लोपनहो इहां जदे कादिक नुं य हणकां खु ते एतला जणी ॥ त्यहनइ वैक्रिय लब्धि संपन्न पणइ करी अने
कसरीर नइ रचवइ एक कालनइ विषइ मनोयोगादिकनुं अनेक पणु सरीरनी परिइ र थाइ तेटाल बानइ कां जि ॥ पणि
तिर्यंच नारक न थिवा न थी ग्रहणकीधुं ॥ तिर्यंच नारकनइ पणि वैक्रिय लब्धि करी वैक्रिय सरीरनइ अनेक पणि छइ ॥ १न
मनोयोगादिकनुं अनेक पणु न संभवीयइ तेसणी एह नुं ग्रहण तो युक्त जो तो काइ नियतहु ॥ तेसणी देवनइ विसिष्ट ल
ब्धि पणाइ सरीरनु अत्यंत अनेक पणुं छइ तेसणी मनुष्य तिइ एहनुं ग्रहण कीधुं ॥ केडि थकी तिर्यंच नारक लेवा ॥ एकेमा
निकादि जे जे नाम ग्रहण छइ तेहनइ मनोयोगादिकनुं अनुक्रमइ बेउ नुं कतरनुं प्रधान पणु जाणिवु जेसणी वैमा
निकनइ घणो प्रमनो द्रव्य रूप मइ तेसणी लब्धिनुं प्रधान पणु आगलि उत्तरनुं उत्तरनुं लेवुं ॥ कायवायाम तेरक घ३/२
कहइ छइ ॥ एगा० उठाण० चेष्टा विसेष ॥ कर्म समवादि ॥ बल० सरीरनुं समर्थ पणुं ॥ वीर्य ते जीव थकी उपनुं ॥ पुरुषकार० अ
भिमान विसेष ॥ एतलइ ॥ तेष ॥ परा क्रम० पुरुषइ पोतानु कार्य सराडइ पुडा चित्ते तेएसवी वीर्यंतराय ना क्षयक्षयोपसम
इत्यर्थ ॥

जीवना प्रमाणमविसप एसर्वसिद्ध एकसप्रत्येकप्रत्येकजो हिबो ॥ वीर्यांतरायकर्मनाक्षयक्षयोपसमथकी प्रत्येक एक
थना दिअनेक छ दिइ पणि एकजीवमइ एककालनइ विषइ क्षयक्षयोपसमना एकविधपणा थकी जनादि विसेषइ
एकजइ प्राक्रमइ ज्ञानादिअथवा मादापामीयइ ॥ तेतणी तेकहइछइ ॥ अथवा पुर्विइं धर्मप्रतिमा कही ति ज्ञानमयछइ
तेतणी तेकहइछइ एगनाण ० जाणीयइ अर्थ एणइकरी अथवा एहनइ विषयइं अर्थ एहथकी ते ज्ञान ॥ ते ज्ञानावरण
दर्शनावरणनउ क्षयक्षयोपसम । अथवा जाणिवउ ते ज्ञान ॥ तेऊआवरणनाक्षयथी प्रगटिउ ज्ञाननो पर्याय
विसेष ॥ सामान्यविसेषवस्तुमइ विषइ सामान्य विसेष । असंनुग्रह ग्राहक ते ज्ञान ३ अज्ञान धदर्शन रूप अनेक
छि दिइ ज्ञानपणाइ समुच्चयइ एक । अथवा समकालि एक रूपयोग जइ एहतणी एक ० जेतणइ घणी वस्तुनइ जाण
वइवइं तइइं जीवनइ एककालि एकई जि वस्तुनइ विषइ जाणपणु जइ ॥ तेतणी ॥ पणि दर्शनावरणनाक्षयोपसमथकी जे

णुयाणं तंमितंमिसमयंमि एगेनाणे एगेदंसणे एगचरित्ते ॥

जाणपणुं रूपहइ तेहनइ ज्ञानावरणनइ क्षयोपसमइ बोलतां अयुक्त जनहीं ॥ रूकव ० जंसामन्नगहणं ॥ दंसणमयं विसेसि
यंनाणं ॥ व्याख्या ॥ समुच्चयवस्तुनुं ग्रहण ते दर्शन ॥ विसेषइ वस्तुनुं जाणवुं ते ज्ञान ॥ तथा इहां अवग्रहीइ सामान्यग्रहणाक्षर
पणा थकी दर्शन ॥ अवायधरणा । विसेषग्रहणार पणाथकी २ ज्ञान । एसामान्य विसेष विद्धइ ज्ञानसहइकरी आगमनइ वि
षइ यह्याछइ । आलिणि बोहियनाणं अगवी संहव तिपयडीउ ॥ इतिवचनात । तेतणी समुच्चयज्ञानसहइकरी दर्शननइ
पणि ज्ञानकहितो विराधनहीं । आगालि दर्शन सहइजछइ ॥ तउइहां ज्ञानसहमाहि दर्शन कोइलिलीइ इहां प्रति
२ । तिहां दर्शनसहनउ अर्थसिम्यक होस्यइ ॥ तेतणी ॥ ज्ञानादि त्रिणि सम्यग्सदइ ॥ लोबितं ० विद्धम्न हितरूताभाइ आपइ
तेतणी दंसणे ॥ एणइकरीनइ दिउजाणवा ते तणी ज्ञानादि ३ सदहणा वीजीजे दर्शन सहइ तेणइ युक्त जतामाहि आमइ
तेतणी एगदंसणे ॥ एणइ अथवा एहथकी अथवा एहनइ विषइ पदार्थ सदहीयइ ॥ तेतणी दर्शन । ते दर्शन मोहनीनउ क्ष
य अथवा क्षयउपसम जाणवउ । अथवा दर्शन मोहनीयना क्षयादिक थकी जपनुं तेथनुं सादिक विबजे ते दर्शन ते अनेक छिद ७
इ पणि सदहिवा तउ समुच्चयइ एक ॥ अथवा एक जीवनइ एककालनइ विषइ एकसदहणा जइ तेतणी एक ॥ तेतणी एकोस
मुच्चयजाणवा थकी ज्ञानसम्यक दिम्बादिस्युं विसेषते कहइछइ ॥ संचित सम्यक त्र । संचिनुकारण ते ज्ञान ॥ चिरत्ति ० सोपस्वरि

स्वीयइ जे ते चारित्र अथवा मोक्षजइए एणाइंकरी तेतणी चारित्र ॥ अथवा । चय ० कर्मीतेहनइ गलाकरिवा थकी चरित्र
ते सामायकादिक अनेक छ दिइ तउ विसमुच्चयइ । विरुपणा थकी एक ॥ अथवा । एककालिइ एक होइ तेतणी एक । इहां
पिछिलुं ज्ञानएतलां तणी ग्रहिउं । जे जाणीजं होइ ती सदहीइ अणजाणिउं स्युं सदहीइए ॥ तेतणी पछइ दर्शन । सदहणा आ ३
विता अनुष्ठानकरइ तेतणी पछइ चारित्र ॥ ज्ञानादिकनी उत्पत्तिर दिवजं जाइवुं । समयथिके कालसंख्याइं करी जइ ते
तणी तेकहइछइ ॥ एगसमए प्रसिद्ध अतीतकाल विणगे अनागतकपनोनथी तेतणी वर्तमानएक समयनाकाल
नासागथाइनही तेतणी एक वली सागलार हितवस्तु छेछइ तेकहइछइ एगपएसे ० धर्माधर्म आकास जीवनो मिर् अग्र
सअंस रहित अवयवतेप्रदेस ॥ ते बिआदि प्रदेसछे पवीइतो तेहनादेस एहवा आदिनामनी पडइ । पलिप्रदेसनकिहि
वाइ तेतणी एक निइं प्रदेसकहीइ एणिकारणि एक ॥ एगपरमाणु ० विअणुकादिस्कंधनुंकारण ते परमाणु ते एकलो छुटउ
इतो ल्हिरछिपरमाणुक हिवाइ अनेरी परिइं वि देसिइं स्कंधइ त्यादि नाम बोलइ पणि परमाणु नहीं तेतणी एक अथवा संमया

एगसमए । एगपरमाणु । एगासिद्धी । एगासिद्धि ।

दिक प्रत्येकइं अनंता एकछालपवीइतो हिमा हो मा हिसरिषा छइ तेतणी एक जिमएकपरमाणुनइं एक पणुं जइ ॥ तिमनं
अनंतइ परमाणुइं नीपनुं अनंतप्रदेसिके स्कंध तेहमइ एणाइ एकपणुं जइ अनंति तणिइं स्कंधइनी पुनी बादरवस्तु तेहनइ
एकपणुं जइ तेकहइछइ तिहां सर्वबादरवस्तुमाहिं मुख्यइ षत्प्राग्भारा पृथ्वी कहइछइ ॥ एगासिद्धी ० सर्वकार्यपुरा की
धा जेणाइं एहवा ए हनइ विषइ थाइ ते सिद्धि । तेयद्य पिलोकाग्रनइ सिद्धि कहीयइ तथापि तेहनइ ढूकडी इषत्प्राग्भा
राशिला पणि सिद्ध कहीइ ए तणी सर्वार्थसिद्धि थकी १२ जोयणाइ सिद्ध कहीछि । ते होई षत्प्राग्भाराइं ज सिद्धलेषवीछइ ॥ अ
नइ जोलाका ग्रनइ सिद्ध कहीइ तो ॥ १२ जोयणा कह्यां होत ॥ बीजी वारिइं ॥ इदं बुंदि बईसाणं ॥ तछ्वगंतुण सिझइ ॥ एणइ वचनइ
लोकाग्र थइ जसिद्ध कहीयइ इहांई षत्प्राग्भाराइं जे सिद्धि तेतणी ते । ? ४५ लक्ष जोजन प्रमाण स्कंधना एक परिमाणथ
की द्रव्यार्थइ एक पर्याय थइ तो अनंत । अथवा लाकाग्रना समुच्चयइ एकपणा थकी एक ॥ अथवा आलि आहिं ॥ सही सिद्धि
नासमुच्चयपणा थकी एक ॥ सिद्ध अनंतर सिद्ध कहइछइ ॥ एगा सिद्धि ० सर्वकार्य नी सिद्धि जणाइ ते सिद्धि अथवा अपुनरा
वृत्ती लोकाग्रनइ विषइ जातां सकितो हवउ ते सिद्धि ॥ सित ० बांध्या ८ कर्म ध्यात बल्या छि जेना ते सिद्ध तेद्रव्यार्थइ एक ॥ पर्याय

थई तो अनंत अथवा सिद्ध नइ अनंत पणाइं छतइं समुच्चयइं एक अथवा कर्म विज्ञान विद्या मंत्र योग सिद्धि तीर्थयात्रा
बुद्धि तपः कर्मक्षियना अनेक भेद छइं तइं पणि जिवारि सिद्ध थाइ तिवारि सर्व सरिखा ते भणी एक सिद्धि ॥ निश्चितमय्या त
भणी ते कहइ छइ एगा परिनिव्वाणे० ॥ परि० सर्व प्रकारि कर्मनो क्रोध विकारना टालवा थकी ॥ निर्वाण० स्वस्थपणुं ते भणी
ते कहइ छइ परिनिर्वाण ॥ ते एकवडुं थावडुं एकइ जिवारइ छइ पणि वारंवार नथी ते भणी एक । त्य परिनिर्वाण सहित श्री
दितसिद्धि ते परिनिर्वृत कहीयइ ते भणी ते कहइ छइ ॥ एगा परिनिव्वुए० सर्वप्रकारिइं सरीरइ मानस दुःख रहित थयो
ते एकलक्षणयुक्त एक सिद्ध जइ पणि बीजो कोइ नही ते भणी एक एतलइ थैग्रं धर्मंकरी प्रायइं जीव एक पर्याय परुप्या द्विव
इ जीवनइ स्तोगि अजीव आवइ ते भणी ते कहइ छइ एगे सद्दे० बोलीइ एणइ करी ते भणी सद्द ते श्रोत्रेंद्री यनउ विषय
॥ सर्वगमा छिअ विलोकाइ ते रूप आकार ते आंषिनो विषय ॥ सुघीइ ते गंध ते नाकनउ विषय ॥ आस्वादीइ ते रस ते
जीभनउ विषय ऊफरसीइ ते परस ते सरीरनउ विषय एसद्दादिक नइ समुच्चय थकी एकपणुं अथवा सद्दमादि सल
एगा परिनिव्वाणे । एगे परिनिव्वुए । एगे सद्दे । एगे रूवे । एगे गंधे । एगे रसे । एगे फासे । एगे सुब्भसद्दे । एगे
दुब्भसद्दे । एगे सुरूवे । एगे दुरूवे । एगे दीहे । एगे रहस्से । एगे वट्टे । एगे तंसे । एगे चउरंसे । एगे पिहुले । ए
इ पणि रूपमाहि सलसइ इम बीजाइं सर्व पाताना जाति माहि सलसइ पणि परजाति माहि सलसइ नही ते भणी एक ॥ सुब्भसद्दे
मनोज्ञ सद्द ॥ दुब्भसद्दे० अमनोज्ञ सद्द एरस एना भेद जाणवा ॥ अनइ स्वरूप आदिस्वीइ वर्ण पर्यंत १७ रूपना भेद जाणवा
॥ तिहां सुरूप । मनोज्ञ रूप । दीर्घ० लांबुं ॥ ह्रस्व० ॥ टुंकडुं ॥ इत्यादिक ॥ पुद्गलना संस्थानना भेद ॥ तिहां वृत्त० वाटलुं मोदक
नी परिइं ते घन वाटलउं प्रतर वाटलुं एबि भेद ॥ ते एकेक थली सम प्रदेसिइं अवगाहइं । अनइ विषम प्रदेसिइं अवगा
गाहि । एम त्यारि भेद वाटलाना थाइ इम सर्व संस्थानना पणि भेद जाणिवा ॥ तंस० त्रिण हांस छइ ते तनइ विषइ तेत्र
स ॥ चउरंस० च्यारि हांस छइ ते तनइ विषइ ते चउरंसे ॥ पिहुल० पोहोलुं० आनरिंठा मिइ पाहोलानी गामिलांबु
अहिक छइ ॥ इम लांबुं इंजि दीर्घ टुंकडुं पहुलनइं ये भणी लांबा माहि बीजा इं जि लेषवीयइ तिवारि टुंकडुं पिहुलुं थाइ ते ८
भणी ते लांबुं प्रतर घन श्रेणीना भेद थकी त्रिण प्रकारिइं ते एकेक थली सम विषम प्रदेसना अवगाहवा थकी बि
कलिइ इम दीर्घ भेद थाइ ॥

त्य दीर्घ अनइ ह्रस्व आयतना० लांबा ना भेद थाइ ते धुरि एतला भणी कह्या त्य भणी इत्यादिक संस्थानमाहिं लांबुं एकोतिमणी
थइ जिइं मनही ॥ किवारइ किं पिहुलुं पणि गणीइ एना वात भणी अथवा सूत्रगति निविचित्र छइ ते भणी धुरि कह्यो परिमंड
ल ते वलयाकार ॥ ते प्रतर घनना भेद थकी बिहु प्रकारिइं वर्ण ते रूपनो भेद छइ ते भणी ते एपांच इजि नायो गथकी रूप जइ तेस
णीआ पणी रजातिमा हि सलसइ ते भणी जुआ न थया बिहु प्रकारिइं गंध एक सुरभि ॥ सुसुपणुं जे सुगंध थाइ ते सुरभि । त्य सुग
इसुगंध विणसाडइ ते बीजउ दुरभि त्यि सुगंध वइ सम मानइ रहीइ ॥ एतलइ रूडुं इनही अनइ भूंडउ एनहीं तेसाधारण परिणामगंध
एबेना संसर्ग थकी ऊपनुं ते कउनक हिउ रस पाजइ तीहां सलेषमानो नसाडण हार । ते तीषो ॥ कफ नउ न साडण हार कडुउ
॥ अन्नीरूचिनु घसण हार ॥ कषाय० तुरुउ ॥ सुक नउ ऊपजा वण हार ॥ अंमल० षाटुं ॥ उलाटदनउ करण हार अनइ पुष्टिनउ करण
मधुर ॥ पारा एइना संसर्ग थकी ऊपनउ ते भणी ऊपनक हिउ ॥ स्पर्श ८ प्रकारि । तिहां मन विह्वल डीनउ किरण हार कर कस
गे परिमंडले । एगे किण्हे । एगे णीले । एगे लोहिए । एगे हालिद्दे । एगे सुक्किले । एगे सुब्भिगंधे । एगे दुब्भिगं
धे । एगे तित्ते । एगे कडुए । एगे कसाए । एगे अंबिले । एगे महुरे । एगे कक्खडे जाव लुक्खे । एगे पाणाति
वाए ॥ रूडा मननो करण हार ते मृदु ॥ सुहालो । हगे पाडी ते गुरु सार ॥ अछो उच ऊजाइ ते लघु हलवो कंपावण हार
अनइ धंभावण हार ते सीत० ॥ ताढउ ॥ सुकुमालनउ करण हार । अनइ पाचवण हार ते ऊष्ण ॥ बंधनो कारण ते स्निग्ध
चीकणो । बंधन पडइ ते लक्ष लुखो ॥ इम राष एपुद्गल कह्या ॥ हिवइ जीवनइ प्रायः १८ पापस्थानक रूप पुद्गल ते क
हइ छइ ॥ एगा पाणा० ॥ प्राण० उसासादि ते हनउ अतिपात ॥ जीव सहित छइ ते हथकी जुजूआ करिवुं ते प्राणातिपात ॥
इंद्रिया० ऊर्ध्व० पविंद्रिया । णि त्रिविधं बलं च ॥ उस्सास निश्वास मत्स्य च आयुः ॥ प्राणा दसैते भगवद्भिरुक्ता ॥ ते बो विपाजी करण उ
द्रिस्पा ॥ ५ ॥ पाचवा० इंद्री ५ बल ३ मनोबल १ वचनबल २ कायबल ३ उसास निसास ९ अथ अनइ आऊषुं १० एदस प्राण ज
वतिइ करीया ते हनुं जीवथकी जुजूउ करिवुं ते हिंसा १ इति काव्यार्थः ते प्राणातिपात इक्य अनइ सविहं विहु प्रकारिइं ॥
॥ पाणा अथवा विनास परिताप संक्लेस एत्रिण ते हिइं पणि अथवा मन वचन काया इं करी करण करावण अनुमोदन नइ भेदिं
इ नवप्रकारिइं पणि अथवा एक प्रा क्रोधादिक ४ संघाति इ गुणीइ तो ३६ भेद पणि कहीइ ॥

मृषावाद० मिथ्यानुं बोलवुं तेह्यस्तावद्यकीरत्तविइ अथवा अनाकृतप्रकासवुं ऊिमएकआत्मा सघलइ व्यापी रह्योछइ इतानुं निह्नववुं। ऊिमजीवनथी आनरा निआनरूकहइ यथागाएइनइ घोडउकहइ निंद्याकरिइ ऊिमनुं कहीछइ इमुव्या रिते दिइपणि मृषावाद॥ अदिन्ना० धणीइजीवनइ तीर्थंकरि गुरुवइनथी दीधुं एतलइ अणुज्ञानथी आपी लेवानी तेकेदिनीस विनाविस्नम्प अवस्तुनी तेहनुं आदान०लेवुं तेअदिनादान चोरी इम्पर्थ॥ तेचोरादिइइव्य सावद्यकी अथवा अनेक छिदि इपाणि॥ मिथुन० स्त्रीपुरुषनुं जोडलुं तेजोडइ एकठइथावइ क्रियनीपजइ तेमिथुन तेमनवचनकायाइकरी कृतकारित अनुम तिनइ लेदिइपाणि होइ॥ अंगीकारकरीइ तेपरिग्रह तेबाह्यअभ्यंतरइबेलदिइं तिहांधर्मोपगरणी विना धनधान्यादिक अनेक प्रकारिबाह्यपरिग्रहइ। मिथ्यात्वअविरतिप्रमादादिकअनेकलेदिइ अभ्यंतरलेदिइं प्रग्रह॥ अथवापरिग्रहमुर्छा क्रोधमानमा यालोभ तेकषाय मोहनीकर्मनापुद्गलमइ उदयकरीऊपनो जीवनापरिणामरूपजाणिवा एअनुतानुबंधआदिनालेदथकी। अथ वा असंख्याता स्थानकनालेदथकी घाणि लेदिइछइ॥ पिज्ज० तेमायालोभरूप दोस द्वेष अथवा बीजो नाम दोष तेक्रोध मानरूप॥ अस्याख्यान अछतादोषनुं कहिवुं तेआल॥ पैशुन्यतेचाडी छताअछतादोषनुं कहिवुं॥ परिवरिवाद०पा

वाए जावएगेपरिग्गहे। एगेकोहे। जावएगेलोभे। एगेपिज्जे जावएगेपरपरिवाए। एगेअरतिरती एगे मायामोसे। एगेमिच्छादंसणसल्ले॥

रकीनिंदा॥ अरति०मोहनीनाउदयथकीऊपनो चित्तनोउद्वेग॥ रति०आणंदएरमिलीएक विवक्षिऊं तेसणीकोइएकवस्तुनि विष इऊिबारिइंऊइ तेबारिकोइएकनइ विषइ अरतिपणिहोइ तेसणी तेअरतिनइइजिरतिकहीइ॥ मायामृषाकितमृषावादते मायामृषा एतलइपापएकठांथईएसतरमुंपापस्थाननीपनुं॥ अनेरावलीइमकहइछइ ऊिवेषपालटीअनेरानिइंविप्रता रिवुं तेमायामृषाएप्रमादिकपापनाविषयमइंलेदइ॥ अनेकलेदिइं अनेकलेदिइ अथवा अध्यवसायनइलेदिइंघ णालेद॥ विपरीतदृष्टि तेमिथ्यादर्शन॥ तेतीरादिकसालनीपरिइंदुःखनाहेतुथकी मिथ्यादर्शनशल्य तेअभिग्रहिकअ नाभिग्रहिक॥ आभिनिवेसिक सांसयिक अनाभोगक एणाइं ५ लेदिइ। अथवाअतिघणाइं लेदिइ। ए१८ पापस्थानकप्रत्येक प्रत्येक। अनेकलेदिइछइ पणिसमुच्चयएक१ एहनाप्रतिपक्षकहइछइ॥

एगेपाणाइवायावेरमणे० हिंस्याथकीवेरमणानिवर्त्तवुं॥ एगेकोहविवेगे० क्रोधनुंतजवुं॥ एअढारिइंसमुच्चयइथकीए क सपुद्गलद्रव्यजीवनऊं एकपणुंकहिऊं॥ हिवइकालिइकरीजीवनुं आऊखामवीयइछइ तेसणीकालकहइछइ तिहांप्रथमकालिइ ऊिकिमऊलवाइ तेकहइछइ॥ वधक० अणीकाविरऊइ फलादिककालइलागइछइ तेसणीहदी नुंफुलावरातेकालछइ तेसणीजाणीयइछइ तेकालछइ॥ एगाउसप्पिणी० ऊसरतीजाइ अथवाबलादिकइऊसरावइते णी अवसप्पिणी॥ सुष्ठु०सलुं॥ समा०कालतेसुसमा०॥ अतिहिसुषमातेसुषमसुषमा। एतलइअत्यंतसुषमयप्रदि तोआरउ॥ सघलइएकपणुतेस्वनाविंइऊिएकइऊिछइ तेसणीवधतीजाइ अथवाआऊषादिकनइवधारितेसणीऊसप्पिणी

एगेपाणातिवायवेरमणे। जावपरिग्गहवेरमणे। एगेकोहविवेगे। जावमिच्छादंसणसल्लविवेगे। एगाउस्सप्पिणी। एगासुसमसुसमा। जावएगादूसमदूसमा। एगाउस्सप्पिणी। एगादुस्समदुस्समा। जावएगा सुसमसुसमा। एगाणेरइयाणंवग्गणा। एगाअसुरकुमाराणंवग्गणा। चउवीसादंडउ। जावएगावेमाणि याणंवग्गणा। एगाभवसिद्धियाणंवग्गणा। एगाअभवसिद्धियाणंवग्गणा। एगाभवसिद्धियाणंणेर तियाणंवग्गणा। एगाअभवसिद्धियाणंणेरतियाणंवग्गणा। एगेजावएगाभवसिद्धियाणंवेमाणिया

उष्ट॥ दुःख॥ ऊेसमा॥ काल तेदुःषमा एजीवपुद्गलकालद्रव्यनाविसषकह्या। हिवइनारकादिसिद्धिपर्यंतिजीववस्तुअनइपरमा णवादिपुद्गलनऊंघोकइइएकपणुंकहइछइ॥ एगानेरइया०अनिष्टकर्मफलसंयुक्ततिनिरयकहीइ तेनरकतेह नइविषइऊपनाऊितितेरयिक तेनारकीतेअघिविनरकावासप्याथडाथितिअवगाहणादिकइकरी अनेकविधछइते हनोएकवर्गणा॥ समुदाय तेएक०ऊेसणीनारकादिकपर्यायइसर्वसरिषाछइ तेसणीसघलाइनउएकसमुदाय॥ अ सुरसमुदाय॥ नवयौवनपणुइकुमारनीपरिइं क्रीडारत तेअसुरकुमार तेहनुंसर्वमलीएकसमुदायथइ॥ चउवीसदंड कइहोलवा तेए। नेरया१ असुरादि११ प्रथ्व्यादि१६ बिंदिआदि२०नर।२१॥ विंतर२२ जोतिसीया२३ विमाणिया२४ दंडकएव॥

एगा सव॰। सव घास्पइ सिद्ध। कार्यतुं सराडइ चउवुं जेहनइ तेसव्व। सिधका॥ सव्वईत्यर्थ॥ त्यहनइ मा ञानुं कार्य कहीय इंई
सिद्धनथा। ते असव्वसद्धिक अ सव्वईत्यर्थ॥ सरी म्हइ जीव पणइ छै तदू सव्व अनइ असव्व नो स्पो विसेष। जिम जीव द्रव्य छइ
ति म आकास पणि द्रव्य छइ। एह विश इद्रव्य पणा इ वतइ तुल्य छइ पणि जीव नइ सचेतन पणउं अनइ आकासनइ अचेतन पणउं
सता विरुध अनादि लुं नी पनु छइ॥ अस्ही॰ देवाइ तेउ छै। जीवत सांसारिया सावनउ लेह। जीवा। जीवाइनउ अरहंत सेव्य २ विसे
सा॥१॥ एगा सम्म॰ सम्य ग् विपरीत नही॥ इष्टि॰ रुचि तत्व प्रतेजेहनी ते सम्यक इष्टिक॥ मिथ्या॰ विपरीत जिनो कुं अर्थ तेहुं। अष्टि
॰ मद दिव्उं जेहनुं ते मिथ्यादृष्टिक॥ सम्मा मिछ॰ सम्यक अनइ मिथ्यात्वरुचि जेहनी ते मिथ्यादृष्टिक॰ ते जिनोक्त मार्ग प्रति
मध्यस्थ॥ एगा कण्हं॰ कृष्ण पाक्षिकादि कनुं एलक्षण। जेसं मबंद्दा पोगल परियट्टो सेसउ असंसारो ते सुक पख्खिया खलु॥
या णं वग्गणा। एगा अभव सिद्धिया णं वग्गणा। एगा सम्म दिट्ठिया णं वग्गणा। एगा मिछ दिट्ठिया णं वग्ग
णा। एगा सम्मा मिछ दिट्ठिया णं वग्गणा। एगा सम्म दिट्ठिया णं णेरइया णं वग्गणा। एगा मिछ दिट्ठि या
णं णेरइया णं वग्गणा। एगा सम्मा मिछ दिट्ठिया णं [illegible] णेरइया णं वग्गणा। एवं जाव थणियकुमा
रा णं। एगा मिछ दिट्ठिया णं पुढविकाइया णं वग्गणा। एवं जाव वणस्सइकाइया णं। एगा सम्म दिट्ठिया
णं बेइंदिया णं वग्गणा। एगा मिछ दिट्ठिया णं बेइंदिया णं वग्गणा। एवं तेइंदिया णं वि चउरिंदिया णं
वि। सेसा जहा नेरइया जाव एगा सम्मा मिछ दिट्ठिया णं वेमाणिया णं वग्गणा। ३। एगा कण्हपक्खिया
णं वग्गणा। एगा सुक्कपक्खिया णं वग्गणा। एगा कण्हपक्खिया णं णेरइया णं वग्गणा। एगा सुक्कपक्खिया
णं नेरइया णं वग्गणा। एवं चउवीसा दंडउ ता णियव्वो॥७॥ अहिं एपुण किएह परवाउ॥१॥ वारखा॰ त्य अर्ध पुद्गलम
माणो थ संसार फरसइ ते सुक्कपाक्षिक॥ तेथकी अधिक ते कृष्णपाक्षिक॥ एगा॰ जेणइ करी जीव कर्मइ लेपाइ ते लेस्या॥ ये १०
मलेपादिक इवर्ण चउ होइ॥ ति म लेस्याइ जीव नइ कर्म चउ होटइ॥ स्फटिक सरीखा आत्मा निर्मल छइ तेहनो त्य रुडा

दिपुद्गलइं नी मनो परिणाम ते लेस्या। ए लेस्या सरीरनामकर्मनउ परिणाम॥ त्य सणी लेस्या ते योग परिणामरूप छ
इ। अनइ योग ते सरीरनामकर्मनउ परिणाम छइ। ते सणी॥ थेसणी पनवणा इ त्रिनइ करणहारिइं पणि लेस्या ते योग
नो परिणाम तेलेस्या छिम ते कहइ छइ। जेसणी संजोगा केवली सुक्कलेस्यानइ परिणामइ विचरी॥ छिवार जोगनिरोध
करिइ ति वारि अयोगपणा नइ अलेसी पणानइ पोहोचइ। ते सणी जाणीइ छइ ते योगनउ परिणाम ते लेस्या। ते
योग सरीरनामकर्मनउ परिणाम। त्य सणी काभणा सरीर अनइ अनेराइ सरीरनुं कारण कर्म छइ। ते सणी उदारी
कादि सरीरनो युक्त जीवना वीर्य नो परिणाम ते काययोग। उदारिक वैक्रीय आहारक इलो धवचनना द्रव्य ते वाग्यो
ग। उदारिकादि सरीरनइ व्यापारिली ध त्य मनो योग्य पुद्गल॥ ति मनो योग्य॥ पिम एकायादि कारण युक्त जीवना वी
एगा कण्हलेसा णं वग्गणा। एगा नीललेसा णं वग्गणा। एवं जाव सुक्कलेसा णं वग्गणा। एगा कण्हलेसा
णं नेरइया णं वग्गणा। जाव काउलेसा णं नेरइया णं वग्गणा। एवं जस्स जति लेसाउ सवणवइ वाणमंत
र पुढवि आउवणस्सइ काइया णं चत्तारि लेसाउ। तेउवाउ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिया णं। तिन्नि ले
साउ। पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया णं मणुस्साणं छ लेसाउ। जोइसिया णं एगा तेउलेसा। वेमाणि
॥ यनो परिणाम ते काययोग कहीयइ॥ ति मायागइ जि लेस्या कहीइ। एतलइ लेस्या पणइं जीवना वीर्यनो परिणाम
॥ अनेरा वलीइम कहइ छइ॥ त्य कर्मनउ निस्पंद कहतां॰ कर्मना रूप जाम्या परिणाम ते लेस्या॥ ते बि क्लेदिइ द्रव्यले
स्या १ ना वलेसा २। ति हां द्रव्यलेस्या काला आदि पुद्गला॥ भावलेसा ते पुद्गलनो रूप वि जीवनउ परिणाम जिजी
बुं नाषाण हार ६ पुरुषनइ दृष्टांतइं अथवा ग्रामना विणास णहार चोर मि६ नइ दृष्टांतइ ६ ते दिइ कालइ द्रव्यइ नी पनी
असुन परिणाम रूप ते कृष्णलेस्या इम आगली काइ एक २ सलो ते सणी अनुक्रमइ तेह नानामे॥ नीलइ भ्रमुदर॥ कपोत
पिंछी ना वर्णइ तुल्य ते पुद्गल एतलइ धुंघलाते णाइं द्रव्यइ नी पनी इम बुंजतर जातकापोत॥ तेज॰ अग्नीनी झालसरी

षी एतलइ रासइ पुद्गलइ नीपनी शुक्ल जे तेतेजोलेस्या ॥ पद्मगर्भसरिषइ वर्णइ एतलइ ष्यी लइंइ व्यइनी पनी सुत्ततर जं
त पद्म ॥ ऊजलइ पुद्गलइनी पनी अत्यंत ऊजली ऊ तेसु क्ले ॥ एवं जस्स० नारकीनी परिइ असुरादिकनइ ऊतली लेस्या
जेहनइ कहइ तिहनइ तिलेस्यासहित वर्गणानुं एकपणुं बोलवुं त्यस्सु ॥ अत्र संग्रहणी गाथा ॥ काऊ नीला किण्हा ॥ लेस्सा
३ तिणि होंति नरएसु ॥ तइआ एकाऊ नीला ॥ श्री जी नरगइ ॥ नीला किए ह्णाय लिङ्गा ए १ ॥ लिङ्गा ० पांचमी इ ॥ किण्हानीलाकाउ
३ ॥ तऊ लेसाय सवणवं तरिया ॥ जोइस सोहम्मी साणे ॥ तेउ लेसा मुणेयव्वा ॥ २ ॥ कप्पे सणंकुमार ॥ माहिंदे चेव
बंभलोइय ॥ एएसु पम्ह लेसा ॥ ततापरसु कालेसाउ ॥ ३ ॥ पुढवी आउ वणस्सइ ॥ बायर पत्तेय लेस चत्तारि ॥ गब्भति
याणं तिन्नि लेसाउ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं ॥ अवरिम लेसा ३ ५ एगा कण्ह लेसाणं भवसिद्धियाणं व
ग्गणा एगा कण्ह लेसाणं अभवसिद्धियाणं वग्गणा अभवसिद्धियाणं वग्गणा एवं छसु विलेस्सासु दो प
याणि भाणियव्वाणि एगा कण्ह लेसाणं भवसिद्धियाणं नेरइयाणं वग्गणा एगा कण्ह लेसाणं अभवसि
द्धियाणं नेरइयाणं वग्गणा एवं जति लेसाउ तस्स ततियाउ भाणियव्वाउ जाव वेमाणियाणं ६ एगा क
ण्ह लेस्साणं सम्म दिट्ठियाणं वग्गणा एगा कण्ह लेस्साणं मिच्छ दिट्ठियाणं वग्गणा एगा कण्ह लेस्साणं
रियनर सुं ब लेसा तणि सुसाणं ४ जसिं जइ दिट्ठीउ ० त्यनारकानइ ये तली सम्यक् दृष्टि मिथ्याइ तद्वनइ तत्विसमवसहित
उ बोलिवउ ॥ तिहां एकेंद्रीनइ मिथ्या दृष्टि ॥ विकलेंद्रीयनइ सम्यग् मिथ्या ए २ दृष्टि ॥ पणिमिश्रनेत्री तस्यनइ दृष्टि ३ जाइ ॥ एत
० एओ ग्यार चउवीस दंडक पया ॥ तइंम ॥ जहो सव्वाइ ठि विसिसिउ ॥ २ दंसण ठि ३ पक्ख ठि ४ लेसा ठिं ५ सवेद दंसण ७ पक्ख
ठि ॥ ८ ॥ विसिट्ठलेसा ठि ॥ १ ॥ अनंतरसिद्ध परंपरसिद्ध ए २ तीर्थादि सिद्ध ॥ तिहां अनंतरासिद्ध १५ तीर्थादि तेकहइ छइ ॥ एगा ति
त्थ० तरीयइ एणइ करी तेहनी तीर्थ तइ व्यसाव २ त्तइइ ॥ तिहां नदी आदिकनो आरा तइ द्रव्य तीर्थ अथवा मिथ्यावीनां ती
र्थ तेइ द्रव्य तीर्थ अथवा पंचरत्ति आदिकनो सासन तइ द्रव्य तीर्थ एणाइ संसार नतरइ अनइ सावद्य तेहनी द्रव्य तीर्थ ११

सावतीर्थीत संघ जिज्ञानादिकइ करी अज्ञानघकी अनइ संसारघकी तारइ तेस्यावतीर्थ अथवा क्रोधी दाहस्स उपसमाउ
वुं ॥ लोभ तृस्नादेह टालवुं २ कर्म मललुप्फेडवुं ३ ए त्रिणिनइ विषइ अथवा ज्ञानादि त्रिणिनइ विषइ एहइ तेतणइ त्रिणि कही
यइ श्रासतमाचइ तीर्थ अनइ त्रिस्व एवि ऊत्तु एहवुं घाइ तीर्थ हइ तेसीधा तेती थी सिद्ध आदिनाथनउ प्रथम गणधर ऋषभसे
न तेहनी परिइ तीर्थनइ अंतरइ साधुनइ विरहनइ विषइ जातिस्मरणादिकइ सीधा ते अतीर्थ सिद्ध मरुदेवी मत तीर्थ उ
वंकि रूपा तहनी करणहार तेतीर्थंकर ॥ सिद्ध ऋषभादिवत् सामान्य गोतमादि ती परिइं सीधा ते अतीर्थंकर सिद्धा ० स्वयं०
वात इहजित ० बनाजाणा घया ते स्वयंबुद्ध ती ते सिद्ध ते स्वयंबुद्ध तेसीधा ते स्वयंबुद्ध सिद्धा एक कोइ एक वृषभादिक व
सम्मामिच्छदिट्ठियाणं वग्गणा एवं छसु विलेसाउ जाव वेमाणिआणं जसिं जइ दिट्ठीउ एगा कण्ह लेसा
णं कण्हपक्खयाणं वग्गणा एगा कण्ह लेसाणं सुक्कपक्खियाणं वग्गणा जाव वेमाणियाणं जस्स
जति लेस्साउ एए अट्ठचउवीसं दंडया एगा तित्थसिद्धाणं वग्गणा एगा अतित्थसिद्धाणं वग्गणा एवं जाव
एगा एकसिद्धाणं वग्गणा एगा अणेक सिद्धाणं वग्गणा एगा पढमसमयसिद्धाणं वग्गणा एवं जाव अणं
स्तु अनित्यतावादिनुं कारण ॥ प्रति० प्रीती तीनइ बुज्या ते प्रत्येकबुद्ध ते सीधा ते प्रत्येकबुद्ध सिद्ध ॥ स्वयंबुद्ध अनइ प्रत्येक
बुद्धनइ बोधइ । उपधि श्रुत । लिंग नो विसेष एकुइ ॥ स्वयंबुद्ध बाह्य निर्ग्रंथ ० विराग्य नुं कारण विणादीठे बुझइ ॥ प्रत्येक
बुद्ध करकंडु आदिकनी परिइं बाह्य वस्तु दीठइं बुझइ स्वयंबुद्धनइ उपधि १२ प्रकारनी ॥ तद्यथा ॥ पात्र १ पात्राबंध २ पायट्ठवणं
३ पायकेसरिया ४ पडलाइं ५ रयत्ताणं ६ गोच्छो ७ पाय निज्जोगो ॥ तिन्निव पच्छागा १० रयहरण ११ चोलपट्ट १२ प्रत्येक
बुद्धनइ ९ प्रकारनउ प्रावरण उ बरजीइ स्वयंबुद्धनइ पुर्वइ निश्चइ श्रुत सांभलइ हिकुइ ॥ स्वयंबुद्ध आचार्य नइ समीपइ वेणिलि
ग पडिवजइ । प्रत्येक बुद्धनइ तेउ देवता लिंग आपइ ॥ आचार्यादिकइं प्रत्यबोध्या हता जे सीधा ते बुद्धबोही सिद्धा ॥ स्त्रीलिंग
पुलिंग नपुंसलिंग म आचार्यादिकइ प्रति बोध्या बता यसीधा ते लेवा ॥ रजोहरणादिकनी आप छोइ स्वलिंगे सिद्ध ॥ परि

अजीका हिनइ लिंगइं सीधा॥ अन्यलिंग सिद्धा। मरुदेवीनी परि परिइं सीधा गृहलिंगसिद्धा। एक समयइं एकाकी सी
धा ते एकासिद्ध॥ ते एक समयइ २ आदि १०८ पर्यंत सीधा अनेकासिद्ध। तिहां अनेक समयनी गाहा॥ बत्रीसा अड
अडत्रीस अडयाला ५८ सठी ६० बावतरीय ७२ बोधव्वो॥ चुलसीइ ८४ छनुइ ९६ दुरहिय १०२ अट्ठुत्तरसयं १०८
॥१॥ व्याख्या। तिवारिं एकसमयइं जघन्य १ उत्कृष्ट ३२ सीझइ तिवारि बीजइ समयइ पणि ३२ सीझइं एम निरंतर ८ लगइ सम
समय लगइ सीझइ। तिवार पछी निश्चयइ नवमइ समइं अंतर पडिइ जि। जिवार ३३ थकी आरंभी ४८ पर्यंत ए
क समयइं सीझइ॥ तिवारि निरंतर ७ समय लगइ सीझइ। उपरांतिं समयादिकनो अंतर पडइ एमजाव १०८ ए
कि समयइं तिवारिं सीझइ॥ तिवारि अगलि बीजइ समयए जघन्य १ उत्कृष्ट ५८ इम त्रीजा आदि समयइं सघले
६१ जघन्य १ उत्कृष्टो तो गाथा मांहि संख्या कही छइ तितला सीझइ॥ परंपरसिद्धनी वर्गणानुं एकपणुं कहइ॥ प्र
थम समयना सिद्ध निहां तेअपढम समयना सिद्ध॥ एतलइं मुक्तिगयइं बीजो समय जेहनइ आइ छइ तेअपढम समय
तसमयसिद्धाणं वग्गणा। एगा परमाणुपोग्गलाणं वग्गणा। एवं जाव एगा अणंतपएसियाणं पो
ग्गलाणं वग्गणा। एगा एगपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा। जाव एगा असंखेज्जपए
सोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा। एगा एगगुणकालगाणं पोग्गलाणं वग्गणा। जाव एगा अस
यना सिद्धा आद्य मांहिं पुर्वि वि उपंच्च समउ नवदस संखेज्ज असंखेज्ज समय सिद्धाणं एतलइं पाछलि सिद्ध
तिहां मुक्तिगयइं त्रीजउ समय जेहनइ आइ छइ ते समय सिद्ध॥ इम एकेक समो वधारीनइ अर्थ आगलि प
णि करिवो॥ अथवा समुच्चयइ प्रथम समय कहिइं ते विसेष थकी अर्थ करीयइ तिवारिइं बीजो समय कहि
वो॥ इम आगलि एकइं आदि काल वर्ष। तिहां एक पढम समय एह वोधा अंतर छइ। तिहां अनंतर सिद्ध अनइ १२
परंपरसिद्धनो लिद्द अण कीधइ। समुच्चयइं विवक्षा कीधी लिख्या छइ। ते सत्ती प्रथम समयइना ते अनं

तर सिद्धि जाणिवा॥ बीजा आदि समयना ते परंपर सिद्ध जाणिवा॥ हिवइ द्रव्य थकी अकाल जाव आश्री पुद्गल पराक्रमनो
एक पणुं कहइ छइ॥ एगा परमा० कुरवानउ अनइं गलवानस्वभावएहनो तेसणी पुद्गल॥ ते कहा विस्कंध पणि छइ॥ एणणी
विसेष पइ कहइ छइ परमाणुं॰ एकलो अन्यसंघातइं अणमिल्यउ जाव एहनो तेसणी सादिं॥ उतिवउ पंचउ सउ नवदसस
खेज असंखेज पएसियाणं खंधाणं एतलो पाठ लेवो॥ ए त्रण थकी स्वरूप कहइ छइ॥ एगा एगा० परमाणुआदि पणइं अथवा
प्रदेसावगाढादिकपणइं अथवा एकगुणकालादिकपणइं एकसमयलगिइं स्थितिर हिवुं छइ जेहनुं ते एकसमयस्थि
तिक॥ अनंत समय तो पुद्गलनी स्थिति कहइ। ईहां तेसणी अनंतुं मक हिजं। साधर्म्य थकी कहइ छइ॥ एगा एगा सर्व थकी
जघन्य कालउ वर्त्ती तेहनो ते एकगुणकाल एतलइं जघन्य थकी आनरा पुद्गल कालवर्णइं वर्त्तता २ छइ ते सर्वथकी काल
खंधं एगा अणंतगुणकालयाणं पोग्गलाणं वग्गणा। एवं वन्नगंधरसफासा नातियव्वा जाव एगा अणं
तगुणलुक्खाणं पोग्गलाणं वग्गणा। एगा जहन्नपएसियाणं खंधाणं वग्गणा। एगा उक्कोसपएसि
याणं खंधाणं वग्गणा। एगा अजहन्नुक्कोसपएसियाणं खंधाणं वग्गणा। एवं जहन्नोगाहणगाणं
उक्कोसोगाहणगाणं अजहन्नुक्कोसोगाहणगाणं जहन्नठिइयाणं उक्कोसठिइयाणं अजहन्नुक्कोसठिइया
वर्ण पडतो छइ तेहथकी वर्णपुद्गल वर्णपइ ते अनंत तेसणी ते एकगुणकाल॥ अनंतगुणकाल एतलइ एक उत्कृष्ट वर्ण दि २० बोल
२०॥ एगगुणकाल २।३।४।५।६।७।८।९।१० गुणकाल॥ संख्यातगुणकाल। असंख्यातगुणकाल। अनंतगुणकाल ए ते १३ बोल सं
घातिइं गुणकार कीजइ॥ तिवारि २६० सूत्र भावना थाइ॥ तिहां ईहां संख्या छइ॥ हिवइ सामान्यतर पुद्गलनी वर्गणानउ एकपणुं कहइ
इ छइ॥ एगा जहन्न॰ सर्व थकी थोडा प्रदेसप्रमाण आ॰ जेहनइ विषइ॥ ते जघन्य प्रदेसक द्विप्रदेसक स्कंधई तार्थ॥ स्कंधप्रमाणु नउस
मुदाय॥ वक्तो॰ प्रमाण आ अनंत प्रदेस॥ परमाणु ते हनउ स्कंध। ते उत्कृष्ट प्रादेसिक स्कंध॥ अजहन्न॰ मध्यम संख्यात प्रदेस प्रमाण
तेहनो स्कंध ते जघन्योत्कृष्ट प्रदेसिक स्कंध॥ जहन्नोगा॰ ते नारा एकाकासनइं विषइ अवगाहा असंख्यातप्रदेसनइं विषइ अवगाहा ते उ
त्कृष्ट अवगाहनक॥ संख्यात असंख्यात प्रदेसनइं विषइ अवगाह्या ते अजघन्योत्कृष्टावगाहनक॥ एकसमयनी स्थितिना ते
जघन्यस्थितिक। असंख्यात समय स्थितिना ते उत्कृष्ट स्थितिक॥ असंख्यात अनइ संख्यात समयनी स्थितिना ते अजघन्योत्कृष्ट स्थितिक

ठाणांग
जंबुदीप
नाथरिख
१६८२०
कोयणा।
गाऊ ३
धनुष १२८
अंगुल
१३ जवप
जुउ १ ली
ख २ मांठ
रा ३.२

एकगुणकालात्तउ जघन्यगुणकालो ॥ अनंतगुणकालात्तउ उत्कृष्टगुणकालो ॥ संख्यअसंख्यअनंतगुणकालकाला ते अजघन्यो
त्कृष्टगुणकालो इमवर्णादि २० बोल जघन्यादि ३ लिदिइं करता ६० सूत्र नावनाथाइ ॥ अजघन्योत्कृष्ट प्रदेसावगाढ स्कंधनुं एकप
णुं कहइछइ ॥ एगेजंबु ॥ अनेरा असंख्य जंबुद्वीपद्वीप छइ ॥ पणिजंबूवृक्षसहित तेजात एए कइजि ॥ जंबुद्वीपनामइ द्वीप ॥ हिवइ जंबु
द्वीपना परूपणाहार मुनाम कहइछइ ॥ एग० सवायारइ तिमयक । तपनउ अमकरइ । तिस्रामण । तेम वर्द्धमानकुराईसहित तिणली भगवं
त ॥ वितसवइ मोक्षप्रति इजाइ । अथवा अनेइ रानिइं मोकलइ अथवा जीवनइ जावानइ प्रेरइ । अथवा कर्मनइ प्रेरइ ॥ अथवा रागादि
सत्रुप्रति सुलटाई करइ तेसलीवीर ॥ अथवा विदारितिय कर्मवीर ॥ तपसा व विराजते ॥ तप्यावीर्येण संयुक्त ॥ तस्मात् वीरइति स्मृतः ॥
एताइ गुणाइ पणिवीर ॥ अनेरावीरमांमोटो इति महावीर ॥ सिद्ध ॥ कार्यसिराइ इचडा सु ॥ बुद्ध० ॥ केवलज्ञानिकरी सर्वजाणइ ॥ मुत्ते० कर्मि
णं। जहन्नगुणकालगाणं उक्कस्सगुणकालगाणं अजहन्नमणुक्कस्सगुणकालगाणं एवंवन्नगंधरसफासाणं
वग्गणा भाणियव्वा जाव एगाअजहन्नमणुक्कस्सगुणलुक्खाणं पोग्गलाणं वग्गणा एगे जंबुद्दीवे दीवे स
व्वदीवसमुद्दाणं जाव अद्धंगुलगंच किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं एगे समणे भगवं महावीरे इमीसे
उसप्पिणीए चउवीसाए तित्थगराणं चरिमतित्थगरे सिद्धे बुद्धे मुत्ते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे अणुत्तरो
ववाइयाणं देवाणं एगं रयणिं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता अद्दाणक्खत्ते एगतारे पन्नत्ते चित्ताणक्खत्ते एग
तारे पं। साईणक्खत्ते एगतारे पं एगपदेसोगाढाणं पोग्गलाणं अणंता पन्नत्ता एगसमयठि
ईया एगगुणकालगा पोग्गला अणंता पन्नत्ता जाव एगगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पन्नत्ता एगट्ठाणं समत्तं
इमुंकाणो ॥ लीव मारेइं अंतगड ॥ जणाइ सवमइं अंतकाधर्म ॥ पखिनी० कर्मलेत विकार नई विहरइ स्वरूपथयो ॥ सव्व० सर्वसा
रीर मानस अनइ दुख अनइ मानसदुःखनो यगथा जिहना ॥ मुराति अनइ दक्डा अणुत्तरा विमानछइ तेसणो तेकहइछइ
नथी उत्कृष्ट अनेराप्रधान ते अनुत्तर विषयादि तेहनइ विषइ जन्म छइ जेहनेउ ते अनुत्तरोपपातिक देवता अधिकारे सणी तेन
इं अनेउ अधिकार कहइछइ ॥ तारा० जोतिषीनाविमान । तारा पुद्गलसमाइछइ । तेसणो कहइछइ ॥ एगप० आकाशना
एकप्रदेसनइ विषइ रहिया त्यां तिएकप्रदेसवगाढ ॥ तेपरमाणु अनइ स्कंध जाणवा ॥ इति एकमणुं नामइ प्रथमाध्ययन (१३)
नइ तेहनो अर्थ समाप्तः ॥ १ ॥ ॥१॥ ॥१॥ हिवइ बिठाणुइस्पइ नामइ बीजा अध्ययननो अर्थ प्रारंभीइछइ ॥
तेहनेउ एसंबंध ॥ ईहो जिमनइ सामान्य ॥ समुच्चयइ ॥ विसेष० विगतिइ ॥ एउयादि इ वस्तु सामान्यछइ तिहां सामान्य

आश्रीपहिलइ अध्ययनइ वस्तु कहिउ । बीजइ अध्ययनइ विसेष आश्रीवस्तु हिवइ वस्तु परूपइ एणइ संबंधइ बीजो अध्याय
नमांडिउ ॥ अरह्ठि० जइनो एपूर्वसूत्रसंबंध जोडिवउ जेपूर्वइ इमकहिउं एकगुणकालरूक्षपुद्गलतो सुअनेक गु
णरूक्षपुद्गलतइ सूत्रनेउ संबंध परंपराइ इमलेवो । ऊकइ ओतो ॥ बुयमि० आवमस्कायं ॥ जिणइ आत्माई स्यादि
सगवतिइ एकआत्मादिक कहिउं तिम आदौ पणि मेलवो । येयमए एकक हिउं तिमबिकालादि पणि वस्तुकहिउं ॥ हिवइ
सघलाभिनउए ॥ जिम काईजीवादिवस्तु छइ लोकमाहि तेसर्व दुया ॥ बप्रकारे जीव अनइ अजीवछइ पणिमाजी
वनथी ॥ दुपउयार पणांतरनोएअर्थ । जिकाई वस्तु छइ तेविपइ स्थानक एकपक्ष बीजो प्रतिपक्ष तेमाहिइ अव
तरइ ॥ सजोणि० उत्पत्तिस्थानक तेसहित तेसंसारी ॥ अजोणि० सिद्ध ॥ संस्थानवर्णसहित तेरूपी ॥ कर्मादि पुद्गलसहित ते
जदत्थिणं लोगे तंसव्वं दुपडोयारं तंजहा जीवच्चेव अजीवच्चेव तसच्चेव थावरच्चेव सजोणियच्चेव
अजोणियच्चेव साउयच्चेव अणाउयच्चेव सइंदियच्चेव अणिंदियच्चेव सवेयगाचेव अवेयगाचेव
सरूविच्चेव अरूविच्चेव सपोग्गलाच्चेव अपोग्गलाच्चेव संसारसमावन्नगाचेव असंसारस
मावन्नगाचेव सासयाचेव असासयाचेव आगासेचेव नोआगासेचेव धम्मेचेव अधम्मेचेव बं
धेचेव मोक्खेचेव पुन्नेचेव पावेचेव आसवेचेव संवरेचेव वेयणाचेव णिज्जराचेव दोकिरियाओ पन्नत्ता
सपुद्गली ॥ संवनइ समापन्न आस्या ते संसारसमापन्नक ॥ जन्ममरणादिकइ रहित मोक्ष ॥ सिद्धसास्वता कहीयइ ॥ अजीव
तथा कहइछइ ॥ करिवुं ते क्रिया अथवा ज्येकीजइ ते क्रीया ॥ साधुअनइ कुर्वु ते अनुष्ठान क्रिया ॥ कर्मविपाकइ पुद्गलनउ परि
णामवउं ते अजीवक्रिया ॥ तअनुमइ हिवु । तेहनइ जिजीवव्यापारपणा थकी क्रिया ते सम्यक्क्रिया । अथवा सम्य
क्त्व अनइ मिथ्या वसहित जेअनुष्ठान कीजइ । ते सम्यक्त्व क्रिया अनइ मिथ्यात्व क्रिया ॥ इरिय० जावकई तेईर्या ॥ तेणइ
सहितपंथ तिहाईर्यापंथ तिहांऊपनी ते ॥ ऐर्यापथिकी ॥ केवलयोग्य निमित्तइ उपसांत मोहादि त्रिणि अनइ क्षीण मोहजीव ॥ ३ सील
नेउसाता वेदनीयपणइ बांधइ ते ऐर्यापथिकी ॥ ज्याइं होजीवनइ व्यापारइ इते इवअजीवक्रिया कहीय तए तलारसणीअजीवक्रि
यानपणुइ होइ छइ । तेसणी०

१ संसार
पडिवन्न
णरूपअ
संसतेसि
द्वि ॥ ४ ॥
२ धर्मास्ति
कायादि
ते ताआ
बाग स० ५
अ० धर्मा
स्तिकाय
इ ॥ ...

तलोक
अलोक
ते ला ३.
४ नोआ
गास ते
मालस
असर्देव
खल
वी ३.४

संपराय॰ कषाय तिहांउपनी तिसांपराञ्चिकी ॥ तिपुण्यलतुंजीवनइकर्मपणइपरिणामवउं । एपणिजीवनाव्यापारना अणाविवक्षवाथकी अजीवक्रिया ॥ तसुक्ष्मसंपरायगुणगणातगइहुइ ॥ कायव्यापारइंनीपनी तिकायिकी जे णाइंजीवनरकादिकनोअधिकारीथाइ तिअधिकरण ॥ तिखडुंअनुष्टान अथवा खडगादि ॥ तिहांऊपनी तिअधिक रणिकी ॥ अणुवरिय॰ पापथकी अनिवृत्त्यासम्यग्दृष्टी अथवा । मिथ्यात्वी तेहनइ कायिकी क्रिया तिअणुपरतका यक्रिया ॥ दुःप्रानिःप्रविप्रयनइंविषइरागादिकथकी अयतनाइं इंद्रियप्रवर्त्तावितांथकी प्रमत्तसाधुनइ जिक्रिया तिदुःरव कायाक्रिया त्यपुविह्निरवडगादिकुशस्त्रारुकइं तिकार्यनइविषइ प्रवर्त्तावइ तिसंयोजनाधिकरणिकी ॥ त्यरवडगादिक निवर्तनीपजावववउ तिते निवर्त्तनाधिकरणिकी ॥ पाउसिया॰ मत्सर॰ ॥ पारिता॰ ताडनादि ॥ जीवउपरिद्वेषकरतां

तंजहा जीवकिरियाचेव अजीवकिरियाचेव जीवकिरियाउविहा पन्नत्ता तंजहा सम्मत्तकिरि याचेव मिछत्तकिरियाचेव अजीवकिरियाउविहा पं तं इरियावहियाचेव संपरातिगाचेव दोकिरियाउ पं तं काइयाचेव आधिकरणियाचेव काइयाकिरियाउविहा पं तं अणुवरियकाय किरियाचेव दुपउत्तकायकिरियाचेव आधिकरणियाकिरियाउविहा पं तं संजोयणाधिकरणि याचेव णिवत्तणाधिकरणियाचेव दोकिरियाउ पं तं पाउसियाचेव पारियावणियाचेव पा तोसियाकिरियाउविहा पं तं जीवपाउसियाचेव अजीवपाउसियाचेव पारियावणियाकिरि

षद्वेषिकी ॥ पाषाणादिकइं आपडवा थकीद्वेषकरतां अजीवप्राद्वेषिकी ॥

याउविहा पन्नत्ता तं सहत्थपारितावणियाचेव परहत्थपारिया वणियाचेव दोकिरियाउ पं तं पाणातिवाएकिरियाचेव १४

पोतानइहाथइ पोतानइ अथवा परनइ परितापनाकरतां स्वहस्तपारितापनिकी॰ परहाथइ परितापनाकरावितां परहस्त पारितापनिकी ॥

अविरतिनांकर्मलागइं तिअप्रत्याख्यानकिरिया ॥ पोतानइंहाथइं पोतानाअथवा परनाप्राणहरतां स्वहस्तप्राणातिपातक्रि या ॥ परहस्तइपणि तिमइजि करावतां परहस्तप्राणातिपातक्रिया ॥ जीवनापचखाणअणकीधनीय क्रिया लागइ ॥ तिजीवाप्रत्याख्यानक्रिया ॥ मद्यादिकनाअपचखाणनी जिक्रिया लागइ तिअजीवप्रत्याख्यानक्रिया ॥ जीवनइमर्दता जीवारंभकी ॥ अजीवनइतमाजीवनाकलेवरनइ ॥ तथा पीगमयजीवनाआकार ॥ अथ वस्त्रादिकनइ आरंभतां अजीव

अपच्चरकाणाकिरियाचेव पाणातिवायाकिरियाउविहा पं तं सहत्थपाणातिवायकिरियाचेव प रहत्थपाणातिवायकिरियाचेव अपच्चरकाणाकिरियाउविहा पं तं जीवअपच्चरकाणाकिरियाचे व अजीवअपच्चरकाणाकिरियाचेव दोकिरियाउ पं तं आरंभियाचेव पारिग्गहियाचेव आरंभि याउविहा किरिया पं तं जीवआरंभियाचेव अजीवआरंभियाचेव एवंपारिग्गहियावि दोकिरि आ पं तं मायवत्तियाचेव मिछादंसणवत्तियाचेव मायवत्तियाकिरियाउविहा पं तं आयभा ववंकणयाचेव परभाववंकणयाचेव मिछादंसणवत्तियाकिरियाउविहा पं तं ऊणाइरत्तमि छादंसणवत्तियाचेव तव्वइरित्तमिछादंसणवत्तियाचेव दोकिरिया पं तं दिट्ठियाचेव पुट्ठिया

आरंभिकी ॥ जीवनउअनइंजीवनउ परिग्रहकरतां पारिग्रहिकीपणि २ तिहिं ॥ माया तिदइजि प्रत्यय॰ कारणकइ ॥ कर्मबंधनुंते मायाप्रत्ययिकी पोतानाअप्रशस्तभावनुंवंकनता॰ वांकाकरवापणुं अप्रशस्तकरीदषाडवुं तिआत्मभाव वंकनता ॥ परभावनुंवंकनतां॰ वांकाकरवापणुं कूडालेषकरवादिकइ । तिपरभाववंकना ॥ ऊन॰ पोतानाप्रमाणथकी हीण ॥ अतिरिक्त॰ प्रमाणथकीअधिक॰ एहवोजीवमानवउ इहिजिमिथ्यात्व तेहइ जेपापनउप्रत्यय ॥ कारणायक्रियानउं तिऊ ना ॥ अतिरिक्तमिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी ॥ जिमकोईएकामिथ्याजीसरीरव्यापकआत्मातेहपणि ॥ अंगुष्ठमात्रयवमात्र नइ

त्समात्र जीवछइ॥ इम होणाउकहइ॥ अनेतारायलीहमक्कटइ जीव प०० धनुषनो छइ॥ सर्वआपकछइ॥ इमअधिकोमानइ
जीवकइ जिनदी इमजेकहइ॥ ततव्यतिरिक्त मिथ्यादर्शनतोजक्रियानउ॥ प्रत्यय०॥ कारणछइ॥ तद्व्यतिरिक्तमिथ्याद
र्शन प्रत्ययिका॥ जीवाजीवांनु अथवाजीवनुं तेथकी उपाय तद दृष्टिजा॥ अथवा दृष्टिका कहीयइ॥ दृष्टिबाधकी व्यापार दृष्टि
जा॥ अथवा फरसवाधकी उपनीतस्पृष्टिजा अथवा स्पृष्टिका॥ जीवदिट्ठिया तेअस्वादि जोवाजातालागइ॥ अजीवदिठि
या॥ तेचित्रामादि जोवाजातालागइ॥ जीवनइरागद्वेषइ पुछतां ~~अथवा जीवस्पृष्टिका अथवा अजीवस्पृष्टिका क्रिया~~

चेव दिट्ठिया किरिया दुविहा पं तं जीवदिट्ठिया चेव अजीवदिट्ठिया चेव एवं पुट्ठिया वि दो किरि
याउ पं तं पाडुच्चिया चेव सामंतोवणिवाइया चेव पाडुच्चिया किरिया दुविहा पं तं जीवपाडुच्चि
या चेव अजीवपाडुच्चिया चेव एवं सामंतोवणिवाइया वि दो किरियाउ पं तं साहत्थिया चेव णेसत्थि
या चेव साहत्थिया किरिया दुविहा पं तं जीवसाहत्थिया चेव अजीवसाहत्थिया चेव एवं णेसत्थिया
वि दो किरियाउ पं तं आणवणिया चेव वेयारणिया चेव अणणुवत्तिया चेव जहेव णेसत्थि

फरसवाधकी। जीवस्पृष्टिका अनइ जीवप्रष्टिका लागइ अजीवनइ रागद्वेषइं पुछतां अजीवप्रष्टिका॥ अथवा अजीवस्पृष्टिका क्रिया
॰पाडुचि॰ बाह्यवस्तुआश्री ऊपनी ते प्रातीत्यिकी॥ सामंतो॰ समंतात् वऊकाफरि ऊपनिपात ॰ लोकनुं मिलवुं तिहां ऊपनी ते सामंता
पनिपातिकी तिहनइ जिम २ लोक जोई २ प्रसंसइ तिम २ धणी हरखइ॥ तिधणीनइं जीवसामांतोपनिपातिकी॥ रथादिलोक देखीनइ हर
धणी हरखइ तिधणीनइ अजीवसामंतोपनिपातिकी॥ व्यापारनइ हाथइं नीपनी ते स्वाहस्तिकी॥ निसृष्टि॰ नाखवाथी ऊपनी ते निसृ
ष्टिका॥ व्यापारनइ हाथइ जीव मारी तेणइ जीवइकरी अन्यजीवमारिइं॥ ते जीवस्वाहस्तिकी॥ अथवा पोतानइं जीवनइं ताडना जीवस्वाहस्ति १५
की॥ पोतानइ हाथइ खड्गादि मारी जीवमारतां अजीवस्वाहस्तिकी॥ राजादिना आदेशथकी यंत्रादिकइं पांणीनुं बहिर बिवकु ते जीव
निसृष्टिकी॥ धनुषादिकइ बाणनुं नाखवुं ते अजीवनिसृष्टिकी अथवा गुरुवादिकनइं शिष्य अथवा पुत्र देतां जीवनिसृष्टि
की॥

एषणीयसक्तपानादि देतां अजीवनिसृष्टिकी अथवा॥ आण व॰ आपनाआदेसनुं देवुं तेआज्ञापनिका॥ तथाअणविव
उते अनोयनिका जीवनइ आपनउ आदेसतेदेतां जीवआज्ञापनी अथवा परपाहिं जीवआणावतां जीवआनायनी॥ अजीवन
इमंत्रादिकइं आदेसदेतां अजीवआज्ञापनिका अथवा परपाहि अजीव आणावतां अजीवानायनिका जीवनइ विदारतां जीवबे
दारिणकी॥ अथवा इलालनइ वेचावतां जीववेदारणिकी अथवा पुरुषनइ विप्रतारतां जीववेतारणिकी। अजीवनइ
विदारतां अजीव विदारणिकी॥ अजीवनइ वेचावतां अजीव वेदारिणिकी॥ अजीवना अछतागुण बोलतां कूडकूडो करीद

या दो किरियाउ पं तं अणाभोगवत्तिया चेव अणवकंखवत्तिया चेव अणाभोगवत्तिया कि
रिया दुविहा पं तं अणाउत्त आइयणा चेव अणाउत्तपमज्जणता चेव अणवकंखवत्तिया
किरिया दुविहा पं तं आयसरीरअणवकंखवत्तिया चेव परसरीरअणवकंखवत्तिया चेव दो
किरियाउ पन्नत्ता तं पेज्जवत्तिया चेव दोसवत्तिया चेव पेज्जवत्तिया किरिया दुविहा पं तं मा
यावत्तिया चेव लोभवत्तिया चेव दोसवत्तिया किरिया दुविहा पं तं कोहे चेव माणे चेव दुवि
हा गरहा पं तं मणसा वेगे गरहति वयसा वेगे गरहति अहवा गरहा दुविहा पन्नत्ता तं दीहंपि

काडं अणगल्पानइ धुनतां अजीववितारिणिकी अज्ञाननाकारणथकी ऊपनी अनाभोगप्रत्ययिकी॥ पोतानाशरीरादिनी अ
पेक्षानहीं ते निमित्तछइ जेहनुं ते अनवकांक्षाप्रत्ययिकी॥ अणाउत्त॰ असावधानपणइ वस्त्रादिनुं॥ आदान॰ग्रहवुं ते
अनायुक्त आदानता असावधानपणइ॥ पात्रादिकनुं पुंजवुं ते अनायुक्तप्रमार्जन मर्यादाइं जाणवुं तेअवछिननाथी
तानइं पीडाकरीकर्म करतां आत्मासरीरानकांक्षप्रत्यया॥ पेज्ज॰ रागतेमाया अनइ लोभ॥ एक्रियाप्रादिगरहिवायोग्य छइ ते स
णा ग्रहिवहइ छइ॥ गरहा॰ दुश्चरितनुं निंदवुं। मिथ्याबिनी अनइं अतसरस स्पगरडष्टी नीगर्हा इम गर्हा रमलइ॥ अप्रधनुग्र
हा॥

तसणीउअसए अप्रधाननोअर्थबोलइ॥ सावधानसम्यग्दृष्टीमइसावग्रह्यांतेगह्यी ७लहिइ अथवाघणाइनेदिइं पणिइह्यां २प्रकारिइ॥ मणसा॰ कोएक साधादिमनइ गरहइ अङ्गुष्ठदृवत् एगे॰ अनेरोवलीवचनगरहइ पणिइम निंद्रनह्यी। तसणी लोकरंजवानइ वचनइ गरहइ पणि तो विहुंउ थि रितघकउ निःहतउनघी। अंगारमर्दनवत् तेतला अथवा एकमनइ गरहइ अनइ वचनइ पणिगरहिइ॥ वयसा॰ अनेरोवचनइ पणि गरहइ अनइ मनइ पणि गरहइ॥ दीहं॰ दीर्घ॥ अद्ध॰ कालसगइ एतलइ आजन्मसुधा पापगरहइ॥ रहस्सं॰ एकघोडाकालना पापनिंदइ। अथवा एकनि जइ हसदिइ निं दइ॥ गर्हतिउअतीतपापनीकइ॥ अनागतपापनो पचख्खु तिसणी ग्वषाणकइइछइ॥ प्रति॰ प्रमादनइप्रतिकूलनइप्रमाद

गो अद्धं गरहति रहस्सं पेगे अद्धं गरहति दुविहे पच्चक्खाणे पं० तं० मणसा वेगे पच्चक्खति वयसा वेवपच्चक्खति अहवा पच्चक्खाणे दुविहे पं० तं० दीहं पेगे अद्धं पच्चक्खाति रहस्सं पेगे अद्धं पच्चक्खाति दोहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं वीतिवातेज्जा तंजहा विज्जाए चेव चरणेण चेव दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए तं आरंभे चेव परिग्गहे चेव दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलं बोधिं बुज्झेज्जा तंजहा आरंभे चेव परिग्गहे चेव एवं णो केवलं दो ठाणाइं अपरियाइत्ता आता नो के

पदाइ॥ आ॰ मर्यादाइं॥ख्यानं॥ कहवुं तप्रत्याख्यान॥ [redacted]इ अनुपयुक्त॥ सम्यग्दृष्टीनइ द्रव्यप्रत्याख्यान उपयुक्त स म्यग्दृष्टिनइ भावप्रत्याख्यान॥ तेदसवधकी मूलगुणउत्तरगुणनाभेदथकी अनेकभेदिइ पञ्चवाणछइ॥ प बहुकरणना भेदथकी द्विविध॥ शीनपुनर्कप्रत्याख्यानहोइ एसणी तिकहइछइ॰ दोहिं ठाणेहिं। गुणइसंपन्न॥ युक्ते॥ अवद्य तछिदडोनघीतेहनकतेअनवदग्य॥ दीर्घकालजेहनो तदीर्घाद्धि॥ अथवादीर्घ। अद्ध॰॥ मार्ग जेहनउ दीर्घाद्धि॥ नरकादि ४गति तेमार्गजेहना तेचाउरंत॥ विद्याए॰ ज्ञानइ॥ इह्यांवली समुच्चय सम्यग्दर्शनपणि विरुद्धनही। तेसणी सम्यक् पणि ज्ञानमाहिजाणव कइ १६

विद्याअनइ चारित्र॥ आत्मा किंमनपामइ तेकहइछइ॥ दोहिं ठाणेहिं॥ वेवस्तु॥ अपरियाणित्ता॰ एआरंभपरिग्रहअनर्थनउहेतु एवुज्ञपरिज्ञाइ अणजाणइ अनइ प्रत्याख्यान प्रज्ञाइ अणपचखइ इप्रसिद्धतेवत्। अपरियाइत्ता॰ पाठांतर तेहनउ अर्थ आ रंभादिकनुस्वरूप अणजाणइ॥ करसणादिकइ प्रथव्यादिकनुं उपमर्दन तेआरंभ॥ केवल॰ सुद्ध॥ बोहिं॰ सम्यक्त्व॥ केवलं मुंड॰॥ परिग्रहद्रव्यथकी मुंड अलोचइ॥ भावथकी मुंड कषाय एहवो मुंड थईनइ॥ ब्रह्मचर्यइकरी॥ वास॰ रात्रिसुतं ब्रह्मचर्यवास॥ आवसेज्जा॰ तिकरइ॥ संजमेणं॰ प्रथव्यादिकनइ राषवइ॥ संजमिज्जा॰ आत्मा प्रवर्त्तावइ॥ संवरणं॰॥ आश्र वनइरूंधवइ। संवरेज्जा॰ आश्रवद्वार ढांकइ॥ उप्पाडिज्जा॰॥ उपजावइ॥ सुय॰॥ सांभलीयइ तेश्रुत। सघ तेज्ञानश्रुतना

वलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा तं आरंभे चेव परिग्गहे चेव एवं णो केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा णो केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा णो केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा नो केवलिमाभिणिबोहियणाणं उप्पाडेज्जा एवं सुयनाणं ओहिनाणं मणपज्जवनाणं केवलनाणं २१ दो ठाणाइं परियाइत्ता आया केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए तं आरंभे चेव परिग्गहे चेव एवं जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा ॥२२ दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए तं सोच्चा चेव अभिसमेच्चा चेव जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा॥

कारणमाटइ ज्ञान तेश्रुतज्ञान॥ अवधीयते॥ एणइकरी अथवा॥ एथकी अथवा एहनइ विषइ मर्यादाइ करीजाणीइ ते अ वधि अथवा मननइ विषइ अथवा मननु॥ पर्यव॰॥ जाणवुं ते मनःपर्यव॰ अथवा मननुं पर्यव अथवा पर्यायकहतां। पल टवुं तेहनइ विषइ। अथवा तेहनुं जे ज्ञान। ते मनःपर्यवज्ञान॥ केवल॰ सघायारहित॥ अथवा केवलेकरहित। अथवा प्रथ मसमयइ सर्ववस्तु नाजाणवाथकी सर्व अथवा एसरिषो बीजुंनघी। तेसणी असाधारण। अथवा अनंतो जेज्ञान ते केव लज्ञान॥ धर्मादिकं किमपामीइ तेकहइछइ दोहिं॰२२ सुत्रसुगम॥ वली धर्मपामवानाकारण २ कहइछइ सुच्चा सांभली सांभलीनइ॥ अभिसमेच्चा॰ जाणीनइ॥ केवलज्ञानतो कालांतरिइ हुइ तेसणी कालकहइछइ॥ केवलज्ञानतो मोह नीयनाउन्मादनइक्षयइहुइ तेसणी उन्मादकहइछइ

× रोही णी आ चोरनी परि× मनीसरणमध्ये घडनारवन उप

वेस्या तुंइ कुमारी॥ त्याग ग्रायंबबाल विह वुच॥ पूरा रू उरोह मिस्ता या॥ नवनुंरणो घरनजेव॥ जो उ रसवदइ हि यइ॥ सोत गोणाइ सुंदर रागा बो॥ ध घीछावइ क टे णो॥ हा यंसोमवम श्रेई॥१॥ व एसपरिण ण्याचि॥ यः रलोरचल एबचु॥ पर्ि पुंछ पिनमा णीयं॥ कि शांतिदुखारू णो ॥ णज्ञाला बो धनानघी कम्पर्पच जाछइ॥

DR. BHAU DAJI
डाक्टर भाऊदाजीइत्यस्य स्वमिदं पुस्तकम्

उरवा०॥ देवताइं अधिष्टो॥ घोडइ दुषइ वेदीयइ सुखवेद्यतर सुहिलइं मुकावाइं। ते सुषविमोच्यतर॥ जसणी एमं त्रा
दिकनइं साध्य॥ अथवा सुहिलि उटलइ ते सुषमोच्यतर। अथवा सुहिलुं जीवनइं मूकइ॥ ते सुषविमोचतर॥ एकांति
अतिहिं समतो स्वभाव॥ अस्येत असुक कारवानो हेतु। अनंत सवनुं कारण ते सणी दुःखवेयतर॥ मं अनइं पणि असाध्य
जसणी मोहनी थनइ क्षयइ उपसमइं ते सणी एणइ कारणइं। दुःहविमोयतरा॥ एचेव॥ उन्मादथकी जीवहिंस्यादेइ इस
वर्तइ तेसणी तिक हइ छइ॥ प्राणातिपातादि ते डंडक हीयइ॥ इंद्रियनइं अर्थइं करि ते अर्थदंड॥ निस्वार्थइं करइ ते अनर्थदं

दोसमाउ पन्नत्ताउ तं उसप्पिणिसमा चेव ओसप्पिणिसमा चेव दुविहे उमाते पं तं जरवा तत्से च॥
मोहणिज्जस्स चेव कम्मस्स उदएणं तत्थणं जेसे जरका ते से सेणं सुहवेतराए चेव सुहविमोतराए
चेव तत्थणं जेसे मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं सेणं दुहवेततराए चेव दोदंडा पन्नत्ता तं अ
ट्ठादंडे चेव अणट्ठादंडे चेव नेरइयाणं दोदंडा पं तं अट्ठादंडे य अणट्ठादंडे य एवं चउवीसा
दंडउ जाव वेमाणियाणं दुविहे दंसणे पन्नत्ते तं सम्मदंसणे चेव मिच्छादंसणे चेव सम्मदं
सणे दुविहे पं तं पोहिवे णिसग्गसम्मदंसणे चेव अभिगमसम्मदंसणे चेव णिसग्गसम्मदंस

करइ ते अनर्थदंड॥ नारकीनइ दुविहे०पं तं सपज्जवसिते चेव॥ पोतानासरीररा षवानइ परति दंड जइ णिवुं ते अर्थदंड॥ ह
यकरवा थकी अनर्थदंड॥ प्रथम्यादिकनइं अजाणइ आहारलेता जीववध थाइ ते अर्थदंड॥ आकारादिकारण वि
ना लहनइं हिंसालागइ ते अनर्थदंड॥ सम्यक्त्वादिकसईहि ते नइं डंडनथी॥ तत्तणी तिक हइ छइ॥ उपदेस वि
ना स्वभावि ते निसर्ग कहीयइ एतलइ स्वभावइ मरुदेववत्॥ उ सम्यक्त्व पामीइ ते निसर्गदर्सन॥ गुरुना
उपदेसथकी उ सम्यक्त्व लहीयइं सरतवत्॥ अभिगमसम्यग्दर्सन॥ उपसमसम्यक्त्व ते प्रतिपाती क्षायिक १७
ते अप्रतिपाती॥ उमतनाकदाग्रहयुक्त। ते अभिग्रहिक मिथ्यात्व॥ हरिहरजिनवरसरीषाई इहु गणइ ते अनभिग्र १७
हिक॥

सम्यक्त्वनी प्राप्तइं मिथ्यात्वनो छेद आवइ ते पर्यवसिती॥ अनन्यनुं मिथ्यात्व ते अपर्यवसित अभिग्रहिक॥ सब्यन्वक मिथ्या
त्व ते अपर्यवसित॥ अनभिग्रहिक॥ ज्ञाननुं स्वरूप कहइ छइ॥ दुविहे नाणे०॥ विसेष स्वरूपनुं जाणिवुं ते ज्ञान॥ अथवा नइं
तो गावइं अथवा व्यापइ ज्ञानइं करी ते अक्षः॥ जीवनइ जीव प्रतिइं इंद्रिय अनइं मननी अपेक्षा रहित पणइ जे वर्तइ ते प्र
त्यक्ष॥ जीवनी ऊपक्षाइ पुद्गलमय पणइं करी द्रव्येंद्रिय अनइं मन ते पर ते णइं जाणीइ ते परोक्ष॥ पढमसयोगी
पणइ प्रथमसमयवर्तइ मइं वर्तइ छइ। ते प्रथमसमय ते सजोगि॥ अनइं बिआदिसमय जेहनइं सजोगीपणइं व

णे दुविहे पं तं पडिवातिचेव अपडिवातिचेव अभिगमसम्मदंसणे दुविहे पं तं पडिवातिचेव
अपडिवाइचेव मिच्छादंसणे दुविहे पं तं अभिग्गहियमिच्छादंसणे चेव अणभिग्गहियमिच्छा
दंसणे चेव अभिग्गहियमिच्छादंसणे दुविहे पं तं सपज्जवसिते चेव अपज्जवसिते चेव एवं
मणभिग्गहियमिच्छादंसणे वि दुविहे नाणे पं तं पच्चक्खे चेव परोक्खे चेव पच्चक्खे केवलना
णे दुविहे पन्नत्ते तं केवलनाणे चेव णोकेवलनाणे चेव केवलनाणे दुविहे पं तं भवत्थकेवल
नाणे चेव सिद्धकेवलनाणे चेव ×भवत्थकेवलनाणे दुविहे पं तं पढमसमयसजोगिभवत्थकेवल
नाणे चेव अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलिनाणे चेव अहवा चरमसमयसजोगिभवत्थकेव

या॥ ते अप्रथमसमयसजोगि। छेहलो समय जेहनइ सजोगीपणानो वर्तइ छइ पछइ अजोगी थाइ। अनइ चरमसमयइ सजोगी॥ छेहला
समयथी पहिला समयवर्तइ छइ॥ जेहनइं ते अचरमसमय॥ एकसमय जेहनइं थयउं मुक्तिइं गयइं ते अनंतरसिद्ध॥ बेआदि थ
या ते परंपरसिद्ध॥ एकसिद्धनइं एक समयमां थयो छइ॥ एकानंतरसिद्ध। अनइं अनेकसिद्धनइं एकसमय मोक्ष गयइं थयो ते अने
कानंतरसिद्ध॥ एकसिद्धनइं बिआदिसमयइ ते एकपरंपरसिद्ध॥ अनेकसिद्धनइं बिआदिसमयइं ते अनेकपरंपरसिद्ध

सवछके वलनाणे ×सवछके वलनाणे चेव
×सवछके वलनाणे दुविहे पं। तं। सजोगी सवछ केवलनाणे चेव। अजोगी सवछके वलनाणे चेव॥३६

सम्मुच्चयइ वस्तु जाणीइ ॥ जेणइ घडउ तेह उग्गमति । विगतिइं जाणइ जेणइ घडउ । उ अथवा कोसो माने । बो अथवा कोटिलिपुरनो मी
कालथवकी रूकालो द्विनो नीपनो ॥ तावद्यकी मोटो मांहानउ ते विपुलमति ॥ अवग्रहादि लक्षण तेह रूत निश्रित । उत्प त्तिकी
दि बुद्धि ते अश्रुत निश्रित ॥ सम्मुच्चयइ सिद्धरूपादि नु ग्रहिवु ते अर्थावग्रह ॥ तेदर्सनई स्पर्श ॥ सद्दादि पणइ परिणम्यु ते व्यंजन

लनाणे चेव । अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणे चेव । एवं अजोगिभवत्थकेवलनाणेवि । सिद्धके
वलनाणे दुविहे पं तं अणंतरसिद्धकेवलनाणे चेव परंपरसिद्धकेवलणाणे चेव । अणंतरसिद्धि
केवलणाणे दुविहे पं तं एक्काणंतरसिद्धकेवलणाणे चेव अणेक्काणंतरसिद्धकेवलनाणे चेव ।
परंपरसिद्धकेवलणाणे दुविहे पं तं एक्कपरंपरसिद्धकेवलणाणे चेव ॥ अणेक्कपरंपरसिद्धकेव
लणाणे चेव । णोकेवलणाणे दुविहे पं तं ओहिणाणे चेव मणपज्जवणाणे चेव । ओहिणाणे दुवि
हे पं तं भवपच्चतिते चेव खातोवसमिते चेव । दोण्हं भवपच्चतिते पन्नत्ते तं देवाणं चेव णेर
इयाणं चेव । दोण्हं खओवसमिते चेव पं तं मणुस्साणं चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव । मण
पज्जवणाणे दुविहे पं तं उज्जुमति चेव विउलमति चेव । परोक्खणाणे दुविहे पं तं आभिणिबो
हियणाणे चेव सुयनाणे चेव । आभिणिबोहियनाणे दुविहे पं तं सुतनिस्सिते चेव असुय
निस्सिते चेव । सुयनिस्सिते दुविहे पं तं अत्थोग्गहे चेव वंजणोग्गहे चेव । असुयनिस्सिते
वि एमेव । सुयनाणे दुविहे पं तं अंगपविट्ठे चेव अंगबाहिरे चेव । अंगबाहिरे दुविहे पं तं आवस्स
ते चेव आवस्सयवतिरित्ते चेव । आवस्सयवतिरित्ते दुविहे पं तं कालिते चेव उक्कालिते चेव । दुवि
हे धम्मे पं तं सुयधम्मे चेव चरित्तधम्मे चेव । सुयधम्मे दुविहे पं तं सुत्तसुयधम्मे चेव अत्थसुतधम्मे
चेव । चरित्तधम्मे दुविहे पं तं आगारचरित्तधम्मे चेव ।

णीतसुत्र ॥ अथवा रूडुं कह्युं ते नली सुत्रे अथवा सुतानुसारि बुद्धि जिम सुनो फुट्टे काईं मज्जाणइ ॥ निमअर्थ वि णा कहिइं सूत्र नजाणइ ॥ तेनणी सुत्रि रूतिध र्मि ते सूत्र धर्म ॥

उत्समुह ते व्यंजना वग्रह ॥ अथवा श्रोत्रिंद्रियादिनइ सद्दादि विषय नउ संबंध ते व्यंजनावग्रह ॥ प्रवचनपुरुष ना अंगनी परिइं अंग ते आचारांगादि अंगप्रविष्ट ॥ द्विवइकालि कादिक ॥ सुत्री यइ अथवा सुत्री यइ अर्थ एणइं के

॥१८॥

णीयइ अथवा प्रारथीयइ । यम सम्यग अभ्यासइ । तिम सुरूक करइं प्रारथीयइ ते अणी अर्थ ते अर्थधर्म ॥ उपशम
म श्रेणिथकी पडतानइ ॥ संक्लिस्यमानक संयम कहेरी मरूवलो रूपसम श्रेणिइं चडतानइं अथवा क्षपक श्रेणि चडतानइं वि
सुध्यमानक संयम ॥ बादर संपराय संयमना प्रथमाप्रथम समयात ते गुणठाणा पडिवजवाना कालनी अपेक्षाइं जाणवा

अणगारचरित्तधम्मे चेव । दुविहे संजमे पं तं सरागसंजमे चेव वीतरागसंजमे चेव । सरागसंजमे दुवि
हे पं तं सुहुमसंपरायसरागसंजमे बादरसंपरागसरागसंजमे चेव । सुहुमसंपरायसरागसंजमे दु
विहे पं तं पढमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव अपढमसमयसु० अहवा चरमसमय
सु० अचरिमसमयसु० अहवा सुहुमसंपरागसरागसंजमे चेव दुविहे पं तं संकिलेसमाणते चेव
विसुज्झमाणते चेव । बादरसंपरागसरागसंजमे दुविहे पं तं पढमसमयबादरसंपराग अपढम
समयबादरसंप० अहवा चरिमसमय अचरिमसमय बायरसंपरागसरागसंजमे दुविहे पं तं
पडिवातिते चेव अपडिवातिते चेव । वीतरागसंजमे दुविहे पं तं उवसंतकसायवीतरागसंजमे चेव खीण
कसायवीतरागसंजमे चेव । उवसंतकसायवीतरागसंजमे दुविहे पं तं पढमसमयउवसंतकसाय
वीतरागसंजमे चेव अपढमसमयउवसंत० अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय० खीणकसायवीत
रागसंजमे दुविहे पं तं छउमत्थखीणकसायवीतरागसंजमे चेव केवलिखीणकसायवीयरागसंजमे
चेव । छउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पं तं सयंबुद्धछउमत्थखीणकसाय० बुद्धबोहियछउ

चरमाचरमसमयात ते गुणठाणा पछी ॥ जिवारइ सूक्ष्म संपराय गुणठाणुं पडिवजइ तिवारइ जाणवो ॥ अथवा बादर संपराय थकी पडी
मइ असंयत थास्यइ तेह नी अपेक्षाइं चरमाचरम समय जाणवो ॥ रूपसम गुणठाणानउ । अथवा अनिरागुणठाणानउ प्रतिपाती
बादर संपराय सराग संजम ॥ क्षपकनउ ॥ अप्रतिपाती ॥ बादर संपराय सराग संयम ॥ प्रदेसथकी पणि अणवेदीता कषाय जे हनइ ॥ अथवा सहनइ विपाकइ रूपसांतकषाय ॥ ए तलइ अग्यारमा गुणठाणानउ ते रूपसांतकषाय क्षिपक गुणठाणानउ ते उपसांतक
षाय ॥

आत्माइं स्वरूप देखइ ॥ तेहनाणी ज्ञानादि सर्वादि घातिकर्म तेहनइ ॥ तिहार इहि तेह अनइ ॥ संयम ताजीवजीवनउकहइ तेहनीअ
घिव्यादिक कहइ छइ ॥ अघिवीइस काय० सरीरछइ जेहनुं तेअ प्रथवीकायिका ॥ आहारिपर्याप्तिपुरइ तेपर्याप्ता ॥ पर्याप्ति० ॥ साक्तिनि
तेहेतुस्वरूप कहइ छइ × परिणामवचानी समर्थाइ तेआहार पर्याप्ति ॥ सर्व सरीरमाहिइं सर्वधातु पणाइ

मत्थ० सयंबुद्धछउमत्थ दुविहे पं तं पढमसमय अपढमसमय अहवा चरिमसमय अचरिमसमयछउ
उमत्थ० बुद्धिबोधियछउमत्थखीणकसाये दुविहे पं तं पढमसमय अपढमसमय अहवा चरिमसम
य अचरिमसमय केवलिखीणकसाय वीतरागसंजाम दुविहे पं तं संजोगिकेवलीखीणकसा
य अजोगिकेवलीखीणकसाय सजोगिकेवलीखीणकसाय वीयरागसंजाम दुविहे पं तं पढ
मसमय अपढमसमय अहवा चरिमसमय अचरिमसमय अजोगिकेवलिखीणकसाय दुविहे
पं तं पढमसमय अपढमसमय अहव चरिमसमय अचरिमसमय ॥ दुविहा पुढविकातिया पं तं
सुहुमाचेव बायराचेव एवं जाव दुविहा वणस्सतिकातिया पं तं सुहुमाचेव बायराचेव दुविहा पु
ढविकाइया पं तं पज्जत्तगाचेव अपज्जत्तगाचेव एवं जाव वणस्सतिकाइया दुविहा पुढविकाइया पं
तं परिणताचेव अपरिणताचेव जाव वणस्सतिकाइया दुविहा दव्वा पं तं परिणताचेव अपरिणता
चेव दुविहा पुढविकाइया पं तं गतिसमावन्नगाचेव अगतिसमावन्नगाचेव एवं जाव वणस्सतिका

परिणामावी मनपणाइकाढवानी समर्थाइ तेमनपर्याप्ति ॥ तेअपर्याप्ता मरइ तेऊस्सासपर्याप्तिइं । अपर्याप्ता मरइ । पणिसरी
रइंद्रियप्रर्याप्तिइंनमरइ ॥ जेसणी आगल्या सवनुं आऊखुं विणबांधइं मरिवुं नथी तेतो सरीरइंद्रियादि । पर्याप्तिइं ॥ पर्याप्ता
जिआऊखु बांधइ तेसणी ॥ स्वकाय परकाय सस्त्राइं अवितकाम तेअपरिणत तिहांद्रव्यथकी द्रव्यादि तिअडेथइकरी अचसधा
इ ॥ कालथकी पोरूषी आदिकालिइं अचेतथाइ ॥ भावथकी वर्ण गंध रस स्पर्श पलटाइ अचितथाइ ॥ विवक्षपर्याय मनइ पकुवाडइ ते
द्रेव्य ॥ पहिलुं तेपरिणामइं जीवत्यद्रव्य परिणामांतर पुढवता ॥ तेपरिणत ॥ मुलगइं पर्याय इं वर्तेइ तिअपरिणत ॥ तेप्रथवी
वणाइ अपणाहार वालिइं वहइ छइ ॥ एतलइ विग्रहगति नाथली तिसाम्यान्य ॥ किरप्रथवीकायकतेअगतिसमावन्ना।

परिणामा वइ ॥ उस्सास निःस्वास पणाइ काढवानी समर्थाइ तिआणापाण पर्याप्ति ॥ भाषाजीवपुद्गललेई । भाषापणाइ परिणामावी भाषा पणाइ काढवानी समर्थाइ तिभाषापर्याप्ति ॥ मनोयोग्य पुद्गललेई मनःपणइ परिणामावी । मनपणाइ

णाइ परिणामावी वानी समर्थाइ तेसरीरपर्याप्ति पांचइंद्रिययोग्य पुद्गल ग्रहइ ते इंद्रियपणइं परिणामावी समर्थाइ तेइंद्रियपर्याप्ति उस्सासनिस्वास योग्य पुद्गल लेईते पणि

गतिकरइ छइ तेगतिसमावनइ अन्य ॥ एकसमयाऊ इहां कोइ एक आकास प्रदेसइं आश्रयउ छइ । तेकहइ छइ ॥ जीवना
प्रदेसमध्यांतिइं क्षीरनी परिइं वली लोलीसा वपथकी सवांतरइं ता जातां जीव केडइ जाइ ॥ ऊरडामाहइ पइव उपुरूष जिमनदी
सइं ॥ तिम मअप्रत्यक्ष ते अन्यतर केतला एक जीव ॥ प्रदेससघांतिइं दूव्य पवाथकी केडिइं सवांतरिइं अणजाणव की प्रत्य

इया दुविहे दव्वा पं तं गतिसमावन्नगाचेव अगतिसमावन्नगाचेव दुविहा पुढविकाइया पं तं अणं
तरोगाढगाचेव परंपरोगाढगाचेव जाव दव्वा दुविहे काले पं तं उसप्पिणिकालेचेव उसप्पिणि
कालेचेव दुविहे आगासे पं तं लोगागासेचेव अलोगागासेचेव णेरइयाणं दोसरीरगा पं तं अ
ब्भितरगाचेव बाहिरगाचेव अब्भितरइ एकम्मए बाहिरए विउव्विए एवं देवाणुत्ताणियव्वं पुढविका
इयाणं दोसरीरगा पं तं अब्भितरगेचेव बाहिरगेचेव अब्भितरएकम्मए बाहिरगे उलोरालगे ॥
जाव वणस्सइकातिया बेतिंदियाणं दोसरीरगा पं तं अब्भितरएचेव बाहिरगाचेव अब्भितरगे क
म्मए अट्ठिमंससोणितबद्धे बाहिरए उरालिए जाव चउरिंदियाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं दो
सरीरगा पं तं अब्भितरगेचेव बाहिरगेचेव अब्भितरगे कंमए बाहिरए अट्ठिमंससोणियण्हारुछि
राबद्धे बाहिरए उरालए मणुस्साणविएवंचेव विग्गहगतिसमावन्नगाणं नेरतियाणं दोसरीर
गा पं तं तेयतेचेव कम्मतेचेव निरंतरंजाव विमाणियाणं नेरइयाणं दोहिंगाणेहिं सरीरुप्पत्ती
सिया पं तं रागणचेव दोसेणचेव जाव विमाणियाणं नेरइयाणं दुट्ठाणनिव्वत्तिए सरीरगा पं तं राग

संदीस्य इ तेबाह्यसरीर तेबाह्यसरीर । इहां कामतासरीर प्रदेवइ तेजस पणाइं ग्रहिवां पणा नेरइयांने ॥ ऊ ॥ जिसणी भास
माहिइं सरीर छइ ते तणी एकगा विधस्यो ॥ अकांतरइं सरीरकहइ छइ ॥ विग्रहवक्रिवइ सरीरनी ऊत्पति कहइ छइ ।
नेरइयाणं ॥ सरीरनुं नीपाजु कहइ छइ ॥ उत्पत्ति अनइ निर्वर्तिवुं तेहमाहिस्युं विसेष ॥ प्रारंभवु तेउत्पति ॥ पुर्के सरीरनी

पावुं तेनि वीर्तीति ॥ ह विस्तारीर कहइछइ ॥ दोकाया० ॥ ए बेसुत्र अइ लग्यकह्या । तेणाइं जेक रिवउं ते कहइछइ ॥ बिदिषि ॥
आसेवि ० अंगीकरीइ एतलइ ते सामुं मुदकरी । प्रव्रज्या विकउर लोहरणा हिमइ दवइ ॥ मुंडा विवउ ते लोचकरवइ ॥ सीषवि
वुं तेस्युं आर्वनइ दवइ ग्रहणासिष्या इ यिदलेहणा दिसी प्रवइ ॥ आसेवना सिक्षाइ ॥ उवट्ठाविसए ० महाव्रतनो उचरावण ॥ संभूंजितए
० स्तो अन्ननी माहुली इ बिसारिवु ॥ संवासित्तए ० संथारा भाडलीइ संथरा विकउं ॥ सज्झायं ० योग विधि इ करीने ति एहहुं ऊपदेस
वउ ॥ सज्झाय० ॥ योग्यसामाचारी इ करी परिवत्तकरइ । एहवो समुदेस वउ ॥ सज्झायं ० ॥ अनेरानइ तेण वइ एहवुं ॥ अणुजाणिवउं ॥

निव्वत्तिए चेव । दोस निव्वत्तिए चेव । जाव वेमाणियाणं । दो काया पं० तं० तसकाए चेव थावरकाए चे
व । तसकाए दुविहे पं० तं० सव्वसिद्धिए चेव असव्वसिद्धिए चेव । एवं थावरकाए वि । दो दिसाओ अभि
गिज्झ कप्पति निग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा पव्वावित्तए पाईणं चेव उदीणं चेव । एवं मुंडावित्तए सिक्खा
वित्तए उवट्ठावित्तए संभुंजित्तए संवसित्तए सज्झायं उद्दिसित्तए सज्झायं समुद्दिसित्तए सज्झायं मणु
जाणित्तए आलोइत्तए पडिक्कमित्तए निंदित्तए गरहित्तए विउट्टित्तए विसोहित्तए अकरणयाते
अब्भुट्ठित्तए अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जित्तए । दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पति णिग्गंथा
ण वा णिग्गंथीण वा अपच्छिममारणंतिय संलेहणाझूसणा झूसिताणं भत्तपाणं पडियाइक्खिताणं

आलोवुं ते गुरुनइ अपराध कहिवउं ॥ पडिक्कमिवुं ॥ निंदिवुं ॥ ते पोतानि समक्ष अतीचार नुं हवुं ॥ गरहेवुं ते गुरु समक्ष क
हिवउं ॥ विउट्टित्तए ० अतीचार नी श्रेणिनु त्रोडिवुं ॥ विसोहिवुं ते अतीचार पंकनुं प्रक्षालवुं ॥ अकरण० ॥ वलीन ही क
रुं इम अंगीकरिवउं ॥ अहारिहं ० यथायोग्य प्रायश्चित्त ॥ पश्चिम ते आकारनु छेहइ । अकार ते अमंगल परिहरवानइ इति
अपच्छिम ते मरण ते मरणांत तिहां ऊपनी ते मारणांतिकी ॥ संलेखणा इ करइ तां ० पातला करीइ कषाय पातला क
रीयइ । सरीर नइ कषाय एणी इ करी ते संलेखना ॥ तपविसेष ते हनुं जे जूसणा ० ॥ सेवनु ते णइ करी ॥ झूसियाणं ० स १९
२०

ष्या एतलइ सहित । अहवा झुसियाणं ॥ [illegible] करी दहइ अपाउ ते अपश्चिम मारणांतिकी ॥ भत्त थणा लोच णा झूषणा
झुसि तेहनइ लेदिसि संघारा कलइ ॥ इति द्विस्थानके प्रथमोद्देसक ॥ पूर्वि लिउ द्देसकि इ संख्या रोक होउ तेहनइ प्रस्ताव
इ करी देवता थाइ ॥ तेहणा देवस्वरूप कहइ छइ ॥ उड्ढे ० ॥ उर्ध्व लोकना ऊपना ते द्विधा ॥ कप्पो० ॥ सौधर्मादिका ऊप
ना ॥ विमा० ॥ नवग्रैवेयक अणुत्तरना ऊपना ॥ चारो० जोतिष चक्र नुं क्षेत्र ते चार तिहां ऊपना ते चारो पपन्नक ० जोतिष्क

ठीउवगताणं कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तते तं० पाईणं चेव उदीणं चेव ॥ बी
हाणस्स पढमो उद्देसओ सम्मत्तो २१ जे देवा उड्ढोववन्नगा कप्पोववन्नगा विमाणोववन्नगा चा
रोववन्नगा चारट्ठितीया गतिरतिया गतिसमावन्नगा तेसिणं देवाणं सततं समितं जे
पावकम्मे कज्जति तत्थगता वि एगतिया वेदणं वेदेति अन्नत्थगता वि एगतिया वेयणं वे
देति णेरइयाणं सततं समियं जे पावे कम्मे कज्जति तत्थगता वि एगतिया वेयणं वेदेति
अन्नत्थगता वि एगतिया वि एगतिया वेदणं वेदेति जाव पंचेंदिय तिरिक्खजोणियाणं मणु

चारो ० जोतिषचक्र नुं क्षेत्र ॥ तिहां स्थित ॥ २ हिवउं जे हुउ ते स्नु ते आरा स्थितिक । एतलइ मान पोतारवा हिरला ॥ गति ०
रतर ॥ आपन्न० पोहोता ते गतिसमापन्नक ॥ सदा० नित्यं ॥ समितं ॥ निरंतर जे ॥ पावकम्म ० ज्ञानावर्णी आदिक छइ
ति० लागवइ ॥ अन्न ० ॥ नवीन तिहां ऊपना एक कु विपाक भोगवइ ॥ किइ एक ॥ वेदनां ० ॥ विपाकनो उदय ॥ वेदे
एक विपाकना उदयना अनावसकी विकुर्वी ठामइ नमो गवइ ॥ किइ हला २ सो गाहा त्रिमा लिइ ॥ [illegible] ॥ क

मनुष्यसूत्र नइ विषइ इहि एसइ एतला नलोकहिं जे तिहां इम कहता पराक्षी अनइ वेगलुं थाइ ॥ अनइ सूत्रक्रम
मनुष्य सूत्र नइ विषइ इहि एसइ एतला लोकहिं जे तिहां ज्योतिक विमान पहिला कह्या छइ ॥ त
मनुष्य छइ इहां करता अनइ दूर उंचा थाइ तेनतणी एक गमो ॥ तुल्य आलाप ॥ इहां २४ दंडकना प्र
बंधलो २४ दंडकमाहिं कहस्यइ तेसु ॥ पहिलां कह्यो छइ ते अनुष्ठान नुं फल देखाडवा कहिवा ॥ नेरइया ॰ इम
त्ता बंधकी समुच्चय इकेहीया जे सिं वेदना वेदइए ॥ कहिउं ते किहां इम जाणवा गतिआगतिकरइ छइ ॥ नेरइया ॰ इम
कहिउं अनारक नारकमाहिं ऊपजतो ते जि वार नारकनुं आउखुं कदीयि आमउ । तिवारि इहां घके उइनारकी कही यइ

स्साणं समोहतासमोहतेणं अप्पा वेकं मकछुति । इहगता वि एगतिता वेयणं वेदेति । अन्नउ मतावि
स्साणं समोहतासमिते ऊपा विकं मकछुति । इहगतावि एगतिता वेयणं वेदेति । अन्नत्थगता वि
एगतिया वेयणं वेदेति । मणुस्सवज्जं । सेसाणं एगगमा । निरतिता दुगतिता दुयागतिया पं. तं. ने
रइए नेरतितेसु उववज्जमाणे मणुस्सहिंतो वा पंचिंदियतिरिक्खजोणियतेहिंतो उववज्जेज्जा
से चेव णं से नेरतिते णेरतितत्तं विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताते वा पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ता
ए वा गच्छेज्जा । एवं असुरकुमारा वि णवरं से चेव णं से असुरकुमारत्तं विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताते वा
एवा गच्छेज्जा । एवं सव्वदेवा । पुढविकातिया दुगतिया दुयागतिया पं. तं. पुढ
तिरिक्खजोणियत्ताए वा गच्छेज्जा । एवं सव्वदेवा । पुढविकातिया दुगतिया दुयागतिया पं. तं. पुढ
विकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकातितेहिंतो वा णोपुढविकाइएहिंतो वा उववज्जे
ज्जा से चेव णं से पुढविकातिते पुढविकाइयत्तं विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताते वा णोपुढविकाति
त्ताए वा गच्छेज्जा । एवं जाव मणुस्सा । दुविहा नेरइया पं. तं. [illegible]
सव्वसिद्धिया चेव । असव्वसिद्धिया चेव । जाव वेमाणिया । दुविहा नेरइया पं. तं. भवसिद्धिया चेव । अभवसिद्धिया चेव । जाव वेमाणिया । दुविहा नेरइया पन्नत्ता तंजहा अणं २१

जीवना ॰ ॥ अधिकारमाहि इहसव्वादि विसिष्टणमाटइ कहइ छइ ॥ दुविहा ॰ एकलो भवको बीजउ । आंतरा रहित ऊपनो ॥ ते अनंत
रोववन्नक ॥ आगलिपाछलि ऊपना ते परंपरोववन्नक अथवा विवक्षितानां देसघकी अंतरा रहित ऊपना ते अनंतरोवव
न्नक ॥ बीजा परंपरोववन्नक ॥ वाटइ वहता ते गतिसमापन्नक ॥ तिहां नायेनारकते अगतिसमापन्नक ॥ अथवा नारकपणइ पु
हुता ते गतिसमापन्नक ॥ अथवा वलता तेगतिसमापन्नक ॥ अचल ते गतिसमापन्नक ॥ विग्रहगति नारकते अनाहारक ॥ उ श्री

तरोववन्नगा चेव परंपरोववन्नगा चेव जाव वेमाणिया । दुविहा नेरइया पं. तं. गतिसमावन्नगा
चेव अगतिसमावन्नगा चेव जाव वेमाणिया । दुविहा नेरइया पं. तं. पढमसमयउववन्नगा चेव
अपढमसमयउववन्नगा चेव जाव वेमाणिया । दुविहा नेरइया पन्नत्ता तं. आहारगा चेव अणाहारगा चेव
एवं जाव वेमाणिया । दुविहा णेरइया पं. तं. उस्सासगा चेव नोउस्सासगा चेव जाव वेमाणिया । दुवि
हा नेरइया पं. तं. सइंदिया चेव अणिंदिया चेव जाव वेमाणिया । दुविहा नेरइया पं. तं. पज्जत्तगा चे
व अपज्जत्तगा चेव जाव वेमाणिया । दुविहा नेरइया पं. तं. सन्नि चेव असन्नि चेव । एवं पंचिंदिया स
व्वे विगलिंदियवज्जा जाव वाणमंतरा । दुविहा नेरइया पं. तं. भासगा चेव अभासगा चेव । एवमे
गिंदियवज्जा सव्वे । दुविहा नेरइया पं. तं. सम्मदिट्ठिया चेव मिच्छदिट्ठिया चेव । एगिंदियवज्जा सव्वे । दु

सपर्याप्तिपर्याप्ता तेउश्वासक । अनेरा नोउश्वासक ॥ इंद्रिपर्याप्तिपर्याप्ता ते सइंद्रिय । तेणइ अपर्याप्ता अनिंद्रिय ॥ मनःपर्याप्ता ते
संज्ञी । तेणइ अपर्याप्ता ते असंज्ञी ॥ अपरिपूर्ण इंद्रिय जेहना ते विकलिंद्रीय ते १ बिन्द्रियादि चउरिंद्रियपर्यंत ॥ संज्ञी निउं दुकारं
किहां एक ॥ जाव वाणमंतरा एपावांतर छइ ते हनउ अर्थ जि संज्ञी थकी नारकी थाइ ते संज्ञी ॥ असंज्ञी मरी नारक थाइ ते असं
ज्ञी ते तणइ इम कहिउं जाव वाणमंतरा जि तणी असंज्ञी अंतर लगइ ऊपजइ ॥ ज्योतिक विमानिक माहिं न ऊपजइ ॥ भाषाप
र्याप्ता ते भाषक ते तणइ अपर्याप्ता अभाषक ॥

सवेपणानवनाधणी तपरिक्षसंसारी ॥ बीजाअपरितसंसारी ॥ मुक्तिजावघकीवलीनारकपणाइनहीऊपजइ ॥ तेचरमअवी
जाअचरम ॥ पुर्वि विमानिकचरमा चरमइकह्या ॥ अ तेअवधिकरी अधोलोकादिजाणइ जाणवानइविषइजीवनाप्रकारकेक
हीइछइ ॥ अहे ॰ अधोलोकजाणइ ॥ अवधिइकरी देषइ तेअवधिदर्शनिइकरी ॥ समोह० ॥ वैक्रियसमुद्घातकीधइ ॥ अथ
वास्वनाविकअनेरइसमुद्घातकीधइ ॥ असमोह० वैक्रियसमुघातअणकीधिइं ॥ एहइक्षिस्वरूपकहइछइ ॥ अहोहि० छिप्र
अकारनोअवधिछइ ॥ एहनेइयमावधि अघवापरमावधि तेअधोवधि तेहनउधणी ॥ सामाह० कदाचितसमुघातकीधइ

विहा नेरइया पं तं परितसंसारिया चेव अणंतसंसारिता चेव जाव विमाणिया दुविहा नेरइया पं तं
संखेज्ज कालसमयट्ठितीया चेव असंखेज्ज कालसमयट्ठितीया चेव एवं पंचेंदिया एगिंदिय वज्जा
जाव वाणमंतरा दुविहा नेरइया पं तं सुलभबोधिया चेव दुल्लभबोधिया चेव जाव विमाणिया दुविहा
नेरइया पं तं कण्हपक्खिया चेव सुक्कपक्खिया चेव जाव वेमाणिया दुविहा नेरइया पं तं चरिमा चे
व अचरिमा चेव जाव वेमाणिया दोहिं ठाणेहिं आया अधेलोगं जाणइ पासति तं समोहतेणं चे
व अप्पाणेणं आता अहेलोगं जाणति पासति असमोहतेणं चेव अप्पाणेणं आता अहेलोगं जाणति
पासइ आधोहि समोहतासमोहतेणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणति पासति एवं तिरियलोगं
अप्पाणेणं० आपणपिंकदा विसमुघातअणकीधइ आपणा उड्ढलोगं केवलकप्पं लोगं ध दोहिं ठाणेहिं आता अहेलो
इ केवलज्ञान तेसरिषुं परिपुर्णपणाइ ॥ एतलइ केवलज्ञान जिमपुर्ण तिमपरिपुर्णपणाइकप्प० तेसरिषुतेकेवलकल्प ॥ अथ
वा सिद्धांतनाषाइं परिपुर्णतेकेवलकल्पकहीयइ एतलइ १४ रजुलोक ॥ विक्रियसमुद्घातोनेरवैक्रियसरीरकरीनेविक्रे
यसरीरअधोलोकादिज्ञाननइंविषइप्रकार २ कहइछइ ॥ २१

विउव्वितेणं० वैक्रियसरीरिइकरी वलीज्ञानस्वरूपकहइछइ ॥ देसेण० एककांनिइंबहिरो ॥ अनइएककानइमांसलइतेद
सघकीसांभलतोकहीयइ ॥ बेहुकानइजेसांभलइअथवासंभिन्नश्रोत्रीलब्धिनउधणी सर्वघकीसांभलतोकहीयइ ॥ संभिन्न
श्रोत्रलब्धिइकरीसर्वइंद्रियइसांभलइ ॥ तेसण० रसाइं ॥ केतलुंएकजीभनोभाग रोगालोजुइतिहांस्वादनजाणइ ॥ तेसणी
देसथकीरसआस्वादिइ ॥ सघसांभलवादिजीवपरिणमइछइ तेअस्नावमाटइ । वलीपरिणामोत्तरकहइछइ ॥ उसासति०
गं जाणतियासति तं विउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणतियासति अविउव्वितेणं चे
व अप्पाणेणं आहा अहेलोगं जाणइ पासइ एवं तिरियंलोगं उड्ढलोगं च केवलकप्पं लोगं ध दोहिं ठाणे
हिं आया सद्दाइं सुणेंति तं देसेण वि आया सद्दाइं सुणेंति सव्वेण वि आया सद्दाइं सुणेंति एवं रूवाइं
पासति गंधाइं अग्घाति रसाइं आसादेति फासाइं पडिसंवेदेति दोहिं ठाणेहिं आया उसासति तं
देसेण वि आया उसासति सव्वेण वि आया उसासति विउव्वंति परिआवेंति भासंतासंति आहारेति
परिणामेति वेदेति देसघकी उद्योतकरइ ॥ तेआगीआनीपरिइं ॥ सर्वघकी दीवानीपरिइं ॥ अथवा ऊसास ति ॥ जा
णइ ॥ बाहइअवधिनेधणी तोदेसघकीजाणइ ॥ अभ्यंतरावधिनउधणी सर्वघी ॥ पसासति० ॥ अतिदिंउद्योतकरइ ॥ विकुव्वति०
हस्तादिअवयवविकुर्विइं । तेदेसघी विकुर्वण ॥ आपीकायविकुर्विइं तेसर्वघकी ॥ परियारेइ० ॥ मिथुनसेवइ । मनजोगादि
माहिलइएकइजोगइसेविइ तेदेसघकीमिथुन ॥ त्रिणिहियोगिइमिथुनसेवइ तेसर्वघी ॥ भासं० जीभनइअग्रादिकइबो
लवोलइ तेदेसघकीभाषाबोलइ ॥ तालुआदिस्थानकिइंबोलइ ॥ तेसर्वघकी आहारइ० मुषइंआहार तेदेसघकीआहार
मुख आहार ते सर्वघकी ऊपजना आहारलिइ तेऊज ॥ परिणा० पचमाहिसार तेनउठामकेतलोएकप्राहादिकहरूध्यामारइ ॥ ते
देसघकीआहारपरिणामाविइ ॥ तेगामनरजीवीजइसघलइपरिणमावइ तेसर्वघकी परिणमावइ ॥ वेदइति० हस्तादि

MEMORIAL

अवयव इं अनेंसव इं ते देसथकी वेदइ ॥ सर्व अवयव इं आहारना पुद्गलसंचारइं ते सर्वथकी वेदइ ॥ निर्जरेंति ०
आहारस्या परिणामथ्या वेडात्य आहारना पुद्गल ते चलता निर्जरइ ० त्यजइ ॥ वायु निसर्ग ते देसथकी त्यजवुं ॥ सर्वम
शीशि परसे वोसाइ ते सर्वथकी त्यजवुं ॥ एसां सलवादि सथकि ह्या ते अनेरी परि इ परं शुक्कं जु इ तिम जोडवी । यथा को
इ एक स्रोतलणा द्वारानां किसलां एकसं धइ सांभलइ ॥ ते देसथकी सांभलिवुं ॥ कानिं तेह्नां सांभलवुं ते सर्वथकी सांभलवुं ॥
इम रूपादि पणि जोडवा । घरमाहि बोलुं जवो लुंकरइ ॥ ते देसथी अवभासइ । सघलइ प्रकाश की धे ते सर्वथकी अवभासइ द्योतो
इम प्रभासइ विकुर्वइं ॥ आकुरूपं सरीरादि ॥ परिचारइ ० ॥ भोग वइ स्नानइ ॥ आह्रारइ ॥ आहारि अंपरिणामा वइ ॥ वेदइ एवा त्या

निज्झरंति । दोहिं ठाणेहिं देवे सद्दाइं सुणेति । तं देसेण वि देवे सद्दाइं सुणेंति । सव्वेण वि देवे सद्दाइं सु
णेंति । जाव णिज्जरेंति । मरुया देवा । दुविहा पं तं । एगसरीरे चेव बिसरीरे चेव । एवं किंनरा किंपुरि
सा बिसरीरीचेव ॥ गंधव्वा नागकुमारा सुवन्नकुमारा अग्गिकुमारा वायुकुमारा देवा दुविहा पं तं
एगसरीरी चेव बिसरीरी चेव ॥ ३ ॥ बिहाणस्सवी उद्देसव ॥ २ ॥ दुविहे सद्दे पं तं भासासद्दे चेव नो
भासासद्दे चेव ।

थ गप कर्म वेदइ ॥ निर्जरइ ॥ देस सर्व संघलइ इलेवो ॥ ए सांभलवादिस मुचयइं सर्वकिह्री हिवइं देव आ
श्री विगत इं परूपइ छइ । दोहिं ० एसहा दितो सरीरमाहि संख्वी इ ॥ अनइं सरीर तो देवताइं जिसुंदर तेसणि विण तिरस्तारेक
हइ छइ ॥ मरुया ० लोकांतिक देवविसेष ॥ ते जिवारिं लोकांतिकपणाइ ऊपजणहार विग्रहगतिइं जातउ हुइ । तिवारि एक
कार्मणसरीर हुइ ते सणी एकसरीरी । उपना पछी वैक्रियनी परं तिवारि बिसरीरी ॥ अथवा जिवारि सवधरणीयसरीर हुइ ॥ तेह
णी वार एकसरीरी । जिवारि उत्तर वैक्रिय हुइ बिसरीरी हुइ ॥ हिवइं सर्व देवआश्री एवात कहइ छइ ॥ देवा ० ॥ इ ॥ पुंबलइ कहइ
सिइ जीवपदार्थ अनेक प्रकारि कह्या ॥ इहां जीवनइ लोपश्रीवइ पुद्गल क्ष्णा दिपदार्थ श्रीअइ कही सइं कहइ छइ ॥ दुविहे ० एसूत्र
नउ संबंध बीजा उद्देसानी छेहलो सूत्र माहि इम जोडवुं ॥ बीजा उद्देसानइं छेहलइ सूत्रइं देवनुं सरीर कहीउं । तेसरीरमाहि उपणी तास २३

दादिनो ग्रह्णहार हुइ ॥ तेह णी इहां धुरि सद्द कहइ छइ ॥ मुहडइ बोलीयइं ते भाषासद्द ॥ अनेरो तेनो भाषा । अक्षर अक्षरवारू
पते अक्षरसंबंध ॥ अनेरउ ते अअक्षरसंबंध ॥ पडहादिनउ आक्ष ते अतोद्यसद्द । वीणातंति आदि ततत । ततं तिना बे
ले दकघन ते पिंडि जि णा आदि । बांजो झुसिर ते वीणा पडहादिक । एवकु थी रूपनो सद्द ते वितत घन ॥ अनइ झुषिर कहीय
इ ॥ तथा चउ गाथा इं इम कहइ ० स्पइ ॥ ततं वीणादिकं ज्ञेयं विततं पटहादिकं ॥ घनं तु कांस्यतालादि वंशादि सुषिरं मतं ॥ १ ॥

भासासद्दे चेव । भासासद्दे दुविहे पं तं अक्खरसंबद्धे चेव णोअक्खरसंबद्धे चेव । णोभासासद्दे दुविहे
पं तं आउज्जसद्दे चेव णोआउज्जसद्दे चेव । आउज्जसद्दे दुविहे पं तं ततेचेव विततेचेव । तते दुवि
हे पं तं घणे चेव झुसिरे चेव एवं वितते वि । णोआउज्जसद्दे दुविहे पं तं भूसणसद्दे चेव नोभू
सणसद्दे चेव । णोभूसणसद्दे दुविहे पं तं तालसद्दे चेव लत्तियासद्दे चेव । दोहिं ठाणेहिं सद्दु
प्पाते सिया । तंजहा साहन्नंताणं चेव पुग्गलाणं सद्दुप्पाए सिया भिज्जंताणं चेव पुग्गलाणं सद्दुप्पाते
सिया । दोहिं ठाणेहिं पोग्गला साहन्नंति तं सइंवा पोग्गला साहन्नंति परेण वा पोग्गला साहन्नंति

एलेघवबाइ जिनो फेर छइ । तेसणी आहां अनइ तिहां कांई विरुध नही ॥ रूपुरादिनो ते भूषणसद्द । तेहथी अनेरो तेनो भूष
णसद्द ॥ ताल ० हस्तताल ॥ लत्तिया ० कांसीयादि तिहां इ । बाजिंत्र माहिल षव्यामथी तेसणी ते अनोद्य माहि ग्रह्या । अथ
वा पादु मारतां जे सद्द थाइ ते लत्तियासद्द । एसद्द मात्र सदकह्या । हिवइ एहनुं कारण कहइ छइ ॥ दोहिं ० बे ० कारणि इं
॥ सद्दु ० सद्दनुं ऊपजवउं थाइ ॥ साह ० एकठा थाता पुद्गलथी सद्द थाइं ऊपजइ ॥ जिम घंटा अनइ लाली एकठा था
तां सद्द ऊपजइ ॥ भिजं ० भाहमाहि पुद्गल विछुटतां सद्द ऊपजइ ॥ जिमवंसना कटका कापतां सद्द ऊपजइ । पुद्ग
लनउं एकठा थावुं अनइ विछुटवुं ते हनो कारण कहइ छइ ॥ सइंवा ० आफणी पुद्गल एकठा थाइ जिम आभ्र लां बे अ
यइं ॥ परेण ० पुरुषादिकइं एकठा मेलीयइ ॥ भि

भिज्जंति० ॥ बिखरइ ॥ सइंवा ॥ आपणी पुद्गल विघटइ ॥ परेणा० पुरुषादिकइ पुद्गल विघटाडीयइं ॥ सितिंवा० ॥ आप
णी पुद्गल पडइ यम पर्वत शिषर ॥ परिसडंति० सडइ ॥ यिमकुष्टादिकइं आंगुली विद्धंसइ ॥ विद्धंसइ हिम बादलां
पुद्गलनुं स्वरूप कहइछइ ॥ भिन्ना० ॥ विछुटा ॥ तेहथकी अनेरा तेअभिन्न ॥ सूत्र २० ॥ आपणीइ जि भिदवानो स्व
भाव जेहनो ते भिदुर धर्मनो परमाणु ॥ द्विप्रदेसक स्कंधादि ॥ सुहुमा० जेहमाहिं सीतोस्न स्निग्ध रुक्ष एव चस्प संज्ञि
इ । ते सूक्ष्म साथा दिम पुद्गल ॥ बादरा ॥ जेहमाहि पांच आ ठिस्पर्स जाइ । ते बादरा ॥ उदारीक सरीरादि पुद्गल बंधः ॥
पास० पासइ एतलइ । कायजीपिइं । २ इंद्रीय फरस्या । ते पार्श्वस्पृष्ट ॥ पछइ अनइगाढा सरीरमाहि लोली भावक
द्दा द्विंठाणेहिं पोग्गला भिज्जंति तं सयवा पोग्गला भिज्जंति परेणवा पोग्गला भिज्जंति दोहिं ठा
णेहिं पोग्गला परिसडंति तं सइंवा पोग्गला परिसडंति परेणवा पोग्गला परिसाडिज्जंति एवं प
रिवडंति विद्धंसंति दुविहा पोग्गला पं तं भिन्ना चेव अभिन्ना चेव दुविहा पोग्गला पं तं भे
उरधम्मा चेव नोभेउरधम्मा चेव दुविहा पोग्गला पं तं परमाणुपोग्गला चेव नोपरमाणुपोग्ग
ला चेव दुविहा पोग्गला पं तं सुहुमा चेव बायरा चेव दुविहा पोग्गला पं तं बद्धपासपुट्ठा चे
व नोबद्धपासपुट्ठा चेव दुविहा पोग्गला पं तं परियादितच्चेव अपरियादितच्चेव दुविहा
ध्य ते भावस्पृष्ट । ते घ्राणेंद्रियादिय ह गोचर पुद्गलनो बंधः ॥ बद्धः एस इमाहिं घकोटाली यइ ॥ शेष० पार्श्वस्पृष्ट एतलुं
राखी इ ॥ नोबद्धपार्श्वस्पृष्ट । ते श्रोत्रेंद्रिय यरुणगोचर पुद्गल ॥ पुढं सुणाइ सद्दं ॥ रूवं पुण पासइ अप्पुढं तु ॥
गंधं रसं च पासं च ॥ बद्धपुढं वियागरे ॥ १ ॥ व्याख्या ॥ सद्दना पुद्गल कानमाहि फरस्यइ तिवार इ सद्द कानमाहि
संभलाइ ते सलीसद्दना पुद्गल । पार्श्वस्पृष्ट कहीयइ ॥ रूपना पुद्गल ते आंषिनइ विषइ विणफरस्याइ जि आगलजेय
जे रूपदेषायइ ते सली सिद्ध पुद्गले रूपना पुद्गलनइ । बद्धस्पर्श्वस्पृष्ट २ पादमाहिलजे । एकइ पदइ नलासइ २५
गंध रस अनइ स्पर्शना पुद्गल ना जीवसंघाति इ जिवार फरसइ ॥ बद्ध० ॥ गाढा लोली भावथाइ ॥ तिवार । विया
गरे० ॥ जाणइ ते सली घ्राणेंद्रियादिना पुद्गल बद्धपार्श्वस्पृष्ट एबिजुइपदटालीयइ । तिवार । चक्षुरिंद्रियना पुद्ग
लए । अ इंद्रियनी अपकाइ । बद्धपार्श्वस्पृष्ट पुद्गलबमाणपा तिमजीवना प्रदेसइ आ आवथाणिवा ॥ परियाद्
वित्ता पर्याय वछु रत । पर्याय ते पर्यायसहित पुद्गल । पुर्वला पर्याय अनछोडी उ ते पर्यायसहित पुद्गल ॥ अथवा ल
बाकादिता तेमपत्ता इ लीधा जिम कर्मना पुद्गल सर्व ग्रहीयइ ॥ तिमसर्व लीधा ते पर्यायति पुद्गल ॥ तत लाहार जीवइ तउत
पोग्गला पं तं अत्ता चेव अणत्ता चेव दुविहा पोग्गला पं तं इट्ठा चेव अणिट्ठा चेव एवं कं
ता पिया मणुन्ना मणामा दुविहा सद्दा पन्नत्ता तं अत्ता चेव अणत्ता चेव एवं मिट्ठा जाव मणा
मा दुविहा रूवा पं तं अत्ता चेव अणत्ता चेव जाव मणामा एवं गंधा रसा फासा एवं मिक्के
क्के आलावगा दुविहा आयारे पं तं णाणायारे चेव
माहि इंद्र कीके तला एक लीधा केतला एकन लेवाणा ते अपर्यंति पुद्गल ॥ अत्ता चेव० जीवइं परिग्रह मताइ अथवा त्यपुद्गल अ
थवा संसारा दिपणइ अथवा ते अत्त पुद्गल ॥ जे जीवइं मधा अत्या तेअनत्ति । विषइ पुरुषिइं वांछ्या ते इष्ट पुद्गल । बाजा अनिष्ट
सला व या दियुक्त त्य पुद्गल ते कंत ॥ इंद्रियनइ आह्लादनउ रूप जा बलाहार ते प्रिय पुद्गल ॥ करुणइ इवो विकल्प जीवन
इ रूप जावइ ते मनोज्ञ । मननइ वारला अतिसुंदर माहि इ सर्व लाग्य आवइ ते मणाम ॥ आनराई म कहइ छइ जीव
नइ लाउं बालु ते ईष्ट ॥ सदाइं वांछवा योग्य ते कांत ॥ तेह मनइ दीठइ केहनइ द्वेष नथाइ ॥ ते प्रिय ॥ सुंदर एत
लइ मननइ रमाडइ ते मनोज्ञ ॥ जेवा लीइ सो सलता पाणि मननइ ॥ आम० ॥ प्रियत मनाम ॥ पुद्गल इंजीपना तेस
ह्मादि तेअत्त एकछ वि सपणा स्वरितक हइछइ ॥ सूत्र ३० ॥ पुद्गल मय पुद्गलन स्वजाचक हिक हिवइ जीवनइ धर्मक हइछै

आचरिवुं ते आचार ॥ निस्संकियइत्यादि ८ विधदर्शनाचार ॥ पणिहाणइत्यादि ॥ समति ५ गुप्ति ३ ते चारित्राचार ॥
बार भेद तप ते तपाचार ॥ बारस विहंमि तवेइत्यादि ॥ ज्ञानादिकनइ विषइ सक्तिनुं अणगोपववुं ते वीर्याचा
र । इक्के च । अणुगुहियइत्यादि ॥ वीर्याचार तेइ जे स्वरूप विशेषथकी कहिवा इं कहइ छइ ॥ समा० प्रशस्तभाव ते स
माधि । प्रतिमा० पडिवजवउ । तप्रतिमानी जे समाधि ॥ ते समाधिप्रतिमा । दसा श्रुतस्कंधमाहिली श्रुतसमाधिप्रति
मा । सामायिकादि चारित्रसमाधिप्रतिमा । ए बेहु भेदि ते इहां समाधिप्रतिमा लेवी । उपधान० तप ॥ तेहनी जे प्रति
मा ते उपधानप्रतिमा ते १२ उपासकप्रतिमा १२ भिक्षुप्रतिमा जाणिवी ॥ विवेग० त्यजवुं ते अभ्यंतरथकी कषाया दि
कनुं बाह्यथकी गच्छ सरीर अजोग्य अन्नपाणी मन्नं छांडवकं । एहवुं पडिवजवुं । ते विवेकप्रतिमा । कायोत्सर्गनु
नो णाणायारे चेव णोनाणायारे दुविहे पं तं दंसणायारे चेव नोदंसणायारे चेव नोदंसणा
यारे दुविहे पं तं चरित्तायारे चेव नोचरित्तायारे चेव नोचरित्तायारे दुविहे पं तं तवा
यारे चेव वीरियायारे चेव दो पडिमाउ पं तं समाहिपडिमा चेव उवहाणपडिमा चेव दो
पडिमाउ पं तं विवेगपडिमा चेव विउस्सग्गपडिमा चेव दो पडिमाउ पं तं भद्दा चेव सुभद्दा
चेव दो पडिमाउ पं तं महाभद्दा चेव सव्वतोभद्दा चेव दो पडिमाउ पं तं खुड्डिया चेव मोयप
करिवुं ते व्युत्सर्गप्रतिमा पूर्वादिक दिशि ४ दिसिइं प्रत्येकं २ पोहोर लगइ काउस्सग्ग करिवुं ते भद्राप्रतिमा ते
बिदिहाडा लागइ ॥ सुभद्रा पणि एहवी जे संभावीइ छइ । प्रतिकारिइ की होहीनहीं तेमाटिइं विस्तारइं लिखी
नहीं ॥ पूर्वदिसि आदि दसी दिसिइं । प्रत्येक अहोरात्र एक काउस्सग्ग करिइ ते महाभद्रा । ते बिहिती दिन ४ लागइ
पुर्वादि दिसइ प्रत्येक अहोरात्र लिगइ काउस्सग्ग करइ ते सर्वतोभद्र ॥ ते बिहिता दिन १० लागइ ॥ मोक० मा
त्र तेहनी प्रतिमा० प्रतिज्ञा ए तलइ मात्र जन करइ ते मोकप्रतिमा । तेइ भयथकी मात्रु जन करइ ॥ ए त्रेचवकी आम
दिवाहिर पडिवजइ ॥ काल थकी सरद उनि विषइ अथवा ग्रीष्मऋतुनइ विषइ पडिवजइ ॥ सावककी देवा

दिकना कीधउपसर्ग सहिइ तेहना २ भेद ॥ एक लघु मोकप्रतिमा ॥ बीजी महती मोकप्रतिमा ॥ तिहां जघन्य जमी
नइ ए प्रतिमा पडिवजइ तउ ६ दिहाडि पूरी थाइ ॥ अण जिमइ पडिवजइ तो सात दिहाडइ पूरी थाइ एलहुडी ॥ अथ
जमी पडिवजइ तो ७ दिहाडइ समाप्ति ॥ अणजमइ पडिवजइ तो ८ दिहाडि समाप्ति थाइ वडी ॥ जवना सरीषो
मध्य पतलो लागइ जे हनइ ते जवमध्या ॥ कलानइ वधारवइ घटाडवइ करी चंद्र सरिषी जे प्रतिमा ते चंद्रप्रतिमा
ते शुकुपक्षइ एकवा करतां जवमध्या चंद्रप्रतिमा आरंभइ । अजुआली पडवेनइ दिहाडइ एक कउली जिमइ । एमए
किइए किइ वधारता पुनिमानइ दिहाडइ १५ कउलीआ जिमइ ॥ अंधारा पडवेनिइं दिनइ १५ जि कउलीया जमइ ए
एलइए को को घटाडता दिन दिन प्रति अमावास्याइ एक कउली जिमइ । जिम जवनो पेट जाडो । अणी वेछुपा
डिमा महल्लिया चेव मोयपडिमा दो पडिमाउ पं तं जवमज्झा चेव चंदपडिमा वइरमज्झा चे
व चंदपडिमा दुविहे सामातिते पं तं आगारसामातिते चेव अणगारसामातिते चेव
दोण्हं उववाते पं तं देवाणं चेव नेरइयाणं चेव दोण्हं उव्वट्टणा पं तं नेरइयाणं चेव भव
नवासीइ तिम ए प्रतिमा निइं वधि १५ कउलीया आव्या तेसणी मध्य जाडी । धुरि छेहडइ एक कउली आव्यो तेमाटइं
ते जु अणी पातली । अनइ वैरमानी कलानी परिइ कउलीया वधारता घटाडता तेसणी जवमध्या चंद्रप्रतिमा ॥ अंध
री पडिवइ ते दिनइ १५ कउलीया आव्या तेमाटइ धुरि छेहडइ जाडी ॥ यमइ जिम वज्र ते धुरि अनइ छेहडइ जाडउ
मध्य पातलु । तिम ए प्रतिमा धुरि छेहडइ १५ कउलीआ आव्या तेमाटइ धुरि छेहडइ जाडी ॥ बिचइ एक कउली आव्यो
तेसणी मध्यइ पातली । चंद्रनी कलानी परिइ कउली आवधारता घटाड्या तेसणी वज्रमध्या चंद्रप्रतिमा ॥ प्रतिमा तो
सामायिक वतनइ कहइ तेसणी तेकहइ छइ ॥ सम० ॥ ज्ञानादिकनइ आय० ॥ लाभ ते सामाय । अनइ जे सामाय
ते हिजि सामायिक ॥ देसविरति ते आगारसामायिक ॥ सर्वविरति ते अणगारसामायिक ॥ जीवधर्मना अधिकारनइ
विषइ इजि जीवनउ स्वभाव कहइ छइ । तेहना २४ सूत्र ॥ ए सम्मूर्छजन्म ते बिना जे ऊपजवउ ते ऊपपात

उवहृत्ता० काय्याबकीनीकलवुं मरणाईत्यर्थः। अधोलोकना देवतानां आवास तिहां नावसणहार ते सवनवासी तेहुनइ॥
इहां सवनवासीनी तेनवनवति एप्रासिधअर्थनी कीमइ। जेसणी इहां सवनवासी सहूमां हि म्येतरवणिअइस्याइ तेसणी
। ते सवनवासी सघइ समुच्चयइ अधोलोकनावसणहार देव॥ वय्यतो० व्यवचके मरण इत्यर्थ॥ गर्भमा हिं व्यवक्रांति०
उत्पति ते गर्भव्युत्क्रांति॥ वेउव्वीनइ गर्भमा हिपका आहार। ध्रमआगलि नली गर्भमा हि बकी जेकुइ तेव्हइ छइ। स
रीर नउ रूप वध्य ते इछि॥ सरीरनी हाणि ते निर्हाणि॥ एतलइ वात पित्ता दिकइं करी शरीरनी हाणि ते निर्हाणि। वेक्रियल
ब्धिनउ धणी पटमा हि बकउ विकुर्विइ ते विकुर्वण॥ बालवकं पणिव अथवा मरीनइ अनेरी गतिइं आवुं ते गतिपर्या
र्य। जिसणी जीवगर्भमाहि थो संग्रामकरवा चालइ ते सणी गतिपर्याय ते चालवउं पणि कहीयइ॥ समुघात ते मा

णवासीणं च्चेव दोक्कविचयणा पं तं जोतिसियाणं च्चेव विमाणियाणं चेव दोक्कं गब्भवक्कंती पं तं
मणुस्साणं च्चेव पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं च्चेव दोन्हं अब्भछाणं आहारे पं तं मणुस्सा
णं चेव पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं चेव दोक्कं गब्भछाणं वुड्ढी पं तं मणुस्साणं च्चेव पंचिंदि
य तिरिक्खजोणियाणं च्चेव एवं निव्वुड्ढी विगुव्वणा गतिपरियाए समुदघातकालसंजोगे आ
यातिं मरणे दोक्कं छविपव्वा पं तं मणुस्साणं च्चेव पंचेंदिय तिरिक्खजोणियाणं च्चेव दोसुक्क

रसाणि तिकादि॥ कालनी कीधी गर्भनी अवस्था ते कालसंयोग॥ गर्भमाहि बकी नीकलवुं ते आयाति। तेरूप जे मरण ते आ
याति मरण॥ छवि० चवा ते सहित जे। पव्वा० सांधि नी बंध ते छवि पर्व॥ सविपरणाए पाणीतरनो एअर्थ॥ बांध
[illegible] सहित सरीर॥ छविपव्वाए पणिपाणीतरइवाडी ते सुनउ एअर्थ॥ छवि० बावडी रूपनी ते छविमाणि॥ १
वैकि सर्वबालगर्भमाहि थकी नइ जो उवा॥ वीर्यनइ अनइ लोहीइ करी उत्पति जेहनी ते शुक्रसोणितसंभवा॥ २६

समुच्चयइ असेब्यात उ सप्पिणी आदि लगिइं ब्रह्मादिपणइ रहिवउ ते कायस्थिति क॥ मनुआउखुं पा मुंछइ जेहुना जेहनी
गइ रहिवउं ते सवस्थिति॥ दोक्कं० मनुष्यनइ अनइ तिर्यंचपंचिंद्रियनइ कायस्थिति। जिमइहां कही तिम एएकें
द्रियइ० कायस्थिति छइइ जितो॥ तउ एकेंद्रियकाइं न कह्या। उत्तर॥ इहां कायस्थिति॥ ७॥ ८॥ सवग्रहणलगइ
लीछइ। ते एहवी कायस्थितिनो। तिर्यंच पचेंद्रियइनइं इंद्रि जेकहइ। तेमाटिं पंचेंद्रिय तिर्यंच ग्रह्या छइ॥ तेमाटइ
काइं एकेंद्रियनइं कायस्थितिनि षेधीन थी॥ तयसणी सगवं तसूत्रनो विविश्रा तिछइ तेनणी विरूध नहीं॥

साणितसंभवा पं तं मणुस्साणं च्चेव पंचेंदिय तिरिक्खजोणियाणं च्चेव दुविहा ठिती पं तं का
यठिती च्चेव भवठिती च्चेव दोक्कं कायठियी पं तं मणुस्साणं च्चेव पंचिंदिय तिरिक्खजो
णियाणं च्चेव दोन्हं भवठिती पं तं देवाणं च्चेव नेरइयाणं च्चेव दुविहे आउते पं तं अ
घाउते च्चेव भवाउते च्चेव दोक्कं अघाउते पं तं मणुस्साणं च्चेव पंचिंदिय तिरिक्खजोणि
याणं च्चेव दोक्कं भवाउते पं तं देवाणं च्चेव णेरइयाणं च्चेव दुविहे कम्मे पं तं पदेसकम्मे
च्चेव अणुभावकंमे च्चेव दो अहाउयं पालेंति तं देवच्चेव नेरइय च्चेव दोन्हं आउयसं

अद्धा० काल तेणइ प्रधान जे आउखुं ते अद्धायुष्क॥ जेसवांतरि केडिं आउखुं लाइ। जिम मनुष्य मरी मनुष्य थाइ
तेहनइ मनुष्यनुं आउखुं केडिं गयुं कहीयइं ते अद्धाउखुं॥ सविइकरी प्रधान जे आयुष्क ते सवाउखुं।
जे आउखुं केडइ न जाइ। जिम देव मरी मनुष्य थाइ। तेहनइ देवनउं आउखुं केडइ ना वुं॥ तेसणी ते सवायु
ष्क कहीयइ॥ जे कर्मना प्रदेस०॥ पुद्गलइं जि विदीयइ ते प्रदेसकर्म एतलइ रसबांध्योकाइ जेकर्मनउ तेकर्म [illegible]
। जीमसोगवीइ। तिमनसोगवीयइ तउ किम सोगवीयइ। प्रदेसमात्रेपणइ। जे वेदीयइ ते प्रदेसकर्म॥

अनुभाव॰ थेकर्मना स्थिरसबंधसणउबइ तीउ ठवबंध तोछइ। तिमसीगवीइ तेअनुभावकर्म॥ अहा॰॥जी तलुंबांध्युं छइ। तेउदयवालइ। तेयथायु बंध्उं पणिआयुबंधसें केलइनहीं॥ उक्केव॥ देवानेरइया विय॥ असंखवासाउयाय॥ ति रिमणुया उत्तमपुरिसायतेहो॥ चरमसरीराय निरुवकमा॥१॥ इहां असंख्या तवर्षना तिर्यंच मनुष्य हिनकह्या॥ तेइं निरुपक्रमआऊषानाधणी ल ठ छइ जिना॥ ते बेगणामा टइं तेसणी तदोष॥ आऊखुं बांधेसंके लइ बुं तेसंवर्तक॥ द्विवइ पर्यायिनउ अधिकारक्षा लइ छइ। ते सणी मर्यादावरती क्षेत्रनइ विषइ आश्रयी कहो॥ अ नक्षेत्रते पुद्गलपर्यायिवइ तेसणी क्षेत्रनुं स्वरूप

कहे छे — 28

वहंति पं तं मणुस्साणं च्चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव जंबुद्दीवेणं दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा पं तं बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्नं णातिवट्टंति आयामविक्खंभसंठाणपरिणाहेणं तं भरहे चेव एरवते च्चेव। एवमेतेणमहिलावेणं हेमवते चेव एरन्नवते च्चेव हरिवासे च्चेव रम्मयवासे चेव जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं दो खेत्ता पं तं बहुसमतुल्ला॥अ

षकहइछइ॥ इमसहू अनइं उत्पसहू एकार्थइ जिछइ तउ बिअयानुंस्पुंकार्य॥ तेअन्यंतर क्षेत्रनुंस रिखापणो जाणवानइ अर्थ्या॥ तिहां प्रमाणवकोघणो अत्यंतसरिखा ते बहुसमतुल्य॥ पर्वतनगरीआदिना कीधसविशेषरहित ते अविसेष॥ अवेसर्पिणीआदिना कीधस आयुषाना भेदरहित ते अनानात्व॥ आयाम॰ लांबपणाइ॥ विरकं स॰॥ पिहुलपणाइ॥ संठाणे॰ धनुषादिआकारइं करी॥ परिणा॰ परिधइं करी॥ अन्नमन्नं॰ माहोमांहि॥ णा तिव॰॥ उलंघइनहीं॥ अथवा आयामपणाइ बहुसमतुल्य। विक्खंसपणइ अविसेष विसेषरहित॥ संठाणइं अ नानात्वकंइ आपणाइं रहित॥ परिधइं करी॥ अन्न॰ माहोमांहि कउलंघइनहीं॥ एसर्वपदार्थ एकइ जि छइ॥ अथवा क्षेत्र 29

BHAU DAJI MEMORIAL

ओयरणा परइछइ पक्ष्नो। २७॰ पलेतीमा पक्॰ पक्ष्नो

अभवा नुसरिखापणुं कहइवा निकह्या तेसणी न धुनरुक्त दोष॥ मह॰॥ अतिमोटा॥ अल्पंत॥ मह॰॥ तेजनउं॥ अथवा महु॰॥ उसवतु॥ आलय॰॥ नाम॥ महाद्रु॰॥ प्रसस्तपणाइ करी महाइक्षा ते महाद्रुम॥ उच्चत॰॥ ऊंचापणाइ करी॥ उवेह॰ ऊंडापणइकरी॥ संठाण॰ आकारिकरी॥ परिणाह॰॥ परिधिइंकरी॥ माहोमांहि ऊलंघइ नहीं॥ कूड॰॥ शिखरनइआकारिइं। त्यां शाल्मलीतेकूड सालमली एहवी संज्ञा सुदर्शन एहवउं तेसणी सुदर्शनाए॥ जंबु तेहनी मर्ध्यादा नहीं। यद्यपि तेहनीविष्कंभ बांदीच्युं अवसाद परिवारतेना दिकनी ऊरु नइ इवइ। तेमहर्द्धिक॥ जाव माहिएतली पाठ ऊंवी सेहाइ जि॥ मोटी रोधि आवास परिवार रत्नादिकनी ऊइनी तेमहा इक्तिक॥ मोटी [illegible] अचिंत्य शक्ति विशाली॥ महाछुई या॰॥ मोटी शरीराभरणनी दीप्तिऊइनी तेमहा

३२६ प्रमाणसकलापक्ष

विसेसा जाव पुव्वविदिहे चेव अवरविदिहे च्चेव जंबुमंदरस्स पव्वतस्स उत्तरदाहिणेणं दो कुराउ पं तं बहुसमतुल्लाउ जाव देवकुरा च्चेव उत्तरकुरा चेव तत्थणं दो महतिमहालता महादुमा पं तं बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्नं णाइवट्टंति आयामविक्खंभुच्चत्तोव्वेहसंठाणपरिणाहेणं तं कूडसामली च्चेव जंबू च्चेव सुदंसणा तत्थणं दो देवा महिड्ढिया जाव महासोक्खा पलिओवममट्ठितीया परिवसंति तं गरुले च्चेव वेणुदेवे अणाढिते च्चेव जंबुद्दीवाहिवती

कितिमकरवादिकनी तेमहानुभाव॥ ग॥ मोटी रख्याति ऊइनी तेमहायस मोटीसरीरनी समर्थाई। तेमबल॥ मोटउ आनंद मयसौख्य छइनउं तेमहासौख्य॥ कह्या एक पल्योपम स्थितिकाय सागरोपम। तिहां॥ मलस॰ मोटाईश्वर॥ एह वउं॥ आरो॰॥ नामछइ तेहनु तेम आश्रय॥ वेणुदेव ते नाम सुपर्णकुमारनी जाति नोछइ तेसणी गरुड ॥ अणाढित॰ अनादृत एनाम॥ जंबूद्वीपनुअधिपति लोकइ॥

२९ तृ९ सरुजा॰ रकलपक्ष्नो

कोयण तेना च मुद्रापक्ष नी माहेल आ॰ प॰ जुदि उमाय्वपक्ष नो

वासहर० वर्ष० पर्वत विसेष तेहनइ धरइ। ते पर्वत वर्षधर। एतलुं आसं० धुरि नीचा अनइ छेहडइ ऊंचा ते
नणी घोडानां स्कंधनी परि। अर्धचंद० वडमानुं अर्ध तेहनुं जे संठाण। आकार एतलइ हस्तीनां दांतनो आ
कार तेणइ करी संस्थित रह्या ते अर्धचंद्रसंस्थानसंस्थित। अर्धचंदसंठाणसंठिया एपाठांतर सुगम। व

जंबुमंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासहरपव्वया पं० तं० बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता
अन्नमन्नं णातिवट्टंति आयामविक्खंभुच्चत्तोव्वेहसंठाणपरिणाहेणं चुल्लहिमवंते चेव सिहरि
चेव एवं महाहिमवंते चेव रूप्पि चेव एवं णिसढे चेव णीलवंते चेव जंबुमंदरस्स पव्वय
स्स उत्तरदाहिणेणं हेमवतेरन्नवतेसु वासेसु दो वट्टवेयड्ढपव्वता पं० तं० बहुसमतुल्ला
अविसेसमणाणत्ता जाव सद्दावती चेव वियडावती चेव तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया जाव प
लिओवमट्ठितीया परिवसंति तं० साति चेव पभासे चेव जंबुमंदरस्स उत्तरदाहिणेणं हरि
वरिसरम्मतेसु वासेसु दो वट्टवेयड्ढपव्वता पं० तं० बहुसमजाव गंधावती चेव मालवंतपरि
याते चेव तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति तं० अरुणे चेव पउमे
चेव जंबुमंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं देवकुरा उत्तरकुरा उ पुव्वावरपासे एत्थ णं आसखंध
सरिसा अद्धचंदसंठाणसंठिया दो वक्खारपव्वया पं० तं० बहुसमजाव सोमणसे चेव विज्जुप्पभे
चेव जंबुमंदरउत्तरेणं उत्तरकुराए कुराए पुव्वावरपासे एत्थ णं आसखंधसरिसा अद्धचंद
संठाणसंठिया दो वक्खारपव्वया पं० तं० बहु जाव गंधमायणे चेव मालवंते चेव जंबुमंदरस्स २८
पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो दीहवेयड्ढपव्वया पं० तं० बहुसमतुल्ला जाव भरहे चेव दीहवेयड्ढे चेव २८

२२० पजोयणा कलाइ लांबा॥ ५०० जो० ५०० पहोलो ५ तेथ आणा॥

जाराणी परि इ देवकुरुनो साजलो काधे तेह णीवषार पर्वत

४२१० जो० कला २ पहलो। ऊंचु २०० जो० चारित्त जोयणनो। १२८ बेरजो० कलार पहोलो।

दीहवेयड्ढ। अथवा दीर्घ वैताढ्य अथवा विजयार्द्ध एव संस्कार। चुल्लहिमवंतादिकनइ विषइ वि वइ बहु
ऊंच पण्णा बाजउ अनइ छेहलो ते बेठाण मानइ। तथा श्रीदेवी आदि हनी देवीनुं एक पल्यनुं आउखु छइ तेह
णी संपन्न पतिणी तेजाणवी। जेहणी अंतरानुं तउ अर्द्ध इ लि पल्य आउखु छइ। तेहणी इहां प्रथा तइह कह्या छइ

एरावते चेव दीहवेयड्ढे जाव दीहवेयड्ढे दो गुहाओ पं० तं० बहुसमतुल्लाउ अविसे
समणाणत्ताउ अन्नमन्नं णातिवट्टंति आयामविक्खंभुच्चत्तसंठाणपरिणाहेणं तं० तिमिसगुहा
चेव खंडप्पवायगुहा चेव तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति तं० क
यमालए चेव णट्टमालए चेव एरावते णं दीहवेयड्ढे दो गुहाउ पं० तं० जाव कयमालए चेव
णट्टमालए चेव जंबुमंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंते वासहरपव्वए दो कूडा पं०
बहुसमतुल्ला जाव विक्खंभुच्चत्तसंठाणपरिणाहेणं तं० चुल्लहिमवंतकूडे चेव वेसमणकूडे
चेव जंबुमंदरदाहिणेणं महाहिमवंते वासहरपव्वते दो कूडा पं० बहुसम जाव महाहिम
वंतकूडे चेव वेरुलियकूडे चेव एवं णिसढे वासहरपव्वते दो कूडा पं० बहुसम जाव णिस
ढकूडे चेव रुयगकूडे चेव जंबुमंदरउत्तरेणं नीलवंते वासहरपव्वते दो कूडा पं० बहुसम
जाव नीलवंतकूडे चेव उवदंसणकूडे चेव एवं रुप्पिम्मि वासहरपव्वते दो कूडा पं० बहुसमतुल्ला
जाव तं० रुप्पिकूडे चेव मणिकंचणकूडे चेव एवं सिहरिंमि वासहरपव्वते दो कूडा पन्नत्ता तं० जहा

तं० पभात कुंडले वा॥ जंबुद्वीपनो अधिकार चालइ छइ॥ तेहणी ही मनुष्यस्वरूप कह्यो अनइ पुद्गलधर्मनो अधिकार मा दिशि प्र
अनाविभाग ह्रदादिए हिवइ जंबुद्वीपसंबद्धो आसणा वादिकना कालरूप पर्याय धर्म १८ सूत्रे करी कहइ छइ। नीता तेहसपिं०

कालग बोला॰

पाचवरसतियुगतेहनइविषयइ॥ तिहांकेवलीएकसमयइ॥ इहांएकसमएएमाठपहिलो छइ।पति अधिकरतापछइएह .नउअर्थकीधउ छइ॥ जेसेलीसबध ... तेसत्तीअथवा पिंडतकूडइ तेवली त्यमक्षाणो तिम अधिकरिहो॥

सिहरिकूडे चेव तिगिंछिकूडे चेव जंबुमंदरउत्तरदाहिणेणं चुल्लहिमवंतसिहरीसु वासहरप
व्वतेसु दो महद्दहा पं. बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्नं णातिवट्टंति आयामविक्खं
उव्वेहसंठाणपरिणाहेणं तं. पउमद्दहे चेव पुंडरीयद्दहे चेव तत्थ णं दो देवयाओ महिड्ढि
याओ जाव पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसंति तं. सिरि चेव लच्छि चेव एवं महाहिमवंतरुप्पीसु वास
हरपव्वतेसु दो महद्दहा पं. बहुसम० महापउमद्दहे चेव महापोंडरीयद्दहे चेव देवताओ हि
रि चेव बुद्धि चेव एवं निसढनीलवंतेसु तिगिंछिद्दहे चेव केसरिद्दहे चेव देवताओ धिती
चेव कित्ति चेव जंबुमंदरदाहिणेणं महाहिमवंताओ वासहरपव्वताओ महापउमद्दहाओ दो म
हाणतीओ पवहंति तं. रोहिय चेव हरिकंता चेव एवं निसढाओ वासहरपव्वताओ तिगिंछि
द्दहाओ दो महानईओ पवहंति तं. हरि चेव सीतोता चेव जंबुमंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं नीलवंताओ
वासहरपव्वताओ केसरिद्दहाओ दो महानईओ पवहंति तं. सीता चेव नारिकंता चेव एवं रुप्पीओ वास
हरपव्वताओ महापोंडरीयद्दहाओ दो महानईओ पवहंति णरकंता चेव रुप्पकूला चेव जंबुमंदरदा
हिणेणं भरहे वासे दो पवायद्दहा पं. बहुसम तं. गंगप्पवायद्दहे चेव सिंधुप्पवायद्दहे चेव एवं
हिमवए वासे दो पवायद्दहा पं. बहुसम तं. रोहियप्पवायद्दहे चेव रोहियंसप्पवायद्दहे चेव
जंबुमंदरदाहिणेणं हरिवासे वासे दो पवायद्दहा पं. तं. बहुसमं तं. हरिपवायद्दहे चेव हरिकंतप २८

वहे॥ तिकाचुंवाक्य॥ वि अरिहंतनावासा॰॥ प्रवाह पकसरतनो प्रवाहा॥ बीजो ऐरवतना अरिहंतनो प्रवाहा॥

सिधंतनी ... तवासद्वेकदीयइ॥ तेहनावंसा॥ प्रवाह॥ सुसमसुसमं॰॥ उतमं ... तिपहिला आरानी ...

× सीता दप्पवा यद्दहे चे व ×

वातद्दहे चेव जंबुमंदरउत्तरदाहिणेणं महाविदेहे वासे दो पवायद्दहा पं. बहुसमा जाव सीतप्पवा
यद्दहे चेव जंबुमंदरउत्तरेणं रम्मते वासे दो पवायद्दहा पं. नरकंतप्पवायद्दहे चेव णारिकंतप्प
वायद्दहे चेव एवं हिरन्नवते वासे दो पवायद्दहा पं. तं. बहु० सुवन्नकूलप्पवायद्दहे चेव रुप्पकूल
प्पवायद्दहे चेव जंबुमंदरउत्तरेणं एरवए वासे दो पवायद्दहा पं. तं. बहु० जाव रत्तप्पवायद्दहे चे
व रत्तावईप्पवायद्दहे चेव जंबुमंदरदाहिणेणं भरहे वासे दो महानईओ पं. तं. बहु० जाव गंगा चेव
सिंधु चेव एवं जहा पवायद्दहा एवं नतीओ भाणियव्वाओ जाव एरवए वासे दो महानईओ पं. तं. बहुस
मतुल्लाओ जाव रत्ता चेव रत्तवती चेव जंबुद्दीवे दीवे भरहएरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पि
णीए सुसमदूसमाए समाए दो सागरोवमकोडाकोडीओ काले होत्था एवमिमीसे उस्सप्पि
णीए जाव पन्नत्ते एवं आगमेस्साए उस्सप्पिणीए जाव भविस्सति जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु
वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए मणुया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था दोन्निय
पलितोवमाइं परमाउं पालयित्था एवमिमीसे उस्सप्पिणीए जाव पालयिंसा एवमागमेस्साए उस्स
प्पिणीए जाव पालयिस्संति जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमए एगजुगे दो अरहंत
वंसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा एवं चक्कवट्टीवंसा दसारवंसा जंबु भरहेरवए एग
समए एगजुगे दो अरहंता उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा एवं चक्कवट्टि एवं बलदेवा एवं

संपदा। ऊवपणं आजंबु॥ ... नादीक्षसो॥ गोपसो ... प्रधानसंपदा ... संपदा ... बिचरि। इहां ... नही॥ अनइ

ङीगोलीप्रानइ पातइवस्तु ... अनइ सोग नइ छे पणि छइ॥ तेकाणि अथवा सुषम सुषमा काल विसेषनइ एकन्त इधिताग वतारहइ॥ अनंतर जंबुद्वीपनइ विषइं यनइ कालरूप पर्याय कहिया॥ हिवइ जंबुद्वीपनइ क्षेत्रि विषइ॥ कालना प्रगट

वासुदेवा जाव तप्पइसंतिवा जंबु दोसु कुराइसु मणुता संता सुसमसुसम मुत्तम मिड्ढिपत्ता पच्चणुभव माणा विहरंति तं देवकुराचेव उत्तरकुराचेव जंबुदीवे दीवे दोसु वासेसु मणुयासता सुसमसम मुत्तमइ ड्ढिपत्ता पच्चणुभवमाणा विहरंति तं हरिवासे चेव रम्मगवासे चेव जंबुद्दीवे दोसु वासेसु मणुतासता सुसमदुसम मुत्तमं मिड्ढिपत्ता पच्चणुभवमाणा विहरंति हेमवते चेव एरन्नवते चेव जंबुदीवे दीवे दोसु खेत्तेसु मणुयासता दुसमसुसममुत्तम मिड्ढिपत्ता पच्चणुभवमाणा विहरंति तं पुव्वविदेहे चेव अवरविदेहे चेव जंबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया छव्विहं पिकालं पच्चणुभव माणा विहरंति भरहे चेव एरवए चेव जंबुदीवे २ दो चंदा पभासिंसुवा पभासंतिवा पभासिस्संति वा दो सुरिया तवइंसुवा तवंतिवा तवतिस्संतिवा दो कत्तियाउ दो रोहिणीउ दो मग्गसिरा दो अद्दाउ एवं भाणियव्वं कत्तिय रोहिणि मग्गसिर अद्दाय पुणव्वसु य पूसाय तत्तोय अस्सले सा महाया दो फग्गुणीउ य हत्थो चित्ता साती य विसाहा तहय होति अणुराहा जेट्ठा मुलो पुव्वाय आसाढा उत्तराचेव अभिइ सवण धनिट्ठा सय भिसया दो य होंति भद्दवया रेवति अस्सणि भरणि नेयव्वा आणुपुव्वीते एवं गाहाणुसारेणं णेतव्वं जाव दो भरणीउ दो अग्गी दो पयावती दो सोमा दो रुद्दा दो अदिती दो वहस्सती दो सप्पी दो पाती दो भगा दो अज्जमा दो सविता दो तट्ठा दो वाऊ ३०

लुंध एहवुं नाम बइ॥ इहांथी अंगारकादि २८ ग्रहनी संख्या तिहां ... [illegible] ... २८ ग्रहना नाम मिलवा॥ ... तंजहा॥ अथवा जहा॥

अंगालए १ वियालए २ लोहियक्खे ३ सणिच्छरे ४ आहुणिए ५ पाहुणिए ६ कणे ७ कणए ८ कणकणए ९ कणविताणए १० कणसंताणए ११ सोमे १२ सहिए १३ अस्सासणे १४ कज्जोयए १५ कब्बडए १६ अयकरए १७ दुंदुभए १८ संखे १९ संखवण्णे २० संखवण्णाभे २१ कंसे २२ कंसवण्णे २३ कंसवण्णाभे २४ नीले २५ नीलोभासे २६ रुप्पी २७ रुप्पोभासे २८ भासे २९ भासरासी

दो इंदग्गी दो मित्ता दो इंदा दो निरती दो आऊ दो विस्सा दो वम्हा दो विण्हू दो वसु दो वरुणा दो अया दो विविद्धी दो पुस्सा दो अस्सा दो यमा दो इंगालगा दो वियालगा दो लोहितक्खा दो सणिचरा दो आहुणिया दो पाहुणिया दो कणा दो कणगा दो कणकणगा दो कणकपण गा दो कणगा दो कणगविताणगा दो कणगसंताणगा दो सोमा दो सहिता दो आसासणा दो कालहोवगा दो कव्वडगा दो अतिकरगा दो दुंदुभगा दो संखा दो संखवन्ना दो संखवन्ना भा दो कंसा दो कंसवन्ना दो कंसवन्नाभा दो रुप्पा दो रुप्पाभासा दो नीला दो नीलभासा दो भासा दो भासरासी दो सोमा दो सोमहिता दो आसासणा दो कज्जोवगा दो आसर णा दो दुंदुभगा रासी दो तिला दो तिलपुप्फवन्ना दो दगा दो दग पंचवन्ना दो काका दो ककंधा दो इंदग्गी दो धूमकेऊ दो हरी दो पिंगला दो बुधा दो सुक्का दो वहस्सती दो राहू दो अगत्थी दो माणवगा दो कासा दो फासा दो धुरा दो पमुहा दो वियडा दो विसंधी दो नियल्ला दो पई ल्ला दो जडियाइलगा दो अरुणा दो अग्गिला दो काला दो महाकालगा दो सोत्थिया दो

भासरासी ३० तिले ३१ तिलपुप्फवन्ने ३२ दगे ३३ दगपंचवन्ने ३४ काए ३५ काकंधे ३६ इंदग्गी ३७ धूमकेऊ ३८ हरी ३९ पिंगले ४० बुधे ४१ सुक्के ४२ वहस्सइ ४३ राहू ४४ अगत्थी ४५ माणवगे ४६ कासे ४७ फासे ४८ धुरि ४९ पमुहे ५० वियडे ५१ विसंधी ५२ नियल्ले ५३ पयल्ले ५४ जडियाइले ५५ अरुणे ५६ अग्गिले ५७ काले ५८ महाकाले ५९ सोत्थिए ६०

।साव छिए ६१ वधमाणए ६२ पलंब ६३ निच्चालोए ६४ निच्चुज्जोए ६५ सयंपभे ६६ ओभासे ६७ सयंकरे ६८ खेमंकरे ६९ आभंकरे ७० पभंकरे ७१ अपराजिए ७२ अरए ७३ असोगे ७४ वीयसोगे ७५ विमले ७६ वितते ७७ वितत्थे ७८ विसाले ७९ साले ८० सुव्वए ८१ अणियट्टी ८२ एगजडी ८३ दुजडी ८४ करकरिए ८५ राय ... ८६ पुप्फकेऊ ८७ भावकेऊ ८८

।सोवत्थिया ।दो वद्धमाणगा ।दो पुसमाणगा ।दो अंकुसा ।दो पलंबा ।दो निच्चालोगा ।दो निच्चुज्जोता ।दो संयंपभा ।दो उभासा ।दो सयंकरा ।दो खेमंकरा ।दो आभंकरा ।दो अपराजिता ।दो अरया ।दो असोगा ।दो विगतसोगा ।दो विमला ।दो विसुद्धा ।दो वितत्ता ।दो वितत्था ।दो विसाला ।दो साला ।दो सुव्वता ।दो अणियट्टी ।दो एगजडा ।दो दुजडी ।दो करकरिगा ।दो रायलग्गा ।दो पुप्फकेतु ।दो भावकेतु ।जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स वेतिता ।दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ।लवणे णं समुद्दे ।दो जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पन्नत्ते ।लवणस्स णं समुद्दस्स वेतिता ।दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ।धायतिसंडदीवे पुरच्छिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा पन्नत्ता बहुसमतुल्ला जाव भरहे चेव एरवए चेव एवं जहा जंबुद्दीवे तहा एत्थ वि भाणियव्वं जाव दोसु वासेसु मणुया छव्विहं पि कालं पच्चणुभवमाणा विहरंति भरहे चेव एरवए चेव णवरं कूडसामली चेव धायती

वलीजंबुद्वीपनोइ अधिकार कहिछइ ॥ जंबु० ॥ जंबुद्वीपनी ॥ विइया० पद्मवर वेदिका जगती ऊपली ॥ जंबुद्वीप अनंतर लवणनउ अधिकार कहइछइ ॥ लवणेणं ॥ चक्कवाल० मांडलानइं वो ह्लापणइ ॥ लवण अनंतर धातकीखंड [illegible] तेहनी अंतरनउ अधिकार कहइछइ ॥ धायति० धातकीनाम वृक्ष ना खंड० वन एतलइं समूह ते धातकीखंड ॥ ते णइ युक्त यद्वीप ते धातकीखंडद्वीप तेहनइं पुर्वी दिसि अनइं पश्चिमा दिसि प्रत्येकं ६ (?) सूत्र जंबुद्वीपनी परि ईय वाणिजे ॥ इवइ पुर्व धातकी खंडद्वीप अभ्यंतर आदि क कहइछइ ॥ ३१

धायइसंडेणं दीवे दो भरहाइं ॥ सुगम ॥ दो गाहियाउ ॥ जाव रूप्पकूलो ता ॥ इहां एम ही जिम वेव कही तिम गंगा दिक मदीपणि बेवे कहइ जितां । कोइं निकही ॥ उत्तर जंबुद्वीपनइ अधिकारइ ॥ महाहिमवंताउ वासहर पव्वयाउ महापउमद्दहाउ महानईउ पवहंति ॥ इत्यादि पाठी इकरी ते हिताटि मनदो कहीइछइ । अनइ । काही पणि

रूक्खे चेव ।देवागरूले चेव ।वेणुदेवे सुदंसणे चेव ।धायतीसंडदीवपच्चच्छिमद्धे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं ।दो वासा पन्नत्ता बहु जाव भरहे चेव एरवते चेव जाव छव्विहं पि काले पच्चणुभवमाणा विहरंति नवरं कूडसामली चेव महाधायतीरूक्खे चेव देवागरूले चेव वेणुदेवे पियदंसणे चेव धायइसंडे णं दीवे ।दो भरहाइं ।दो एरवताइं ।दो हेमवताइं ।दो एरनवयाइं ।दो हरिवासाइं ।दो रम्मगवासाइं ।दो पुव्वविदेहाइं ।दो अवरविदेहाइं ।दो देवकुराउ ।दो देवकुरुमहद्दुमा ।दो देवकुरुमहद्दुमवासी देवा ।दो उत्तरकुराउ ।दो उत्तरकुरुमहद्दुमवासी देवा ।दो चुल्लहिमवंता ।दो महाहिमवंता ।दो निसढा ।दो णीलवंता ।दो रूप्पी ।दो सिहरी ।दो सद्दावती ।दो सद्दावतिवासी साती देवा ।दो वियडावती ।दो वियडावतिवासी पभासा देवा ।दो गंधवती ।दो गंधवतिवासी अरुणा देवा ।दो मालवंतपरियागा ।दो मालवंतपरियागवासी पउमा देवा ।दो मालवंता ।दो चित्तकूडा ।दो पम्हकूडा ।दो नलिनकूडा ।दो एगसेलकूडा (?) ।दो अंजणा ।दो पम्हसेजणा (?) ।दो सोमणसा ।दो विज्जुप्पभा ।दो अंकावती ।दो पम्हावती ।दो आसीविसा ।दो सुहावा

ते हद्रह सुत्र नइ अनुक्रमइ लीधो छइ ते सघली गंगादिक दोइ सी द्रूपाल प्रवीनही ॥ दो पंकवंती नय अंतर नदी नउं नाम ग्राहीनरइं वेगवती पद्ममुं नाम नदी सरखा

दो खवागा॥ पहदहुंनाम सरोदही॥ दो सीहसोताउ पहदहुंनामस्सीतस्रोता॥ एअनंतरनदीना नामई ह्यां अनंइं अघांतरइंफ
२५॥ = तेघा फननमालिणी॥ गंभीर मालिणी ए बेनाम किहां एकआगलियाबिलइदासइछइ॥

दो चुल्लहिमवंतपव्वता दो सुरप्पवता दो नागपव्वता दो देवपव्वता दो गंधमायणा दो उसुगारपव्वता दो
चुल्लहिमवंतकूडा दो वेसमणकूडा दो महाहिमवंतकूडा दो वेरुलियकूडा दो निसढकूडा दो रु
यगकूडा दो नीलवंतकूडा दो उवदंसणकूडा दो रुप्पिकूडा दो मणिकंचणकूडा दो सिहरिकूडा
दो तिगिंछिकूडा दो पउमद्दहा दो पउमद्दहवासिणीउ सिरिउ देवीउ दो महापउमद्दहा दो महा
पउमद्दहवासिणी हिरिउ देवीउ एवं जाव दो पुंडरीयद्दहा दो पुंडरीयद्दहवासिणीउ लच्छीउ देवीउ
दो गंगप्पवायद्दहा जाव दो रत्तावतीपवायद्दहा दो रोहियाउ जाव दो रुप्पकूलाउ दो गंधावती
उदावंकावती ७८ उ दो दहावतीउ दो तत्तजलाउ दो मत्तजलाउ दो उम्मत्तजलाउ दो खीरोदाउ दो सीहसोताउ
दो अंतोवाहिणीउ दो उम्मिमालिणीउ दो फेणमालिणीउ दो गंभीरमालिणीउ दो कच्छा दो सुकच्छा बडिनामक हिसबि॥
दो महाकच्छा दो कच्छावती दो आवत्ता दो मंगलावत्ता दो पुक्खला दो पुक्खलावती दो वच्छा दो सु
वच्छा दो महावच्छा दो वच्छावती दो रम्मा दो रम्मगा दो रमणिज्जा दो मंगलावती दो पम्हा दो सु
पम्हा दो महापम्हा दो पम्हगावती दो संखा दो नलिणा दो कुमुया दो सलिलावती दो वप्पा
दो सुवप्पा दो महावप्पा दो वप्पगावती दो वग्गु दो सुवग्गु दो गंधिला दो गंधिलावती दो खेमा नयरिनाम
उ दो खेमपुराउ दो रिट्ठाउ दो रिट्ठपुराउ दो खग्गाउ दो मंजूसाउ दो उसधीउ दो पुंडरगिणीउ॥ ३१

दो मंदरचूलियाउ॥ बोमरुनी चुलिका शिखविसेष॥ धातकीखंड अनंतर कालोदसमुद्र नु स्वरूप कहइ छइ॥ कालोदस्स णं॰ कालोद अनंतर पुष्कर द्वीप नउ स्वरूप कहइ छइ
दो सीसामाउ दो कुंडलाउ दो अपराजियाउ दो पभंकराउ दो अंकावईउ दो पम्हावईउ दो सुसीमाउ पुष्कर॰ पुष्कर वर द्वीपनी
दो रयणसंचयाउ दो आसपुराउ दो सीहपुराउ दो महापुराउ दो विजयपुराउ दो अवराजियाउ दो वेदिका॥ कहइ छइ॥
अवरयाउ दो असोगाउ दो विगयसोगाउ दो विजयाउ दो विजयंतीउ दो जयंतीउ दो अपराजि सवि पिण दीसा
याउ दो चक्कपुराउ दो खग्गपुराउ दो अवज्झाउ दो अउज्झाउ दो भद्दसालवणाउ दो णंदणवणाउ दि॥ पद्मप
दो सोमणसवणा दो पंडगवणाइं दो पंडुकंबलसिलाउ दो अतिपंडुकंबलसिलाउ दो रत्तकंब समुद्र कहइ
लसिलाउ दो अतिरत्तकंबलसिलाउ दो मंदराउ दो मंदरचूलियाउ धायइसंडस्स णं दीवस्स वे इ तेइ इना
दिया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता कालोदस्स णं समुद्दस्स वेदिया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्ते ऊ त्यांत प
णं पन्नत्ता। ब॥ पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं दो वासा पं॰ तं॰ भ वंतना वो
रहे चेव एरवए चेव तहेव जाव दो कुराउ पं॰ देवकुरा चेव उत्तरकुरा चेव म छइ॥ त
तत्थ णं दो महतिमहालया महादुमा पं॰ तं॰ कूडसामली चेव पउमरुक्खे चेव देवा गरुले चेव नणा इंद्रनो
वेणुदेवे पउमे चेव जाव छव्विहंपि कालं पच्चणुभवमाणा विहरंति पुक्खरवरदीवड्ढपच्छिमद्धे णं नाम कहइ
मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं दो वासा पन्नत्ता तहेव नाणत्तं कूडसामली चेव महापउमरुक्खे चेव छइ॥
व देवा गरुले चेव वेणुदेवे चेव पुंडरीए चेव पुक्खरवरदीवड्ढे णं दीवे दो भरहाइं दो एरवताइं जाव
दो मंदरा दो मंदरचूलियाउ पुक्खरवरस्स णं दीवस्स वेतिया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पं॰ सव्वेसिंपि णं दीवसमुद्दा

दो असुर०॥ तथा चंद्रसूर्य असंख्या० ता छइ ॥ तो लोकांतिकी नइ विषइ इंद्र कांई एकथी ॥ अंतर ॥ चंद्रसूर्यनो समुदाई जाति

णां च दिया दोणा भवणइं अढ़ं उच्चत्तेणां पन्नत्ता। दो असुरकुमारिंदा पं तं चमरे चेव बली चेव दो नि
गकुमारिंदा पं तं धरणे चेव भूयाणंदे चेव। दो सुवन्नकुमारिंदा पं तं वेणुदेवे चेव वेणुदाली चेव
दो विज्जुकुमारिंदा पं तं हरि चेव हरिस्सहे चेव। दो अग्गिकुमारिंदा तं तं अग्गिसिहे चेव अग्गि
माणवे चेव। दो दीवकुमारिंदा पं तं पुन्ने चेव वसिट्ठे चेव। दो उदहिकुमारिंदा पं तं जलकंते चेव
जलप्पभे चेव। दो दिसाकुमारिंदा पं तं अमियगती चेव अमितवाहणे चेव। दो वा
तकुमारिंदा पं तं वेलंबे चेव पभंजणे चेव। दो थणियकुमारिंदा पं तं घोसे चेव महाघोसे चेव दो
पिसाइंदा पं तं काले चेव महाकाले चेव। दो भूइंदा पं तं सुरूवे चेव पडिरूवे चेव। दो जक्खिंदा पं
तं पुन्नभद्दे चेव माणिभद्दे चेव। दो रक्खसिंदा पं तं भीमे चेव महाभीमे चेव। दो किन्नरिंदा पं तं किं
न्नरे चेव किंपुरिसे चेव। दो किंपुरिसा पं तं सप्पुरिसे चेव महापुरिसे चेव। दो महोरगिंदा पं तं अ
तिकाए चेव महाकाए चेव। दो गंधविंदा पं तं गीतरती चेव गीयजसे चेव। दो अणपन्निंदा पं
तं संनिहिए चेव समाणे चेव। दो पणपन्निंदा पं तं धाते चेव विहाए चेव। दो इसिवाइंदा
पं तं इसि चेव इसिवालए चेव। दो भूतवाइंदा पं तं इस्सरे चेव महिस्सरे चेव। दो कंदिंदा पं तं सु
वच्छे चेव विसाले चेव। दो महाकंदिंदा पं तं हासे चेव हासरती चेव। दो कुहिंदा पं तं सेते चेव महासे
ते चेव। दो पतइंदा पं तं पतए चेव पयतए चेव। जोतिसियाणं देवाणं दो इंदा पं तं चंदे चेव सूरे चेव ३३
सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु दो इंदा पं तं सक्के चेव ईसाणे चेव ॥ लोक० इत्यादि संख्या असंख्यात चंद्रसूर्य मिलीनइ समुच
यइ बिइंद्र ॥ हिवइ देवता निवास रूप विमान तुच्छ रूप कहइ छइ ॥ पुविलइ उद्देसइ पुद्गल जीवस्य

कृपष्टक हिया ॥ एणइ उद्देसइं सर्व वस्तु जीवाजीव मय कहीयइ छइ ति तत्संबन्धना र ५ सूत्र ॥ समया० ॥ पुविलइ उद्देसा नइ
सूत्रइ जीवनो धर्म पणइ रूप धर्म कहिउ। अनइ सूत्रइ समया दिक जीवाजीवादि धर्म नउ धर्म जीवाजीव पणा
इ इजि करी धर्म अमइ धरमी नात्मदत भइ अणा लम्बद वइ करी दइ हो इछइ ॥ समय आवली ए ॥ जीवा • जीवा। अजीवा •
अनइ अजीव ॥ पवु० ॥ वहीइ त्यसणी त्य कालवस्तु छइ। ते जीवनउ पर्याय छइ ॥ अनइ कहि हा एक पर्याय ...
एवं सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु दो इंदा पं तं सणंकुमारे चेव माहिंदे चेव बंभलोगलंतएसु दो
इंदा पं तं बंभे चेव लंतए चेव महासुक्कसहस्सारेसु णं कप्पेसु दो इंदा पं तं महासुक्के चेव
सहस्सारे चेव आणतपाणतआरणच्चुतेसु णं कप्पेसु दो इंदा पं तं पाणते चेव अच्चुते चेव
महासुक्कसहस्सारेसु णं कप्पेसु विमाणा दुवन्ना पं तं हालिद्दे चेव सुक्किल्ले चेव। गेवेज्ज
गाणं देवाणं दो रयणीउ उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता इति तृतीयउद्देशकः समाप्तः ॥ ३ ॥ समयाति वा आव
लियाति वा जीवाति वा अजीवाति वा पवुच्चति। आणाति वा पाणूति वा थोवाति वा जीवाति वा
अजीवाति वा पवुच्चति खणाति वा लवाइ वा जीवाति वा अजीवाति वा पवुच्चति एवं मुहुत्ताति
अहोरत्ताति वा पक्खाति वा मासाति वा उडूति वा अयणाति वा संवच्छराति वा जुगाति वा वास
याति वा वाससहस्साति वा वाससतसहस्साति वा वासकोडीइ वा पुव्वंगाति वा पुव्वाति वा तुडियं
गाति वा तुडियाति वा अडडंगाति वा अडडाति वा अववंगाति वा अववाति वा हूहूअंगाति वा उप्प
अनइ पर्याय नो धणी एकइ जि लखवीयइ। एतलइ पर्याय नइ पर्याय नो धणी मइ का नाम नइ करी बोलावीइ। तउइ
हो कालछइ। जीवनो पर्याय जीव छइ पर्याय नउ धणी तेम आहा माहि म्हद अणा निबउतो कालनइ जीव कहीयइ ते
नेणी तथा पुद्गलादिक अजीव तउ पणि काल पर्याय छइ तेमणी कालनइ अजीव कहीयइ ॥ खणा० संख्या

॥प्रहीका अत्र अनपर्छीणा हिवइं उक ३४हेक माहिवा. नारकी वीमानी रेवरावजी नइ लेखाइं ता दि बोल ४७ थाइ ॥ ३०११

नासासकसास प्रमाण वीण ॥ आमादिक पण्णाइ ६७ सुअस्करी जीवाजीव पणइ ह्याडइछइ ॥ पुढवी० ॥रत्नप्रभादि॥

लंगा ति वा उप्पला ति पउमंगा ति वा पउमा ति वा णलिणंगा ति वा णलिणा ति वा अच्छीणिऊरंगा ति
वा अच्छिऊरा ति वा अउअंगा ति वा अउआ ति वा णउअंगा ति वा णउआ ति वा पउतंगा ति वा पउता
ति वा चुलितंगा ति वा चुलिता ति वा सीसपहेलियंगा ति वा सीसापहेलिया ति वा पलिओवमा
ति वा सागरोवमा ति वा उसप्पिणी ति वा उसप्पिणी ति वा जीवा ति वा अजीवा ति वा पवुच्चति
२५ गामा ति वा नगरा ति वा निगमा ति वा रायहाणी ति वा खेडा ति वा कब्बडा ति वा मडंबा ति
वा दोणमुहा ति वा पट्टणा ति वा आगरा ति वा आसमा ति वा संवाहा ति वा संनिवेसा ति वा घो
सा ति वा आरामा ति वा उज्जाणा ति वा वणा ति वा वणसंडा ति वा वावी ति वा पुक्खरणी ति वा
सरा ति वा सरपंतिता ति वा अगडा ति वा तलागा ति वा दहा ति वा नदी ति वा पुढवी ति वा उदही ति
वा वातखंधा ति वा उवातरकंधा ति वा उवासंतरा ति वा वलया ति वा [illegible] ति वा [illegible] ति वा
ति वा विग्गहा ति वा दीवा ति वा समुद्दा ति वा वेला ति वा वेइता ति वा दारा ति वा तोरणा ति वा णे
रतिता ति वा नरइ[illegible]वासा ति वा जाव विमाणियाइ वा विमाणियावासाइ वा कप्पा ति वा
कप्पविमाणवासा ति वा वासाइ वा वासहरपव्वता ति वा कुडा ति वा कुडागारा ति वा विजया ति वा
रायहाणी ति वा जीवा ति वा अजीवा ति वा पवुच्चइ ६७ छाता ति वा आतता ति वा दोसिणा ति वा अंधके
रा ति वा उमाणा ति वा उम्माणा ति वा अतिताणगिहा ति वा उज्जाणगिहा ति वा अवलिंबा ति वा सणिप्प
वाता ति वा जीवा ति वा ॥छायाते रखुतघा० ॥ घरनु तरकुहाय्या करीत० गहीकोरा ०७१

कुडागारु० हिमवकूटादिकनइ ॥ बपर्ड लाहुबलानासवन ॥ तिपुडजलधर्मबखुलपलिजीवाजीवकहीयइ तिहनापस्नत्र ॥
वडमानीकीति ॥ अतिताणगिहां ० नगरादिविषइ मातिसकरनइ ॥ जिघरकुइ तेअवलिंब
वीता० ॥ छाहोडी ॥ पमिणा० = अनरसणिप्पवाय पदना अर्थ त्यां करु दिषकी जाणिवा ॥ एजीवनेइ आ अजीवमाटइ

एतीव अनइ पुदगला दिकसमयमाटइ अजीव ॥ हिवइ समया दिकवस्तु जीवाजीवइ जिम्पानणी ॥ जिसणीजीवाजी
वथकी बीजीराशि नथी तिसणी समया दिवस्तु वेबिकुइ ॥ बिनाम इकरी बोलावीयइ पणित्री जइनाम इनबो
लवायइ । एइजिसणी बिसी राशिकहुइ छइ ॥ दुविहेबंध० रागद्वेषनइ बेबंधइ उदइ जीवनइ अस्नसक्त मनिउवेध थाइ
एरुवो मार्गकरुइछइ ॥ जीवाणं दोहिं ठाणेहिं ॥ पाप० ॥ पापकर्म बाध्यानी जिम उदीरणा । वेदना निर्जरा थाइ तिकहइ
छइ ॥ जीवाणा उदीरंति० जिकर्मन उत्र्द यइ आवइबानो अवसर नथी तिउदइ आणइ तेउदीरणा कहीयइ ॥ मस्त
किलोचतपश्चरणादिकनी जीपीडा तेअभ्युपगमिकावेदना ॥ ज्वर० जेहवी अतीसारादिकनी वेदना तेउपक्र

वा अजीवा ति वा पवुच्चइ दो सं रासी पं. तं. जीवरासी चेव अजीवरासी चेव दुविहे बंधे
पं. तं. पेज्जबंधे चेव दोसबंधे चेव जीवाणं दोहिं ठाणेहिं पावकम्मं बंधइ तं. रागेणं चेव दो
सेणं चेव जीवाणं दोहिं ठाणेहिं पावकम्मं उदीरंति तं. अब्भोवगमियाए चेव वेअणाए उ
वक्कमिताए चेव वेअणाए एवं वेदंति एवं णिज्जरंति अब्भोवगमियाए चेव वेअणाए
उवक्कमिताए चेव वेअणाए दोहिं ठाणेहिं आता सरीरगं फुसित्ताणं णिज्जाति तं. देसेण वि
आता सरीरं फुसित्ताणं णिज्जाति मीवेदना वेदंति० विपाकथकी अनुभववुं ते वेदवुं ॥ निर्जरवुं ते प्रदेसथ
की झाडवु ॥ हिवइ कर्मनुं देसथकी सर्वथकी निर्जरवुं कहइ छइ सवो नरइ जातां सरीरथकी नीकलइ । तेसणी नीकलवानुं
स्वरूप कहइ छइ ते पर्ण वस्तु अंगीकरी कहइ छइ ॥ जीहो जीव जपजस्यइ तिहां केतला एक प्रदेस मोकल्या छइ । ते
जीव इलिका गति जपजावीइ वामिजातो मरणकालि विसथप्रदेसइ सरीर फरसीनीकलि तेजीवदेसथकी
ते प्रादसिइं करी फरसीनीकलतो कहीयइ ॥

चलता० नरकना घनोदधि आदिना वीटाला (विटाला) विमाना० लोकनां वाकीअ तेजिहां जीव विग्रहगतिकइ ॥ एते लोनइ जीव पणुं पुढवी पनेइ ॥ नेरइया० नारक ॥ ए हिनइ जीव पणुं ते कर्मपुद्गलनी अपेक्षी [illegible]

= उदही० तिहने लोघनो दधि ॥ वातखंध ० ॥ घन वाततनु वात० गोवा अजीवसमूह ॥ कि पसणं० नरकावास लोअकास ॥ ते लानइ जीवप णुं तिहां कम ति जीवादि छइ तिम तिणी जीव

जजीव इडानीपरिइं सर्वजीवनाप्रदेसमांभटालिइं नीकलीऊत्पत्रिस्थानकिइंजाइ॥ तसर्वजीवप्रदेसेइंकरी
फरसीनीकलतोकहीयइ॥ अथवा सर्वअवयवथकीप्रदेससंहरीनइ पगादिकफरसीनीकलइ॥ जसंसारीजीव
देसथकीसरीरफरसीनीकलतोकहीयइ। अनइ माक्षीजाइ तसर्वसरीरफरसीनीकलतोकहिवाइ॥ जीवनइ सरीरन
इपरस्परवइकतइ। सरीरनुं चलवुं थाइ तसणी तिकहइछइ॥ इलिकागतिइं नीकलइ जजीव ते देसथकी सरीरचलावी
नीकलइ॥ इडानीपरिइं नीकलइं तसर्वसरीरचलावीनीकलिइं॥ अथवा संसारी जीव पगादिकइं नीकलइ तेदे
सथकी चलावीनीकलतोकहीयइ वाइ॥ माक्षिजाइ तसर्वसरीरचलावीनीकलतो कहीयइ॥ हिवइ चलाविवाथ
कीविसथिइं प्रगट चलाविवुं तेकहइछइ॥ एवंफुडितातं०॥ इलिकागतिइं नीकलतो प्रगटसरीरचलावीनी
कलइ ते देसथकी फुडिआणं कहीयइ॥ अनइ इडानीपरिइं प्रगटसरीरचलावीनीकलइ तसर्वथकी फुडिताणं

सव्वेण वि आया सरीरगं फुसित्ताणं णिग्गछति एवं फुडित्ताणं एवं संवट्टित्ताणं एवं णिवट्टित्ता
णं दोहिं ठाणेहिं आया केवली पन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणताए तं खएणं चेव उवसमेणं चेव ए

कहीयइ॥ अथवा देसथकी संसारी जीव पगादिकइं प्रगटनीकलइ ते देसथकी फुडिताणं कहीइ॥ अनइ मोक्षजाइ त
जसर्व प्रगट चलावीनीकलइ तसर्वथकी फुडिताणं कहीयइ॥ अथवा स्फोटथिया॥ विसरालकरीनइ तिहां देसथ
की आत्मादिनइघातिइंकरी जजीवनीकलइ ते देसथकी सरीरनइ विसरालकरीनीकलइ तो कहीयइं॥ अनइ देवतादी
वानीपरिइं विसराल थाइ तसर्वथकी विसालकरीनीकलतो कहीयइ॥ हिवइ सरीर प्रगटचलावतो कोएक जीवसरीरसंको
चइ पणि तसणी तिकहइछइ॥ एवं संवट्टितालं०॥ इलकागतिइ जजीवनीकलइ। ते देसथकी सरीरसंकोचीनीकलइ तो
कहीयइ॥ अनइ इडानीपरिइंनीकलइ तसर्वथकी सं०॥ अथवा संसारी जीव पगादिकइनीकलतो देसथकी संकोचीनी
कलतो कहीयइ॥ अनइ सिद्धिजाइ ते सर्वथीसंकोचीनी०॥ अथवा हस्तादिकसंकोचीनीकलइ ते देसथकी संकोचीनी
कलतो कहीइ॥ अनइ इथलनीपरि सर्वागिसंकोचीनीकलइ ते सर्वथकी सं०॥ हिवइ सरीरनुं संकोचन करतो जी ३५
वसरीरनइ जुजुउं करीनीकलइ॥ तसणी तिकहइछइ॥

एवं णिवट्टित्ताणं०॥ एलकागतिइंकरीनीकलइ ते देसथकी सरीरजुजुउं करीनीकलइ॥ अनइ इडानीपरिइंनीकलइ त
सर्वथकी सरीरजुजुउं करीनीक०॥ अथवा संसारी जीव पगादिकइंकरीनीकलइ ते देसथकी सरीरजुजुउंकरीनीकलइ॥ अ
नइ सिद्धि थाइ ते सर्वथकी सरीरजुजुउं करीनीकलइ॥ अथवा ऊदारिकादिकसरीरनी अपेक्षाइं॥ देसथकी सरीरजुजुउं करतो क
हीयइ॥ अनइ तैजस कार्मण रूप सर्वसरीरथी जुजुआ करी सीझइ ते सर्वथकी सरीरजुजुउं करतो कहीयइ॥ पूर्वि सर्वसरीरनुं
जुजुवुं कहिउं ते धर्मसांभलवादिक हुइ तसणी तिकहइछइ॥ दोहिंठाणेहिं॰ आयाकेवलि॰ ज्ञानावर्णी दर्शनमोहनी क
र्मनु उदइ आव्या हुं निर्जरवुं ते क्षय॥ तेणइं अणऊदइं आव्यानुं विपाकनुं अणभोगविवुं ते ऊपसम ते णइ जाव सइमादि

एवं जाव मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा तं खएणं चेव उवसमेणं चेव दुविहे अद्धोवमिते पं तं
पलिउवमे चेव सागरोवमे चेव से किं तं पलिउवमे पलिउवमे जं जोयण विच्छिन्ने पल्ले एगाहिय
परूढाणं दोज णिरंतरं णिचितं भरितं वालग्गकोडाकोडीणं वाससते २ एक्केक्के अवहडे मि जा
कालो खीणधवो उवमा एगस्स पल्लस्स एतेसिं पल्लाणं कोडाकोडी हविद्ध दसगुणिया तं सागरो
वमस्स उ एगस्सभवे परीमाणं दुविहे कोहे पन्नत्ते तं आयपतिट्ठिते चेव परपइट्ठिए चेव एवं

क्षयलंबोधि बुझेजा इत्यादि ताणिवुं॥ ते बोधि ते सम्यक् मतिश्रुत अवधि एहनी स्थिति ऊकृष्ट ६६ सागर होइ तस
णी सागरस्वरूपकहइछइ॥ दुविहे अद्धो०॥ अद्ध०॥ काल। उवमिइ०॥ उपमा विना। अणअतिसइ वेतिइं नहीं जाइ
तसणी उवमिए कहिउ॥ एगाहिपरूढा०॥ माथुं मुंड्या पछी एकदिहाडइ जिवडउ वालनुं अणीनीकलइ तेवडउ षेडकरी
भरीयइ॥ निचितं॥ निबिडपणइ॥ हिवइ एणि सागरोपमइंकरी क्रोधादिकनी स्थिति परूपीइ तसणी क्रोधस्वरूपक
हइछइ॥ आय०॥ पोतानावांकमाटइ पोताना जीवरूपगइ क्रोध अनर्थ देषवाथकी ते आत्मा प्रतिष्टत क्रोध कहीयइ॥ परम्रां
क्रोसइ अनइ आपणनइ क्रोध ऊपजइ ते परप्रतिष्टत कहीयइ अथवा परनइ जी ऊपनो क्रोध ते परप्रतिष्टत क्रोध कहीयइ

ठाणांगबा०

एमचउवीसदंडकिइजाणवुं॥ नवरं०॥ एकेंद्रीनइ असंज्ञीनइ आत्माप्रतिष्ठितादि ऊत्सावकह्या॥ तउवरियनाअनुसत्या कप्पआंहीकुइ॥ एवं मानादिमिथ्या अपर्यंतिजाणवा॥ एवं एहपापस्थानककह्या॥ ततोसंसारीजीव सरघाइ तिनु रूपआंही कहइ॥ एवं माना दिमिथ्या ॥ दुविहासंसारं०॥ सुसंसाराऊजीवछइ केइ आनराईजीवछेइ॥ त २ सुत्रइकरीकहइछइ॥ दुविहसव्वजीवा॥ अपथी न्नाकेवलीअनइ सिद्धातत॥ आनेंद्रीफांसयबा०॥ अणुसरबा॥ अजोगीतसिद्धअनइअजोगी

णेरयोइएणं जाव वेमाणियाणं। एवं जाव मिच्छादंसणसल्ले। दुविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता तंजहा तसा चेव थावरा चेव। दुविहा सव्वजीवा पं० तं० सिद्धा चेव असिद्धा चेव। दुविहा सव्वजीवा पं० तं० सइंदिया चेव अणिंदिया चेव। एवं एसा गाहा फासेतव्वा जाव ससरीरी चेव असरीरी चेव। सिद्धसइंदियकाए जोगे वेदकसायलेसाय। णाणुवउगाहार भासगचरिमय ससरीर। दो मरणाइं समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णो णिच्चं वन्नियाइं णो णिच्चं कित्तियाइं णो णिच्चं बुइयाइं णो णिच्चं पसत्थाइं णो णिच्चं अब्भणुन्नाताइं भवंति तंजहा वलतमरणे चेव वसट्टमरणे चेव एवं णियाणमरणे चेव तब्भवमरणे चेव। गिरिपडणे चेव।

अनिवृत्तबादरसंपरायगुणठाणादिना ६ थणा॥ अनइ सिद्धनइ अवेद॥ दसमागुणठाणालगइ तिन्नकसाय॥ उपसांतमोहादिना ४ थणा अनइ सिद्ध तेअकसाय॥ सजोगगुणठाणालगइ सलेसी। अजोगीगुणठाणानी अनइ सिद्ध ते अलेसी॥ सम्यक्दृष्टी तेज्ञानी॥ मिथ्यादृष्टी ते अज्ञानी॥ आकार०॥ विसेषविसंग्रहिवानी सक्तिते सहितवर्ति ते ऊपयोग तेसाकारऊपयोग। हीननोऊपजोगइ॥ ईसिघमि॥ ते एहइकरी ऊपयुक्त तेसाकारापयुक्त॥ अनाकारऊप० सामान्यअसग्रहिवानी सक्ति तिद्दसमिनो ऊपयोग॥ सघलाई अपर्याप्ता ना ऊजुआहार॥ नारकी देवता एकेंद्रीनइ रोमआहार॥ संसारीनइ प्रत्येकप्रत्येक कवलआहार॥ विग्रहगइमावना॥ केवलिसमोह ३६

याअजोगीथ॥ सिद्धाय अणाहारा॥ ससाआहारगाजीवा॥ ९॥ सावापर्याप्ति अपर्याप्ता॥ अजोगीसिद्ध ए अभाषक॥ योगी ॥ चरम॥ वन्नियाइं०॥ रूडाफलपणइ॥ नो जकेइ किमो दीजास्यइ तिथरम॥ जे सम्यक्तादि मोक्षनहीं॥ लाइ॥ तेअचरम॥ वन्नियाइं०॥ रूडाफलपणइ॥ नो नित्य०॥ नित्यप्रतिइं नकह्यां॥ कित्ति० नामइकरीनकहीयां॥ बुइयाइं एवाक्त नर। एमरणतउर्थवणी बुडानीकनहीं॥ पसत्था० नित्यप्रसंस्यानहीं॥ अब्भ०॥ अनुज्ञादीधानहीं जेदुकरि॥ परीसहपीड्याथका संयमथी पडीमरइ तेवलन्तमरण॥ इंद्रीनइवसि॥ रित०॥ दुःकातुरंत्यमरण तेवसात्र्तमरणपतंगवत्॥ जेसविव तेईहि तेहजिनवमुआके

तरुपडणे चेव। जलप्पवेसे चेव जलणप्पवेसे चेव। विसभक्खणे चेव सत्थोवाडणे चेव। दो मरणाइं जाव णो णिच्चं अब्भणुन्नाताइं भवंति कारणेण पुण अप्पडिकुट्ठाइं तं० वेहाणसे चेव गिद्धपट्ठे चेव। दो मरणाइं समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वन्नियाइं जाव अब्भणुन्नाताइं भवंति तं० पाउवगमणे चेव भत्तपच्चक्खाणे चेव। पाउवगमणे दुविहे पं० तं० णीहारिमे चेव अणीहारिमे चेव नियमा अप्पडिकम्मे। भत्तपच्चक्खाणे दुवि-

बाधीमरइ ते तद्भवमरण॥ मनुष्यतिर्यंचिऊमाहिंजइ॥ सस्त्रइंकरी अवयादत०॥ पोतानुसरीरविदारिछुंते सस्त्रावपाटनमरण एहसमरणना पो अमुत्रघर्या॥ कारणेण०॥ विमरणआगलिकहीस्यइ। तेकारणिइं ते प्रस्थानथी॥ वेहाणस०॥ आकासनइ विषइ ऊपनुं तेवहीय सितगलापासो॥ गृध्रफरसवुछइ॥ जेमरण विषइ ते गृध्रस्पृष्ट अथवा अथनइस्पृष्टवा ग्रेभ्य तेस्पृष्ट उदरादिक अवयवक्षाथी अंतादिकना तिहमाहि फरसीनइ॥ यमा हस्तिनामध्ये मरइ॥ तेग्रधस्पृष्टमरण॥ हिवइ अप्रसस्तमरणवोइं अनंतरप्रसस्तमरण कोइ एकसंघीजीवनइं कुइ निक हइछइ॥ छिन्नोविक्षा हेठोपड्यो तेहनीपरिइं अंगतते वेष्टार हितपणाइ रहिवुं तेपादपोपगमनमरण कहीयइ॥ अपाअसमीहिं किमाहिइ मरइ अनइ काढइ ते नीहारी॥ गिरिकंदरादिकइ केरिते अनिहारी॥ अप० प्रतिक्रमकिस्योनहीं॥ मरणवुंस्वरूप लोकमाहिं सगलंतिकहिजे॥ ते माहिं लोकनुस्वरूप कहइछइ॥

के अयं लोग० ॥ ए लोक कउण ॥ प्रश्न० । के अणंता० ॥ लोकमाहि अनंता कउण ॥ जीव । अजीव ॥ के सा० ॥ सास्वता लो
कमाहि कउण ॥ पुद्गल जीव केतला एक धर्म पुद्गल इ ॥ केतला एक मुढ छइ । एहवुं स्वरूप चि[illegible] करी कहइ
छइ ॥ बोही० ॥ जिनधर्म लाभ ते बोधि । ज्ञानावरणी कर्मनइ क्षयोपसमइ ज्ञाननी प्राप्ति ते ज्ञानबोधि ॥ दर्शनमोह
नी कर्मनइ क्षयोपसमइ दर्शननी प्राप्ति ते दर्शनबोधि ॥ बुद्ध० ॥ बुद्ध ज्ञान पाम्या ते ज्ञानबुद्ध ॥ सम्यक्त्व पाम्या ते द
र्शनबोध ॥ एवं सद्द माहि ॥ दुविहे मोहे पं० तं० नाणमोहे चेव । दंसणमोहे चेव ॥ ज्ञाननइ ढांकइ ते ज्ञानमोह०
ज्ञानावरणी नि[illegible] ॥ दुविहा मुढा पं० तं० ॥ नाणमुढे चेव दंसणमुढे चेव ॥ ज्ञानावरणना उदय [illegible] हित ते ज्ञानमूढ ॥

द्दा पं० तं० णीहारिमे चेव अणीहारिमे चेव । नियमं सपडिकम्मे । के अयं लोगे जीवच्चेव
अजीवच्चेव । के अणंता लोए जीवच्चेव अजीवच्चेव । के सासया लोए जीवच्चेव अजी
वच्चेव दुविहा बोधी पं० तं० णाणबोधी चेव दंसणबोधी चेव दुविहा बुद्धा पं० तं० णाणबुद्धा
चेव दंसणबुद्धा चेव । एवं मोहे मूढा । नाणावरणिज्जे कम्मे दुविहे पं० तं० देसणाणावरणिज्जे
चेव सव्वणाणावरणिज्जे चेव दरिसणावरणिज्जे कम्मे एवं चेव वेयणिज्जे कम्मे दुविहे पं० तं०

दर्शनमूढ ते मिथ्यात्वी [illegible] प्रकारि इं मोह नाणावरणादि कर्मनुं कारण छइ इणि कारणि इं ज्ञानावरणादि कर्मनुं आ
वइ सूत्र इहि विधि पणुं कहइ छइ ॥ नाण० ॥ ज्ञाननइ ढांकइ ते ज्ञानावरणी । मतिज्ञानादिकनुं आवरवुं ते देसज्ञानावरण ॥
केवलज्ञाननुं आवरवुं ते सर्वज्ञानावरण ॥ मतिज्ञानादिकनुं आवरण ते सूर्यनी [illegible] मेघ घटइ ढांकइ तेह
वुं । तथा [illegible] ढांकइ तेहवुं ॥ मेघपडलइ यम सूर्य ढांकइ । केवलज्ञाननुं आवरण तेहवुं जाणि २७
वुं ॥ चक्खु ॥ अचक्खु अवधिदर्शनना आवरण ते देसदर्शनावरणी ॥ निद्रापंचक अनइ केवलदर्शननुं आवरण ते सर्व
दर्शनावरणी ॥

साया० ॥ ए सुखरूप पयणइं ॥ वेदीइ ते साता मधुपर [illegible] ॥ जीवनइं मुंझावइ ते मोहनी ॥ मिथ्यात्व मोह ते ऊअन
इ । मिश्र अनइ सम्यक्त्व अनइ आविवा न द्यइ ॥ सम्यक्त्व मोहनी ते क्षायिक सम्यक्त्व अनइ आविवा न द्यइ ॥ ए त्रिण्य इ
इ दर्सनमोहनी ॥ सामायिक चारित्र आदिनइं मोहइ ते ऊआविवा न द्यइ ॥ ते चारित्रमोहनी ॥ सोल कषाय नव नो
कषायरूप जाणि ॥ ते आयुष्य ॥ ते आऊषानां [illegible] ॥ कायस्थितिरूप ते अध्धायुष्क कहीइ ॥ भवस्थितिरूप ते भवायु
ष्क कहीयइ ॥ विचित्र पर्याय इं करीनइ ॥ जीव इ ॥ नमइ । परिणामवइ ॥ ते नामकर्म कहीयइ ॥ ते सुभ इष्ट निष्टरूप प

सातावेयणिज्जे चेव असातावेयणिज्जे चेव मोहणिज्जे दुविहे पं० तं० दंसणमोहणिज्जे चेव चरित्त
मोहणिज्जे चेव आउए कम्मे दुविहे पं० तं० अद्धाउए चेव भवाउए चेव णामे कम्मे दुविहे पं० तं०
सुभणामे चेव असुभणामे चेव गोत्ते कम्मे दुविहे उच्चागोते चेव णीयागोते चेव अंतराइ
ए कम्मे दुविहे पं० तं० पडुप्पन्नविणासिए चेव पिहेति य आगामिपहं दुविहा मुच्छा पं० तं० पेज्जवत्ति
या चेव दोसवत्तिया चेव पेज्जवत्तिया मुच्छा दुविहा माया चेव लोभे चेव दोसवत्तिया मुच्छा दुवि

हा० ॥ वीतरागनी परि इ ॥ ए पुज्य ॥ गो० ॥ एहवी वाणी ॥ उ० पालइ ॥ ते बोलावइ ते उच्चैर्गोत्र ॥ तद्विपरीत ते नीचैर्गोत्र ॥
कं सत्कार परि छुं ॥ जीवनइ अर्थसाधन करतां विघ्न करइ । पडु० । एतलइ ते अंतराय ॥ एतं [illegible] वर्तमान का
लिइ लाधु वस्तु ते विणासइ जे लाभ ते प्रत्युत्पन्न विनासित ॥ पाठांतरइ पडुप्पन्नविनासी ए पाठ [illegible] ॥ वर्तमानकाल
नुं वस्तु तेहनुं विनास [illegible] छइ ॥ ए कर्मनुं ते प्रत्युत्पन्नविनासी कर्म ॥ पिहेति य आगामिपहं पिहेति ॥ रूंधइ ॥
आगामी [illegible] कालि [illegible] वस्तु पामस्युं तेहनो पंथ । ते अंतरायकर्म ॥ पाठांतरइ आगामिपहं ॥ [illegible] ॥ ते अंतरा
यकर्म ॥ ए आठ प्रकारि इं कर्म मूर्छा थकी उपजइ ते भणी मूर्छा स्वरूप कहइ छइ ॥ मुर्छा० ॥ मोह ते सद्विवेकनो नास ॥

ठाणांगबा

पन्न० प्रेमतेराग तेवर्त्तवुं छइ जेहनुं ते प्रेमवर्त्तिका ॥ अथवा रागकारणछइ जेहनुं ते प्रेमवर्त्तिका ॥ अथवा रागकार
णछइ जेहनुं ते प्रेमप्रत्यया ॥ द्वेषरूपवर्त्तवुं छइ ॥ द्वेषरूपवर्त्ति छुछइ तेहनुं ते द्वेषवर्तिका ॥ अथवा द्वेष
कारणछइ जेहनुं ते द्वेषप्रत्यया ॥ मुर्छाद्वि० पाठसिद्ध तेहनउ सर्थ आराधनाइं जइ ते आराधना त्रिणि सूत्र
इकहइछइ ॥ दुविहा आ० श्री मादिवस्तु नइ अनुकूलवरतीपणुं ते आराधना कहीयइ ॥ धम्मिया० श्रुतचारित्र
रूपधर्मइ वर्त्तइ ते धार्मिक साधु कहीयइ ॥ तेहनी आराधना ते धार्मिकी आराधना ॥ निरतीचार ज्ञानादिकनु पाल

हे पं. तं. कोहे चेव माणे चेव दुविहा आराहणा पं. तं. धम्मिताराहणा चेव केवलिआ
राहणा चेव धम्मियाराहणा दुविहा पं. तं. सुतधम्माराहणा चेव चरित्तधम्माराहणा चेव
केवलिआराहणा दुविहा पं. तं. अंतकिरिया चेव कप्पविमाणोववत्तिया चेव दो तित्थग
रा नीलुप्पलसामा वन्नेणं पं. तं. मुणिसुव्वए चेव अरिट्ठनेमी चेव दो तित्थगरा पियंगु
सामा वन्नेणं पं. तं. मल्ली चेव पासे चेव दो तित्थयरा पउमगोरा वन्नेणं पं. तं. पउमप्प
हे चेव वासुपुज्जे चेव दो तित्थयरा चंदगोरा वन्नेणं पं. तं. चंदप्पहे चेव पुप्फदंते चेव

वुं ॥ ते धार्मिकी ते आराधना ॥ केवलिय० श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी मनपर्यवज्ञानी केवलज्ञानी ए आराधना ते केवलि
की आराधना ॥ ए आराधना केवलिनइ जइछइ ॥ अंतकिरिया० भवनो अंत तेहनुं ॥ क्रिया० करवुं ॥ एतलइ सर्वच्छेदा त
इ मइहलते इं आराधना से लेश्यारूप ते अंतकिरिया आराधना ॥ ए आराधना केवलीनइ कहइ ॥ कप्प० कल्पदेव
लोकनइ विषइ ॥ एतलइ ग्रैवेयकनइ हेनही ॥ विमान ते देवतानो आवासना विस्तारनइ विषइ अथवा कल्प ते
सौधर्मादिक विमान ते ग्रैवेयकादि विषइ ॥ उपपात० उपजवउं ॥ ते कल्पविमानोपपातिका ॥ ए अंतकेवलिया दि
केवइ ज्ञानाराहणा कुंइ ॥ ए ज्ञानादि आराधनानुं फल ते तीर्थंकरपदप्राप्ति ते लणी सूत्रइ तीर्थंकरनुं स्वरूप कहइछइ ३८

पसं० ॥ रक्त० उत्पल तेहनी परिइं गोरा एतलइ राता ॥ चंद्रमासरीखा ऊजला ॥ ते तीर्थंकर ते तीर्थंकरइ ॥ तीर्थ ते प्रवचन ॥ ते
जिहांथी प्रकर्षिइ बोलीइ ॥ ते सत्यवाद ॥ सघलाइं श्रुत थकी पहिलुं गणधरइ पूर्वनिं इरचइ ते भणी पूर्व ॥ एछठो पूर्व ॥ ते
हनो एक कोडिपद अनइ छपद ॥ ते पूर्वनां २ वस्तु ॥ वस्तु ते विभाग विशेष ॥ अध्ययनादिनी परिइं ॥ पूर्वपदनाम रि
बापणामाटइ ॥ पूर्वाशिइ पदनइ नक्षत्रपदे नउ स्वरूप कहइछइ ॥ नक्षत्रना प्रस्तावमाटिइ नक्षत्रो नेतर नुं स्वरूप त्रिणि सूत्रइ कह
इछइ ॥ पुव्वभद्द० ॥ दिवइ एतलें नक्षत्रनउ वीपसुत्रे इमा हिइं कइ ते भणी समुद्रनुं स्वरूप कहइछइ ॥ अंतो णं मणुस्स० ॥ मुनुष्यक्षे

सच्चप्पवायपुव्वस्स णं दुवे वत्थु पं. पुव्वाभद्दवया नक्खत्ते दुतारे पं. उत्तराभद्दवता नक्खत्ते दुतारे पं.
तं. एवं पुव्वफग्गुणी उत्तराफग्गुणी अंतो णं मणुस्सखेत्तस्स दो समुद्दा पं. तं. लवणे चेव कालो
दे चेव दो चक्कवट्टी अपरिचत्तकामभोगा कालमासे कालं किच्चा अहेसत्तमाए पुढवीए अप
तिट्ठाणे णरए णेरइयत्ताए उववन्ना तं. सुभूमे चेव बंभदत्ते चेव असुरिंदवज्जियाणं भव
णवासीणं देवाणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता सोहम्मकप्पे देवाणं उक्कोसेणं दो साग
रोवमाइं ठिती पन्नत्ता ईसाणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिती पन्नता

त्रना प्रस्तावमाटिइ ॥ निक्षेत्रांतरनुं स्वरूप तिस्र ते क्षेत्रनाऊपनाऊ ते मनुष्यनुं स्वरूप कहइछइ ॥ दो चक्कवट्टी० ॥ कालमास
० मरणनइ समवाइछइ ऊपले काधी पछे अहोरात्रादि कालमास ते मरणावसरिइं तिस्रो वः ॥ कालं किच्चा० ॥ मरण करीनइ
॥ अहे० ॥ अधोसप्त ते दहती सातमी ॥ ए नरकपरिइं ॥ २ नरकना सातमीबाइ ते भणी अधोसप्तकहिउ ॥ नारकीनइ असं
ख्याताकालनी स्थितिछइ ॥ ते मरसवनपत्यादिकनइं पणि तेछइ ते भणी पावस्तुत्रइ स्थितिकहइछइ ॥ असुरिंदवज्जि० वम
रिंदु अनइ बलिंद्र २ वरजीनइ असंइं ते नामा मानिक वरजीनइ ॥ इंद्रनइ अहरणाइं सामानी पणुं पणि अहिलाषइ ॥ इंद्र
नइ सदृश सामानीकनुं अहरणनथाइ तउ सामानिक पणुं जितेइ नइं नथाइ ॥ तेवरजी नइं थाकता त्रयस्त्रिंशादि असुरकुमार
तु तथ की बली अन निकाय वननिवासीनाग कुमारादिनु देसूणाइं दो० ॥ देवलोकना प्रस्तावमाटइ सौधर्मादिदा विइं करी

ठाणांग
टबा०

देवलोकनुं स्वरूप कहो छइ ॥ सणंकुमारे ॥ देवलोकनी स्त्री न हुवइ उत्पन्न ॥ कायाइं करी मइ
परि० परिचरइ मैथुन सेवइ ते कायपरिचारका ॥ फासपरि० फरसइ करी देवनी तापक उपसमइ ते फासपरियारका ॥
दोइंदा ॥ देवलोक छइ ४ अनइ छइ २ ते मण २ इंद्र मनइ करी ॥ पाविकम्मणाकरि ते कर्मपिडकी करिइं ॥ ते कर्मजीव
त्रिणि कालनइ विषइ ॥ चिणंवा दिका बंधाइ करि ॥ एहनुं स्वरूप कहइ छइ ॥ जीवा णं दोट्ठाण निव० ॥ बिहीणनो पना

सणंकुमारे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता । माहिंदे कप्पे देवाणं जहन्नेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता । दोसु कप्पेसु कप्पत्थियाउ पन्नत्ताउ तं सोहम्मे चेव ईसाणे चेव । दोसु कप्पेसु देवा तेउलेस्सा पं तं सोहम्मे चेव ईसाणे चेव । दोसु कप्पेसु देवा कायपरियारगा पं तं सोहम्मे चेव ईसाणे चेव । दोसु कप्पेसु देवा फासपरियारगा पं तं सणंकुमारे चेव माहिंदे चेव । दोसु कप्पेसु देवा रूवपरियारगा पं तं बंभलोए चेव लंतगे चेव । दोसु कप्पेसु देवा सद्दपरियारगा पं तं महासुक्के चेव सहस्सारे चेव । दो इंदा मणपरियारगा पं तं पाणते चेव अच्चुते चेव । जीवा णं दुट्ठाणनिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा तं तसकायनिव्वत्तिते चेव थावरकायनिव्वत्तिते चेव । २ एवं उवचिणिंसु वा उवचिणंति वा उवचिणिस्संति वा बंधिंसु वा बंधेंति वा बंधिस्संति वा उदीरिंसु वा

आउ पाइ पुद्गल ते पापकर्म० ज्ञानावरणादिक कर्मपणइ ॥ चिणा । चिणइ छइ । चिणस्यइ ॥ कषायपरिणाम्या नुं कर्मपुद्गलनुं
ग्रहिवा मात्र ते चिणवुं ॥ चिणा नउ आबाधकाल मुकीनइ ज्ञानावरणादिपणइ भाववुं ते उपचिणवुं ॥ बंधसु वा ॥ बली ते
कर्म ताकघाय ॥ विसिषिइ निकाचिवुं ते बंधन ॥ अणउदइ आव्यानुं आकरकीकइ आणिवुं ते उदीरवुं ॥ ता
ग वियुं ते वेदवुं ॥ अकर्म थावुं ते निर्जरवुं ॥ कर्म ते पुद्गल मइ छइ ते पुद्गलनुं स्वरूप द्व्यादिक कहइ छइ ॥२॥ ३९

दुपएसियाइत्यादि ॥२॥४॥ बीयठाणंसमत्तं ॥ ॥ ३ ॥ बीजा ठाणानइ छेहलइ कहउ जीवादि ॥ पर्याय कह्या ॥ अनइ एउ देसाइं
नइ धुरिपणि तेहइ जि कहीयइ छइ ॥ [illegible] ॥ बीजा ठाणा नइ छेहलो उद्देसानइ छेहलइ सूत्रइ
पुद्गलनउ स्वरूप कह्यो एउ देसानइ धुरिलइ सूत्रइ जीवनउ स्वरूप कहीयइ छइ ॥ तउइंदा० ॥ इंद्र एहवुं नाम ते नामइंद्र एत
लइ ते सूत्रिवं ते इंद्र ॥ अग्रवास वितन अथित न वस्तु नोइंद्र एहवुं नाम दीजीइ ते नामइंद्र ॥ इंद्रनइ अभिप्रायइं लप्या दिक
र्म मय तेस्थापना इंद्र ॥ तिहां इंद्र वेदनी प्र... तिमा ते साकार स्थापना इंद्र ॥ अनइ अक्षादि मइ विषयस्थापीयइ ते निराकारस्था

उदीरेंति वा उदीरिस्संति वा वेदिंसु वा वेदेंति वा वेदिस्संति वा णिज्जरिंसु वा णिज्जरेंति वा णिज्जरिस्संति वा दुपएसिता खंधा अणंता पन्नत्ता दुपएसोगाढा पोग्गला अणंता पन्नत्ता एवं जाव दुगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पन्नत्ता दुट्ठाणं समत्तं २ ॥ तउ इंदा पं तं नामिंदे ठवणिंदे दव्विंदे तउ इंदा पं तं णाणिंदे दसणिंदे चरित्तिंदे तउ इंदा पं तं देविंदे असुरिंदे मणुस्सिंदे तिविहा विकुव्वणा पं तं बाहिरते पोग्गलए परियातित्ता एगा विकुव्वणा बाहिरए पोग्गले अपरियादिता एगा विकुव्व

पना इंद्र० ॥ उव्य इंद्र मां आगमथी आगमइ घणा छेदइ छइ ॥ भावेंद्रनुं स्वरूप कहइ छइ ॥ ज्ञाननो कइ इं परम स्वर ते ज्ञानेंद्र
श्रुतकेवली आदि तथा केवली ते ज्ञानेंद्र ॥ क्षायिक सम्यक्त्वे अनुधणा ते दर्शनेंद्र ॥ यथाख्यातचारित्रनो धणी ते यो
रित्रेंद्र ॥ सर्वस्ताव प्रधान क्षायिके क्षायिक क्षायोपसमइं करी परमार्थ सकल संसारी जीव ते अणामुं पुरिग्ण ल
क्षी रूप परम ऐश्वर्य पणुं ते एहवुं रूप णामा टइ स्ता वेंद्र पणुं जाणिवुं ॥ बीजो परि इंता नावेंद्र ते तो इंद्र छइ ॥ पणि
एगुणमाटइ पइंड अ भिक्उ जाणिवो ॥ अध्यात्म० असंतर वक्तु राइए इंद्र पणुं कहिजे ॥ हिवइ बाह्य वक्तु राइ इंद्र पणुं
कहइ छइ ॥ ज्योतिषी विमानीकना ते देवेंद्र ॥ भवनपतिना बालिं वितरना ते असुरिंद्र ॥ मनुष्येंद्र० ॥ चक्रवर्ति ॥ एत्रिसानइं
विक्रयकरवानी सक्ति माटइ इं इंद्रपणुं ॥ ते सणा विकुर्वणानुं स्वरूप कहइ छइ ॥ बाहिरए ॥ बाहिरला पुद्गल सवधार
णा सरीरनइ अणावगाढ तेत्र० ॥ अणअवगाहिउं प्रत्ते ना प्रदेसवर्ता पुद्गल विक्रिय समुद्घात नइ करी

MEMORIAL

देवलोकनुस्वरूपसात ७ सूत्रइं कह्या यइ छइ ॥ कप्पिठि० ॥ देवलोकनी स्त्रीनुं लेदेवी इत्यर्थः ॥ काय० ॥ कायाइं करी नइ
॥ परि० परिचरइ सेवइ ते कायपरिचारका ॥ फासपरि० ॥ फरसइं करी ले देनी ते परुपसमइ ते फासपरियारका ॥
दोइंदा ॥ देवलोक छइ ४ अइं छइ २ ते सल २ इंद्र तेनुं ग्रहण कीधुं ॥ परिवारणाकरि तेकर्मनी करिउं ॥ तेकर्मजीव
त्रिणि कालनइ विषइ ॥ चिणांवादिका वस्तां इ करि ॥ एहनुं स्वरूप कहइ छइ ॥ जीवाणं दोट्ठाण निव० ॥ बेहीठाना नी पजा

सणंकुमारे कप्पे देवाणं जहन्नेणं दो सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता । माहिंदे
कप्पे देवाणं जहन्नेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता । दोसु कप्पेसु कप्पत्थियाओ प
न्नत्ताओ तं सोहम्मे चेव ईसाणे चेव । दोसु कप्पेसु देवा तेउलेस्सा पं तं सोहम्मे चेव ईसाणे
चेव । दोसु कप्पेसु देवा कायपरियारगा पं तं सोहम्मे चेव ईसाणे चेव । दोसु कप्पेसु देवा
फासपरियारगा पं तं सणंकुमारे चेव माहिंदे चेव । दोसु कप्पेसु देवा रूवपरियारगा पं तं ब
म्भलोए चेव लंतए चेव । दोसु कप्पेसु देवा सद्दपरियारगा पं तं महासुक्के चेव सहस्सारे चेव । दो
इंदा मणपरियारगा पं तं पाणते चेव अच्चुते चेव । जीवा णं दुट्ठाण निव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए
चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा तं तसकायनिव्वत्तिते चेव थावरकायनिव्वत्तिते चेव ॥२॥
एवं उवचिणिंसु वा उवचिणंति वा उवचिणिस्संति वा बंधिंसु वा बंधेंति वा बंधिस्संति वा उदीरिंसु वा

आ उपार्जा पुद्गल ते पापकर्म० ज्ञानावरणादि कर्मपणइं ॥ चिणा ॥ चिणइ छइ ॥ चिणस्यइ ॥ कषायपरिणाम्या नुं कर्मपुद्गलनुं
ग्रहिवा मात्र ते चिणवुं ॥ चिणा नउ अबाधकाल मुकीनइ ज्ञानावरणादिपणइं भाववुं ते रूप चिणवुं ॥ बंधसुवा ॥ वली ते
कर्म ताकबाय ॥ विसिषि निकाचिवुं ते बंधन ॥ अणउदइ आव्या नुं आकरकी उदइ आणिवुं ते उदेरवुं ॥ ला
गविवु ते वेदवुं ॥ अकर्म थावुं ते निर्जरवुं ॥ कर्म ते पुद्गल मइ छइ ते भणी पुद्गलनुं स्वरूप इक्यादि बोल कहइ छइ ॥२॥ ३८

MEMORIAL

दुपएसियाइत्यादि ॥२॥४॥ बीजठाणंसमत्तं ॥ ॥ ७ ॥ बीजाठाणानइ छेहलइ उदेसइ जीवादि ॥ पर्यायकह्या ॥ अनइ एउदेसाइं
नइ धुरि पणि तेहइ जि कह्या यइ छइ ॥ [illegible] ॥ बीजाठाणानइ छेहले उदेसानइ छेहलइ सूत्रइं
पुद्गलनउ स्वरूप कह्यो एउदेसानइ धुरिलइ सूत्रइ जीवनउ स्वरूप कहीयइ छइ ॥ तोइंदा० ॥ इंद्र एहवुं नाम ते नामिंद्र एत
लइ ते भुविवि ते इंद्र ॥ अघवासे चितन अथित नवस्तु नोइंद्र एहवुं नाम दीजइ ते नामिंद्र ॥ इंद्र नइ अभिप्रायइं लेप्यादिक
र्म मय ते स्थापना इंद्र ॥ तिहां इंद्र वेदनी प्रतिमा ते स्थाकारस्थापनेंद्र ॥ अनइ अक्षादि मइ विषइ स्थापीयइ ते निराकारस्था

उदीरेंति वा उदीरिस्संति वा वेदिंसु वा वेदेंति वा वेदिस्संति वा णिज्जरिंसु वा णिज्जरेंति वा
णिज्जरिस्संति वा । दुपएसिता खंधा अणंता पन्नत्ता । दुपएसोगाढा पोग्गला अणंता पन्नत्ता । एवं जाव दु
गुणलुक्खा पोग्गला अणंता पन्नत्ता । दुट्ठाणं समत्तं ॥ २ ॥ तउ इंदा पं तं नामिंदे ठवणिंदे दव्विंदे । तओ
इंदा पं तं णाणिंदे दंसणिंदे चरित्तिंदे । तओ इंदा पं तं देविंदे असुरिंदे मणुस्सिंदे । तिविहा विकुव्व
णा पं तं बाहिरए पोग्गलए परियातित्ता एका विकुव्वणा बाहिरए पोग्गले अपरियादित्ता एगा विकुव्व

पनाइंद्र० ॥ द्रव्यइंद्र आगमनो आगम इघणा लेद छइ ॥ तावेंद्र नुस्वरूप कहइ छइ ॥ ज्ञाननो इंद्र परामस्वर ते ज्ञानेंद्र
श्रुत केवली आदि तथा केवली ते ज्ञानेंद्र ॥ क्षायिक सम्यक्त्व गुणधरण ते दर्शनेंद्र ॥ यथाख्यात चारित्रनो धणी ते चारित्रें
द्र ॥ सर्वत्र भावप्रधान क्षायिके क्षायिक क्षयोपसमइं करी परम आश्चर्यकारी सकल संसारी जीव थिकी अणघणुं पुद्गल
दर्श रूप परम ऐश्वर्य पणुं ते गुणइं युक्त पणा माटइं भावेंद्र पणुं जाणिवुं ॥ बीजी परिइं ते भावेंद्र ते इंद्र त्रिणि छइ ॥ पणि
एगुणमाटइं एइंद्र थकि उजाणिवो ॥ अध्यात्म० अभ्यंतर वक्रुराईए इंद्र पणुं कहिउं ॥ हिवइ बाह्य वक्रुराई इंद्रपणुं
कहइ छइ ॥ ज्योतिषी विमानीकना तेदेवेंद्र ॥ भवनपतिना व्यंतर ना ते असुरिंद्र ॥ मनुष्येंद्र० ॥ चक्रवर्ति ॥ एत्रिणनइं
विक्रय करवानी सक्तिमाटइं इंद्रपणुं ॥ ते मणविकुर्वणानु स्वरूप कहइ छइ ॥ बाहिरए ॥ बाहिरला पुद्गल भवधार
णा सरीरनइ अणवगाढ क्षेत्र० ॥ अणअवगाहिउं क्षेत्र नां प्रदेसवर्ती पुद्गल ते विक्रिय समुद्घात नइ करी

ग्रहीनइ एक विकुर्वणा करइ॥ अपरियाइत्ता० बाहिरला पुद्गल अणलीधइ एक विकुर्वणा तेह भवधारणी सरीर देवता नारकीनो छइ। ... विकुर्वणा ... विरूपांकरिवुं आभरणादिक विरूपाकरइ तेह बाहिला पुद्गल लेइ ते विकुर्वे॥ एहनए बीजी विकुर्वणा। भवधारणी सरीर छइ तेह शृंगारिइ तेह बाहिरला पुद्गल ग्रहिं पणि अग्रहिं पणि ए त्रीजी विकुर्वणा॥ अथवा० विकुर्वणा०॥ विरूपांकरिवुं॥ आभरणादिक विरूपाकरइ तेह बाहिरला पुद्गल लेई ते विरूपांकरिवुं केसनखादिक इत्यादिकनुं समारिवुं॥ तेह बाहिला पुद्गल लीधइ विरूपांकरिवुं॥ बाहिला पुद्गल अणलीधइ विरूपा ते ए बेउ मिली ए बीजी विरूपा॥ अथवा काकीडा सर्प आदिनइ रूप पुण तेह बाहिला पुद्गल अणलीधइ विरूपा॥ अभ्यंतरए० भवधारणी सरीरिं अथवा उदारिक सरीरिं ... प्रदेस अवग्रह्या छइ तेहनइ विषइ जे

णा। बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता वि अपरियाइत्ता वि एगा विकुव्वणा। तिविहा विगुव्वणा पं० तं० अब्भंतरए पोग्गले परियाइत्ता एगा विकुव्वणा अब्भंतरए पोग्गले अपरियाइत्ता एगा विकुव्वणा। अब्भंतरए पोग्गले परियाइत्ता वि अपरियाइत्ता वि एगा विकुव्वणा। तिविहा विकुव्वणा पं० तं० बाहिरब्भिंतरए पोग्गले परियाइत्ता एगा विकुव्वणा बाहिरब्भिंतरए पोग्गले अपरियाइत्ता एगा विकुव्वणा बाहिरब्भिंतरए पोग्गले परियाइत्ता वि अपरियाइत्ता वि एगा विकुव्वणा।

पुद्गल ग्रहइ ते अभ्यंतर पुद्गल ग्रहीनइ एक विकुर्वणा करिइ अथवा विकुर्वणा ते विरूपा॥ ते विरूपा आ आ अभ्यंतर पुद्गल मुकादिक ... विरूपा करिइ॥ त्रीजी त्रिसंगा कहइ॥ बाहिरला पुद्गल ग्रहीनइ भवधारणी सरीरनो पजावइ तिवार पछी तेहनुं जकसादिकनुं समारिवुं॥ ते विरूपा कहीयइ॥ घणाकालना विकुर्व्यानइ। मुखादि विकार करिवुं॥ ते अणग्रहिवुं॥ उ॥ ए २ वि० बाह्याभ्यंतर पुद्गल ... भवनइ रूडा ना अणग्रह देवइ घकी रूप सभवधारणी ग्रहकी अ ते रूप अनिष्टरूप करइ ए त्रीजइ विकुर्वना॥ ए विकुर्वणा कही ते तउ नारकीनइ छइ॥ ते रुणी नारकीनु स्वरूप कहइ छइ॥ ४०

तेजीव समइ समइ ब्रिआदि संख्यात ऊपना तेहनी बुधिइ करीनइ राशिकल्पीयइ। ते कतिसंचित कहीइ॥ समइ समइ असंख्याता अनंता ऊपजइ ते अकतिसंचित कहीइ॥ समय समय एकेका ऊपना ते अवक्तव्यसंचित कहीयइ॥ कतिसंचिया०॥ ब्रिआदि संख्याता नारकी एकइ समइ ते कतिसंचिया कहीइ॥ अकति० असंख्याता नारकी एकइ समयइ ऊपजइ ते अकतिसंचित कहीइ॥ एकइ समइ नारकी एक ऊपजइ ते अवक्तगसंचित॥ विसेस ए केंडी माहि कति नथी। अवक्तव्य नथी॥ अकतिसंचित हीयइ॥ ... विमानीकनो पर्यन्त बंधक हि..॥ हिवइ देवतानी परियारणा विसेष कहइ छइ॥ एगा देवा इत्यादि॥ परियारणा०॥ मैथुन सेवा॥ एगा देवा॥ एकेक देवता अनेरा अन्य ऊपिक देवता

तिविहा नेरइया पं० तं० कतिसंचिया अकतिसंचिया अवत्तगसंचिया एवमेगिंदियवज्जा जाव वेमाणिया। तिविहा परियारणा पं० तं० एगे देवे अन्ने देवे अन्नेसिं देवाणं देवीओ अभिउंजिय अभिउंजिय परियारेति अप्पणिज्जियाओ देवीओ अभिउंजिय अभिउंजिय परियारेति अप्पाणमेव अप्पाणं विकुव्विय विकुव्विय परियारेति एगे देवे णो अन्ने देवे णो अन्नेसिं देवाणं देवीओ अभिउंजिय २ परियारेति अप्पणिज्जियाओ देवीओ अभिउंजिय २ परियारेति अप्पाणमेव अप्पाणं विकुव्विय २ परियारेति एगे देवे णो अन्ने देवे णो अन्नेसिं देवाणं देवीओ णो अप्पणिज्जियाओ अप्पाणमेव अप्पाणं विकुव्विय परियारेति। तिविहे मे

नइ तथा अनेरा देवनी देवीनइ॥ अभिउंजि०॥ वस्यकरीनइ॥ भोगवइ॥ एक प्रकार ए॥ एकेक देवता पोतानी देवीनइ वस्य करीनइ भोगवइ॥ एक आपणपइं ज विकुर्वी स्त्री ... भोगवइ॥ ए त्रिण मिली एक सांगो छयो॥ बीजइ भोगइ पोतानी देवीनइं अनइ पोतानुं विकुर्विलिनइ भोगवइ॥ अनेरा देव देवीनइ न भोगवइ॥ त्रीजइ भोगइ पारकेई का देव देवीन भोगइ॥ पोतानी नहीं विकुर्वि भोगवइ॥ इम करइ ते कां अल्पकामा ... बल ते रुणी विकुर्वी ऊ भोगवइ॥ परियारणा ते मैथुन विसेस छइ॥ हिवइ साम्प्रतं ... मैथुन प्ररूपइ छइ॥ तिविहे मे० हिवइ मैथुनना भेद ... तउ मैथुन नइ पुरुहा...

४१

॥ गाथा ॥ संकप्पोसं रंभो। परितावणकरो भवेसमारंभो। आरंभोउद्दवउ। सुद्धनयाणंतुसव्वेसिं॥१॥

तउमकुणांसवंति ॥ ए त्रिणि प्रयोगवंकुइ ॥ तेसणी प्रयोग नउ स्वरूप कहइछइ ॥ तिविहे जोग० ॥ कर्मना क्षयोपसमथ
कीऊपनुंआत्मानोवीर्य तियोगकहीयइ ॥ एक अकरण वीर्य ॥ अलेसी केवली केवलज्ञानकेवलदर्शननउ ऊपयोग
तअकरणवीर्य तेहनउ ॥ ईहांअधिकारनहीं ॥ सकरणवीर्यनउ अधिकारकहइछइ ॥ वलीजोगऊआ श्री कहइछइ ॥ तिवि
हिप्पउग ॥ मनेंव्यापारवु तेमननउप्रयोग ॥ वचननउव्यापारवु ते वचननोप्रयोग ॥ मनआदिनाअधिकार सणीव
लीकहइछइ ॥ तिविहेकरणे ॥ मनिइकरीकरीइ तेमनकरण ॥ एवंवचनकायकरणप्रयोगप्रयोगकरणजोऊंआक

मकुणे पं तं दिवमाणुस्सतितिरिकजोणि त। तउमेकुणांगच्छंति तं देवा मणुस्सा तिरिकजो
णिया। तउमकुणांसवंतं इत्थीपुरिसाणपुंसगा। तिविहेजोगे प तं मणजोग वइजोग का
यजोग एवंणेरतिताविविगलिंदियवज्जाणं जाववेमाणियाणं। तिविहे पउगे पं तं मणपउ
ग वइपउग कायपउग जहाजोगा विगलिंदियवज्जाणं तहापउगेवि। तिविहे करणे पं तं मन
करणे वतिकरण कायकरणे एवंविगलिंदियवज्जं जाववेमाणियाणं। तिविहे करणे पं तं आ
रंभकरणे संरंभकरणे समारंभकरणे निरंतरंजाववेमाणियाणं तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउअत्ता
एकंमं पगारेंति तं पाणे अइवाइत्ता मुसंवइत्ता भवति तहारूवं समणं वा माहणं वा फासु अफासु

घात करणीयत्ति परमार्थिएकार्थछइ ॥ भगवतीमाहिं १५प्रयोगकह्याछइ ॥ पन्नवणामादिप्रयोगकरीरह्याछइ ॥ आनुस्य
कमादिकरणकरीरह्याछइ पणिएकार्थछइ ॥ वलीप्रकारांतरिइं त्रिणि विधिप्रकरणकहइछइ ॥ आरंभ० ॥ प्रथ्वयादिकनुं
ऊपमर्दनि प्रथ्वयादिकनइ विषइ आपणइमनिइंसंकल्पिस तेहमइकरिवु तेसरंभ ॥ परिताप नइसंतापवु तेसमा
रंभ । ए आरंभादिक नरकादिकवलीसहइउदकिहइछइ ॥ तिहां असंज्ञीनइसमारंभ नतेवुविलासवतु अनुभवपणाथकीज्ञा
णिजे ॥ हिवइआरंभादिकनुं फल देषाडिइछइ ॥ अल्प० थोडुंआऊषुंकर्मबंधाइ ॥ पकारि० बांधइ ॥ तहारुवं०
तथारूप साधुविसइ ॥ श्रमणातितपस्वी ॥ माहण २ कहइते माहण ॥ ४१

प्रकषिइंगाया ॥ अफासु० ॥ प्राणायमाहिं घात प्रासुक ॥ प्रासुकनहीतेअप्रासुक सचित ॥ अनइएषणीकतेसुऊतुं। तेनहीं
तेअसूऊतुं ॥ उदनादि। साबीरादि खादिम ॥ ऊषधफलादि मुखवास ॥ प्रतिलाभतो ॥ अल्पआऊषानाकरणकहीइ ॥
हिवइदीर्घआऊषानाकरणकहइछइ ॥ तेहिंठाणेहिंइत्यादि ॥ दीर्घआऊषाना २प्रकारछइ। एकसुभ एकअसुभ
छइ। तेपहिलुंअसुभदीर्घकहइछइ ॥ तेहिंठाणेहिं इत्यादि ॥ दीर्घ ॥ असुभदीर्घआऊखुं तेनारकादिकनुं ॥ समण माह

णं अफासएणं अणेसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवति इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा
अप्पाउयत्ताए कम्मं पगरेंति। तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पगरेंति तं पाणे अतिवातित्ता
भवति णो मुसंवइत्ता भवइ तहारूवं समणं वा माहणं वा फासुएणं एसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमे
णं पडिलाभित्ता भवति इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउयत्ताते कम्मं पगरेंति तिहिं ठाणेहिं जीवा अ
सुभदीहाउयत्ताते कम्मं पगरेंति तं पाणे अइवाइत्ता भवति मुसं वइत्ता भवति तहारूवं समणं वा
माहणं वा हीलित्ता निंदित्ता खिंसित्ता गरहित्ता अवमाणित्ता अन्नयरेणं अमणुन्नेणं अपीतिका
रएणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवति इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पगरेंति
तिहिं ठाणेहिं जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्मं पगरेंति तं णो पाणे अइवाइत्ता भवति णो मुसं वइत्ता भवति
तहारूवं समणं वा माहणं वा वंदित्ता नमंसित्ता सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं

थामइ। हीलता० ॥ जात्यादिकनुं ऊघाडिवुं ॥ निंदव० ते मनमइंकरी ॥ खिंसवुं तेलोकसमक्ष ॥ गरहिवुं ते तेसमक्ष ॥ अपमां
नतेअणऊठिवउं ॥ अन्नय० एककाइ। आहार। अमनोज्ञ। असोभनइंकरी। एहवुकारणथकी अप्रीतिकारइक ॥
ईहांतेअसणादि अप्रासुकते अनिमित्तनीं थनकह्या ॥ तेणइंकारणि ॥ हिवइसुभदीर्घआऊषानुं कहइछइ ॥ वंदित्ता०
स्तवी ॥ स्तवीनइ। नमं० प्रणामीनि। सका० वस्त्रादिकइसत्कारीनइ ॥ सम्मा० प्रतिप्रति चितिभक्तिइंसन्मानकरीनइ।

ठाणांग
बा०

कल्याणं० रुधिस्रुकारणछइ॥ साधु तिज्ञणी साधु तेसणी साधु ते कल्याण॥ मंगलं० विघ्नरूपसमावनुं हेतु छइ तेहणी सा
धु ते मांगलिक॥ देवयं० ॥ एसाधु देवतापरिइ देव॥ चेइयं० चित्त प्रशस्त मन नु कारण॥ एहवउ साधु नइ लबोवी
नइ॥ पज्जुवास० सेवीनइ॥ मनोज्ञ प्रीतिकारी एअसनादिकइ प्रतिलाभइ॥ सुखदीर्घआयुषुं बांधइ॥ तन्निसहितअम
नोज्ञ आहारदेतो मनोज्ञनउं फलपामइ॥ आर्याचंदनानीपरिइं॥ पांचदिनऊणछमासनइ पारणइ वीरनइ अडदना
बाकलादीधा॥ तिहथी वेडी निकरथया॥ मस्तकनाकेसआव्या॥ पंचदिव्य प्रगटथया॥ इत्यादिकइ सर्वनी॥ वारित्रिं

पज्जुवासित्ता मणुन्नेणं पीतिकारएणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवति इच्चेते
हिं ठाणेहिं जीवा सुहदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेति ततो गुत्ती तो पं० तं० मणगुत्ती वइगुत्ती कायगुत्ती
संजतमणुस्साणं ततो गुत्ती तो पं० तं० मणवइकाए ततो अगुत्तीओ पं० तं० मणअगुत्ती वइअगुत्ती का
यअगुत्ती एवं नेरइयाणं जाव थणियकुमाराणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं असंजतमणुस्सा
णं वाणमंतराणं जोइसियाणं विमाणियाणं ततो दंडा पं० तं० मणदंडे वइदंडे कायदंडे नेर
इयाणं ततो दंडा पं० तं० मणदंडे वइदंडे कायदंडे विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं तिविहा
गरहा पं० तं० मणसा वेगे गरहति वइसा वेगे गरहति कायसा वेगे गरहति पावाणं कम्मा

गुप्ति मीश्रा त्रिणइ॥ आणातपातनुं अणकरिवुं॥ तेगुप्तिकहीइं छइ॥ तेहणी गुप्तिकहीइ छइ॥ गुप्ति ते असुभमनरुंधइं सु
भप्रवर्त्तावइ॥ तउगुत्ती इत्यादि ४॥ हिवइ त्रिणि अगुप्तिकहइ छइ॥ तउ अगुती इत्यादि॥ अगुप्ति नउ लोभेप
रनइ दंडइ तेसणेंदंड कहइ छइ॥ मणदंडे० मनइं करी आपणनइं तथा परनइं दंडइ ते मनोदंड॥ इम वचनकाय॥
दंडगाथा गरहिवा जोग्य छइ॥ तेसंगरहाम्त्र त्रिऊइंकरी कहइ छइ॥ तिविहागरहा० ॥ आत्मा आपणा नइं परनइं दं
डकीधे छइ॥ तहवेगरारुवउं॥ तिनिंदवुं॥ कायसा०॥ कायानी गरहा पापकर्म नइ अणकरवइ होइ ४२

अथवा एत्रिणि हिं गरहा पापकर्म नइ अणकरवइ छइ॥ अथवा एत्रिह गरहा ते पापकर्म हिवनिंदवुं॥ स्यादानइ अर्थे॥ अक
रणयाए०॥ अणकरवानइ अर्थिइं॥ हिवइ कुंएनहीकरुं॥ अथवा गरहा ते० एकघणा कालनुं गरहइं॥ एकथोडाकालनुं गरहइ
॥ कायंपि एग०॥ काया पणि एकरुंधइ॥ पापकर्मनइ अणकरवइकरी॥ अतीतकालना पापनुं परिहरवुं छइ॥ अनागतकालनुं तो
पचखाणकरवुं छइ तेहणी सूत्र वे पचखाणना कहइ छइ॥ तिविहे पचखाण० ॥ कायं०॥ काया एकेक ० पडि० संवरइ॥ पावाणं॥

णं अकरणताते अहवा गरहा तिविहा पं० तं० दीहंपेगे अद्धं गरहति रहस्संपेगे अद्धं गरहति
कायंपेगे पडिसाहरति पावाणं कम्माणं अकरणयाते तिविहे पच्चक्खाणे पं० तं० मणसा वेग
पच्चक्खाति वयसा वेगे पच्चक्खाति कायसा वेगे पच्चक्खाति एवं जहा गरहा तहा पच्चक्खाणे वि
दो आलावगा भाणियव्वा ततो रुक्खा पं० तं० पत्तोवते पुप्फोवते फलोवते एवामेव ततो पुरिसा
जाता पं० तं० पत्तोवारुक्खसमाणे पुप्फोवारुक्खसमाणे फलोवारुक्खसमाणे ततो पुरिसजाया पं०
तं० नामपुरिसे ठवणपुरिसे दव्वपुरिसे ततो पुरिसजाता पं० तं० णाणपुरिसे दंसणपुरिसे चरि

पापकर्म अणकरवा नइ काजिइ॥ अथवा पापकर्म थकी काया० पडिसा० पाछा संहरइ ते निवर्त्तिइं॥ पापकर्म नी पचख
ाणहारु छइ॥ ते परेपकारा छइ॥ तादृषा डवानइ काजि दृष्टांत अनइ दार्ष्टांतिक पुरुषनी परुपणा कहइ छइ॥ तउरुक्खा
इत्यादि॥ पत्रसहितात पत्तावेग॥ एवामेव पुरुषना त्रिप्रकार॥ पत्तावा॥ पत्रसहित रूषसमाण॥ तेसरी
षा पुरुष॥ लौकिकमार गिइं घाडोऊपगारक रिइं॥ पत्तोवारुषसमाण०॥ घाणवा ते पुफोवारु॥ तथा घाणवा ते फलो
वा॥ लोकोत्तरमार गिइ सूत्र देतिइं पत्तावारु॥ अर्थदेतिइ पुफोवारु॥ क्रिया देतिइ फलोवारुषसमाण॥ हिवइ पुरु
षना अधिकारसणी वलीउ सातसूत्र पुरुषनाकहइ छइ॥ तउपुरिसजाया पं० तं० नामपुरिसे० पुरुषएहवुं नाम कीधउं
ते॥ ठवण० पुरुषनी प्रतिमादि॥ द्रव्यपुरुष ते रूपनउ॥ तथा रूपउत्पद्॥ हवइ सावपुरुषाना लेद कहइ छइ

णा णपुरिस० ज्ञानयुक्त तपुरुष [illegible] तज्ञानकुरुष ॥ पुरुषवेदं लोगवइंत वेदपुरुष ॥१ चिंध० ॥ डाढी मुछादिक ॥ अथवा
स्त्र्याद्यादिक पुरुषवेषें लो होत्रउइ ति चिंन्हपुरुष ॥२ घडो तेअ लि[illegible]लाषपुरुष एरूष लिंगाउं नामबोलीजेकांइनिहीं ॥
३ ॥ ७ ॥ क्षायिक चारित्रादिक ऊपार्ज्यां वामइ तत्पर तिधर्मपुरुष ॥१ माहारंभादिक धकी ऊपजा व्यांनरकादिक आऊषां
तिकर्मपुरुष ॥३ श्री ऋषभदेवनाराजआश्रवस रिका रवालयणि थाप्या तिऊग्रकुल तिहनो १ ॥ वेलो तिऊग्रकुल
॥ तिणइ आश्रवस रिंइं गुरूपणइ थाप्या तिलोगकुल ॥ तिसली ति वेला मित्रपणइ थाप्या तिराजन्यकुल ॥ दासी ० दा
सीपुत्र ॥ तइगा ० ऊतका त मुल्पइंका मनां करणहार ॥ सातिलगं तिसुछ चउथ भागइ रहिंइं ते ॥ ल्हिवइ तिर्यंचिना १२
अपुरिसा तओपुरिसजाया पं तं वेदपुरिसा चिंधपुरिसा अभिलावपुरिसा तिविहा पुरिसा पं
तं उत्तमपुरिसा माझिमपुरिसा जहन्नपुरिसा तिविहे पं तं धमपुरिसा भोगपुरिसा कम्मपुरि
सा धमपुरिसा अरहंता भोगपुरिसा चक्कवट्टी कम्मपुरिसा वासुदेवा मझिमपुरिसा तिविहा
पं तं उग्गा भोगा राइन्ना जहन्नपुरिसा तिविहा पं तं दासा भयगा भातिल्लगा तिविधा मच्छा पं
तं अंडया पोतया समुछिमा अंडगा मच्छा तिविहा पं तं इत्थीपुरिसा णपुंसगा पोतता मच्छा
तिविहा पं तं इत्थीपुरिसा णपुंसगा तिविधा पंखी पं तं अंडया पोतया समुछिमा अंडया प
रकी तिविहा पं तं इत्थीपुरिसा णपुंसगा पोतजा परकी तिविहा पं तं इत्थीपुरिसा णपुंसगा ए
समुछिम लइ कहइ छइ ॥ इंडाथी ऊपना तिअंडजा ॥ जराऊ वर्जित पणा थकी ऊपना ति पोतजा ॥ अथवा ऊभवस्त्र थकी ऊप
जइ ॥ तिम ते या निथकी ऊपना ति पोतज ॥ अंडजा पंखी तिहंसादिक ॥ पोतजा पंखी तिवागुलादि ॥ समुछिम पंखी
तिरिंजन पंखीयादि तिऊ छि छइ ॥ तथापि तिसमुछिम कही यइ ॥ उत्तिक्त ति तूइ फाडीनी कल्पइ ॥ लिवइ स्त्रीपुरु
ष नपुंसकनइ लिदइ विवइ पणु कहइ छइ ॥ तिहनां सुत्र ए ॥ स्त्रीयादि पणऊं पामइ ॥ तिलश्यानां वसथकी पामइ ४३

तिसलेश्या सुरूप कहिवइ ॥ असुरकुमारादिक नइ त्रिलिलेश्या संक्लिष्ट कही ति मंडली ति त्रिणि जकहइ ॥ असुरकुमारे
वउथी तउमइ लीतइणी त्रिणिकही ॥ अथवा पाणी मांहिं वनस्पतीमाहिं देवता आवी ऊपजइ ति अपर्याप्ती वेला चोथी लेस्या
हुइ ॥ पणि संक्लिष्ट संचिणि जउछइ तिसणी त्रिणि ॥ जाति थी नइ एक तेजो लेस्या हुइ ॥ तिसणी त्रिवाणामाहिं नकह्या ति
वा मा तणी अभिलावेणं उरपरिसप्पा तिरिक्खजोणियवा भुयपरिसप्पा तिरिक्खजोणियवा एवं खवं तिविहा ता
इत्थीउ पं तं तिरिक्खजोणिया ता मणुस्सित्थीउ देवित्थीउ तिरिक्खजोणित्थीउ तिविधा पं तं जलच
रीउ थलचरीउ खहचरीउ मणुस्सित्थीउ तिविहा पं तं कम्मभूमियाउ अकम्मभूमियाउ अंतरदीविगाउ तिवि
हा पुरिसाउ पं तं तिरिक्खजोणियपुरिसा मणुस्सपुरिसा देवपुरिसा तिरिक्खजोणियपुरिसा तिवि
हा पं तं जलचरा थलचरा खहचरा मणुस्सपुरिसा पं तं कम्मभूमया अकम्मभूमया अंतरदीवगा ति
विहा णपुंसगा पं तं णेरतितनपुंसगा तिरिक्खजोणियनपुंसगा मणुस्सनपुंसगा तिरिक्खजोणियण
पुंसगा तिविहा पं तं जलचरा थलचरा खहचरा मणुस्सनपुंसगा तिविधा पं तं कम्मभूमगा अकम्म
भूमगा अंतरदीवगा तिविहा तिरिक्खजोणिता पं तं इत्थीपुरिसा णपुंसगा णेरइयाणं तउलेस्सा
उ पं तं कन्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा एवं थणियकुमाराणं असुरकुमाराणं तातालेस्सा तो
संकिलिट्ठाउ पं तं कन्हलेसा नीललेसा काउलेसा एवं थणियकुमाराणं एवं पुढविकाइयाणं आउ
वणस्सइ काइयाण वि तेऊकाइयाणं वाउकाइयाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं तंतो
लेस्सा जधा णेरइयाणं वि पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं तउलेसाउ संकलिट्ठाउ पं तं कन्हलेसा
नीललेसा काउलेसा पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं तउलेसाउ असंकलिट्ठाउ पं तं तेउलेसा पद्म

थलचरा मरउ

माहिं इति इनइ वलि णमुंइक री त्रिहोणा माहिं कहइ छइ ॥

समुर्छिम मनुष्य वसप्र

ताराख्वं ॥ तं० तो मात्र ॥ चलेज्जा० स्थानक छांडइ ॥ विकु० ॥ विक्रिय करतां ॥ परि० ॥ मैथुन सेवतां ॥ ठाणा ३० ॥ स्था-
नक थकी बीजइ स्थानकि जातां ॥ जिम धातकीखंडना मेरुनइ परिहरिवइ । अथवा चमरेंद्रनी परि महर्द्धिक देवता ग्रै वे-
यक करतां मारगनइ देवच्छत्र तसहस्र जो जिमइ आंतरइ व्याघात सिइ पडइ ॥ हवइ देवता नइ अनइ वीजली अनइ स्त-
नित० ॥ गाजकरवानां कारण कहइ छइ ॥ विज्जुतारं० ॥ वीजलीनुं करिवुं ॥ विक्रिय करवा दिक तेतउ संपद्यइ छइ ॥ अ-
नइ जिको सदर्प छइ ते चलवुं ॥ वीजली गाजादिक करइ । तत्रता विक्रिया दिकनुं करवुं ते चलन वीजली गाजादि करवा

लेसा सुक्कलेसा एवं मणुस्साण वि वाणमंतराणं जहा असुरकुमाराणं वेमाणिआणं तउ लेसाओ प-
न्नत्ताओ तं तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा तिहिं ठाणेहिं ताराख्वे चलेज्जा तं विकुव्वमाणे वा परियारेमाणे
वा ठाणाओ वा ठाणं संकममाणे वा ताराख्वे चलेज्जा तिहिं ठाणेहिं देवे विज्जुकारं करेज्जा तं
विकुव्वमाणे वा परियारेमाणे वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा इड्ढिं जुत्तिं जसं बलं वीरियं
पुरिसक्कारपरक्कमं उवदंसेमाणे देवे विज्जुतारं करेज्जा तिहिं ठाणेहिं देवे थणियसद्दं करेज्जा तं
विकुव्वमाणे एवं जहा विज्जुतारं तहेव थणियसद्दं पि तिहिं ठाणेहिं लोगंधयारे सिया तं अरहंतेहिं
वोच्छिज्जमाणेहिं अरहंतपन्नत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे पुव्वगते वोच्छिज्जमाणे ॥१॥ तिहिं ठाणेहिं लो-

मुकारणजाणिवुं ॥ इड्ढि० विमाननपरिवारादिकनी । जुत्ति० सरीरआभरणनी कांति ॥ जस तरव्याति ॥ बल ते सरीर थकी ऊपनुं ॥ पुरु-
षकार ते अभिमान ॥ ते दर्शिकार्यनी पायुं कइ । तेपां तइ ते पराक्रम एतलांवानां देखाडतो वीजली करइ ॥ थणि० ॥ मेघग-
र्जितसद्द पणि इम जे ॥ वीजगाजिनुं करवुं ॥ अतुल्यात रूप छइ ॥ अनइ लोकमाहि अंधकार रूप ते ऊत्पात छइ तेतउ अंध-
कारादि १५ सुनइ कहइ छइ ॥ लोकमाहि अंधकार ते लोकांधकार ते जेम इलोकानु भावथकी । भावइ ज्ञाननाअभाव थकी ॥ अ-
रिहिं० ॥ अरिकोसादि अष्ट महाप्रातिहार्यनी पुजानइ योग्य थाइ ॥ जन्मांतर रूपी कूंपाणुते हननइ पुन्यरूपाउ महाहेदो ॥

डाक्टर भाऊ दाजी इत्याख्यस्मारकम्

निःपापवास नारूपजतिंसीओ ॥ कल्याणकल इकरीनइ कल्पवृक्षसरिखो ॥ ते पुन्यफल थकी प्रगट थकी थकाई प्रातिहार्य पुजा त-
इ मइ योग्य ते अरिहंते हिं वोच्छि० ते अरिहंत मोक्ष जातइ ॥ अरि० ती धि विच्छेद जातइ ॥ २ ॥ पुव्व० इष्टिवादनो ना ग ते पुर्वग-
ए० ॥ ते पुर्वमाहि ज्ञेर हिके ॥ श्रुत ते पुर्वगत श्रुत एतलइ पुर्वज्ञ ॥ देसनगर संगादिक नइ अवसरिइं देसइं अंधकारादि वि-
च्छेद जाणवइ ॥ नउ अरिहंत सगवंत आदि सकललोकनइ वस्तुसमानि ते कालकरइं तइ अंधकारनुं सुआचार्य जिम
धर्म पुर्वनुं जाणिवुं ॥ लोगुज्जोए० ॥ लोक सघलइ उद्योत थाइ । अरिहंतनइ जन्मि सहस उद्योत थाइ । ए लोकानुभाव थकी

गुज्जोते सिया तं अरहंतेहिं जायमाणेहिं अरहंतेसु पव्वयमाणेसु अरहंताणं णाणुप्पयमहि-
मासु ॥२॥ तिहिं ठाणेहिं देवंधकारे सिया तं अरहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं अरहंतपन्नत्ते धम्मे
वोच्छिज्जमाणे पुव्वगते वोच्छिज्जमाणे ३ तिहिं ठाणेहिं देवुज्जोते सिया तं अरिहंतेहिं जाय-
माणेहिं अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अरहंताणं णाणुप्पयमहिमासु ४ तिहिं ठाणेहिं देवसं-
निवाते सिया तं अरहंतेहिं जायमाणेहिं अरिहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अरहंताणं णाणुप्पय-
महिमासु एवं देवुक्कलिया ५ देवकहकहए तिहिं ठाणेहिं देविंदा माणुसं लोगं हव्वमागच्छं-

अथवा देवता आवइ तेणइ उद्योत थाइ ॥ पुर्वज्ञान ऊपनइ देवजनमहोत्सवइ । अनुवालु थाइ ॥ देवंधकार० ॥ देवतानां
भवनादिकनइ विषइ अंधकार थाइ ॥ ते लोकानुभाव थकी ॥ लोकांधकार कहिउ ॥ ते देवांधकार उजोवकहिउं ते तसुं
ते सघलइ अंधकारनुं छतायपणुं जाणवा माटइ ॥ देवसन्नि० प्रथवी निइं विषइ ॥ देवतानुं ऊतरवुं ॥ देवउज्जु० देवता
मांकी धेप्रमोद कलकलाट ॥ इहां

हव्व० सोभा सामानीक० इंद्रनासरीषाछ दिमाथणीतसामानिक इंद्र। मोटासरीषा तामा टिका उप्रस्थानीक तित्राय त्रिंसक। लोकपाल सोमादिक। अग्रमहिषी प्रधान नार्या। परिसा वव न्नगा० परिवारपणइ ऊपना। अणि० अनीका गजा दिकसैनानायक। आम्मर स्म० अंगरक्षक। मनुष्यलोकनइ विषइ। ऊ देवा ता अनइ आववानइ कारणइ करीनइ ते देवताकह्या। अंस्फरखानकरि तितराणा ५ मुकनकहइ छइ। अच्छु० त्रिऊपकारि। देवता ना सीघास नाधीऊ छइ। इमसकें ईदिकना आसण चलइ ते लोकांतिक। चलुरकवं० वस्त्रइ वायघालइ। तीर्थंकर मइ ऊनमादिकइ। सिंघनाद

तित तंजहा अरहंत हिंजायमाणेहिं अरहंतहिं पव्वयमाणेहिं अरहंताणं णाणुप्पाय महिमासु एवं सामाणिता यत्ताबत्तीसगा ३ लोगपाला देवा ४ अग्गमहिसीओ देवीओ ५ परिसोववन्नगा देवा ६ अणिताधिपती देवा ७ आयरक्खा देवा माणुसं लोगं हव्वमागच्छंति। तिहिं ठाणेहिं देवा अब्भुट्ठिज्जा तं अरहंतेहिं जायमाणेहिं जाव तं चेव एवमासणाइं चलेज्जा सीहणातं करेज्जा चेलुक्खेवं करेज्जा। तिहिं ठाणेहिं देवाणं चेतिरुक्खा चलेज्जा तं अरहंतेहिं तं चेव। तिहिं ठाणेहिं लोगंतिया देवा माणुसं लोगं हव्वमागच्छेज्जा तं अरहंतेहिं जायमाणेहिं अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अरहंताणं णाणुप्पयमहिमासु।

करइ। चेइरुक्खा० सुधर्मादिप्रा चइससाइं सिद्धाय तनएवइमाकार आगलि मुषमंडपादि सात वस्तु छइ। तिमाहिं लावि समइ सौलोकांतिका देवतानइ प्रधान पणा माहिं मनुष्य हि त्रिइं आवेवा नउपाठसूत्रनउ विस्तार इजउक्त हिज। एसरूइमाहिं एलोकांतिकना एपालोक० अस्तलोक तिहनइ। अं तिं० समीप अरनराजीहइ पडले निवासछइ। ऊहनउ तिलोकांतिक। अथवालोक० ऊदयिकनाय लोकतेहनइ छेहडइ अनंतर भव मुक्ति नावाघका तिलोकांतिक। एलोकांतिकादिक देवता स्याहानइ अवधिइं दीहा आवइ। अरहंतसगवंत धम्मीवार्थ पणाइ करी महा ऊपकारी छइ। यह नागुण ऊमी कलन घइए। तिरनी पूजानइ अवधिइं दीहा आवइ तिरो त्रि। तिना गुणऊ सभिलनघइए। तिकहइ छइ।

सुधर्मादि सभानइ पूर्व बारइं स्तम्भ पारेषवा यसुऊक पमानघा इ ३.२

४५

दुप्पडियारं० पाडौ वालीनसकीइं। न हि० नर्इ० यामक स्वामी मिथ्यादिष्ठ मीपायीनइ। मप्पाउवि० प्रातःसमइ। संपाक० ऊषधीनाकाथायपाकनइ विषइ छइ तेसतपाक। अथवा सउऊषधीमहित पचीइ तेसतपाक। अथवा सउवार पचीइ ते सतपाक। अथवा सोरूपई थापचीवानासुल्यनालागइ ऊषधीनुंमुलजनु ते सतपाक। इसमसहस्यपाक पणि इमजा णिवो। तणइ तिलइ। अणि० वापडी तिइं। सुरनिणा० सुगंधद्रव्य नइं आ टइंऊ गाडीनिइं। गंधोदक। उस्नोदक। सीतोदक। त्रिणि पाणीइं नेसवरावीनइ। मनोज्ञ० ऊडउ आतकलमञा लिनोकुरादिक। थाली पाग।र० हांडली तुरांधु। अट्ठ० खा तना दोषरहित। अठारस्स० अढार स्यालणा सहित। यम एाजेमाडइ। जीनें जीवस्कंधि चडावी वहइ। तणिइं करी

तिन्हं दुप्पडियारं समणाउसो तं अम्मापिउणो भट्टियस्स धम्मायरियस्स संपातोवियणं केइ पुरिसे अम्मापियरं सयपाग सहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भंगेत्ता सुरभिणा गंधवट्टएणं उव्वट्टित्ता तिहिं उदगेहिं मज्जावेत्ता सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता मणुन्नं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोयणं भोयावेत्ता जावज्जीवं पिट्ठवडेंसियाए परिवहेज्जा तेणावि तस्स अम्मापिउस्स दुप्पडियारं भवइ। अहे णं से तं अम्मापियरं केवलिपन्नत्ते धम्मे आघवइत्ता पन्नवइत्ता परूवइत्ता ठावइत्ता भवति तेणामेव तस्स अम्मापिउस्स सुपडियारं भवति समणाउसो। केति महच्चे दरिद्दं समुक्कसेज्जा तातेणं से दरिद्दे समुक्किट्ठे समाणे पच्छा पुरं चणं विउलभोगसमितिसमन्नागते तावि विहरेज्जा। तएणं से महच्चे अन्नया कयाति दरिद्दीहूते समाणे तस्स दरिद्दस्स अंतिए

मोटो। अवि० होलो। अथवा पुन्नाइ ऊहनी तमहाचे। अथवा लक्ष्मीनाधणी पणाइं मोटो। तणइ पुरुष उपप्रतमाहार्वा। अथवामा साईसहित तमा रुर्वा तिपुरुष। दरिद० कोइएक दरिद्रनइ। समुक्का सि० धनधान्यादिकइ उत्तकृष्ठ करइ। मएणा स्मिट० तिवारपछी तिदरिद्री उत्तकृष्टी कीधो छतउ। पच्छापुरं० पछइ पहिलुं ऊतकृष्ट थउ कहिवानो कालतप हिलु तिहथी आगल्यो कालति पछइ। विपुल भोगनासमुदाय युक्त विचरि। तएणं० तिवारपछी। महच्च० तेतिति एकदा दरिद्री थयो। तेवाणा नरदरिद्रीकन्हइ आवइ। तदरिद्री नेइ सस

यथा तिध र्म अहिंसा लक्षण परूवि० त्तदेखकरी यथा अदार सहस्त्रसी लांगरूप ठाविसा० धर्मनइ विषइ थापइ। सुत्र० ऊ सीकलमा ता पितानइ थाइ। त्य जणीधर्म नुं थापवु। तामाटऊ ऊपगारछो इ। किइ० कोइएक पुरुषपणि किहवोछइ।

रवइ पणि माता पिता दिकनइ उ० ऊसीक लथाता दोहिलु। नथवाइ। आ घ० ऊउ। मि० तिपुरुष० तेअ० तिमाता पितानइ किव लीपरूपति धर्मना वि षइ। आघ० सामान्य प्रकारिकहइ त्य धर्म करि। पन्न वुइमो० वि सेष प्रकारि कहीनइ

ठिमइधर्मश्रोसद्धिनआपइ॥ हिवइधर्माचार्यनेंअणऊसीकल्पवाकापणुकहइछइ॥ आचार्यकऊइधर्मतेंसुवचनसांभ
लीनइ॥ निं॰ मनमाहिइअवधारीनइ॥ ऊ०निं॰ ऊदेसनइविषइ॥ निसा दो हिलीतेऊनिं दिदेसथकी॥ सं हरइ॥
नि होघीकाढइ॥ अटवीमाहिइपड्योथको निस्तारइ॥ दीर्घकालनोरोगकुष्टादि॥ आतंक सूलादिककष्टनु॥ तेहथीमुं
कावइ॥धर्मइस्थापिवइकरीकसीकलथइए तेसणीधर्म तेसवहिइन्नुकारणएहवुंकसइ॥ अ नि॰ निष्यारम॰णार

तिथंसव्वमागच्छेज्जा तएणं सेसेट्ठि तस्स धम्मायरियस्स विदलभाणं। तेणं वितस्सदुप्पडि
यारं भवति अहे णं से तं धम्मायरियं केवलिपन्नत्ते धम्मे आघवतित्ता पन्नवइत्ता परुवतित्ता ठाव
तित्ता भवति तेणामेव तस्स धम्मायरियस्स सुप्पडियारं भवति केति तहारूवस्स समणस्स वा माह
णस्स अंतिते एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयणं सुच्चा निसम्म कालमासे कालं किच्चा अन्न
तरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने तए णं से देवे तं धम्मायरियं दुब्भिक्खाओ वा देसाओ सुभिक्खं दे
सं साहरेज्जा कंताराओ वा णिकंतारं करेज्जा दीहकालिएणं वा रोगातंकेणं अभिभूतं समाणं
विमोएज्जा तेण वि तस्स धम्मायरियस्स दुप्पडियारं भवति अहे णं से तं धम्मायरियं केवलिपन्नत्ता
धम्माओ भट्ठं समाणं भुज्जो वि केवलिपन्नत्ते धम्मे आघवित्ता जाव ठावतित्ता भवति तेणामेव तस्स ध
म्मायरियस्स सुप्पडियारं भवति तिहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चा
उरंतं संसारकंतारं वीतीवतेज्जा तं अनिदाणताते दिट्ठिसंपन्नयाए जोगवाहिताते तिविहा उस ४६

हितपणाइकरी॥ दिट्ठिसंप॰ सम्यक दृष्टिकेतो पणिकरी॥ जोगवा॰ श्रुतोपधाननकारि॰॥ सिद्धांतना योग निर्वाहइ त्याता
न्नाकीअइ तेपरियहइ॥ वस्तु नीमुर्छा ते परिग्रह २४ डिक रूपधिनीएवीं तेवु॥ जीवधर्मकहइछइ॥ सुत्रइ॥ पाणि
अम॥

एकाग्रता। मननऊंएकाग्रपणुं॥ एवंवचनकाय॥ पणिधानसु सुणिधानस्सु विकु तेदिइकहइछइ॥ सुप्रणिधानः सुसप्र
णिधान तिवारित्रपरिणामछइ॥ तेसंजतीमनुष्यनइहुइ॥ २हिवइ॥ अथवा मनादिकयोगसमाधिस्थापनइकरी॥
एसंसारतरिवोतोकालेहुइ। तेसणीकालनुंस्वरूप १४सुत्रइकहइछइ॥ पहिलोआरोतेऊत्कृष्टीअवसर्पिणी॥
बीजोदीपस्लगिइ मध्यमअवसर्पिणी॥ छठोतेऊघन्यअवसर्पिणी॥ पहिलोआरोतेहना त्रिणभाग॥ ऊतिम १ मध्य
म २ जघन्य ३ इमछइआरित्रिणि ३ प्रकारिकहिवा॥ एमऊसर्पिणीपणिं भवलीपरिइं विचारवी॥ छठोतेऊतकृष्टो
॥५।४।३। बीजोतेमध्यम॥ पहिलोतेऊघन्य॥ इमछएआरानात्रिणि २ भाग॥ पाहिलोतेजघन्य॥ बीजोमध्यम। त्रीज

प्पिणी पन्नत्ता तं उक्कोस्सा मज्झिमा जहन्ना एवं छप्पि समाओ भाणियव्वाओ जाव दुसमदुसमा ति
विहा उस्सप्पिणी पं तं उक्कोस्सा मज्झिमा जहन्ना एवं छप्पि समाओ भाणियव्वाओ जाव सुसमसु
समा १४ तिहिं ठाणेहिं अच्छिन्ने पोग्गले चलेज्जा तं आहारिज्जमाणे वा पोग्गले चलेज्जा विकु
व्वमाणे पोग्गले चलेज्जा ठाणातो वा ठाणं संकामिज्जमाणे पोग्गले चलेज्जा १ तिविहे उव
धी पं तं कम्मोवही सरीरोवही बाहिरभंडमत्तोवही एवं असुरकुमाराणं भाणियव्वं एवं एगिंदि

उकृतकृष्ट॥ कालते अवतनइद्रव्यधर्मकहिइ। तेहनासरिखापणाथकीपुदगलधर्मकहइछइ। तेहनासुत्र ५ अछिन्न
॰॥ पथुगादिकइछेद्यापुदगलसमुदायचलइजपणि जअछिपुफलचलइ तेकारणकहइछइ॥ आहारिज्जमा॰ आहारले
ठाण ठाणं॰ हस्तादिकइकरीकोइद्रव्यएकठामिथीअइठामिप्रक्षेपनापुद्गलि तेहमा हिथीचलइ तेपुदगलनीकलइ॥
कुव हिं॰ इसाइकरीजीवनइपुष्टोकीजइ तेऊपधि॥ मंड॰ माटीनाभाजन॥ मत्त॰॥ कांसादिकनाभाजनरूपऊपधि॥ अथवा सां
डुतेवस्त्रादि॥ मत्ते॰ प्रकार ते वस्त्रादिक तेहनुनाम मकारकहीइ तेऊपधि॥ नारकीएकेंद्रीनइबाह्यऊपधिऊपग
रण सोदादिनथीतेसणीवाणमाहिइनकह्या॥

विगिंडी लिका एकमइवाही उपकरणादीसइलइ। तेणि त्रिणिठाणामाहि आण्या। सचईले० पाषाणमो गाउनातस्सचित्तरूपछि
वस्त्रादितत्र चित्तउपछि॰ अनेरइसस्त्रअंइकरीपरिणत तेमिश्ररूपछि॥ नारकीनइस्वरीरातस्सचित्तरूपछि॥ उत्पत्तिनारका
नकतस्रचित्तरूपछि॥ सरीरातस्स वित्तनछइ॥ स्वासोस्वासनं पुद्गलअचित्तनछइ। तस्सणां मिश्रपणुजाणवुं॥ अहीइ॥
पोतामोकीजइ तेपरिग्रह॥ वस्तुनीमुर्छा तेप्रग्रह॥ २ध३उदकिं रूपछि नापरिज्ञाणिवो॥ जीवधर्मकहइछइ॥ सुत्रइप्रणि
धान०॥ एकाग्रता० मनवेएकाग्रपणुं॥ एवंवचनकाय॥ पणिधानसुसत्रअसुस भेद्रकिरिलहीकरहइछइ॥ सुपणिधान०॥ सुस॥ सुपणि

य नेरइयवज्जं जाव वेमाणियाणं। अहवा तिविहे उवही पं तं सचित्ते अचित्ते मीसए। एवं नेरइ
याणं निरंतरं जाव वेमाणियाणं २ तिविहे परिग्गहे कम्मपरिग्गहे सरीरपरिग्गहे बाहिरभंडमत्तपरि
ग्गहे एवं असुरकुमाराणं एवं एगिंदियनेरतितवज्जं जाव वेमाणियाणं ३ अहवा तिविहे परिग्गहे
पं तं सचित्ते अचित्ते मीसए एवं नेरइयाणं निरंतरं जाव वेमाणियाणं तिविहे पणिधाणे पं तं
मणपणिहाणे वइपणिहाणे कायपणिहाणे एवं पंचिंदियाणं जाव वेमाणियाणं तिविहे सु
पणिधाणे पं तं मणसुपणिहाणे वतिसुपणिधाणे कायसुपणिधाणे संजतमणुस्साणं तिविहे
सुपणिधाणे पं तं मणसुपणिहाणे वायिसुपणिहाणे कायसुपणिहाणे तिविहे दुपणिहाणे
पं तं मणदुपणिहाणे वयदुपणिहाणे कायदुपणिहाणे एवं पंचिंदियाणं जाव वेमाणियाणं ति
विहा जोणी पं तं संवुडा वियडा संवुडवियडा तिविहा जोणी पं तं सीता उसिणा सीउसिणा

भनातेचारित्रपरिणामछइ॥ तेसंयतमनुष्यनइजहुइ॥ दुःप्रणिधान तेअसुस॥ जीवनाअधिकाररणी जोन्यनुस्वरूप
पकहइछइ॥ त्याजि०॥ तैजसकारमणसरीरइसहित ओदारीकादिकरी सरीरइमाश्रिपाइ जेहनइविषइ॥ तेथ्योनिजी ४७
वना उपजवानोगम॥ तेजकाइयानइ एकउष्णयोनइछइ तेसणी वर्जी। सीतसरजाणया तिविहाजोणीतु तस्साणं॥१॥

संवुडा सुषमासांकडं॥ प्रगटानीपरिइं॥ वियडा०॥ प्रगटत्यानि॥ संवुडवियडा तेउभयरूप॥ कुर्मोनता॥ कालबानीपरिइं
कुवी॥ संखा०॥ संघनाअरिधाआवर्त्तनिछइ॥ त्यत्यानिमाहिंतेसंखावत्ती त्यानि॥ वंकमंति० उपजइ॥ विउक्कं०॥ विणस्यइ
चयंति०॥ च्यवइ॥ उव० ऊपजइ॥ पिहुणा० पृथकउनइअमरलोकघणाऊपजइ॥ यो निसउच्छिकारिमनुष्यकह्या॥ तेमनुष्यन
इवनस्पतीनासरीरोधर्मछइ तेसणी वनस्पतीनुस्वरूपकहइछइ॥ नाणव०॥ आदर वनस्पतीकाय॥ संष्यातजीवसहित

एवं पंचिंदियाणं जाव वगलिंदियाणं तेउकाईयवज्जाणं सम्मुछिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं सम्मु
छिममणुस्साणय तिविहा जोणी पं तं सचित्ता अचित्ता मीसिता एवं एगिंदियाणं विगलिंदियाणं
सम्मुछिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं संमुछिममणुस्साणय तिविहा जोणी पं तं कुम्मुन्नता संखाव
त्ता वंसीवत्तिया कुम्मुन्नता णं जोणी उत्तमपुरिसमाऊणं कुम्मुन्नताते णं जोणी तिविहा उत्तमपुरि
सा गब्भे वक्कमंति तं अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा संखावत्ता णं जोणी इत्थीरय
णस्स संखावत्ता ते णं जोणीते बहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्ज
ति नो चेव णं निप्फज्जंति वंसीवत्तिता णं जोणी पिहुजणस्स वंसीवत्तिता णं जोणीए बहवे पिहुजणे
गब्भे वक्कमंति तिविहा तणवणस्सतिकाइया पं तं संखेज्जजीविता असंखेज्जजीविया अणंतजी
विया जंबुद्दीवे भारहे वासे तओ तित्था पं तं मागहे वरदामे पभासे एवं एरवए वि जंबुद्दीवे महा
विदेहे वासे एगमेगे चक्कवट्टिविजए तओ तित्था पं तं मागहे वरदामे पभासे एवं धायइसंडे

तनालिकाबंधकुसुमजातीइ आदिना असंख्यातजीवकते॥ लिंबआंबादिकनामुलस्कंधबवाप्रवाल सापाएअसंख्यात
जीविका॥ अनंतजीवादिरव॥ वनस्पतीनुस्वरूपकहिउं॥ तेतोजलाश्रयघणीहइ। तेसंबंधनुणी जलाश्रयनातीर्थनुं
स्वरूपकहइछइ॥ भरहइरवतनाजत्रिणितीर्थ तेपुर्वदक्षिणपश्चिमसमुद्रातं॥ पुर्वि मागध॥ दक्षिणइवरदाम॥ पश्चिमइ।
प्रभास॥ महाविदेहनो विजयमाहिंयसीतासीतोदानदीमाहिंपुर्वि मागध। दक्षिणि वरदाम॥ पश्चिमइप्रभास। इम अनुक्रमइजाणवा

ठाणांग
बीठाणो

तीर्थंकरस्वरूपकहिछे मनुष्यक्षेत्रनउं। स्थितिरूपनाकालनुं स्वरूपकहइछइ॥ तस्यासूत्र १५॥ अरहाउयं० ॥पूर्वआऊषापाल
इ ॥घउंटाहुउनहीं तेतिरूपकेमायुसणी॥ मज्झिममाऊयं०॥ मध्यमआऊखुंपालइ॥ तेरुषभवर्द्धमानाअभावथकीतीर्थंकि
रादिमाउथानाअधिकारसणीवली विसुत्रकहइछइ॥ बादरातेऊकाइयाणं। इत्यादि॥ हिवइवलीस्थितिनाअधिका

दीवपुरच्छिमद्धेवि पच्चच्छिमद्धेवि पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धेवि पच्चच्छिमद्धेवि ३ जंबुद्दीवे २
भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए तिण्णिसागरोवमकोडा
कोडीओकालो होत्था एवं ओसप्पिणीए नवरं पन्नत्ते उ आगमिस्साए उस्सप्पिणीए भविस्सति ए
वं धायइसंडेपुरच्छिमद्धे पच्चच्छिमद्धेवि एवं पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धेवि पच्चच्छिमद्धेवि कालो
भाणियव्वो जंबुद्दीवे २ भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए मणुया ति
न्निगाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं तिन्निपलिओवमाइं परमाऊं पालइत्था एवं इमीसे ओसप्पिणीए आगमिस्साए
उस्सप्पिणीए जंबुद्दीवे २ देवकुरुउत्तरकुरुकुरासु मणुया तिन्निगाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पं० तओ तिन्निप
लिओवमाइं परमाऊं पालयंति एवं जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चच्छिमद्धे १० जंबुद्दीवे २ भरहेरवएसु वासेसु
वासेसु एगमेगाए उस्सप्पिणीओसप्पिणीए तओ वंसाओ उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा
अरहंतवंसे चक्कवट्टिवंसे दसारवंसे एवं जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चच्छिमद्धे १५ जंबुद्दीवे २ भरहे
रवएसु वासेसु एगमेगाए उस्सप्पिणीए ओसप्पिणीए तओ उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उ
प्पज्जिस्संति वा तं अरहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा एवं जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चच्छिमद्धे ३ तओ अरहं
२ सणी अनेरुसूत्रकहइछइ॥ अथ तेऊमानइअर्थे॥ सर्हतं०॥ सुषकल्याणमाहतुथकी॥ सुषकल्याणभगवंतनइंकही
इ॥ प्राकृतिनुं तेरहवुंआमंत्रणरूपथी ४८

अर्हंते तेगौतममहावीरनइआमंत्रीकहइछइ सालिकल्मादिक॥ व्रीहीतेसमुच्चय यइ॥ जवजव०॥ तेजवनीजातिस
र ॥क्षमनकोताउता०॥ कोवलामाहिंघातीराख्या॥ वांसनाकडानउकोठेतेपालोतेमाहिंघातीराथइ॥ घासनीकुप
परिघाथीवांसनाकडाभयतेमाहिंघानघालइतेमंच॥ मालोतेघरकपलो ऊगरतेमाहिंघालाराख्या॥ उलित्ता
दाकणु दिईनइसांधिऊपरिलीपइछइ बाणइंलिप्यते। सघलइलीपइ॥ लंछिया०रषादिकइलंछनकीधउं॥ मुद्दि
उयं पालयंति तेणं अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा तओ मज्झिममाउयं पालयंति तेणं अरहंता चक्कवट्टी
बलदेववासुदेवा ३ बायरतेउकाइयाणं उक्कोसेणं तिन्निराइंदियाणं ठिती पन्नत्ता बादरवाउकाइया
णं उक्कोसेणं तिन्निवाससहस्साइं ठिती पन्नत्ता अह भंते सालीणं वीहीणं गोधूमाणं जवाणं जवज
वाणं एतेसिणं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं उलित्ताणं लित्ताणं
लंछियाणं मुद्दियाणं पिहिताणं केवइयं कालं जोणीसंचिट्ठति उहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं
तिन्निसंवच्छराइं तेण परं जोणी पमिलायति तेण परं जोणी पविद्धंसति तेण परं जोणी विद्धं
सति तेण परं बीते अबीते भवति तेण परं जोणीवोच्छेदे पन्नत्ते दोच्चाए णं सक्करप्पभाए पु
ढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं तिन्निसागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता तच्चाए णं वालुयप्पभाए पुढवीए
जहन्नेणं नेरइयाणं तिन्निसागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए तिन्नि नि
या०॥ मृत्तिकादिकइनी मुंद्रीकाधी॥ पहिया०॥ ढांकिउ॥ पोति०॥ त्यहनइ विषइअंकुरोऊपजइ तेयोनिकेतलोकाल
रहि॥ पमिलाइ॥ वर्णादिकइहीणीथाइ॥ पविद्ध० विद्धंसाबानइसन्मुखथाइं॥ विद्धसइ॥ वीय०॥ ते बीजवाबी
ऊते अबीजथाइ॥ अंकुरोनकऊपजइ॥ वोछेद०॥ योनिनोअछेदथाइ॥ स्थितिनाउअधिकारसणी वलीसुत्र२ कहेछइ
दोचाएइत्यादि॥ नरकनाअधिकारमाहिवली नरकनानारकीनुंस्वरूपकहइछइ॥ सुत्रत्रिणइ।पल्लुसुत्रेइ वेदनो

ठाणांगबा
लावोध

कही। बीजइ सूत्रइ ऊर्ध्व वेदना लागवता कह्या। ते वेदना दोष देवाडवा नइ काजि॥ नरगक्षेत्रनुं स्वरूप कहि छै॥
ते क्षेत्र मानुष्य वली क्षेत्रना जिस्यु त्रण कहइ छइ॥ तउ०॥ त्रिणि०॥ लोग०॥ लोकविषइ॥ समा०॥ प्रमाणसरीषा०॥ सप
रक्खं दिसिं सरीषा॥ सीमं त०॥ पहिली नरकना पहिला पाथडइं नइ विषइ पहिलुं तइ इंद्रक तेहनु नाम सीमंतक ४५

२ तावाससतसहस्सा पन्नत्ता। तत्थ णं पुढवीसु णेरइयाणं उसिण वेयणा पन्नत्ता। तं पढमाए दोच्चा
ए तच्चाए। तत्थ णं पुढवीसु णेरइयाणं उसिण वेयणं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। तं पढमा ते दो
च्चा ते। ततो लोगे समा सपक्खिं सपडिदिसिं पं० तं० अप्पतिठाणे णरए जंबुद्दीवे सव्वट्ठसिद्ध
विमाणे। तउ लोगे समा सपक्खिं सपडिदिसिं पं० तं० सीमंतए णरए समयखेत्ते ईसिप्पभाराए पु
ढवी। ततो समुद्दा पगंतीए उदगरसेणं पं० तं० कालोदे पुक्खरोदे सयंभूरमणे। ततो समुद्दा ब
हु मच्छ कच्छभाइण्णा पं० तं० लवणे कालोदे सयंभूरमणे। ततो लोगे णिस्सीला णिव्वता णिग्गु
णा णिम्मेरा णिप्पच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए अ
प्पतिट्ठाणे णरए णेरइयत्ताए उववज्जंति तं० रायाणो मंडलीया जे य महारंभा कोडुंबी। तउ

लोषजे उननोठइ॥ तिहसि०॥ इषत्प्राग्भार तेथोडुं सुं नम्या पणा थकी॥ पईगइए०॥ स्वभावि॥ आइन्ना०॥ व्याप्त वी
ला समुद्र मादि रघो डाम छकछपादिकइ॥ पणि सर्वथा निषेध नहीं। १ हिवइ क्षेत्रना अधिकार सत्ता अपइठाणइ नर
कावासइ जे ऊपजइ ते कहइ छइ॥ निस्सीला०॥ सुतस्वभाव रहित॥ दुस्सील ई त्यर्थ॥ निव्वया०॥ निव्रत प्राणातिपाता
दि विरति रहित॥ निगुण०॥ उत्तर गुण रहित॥ निम्मेर्याद०॥ पडिवज्या नाअणपालवा थकी॥ निपच्चखाण०॥ नोकार
सीआदि पच्चखाण पोषध अष्टम्यादि पर्वनइ विषइ॥ उववा०॥ उपवास नु करिवुं तेह रहित॥ राजान चक्रवर्ति वासु
देव॥ मंडलीक सामंत राजा महाआरंभ सते पंचेंद्रियादि वधना करणहार ते एहवा कुटुंबी एअपइठाणना कह्या॥ ४८

ते हस अपिना नाम इइं सर्वार्थसिद्धिना देवतानुं स्वरूप कहइ छइं॥ राजान प्रसिद्ध॥ परि०॥ छांड्या काम
भोग सर्वविरता॥ सेनापतिनायक॥ प्रसास्तर ते लोकाचार्यादि कीहां एक धर्मना शास्त्रना पाठक०॥ भणनहार
सणवणहार॥ किहां एकपद वन अर्थ दीसइ छइ॥ वली विमान नुं जिस्य कपक हइ छइ॥ बेसइत्यादि॥ नेव०॥ तिन्नेवे
कृस्न नील रक्त ए त्रिणि वर्ण अनइ स्थानांतरि रात पीला नइ धोलो ए त्रिणि वर्ण दीसइ छइ॥ विमानकह्या ते देवतानो आश्रय ते

णो एस्सुसीला सव्वया सगुणा समेरा सपच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धि
महाविमाणे देवत्ताए उववत्तारो भवंति तं० रायाणो परिचत्तकामभोगा सेणावती पसत्थारो। बं
भलोगलंतएसु णं कप्पेसु विमाणा तिवन्ना पं० तं० किण्हा नीला लोहिता। आणय पाणयारणच्चु
तेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्ज सरीरगा उक्कोसेणं तिन्नि रयणीउ उड्डं उच्चत्तेणं पन्नत्ता। ततो
पन्नत्तीउ कालेणं अहिज्जंति तं० चंदपन्नत्ती सूरपन्नत्ती दीवसागरपन्नत्ती। तिहाणस्स पढमोउद्देस
मतो॥१॥१८॥ तिविहे लोगे पं० तं० णामलोगे ठवणलोगे दव्वलोगे। तिविधे लोगे पं० तं० णाणलो

सणी देवताना सरीर कहइ छइ॥ भव०॥ जन्म अवतार लगी धराइ ते भवधारणीक सरीर अथवा देवनी गति लगें धराइ
तां लगि इए सरीर धरीइ ते भवधारणीक सरीर कहीइ॥ देवतानु स्वरूप कहिउं। तेहनइं अधिकारइं करीयें च ३ त्रिणि
बंध पणा छइ ते कहइ छइ॥ काल०॥ पहिलुं पहिली पोरसी ते काल॥ जंबूद्वीपपन्नतीनकली ए त्रिणि गणमा छइ॥ त्रीजा
ठाणानो पहिलो उद्देसउ॥ पहिलइ उद्देसइ जीवस्वरूप कहिउं। वली बीजइ तेहइ जि कहीइ छइ। पहिलइ उद्देसानइं छेहि
लइ सूत्रइ चंदसूरप्रज्ञप्ती कही ते तो वडी दिक लोकमाहि छइ। ते सणी लोकनुं स्वरूप कहइ छइ॥ नाम ठवणा द्रव्यलोक
ते इंद्रनी परिइ॥ नवरं जे सरीर जेस भव्यसरीर ते बिजुधा व्यतिरिक्त॥ द्रव्यलोक ते धम्मास्तिकायादि॥ जीव अजीव रूपी
अरूपी सप्रदेसद्रव्य अप्रदेसद्रव्य। ते रूप द्रव्यलोक॥ हिवइ लौ नावलोक कहइ छइ॥ णाणलोग०॥ इत्यादि॥ ज्ञानलोकस्या

ठाणांगं॥

जेसणी ज्ञान तेह्नी यक सायोपसमिक भावरूप छइ॰ अनइ क्षायिक दिसा वर्त्तता लोकप्रणइ कह्यो छइ तेहणी ज्ञानभाव
लोग॥ इम दर्शन चारित्र पणि॥ त्रिविध लोक कहइ छइ॥ उड्ढलोगे इत्यादि॥ त्रिविध लोकस्वरूप कह्यो अनंतर तेमाहि र
ह्या। चमरेंद्रादिकनुं स्वरूप कहइ छइ॥ ठकुराइनी त्याग घणी इंद्र दीपवा एक को राजा॥ परिषदा॰॥ परिवार॥ देव देवी जि तेड्या
जि आवइ ते अभितरनी परिषदा॥ जे तेड्या अणतेड्या आवइ ते मध्यली परषदा॥ जे अणतेड्या आवइ ते बाहिरिली परि
षा

णो दंसणलोगे चरित्तलोगे। तिविहे लोगे पं० तं० उड्ढलोगे अहोलोगे तिरियलोगे। चम
रस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो ततो परिसातो पं० तं० समिता चंडा जाया। अभिंतरिया समि
ता मज्झिमिता चंडा बाहिरिता जाया। चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सामाणिताणं दे
वाणं ततो परिसातो पं० तं० समिता जहेव चमरस्स एवं तावत्तीसगाणवि। लोगपालाणं तुंबा तु
डिया पव्वा। एवं अग्गमहिसीणवि। बलिस्सवि एवं चेव जाव अग्गमहिसीणवि। धरणस्स य सामाणि
तावत्तीसगाणं च समिता चंडा जाया। लोगपाल अग्गमहिसीणं ईसा तुडिया दढरहा। जहा धर
णस्स तहा सेसाणं भवणवासीणं। कालस्स णं पिसाइंदस्स पिसायरन्नो ततो परिसाओ पं० तं० ईसा
तुडिया दढरहा। एवं सामाणिय अग्गमहिसीणंपि। एवं जाव गीयरति गीयजसाणंवि। चंदस्स णं
जोतिसिंदस्स जोतिसरन्नो ततो परिसातो पं० तं० तुंबा तुडिया पव्वा। एवं सामाणिय अग्गमहिसीणं।
एवं सूरस्सवि। सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो ततो परिसातो पं० तं० समिता चंडा जाया। एवं जहा च
मरस्स एवं जाव अग्गमहिसीणं। एवं जाव अच्चुतस्स लोगपालाणं। ततो जामा पं० तं० पढ ५०

पंदा॥ पिहिली परिषा साथिइं आलोच करइ॥ बीजी साथइं आलोच्य तहोइ तिकहइ छइ॥ छेहिनीनइं
कार्यनिउ आदिस दिइ॥ लोकपालनी परषदोना नाम॥ तुंबादि त्रिकं २ परषदाना नाम जुजुया छइ। पुर्वि देवता कह्या

चमरेंद्र ना परषदाना
डाक्टर भाउदाजी इत्याख्यस्य पुस्तकालयस्य
D. BHAU DAJI MEMORIAL

ते ताधर्म विकारु छइ॥ धर्म ते काल विसिष्ट इ पडिवज्जइ। तेहणी कालवास परइं धर्मनी प्रतिप्रतिक छइ छइ॥ याम रात्रि दि
वसि चुं चउथो भाग प्रसिद्धि छइ। एणइ रात्रि विकसनो नीजो भाग कहिइं छइ॥ अथवा रात्रि दिवसनो चउथो भाग लीजइ
पणि इहां त्रिणि भाग ग्रहिआ छइ। चउथो भाग अग्रहीनथी जाणिवा माटइ। केवलीना प्रितसो संभलवा लाभइ। नावसइ
माहिं केवलि बोहिं बुझेज्जा। मुंडे भवित्ता। अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा। केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा। एवं संजमेणं संजमेज्जा

पच्छिमजाम न ७.१

मजामे मज्झिमजामे तिहिं जामेहिं आता केवलि पन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणताते तं० पढमे
जामे मज्झिमजामे पच्छिमजामे। एवं जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा। पढमजामे मज्झिमजामे पच्छिमे
जामे। ततो वया पं० तं० पढमवते मज्झिमवते पच्छिमवते। तिहिं वतेहिं आया केवलिपन्नत्तं धम्मं
लभेज्ज सवणयाते पढमवते मज्झिमवते पच्छिमवते। एसो चेव गमो णेयव्वो जाव केवलनाणंति।
तिविहा बोधी पं० तं० णाणबोधी दंसणबोधी चरित्तबोधी। तिविहा बुद्धा पं० तं० णाणबुद्धा दंसणबु
द्धा चरित्तबुद्धा। एवं मोहे मूढा। तिविहा पव्वज्जा पं० तं० इहलोगपडिबद्धा परलोगपडिबद्धा दुहतोपडिब
द्धा। तिविहा पव्वज्जा पं० तं० पुरतोपडिबद्धा मग्गतोपडिबद्धा दुहतोपडिबद्धा। तिविहा पव्वज्जा पं० तं०

संवरेणं संवरेज्जा। आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा। इत्यादि॥ त्रिम काल विसिष्ट धर्मनी प्रतिपत्ति कही। तिम वय विसिष्ट कह
इ छइ॥ ५० बालवय ५० ... ॥ ... करीनइं ते बोध कहइ छइ॥ सूत्र त्रिहु चारित्र ... बो
धिना फल ... चारित्र प्रधान सफल छइ तेहणी चारित्र इनइ बोधि कहीइ। अथवा जीव उपजोग पणा
थकी बोधि कहीयइ॥ बुद्धा॰ ज्ञानादिनो धणी। ज्ञानावरणीनो उदइ ते ज्ञानमोह॥ दर्शनावरणीना उदइ ते दर्शनमोह॥ चारित्रा
वरणीनो उदइ ते चारित्रमोह॥ तेहनो धणी ते मूढो॥ पुर्विइं चारित्र बुध कह्या तेतो प्रव्रज्यायित ... ते प्रव्रज्या स्वरूप कहइ छइ
दर्शना॰॥ ... चारित्र ... प्रव्रज्या। ... ते प्रव्रज्या ... जि प्र
व्रज्या लिइ ते इहलोकप्रतिबद्धा॥ जे ... परलोकप्रतिबद्धा॥ ... ६०॥

->पुरउ॰ रिव्यादि कआग लिघास इ एहनी वाछा इदि सालिइ॥ मग्ग॰ ... इकना ... घकी ... सालोइ ल मग्गो प्रतिबद्धा॥ ... ॥ ३०९

तुयावइत्ता० थोडा ऊपजावी दिक्षा द्यइ जिम मुंनीचंद्रगुरुअनइ सागरचंद्रइ दीक्षा दीधी ॥ पुआवइत्ता० अनेरे गामि मोकली
नइ दीक्षा दीजइ । आर्यरक्षितनी परिइं ॥ बुयावइत्ता० बोलावीनइ दिक्षा ल्यइ । जिम गौतमस्वामी करसणीनइ दीक्षा दीधी ॥
पुयावइत्ता० गुरुनी सेवाथी जे लइ ते अवयात प्रवर्ज्या ॥ ५ धर्मनिइ दृष्टांइ वइरकरी जे लइ ते आख्यात प्रव्रज्या । मेता
र्यनी परिइं ॥ अघवासंगार० ॥ ३ ॥ अघवा सुंचारिक ल्यइ इम कही दिक्षा दीजइ ते आख्यात प्रवर्ज्या ॥ फल्गुरक्षितनी परि बो
लघकी प्रवर्ज्या लेइ । ते संगार प्रवर्ज्या मेतार्यनी परिइं । अघवा संगार० ५ जो तुं दीक्षा लीइ तउ हुं लीउं । ते प्रवर्ज्या वित्त

तुयावइत्ता । पुआवइत्ता । बुआवइत्ता । तिविहा पवज्जा पं तं उवातंपावज्जा । अक्खात पवज्जा । संगा
र पवज्जा । तउ नियंठा णो संणोवउत्ता पं तं पुलाते णियंठ सिणाते । ततो णियंठा णोसंणा णोसंन्नणो स
णोवउत्ता पं तं बउसे पडिसेवणा कुसीले कसायकुसीले । तउ सेह भूमीउ पन्नत्ताउ उक्कोसा
मज्झिमा जहन्ना । उक्कोसा छम्मासा मज्झिमा चउम्मासा जहन्ना सत्तराइं । तउ थेर भूमीउ पं तं जाति

नी नियंथकुह । तेमांणि निर्ग्रंथनुं स्वरूप वस्तुज्ञ छइ कहइ छइ ॥ बाह्य अभ्यंतर परिग्रहग्रंथ थकी नीकल्या ते निर्ग्रंथ निर्ग्रंथते
संकुलो ॥ संज्ञी० ॥ आहारादिकनउ अभिलाष ते अतीतकालनुं अनुंसरवानुं संसारिवुं ॥ अनइ अनागतकालनुं चीतवि
वुं ॥ तेरहित ते नउ संज्ञोपयुक्ता ॥ ते पुलाक ते लब्धिमइ ऊपजोगइ जिवर्तिइं । ते मणी आहारादि संज्ञारहित तेणइ
संजम असार नकरिइ ते पुलाक ॥ उपसांतमोह । क्षीणमोह ते निर्ग्रंथ घातीकर्म मलना क्षालवाथी थापामिउं सुधज्ञान
स्वरूप पामइ ते स्नातक । १ संज्ञा ते आहारादिकनो अभिलाष नोसंज्ञा ते आहारादिक अभिलाषनउ अभाव ते णइं करी स
हित ॥ बउस० ॥ सरीर उपगरण दिकनी विभूषा करवी वारिनइ सबलो लगाडइ ते बकुस । मूलगुणादिनी प्रतिसेवना० ॥
दोषनुं लगाडिवुं ते णइं करीनइं कुसितशील जेहनुं ते पडिसेवणाकुशील ॥ कषायइं करी प्रतिसेवना० ॥ दोषलगाडइ ते ५१
कषायकुसील ॥ निग्रंथ केतली एक मर्यादा आताप ना पाळइ ॥ ते लगी महाव्रताराप ना नो काल विसेषक हइ छइ ॥ सेह० ॥
नी पाइ ए । ते सेह कहइतां । सिक्षअथवा । शीक्षानुं प्रोढी यावइ ते शिक्षा तेहनी थ्यस्तुभि ॥ ॥ मोटी व्रतारोपवाना कालनी अवस्था तेसे

हेसभूमि अथवा शिक्ष्यस्तुभि ॥ तिहां उतकृष्टउं छमासवाडइ सिषनइ ऊठाडीइ । मध्यम विचिमास इंकउ ठाडइ ॥ जघन्नसात
दिहाडइ ऊठाडीइ । ग्रहीतसक्षता ते आवार विचार माटइ ॥ सिक्ष्यथकी विपरीत ते थीवर कहइ । ते स्थणी थीवरनुं स्व
रूप कहइ छइ ॥ स्थिवर ते गरढा ॥ भूमि० ॥ ते हनी अवस्थानी मर्यादा ते थिवरभूमि ॥ जाति० ॥ जनमथकी ॥
जातिथिवरनी अनुंकंपा करवी ॥ श्रुतथिवरनी पूजा करवी ॥ प्रवर्ज्या थिवरनी वंदना करवी ॥ थिवरादिक पुरु
षना प्रकार छइ । तेसणी वली पुरुषना प्रकार कहइ छइ ॥ सुमाणे० ॥ रूडो मन ते सुमन ते हर्षवंत रागीइत्त

थेरे सुतथेरे परियागथेरे सट्ठिवासजाए समणे निग्गंथे जातिथेरे । ठाणसमवायध
रेणं समणे णिग्गंथे सुयथेरे । वीसवासपरियाए णं समणे णिग्गंथे परियागथेरे । तउ पु
रिसजाता पं तं सुमणे दुमणे णोसुमणे णोदुमणे । ततो पुरिसजाया पं तं गंता णामेगे सु
मणे भवति । गंता णामेगे दुमणे भवति गंता णामेगे णोसुमणे णोदुमणे भवति । ततो पुरिसजाता
पं तं जामीतेगे सुमणे भवति जामीतेगे दुम्मणे भवति जामी एगे णो सुमणे णोदुम्मणे भवति एवं जा
तिस्सामीतेगे सुमणे भवति । तउ पुरिसजाता पं तं अगंता णामेगे सुमणे भवति २ तउ पुरिसजाता

थी ॥ दुम० ॥ दीनद्वेष ईर्ष्या ॥ ना सुमन नो दुमन ते मध्यस्थ सामायिकवंत ॥ त्रिवइ समुचयइ पुरुषप्रकार कहीनइ विसेषथकी
कहइ छइ ॥ गंता० ॥ एक विहारक्रियादिकनइ विषइ गइ मिइ हर्षिइं ॥ दुमणे० ॥ एक विहारक्रियादिकनइ विषइ जइन
इ सावइ ॥ नोसुम० मध्यस्थ क्रिइं जइनइ । मध्यस्थना विइं रहिइ । एगंता ते अतीत काल आश्रीकहिउं ॥ जामि
ते गा० ॥ जाउ छउं ॥ एवं वर्तमानकाल आश्री त्रिण्हि बोल कहिवा ॥ जाइस्सामि० ॥ अनागत आश्रीइम त्रिणि बो
ल कहिवा ॥ अगंता० अणगयइं हर्षइं । तिनगयो ते सलूंघयुं इम हर्षइं । एक सावइ । एक मध्यस्थ ॥ ए अतीत
काल आश्री कहिउं ॥

नजाभी० नहीं जाऊं ते अणजातो हुइ ॥ सो वइ मध्यस्थ एवर्त्तमान आश्री ॥ न जाइ स्वामि० जाइ सिनहीं ते सणी हुइ सो वइ । मध्यस्थ ॥ एअनागत आश्री । एवं आगंता० एक आवीनइ हुइ ॥ ३ ॥ एअतीत ॥ एमितं० ॥ १ ॥ वर्त्तमानइं ते आव तो हुइ ॥ ३ ॥ इम अनागत आश्री आवी सिइ मकरतो हुइ । सो वइ । मध्यस्थ ॥ अणागंता० अणाविइं त्रिणि हुआ दि इ अणावतो हुआ दिइ आवी सिनहीं तिहां हुआ दि ३ ॥ इम ऊभो रहीनइ ॥ अणऊभो रहीनइं ॥ निसिय ता० बइसीनइ ॥ नो खव० ॥ अण बइसीनइं ॥ १ ॥ हंताय० ॥ हणीनइं । अणहणीनइं ॥ छिं० ॥ छेदीनइ ॥ अणछेदीनइ ॥ बुइत्ता० ॥

पंतें णजामि एगे सुमणे सवति ३ तउपुरिसजाता पं तं णजामि स्सामी एगे सुमणे सवति ३ एवं आ
गंता णामेगसुमणे सवति ३ एमीते गसुएस्सामी ति एगसुमणे सवति ३ एवं एतेणं अभिला
वेणं गंता य अगंताय । आगंता खलु तहा अणागंता । चिट्ठित्तमचिट्ठित्ता । णिसितित्ता खवनाखव ॥ १ ॥
हंताय अहंताय । छिंदित्ता खलु तहा अछिंदित्ता । बुतित्ता अबुतित्ता । भासित्ता खव णो खव ॥ २ ॥ द
वाय अदवाय । लंभित्ता खलु तहा अलंभित्ता । लत्तित्ता अलत्तित्ता । पिबइत्ता खवनो खव ॥ ३ ॥
सुतित्ता असुतित्ता । जुज्झित्ता खलु तहा अजुज्झित्ता । जतित्ता अजत्ताय । पराजिणित्ता खवनोवेव ॥ ४ ॥
सदा रूवा रसा गंधा । फासा ततसिवहा णय । निसीलस्स गरहिता । पसत्था हण सीलवंतस्स । एमके

पदादि बोलीनइ ॥ अणबोलीनइ ॥ भासित्ता० ॥ भाषिभी बोलिवा ध्यापवस्तु ॥ नाखव० ॥ अणभाषीनइ ॥ २ ॥ दवा० ॥ दिइ नइ । लंभिता० ॥ लागवीनइ ॥ अणलागवीनइ ॥ लभित्ता० ॥ लहीनइ । अणलहीनइ ॥ पिबइत्ता० ॥ पाईनइ ॥ नो खव अणपाईनइ । ३ ॥ सुइत्ता० सूईनइ ॥ अणसूईनइ ॥ जुज्झित्ता० ॥ जुझीनइ ॥ जइत्ता० ॥ जीपीनइ ॥ अणजीपीनइ ॥ पराजि० ५२
अतिहिं जीपीनइ । अथवा कोएक वादी आगलि हारीनइ तेअनथ ऊपजतो टलतो मा टिइं ॥ अथरोति० ॥ अणहारइ हर्ष सदादि बोल स्वरूप माहि विस्तारीकहइ इए ॥ गाणाइ । त्रिणिस्थानक ति आगलि कहिस्यइ ॥ नीसील० ॥ नीसीलतिइं एके

त्रिणि स्थानक निंदनीक होइ । सीलवंतनइ प्रसस्तकुइ । एकेक सइसांतलीनइ । सुमनइ मनजोइ मनथाइ । एअतीत आश्री इम वर्त्तमा न आश्री । इम अनागत आश्री । इमपांचइ बोलइ छड अलावा कह्या ॥ निसील० ॥ समुच्चयइ । सुत्रस्वभाव रहित ॥ निव्वया० ॥ प्रा णातपातादि व्रत रहित ॥ निग्गुण० ॥ उत्तर गुण रहित ॥ निमरा० लोककुलनी मर्यादा रहित ॥ निप० नउकारसी पुरख उपवास र हित ॥ असिला० ॥ ते यहलोक निंदनीक कुइ ॥ उववाए० ॥ कलमधी देवता अथवा नारिकी नइ तिविइं ऊपजवु ते ऊपपातक

क । तिन्नि तिन्नि अालावगा णेयव्वा । सहं सुणेणा नामेगे सुमणे सवति ३ एवं सुणेमीति ३ सुणिस्सा
मि ति । एवं असुणेता णामेगे सुमणे सवति ३ नसुणमी ति ३ णासुणिस्सामी ति ३ एवं रूवाइं गंधाइं
रसाइं फासाइं एक्केक्के छ छ आलावगा णेयव्वा २७ तीता गाणा णिसीलस्स णिव्वयस्स निग्गुण
स्स निमेरस्स णिपच्चक्खाणपोसहोववासस्स गरहिता सवति तं अस्सिं लोगे गरहिते सवति
उववाते गरहिते सवति आयाति गरहिए सवति । ततो ठाणा सुसीलस्स सुव्वयस्स सगुणस्स समेर
स्स सपच्चक्खाणस्स पोसहोववासस्स पसत्था सवति तं जहा अस्सिं लोगे पसत्थे सवति उववाए
पसत्थे सवति आयाति पसत्था सवति । तिविधा संसार समावन्नगा जीवा जीवा पं तं ईत्थी पुरिसा
णपुंसगा । तिविधा सव्व जीवा पं तं सम्मदिट्ठी मिच्छदिट्ठी सम्मामिच्छदिट्ठी अहवा तिविधा सव्व जी

होयइ ॥ ततिहां निंदनीक कुइ ॥ आयाइ० ॥ आयाति० ॥ तिहांथी मरी वली कुमनुष्य तिर्यंचमा हि ऊपजइ । ते आयाति कहीइ ते सणी आगमीयाकालनउ सब तिहां निंदनीक कुइ ॥ गरहितनइ प्रसस्त ते तोसंसारी जीवनइ कुइ । तसणी सेसा री जीव नु स्वरूप कहइ छइ ॥ संसारनइं पाम्या ते संसार समापन्न हे वइ ते जीवना अधिकार माटिइं ए एसुत्र इं सर्व जीवनुं स्वरूप कहइ छइ

परित्त॥ प्रत्येकसरीर॥ अपरित्त० साधारणसरीर॥ नोप०॥ सिद्ध॥ श्री उर्ध्व पदइसघलइ सिद्धकहिवा॥ एलोकमाहि रि हा छइ तिसणी लोकनुंस्वरूप कहइ छइ॥ आकासमाहि॥ पइट्ठिए॥ प्रतिष्ठ्य॥ वाय० घनुवात तनुवात घनोदधी माहि रही पृथिवी तत० तमाप्रध्यादि॥ दिवइ एलोक मइ विषइजीव नुस्वरूप प्रवर्तेइ। ततणी दिसि नुस्वरूपकहइ छइ तइना १४ सूत्र॥ दिसाउ॥ दिस्य तिकहीइ ति पुर्वादिक पणाइ करी वस्तुइणाइ। दिसियातिकहीइ। आश्रमुंकडी दिस्य नी वस्तु इमकहीइं ति दिसि पुद्गलात स्कंधादिक नी दिसि तइरूप दिसि ति पुर्वी दि दिसि ना एपुद्गलआकासनी दि सितइ ति ऊर्ध्वा ति पुर्वा दि दिसिनो आकास काल दिसि नथी॥ सावदिसि तिअढार सावदिसे॥ अवपरमोरुयगो॥

वा पं तं पज्जत्तगा अपज्जत्तगा णोप० णोअप० एवं समद्दिट्ठिय तिन्ना पज्जत्तग सुहुम सन्नि भविया य तिविधा लोगट्ठिई पं तं आगासपइट्ठितेवाते वातपइट्ठिते उदही उदहिपतिट्ठिया पुढवी तउ दिसाउ पं तं उड्ढा अहो तिरिया तिहिं दिसाहिं जीवाणं गती पवत्तति तं उड्ढाए अहोते तिरियाते एवं आगती वक्कंती आहारे वुड्ढी णिवुड्ढी गतिपरियाते समुग्घाते काल संजोगा १० दंसणाभिगमे ११ णाणाभिगमे जीवाभिगमे १२ तिहिं दिसाहिं जीवाणं अजीवा भिगमे पं तं उड्ढाते अहाते तिरियाते १४ एवं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं एवं मणुस्सा

एंद्रिय ८ ति १० चउरिंद्री ११ पंचेंद्रियतिरिय १२ नारगा १३ देवसंघायें १४ समुछिम १५ कम्मा० १६ कम्मलय गनरा १७ तइं तरद्वीवाय १८ सावदिस्सानं दिस्स जे॥ संसारीनिययामयाहि॥ २॥ गति० मरी अनेरइ अवतारि ईआइ तिगति॥ आवइ ख्वद ना दिसमुत्पात॥ कालसं० कालवुं अनुसवर्वुं॥ अथवा काल संयोग॥ मरणनो योग॥ दंसणाभि० अवधि आ दि दर्शन इकरी जाणिवुं॥ नाणाभि० ज्ञान इकरी जाणिवुं॥ जीवाभि० जीव नइ जाणवा त्यां एवस्तुने अवधि आदिकइ जाणि वुं॥ तिहिं दिसाहिं जीवाणं अजीवाभि०॥ त्रिण दिसइ जीवनइ अजीवनुं जाणवुं॥ एविशाल नारकादिक नइ विषइ समस्त
सकारिनला तिनि नी ॥५॥

तिर्यंचपंचेंद्री अनइ मनुष्य माहि पामइ १३ बोलसमस्त प्रकारि लाभइ॥ तियंच पंचेंद्री ना १३ मनुष्य ना १३ एबे २६ सूत्र थाइ॥ नारका दिक मइ एतलां। एत नंतरसंसवतस्य समणी। ते नारका दि २२ दंडक नारकदेवमाहि नऊपजइ तेसणी ऊर्ध्व दिसि अनइ अधो दिसि तइमइ गति आगति नाम संभव॥ तथादर्शन ज्ञान जीवाजीव नि गमइ ए गुणपक्षे ऊपजइ॥ तिने प्रत्यय छइ। मनुष्य तथा पंचेंद्री पजइ। ते सणी अवधि गुणाइ ऊपजइ॥ तिरिछि दिसि नथी॥ अनइ लव प्रत्यया वधि ते नारकी

णा वि तिविधा तसा पं तं तेउकाइया वाउकाइया उराला तसापाणा तिविहा थावरा पं तं पु ढविकाइया आउकाइया वणस्सतिकाइया ततो अछेज्जा पं तं समए पदेस परमाणू एव मभेज्जा २ अडज्झा ३ अगिज्झा ४ अणद्धा ५ अमज्झा अपतेसा ७ ततो अविभातिमा पं ते सम ते पयेस परमाणु ९ अज्जो त्तिसमणे भगवं महावीरे गोतमादी समणे णिग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी किंभया पाणा समणाउसो गोयमाती समणा णिग्गंथा समणं भगवं महावीरं उवसंक

त्या तिष्क नो अवधि ते तिरिछो॥ भवनपति व्यंतर नी अवधि ऊंची॥ अनइ विमानीक नी हेठी॥ अनइ ज्योतिषी कडी विगे लिंडी नइ ताछइ ऊमहीं॥ एणाइ ह मइ विऊदद ते कि १३ पदलाभइ। पुर्वोक्तबोल ना त्रसमइ विषइ लाभइ। ते नणी त्रसनुं स्वरूप कहीइ छइ। तेऊ वाउ गति करइ ते सणी त्रसकह्या॥ उराला० स्थूल मि द्वात्रस ते बेइंद्रिया दि ते गति त्याग मा टइ त्रस। हि यइ त्रसघको विपरीत ते त्रिविध कहइ छइ॥ तिविहा थावरा०॥ एपृथिव्यादि प्रा ह श्रोत्र्युल ना अस्य अ्यात मा ना गमा सनी अवगाहना घणा घको व्यवहार घको आखइ छइ॥ तिहना प्रमाव घको छेद्य नि ष्वइ घको निघत नइते आश्रवउ नइ कहइ छइ॥ अच्छेज्जा० खड्गादिकइ छेदाइ नहीं॥ पएसे० प्रदेस धर्मास्तिकायादिकनो वडनो अनइ परमाणु उ॥ ऊ॥ अभेज्जा० सूईयादिकइं भेदाइ नहीं॥ अडज्झा० अग्नि नइ बालादिकइ दाझइ नहीं॥ अगिज्झा० हाथिइं ग्रहिवा इ नहीं॥ अणड्ढा० द्विभाग लीनथाइ॥ अमज्झा०॥ त्रिभाग भागलीनथाइ ति सणी विचालउ नहीं॥ अप० प्रदेसनहीं॥ अविभाइमा०॥ विभागवी नसकीइ अथवा विना जिं कहानी घना ते विभागिम। तिमनहीं ते अविभागिमा तेसमयादि॥ त्रसथावर ते इ पत्तीकइ॥ पणइम बोधि भगवंत कहइ छइ॥ अज्जोत्ति०॥ आर्य० पापकर्मथी गया

वाणइ॥ अर्ध उर्ध्व अनइ विदि सिवाधउ नहीं॥ चिहुं प्रदेस इ अ विदि सिइं वाधइ॥ सगाइहि सं ठिया रु' महा दिसा इस्वें ति यती दि॥ मु ख्य अली उ च्चत्ता॥ दो विवप च्छं तिरिय गतिसा॥ पृथवी १३ लं २ सा लण अवायु ४ सु नो पसा छ अथवा या ७ पार बीया ८

तिरियलो यस्समझ यारेस॥ गु थुमप स वो दिसाणा॥ एसवस वे अपुदि साणा १ पु वीदिस्य वि दिसिले पर दिसा दिकइ ना धतीआइ विदिसिते एक प्रदे सनी अवा लइ॥ अ धो ऊर्ध्व अनइ वि दि सित आ दि २ प्रदेसउ

तं आर्य ति आर्य इति कहनइ आमंत्रणा ॥ समणाउसो ० ॥ हे श्रमण आयुष्मन् ॥ सया पाणा ० ॥ जीवस्यापि कोबी हुइ ॥ उव
संकमंति ० ॥ समीपि आवइं ॥ स्तुतिकरी वादइं ॥ नमस्कार इति परिणामि करी ॥ न जाणामो ० ॥ विसेषथकी जाणुं नही ॥ पा
सा ० सम्यग् वइ तत्सामान्य प्रकारि देखुं नही ॥ अर्थविस्तारो श्रम नथाइ तो अम्हे तम्हा रइ समीपि जाणवा वांछउं छउं ॥ दुष
सया ० ॥ प्राणी मइ मरण दिरूप दुषनी मेहइ ॥ तं दुषे केणइ कीधुं ॥ जीवे ० जीवइ दुषना कारण कर्म तं कीधुं तं तेण जी
वइ जे कीधुं स्पर्श कीधुं ॥ पमाएणं ० ॥ प्रमादि करी ॥ कह्यं च ॥ पमानय मद्य विषय दिइ ॥ सणिअं अह लियक ॥ अन्नाणं संसउं चि

मंति उवसंकमित्ता वंदंति नमंसंति वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी णो खलु वयं देवाणुप्पिया एय
मट्ठं जाणामो वा पासामो वा तं उद्दिसंति णं देवाणुप्पिया एयमट्ठं नो गिलायंति परिकहित्तए तं इच्छा
मो णं देवाणुप्पियाणं अंति एयमट्ठं जाणित्तए अज्जो त्ति समणे भगवं महावीरे गोतमादि समणे
निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी दुक्खे सया पाणा समणाउसो से णं भंते दुक्खे केणा कडे
जीवेणं कडे पमादेणं से णं भंते दुक्खे कहं वेइज्जति अप्पमादेणं अन्नउत्थिया णं भंते
एवं आतिक्खंति एवं भासंति एवं पन्नवेंति एवं परूवेंति कहन्नं समणाणं निग्गंथाणं किरिया

मिछा यावंत स्तवय ॥ १ ॥ रागो दोसो मइ संसो इधम्मंमिय अणाय रा ७ जोगा णं दुप्पणिहाणं ८ अठ सावज्जिय हो ॥ २ ॥ तं दुष किम
वेदवीइ । अप्रमादिइं क्षपवीइ ॥ इहां भगवंति इ सिधि नइं कह दरीनइं कहिं तेश्या सगण । सिष्यनइ विशेष पतपणु करवा नइ
अथवा एणि अधिकारि एहवुं जण वइछइ जं सिष्य पुछितिवा रिइं गुरुए हितकरी कहिवुं ॥ कह्यइं पुछइ सीसो । कहिवु पु
छावयं ति आयरिया । सीसा णं वहितद्वा । विपुलतरा ते नुहछा ९ ॥ १ ॥ दुष सया पाणा ॥ जीवेणं कडे दुषप्पमाएणं ॥ अप्पमाएणा
वेइज्जइ ॥ एत्रिणि बोल त्रिण गाणा ना अधिकार माहि कह्या ॥ जीव मइ दुष कीधुं एहवुं कहिउं ॥ तेहजे सावपर मतनउं राकरी । विस
विइ दो पाव इछइ ॥ अन्यतिथिके ० ॥ तापस विंसगवान ॥ एवमा ० ॥ सामुचय इ कहइ ॥ भासं ० ॥ विसेष विइ कहइ ॥ पन्नवे ० ॥ आइ रकं ५५
तिनउं अर्थ तेहइ ति ॥ परूवेंति ० ॥ भासं तिनउं अर्थ तेहइ ति ॥ अथवा । आइ रकइं ० ॥ घोडिसंकइ ॥ भासे ० ॥ प्रगट सास इ उहइ
प्रज्ञापयंति ० ॥ युक्तिकरीनइ जणावइ ॥ ए बयति ० ॥ तत्रसिद्ध ॥ सिद्धनउ तेहि तेतमा प्रकबि तत्वेदंत प्रसिद्ध तलाइ करीन

णावइ ॥ कहन्नं ० ॥ केणइ प्रकारि श्रमण निर्ग्रंथना मतनइ विषइ ॥ किरिया ० कर्म ॥ कहइ ॥ कउ दुष मइ कारणि इं ॥ इहिं च्या
रभांगा । एक कीधुं कर्म दुष तणो हुइ । एक कीधुं कर्म दुष तणो न होइ । एक अणकीधुं दुष तणो हुइ । एक अणकीधुं दुष तणो नहु
इ । एच्यारि भांगा छइ तेमाहि जेह मनो प्रयोग छइ ॥ कहा कह्यति ० ॥ कीधुं दुष तणो हुइ तं नथी पुछता ॥ परतीर्थी कहइ ॥
कीधुं दुष तणो न हुइ तं पुछता नथी ॥ एकांगो तो अन्यं त विरुद्ध छइ ॥ जे कीधुं मि: फलनहुइ । तं तणी ॥ अनइ अणपरसाणि इं की
धुं नथी । त्रोगवता नथी ॥ तेहनुं जं पुछिवुं स्युं ॥ गदसद्ग ना पर इं ॥ ए त्रिणि भांगा नो विषय नथी तिहनु जं पुछिवुं स्युं ॥
तं छुआसा अकडा कह्यति ॥ ए भीजइ भांगइ ॥ पुर्वे इं अणकीधुं कर्म दुष तणा हुइ । तं पुर्वे इं कीधा कर्म तं अप्रत्यक्ष छइ । ते

कज्जति तच्छ जासा कडा कज्जति णो तं पुच्छंति तच्छ जासा कडा णो कज्जइ नो तं पुच्छंति तच्छ जासा अ
कडा नो कज्जति नो तं पुच्छंति तच्छ जासा अकडा कज्जति तं पुच्छंति से एवं वत्तव्वं सिया अकिच्चं दुक्खं
अफुसं दुक्खं अकज्जमाणं कडं दुक्खं अकट्टु पाणा भूता जीवा सत्ता वेदणं वेदंति त्ति वत्तव्वं जे ते
एवमाहंसु मिच्छा ते एवं माहंसु अहं पुण एवं माइक्खामि एवं भासामि एवं पन्नवेमि एवं परूवे
मि किच्चं दुक्खं फुसं दुक्खं कज्जमाणं कडं दुक्खं कट्टु कट्टु पाणा भूया जीवा सत्ता वेयणं वेयंति

तणी । अनइ दुषनो प्रत्यक्ष छइ । तेन तणो छउं । परा इकारणइ अणकीधु कर्म सर्व जीवनइ दुष तणो थाइ ॥ ७ ॥ निर्ग्रंथ पणि । इ
हमा नतमो अन्य रीअनइ निग्रंथनो मत सरीषो इ जिहाइ । इम कुइ तो कहुं ॥ सएवं ० ॥ जे हनइ अणकीधु कर्म दुष तणो थावु
मानइ । तेह नइं आग लिकहीइ छइ ॥ ते वतव्वु ० ॥ एम केहिवुं कुइ ॥ से एवं वत्तव्वं सिया ० ॥ भ ० ॥ अथवा तं पर प्रतिइ मक हइ ॥
तो तद्भवादी नि एहवुं कहिवुं युक्त छे कुइ ॥ अकिच्चं दुषं ० ॥ अणकीधुं भोगवीइ तं तणो दुष ॥ कर्म अणकीधु फरसीइ तं तणो अ
स्पृश्य कर्म ॥ अकज्जमाणं ॥ वर्तमान काल इ बांधतो कर्म तं कज्जमाण कर्म ॥ कडं ० ॥ अतीत कालि इं कीधुं तं कृतं ॥ इम नही तं अ
कज्जमाण कडं दुषं ॥ अकट्टु वा । पाप कर्म अणकीधइ ॥ प्राणी बेइंद्रियादि ॥ भूत वनस्पती ॥ जीव ० पंचेंद्री ॥ सत्व ० ॥ पृथ्वा
दि ॥ वेयणं ० पीडा भोगवइ छइ ॥ एवं वत ० ॥ इम कहिवुं । तं अज्ञानी इम कहइ छइ ॥ हिवइ पर मत निराकरइ छइ ॥ जे ते ०
जिणइ इम कहिउं ते पाप ते ॥ इहां जिननुं वचन कीजइ तेहइ जि किया कहीइ ॥ पणि अकीधी क्रिया कुइ नही ॥ जो अणकीधु

कर्मलागइतौ बद्धमुक्त शुचितद्रुषित आदि निश्चइव्यवाहार छइ। तेहना अ आवनो प्रसंगथाइ॥ भगवंतकहइ छइ अमक छैः॥ किंच्चं० कीधुंलागवीइ तेहना छनकर्म॥ जीवनइफरसइ तेहलो स्पृष्यकर्म॥ कडमाण॥ वर्त्तमानकालिइं करतो॥ कडे०॥ अतीतकालिइं कीधुं एहवुं कर्म॥ कडु॥ पापकर्म करीनइ प्राणीभूत जीवसत्व वेदना भोगवइ छइ॥ एवं वत्तव्वं०॥ अमकहिवुं॥ एणइ त्रिणि भांगा तिन्निप्पा तेहनो त्रिस्थानकावतार॥ अथवा अ किच्चं दुखं०॥ अफुसंदुखं॥ अ कडमाणकडं दुखं। एणइ त्रिणि बोलइ त्रिस्थानकावतार॥ तिठाणस्स बीअउद्देसो समत्तो॥ ३॥२॥ छेहलइ सूत्रइ मिथ्यावादीनु असंजमपणुं कहिउं॥ एणइ संबंधइ त्रीजा उद्देसानि धुरलइ सूत्रइ कषायनु असंजमपणुं कहइ छइ॥ माया

विवज्जबेसिया तइयठाणस्स बीउउद्देसो॥ ३॥ ३॥ ३॥ तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु णो आलो एज्जा णो पडिक्कमिज्जा णो णिंदिज्जा णो गरहेज्जा णो विउट्टेज्जा णो विसोहेज्जा णो अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा णो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जेज्जा तं करिंसु वाहं करेमि वाहं करिस्सामि वाहं। तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु णो आलोएज्जा जाव णो पडिवज्जेज्जा तं अकित्ती वा मे सिया अवण्णे वा मे सिया अविणए वा मे सिया तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु णो आलोएज्जा

वीज॥ मायं०॥ प्रछन्नकार्य॥ कट्टु०॥ करीनइ॥ नो आलो०॥ गुरुआगलि न कहइ॥ प०॥ मध्याडुःकृत तत् पडिकमणउं॥ निंदवुं तत्र आत्मासाखि॥ गरिहिवुं तत् गुरुसाखि आपनिंदवुं॥ विउट्टिजा०॥ तत्र अध्यवसाय नुं छेदवुं॥ विसोहिजा०॥ अतीचार रूपमालिवुं॥ अकरणा०॥ वली करीसि नहीं एहवुं आगीकारनु करिवुं॥ आहारिहं०॥ यथायोग्य प्रायछित्तं०॥ पापनुं छेदणाहारं॥ विसुद्धितुं करणाहारं॥ तपः कर्मनी वीआदि॥ पडि०॥ पडिवजइ॥ स्य मानइ॥ करंसु वाहं०॥ एमइं कीधुं तहवइ आचार तउ मा हारुं माहतम जाई॥ करेमिवाहं०॥ हजीकुं अनारि करुं छउं तो किंम आलोउं॥ कारस्सामि वाहं०॥ हजीकुं ए करीसि तउ किम आलोउं प्रायछित लिउं॥ कीर्त्ति एक दिसिगामिनी प्रसिद्धि॥ सर्व दिसिगामिनी तेवर्ण॥ अथवा दानपुन्यथकी रुपनी ते कीर्त्ति॥ प्राक्रमथी रुपनी यश ते वर्ण कहिनी॥ तेनाव तेह कीर्त्ति अवर्ण॥ अवणवा मे सिया०॥ अथवा माहार ५५

अविनयथाइ छइ पछइ विनयन हीं करइ॥ सुत्रनि अप्राप्तियस्सनाफुरुषनी आपसाइ॥ आगलि कहीइ छइ तेप्रा प्तियसना फुरुषनी अपेसाइं॥ कित्तिवा मे०॥ माहारी कीर्त्ति हाणि थाए॥ पूजा०॥ पुष्पादिकइं करी इसा॥ सत्कार तवस्त्रादिकइ साधु मइ दिइ॥ ते साधु श्रावक उपासिका दिकनइ थायइ॥ केहिउ०॥ तथाविपर्यात कहइ छइ॥ आलोए तातो अमाइ। पणि पुर्व इसनार कोइसना कालनी आपसाइं माइ किहिउ॥ माइस्स णं अस्सिं०॥ इहलोकि निंदनाथ कुइ॥ उववात० किल्विषीयादि माहिं उपजइ तिहां इपणि निंदनीय हुइ॥ आया तिं० तिहां थी चवीनइ जोग तिहं माइ तिहां इपणि निंदनी कहुइ॥ अमाइनि प्रसस्त होइ। जो आलोए तो ज्ञान

जाव नो पडिवडिवज्जिज्जा तं कित्ती वा मे परिहाइस्सति जसो वा मे परिहाइस्सति पूयासक्कारे वा मे परिहाइस्सति तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा पडिक्कमिज्जा निंदेज्जा जाव पडिवज्जेज्जा तं मायिस्स णं अस्सिं लोगे गरहिए भवति उववाए गरहिए भवति आयाई गरहिया भवति तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा तं अमाइस्स णं अमाइस्स णं अस्सिं लोगे पसत्थे भवति उववाते पसत्थे भवइ आयाई पसत्था भवति ५ तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा तं णाणट्ठयाते दंसणट्ठयाते चरित्तट्ठयाते ३ तउ पुरिसजाया पं तं सुत्तधरे अत्थधरे तदुभयधरे कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा तउ वत्थाइं धारित्तए वा परिहरित्तए वा तं जंगिते भंगिते खोमिते कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा तउ पायाइं धारित्तए वा परिहरित्तए वा तं लाउयपादे वा दारुपादे वा महियापादे वा तिहिं ठाणेहिं वत्थं धरेज्जा तं हिरिवत्तियं दुगुंछावत्तियं परिस्स

हकहइ छइ॥ कप्पइ० युक्तं कुइ युक्तं कं ईस्पर्श॥ धा०॥ धरिवा॥ परिहरि०॥ भोगविवा॥ जंगिम०॥ ऊनमय॥ भंगि ए०॥ अलसीमय॥ खोमिए०॥ कपासीकुं॥ कप्पति०॥ युक्तंक॥ तउ पायाइं०॥ त्रिणि पात्रा॥ दारु० काष्ट॥ महिया०॥ माटीनलुं घडि आदि॥ हिरिवत्त्व प्रहिवानाकारण कहइ छइ॥ हरी०॥ लज्जा अथवा संयम तेहनइं निमित्तइं॥ दुगुंछा० प्रवचन नी निंदा टालवा निमित्तइं तेवस्त्र विना नग्न नइ तेहनी॥ परीस०॥ सीतउस्न दंसमसकादिक परीसह टालवा निमितिइ वेस्त्र ग्रहिवा कहइ या॥

दर्सननिचारित्रनो फल दायक थाइ। तेणइ कारणि ते आलोसु॥ माणहीया एहं सादि॥ एसुद्धि कही हयइ सुद्धिनाकरणहार नइ अभिसंतर संपदा कहइ छइ॥ सुत्रधर इत्यादि॥ हिवइ तेह नी यवा धिसंपदा विकृस्तन

हिवइ प्रसंग थाया त्रय हिवा नां कारण कहइ छइ॥ अतरंत बाल वुड्ढ॥ सेहा दिसागुक्त असहू वग्गो सहोरणो गाहालद्धी। कार
ण पाय ग्रहणं तु॥१॥ अनंतर ग्लान बाल वृद्ध। सषि॥ आदेस॰॥ प्राघुणा गुरु॥ असहू वग्गो॰॥ सुकुमार राजपुत्रादि प्रव्र
जित॥ साहारणा वुग्गहे॰॥ तिहां घणा मइ कां जि आलाबा॥ अलद्धी कारणं॰॥ वली आहार अण मिलवा मइं हि ति पात्र आ
रण षित तिहां निमित्तिइ॥ पाय ग्रहणं॰॥ पात्रा ग्रहिवा नां कारण॥ निर्ग्रंथ ना प्रस्ताव सणी निर्ग्रंथ नुं जि स्वरूप कहइ छइ
इच्छइ तउ आयरं पा॰॥ आत्मा रक्षित राग द्वेषादि अकार्य थकी अनाव कुपथ थकी आत्मा नइ राषइ राषइ ते आत्मरक्षी॥ धम्मि
यायाए त्वो॰॥ धर्म नी चोयणा इं करी पर नइ प्रतइ उपादेस दिइ। जिम अनुकूल प्रतिकूल उपसर्ग करतां नइ वारिइ॥ वि

दव तियं। तउ आयरक्खा पं तं धम्मिया ते पडिचोयणा तेपडिचोयाएं एवा सव ति। उसिणो तवा सि
ता उ छिन्ना वा आयाते। पक्कंत मंतमवक्कामइत्ता णियं वसमणं गिलायमाणस्स। कप्पंति ते निविय
उदन्नी उपट्ठिगाहेसत्ते तं उक्कोसा मझिमा उदन्ना तिसिं णाणा हिंसमणो निग्गंथ साहम्मियं संभोगि
य विसंभोगं तिथं करेमाणेणा तिक्कमति तं म तिवाद ढु सद्दियस्सवा। तिसं मतक्कंमोसं आउट्ट ति

प्पा हिक्का डोवाणी प्पाहोवइ। मध्यम तिषा होणो॥ ८ जघन्य ते जे मलइ पाणी इं एकलि त्वलाट थाजाइ॥ अथवा कलमसा। लिनुं अ
धण। उसामण। तथा झीं म पतुं याणी ते उत्तक होइ ति॥ अनइ साकीयादिक नुं आउण तमध्यम होइ ति। अनइ रेणधन्यादिकना आं
ण अमइ उक्कोदक ते जघन्य दाति॥ अथवा दिस काल पोतानी रुचि ना विसेष थकी जुमक पण लइ जाणिवा॥ सरिषिह धम्मि
लइ तेसाधर्मिक॥ सं॰॥ एकठी॥ लाग॰॥ तोजिन तेसंभोग॥ साधु मइ कां अइकां जे रसवी धी सामाचारी ना साधु संघातिइ अणाधा
दिक नउ लेवा दिवा नउ व्यवहार ते संभोग तेहइ जेहनइ पोतइ तेसंभोगिक॥ अनइ जेसंघातिइं लेवा दिवा नो व्यवहार
नहीं ते विसंभोगिक॰॥ तेकरतो आता उलंघइ नहीं॥ अथवा सामाचिक। चारित्र जे लंघइ नहीं। स्या माट इ॥ ए कारणनाकरिवा
थकी तिथम पुर्वे इं विवडेकी धुतिमकरवाथकी॥ सयंवा दटु॰॥ पोतइ दिषी नइ एतलइ संभोगी नइ। असंभोगी साथिइ दान दिवा
लिवा रूप सामाचारी कीजती दिषी मइ रे सहीं॰॥ आधा ते श्रावक अ॰ निरउकाइ एक साधु ते श्रावक नुं वचन सांभली नइ ते अविश्रि
णनइ॥२॥ तेष्वी सामं॰॥ एकलि नइ त्रीजी मृषावाद लगइ एतलइ स्पु कोइ एक अकल्प नीक प्रद्विजे कइ॥ पासत्थादिकनइ दीधुं कइ
कोइस्या वड्यास युंकइ॥ एम षावाद पबोल। एकार्थ त्रिणि वार लगि इकरी नइ॥ आ के इइ॰॥ आलोई नइ तेहनु तिहं प्रायश्चित्त आदिइ

थीक्को॥ उस नइ वारीइ नसकइ। अ णा बाल्या र हीन सक्क ता। तिहां थ कोक हीआ। पणपडुएक्को ति नाग विष इ॥ अवक्कम णा॰॥ जाइ॥ निर्ग्रंथनइ॥ गिला॰॥ रुषा नी विदनाइ पीडानइ त्रि णि विकट॰॥ पाणीनउ आहारा तेह नी दातिकल्प इ॥ विदना उपसमाविवानइ काजइ॥ उतक्कोसीदाति ते जिआ

उपसर्गक र वारूप अका र्यनो तेव णहार न कइ॥ अनइ साधु [illegible] उपस [illegible] [illegible] [illegible] अथवा साधु अणा बाल्यो रहि॥ निशाप

५६

ए॥ वउथीवार प्रायश्चित नही जइ॥ तेह नइ विसंभोगी जेक रिवो। ते त्रिणि वार लगइ अनालोगिक पणिइं। मच्छ उक हिवा इ॥
चउथी वार दर्प्प तास णा लस्यो कहियाइ॥ गुरु रतथा सा ह्यामीइ पोतई आचीर्ण सेवतो दीठो। एएक बोल। बीजो बोल ते
श्रावकिइ दीठो॥ एबिहुई दोष ते सार। त्रीजो पोतिइ आलोइ ते स्वल्प दोष॥ अणुन्ना॰॥ अधिकार नुं देवुं ते पद नुं लेवुं म
॥ मथा यथा वत्तीय पाइ सेवी इ ते आचार्य एतलइ जेह नी मर्यादा माहि रहीइ ते आचार्य अथवा पंच विध आचार पालइ ते आ
चार्य॥ जेहनी समीपि जइ नि इ स णी इ ते उपाध्याय॥ गणि॰॥ साधु नो समुदाय तेहनो धणी ते गणी एतलइ गण नायक पणुं॥
स॰ सैगम अस्सगिक्किगुण गुण युक्त पणइ करी योग्यतेह नइ॥ आचार्य पद पणइ करी अनुज्ञा॥ तसमणुन्ना ते अनुयोग

वउज्झाना आकहति तिविधा अणुन्ना पं तं आयरियत्ताए उवज्झायत्ताए गणित्ताए ति विधा स
मणुन्ना पं तं आयरियत्ताए उवज्झायत्ताए गणित्ताए एवं उवसंपन्ना एवं विजहणा ति विध

अनुयो॰ आचार्य तेहमा अस्सगिकिगुणकहीइ॥ तद्या वयसंपन्ना॥ कालो चियग हिय॥ सयल पुछत्ता॥ अणुजो गाणुं
ताए॥ जो गा सणिया जिणें दहिं॥१॥ इहारो उभुसा वउ॥ पवयण रिवंसा य होइ लो गंमि॥ ससा ए विसुहा णं॥ ति छेछे
उयचा वेण॥२॥ गणा वा यपि सम्मिगिकि एवं॥ सुशक्ते ति म्मा उ॥ पियदढ धम्मा सणु वज्जणं कुसलो सामी जिण थविरे द
हिं॥२॥ एआचार्यना गुण कह्या। तेहनइ अनावइ अनुज्ञा न उपणि अनावक उ इतो समणुन्ना कि म कुइ॥ ति कि हा सी कइ॥
पुर्वि इ जि गुण कह्या तेमा हि लो को एक गुण जइ पणि आचार्य पद बीरणि विसाषिइ दवुं॥ त्यया वि मं ह त्रिगुरुव
एछा॥ इहर॰॥ केतलाएक गुण नइ अनावइ ते अणुन्ना॥ समग्ग॰॥ सघला गुण नइ भावइ। समणुन्ना कहीइ॥ अथवा स्व॰॥ पो
ता ना तेआ पणामतना॥ मनुन्ना॰॥ रुचिता ते गमता ते स्पष्ट करी आपण सरिषी सामाचारी इ करी ते समणुन्ना॥ अथवा। मनो
ज्ञ॰॥ ज्ञान दर्शन चारित्र सहित ते मनोज्ञा॥ एक संभोगिक तउ त्रिविधु ते किम ते कहइ छइ॥ आयरि॰॥ आचार्य पणइ उपाध्याय
पणइ॥ सिष्यु चेला इत्यादिक संभोगिक ना लइद घणा छइ। पणि त्रिणि ठाणा माटि न कह्या॥ उवसंपन्ना॰ ज्ञानादिक नइ अर्थिइ
अनेरा आचार्यादिक नइ कहइ इ कुं तुम्हारा छउं ते उवसंपन्न कहीइ॥ का एक॥ सम्यग् सूत्र ग्रंथ ना अथवा दर्शन प्रभावक॥ सा
स्त्र ना सुत्रार्थ ना ग्रहिवा नइ स्थिरी करवा नइ वीसरिउं संतारवा नइ तथा चित्र विसेष नइ काजिइ॥ वियावृत्य नइ काजइ

अनेरा आचार्यनइ पडिवजीइ ते उप० उवसंपयायति विहा॥ नाणेतहदंसणेचरित्ते य॥ दंसण नाणे ति विहा उविहाय चरित्त
अट्ठाय॥ १ इम उपाध्याय गणीनइकहइ कुं तुम्हारा ठकु इत्यादि तउपसं० एवं विउहन्नो० मा उवाकउ तानइ आचार्य उपाध्या
य गणावच्छेदादिदा धम्मविहितकुइ तेहनइ। पढइ अनेरा आचार्यादिकनइ पासइ रहि अथवा त्यवर्तत॥ ज्ञानादिकनइ अर्थे
आव्योछुइ। अनेइ तकार्य नीकरइ तिवारिइ ति हमइ आचार्यादि छांडइ अथवा तेकार्य साधिई छांडइ। तिमो कलावहाई मुरु
पाध्याय गणी परिणी। एसा धुनी कायव्वि हाकही॥ हिवइ वचननइ मननी अधिकार ४ सूत्र इकहइ छइ॥ तवयणे० ते घटादिक
नुं बोलिवुं ते तद्वचनकहइ॥ तदन्न० तदन्यवचन ते अछतघटादिकनइ अनेरा वस्तु आदिकनुं कहिवुं ते॥ णो अवयणे०॥
इकडचइ इत्यादि॥ अथवा तेवचन ते जेहवो सत् तेहवा अर्थ जेहमा हि॥ यहवो सत् तस सत् वी॥ यमा हा नथी ते तदन्यवचन॥

वयणे य॥ तं तव्वयणे॥ तदन्नवयणे॥ णो अवयणे॥ तिविहे अवयणे पं॥ तं णो तव्वयणे॥ णो तदन्नवयणे॥
अवयणे॥ विविधे मणे पं तं॥ तमणे॥ तयन्नमणे॥ णो अमणे॥ तिविहे अमणे॥ पं॥ तं॥ णो तमणे॥ णो त
यन्नमणे॥ अमणे॥ तहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठीकाए सिया॥ तं॥ तेसिं च णं देसंसि वा॥ पदेसंसि वा॥ णो

वचनमात्र इत्यर्थः॥ वयणे० त्रिविधि वचननु निषेध ते अवचन। नोतदवचन ते घडा नी अपेक्षाइ लुगडानुं बोलवु तेनो तदन्य
वचन ते घडा नि विवक्षाइ घडानुं बोलिवुं॥ अवचन ते वचननी। निवृत्ति मात्र॥ इम ज्या की नोमरजो अपेक्षाइ पतिजम० पिवुं त
पुविइ अथवा तोअर्थ करवा छइ॥ त अथवा कहा रनइ ऊफरा टा अर्थ मिलवा ते मणो०॥ ते देवदत्त नु मन ते त अथवा घडादि
कनइ विषइ मन ते तमन॥ तयन्नमणो०॥ विसम्बर हिति मन ते नो अमनमनो मात्र इत्यर्थः॥ ति विहे अमणे०॥ मननी निवृत्ति रु
प ते अमन॥ नो तमणे० तमन नहीं ते॥ ति क्षिम देवदत्तादिकघकी अनेरा जे गौ यज्ञदत्तादिकनुं मन नो तदन्नमणे०॥ तिघा अने
रानुं मन नहीं ते देवदत्तनु मन॥ अमणे०॥ मननी अप्रवृत्ति ते निवृत्ति॥ एसंज्ञत मनुष्यादिकना व्यापारकह्या॥ हिवइ। देवना व्या
पारइं ८ सूत्र इंकहइ छइ॥ अल्पवुट्ठि०॥ अल्प०॥ स्तोक अथवा नहीं॥ वृष्टि०॥ वृष्टिकायपडिवुं ते वृष्टिकहीयइ॥ वृष्टियुक्तका
१०॥ जीवनिकाय ते जीवनी समुह आकाशमनइ विषइ। अपकायइत्यर्थः॥ वरसवानो स्वभाव तेम हित जपातं ते वृष्टि॥
तेहनी जेकाय०॥ राशि ते समूह ते वृष्टिकाय कुइ॥ तेसिं च णं०॥ ते मगधादिकं॥ देस०॥ देसनइ विषइ॥ पएसं०॥ तेहनो एक
देश॥

नो ५७

बहवे० घणा नही०॥ उदग जोणिया० उदक ना यथाकारण तेतान ते उदक रूप जाया नो स्वभाव छइ जेहनउ० वक्कमंति०
मुक्कीमंति ते उपजइ॥ विउक्कमंति०॥ अवइ॥ चयंति०॥ ते विउक्कमंतीनो अर्थ॥ उववज्जंति० ते वक्कमंतीनो अर्थ ते उपज
इ॥ अल्पवृष्टिनो कारण मार्हि एक घयुं॥ देवता ते विमानिक नइ ज्योतिषी नागात नवनपति॥ जक्ष। नइ स्कत ते वितरनकं॥
उपतल सम्यो०॥ सघलाई अथवा देवता ते समुद्ध य सघलाइ॥ नागादिक ते एहउमो. विसम्य॥ नो सम्मं आरा०॥ अविनयनाक
रवाधकी सम्यग् आराध्या नकुइ॥ तच्छसमुट्ठियं उ०॥ ते मगधादिकनइ विषइ रूपनो उदकपो०॥ मेह॥ पराणित वरसवानी

बहवे उदगजोणिया जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमंति॥ विउक्कमंति॥ चयंति॥ उववज्जंति॥ दे
वा णागा जक्खा भूता॥ णो सम्ममाराहिता भवंति॥ तत्थ समुट्ठियं उदकं पोग्गलं परिणयं वासिउकामं
अन्नं देसं साहरंति॥ अब्भवद्दलगं च णं समुवट्ठितं परिणतं वासिउकामो वा उकाए विधुणति॥ इच्चेति
हिं तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठिगा ते सिता॥ तहिं ठाणेहिं महावुट्ठीकाए सिता॥ तंजहा॥ तेसिं च णं देसंसि वा॥
पएसंसि वा॥ बहवे उदगजोणिता जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमंति॥ विउक्कमंति॥ चयंति॥ उवव
ज्जंति॥ देवा जक्खा नागा भूता सम्ममाराहिता भवंति॥ अन्नत्थ समुवट्ठितं उदगपोग्गलं परिणतं वा
सिउकामं॥ तं देसं साहरंति॥ अब्भवद्दलगं च णं समुवट्ठितं परिणयं वासिउकामं॥ णो वाउआ ते वि
धुणेति॥ इच्चेतहिं तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठिकाते सिता॥ तहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु
अवस्लाइ। पुकुतो। एहकारणाधकी वाउली नाकर वाधकी वरस्सवा नी कामा॥ अन्नदत्तं० अनेरा अंगादि देसनइ विषइ॥ साह
लई मुंकइ॥ एदेवतानु अहिणकी धकं तेसाइ पत्ता कर्मनिरविषइ देवता प्रवर्हि॥ एतलुं आणवानइ काजि॥ अथवा मुन्नग
ति नाविचनपणा तरणी॥ एबोल बीजइ रं अन्न०॥ मिहातणइ कारीनइ त्यावालुं ते अस्नवद्दलकं॥ समुट्ठि०॥ उपनुं वा०॥ वाउकाय॥ वि
धु०॥ फेडइ॥ ए बीजो बोल॥ ३॥ एहवा रूप रा टकं आगि लो सुत्र महारहिनु॥ इहिमा०॥ मोह वा बड। नि त्वया तां संज्ञा०॥ मके

प बिकुचा
विविरक्त
ते ना अव
चननी रहि
कइत्यर्थः॥
ढिकी विव
तु॥ अथवा
तेआचार्या
दिकनुं वच
न तेतद्वच
न तेहथ
की अनेरि
कुनुं वच
न ते तद
न्यवचन
वचननो
परमार्थ॥
अणाल
वुइ। अणा
विइ वाल
इ ते नो
वच
न ते अ

इमदी आयवा होइ॥ पाणी आवलिसकइ॥ कामसह्यरूप॥ लोगगंधरसस्पर्श ५ अथवा सद्दादिक लोगवीते तेणी लो०॥ काम०॥
मनोज्ञ लोगसद्दादिक॥ ते कामलोग॥ मुछितनी परिं मुछिउ ते हमइ विषइ॥ मुछित ते मुंढ०॥ लोगना अनित्यपणा नो अजाण
गिद्ध० गद्ध ते हसनी आकांक्षा सहित अइ स्नेह ईत्यर्थ॥ गढिए०॥ विषय नइ विषइस्नेह रूपणी रास्सडी ते ताइ गुथाणो॥ अझो व०॥ अध्यो
पपन्न॥ अत्यंत आसक्त अत्यंत तेनमनई त्यर्थ॥ नो आढाति०॥ आदर वेतनकुइ॥ नो परिजा०॥ एसुंवली वस्तुछइ॥ इममानइ एतल

इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए अहुणोववन्ने देवे देवलोगे
सु दिव्वेसु कामभोगेसु मुछिते गिद्धे गढिते अज्झोववन्ने से णं माणुस्सते कामभोगे णो आढाति
णो परियाणाति णो अट्ठं बंधति णो णियाणं पगरेति णो ठिइपकप्पं पकरेति अहुणोववन्ने देवे देव
कामभो लोगेसु दिव्वेसु मुछिते गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने तस्स णं माणुस्सए पेम्मे वोच्छिन्ने दिव्वे संकंते भवति
गसुउ-४ ति अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुछिते जाव अज्झोववन्ने तस्स णं एवं भवति
इयन्हिं गच्छं मुहुत्तं गच्छं तेणं कालेणं अप्पाउया मणुस्सा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति इच्चेतेहिं तिहिं ठा
णेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएति हव्वमाग
च्छित्तए ३ तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए संचाएइ हव्व
मागच्छित्तए अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुछिए अगिद्धे अगढिते अणज्झो
ववन्ने तस्स णं एवं भवति अत्थि णं मम माणुस्सते भवे आयरिते तिवा उवज्झाते तिवा पवत्ती तिवा थेरे

कल्पवृक्षएहनइ विषइ कुं २ हियो अथवा एमाहारिरहियो॥ तेन करइ॥ एएक सोगोवयो॥ १ संकाति०॥ संक्रमिउ देवतानो प्रेम॥ एवीज
३ सोगा ३॥ २॥ तस्स णं एवं०॥ तिदा रता विहरइ मघाइ॥ इहन्नं०॥ हिवाणां हाकं॥ मुहूर्त्त कपछी कारथकिरी जाऊं॥ का०लधंमु०॥ मर ए
संयुक्त हुइ॥ पकइकुणनइ जोवा आवइ एवी जऊ॥ ३॥ आयरिए०॥ प्रतिबोधनारूप सम्यक् ज्ञानो दाणहारो॥ अथवा अर्थनो दाणहारो

इ कांइक
री लागा
इ॥ मोञ
ढव०॥ ए
णइ करी
नइ आप
ण्यानए
हवकांर
निश्चय
इनकर
इ॥ नो नि
याणो०॥
नियाणुं
न करइ॥
ठिइपमा
हार हो
यो॥ नो
ठिइ०॥
स्थिति
प्रकल्प
तंअव
स्थानुवि
५८

करी॥ वी
जी पुठी
नी कोटि

तेअनुजोगाचार्य॥ उपाध्याय ते सूत्रदातार॥ आचार्य नाउपदेस्या जे वियावच्चादिकनइ विषइ प्रवर्त्तावा ते प्रवर्त्ति॥ प्रवर्त्तइ॥ प्रव
र्त्तिव्या जे साधु संजमयोग्य मइ विषइ॥ सीदाता नइ स्थिरकरीइ ते स्थिर समुदायनो आचार्य ते गणी तीर्थंकर ना सिष्य ते गणी
धर॥ आर्य्या नो प्रतिजागरको साधु विशेष॥ कसंच॥ पियधम्मदढधम्म॥ संविग्ग एज्जोतसिं यती॥ संग्रहवग्गहकुसले॥
सुत्तत्थविऊ गणावच्छेइ॥ १॥ गणावछेद०॥ जेकेतला एक साधु नो समुदाय ग्रहीनइ गछनइ आधारनइ काजइ उपछिग विषा

तिवा गणी तिवा गणधरे तिवा गणावच्छेते तिवा जेसिं पभावेणं मते इमा एतारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा
देवजुती दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागते तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि णमंसा
मि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवतं चेइतं पज्जुवासामि ति अहुणोववन्ने देवे देव
लोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए जाव अणज्झोववन्ने तस्स णं एवं भवति एस णं माणुस्स
ते भवे णाणी तिवा तवस्सी तिवा अतिदुक्करदुक्करकारगे तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि णमं
सामि जाव पज्जुवासामि अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु जाव अणज्झोववन्ने तस्स णं एवं
भवति अत्थि णं मम माणुस्सते भवे माता तिवा जाव सुण्हा तिवा तं गच्छामि णं तेसिमं तियं पा
उब्भवामि पासंतु ता इमं इमं एतारूवं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभावं लद्धं पत्तं अभि

दिक निमित्त आहार करइ ते गणावछेदक॥ इमा०॥ प्रत्यक्ष॥ एतारूप०॥ एह जेहइरूप जेहनो ते कालांतर रूप थकी पलटाइ नही॥
दिव्व० प्रधान॥ अथवा स्वर्गमा देवतानी रिद्धि विमान रत्न आदिकनी॥ देवड्ढी परिवार॥ आसनादिकनी आज्ञा ते॥ अथवा युक्ति॥ दीप्ति
परवार नो संयोग॥ देवाणुभावो०॥ अनुभाव ते अचिंत विक्रियकरवानी शक्ति॥ लद्धं॥ अन्यां तरि कपरा उपा॥ पत्तो०॥ वा
माते अहिवणा॥ अभि०॥ सोगइ आवी हिवणा॥

५ पदवइ
मइ॥ अथ
वा पता
इ करी इ
नइ॥ रू
प्या दिपा
म्यानू॥ अ
भिमान॥
अणापा
म्या नी॥
प्रार्थना॥
तथकी
आम्हु स
त्तावडं॥
उपार्जि
त कर्म ने
अनुसार॥
नियाइक

मंगं॰ ॥ तमाटइ ॥ नाऊवांछुं ॥ स्तुतिकरी ॥ सक्का॰ ॥ वस्त्रादिकरीअथवाआदरकरवइकरी ॥ कल्याणीमंगलीदेवं देवयियंएणी बुद्धिइ ॥
पकु॰ ॥ सखुंएतलइ ॥ बाल ॥ एसएणं माणु॰ ॥ कोइकमनुष्यमइ ॥ तपस्वीछइ ॥ अहइ ॥ अतिदुष्करकारक स्थूलसद्व
त ॥ तं॰ ॥ तसएणीआऊं ॥ बाल २ ॥ जावसइमदि ॥ पियातिवा ॥ भाया ॥ भगणी ॥ सज्जा ॥ पुत्ता ॥ धुया ॥ धुया ॥ सुण्हातिवा ॥
द खाउं ॥ ता॰ ॥ पहिलुं इमरप्रत्य ॥ ए त्रीजो बाल ॥ ३ ॥ पीदृष्टा ॥ बांछइ ॥ आय॰ ॥ २५ ॥ दसमा हिलो एकमगधसरिदसमा

समम्हागइंइच्छेतहिं तहिंठाणेहिं अकुणेववन्नोदावदेवलोगेसु इच्छेद्या माणुसंलोगं हद्वमा
गच्छित्तए संचाएतिहव्वमागच्छित्तए ततोठाणाइं देवेपीदृच्छा तंमाणुस्सगंसवं आरियरव
त्तहमं सुकुलेपच्चायातिं तिहिंठाणेहिं देवपरितप्पेद्या तंजहा अहोणं मतेसंतबाले संतवीरि
ते संतपुरिसकारपरकामे खेमंसिसुभिखंसि आयरियउवज्झातहिं विज्जमाणेहिं कल्लसरीरेणं
णोबहुसुतेअहीते अहोणंमते इहलोगपडिबद्धेणं परलोगपरंमुहेणं विसयतिसितेणं णोदीहे
सामन्नपरियातेअणुपालिते २ अहोणंमते इदिरससायागरूएणं लोगासंसंगिद्धिएणं णोविसुद्धिच
रित्तेफासितेर इच्छेतहिं तिहिंठाणेहिं देवेचतिस्सामीतिउव्वाइं विमाणासरणाइं निप्पताइंपासि
त्ता कप्परूरकगं मिलायमाणं पासित्ता अप्पणो तेयलेस्सं परिहायमाणं जाणित्ता इच्छेतहिं तिहिंठाणेहिं

बीसामंग्रीछतइ ॥ नोब॰ ॥ घरपुरुतनस्तणिऊंएबोल १ ॥ विम॰ ॥ विषयनीतरसिइं ॥ एबीजउबोल ॥ २ ॥ इहि॰ ॥ आचार्यादिकनइ विषइ
राजादिकनीपुजा ॥ रस॰ ॥ रसतेमधुरादिक ॥ साता तेसुष ॥ गरूएणं॰ ॥ एतलावीनानउ ॥ गुरूएणं॰ आदरघरातणइकरी ॥ गुरूकदेसा
इ तणइकरी ॥ लोगासंस॰ ॥ कामभोगनइविषइआसंसा तेअप्राप्तपाम्यानीवांछा ॥ गिद्ध॰ ॥ पाम्यानइविषइ ॥ अप्रति जेहनइघरातलोगा
संस गृद्ध एहवइ मइ पागोमरि लोगा वि ॥ ... ॥ एहवइ ॥ मइ ॥ नोवि॰ ॥ निरतीचारचारित्रम ... एत्रीजउबोल ॥ ३ ॥ जहिव
इहलोगपडिबद्धे॰ ... तो विमानआभरणादिनिरहितदेषइ ॥ तेजुप्तातरूपदृष्टीयइ ॥ अथवा ... तेयलेस्सं॰ ... सरीरनीदीप्तिमुषपासिको ... देवनइ ... का लइछइ

ह्याणं॰ ॥ अहोआ ... यस्यं ॥ मं ... तेणं ॥ बल ... तेसरीर ... सु ॥ वीर्य ... जीवनु ॥ प ... रुषकार ... तेअभिमा ... नविषय ... परकम॰ ... तेनीपजा ... व्यु ॥ अति ... मानतेका ... र्य ॥ खेमं ... ॥ निरुपद्र ... वइतइ ॥ सुभिखं॰ ॥ सुगालि ॥ कल्ल॰ ॥ नीरोगस ... रीर ॥ एह

हिंक्लम ॥ पु ... कुल॰ ॥ ई ... क्ष्वाकादि ... कुलविष ... इ ॥ प्रत्या ... आति॰ ॥ दे ... वलोकथ ... कीआव्या ... मइआम ... तेसुकुल ... प्रत्यायाति ... ॥ अथवासु ... कुकुलन ... इविषइआ ... विऊतिसु ... कुलप्रत्या ... याति ॥ प ... रितप्पे॰ ... पश्चात्ता ... करइ ॥ अ

मासपे॰ ॥ म्लानकल्पवृक्षप्रकं ॥ १ ॥ अदेशिपामइ ॥ बइयवं ॥ चववुं मरवुं पास्यइ ॥ उ ॥ ३ ॥ २ तिसुं ल्लोटहीं ॥ संसहं॰ एककोकल्पो तप
हिलोआहारकरिवो पास्यइ ॥ कलमल॰ ॥ पटमाहिलाउश्चनोसमुह ॥ जंबाल॰ ॥ तेहीजिकादवछइ ॥ जिहांएहवी विषइ ॥ असु॰ ॥
असुचि ॥ उव॰ ॥ उदेगकारणी ॥ ग्री॰ ॥ ग्रीहामणी गर्भवासनइविषइवसवउं पास्यइ ॥ देवा विदेवलोए॰ ॥ २ ॥ देवता नागादिका
रकह्या ॥ हिवइ देवतानोआश्रयविमानकहइछइ ॥ पुक्खर॰ ॥ कमलनीकणिकामइआकारइ ॥ सघउ॰ ॥ सर्वतोदिसिविषइ ॥

देवेगेउवेगमागच्छेज्जा तंअहोणंमएइमातोएतारूवातो दिवाउदिविहीउ दिव्वाउदेवजुत्तीउता
दिव्वाउदेवाणुभावातो लद्धातो पत्ताउ अभिसमन्नागतातो चतियव्वंभविस्सति अहोणंमतेमा
तिमाउअयंपिउसुक्कं तं तदुभयंसंसहं तप्पढमयाते आहारो आहारो आहारयव्वो भविस्सति
अहोणंमते कलमलजंबालाते असुतीते उव्वेवणिताते भीमाते गब्भवसहीते वसियव्वंभवि
स्सइ इच्चेएहिं तिहिं३ तिहिंसंठिया विमाणापं तं वट्टा तंसा चउरंसा तच्छणंजेवट्टाविमाणा तेणंपु
क्खरकन्नियासंठाणसंठिया सव्वतोसमंता पागारपरिखित्ता एगदुवारा तत्थएणं जेतेतंसाविमाणा
तेणंसंघाडगसंठाणसंठिता दुहतोपागारपरिखित्ता एगतोवेतिता परिखित्ता तिदुवारा प
न्नत्ता तत्थणं जेतेचउरंसविमाणा तेणंअरकाडगसंठाणसंठिया सव्वतोसमंता वेतिना परिखित्ता च
उदुवारापन्नत्ता तिपतिट्ठिया विमाणा पन्नत्ता तं घणोदधिपतिट्ठिता घणवातपइट्ठिया उवासंतर

समत्त॰ ॥ विदिसिविषइ ॥ पागारपरि॰ ॥ गढिइंवीट्या ॥ सिंघा॰ सीघोडामइ ॥ दुहतो॰ ॥ जेगमां बाटलुंविमान तेणी गमां धिदि
का ॥ त्रसिइं ॥ बीजीदिसिहीं सिइं गढतेदुहउकहीयइ ॥ अरका उ॰ ॥ चउरंसप्रसिद्ध ॥ वेदिकातेकोसीसारहित एआवलिका
बुद्धिविमान ॥ पुप्फावकीर्ण आनरीपरिछइ ॥ घन॰ ॥ सुधर्म ईसानघनोदधीरूपरिरह्याछइ प्रतिष्ठाइ ॥ त्रीजुं चउथुंपांचमुंए उदेवलोक
घनवातप्रतिष्ठछइ ॥ उवासंतर॰ ॥ ... उउकंसांतमुंआठमुंए ३ घनोदधीघनवातरूपरिरह्याछइ ॥ बीजासर्व ऊपरला देवलोक आकास
काप्रतिष्ठाछइ ॥

अवट्ठिया० ॥ अवस्थित शास्वतां ॥ विउव्विया० ॥ जे गमनइ अर्थइ विकुर्वइ ते पारिजाणि ॥ तिरिछइ लोकि द्वीप जोवा आवइ ते पा
लक पुष्पकादिक विमान ॥ एहवा तेहनुं स्वरूप कहि॥ विकृत्या दिव्य रिधायइ एणा माटइ नीरकी मुख्य कपक कहइ छइ ॥ सम्यक्त्वादि
त्रिण विधि कह्या विना जीव दुर्गति सुगति न पावइ ते भणी दुर्गति सुगति त्रिण कहि छइ ॥ दुग्गता० ॥ दोहिला दरिद्रिया ते दु
र्गता । सोहिला रह्या ते सुगति ॥ सिद्धसुगतीया सर्वस्वी अनाबाध । तेहनइ परस्विनुं कर्तव्य परिहरवं कहइ छइ ॥ सूत्र १४ ॥ पा

पइट्ठिता। तिविहा विमाणा पं० तं० अवट्ठिया विउव्विया परिजाणिता। तिविहा नेरइया पं० तं०
सम्मादिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं। ततो दुग्गती ता
पं० तं० णेरइयदुग्गती तिरियदुग्गती मणुयदुग्गती। ततो सुग्गती ता पं० तं० सिद्धसोगती देवसोगती
मणुस्ससोगती। ततो दुग्गता पं० तं० णेरतितदुग्गता तिरिक्खजोणितदुग्गता मणुस्सदुग्गता। ततो
सुग्गता पं० तं० सिद्धसोग्गता देवसोग्गता मणुस्ससोग्गता। चउत्थभत्तितस्स णं भिक्खुस्स कप्पंति त
उ पाणगाइं पडिगाहित्तए तं० उस्सेतिमे संसेतिमे चाउलधोवणे। छट्ठभत्तितस्स णं भिक्खुस्स क
प्पंति तउ पाणगाइं पडिगाहित्तए तं० तिलोदए तुसोदए जवोदए। अट्ठमभत्तियस्स णं भिक्खुस्स
कप्पंति ततो पाणगाइं पडिगाहित्तए तं० आयामए सोवीरए सुद्धवियडे। तिविहे उवहडे

रणाइ अन्तर वाररणाइ एकवार जिवा रिइं जिमइ ते भिक्षुकनइ ॥ अनइ उपवासस हित नो रसक ॥ एवं ४ परिहस्या ते छट्ठभक्त ॥ ते
पाननां उस्सेइमइं इत्यादिक ॥ ओट्ठा दिकनइ विषइ पाणिइ म सदाचकिरवो ॥ एअर्थ सघलो कल्पतिनउ छइ ॥ प्रवर्त्तिइ पाणिी एक
उपवासनइ चउत्थभक्त कहीयइ इम छट्ठादि ॥ भिक्खु० ॥ भिक्षाइं जीवइ ते भिक्षु । अथवा क्षुधाइ सहित ते भिक्षु ॥ उस्सेइमं० ॥ ६०
व्रीहीयादिकनी बंछ सुरादिकनइ काजइ धोईइ ते ॥ संसे० ॥ अरणी आदिनां पान जे दाघरा नइ धोयण ॥ चाउ० ॥ तंदुल धोयण
तिल धोवण ॥ तुसो० व्रीहीनुं पाणी ॥ आयाम० ॥ ओसामण ॥ सोवीर० ॥ आछण ॥ सुद्ध— विकट ते ऊष्णोदक ॥ उवहडे०॥

सो अन्न भोजनादिक नइ विषइ आणि उप्रीस वा का सइ ॥ फलिऊवहडे० ॥ काष्टपात्र माहि इं आणी घातिउं ॥ १ ॥ सुद्धो० ॥ धर्मलुभा
न ॥ अवहडे० ॥ जिमवा मइ थाली मिश्र आणिउं ॥ संसगे वहडे० ॥ घर डिहा थि विहरइ ॥ ३ ॥ तिविहे उवग्गहीए० ॥ अनिग्रह विस
य ॥ जे यऊगिक्कं ति० ॥ दातारि किहां एक थकी अन्नादिक लेतो कुर ॥ १ ॥ उंवसार है० ॥ जिमवा निमइ थाली आदिक नइ विषइ
साहरतो ॥ २ ॥ कुर टाढो करवा थारलादिकइ घाल्यो कुर ॥ तिहां थो लेई भिक्षा समुख आ जनइ पाछो घालतो कुर एहवयइयो
गइ विहरवा वइ विहरइ ॥ एत्रीजो अभिग्रह ॥ ३ ॥ इहां आस० ॥ मुखमा हि घालतां विहरवा वइ । ते अर्थ निकी धरे ते सुगम ॥ एण

डे पं० तं० फलिओवहडे सुद्धोवहडे संसट्ठोवहडे। तिविहे उवग्गहिए पं० तं० जं च उगिक्कं ति जं च साह
रंति जं च आसगंसि पक्खिवति। तिविधा उमोयरिया पं० तं० उवकरणोमोयरिया भत्तपाणोमोद
रिता भावोमोदरिता। उवकरणोमोदरिता तिविधा पं० तं० एगे वत्थे एके पादे वियत्तोवहिसातिज्ज
णता। ततो ठाणा णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा अहिया ते असुभा ते अखमा ते अणिस्सेसा ते
अणाणुगामियत्ताए भवति तं० कूअणता कक्करणता अवज्झाणता। ततो ठाणा णिग्गंथाण वा णिग्गंथी

माटइ ए अर्थ अयुक्त ॥ उमोयरिया० ॥ ऊणोदर ऊदर ऊहणो ते अवमोदर एस शब्दार्थ ॥ पणि उवगरण ओछां करइ ते ऊणोदरी ॥ कही
यइ ॥ उपगरण ऊणोदरी ते जिनकल्पादिनइ अनेरानइ संभवइ नहीं । जिन एणी मारइ नइ अधिक अनावइ सम अरेक्षमनी असा
व अनइ अधिक ऊपरहिवुं नही ते सत्ये दरीक हीयइ ॥ ऊयें ॥ ऊहे अजे उये ॥ ॥ ऊवहइ० ॥ उवया ए० ॥ ऊव गरणं तं संसट्ठाइ ॥ उवग
रणं ॥ अदितगं अदिगरणं ॥ अजो उपकर्यं परिहरतो ॥ १ ॥ मात्रानइ पणि ऊपगरण ते कहीयइ ॥ ऊयें ॥ ते अक्रउयं ॥ अऊयणाइ
लोगवतो ॥ अहि० ॥ अधिकरणस्याइ ॥ भत्तपाण० ॥ पोतानो प्रमाण थकी ऊछो तेहाल पाणी नो ऊणोदरी ॥ भावऊणोदरी ते क्रोधादिक
नो त्याग ॥ हिवइ ऊपगरण ऊणोदरी एक वस्त्र एक पात्र ते जिनकल्पी आश्री ॥ २ ॥ वियत्तोवहि० ॥ रूडो मन ऊपकारक अथवा संयमत
स्य ऊपधि रजोहरणादिक ॥ सातिज्जणया० ॥ सबवी । तथा सातिजणया ॥ निर्दोषऊपधि आदरइ ॥ तथा । रजोहरणादि निर्दोष आद
रइ ॥ पु वि इ प्रती तिकारीया नुसवधुं केकु ॥ हवइ पइघी विपरीत कहइ छइ ॥ अहियाए० ॥ अपथ्य सणी ॥ असुहाए० ॥ दुःखसणी ॥ अखम०॥

अयुक्तपणासणी॥ अनिस०॥ अन्यस बिईस बिईमुक्तताकिडिइआवइतिमनही॥ ऊ अणता०॥ मध्यरात्रिइंगाढइक्खोलइ॥ ककर
णता०॥ त्यागनइकोलइ इआकलोधाइ॥ अपज्झाणय०॥ आर्त्तरौद्रध्याननुकरिवुं॥३॥ एहवीअहिताद्रिकुइ॥ एहवीवि
परीतसुत्रतताः सुगमछइ॥ त्रिनिर्ग्रंथनां त्रिणि परिहर्यकछइ॥ डव्यसालात तीराद्कि॥ भावसोलकहइछइ॥ निदा
ण०॥ लुसइंतमोसफलं॥ विपरीतदर्सनित मिथ्यात्वमि॥ निर्ग्रंथनइं तेलेश्यि ऊपजवाना त्रिणकारणकहइछइ॥ संखि
त्ता०॥ लघुकीधी॥ विपुला०॥ मोटीछती॥ अन्यथासुर्यनां बिंबनीपरिइकुर्वस्यछइ॥ तेउलेस॥ तपना अंपदाघी ऊपजुंते

ण वा। हिताते सुहाते खमाते णिस्सेसाते अणुगामियत्ताते भवति तं अक्कोसणता अवकरण
ता अणवज्झाणता ताते सल्ला पं तं माया सल्ले णिदाण सल्ले मिच्छादंसण सल्ले त्तिहिं ठाणेहिं स
मणे निग्गंथे संखित्तविउलतेयलेसे भवति तं आतावणताते खंतिखमाते अपाणगेणं तवोकम्मे
णं तिमासियं भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति तओ दत्ती भोयणस्स पडिगाहित्तए तओ पाणग
स्स एगरातियं भिक्खुपडिमं सम्मं अणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे ततो ठाणा अहिताते असुभाते अ
खमाते अणिस्सेयसाते अणाणुगामियत्ताते भवति तं जहा उम्मायं वा लभेज्जा दीहकालियं वा रोयातंकं
पाउणेज्जा केवलीपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा एगरातियं णं भिक्खुपडिमं सम्मं अणुपालेमाणस्स अणगा

इस्वीपणुं॥ तेजसस शरीरनो परिणाम॥ महाज्वालासरिषी ऊणाइ। तेसंक्षिप्त विपुलतेजोलेस्य एहवोलब्धिनोधणी साधु
थाइ ते किम॥ आयावणताए०॥ सीतातापादिकनइ सहिवा पणाइ॥ खंति०॥ क्षिमाइंकरी। क्षिमवुं तेणाइं पाणि अस किंइप
मइ तेणाइं नही॥ अपाणा०॥ चउविहारपणादिकइ ३५ तिमासियं०॥ भिक्खु प्रतिमा साधुनइ त्रिग्रहइ विसष०॥ एगराइयं०॥ एक
रात्रिकी बारमी॥ समणु०॥ सम्यग्रअणपालतानइ॥ उमायं०॥ चित्तनो विभ्रमतेऊन्माद॥ ल०॥ पामइ॥ राग०॥ कुष्टादिक॥ ६१
भातंक०॥ मध्यघातावुलविसुचिकादि॥ पा०॥ पामइ॥ केवलि०॥ कतवा त्रिरूपधर्म थकी भ्रष्टथाइ॥ सम्यकवनोपणिहाणिथाइ

उन्मादादिविकारतप्रतिमानासमग्रअणपालवाथी ऊपजइ॥ विपर्यासमुत्रसुगम एसाधुनी अनुष्ठानइच्छा तिता
कर्मस्मिइकुइ तेसणातकहइछइ। कर्मस्मिकरी। तिहांना वासीलोकनइ धर्मनुं स्वरूप कहइछइ॥ सुत्र ११॥
रुचि०॥ तत्वनुसद्दहिवुं॥ पओग०॥ प्रयोगते सम्यक पुर्वकमनादिनउ व्यापार अथवा सम्यकते त्याग पऊपनी व्या

रस्स ततो ठाणा हिताते सुहाते खमाते णिस्सेसाते अणुगामियत्ताते भवंति तं जहा ओहिणा
णे वा से समुप्पज्जेज्जा मणपज्जवणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा केवलनाणे वा से समुप्पज्जेज्जा ॥४
जंबुद्दीवे २ ततो कम्मभूमीओ पं तं भरहे एरवते महाविदेहे एवं धायइसंडदीवपुरच्छिम
द्धे जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे तिविधे दंसणे पं तं संमदंसणे मिच्छदंसणे सम्मामिच्छ
दंसणे तिविहा रुती पं तं सम्मरुती मिच्छरुती सम्मामिच्छरुई तिविधे पओगे पं तं सम्मप्प
ओगे मिच्छप्पओगे सम्मामिच्छप्पओगे तिविहे ववसाते पं तं धम्मिते ववसाते अधम्मि
ते ववसाते धम्माधम्मिते ववसाते अहवा तिविहे ववसाए पं तं पच्चक्खे पच्चतिते आणु
गामिते अहवा तिविहे ववसाते पं तं इहलोइए परलोइए इहलोगिते परलोगिते इहलो

पार॥ मिथ्यात्वतअप्रयोग॥ ऊ०॥ मिश्रतियोग्यायोग्यतन॥ ववसाय०॥ वस्तुनउ निर्णय॥ अथवा कार्य सिद्ध करवानुं अनुष्ठान॥
धम्मिए व०॥ संजतीनो॥ अध०॥ असंजतीनो॥ धम्मिया०॥ श्रावकनो असंजम॥ असंयम तै देसव्रति॥ अथवा तिविहे व०॥ निश्च
पच्चक्खे०॥ अवधि॥ मनःपर्यव केवलीनउ प्रत्यक्षव्यवसाय॥ पच्चइए०॥ प्रत्यक्ष तेइंद्रीमनादिकथी ऊपनुं वस्तुनउ निश्चइ॥२॥ आ
णुगा०॥ हेतुथकी ऊपनुं तेज्ञानु तेथी आनुगामिक तिमधुं या धूमादिथी अग्निनइ अग्नि॥ अथवा पोतिइदी ऊउ प्रत्यक्षि॥ वीतराग नाव
चनथी ऊपनुं तिआगमिक॥२॥ नीजोतिमइजि॥३॥ इहलोकनइ विषइ वर्त्तमाननो रूनिश्चइ अथवा अनुष्ठान ते इहलोक व्यवसाय॥
परलोकिथायइ ते परलोक व्यवसाय॥२॥

ग

बिहुआ मिवाइ तइहलोक परलो कि व्यवसाय ॥३॥ इहलोकनो विवसाय त्रिणप्रकारि ॥ लोइए० ॥ सामान्य लोकनो आश्रय अथवा अनुष्ठान ॥ तेलोकिक व्यवसाय ॥ वेइए० ॥ विदनइ अनुसारि जे अनुष्ठान करिइ ते वेदक ॥ सामाइ० ॥ सांख्यनो सिद्धांत तदाश्रित व्यवसाय ते सामयिक व्यवसाय ॥१॥ अर्थादिनो ॥ ववसाए० ॥ निश्चय ॥ अर्थस्य मूलं निकृतिः क्षमा च धर्मस्य ॥ दानं दयादमश्च ॥ कामस्य वित्तं च वपुर्वयश्च मोक्षस्य सर्वोपरमुक्तियासु ॥१॥ इत्यादि अथवा अर्थादिनइ अ

गिते ववसाते तिविहे पं तं लोगिते वेतिते सामतिते लोगिते ववसाते तिविहे पं तं अत्थे धम्मे कामे वेतिए ववसाते तिविधे पं तं रिउवेदे जउवेदे सामवेते ए सामइते ववसाते तिविहे पं तं णाणे दंसणे चरित्ते ॥ तिविहा अत्थजोणी पं तं सामे दंडे भेदे ॥ तिविधा पोग्गला पं तं पातोगपरिणता मीसापरिणता वीससापरिणता तिपतिट्ठिया णरगा पन्नत्ता

र्थि अनुष्ठान ॥ उपक्रम व्यापारादिकनुं कहिवउं ते व्यवसाय परलोकिक व्यवसायना ३ भेद ॥ स्मृति आदिकइ त्यनिर्णय कहिउ अथवा तेणइ त्यव्यापार कहिउ ते वैदिक ॥ त्रिणि गणा माटइ अर्थवाणी वेदनकहिउ ॥ ज्ञान ते व्यव साय पर्यायनास्वरूपणामाटइ दर्शन ते सद्दहणारूप व्यवसाय चारित्र ते समतारूप व्यवसाय अथवा ज्ञाना दिक विषइ बोलि अथवा अनुष्ठान ते सामायिक व्यवसाय ॥ सामायिक एहवु नाम सांख्यमती नासास्त्र नुं कहिवु ते तउ ज्ञानादि समस्तपुर्वकपणामाटइं ज्ञानदर्शनचारित्र कह्या ॥ राजादिकनइ आववानउ उपाय ते अर्थयोनि ॥ साम० ॥ प्रियवचनादिक ॥ दंड० ॥ वधादिकरूप ॥ भेद ते वैरी नाजो डानइ ठाकुर ऊपरि थी प्रेम टालिवादि ॥ सामना पांच प्रकार ॥ परस्पर इ बिऊ उपगार करइ ॥१॥ माहोमाहि गुणकीर्तन करइ ॥२॥ आपणइ तो डोनो सगाई छइ ॥३॥ अन्यो अन्य आस्था इलगाडइ ॥४॥ अन्यो न्य कहइ तुम्हा अम्हारा छो ॥५॥ एपांचइ बोल बोट इमनइ करि ॥ साम ॥ वध १ क्लेश ॥२॥ धनादिकनु हरिवुं ॥३॥ एडंडमा ३ भेद ॥ वैरी मा जोडा नइ ठाकुर ऊपरथी स्नेह टालइ ॥१॥ जो दामा हो मा हि अदावति २ ॥ उपस्यु मित्रोई लिखवइ पोषिदाहिली वेला ना कुं ऊपिधि आवी सि ॥३॥ ए ३ प्रकार भेदना ॥ ६२

वाचिवात मरतमय पणिसहक होइ ॥५॥ बाक्कबाव कप्रतिहवा रूपमो लद ॥ समतिक हइ ॥ आ प्रत्ये ॥ पुवइवि सपणाम हितवस्तु मइपति भ रूपुर दरादिक नास्वकन इल्लेइइ लदमान इ ॥ सऊ तकुउ अ नइपुरइ रात कुऊ मामणा पु पुयापुण माटइ ॥ इएवं ॥

एजीववस्तुं स्वरूप कहिउ ॥ हिव पुद्गलनुं स्वरूप कहइ छइ ॥ पओगपरि० ॥ जीवसंयुक्त ॥ मीसाप० ॥ जीवइ पुद्गलनुं क्यांपणि अ नेरइ सर्वांतरइ परिणाम्या नथी ॥ वीससा० ॥ स्वभाविइं परिणम्या जिम आभला नइं इंद्रधनुषादि ॥ पुद्गलना प्रस्ताव थका वि स्तराइं परिणाम्या नरकावासानुं स्वरूप कहइ छइ ॥ नेगम० ॥ ते केहनउ ॥ सामान्य विसेष ग्राहक पणइ करी ॥ अनेक ज्ञानिइं वस्तुनइं जाणइ ते नैगम ॥ अथवा निगमक० ॥ निश्चितार्थज्ञान तेहनइ विषइ कुसल ॥ संग्रह० ॥ लिहवुं संग्रहवुं ॥ महासमु द्रयमा त्र वस्तु अंगीकरिइ ॥१॥ ववहरीइ ते व्यवहार ॥ अथवा एणइ न्यायिं सामान्यनइं ॥ अवहरीइ निराकरीइ ते व्य० ॥ लोक व्यवहार विषइ ॥ तत्पर ते व्य० ॥ ऋजु० ॥ बांकुं नहीं ॥ अतिहिं सरल पणइ वस्तुनइ मानइं ॥ अथवा अतीत ॥ अनागत काल

तंपुढविपतिट्ठिया आगासपतिट्ठिता आयपतिट्ठिया णेगमसंगहववहाराणं पुढविपइट्ठिता उज्जुसुतस्स आगासपतिट्ठिया तिन्हं सद्दणताणं आयपतिट्ठिया ॥ तिविधा मिच्छत्ते पं तं अकिरिता अविणता अन्नाणं अकिरिया तिविधा पं तं पतोगकिरिया समुदाणकिरिया

मधातिणइ प्रकारिइं सत ॥ छतो अर्थमानइ अनेरी परिइं ममानइं ॥ ते एवं सत निर्यं ॥ अलंचि एकेरइं आणवानी वेष्टा करिइं स्त्रीया दिकनइं माथि रह्यो ते घडो ॥ एहवा अर्थ साधतो कुइ ते वेलि घडो मानइ ॥ अन्य सावन हीं सावनि जपादि वस्तुनइं विस ब्रसहित नइ मानइं ॥१॥ पहिली ३ नय अस्तु छइ ॥ अनइ आइं लोक व्यवहार नय मानइ ते तिणइ तेहनइं एहनइं म तिइं प्रथिवी माहिं नरग रह्या छइ अनइ वउथउ नय तेसुं छइ ॥ तेहनलं एहनइं नर्कवासा समाहिइं नर कुरह्या ॥ तेसणी सर्व नइं एकांति आधार आकास छइ ॥ प्रथिवी अनेकांति छइ ॥ तेस कुमइ आधार नथी ॥ ऊपरस्यां त्रिणि ते अस्तु छइ ॥ ते सणी तेहनइ म तिइं आत्मप्रतिष्ठित ते पोतानइ आधारिइं रह्या छइ ॥ तिनरक नरकस्वरूपइं रह्या छइ ॥ ए तिसणी पोतानास्वरूप टाली कोपर स्वरूपइं रहिनहीं ॥ एनर गमइं विषइ मिथ्यात्वी जीव वसाइ ॥ ते सणी मिथ्यात्वीनुं स्वरूप कहइ छइ ॥ सूत्र १ ॥ विपर्यास दृष्टि ते मिथ्यात्वी ईसानक हिइं ॥ आग लिकहाय इछइ ते मिथ्या वस्तुं जाणवुं ॥ ज्ञाणिउं मोक्ष साधक अनुष्ठान ते सणी ते हनी क्रिया ते अकरिया ॥ जिम मिथ्यात्वीनुं ज्ञान ते अज्ञान ॥ इम अ विनय इम अज्ञान ॥ मनादिकनो व्यापार ते प्रयोग क्रिया ॥ अथवा मनादिकइ कर्मबांधइ ते प्रयोग करिया ते दुःष्पणमाटइ अक्रिया कहीयइ ॥ अनइ अकरिया ते मिथ्यात्व ॥ इम सघलइ जाणवु ॥ प्रयोग क्रियाइ एकरूप ते मनादि वणाइं ग्रह्या कर्म पुद्गलनु ॥ समुदाण क्रिया० ॥ सम्यक् प्रतिरूप दिकनइं लिदिइं ॥ दसम वीर्यथा तिरूपकर्मप णाइ ॥ आदान० ॥ अ

नुंमांनि तुं वरूप पुं तवरू पणुं नमा नइ ॥ अ नइ वस्तु मानइ ॥ छ ॥ एणइ करीनइ अ र्थ करीइ तेसइ ॥ नयं ति० ॥ छइ ॥ अनिकस आवमय वस्तु ते प कल्पना व इकारी नइ ॥ ते नय ॥ तेसणुन युइता त्रि ॥ ति ॥ ॥ ३ ॥ मी ॥ वो लवुं ते प इ ॥ तेसइ ना अर्थवि

गीकरिवुं ते समुदानकरिया॥ अज्ञानीनी चेष्टा अथवा कर्म ते अज्ञा क्रिया ० पहिला समानाकर्म ते अनंतर समुदान क्रिया ॥१॥ द्वितीयादि असंख्याता समाला गइ ते परंपर समुदा० ॥ प्रथमाप्रथम समयनाकर्म ते तदुभय ॥ समु० ५ ३॥ मति अज्ञानवुं अनुष्ठान ते मति अज्ञान क्रिया ॥ श्रुत अज्ञाननी क्रिया ॥२॥ विभंग ज्ञाननी क्रिया ॥३॥ दसघाती० ॥ गुरुपक्षी अलगो घामादिकनइ विघ्न करइ ॥ णिरालंबणाया० ॥ गुरुवादिक मूकी आलंबन मुकइ ॥ नाणापेह्या दोसा० ॥ गुरुनी सक्ति उपरि द्वेष अनइ अ सक्ति उपरि राग ॥३॥ दस अन्नाणे० ॥ जे वस्तु घोडी मात्र दसथी अज्ञाणी ॥ ते दस अज्ञान ॥१॥ अनइ सर्वथकी न जाणइ तिसर्व अज्ञान ॥२॥ अनइ वस्तु नापर्यायन जाणी ते तिवा व अज्ञान ॥३॥ अथवा देस ज्ञान १ सर्वज्ञान २

अन्नाणा किरिया। पऊगकिरिया तिविहा पं तं मणपऊगकिरिया वतिपऊगकिरिया काय पऊगकिरिया समुदाणकिरिया तिविहा पं तं अणंतरसमुदाणकिरिया परंपरसमुदाणकिरिया तदुभयसमुदाणकिरिया अन्नाणकिरिया तिविहा पं तं मतिअन्नाणकिरिया सुतअन्नाणकिरिया विभंगनाणकिरिया अविणते तिविहे पं तं देसच्चाती णिरालंबणता नाणापेद्या दोसे अन्नाणे तिविहे पं तं देसन्नाणे सव्वन्नाणे भावन्नाणे भावन्नाणे तिविहे पं तं सुयधम्मे चरित्तधम्मे अत्थिकायधम्मे तिविहे उवक्कमे पं तं धम्मिते उवक्कमिते अधम्मिते उवक्कमे धम्मिताधम्मिते उवक्कमे अहवा तिविहे उवक्कमे पं तं आतोवक्कमे परोवक्कमे तदुभयोवक्कमे एवं वेयावच्चे

भावज्ञान ॥३॥ एत्रिणि मिथ्यात्व पूर्वक मात्र इइ अज्ञान ॥ ८ ॥ ए मिथ्यात्व ते अधर्म छइ। तेहथकी विपरीत ते धर्म ते कहइ छइ ॥ श्रुतधर्म ते सज्झाय ॥१॥ चारित्रधर्म ते तप क्षांत्यादि श्रमणधर्म ॥२॥ ए सावधान कहिउं ॥ हिवइ द्रव्य धर्म कहीइ छइ ॥ अत्थिकाए० ॥ धर्मास्तिकायादि ॥३॥ अनंतर श्रुत चारित्र धर्म कहिउं ॥ हिवइ तेहनो विपक्ष कहइ छइ ॥ सुत्र ॥८॥ उवक्कम० ॥ उपायपूर्वक आरंभ तेह धर्म आरंभ ते उ ॥ धम्मि ए० ॥ श्रुत चारित्र रूप क्रम ते आरंभइ इत्यर्थः ॥ अध० ॥ असंयम ते आरंभ ॥२॥ धम्माधम्मि उ० ॥ देसविरतनो आरंभ ॥३॥ आतोवक्कम० ॥ सीलादि राखवा कीधो गलेपासादिक उपक्रम० ॥ आत्मा विनासइ ते ॥ अथवा आत्मा परिणामइ आत्मा नइ करइ पोतानु ॥ वेयावच्च ॥१॥ पर ग्लानादिकनउ वीयावच्च ॥ परक्रमी मांहि सीलादि राखइ ते तदुभयोपक्रम ॥

आय- जिनकल्पादिकनइ पोतानुं ॥ वेयावच्च ॥१॥ तदुभय० ॥ गच्छवासीनइं ॥३॥ अणुग्गहे० ॥ ज्ञानादिक पगार अभ्यर्थनादि पोतइं सा इ ते आत्मानुग्रह ॥ वाचनादिक ते परानुग्रह ॥ सास्त्र वाच्या नइ सषि संग्रहादिकनइ विषइ प्रवर्त्तता नइ। तदुभयानुग्रह ॥ अणुसहि ॥ साधामणानुं देवुं ॥ आयाणुसहि० ॥ आत्मा नइं सीख दिइ ॥ परनइ सीखदाइ मेघकुमरवत् ॥ तदुभय० ॥ समुभयस्वभावदाइ त्रिण प्रकारना उवालंभ० ॥ उवलंभ तो कहइ छइ ॥ पोतानइ ग्लानो ते आर जीव आ संथारा पामी धर्म न थाकरतो तो सुं ताहरु उवेरा छकं ॥ परनइ उवलंभ तो तमूगावती नइं चंदनबालाइं दीधो ते भ ॥१॥ उभयोपालंभ० ॥ यथा ॥ एगस्स कयएय नियजीवियस्स ॥ बहुयाउ जीवकोडीउ ॥ दुक्खे ठवेति जे के वि ॥ ता णं किं किं सासयं जीयं ॥१॥ ॥ हिवइ श्रुत धर्मना लिद कहइ छइ

च्चे अणुग्गहे अणुसट्ठी उवालंभे एवमेक्केक्के तिन्नि आलावगा जहेव उवक्कमे तिविहा कहा पं तं अत्थकहा धम्मकहा कामकहा तिविधे विणिच्छते पं तं अत्थविणिच्छते धम्मविणिच्छते कामविणिच्छते तहारूवं णं भंते समणं वा माहणं वा पज्जुवासमाणस्स किंफला पज्जुवासणया सवणफला से णं भंते सवणे किंफले णाणफले से णं भंते णाणे किंफले विन्नाणफले एवमेतेणं अभिलावेणं इमा गाहा अणुगंतव्वा सवणे णाणे य विन्नाणे पच्चक्खाणे य संजमे अणण्हाते तवे चेव वोदाणे अकिरिणिव्वाणे जाव से णं भंते अकिरिया किंफला निव्वाणफला से णं भंते निव्वाणे किंफले सिद्धिगइगमणपज्जवासफले पन्नत्ते समणाउसो इतीयस्स उदेसकः ॥३॥ पडिमापडिवन्नस्स अणगारस्स

अत्थकहा० ॥ लक्ष्मी उपायनी वार्ता धातुवादादि १ धर्मना उपायनी वार्ता ॥ उत्तराध्ययनकेपेत्रादिक ॥२॥ कामकथा वात्स्यायनरूप ॥ अर्थ धर्म कामाचननी पद्धति ते कथा अथवा चरित्र वर्णनरूप ते कथा ॥ विणिच्छए० ॥ तेहनारूपनो निर्णय ॥ अत्थ विण० ॥ धननास्वरूपनो ॥ अत्थि णं अत्थमूल इत्यादि ॥ धम्म विण० ॥ धननो निर्णय धनदोध नथा धिनो धर्मः इत्यादि ॥ काम विण० ॥ सत्ली कामा विसे कामा इत्यादि ॥ अनंतर धर्मनो निश्चय कह्यो ॥ हवइ तेहनो कारण अनइ फल कहइ छइ ॥ पज्जु० ॥ सेव ॥ सवणम० ॥ सीखवानो पामीइ ते फल ॥ णाणे० ॥ श्रुतज्ञान ॥ विज्ञान ते ॥ हे ॥ यो पादेयपणानो निश्चय ॥ निवृत्ति ते पचखाण ॥ संयमते १७ लेद ॥ अनाश्रव ते कर्म नु अणालेवु ॥ वोदाण० ॥ पुर्वलां कर्मनुं छेदवुं ॥ अथवा पुर्वलां कर्मनुं सोधवुं ॥ सिद्धि० ॥ मोक्ष जावुं ते सिद्धिनुं फल ॥ समण० ॥ हे श्रमण आयुष्मन् ॥ एषणा वोलमां टइ त्रिणि णामादि नी वइ ॥ पणि ॥ पणि सगर्व तइ प्रसंगइं कह्या ॥ श्री अनुगणा तीजा उद्देसउ ॥ ८ ॥ ७ ॥ श्री श्री श्री श्री श्री श्री

Dr. BHAU DAJI
डाक्टर भाऊदाजीइत्यस्य सार्वकम्

पुर्वइ छेकलइस्सुअइ असमणमाहाणमीसवालुंकल कहिकं॥ दिहोतहना आचारनी विधिकहीयइ॥ पडिमा०॥ उवस्सगा०॥ उवा
स्याअ तिलखवा तिनिरखवार हितांकाजि॥ पछइते उपोगपजा ताइ ते ताइर हइ॥ अहे०॥ त्रिाणि ऊपा स्यानुंसरिखापणुं
उतणवानइ अर्थ। सइकहिकं॥ आगमण गि०॥ पंथीजिहां आवीरहइ विश्रामि अथवा पंथीनइ अ मढि छिघर तेआग
मणाघर तेमसामथयीहि॥ वियड गिहि०॥ अणढांकिवुं ते विकृत तेहि॥ चिंहुपासामाखइ एकादिकपासइ अणढांकिकंहइ
तेअधमे विहति मालणरहित ऊकइं विहति २॥ रुहंतुतल तेउपणोप्रतिपेक्षोनंतरऊपाश्रो उपोगपजा ताइ तिहनी अ
कप्पंति। तंजहा उवस्सगापडिलेहित्तते। तं अधेआगमणगिहंसिवा। अहेवियडगिहंसिवा। अहेरु
क्खमुलगिहंसिवा। एवं मणुन्नवेत्तते उवातिणित्तते। पडिमापडिवन्नस्सणं अणगारस्स कप्पंति
तउ संथारगा पडिलेहित्तते। तं पुढविसिला कट्ठसिला अहासंघडमेव। एवमणुन्नवेत्तए उवाति
णित्तते। तिविधे काले पन्नत्ते तंजहा। तीते पडुप्पन्ने अणागाते। तिविधे समते पं तं तीतपडु
प्पन्ने अणागाते। एवं आवलिया आणापाणु थोवे लवे मुहुत्ते अहोरते जाव वाससतसहस्से पु
व्वंगे पुव्वे जाव उसप्पिणी। तिविहे पोग्गलपरियट्टे पं तं तीते पडुप्पन्ने अणागाते। तिविधे वयणे
पं तं एगवयणे दुवयणे बहुवयणे। अहवा तिविधे वयणे पं तं इत्थिवयणे पुंमवयणे णपुंसव
यणे। अहवा तिविधे वयणे पं तं तीयवयणे पडुप्पन्नवयणे अणागयवयणे। तिविधप
तुंमतिमागइ॥ उवायणवि॥ ग्रहीनइं माहिंपइसिवुंकल्पइ॥ सघवीसरखापाषाणकाष्ठलोबपराइ। पिकुलपणइं सिलासरि
षु तेनताणी सिला २॥ अहसंघडमेव॥ उ तोगवि वाजोग्पजाताइ तेरणल्पइ॥ संथाराकाजि॥ इमऊपाश्रुपनी परिइं सिला
दिमतिलषइ। जुए॥ याचइ। तोगवइ॥ प्रतिमातो कालुनाप्रमाणसहित कहइ तेसणकालनुं स्वरूपकहइछइ॥ अतीता
दि समुच्चयइकेहिजे॥ तिवुस्तइ पिइंकुदेवानइन्नमध्या दिकइंकहइछइ॥ पुद्गलपरावर्तनिउ विस्तार घणो छइ इतिइं
दुव्यादिकालदइ॥ एकवचनतिदेव॥ द्विवचनतादेवौ॥ बहुतिदेवाः॥ स्त्रीवचनोऊनामि॥ तनदी। नद्यौ नद्यः॥ कुडं॥ कीधुं॥
करइछइ॥ करस्यइ॥ दर्शनेतिजीव ६४

ना पर्यायछइ॥ उसतो पर्यायांतरकहइछइ॥२१ पन्नवणा०॥ प्ररूपणा तेहनुं कहिवुं॥ ज्ञानप्ररूपणानो ५ प्रकारश्रु
तादि॥ दर्शनिनो ५ प्रकार क्षायिकादि ५॥ साम०॥ अविपरीतमोक्षसाधवाप्रति। एतलइ सावुं॥ उवघाए०॥ पिंड शय्या
दिकनुं अकल्पनीयपणुंकरिवुं॥ एहसइ इहां ऊताआहारनुं लेवुं तिए बणातेसंक्लिता दिदृष्यइं दुष्टते उघात॥ एवं विसा
ही०॥ एतला दोष रहितपणइं। चारित्रनिर्मलि॥ अथवा आहारनिर्दोष तेविसोधि॥ नाणाराहणा०॥ काले विणयइत्यादि
दंसणा०॥ निस्संकियादि॥ चरित्ताराहणा०॥ समितिगुप्ती॥ संकिलेसे०॥ ज्ञानादिकनइ विषइ असुभपरिणामतसंक्ले
पन्नवणा पं तं णाणपन्नवणा दंसणपन्नवणा चरित्तपन्नवणा तिविधे सम्मे पं तं नाणसामे दंसण
सामे चरित्तसामे तिविधे उवघाते पं तं उग्गमोवघाते उप्पायणोवघाते एसणोवघाते एवं
विसोधी तिविहा आराहणा पं तं णाणाराहणा दंसणाराहणा चरित्ताराहणा णाणाराहणा तिविहा
पं तं उक्कस्सा मज्झिमा जहन्ना एवं दंसणाराहणावि चरित्ताराहणावि तिविधे संकिलेसे पं तं नाणसं
किलेसे दंसणसंकिलेसे चरित्तसंकिलेसे एवमतिकमेवि वइक्कमेवि अइयारेवि अणयारे
वि तिन्हमतिक्कमाणं आलोएज्जा पडिक्कमेज्जा निंदेज्जा गरहेज्जा जावपडिवज्जेज्जा तं णाणातिक
मस्स दंसणातिकमस्स चरित्तातिक्कमस्स एवं वइक्कमाणवि अतिताराणं अणायाराणं तिविधे पाय
च्छित्ते पं तं आलोयणारिहे पडिकमणारिहे तदुभयारिहे १७ जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं
स॥ असंक्लि०॥ विसुद्धपरिणाम॥ त्रिमआधाकरमीनाधप्रकार॥ आधाकरमीनुं आमंत्रणमकारिकंतेअतिक्रम॥ पगलांसस्यां तिवा
रइं व्यतिक्रमदोषग्रह्यो तिवारइं अतीचार॥ तिमज्ञानदर्शनिनामनाकारण तिज्ञानंनुंउरव्य पुस्तकविनासमइकाजिमघी॥ जि
नासातनानइकाजि तथा मिथ्याखवधारवामइकाजि आमंत्रण अंगीकारकरिवुं तेअतिक्रम। चाल्पा तेव्यतिक्रम॥ कृपि
वामाडिउं तेअतीचार॥ कीधुं तेअनाचार॥ चारित्रना पणितेअतिक्रमादि ४ ज्ञानादित्रिकुना अतिक्रमादि आलोवादि

आलोयणा विरहि० ॥ गुरुमई तवेद्दवई ॥ सुद्धघाइ ॥ सिद्दा वर्या दि ॥ पद्दि० ॥ मिछामिदुक्कडं इदं सुधघाइ तेसहसा तका विश्रसमि
तिअगुप्त प्रवर्त्यां तउ ते प्रतिक्रमणा विहि० ॥ तदुत्या० ॥ आलोयणा पडिकमणा त्याग प तेमम रागादि भइ । सष्टा दिविध्यप्रव
त्तुंते । एपरूपणादि व्वाल मनुष्य क्षेत्रमा हिकुइ तेणाइं संबंधइ ॥ मनुष्य नाक्षेत्रं तुस्वरूपक हइ छइ ॥ एअकर्मभूम्यादि प्रसिद्धा

ततो अकम्मभूमीओ पं तं हेमवते हरिवासे देवकुरा जंबुद्दीवे २ मंदरस्स उत्तरेणं तओ अकम्मभूमी
ओ पं तं उत्तरकुरा रम्मगवासे एरन्नवए जंबुमंदर दाहिणेणं ततो वासा पं तं भरहे हेमवए हरिवासे
जंबुमंदरउत्तरेणं ततो वासा पं तं रम्मगवासे हेरन्नवते एरवाते जंबुमंदरदाहिणेणं ततो वा
सहरपव्वता पं तं चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसढे जंबुमंदरउत्तरेणं ततो वासहरपव्वता पं
तं नीलवंते रुप्पि सिहरी जंबुमंदरदाहिणेणं तओ महादहा पं तं पउमदहे महापउमदहे तिगिंछद
हे तत्थ ततो देवताओ महिड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठितीताओ परिवसंति तं सिरि हिरि धीति एवं उत्तरे
णवि णवरं केसरिदहे महापुंडरियदहे पोंडरीयदहे देवताओ कित्ती बुद्धी लच्छी जंबुमंदरदा
हिणेणं चुल्लहिमवंताओ वासहरपव्वताओ पउमद्दहाओ महाद्दहाओ तओ महानतीओ पवहंति गं
गा सिंधू रोहितंसा जंबुमंदरउत्तरेणं सिहरीओ वासहरपव्वताओ पोंडरीयद्दहाओ महाद्दहाओ तओ म
हानदीओ पवहंति तं सुवन्नकूला रत्ता रत्तवती जंबुमंदरपुरच्छिमेणं सीताते महानदीते उत्तरे
णं ततो अंतरणदीओ पं तं गाहावती दहवती पंकवती जंबुमंदरपुरच्छिमेणं सीताए महानदीए दा
४ हिणेणं ततो अंतरणदीओ पं तं तत्तजला मत्तजला उम्मत्तजला जंबुमंदरपच्चच्छिमेणं सीओदाते महा ६५

उस्वरूपकहिउं ॥ हवइ नागांतरि वलीप्रथवीनुस्वरूपकहइ छइ ॥

पद्मद्र ५०० जो० वि० १००० जो० लांबो दासमा

देसथ० ॥ २ अ प्र सा प्रथवीनो एकदेश नागचलइ । अहेणं० ॥ २ तनप्रभा प्रथवी हेठलि ॥ उराल० ॥ बादर ॥ पु० पुद्गल
निवएज्जा० ॥ निपतितथ तेकवडइ ॥ तथा अनेरिइं अ मिइ आवी तिहां लागइ । तिमयोग्मुक्ति उमोटउ गोलउ ते हनी प

णईए दाहिणेणं ततो अंतरणतीओ पं तं खीरोदा सीतसोता अंतोवाहिणी जंबुमंदरपच्चच्छिमे
णं सीतोदाए महाणदीए उत्तरेणं ततो अंतरणदीओ पं तं उम्ममालिणी फेणमालिणी गंभीर
मालिणी एवं धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे वि अकम्मभूमीओ आढवेत्ता जाव अंतरणदीउत्ति णिरवसे
सं भाणियव्वं जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चच्छिमद्धे तहेव निरवसेसं भाणियव्वं ॥ तिहिं ठाणेहिं
देसे पुढवीए चलेज्जा तं अहे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीते उराला पोग्गला णिवतेज्जा तए णं ते उ
राला पोग्गला णिवतमाणा देसं पुढवीए चलेज्जा महोरगे वा महिड्ढिए जाव महेसक्खे इमीसे रयणप्पभा
ए पुढवीए अहे उम्मज्जणिमज्जियं करेमाणे देसं पुढवीए चलेज्जा णागसुवण्णाण वा संगामंसि वट्ट
माणंसि देसं पुढवीए चलेज्जा इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा तं अधे णं इमीसे
रयणप्पभाते पुढवीते घणवाते गुप्पेज्जा तए णं से घणवाते गुविते समाणे घणोदहिमेएज्जा तते णं
से घणोदही एते समाणे केवलकप्पं पुढविं चालेज्जा देवे वा महिड्ढीते जाव महेसक्खे तहा
रूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा इड्ढिं जुतिं जसं बलं वीरियं पुरिसक्कारपरक्कमं उवदंसेमाणे केवलकप्पं
पुढविं चालेज्जा देवासुरसंगामंसि वट्टमाणंसि केवलकप्पा पुढवी चालेज्जा इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं तिविधा दे

तिद्दा ततिसोंधा कंपइ ॥ [illegible] पृथवीना देसनइ चलावइ ॥ उमज्ज० ऊंचो आवतो निमज्ज० ॥ निमज्ज० ॥ हेठो जातो दृष्टि करी इम करतो
प्रथवीना देसनइ चालइ ॥ प्रथवीनादेसनुं चलवुं कहि ॥ हवइं संपूर्ण चलवुं कहइ छइ ॥ घणो वाए गुप्पेज्जा० ॥ व्याकुल थाइ ॥ घनवाते
व्याकुल थया छता ॥ घनोदधी नइ चालइ ॥ रत्नप्रभा आपणी नइ चालइ ॥

देव विमानिक असुर ते भवनपति तेहनइ भव प्रत्ययैक तेणइ वैरानुबंध वैर छइ ॥ तेमाटइ संग्राम ॥ संग्रामं सिय ॥ देवता असु
रकह्या तेहना १० भेद कहइ छइ ॥ इंद्र १ सामानिक २ त्रायत्रिंसक ३ पार्षदि ४ आत्मरक्षि ५ लोकपाल ६ अनीका ७ परिवा
र ८ आभियोगिक ९ किल्विषक कहइ छइ १० ॥ नाणस्स केवलीणं ०॥ १॥ किल्विष पाप तेहनइ उदय छइ जेहनइ ते क

वकिब्बिसिया पं तं तिपलिउवमट्ठितीया तिसागरोवमट्ठितीया तेरससागरोवमट्ठितीया क
हिणं भंते तिपलितोवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसंति उप्पिं जोतिसियाणं हेट्ठिं सोहम्मी
साणेसु कप्पेसु एत्थणं तिपलिउवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसंति कहिणं भंते तिसागरोवमा
ट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसंति उप्पिं सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं हेट्ठिं सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पे
सु एत्थणं तिसागरोवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसंति कहिणं भंते तेरससागरोवमट्ठितीया दे
वकिब्बिसिया परिवसंति उप्पिं बंभलोगस्स कप्पस्स हेट्ठिं लंतए कप्पे एत्थणं तेरससागरोवमट्ठितीया
देवकिब्बिसिया परिवसंति सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो बाहिरपरिसाए देवाणं तिन्नि पलिउव
माइं ठिती पन्नत्ता सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो अभितरपरिसाए देवीणं तिन्नि पलिउवमाइं ठिती
पन्नत्ता ईसाणस्स देविंदस्स देवरन्नो बाहिरपरिसाए देवाणं तिन्नि पलिउवमाइं ठिती पन्नत्ता तिवि
हे पायछिते पन्नते तं नाणपायछिते दंसणपायछिते चरित्तपायछित्ते तातो अणुघातिमा

ल्वि वि ॥ मनुष्यमाहि किंमर्यादा चंडाल नीपरि ॥ देवतानो अधिकार तेणए सूत्र ३ कहइ छइ ॥ सक्कस्सणं इत्यादि ॥ देवापगुलो
सप्रायश्चित्तनइ स्वरूप कहइ छइ ॥ ज्ञाननां अतीचार नइ अर्थि शुधिनइ अर्थि जे आलोचना दिक ते ज्ञान प्रायश्चित ॥ मूल उत्तर
गुण विराधनारूप अतीचार ते चारित्रप्रायश्चित ॥ उवघातिम० ॥ आगनुघातिवुं ते लाइ करी नीपनुं ते उवघाति गुरु लघु
इत्यर्थः ॥ ६६

तेतला दमक नइ मसवाडा नुअर्ध १५ दिन ॥ तिवारपछी मासनी अपेक्षाइं बुनि लघु २५ सुतप्रातहनु अर्ध साडाबार तेहनइ १५
एक ग्रह्यइ ॥ तिवारि इसा दास तावदिहाडा ॥ एमकरी उत्प्रायश्चित दीजइ ते लघुमास तिमनही ते अणुउघाति मनयो गु
रू इत्यर्थ ॥ हस्तकर्मादिकनु प्रायश्चितकल्प थकी जाणिओ ॥ तपइ करीनइ अपराधनइ ॥ पारं० ॥ पति ॥ अंचिक० ॥ जोइ ॥ तिवा
रपछी दीक्षा दीजइ ॥ तपारंचिक ॥ एहसहु प्रायश्चित ॥ दुठपारंचिए० ॥ दुष्ट दोषवान् कषायतो विषयतश्च इत्यर्थः ॥
पमत्ते० पं वविरहप्रमादवान ॥ अन्नमन्नेको० ॥ परस्परं मुखपायु प्रत्यागाता ॥ मैथुनं कुर्वन ॥ पुरुषयुगमिति ॥ तस्खं

पं तं हत्थकम्मं करमाणे मेहुणं सेवमाणे राइभोयणं भुंजमाणे तउ पारंचिता पं तं
दुट्ठे पारंचिते पमत्ते पारंचिते अन्नमन्नं करमाणे पारंचिते ततो अणवट्ठप्पा पं तं साहम्मियाणं तेणं
करमाणे अन्नसाहम्मियाणं तेणियं करमाणे हत्थातालं दलमाणे ततो णो कप्पंति पव्वावेत्तए

लिंगापकरविवुं ॥ आसेवेना ॥ तेअपराधसेवीनइ ॥ तेहनो प्रायश्चितनो तपअनाचरीनइ ते दोषथकी निवर्त्यो थिकोवणि
महाव्रतनइ विषइ नथापीइ ॥ ते अनवस्थाप्यनउं प्रायश्चित । तथा सद्दशावइ ॥ आशाइअवशविइ ॥ अतीचारनो प्राय
श्चित दिइं माहिलीइ ॥ साहम्मि० ॥ साधर्मिक साधु तेहनी चोरी उतकृष्टी अथवा घणीवार प्रदुष्टचित्त थकउ करतउ रूपधा
दिकनी ॥ १ ॥ अन्न० ॥ साकीया दिक तथा गृहस्थनी उपध्यादिक चोरतो हुंतो ॥ २ ॥ हस्तातालं ० ॥ हस्तेना आताडनं० ॥ अनेरा
नइ घणु अथवा पोतानइ हणाइ इति भाव ॥ अथवा हालं दलमाणे ॥ एपाठांतर ॥ इम यरिवादुं कारण अष्टांग निमित्त प्रयुंज
तो हे अथवा हत्थलंबं दलमाणे ॥ एपाठांतर नगर क्षोभादिके पडउथ टालवानइ मंत्रविद्या प्रयुंजइ ॥ आगइ रह्या
इ ३ पूर्वोक्त प्रायश्चित्त वारित्रीया नइ कह्या ते तउ एक दिक्षा देवा उग्य छइ । तेमाटइ अप्रयोग्य नु स्वरूप सूत्र
६ कहइ छइ ॥ त्रिणनइ दिक्षा न देवी ॥ पडगा वत्तरा० ॥ प्रव्रज्या देवी ॥ पंडग० ॥ नपुंसक ॥ तेलाक्षिणाइ जाणीं परि
हरिवा ॥ तेलक्षण एस्त्रीना सरिखो स्वभाव ॥ स्वर वर्ण नउ फेर ॥ २ स्थूल लिंग ३ सुकुमालवाणी ४ मात्रु करता सद्दथाइ ५

मा अइ फीणानहीं एक नपुंसक लक्षण ॥ आपण थी अथवा परथी लिंगभंग थइ ॥ निवारि इरही नमकइ ॥ मैथुन विना निवाति ष्टा
पनिरुद्धवेद नपुंसक पणाइ परिणमइ ॥ वागे नरिवाविए ० ॥ आंधी कातरा थी ॥ क्लीवते असमर्थपणुं तेहना ४ भेद ॥ नग्न
स्त्री देखीलिंग गलइ तेह दृष्टिक्लीब ॥ मैथुननो जे सब्द सांभलतां जेहनुं लिंग गलइ ते सब्द क्लीब ॥ २ स्त्रीइं आलिंगो थको
तथा निमंत्र्यो थको व्रतराखी न सकइ ते आदिग्ध क्लीब ३ ॥ अनइ निमंत्रणे क्लीब ४ एण्यारिइं नपुंसक पणाइ परिणमइ परि
णमइ ॥ बीजो लिंदवातिक अनइ त्रीजउ क्लीब फल थाइ किम ॥ तेहना कहवा थकी अथवा तेहना मित्रना कहवा थकी जाणी
थइ ॥ विस्तार तो कल्पथकी जाणिवो ॥ एउ कहा वेदनाथणी माटइ व्रत पालिवा असमर्थ तेमाटइ दिक्षा देवा नहीं ॥ इहांति

पंडए वातिए कीवे एवंमुंडावित्तए सिक्खावित्तए उवट्ठावित्तए संभुंजित्तए संवासित्तए ततो
अवायणिज्जा पं तं अविणीते विगतीपडिबद्धे अविओसवियपाहुडे ततो कप्पंति वाति
तए तं विणीते अविगतीपडिबद्धे विओसवियपाहुडे ततो दुसन्नप्पा पं तं दुट्ठे मूढे

णमाणमाटइ ॥ पालिथली वाऊइं मत्रकृपा अउसो गषइ तेग्रंथोतर थकी कहइछइ ॥ बाल १ वृद्ध २ नपुंसक ३ जन्मनपुंसक
४ आधीउ ५ बोर ६ राजानो अपराधी ७ उन्मत्त ८ आंधलो ९ दास १० दुष्ट ११ मूढ १२ रणीउ १३ जातिइं जंगिइं हीणो १४
रुबद्ध १५ बीहीकण १६ कुणएकइं अपहरी कुइ १७ गर्भिणी स्त्री १८ धावतुं बालक तेहनी मां १९ एमवरूना वियाब्भकके
ल्पइ ॥ लीखकरिवो न कल्पइ ॥ प्रत्यादि ग्रहणादिम ॥ नयगबणा ० ॥ उवख्या दिकइ संघातइ लागविवा ॥ संवासि ० ॥ पास
इ बइसाडवा न कल्प ॥ एकसमीपनाराहिनार पणि वाचना देवा अजोग्य एह त्रुक कहइछइ ॥ सुत्रनादेनार नइ वंदना दिन
करि तेअविनीत ॥ विगइ पडिबद्ध ० ॥ घृतादिरसनइ विषइ ग्रुद्ध योग नवहइ ॥ इत्यर्थ ॥ साधन होए । जिमवि
द्यापल न दिइ तिम योग विना सिद्धांत फल नद्याइ ॥ अविओसपाहु० ॥ पाहुड ते परमार्थ मीनुं अपराधुं तेक्रोधनइ जे
लाइ समास्यो नथी ॥ पमावीन शक्लीवलो जइ कि क्रोधी नइवाचना देता क्रोधं अपराधकरइ तेकुल लहे थाइ ॥ अनइ छेव
देवतां छलइ ॥ देणहारनइ अनिःफलथाइ तेसणो परलोक नउ नासथाइ ॥ ऊपर इक्षित्रिबीजे वते

एहीननइ अजोग्य कह्या ॥ हिवे रुद्रसनननइ आयोग कहइ ॥ तउ दुसन्नप्पा ० ॥ सिखिवुं दुर्लभ थाइ ॥ दुष्ट ० ॥ तत्वप्रत्वनीक ॥ मूढ
गुणदोषनो अजाण ॥ वुग्गाहिए ० ॥ कुमति ग्राही ॥ ततो कप्पट्ठिया ० ॥ सामायिक चारित्र
सणी वक्रमानइ नहीं ॥ मुद्द ० ॥ गुणदोषनो अजाण ॥ बुग्गाही ए ० ॥ कुमति ग्राही ॥ ततो कप्पठिया ० ॥ तिन कल्प २ धवि रुकल्प ३ ॥ ए
छेदोपस्थापनीक ॥ पंचमहाव्रत ॥ २ ० परिहारविसुद्ध चारित्र थकी नी सर बानी स्थिति ॥ ३ ॥ नेरइयाणं ० ॥ वाउकाइया धसरीर माटइ
आधारलोपइ ते नारकीना सरीर नो धारण थाइ ॥ तेसणी तेमरीर कहइछइ ॥ नेरइयाणं ० ॥ आचारना अतिक्रमनार प्रतिनीक एणे कहइ ते सत्रीप्रतिनीक पणु कहइ
बउपो ॥ तिर्यंचपंचेंद्री ४ मनुष्यनइ ५ माटइ न कह्या ५ ॥

णोतिसा
ऊमाणा
कहिता
परोहा
रविसुध
चारित्र
मा लिप
इ लवस
करतो

बुग्गाहिते तउ सुसन्नप्पा पं तं अदुट्ठे अमूढे अवुग्गाहिते ततो मंडलियपव्वता पं तं माणुसु
त्तरे कुंडलवरे रुयगवरे ततो महालता पं तं जंबुद्दीवे मंदरे मंदरेसु सयंभूरमणे समुद्दे स
मुद्देसु बंभलोए कप्पे कप्पेसु तिविधा कप्पट्ठिती पं तं सामाइयकप्पट्ठिती छेदोवट्ठावणीयक
प्पट्ठिती णिव्विसमाणकप्पट्ठिती अहवा तिविधा कप्पट्ठिती पं तं णिव्विट्ठकप्पट्ठिती जिणकप्प
ट्ठिती थेरकप्पट्ठिती नेरइयाणं ततो सरीरगा पं तं वेउव्विए तेयए कम्मए असुरकुमाराणं ततो
सरीरगा एवं सव्वेसिं देवाणं पुढविकाइयाणं ततो सरीरगा पं तं उरालिते तेयते कम्मते ए
वं वाउकाइयवज्जाणं जाव चउरिंदियाणं गुरुं पडुच्च ततो पडिणीता पं तं आयरियपडिणीते उवज्झा

इछइ ॥ गुरु कहवे ते गुरु ते आचार्य ५ प्रतिकूल ते प्रतिनीक आचार्यादिक ॥ खिवरते जात्यादिक ॥ स्थिवर तेहना अवर्णवाद बोलइ ॥ पा
सइ नरहइ आदि उ ग्रो ॥ छिद्रीपेखी ॥ अथवा गुणप्रकाशमइ प्रतिकूल अथवो परनइ इसी कहइ । अथवा पोतइ जि गुरु नइ कहइ
॥ इम विधि वियावच्च पोते नी करतो ॥ ३ ॥

ठाणांग बा॰

गतिं॥ मनुष्यादि॥ इंद्रीयार्थनां प्रतिकूलकारी पणा थकी॥ पं चाग्नि तापस नी परिं मनुष्य सबंधनूं प्रतिनीक ते इहलोकनो प्रतिनीक॥ इंद्रियार्थ विषय तत्पर ते परलोक ते जन्मांतर नो प्रतिनीक॥ चोरी आदि कइ करी इंद्रियार्थ निंद्र विषय तत्पर ते बेहु लोकनो प्रत्यनीक अथवा इहलोक ना उपगारी ज्ञानादिक तेहना साधन नो ऊपद्रव कारी ते इहलोक नउ प्रतिनीक॥ ज्ञानादिक नो ऊपद्रव कारी ज्ञान तेहना साधन नो ते परलोक॥ बेहुनो करणहार ते बिहुंलोक नो प्रतिनीक॥ अथवा इहलोक ते मनुष्य लोक॥ परलोक ते नारकादि॥ ए बेहु इहि थलोक॥ एत्रिणिहि निंद्य घोटकं पक पिवकं ते तेहनी प्रत्यनीक॥ समूहनो प्रतिनीक॥ कुल

यपडिणीए परपडिणीए। गतिं पडुच्च ततो पडिणीया पं. तं. इहलोगपडिणीए परलोगपडिणीए दुहतोलोगपडिणीए। समूहं पडुच्च ततो पडिणीया पं. तं. कुलपडिणीए गणपडिणीए संघपडिणीए। अणुकंपं पडुच्च ततो पडिणीया पं. तं. तवस्सिपडिणीए गिलाणपडिणीए सेहपडिणीए। भावं पडुच्च ततो पडिणीया पं. तं. णाणपडिणीए दंसणपडिणीए चरित्तपडिणीए। सुयं पडुच्च ततो पडि

ते चंद्रादिक तेहनउ समुह॥ ते गण ते कौटिकादि ते तेहनो समुह ते संघ॥ ए त्रिणिना अवर्ण वाद बोलवुं। इत्यादि प्रत्यनीकपणुं॥ एक आचार्य ना सिष्य ते कुल॥ त्रिण कुल इगण॥ सर्व साधु साधवी सर्वयती नउ समुदाय ते संघ॥ अनुकंप कहे उपष्टंभ॥ आधार आश्री॥ तपसी। गिलाण॰॥ ते रोगी यादिक ते असमर्थ॥ सेह ते नव दीक्षित सचि॥ एत्रिणि कुनी भक्ति ते आधार ते अनुकंपा ते न करि॥ भाव ते पर्याय ते पर्याय क्षिकरी नइ॥ ज्ञानादिक रूप ईतोइकार तोइ जीवनइ थएक जीव नउ एक अजीवनो तिहां एप्रसस्त बीजो अप्रसस्त॥ प्रसस्त ते क्षायिकादि॥ अप्रसस्त ते अव्वदाइ॥ ऊदयिक क्षायिकादिक कइ करी नइ। ज्ञानादिक रूप एताइ कार ताइ ज्ञान च्या रो प्रतिनीक ते तेहनुं घोटकं पक पिबुं॥ अथवा ते ज्ञान सिद्धांतादिक नु उपगारी ना लिवुं॥ प्रत्यनीक पणुं तिए त्रिकुनइ उपगारी बोलिवुं। घोटकं परूपवुं॥ एस्वरूप कहुं ते तीगर्भ ते सत्त्व नइ कहइ ६८

अनइ तेहनुं सरीर ते माता पिता दिकनइ कीधुं थइ। ते तणो तेहना अंगना कारणनो विनाशक हुइ छइ॥ तिणि पिताना अंग॥ अवयव ते अंगक हीयइ॥ आ हिसुकनाक प्रणीत रूप इत्यर्थ॥ अट्ठी॰ हाड॥ अट्ठिमिंजा॰॥ हाडमा दिलो रस॥ केस॰॥ माथाना॥ मंसु॰ डाढी रोमकक्षादिना॥ निख॥ ए सर्व मिली एक सरीषा पणामाटइं॥ वाधइ ते तणो। माताना अंग प्रादिं लोहीइत्यर्थ॥ मथुलिंग॰॥ माथानो ते जो मद फेफस कपाल मध्यवर्ती ते जो ए सर्व मिली एक। पुर्वोक्त। स्थिर कल्पक इति॥ ते समइ निर्जरा नु कारण कहइ छइ

णी ता पं. तं. सुत्तपडिणीए अत्थपडिणीए तदुभयपडिणीए। ततो पितिअंगा पं. तं. अट्ठी अट्ठिमिंजा केसमंसुरोमनहे। तउ माउयंगा पं. तं. मंसे सोणिते मत्थुलिंगे। तिहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति। तं. कया णं अहं अप्पं वा बहुं वा सुयं अहिज्जिस्सामि कया णं अहं एकल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरामि कया णं अहं अपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणाझूसिते भत्तपाणपडियाइक्खिते पाओवगते कालं अणवकंखमाणे विहरिस्सामि एवं समणसा सवयसा सकायसा पागडमाणे समणे णिग्गंथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति। तिहिं ठाणेहिं समणोवासते महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति। तं. कया णं अहं अप्पं वा बहुं वा परिग्गहं परिचइस्सामि कया णं अहं मुंडे भवित्ता आगारातो अणगारियं पव्वइस्सामि कया णं अहं अपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणाझूसिते भत्तपाणपडियाइक्खिते पाओवगते कालं अणवकंखमाणे विहरिस्सामि एवं समणसा सवयसा सकाय

महानि॰॥ मोटी निर्जरा कर्म क्षयिक रवा रूप छइ जेहनइ॥ मस्त॰॥ प्रसस्त अथवा अप्रसंत॥ पर्यवसान॥ छेहडउ समाधि मरण थकी॥ अथवा बली मरण नी अपणा पामवा थकी जीवितव्यनुं छेहडउ जेहनइ ते महापर्यवसान। ते अत्यंत सुभनो बंध करी छइ॥ सि॰॥ तसाधु महात्मा॰॥ मनइ करी॥ ए मवचनइ कायाइ॥ पागडमाणो॰॥ प्रगट पणइ करती॥ पामतां रइ॥ पक्षाहमाणे॰॥ आलोचतो॥ एसाधुनी ति म श्रावकनी कहइ छइ॥

तिहि॥एककर्मनिर्जरातेपुद्गलनोपरिणामबंध।तेसर्वपुद्गलनोधारणात्मकहुइ पुद्गलनोप्रतिघात॥गतिनुंसंचलिवुं॥परमाणुपुद्गलपरमाणुपुद्गलनइआघटइगतिसचालिवुं लुषपणाइगतिसंचालइ।तेजरुखीगतिकरतोते हवीनघाइ॥लोकांतिइंधर्मास्तिकायादिनाअभावथकीगतिसंचलइ॥एकपुद्गलनउ प्रतिघातनुसर्वदर्शणाइ॥ तेसणांतकहइछइ चक्षु॥एकद्रव्यचक्षु॥एकसाधचक्षु॥द्रव्यचक्षुतिओछि॥भावचक्षुतेज्ञान॥इहांचक्षुघनुधण

सागारमाणोसमणेवासतेमहाणिइहरमस्सपच्चवसाणेसवति तिविधेपोग्गलपडिघाते पंतं परमाणुपोग्गलेपरमाणुपोग्गलेपडिहनिज्जा लुरकंतेवापडिहनिज्जा लोगंतेवापडिह निज्जा तिविहेचक्खु पंतं एकचक्खु बिगचक्खु तिचक्खु छउमत्थेणं मणुस्सएएगचक्खु देवेबि चक्खु तहारूवेसमणेवा माहणेवा उप्पन्ननाणदंसणधरेसेणं तिचक्खुत्तिवत्तव्वंसिया तिविहे अभिसमागमे पंतं उड्ढं अहे तिरियं जयाणंतहारूवस्स समणस्सवार अतिसेसणाणदंसणे समुप्पज्जति सेणंतप्पढमताएउड्ढमभिसमेति ततोतिरियं ततोपच्छाअहे अहोलोएणंदु

वसुइजिकेहीयइ॥ठाइ॥ज्ञाननइछाकइतेज्ञानावरणादितिहांउरइ॥तेछद्मस्थतेयद्यपिकेवलीबितरवसर्व॥ सेषापिइहां अतिसयवंतश्रुतज्ञानादिवर्जितलेवो॥चक्षुइंज्ञानीअपेक्षाइएकचक्षु॥चक्षुअनइअवधिनीअपेक्षाइ बेचक्षु॥अपवुज ज्ञानआश्चर्यनिइहत्यावसमइ॥श्रुतावधिरूप॥दर्सनअवधिरूपउधरइतेउत्पन्नज्ञानदर्सननोधरणहारतेत्रिचक्षु॥एक ओथि।एकपरमश्रुत।एकअवधि॥सेणंति॥तेत्रिचक्षुएहवुंबोलिवुं॥तेस्याज्ञानतुमोपरिइं॥हवोपादेयवस्तुदेषइ॥केवल ज्ञानदर्सनरूपचक्षुनइसंसवअनइपणिचक्षुइंडीनाउपयानइअनावइ।कहइछइ॥अति॥त्रिचक्षुनकहीय॥द्रव्यइं द्रीनीअपेक्षाइकहइतांविरूदपणिनही॥चक्षुवंतकहइतिहमइमनज्ञानकहइ॥तेहदर्सननइविनागइकहइछइ॥अति॥स नमुल्लखएकरापणिविपर्यासपणि।हो॥अ॥मर्यादाइ॥गम॥वस्तुनुंजाणपणुंतेअभिसमागम॥कथाण॥ ६७

जिवारि॥छद्मस्थनइज्ञानातहनइअतिक्रम्योतेअतिशायज्ञानदर्सनिपरमावधिरूपएहवुंसंजावीछइ।जेतेणीकव लज्ञाननउतेअनुक्रमइंउपजेंगनथी।समकालिउपजोगछइ॥अनइएहनउतोअनुक्रमइकहस्यइतेणी॥तप्प ढम॥पाहिलुतोऊर्धलोकजाणइ॥तिवारपछीतिरछउ॥तिवारपछीअधोलोकजाणइ॥अहोलोगेणंदुरिति॥अधोलोक कनुंजाणवुंदोहिलुंछइ।तेजाणपछइजाणिउ॥अतिसमागमतेतउज्ञानअनइज्ञाननउछिमाहिइंहांकहस्यइअनइस धिनासराधापणमाटइएछिनासेदकहइछइ॥सूत्र॥देवेंद्र॥इंद्रादिकनुंजेऐश्वर्यपणुंतेद्विऋद्धि॥चक्रवर्तिनी॥तु

रतिगामपन्नते समणाउसो तिविधाइड्ढी पंतं देविड्ढी राइड्ढी गणिड्ढी तिविधे देविड्ढी तिवि हे पंतं विमाणिड्ढी विगुव्विणिड्ढी परियारणिड्ढी अहवा देविड्ढी तिविहा पंतं सचित्ता अचि त्ता मीसिता राइड्ढी तिविधा पंतं रन्नोअतियाणिड्ढी रन्नोरज्जाणिड्ढी रन्नोबलवाहणकोसकोठागा रिड्ढी अहवाराइड्ढी तिविधा पंतं सचित्ता अचित्ता मीसिता गणिड्ढी तिविहा पंतं णाणिड्ढी

कराईतेराजऋद्धि॥गणनायकनीभ्रुकुराईतेगणिद्धी।तेआचार्यनीऋद्धि॥उपलक्षणथीसवनपतिनीसवनवाणवितरना नगरकहिवा॥विकुर्वणारूद्धितेजेवैक्रियसरीरइंकरीजेबुद्धीपअथवाअसंख्यातादीपसमुद्रभरइं॥तेविकुर्वणारूद्धि ॥एतलीसक्तिछइपणिअसंख्यातासरइनही॥अनेरादेवतानइअनेरीदेवीनइपोतानीदेवीनइएत्रिणनइविसकरीतो गवइतेपरियारणाऋद्धि॥सचित्तेपोतानुंसरीर॥अग्रमहिष्याआदि॥अचित्तेवस्त्राभरणादि॥मिश्रतेशृंगा रादेवीआदि॥नगरमाहिआवतांतोरणधुजालाटसोसजनसमुदायादिरूपतेअतियानऋद्धि॥नगरथीनीसरिवुंनीकल नोइस्यामइशृंगारिवुं॥सामनपरिवारादिकातनिर्याणऋद्धि॥बल॥कटक॥वाहन॥सुखसरादि॥कोस॥भंडार॥कोठाग रतेधननोकोठार॥गणऋद्धि॥सचित्तादिदववेत॥ज्ञानऋद्धितेश्रुतसंपदाज्ञाननीसंपदा॥दर्शनऋद्धितेनिःसं कितादि॥अथवाप्रवचनप्रभावकसास्त्रनीसंपदातेदर्शनऋद्धि॥चारित्रऋद्धितेनिरतीचारपणुं॥सचित्ततेशिष्यादिक अचित्ततेवस्त्रादि॥मिश्रतेउपगरणसहितमइ विकुर्वणाऋद्धितेउग्रतेराजइपणिछइ॥पणिदेवतानइदेव

सिपछइ॥ तेसलो।दवनानइकर्हो॥ स्त्रिद्ध ऋद्धिछतिहू गौरवाइ॥ तेसणौतहना लेदकहइछइ॥ गौरव०॥ तारीपरातइ
व्यवकोवज्ञादिक॥ सावधकोअभिमानलोसलद्दोग।राजादिकनीपूजलाइकरी।अथवा आचार्यादिकइकरी अभिमानतेऋद्धि
गौरव॥ ऋद्धि पामिइंअभिमान॥ अभिष्यमिइनीप्रार्थनानइद्वारइकरी आत्मानइ आत्मानइ अशुलपरिणामतेगौरव तेऋद्धिगौ
रव॥ रसगारवतेरसइंद्रीनुंअर्थमधुरादिक॥ साया०॥ सुखअथवाशय्यादिकनइविषइआहारतेगारव॥ एअनंतरत्रिणचारित्रनेक
हिकही॥ तेचारित्रितकरणाइ।तेसणौतहनालेदकइछइ॥ करण०॥ अनुष्ठान।संजतीनुंअनुष्ठानतधर्मिक॥ बीजुं मिथ्यात्वनु
त्रीजुं श्रावकनइ॥ धर्मनइविषइ छइ जे ते धार्मिक।जेहनुं अनुष्ठानखुं कलधर्मछइ।तेधार्मिक अ॥ अनंतरधर्मकरणकहिउ ते
धर्मइंजिवइ तेसणौतहनालेदकहइछइ॥ लगवता०महावीरिइंधर्मकहिउ॥ इमसुधर्मिस्वामीजंबुप्रतिइंकहइछइ॥ सु

दंसणेदीवरित्तिदीअट्ठवागणिहितितिविहापं तं सचित्ता अचित्ता मीसिता ततो गारवा पं
तं इड्ढीगारवे रसगारवे सायागारवे तिविधकरणे पं तं धम्मितकरणे अधम्मिएकरणे धम्माध
म्मिएकरणे धम्मिताकरणे तिविहे लगवताधम्मे पं तं सुअधिज्झिते सुज्झातिते सुतवस्सिते जया
सुअधिज्झियं लवति तया सुज्झातितं लवति जया सुज्झातितं लवति तदा सुतवस्सितं लवति सेसु
अधिज्झिते सुज्झाते सुतवस्सिते सुतक्खाते णं लगवता धम्मे पन्नत्ते

सुअहिज्झिए॰ काव विनयादिआराधनाइंकरीमहगुरुनइसमीपिइंसूत्रथकीकरउभणिउं॥ तसुधर्त॥ सुज्झाई॥ रुडीवधिइंकरी॥
अर्थघोसांसलोचींततिउं॥ तेसुध्यानचीतवुबारूपध्याननइअलावइ।तवनुंआराधनमहोइ॥ त॰ यना आण विना तलवुसा
नलवुनिफल॥ एणाइबेरुडांछिइ करुधर्मकहिउं॥ सुतवस्सि॰॥ रुडउंइहलोकादिवांछारहितपनइविषइअनुष्ठांनलेका
धुं।तेसुतपस्वितं।एचारित्रधर्मकहिउं॥ जयासुअहिज्झिए॰ जिवारिइंरुडुं लणुंहुइ।तिवारिइंरुडुंध्यायंहुइ॥ अनइजिवारइंरुं
ध्यायुंहुइ॥ तिवारइंरुडुंतपिउंहुइ॥ जेसणौरुडालणवाविनारुडाअर्थनहुइ॥ अनइरुडाअर्थविनारुडुंध्यायुंनहोइ॥
अनइरुडाध्यानविनारुडुंनेपिउंनहुइ॥ सुयक्खाए णं॰॥ रुडुंलणुंरुडउंध्यायुंरुडुंतपिउंएधर्मलगवंतिरुडोकहिउं॥ स
म्यग्ज्ञानक्रियापणासकी।ज्ञानक्रियाएकांतकअत्यंतिक॥ सु॰ सुधर्माजयायपणइकरी।नइरुडुंगतिनाधारजायकोध
र्म॥

सुतपस्वी॥ तेचारित्रीउं तेतोअणुव्रतादिलिंगइतिकहुइ।तेसणौतहनालेदकहइछइ॥ तिविहावावत्ती॰॥ निवर्त्तिउं
हिंसादिकथी॥ जाणु॰ हिंसादिकनुंफलजाणतोनिवर्त्तिइंतेजाणु॥ अजाणतोनिवर्त्तइंतेअजाणु॥ संसयसहितनिवर्त्तइं
तेविकृत्सा॥ हिंसादिथीनिवर्त्तवुंअनुचारित्रथकी॥ तिचारित्रनोरखवुंविपक्षकहइछइ॥ अझोववकुल०॥ कोइएकइं
याधिनइविषइपुरुविवऋ॥ तिहांजे विषयनाविपाकजाणतोउसंगकरइ तेजाणु॥ संसयसहितसंगतिकरइ ते
विकृत्सा॥ परियावज्जणा॰॥ परआसवेते॰॥ पर्यापतिआसेवातेइमइज॥ तोकाइएकइंद्रीयार्थासेवइ॥ विपाकजाण
णातोअवर्ततेजाणु॰ इमत्रिणइ॥ जाणुअजाणुतेतोज्ञानीकहिउ॥ ज्ञानीतेउज्ञानथकीहुइ॥ तेसणौतहनालेदकहइछइ
अंत॰॥ ज्ञान॰ लोगंतते॰ लोकेसास्त्रतेअर्थत्रिपाईवीनोजेसास्त्रतेथकीतेनिर्णयअथवातेहनोपरमरहसअथवातेहनो
पर्यंतितेलोकांते॥ इमवेदांततेवेदथकीजेनिर्णयतेअथवावेदनोपरमरहस्सअथवावेदनोपर्यंततेवेदांत॥ समानि

तिविधावावत्ती पं तं जाणु अजाणु वितिगिच्छा एवमज्झोवज्जणा परियावज्जणा तिविधे अंत
पन्नत्ते लोगंते वियंते समयंते ततो जिणा पं तं उहिनाणजिणे मणपज्जवनाणजिणे
केवलनाणजिणे ततो केवली पं तं उहिनाणकेवली मणपज्जवनाणकेवली केवलनाणकेव
ली ततो अरहा पं तं उहिनाणअरहा मणपज्जवनाणअरहा केवलनाणअरहा ततो लेसाउ

इमसिद्धांत॥ अनेसमसिद्धांतकहिउं॥ सिद्धांततोजिनादिकनोभाष्योसम्यग्हुइ॥ तेसणौतेहनालेदकहइछइ॥ सूत्र ३
रागद्वेषमोहनइजीतइ तेजिनसर्वज्ञ॥ उहि॰॥ जिमनोपरिइनिश्चइप्रत्यक्षज्ञानपणाइंवर्त्तइं॥ तेपणिजिन॥ अवधिज्ञा
नसहितजिनतेअवधिज्ञानजिन॥ इमआगल्याबेहुइ॥ धुरिलाबेहुतेजिननीउपमाजिछइ॥ पणिकेवलीजिनतेसा
चोजिन॥ केवल॰॥ एककअथवाअनेत।अथवापुरुज्ञानछइजेहनइ तेकेवली॥ उहिनाणके॰॥ केवलीनीपरिइंनि
श्चयप्रत्यक्षज्ञानपणाइंवर्त्तइं॥ तेपणिकेवली॥ अवधिज्ञानसहितवेवली तेअवधिकेवली॥ सप्तमोजिनवत॥ तेउअ
रहा॥ देवादिकपुजानइयोग्यथाइतेअरिहंत॥ अरह॰॥ बेहुजिननइकोइनिर्णीतअर्थ॥ समंप्राप्तवंत॥ लेश्याप
तिहोइ॥ तेसणौलेस्याकहइछइ॥ तउलेसाउ॥ दुर्लिंगंधातेलेस्यापुद्गलमयछइअनइउगंधिदुर्जलइनीपणीले

स्या तेऊ र्त्तिगंधा॥ अनइ पुद्गलनइ विषइ अवस्य गंधा हुइ छइ॥ ज॰ गो॰ मृ॰ इ॰ इस्य गंधमे इत्यादि॥ कण्ह ले॰॥ कापोत नाम रिषो
वर्ण तेह कापोतलेसा॥ दु[ब्भि]गं॰॥ सुरभिगंधे॰॥ अहो॰ ४॥ अहा सुरहि कुसुम गंधमे॥ १॥ तेउ॰॥ अग्नि ईत तिहि मानस रिषो तेह
नो वर्ण तेह तेउलेस्या लोहित वर्ण इत्यर्थः॥ पद्म गर्भ वर्ण गर्भ इं लेस्या तेह पद्मलेस्या। पीतवर्ण इत्यर्थः॥ सुक्ला प्रतीता॥ दुगति॰
नरगति तिर्यंच नी पोहोचाडण हारी॥ सुगति॰॥ मनुष्य देवगति नी पुहोचाडण हारी॥ संकिलेठा॥ संक्लेस नु हेतु॥ अमणु॰॥ अम
नोहर रस सहित पुद्गल मय नी पनी॥ तेह अमनोहा॥ अविसुद्ध॥ वर्णथकी अस्वाद॥ अप्पसत्था॰॥ अयोग्य तेह अश्रेयकारणी॥
धुरिली त्रिणि तेह सीता। रूक्ष स्पर्शथकी॥ ऊपली त्रिणि स्निग्ध उष्ण स्पर्श थकी॥ हिवइ॥ हिवइ लेस्या इं विसेष जे मरण कहइ
छइ॥ सूत्र अविरति ना वि विक विकल पणाथकी बाल अज्ञानी परिइं। प्रवर्तइ तेह असंयत तेहनुं मरण ते बाल मरण॥
दुब्भिगंधाओ पं॰ तं॰ कण्हलेसा। नीललेसा। काउलेसा। तेउलेसा। सुब्भिगंधाओ तओ पं॰ तं॰ तेउ पम्ह सु
क्कलेसा। एवं दोग्गतिगामिणीए। सोगतिगामिणीओ। संकिलिट्ठाओ। असंकिलिट्ठाओ। अमणुन्नाओ।
मणुन्नाओ। अविसुद्धाओ। विसुद्धाओ। अप्पसत्थाओ। पसत्थाओ सीतलुक्खाओ। णिद्धुण्हाओ। तिविहे मरणे। पं॰ तं॰।
बालमरणे। पंडियमरणे। बालपंडियमरणे। बालमरणे तिविहे। पं॰ तं॰ ठितलेसे। संकिलिट्ठलेसे।
पज्जवजातलेस्से। पंडियमरणे तिविहे पं॰ तं॰ ठितलेस्से। असंकिलिट्ठलेस्से। पज्जवजातलेस्से।
विरति पणा इं करी तेहनो जाण। ते पंडित संयत तेहनुं मरण ते पंडितमरण॥ बाल पंडित ते संजतासंजत तेहनुं मरण ते
बाल पंडित मरण॥ ठियलेस्से॰॥ अविसुद्ध पणा थकी स्थिर लेस्या॥ संकिलिट्ठलेसे॰॥ संक्लिष्ट॰॥ लेस पामी ते लेस्या जे
हनइ॥ पज्जवजातलेस्से॰॥ विसुद्ध विसेष प्रति समय ऊपनी छइ जेहनइ विषइ। ते पर्यव जात लेस्या ते निर्मलाई इ वाध
ती इत्यर्थः। कृष्णा दि लेस्या नो धणी कृष्णादि लेस्या ना नारकादि विषइ। ऊपजइ। ते पहिलो॥ अनइ ज्यै नीलादि ले
स्या नउ। कृष्णलेस्या विषइ ऊपजइ ते बीजो॥ ज्यै पुण कृष्णादि लेस्या नउ छतउ कापोत लेस्या नइ विषइ ऊप
जइ ते त्रीजो॥ ठियले॰॥ जे णी लेस्याइं ऊपजइ ते णी लेस्याइं ऊपजइ ते॥ असंकिलेस॥ संजत पणा माटइ॥ संक्लिस्य
मान लेस्या न होइ॥ ७२
बाल पंडित मरण विषइ॥ संक्लिस्यमान पणुं अनइ विसुद्धमान पणुं नथी॥ मिश्र पणा थकी एहि तेस ब॰॥ पंडित मरण नइं सं
क्लिश्यमान नथी। वर्द्धमान नथी। ते सणी अमार्ग थकी विशेष न होइ॥ ओ जो नाइं ऊपदेस मात्र कहि उं छइ॥ बाल पंडित विषइ धुरि
लउं अने बीजो छइ॥ आगल्या बेहु ऊपदेस मात्र इ ज जाणवा॥ मरण कह्यं॥ मुया पछी थाइ ते कहइ छइ॥ अपज्जवसियस्स॥
अऊद्यम वंत घी॥ अनिश्चयवंत। ते अविरत नइ॥ अहि॰॥ अपथ्य सरणी॥ असु॰॥ दुख॰॥ असुख कारणी॥ अनि॰॥ अमा क्षसरणी॥ अ
बालपंडितमरणे तिविहे। पं॰ तं॰ ठितलेस्से। असंकिलिट्ठलेस्से। अपज्जवजातलेसे। तओ ठाणा अपज्जव
सितस्स। अहिताते। असुभाते। अखमाते। अणिस्सेसाते। अणाणुगामियत्ताते भवंति। तं॰ से णं मुंडे
भवित्ता। आगाराओ अणगारियं पव्वतिते। णिग्गंथे पावयणे संकिते। कंखिते। वितिगिंछिते। भेद
समावन्ने। कलुससमावन्ने। णिग्गंथं पावयणं णो सद्दहंति। णो पत्तियति। णो रोएति। तं परिस्सहा अभि
जुंजिय २ अभिभवंति। णो से परिस्सहे अभिजुंजिय २ अभिभवइ। से णं मुंडे भवित्ता। आगाराओ अण
गारियं पव्वतिते। पंचहिं महव्वएहिं संकिते जाव कलुससमावन्ने। पंचमहव्वताइं नो सद्दहति जाव णो
से परिस्सहे अभिजुंजिय २ अभिभवति। से णं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वतिते छहिं
जीवनिकाएहिं जाव अभिभवइ ३। तओ ठाणा ववसितस्स हिताते जाव आणुगामियत्ताए भवंति तं॰
णाणु॰॥ असुभानुबंध सरणी॥ निग्गंथे॰॥ जिनसासन विषइ॥ पा॰॥ प्रसस्त वचन॥ अथवा॥ प्रथम वचन ते प्रवचन ते आगम ते
हनइ विषइ॥ संकिए॰॥ संकासहित॥ कांक्षित ते मतांतर विषइं साभिप्राय मानइ॥ वितिगिछिए॰॥ फल प्रति संदेह॥ भेदस
मा॰॥ ते भेद पामी ते बिकट का थया॥ ऊ एम ए कइ छोटकं॥ कलुष भाव पामइ॥ ए नहीं॥ सद्दहइ नहीं॥ णो पतिए॰॥ प्रतीत नहीं॥ नो रो
इति॰॥ करवा नवी छइ॥ तेह नइ परिसहो॥ अभिजुं॰॥ संबंध करी नइ अथवा धास ले नवी नइ परिभवइ॥ पणि ते परीसहा नइ पर सवा
न सकइ॥ ववसियस्स॥ उद्यम वंत नइ॥ तथा निश्चयवंत नइ॥ हित उं॥ आराधक ए इह लोकि परलोकि पथ्यान तो जेनवत॥ सु
ख॰॥ श्रीएतस्य हटहट जे पाणी तिम॥ खमा॰॥ न्याय पणा भल्या विघातक॥ ऊपथ्य पा ॥ निश्रेयस॰॥ निश्चित श्रेय

प्रसस्यं ना वघ्यको श्रेय:॥ पंचनमस्कारनीप रिइं॥ श्रा णु०॥ केडि इम्रा विवानुस्ख तावकइ लहइ तो वस्तुना तेहनीपरिइं
डिमर नतवादीवअहा धिइ तदू तेजमा लुश्रावइ॥ एहव उसगंध ताता पघवा मा दिहोइ। तेलगो प्रघवीनुं स्वस्य कहइ छइ
एगा मगा०॥ एकेको प्रघवी रत्नप्रनादि त्रिणि वलय केरी॥ सव्व उ॰ क॰ दि सिइं॥ समंता॰॥ विदिसिइं॥ सं॰॥ वीटी छे
इ माहि लोवलय ते घनोदधी॥ बीजा अनुक्रमइ॥ घणा॰॥ घाणु हिम सिलानीपरि॥ उदधि॰॥ जलनो समुद्र॥ वलय॰॥
कांकणनीपरि ते घनोदधीवलय॥ इम घनवात तेश्राकरोवायइ॥ तनुवाय ते पातलो वाय॥ त्रिविइं वलइ करि वि प्रघवी रक्षी
कथ उइ ते विघक दृइ छइ॥ नारकीनइ त्रिणि समयनी वाकी गाति कूपजइ॥ अनइ त्रसनइ त्रसादिकमाहि इंक्रूनु डुइ

ससणं मुंडेभवित्ता आगारातो अणगारियं पव्वतितए णो ग्रांथं पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए
जाव नो कलुससमावन्ने निग्गंथं पावयणं सद्दहति पत्तियति रोएति से परिस्सहे अभिभुंजिय
२ अभिभवति नो तं परिस्सहे अभिभुंजिय २ अभिभवंति से णं मुंडे भवित्ता आगारातो अणगारि
यं पव्वतितए समाणे पंचहिं महव्वतेहिं णिस्संकिते जाव परिस्सहे अभिभुंजिय २ अभिभवति
नो तं परिस्सहा अभिभुंजिय २ अभिभवति से णं मुंडे भवित्ता आगारातो अणगारियं पव्वइए
छहिं जीवनिकाएहिं णिस्संकिते जाव परिस्सहे अभिभुंजिय २ अभिभवति नो तं परिस्सहा अभि
भुंजिय २ अभिभवंति एगामेगा णं पुढवी तिहिं वलएहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता तं घणो
दधिवलएणं घणवातवलतेणं तणुवायवलएणं णेरइयाणं उक्कोसेणं तिसमतितेणं विग्ग
हेणं उववज्जंति एगिंदियवज्जं। तां वेवां कातिहां त्रिणि समय लागइ॥ तथाहि॥ अहो ऊर्ध्वं प्रघउएक इ समइं निरति ऊं
णिश्रावइ। बीजइ समइ तिर्हां थको॥ समश्रेणिइं त्हैलो जाइ॥ तिवार पछी तिहां थको॥ सम श्रेणिइ वायुकीणि जाइ॥ त्रसनइ त्रस ७२
माहि जपजा तां त्रिणि समयनो विग्रह ऊतलहोइ सवाइ॥ एकिंद्री जे छइ तेपांचसमयनाविग्रह माटइं तेइम पहिलइ समइ॥

त्रसनाडिनी बाहिरि घको विदिसिनी दिसिइ आवइ॥ बीजइ समय त्रसनाडीमाहि पइसइ। त्रीजइ समयइं ऊर्ध्व जाइ॥ चउथइ
समइं बाहिरि जाइ॥ पांचमइ समइ विदिसिइ जाइ ति हइ ऊपजइ॥ इपांच समयनो तनु मंसनइ छइ पणि भगवतीमाहि च्यारि
समयनो विग्रह कहिउ छइ॥ ते मतमांनी विदिसि थकउ ऊर्ध्व लोकनी विदिसिइं ऊपजइ ते हनइ पांच समय थाइ॥ ए
पांचसमयथता इ ए जुचउ समय कह्या ते वाऊ लोप [illegible] पणा माटइ॥ एमोहनीतनइं त्रिणि स्थानक कह्या॥ हिवइ नीलामो
हनइ कहइ छइ॥ क्षीणमोही अरिहंतनइं त्रिणि कर्मंसि तेकर्म प्रकृति॥ उगवंत्ति॰॥ समकालिइ क्षेपवइ॥ ए कहइ नाणाव

जावखमातियाणं खीणमोहस्स णं अरहतो ततो कम्मंसा जुगवं खिज्जंति तं नाणावरणिज्जं दं
सणावरणिज्जं अंतराइयं मघाणक्खत्ते तितारे पं॰ एवं सवणे अस्सिणी भरणी मगसिर
पुस्स जेट्ठा धम्मातो णं अरहाओ संती अरिहा तिहिं सागरोवमेहिं तिचउप्पाग पलिउवमऊ
णा तेहिंवतिक्कंतेहिं समुप्पन्ने समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जाव तच्चाओ पुरिसजुगाओ जु
गंतकरभूमी मल्ली णं अरहा तिहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवित्ता जाव पव्वतितते एवं पासे वि स
मणस्स णं भगवओ महावीरस्स तिन्नि सया चउद्दसपुव्वीणं अजिणा जिणसंकासा णं सव्वक्खर

रणं॥ पंचवि हे दंसणावरणं चक्षु विगयो॥ पुंचे विहमं तराय। त्रिवइल्ला केवली हुइ॥ एअसास्वता नौस्थान कप लुंक ढिऊं
हवइ सास्वता नुंक हइ छइ॥ चुत्र॰॥ अभिइनरकात्तइ त्यादि॥ परं परसुत्र इ हीणमोही नुं त्रिस्थानक पलुं कहिउं॥ हिव
इ जलाइ विसेषिइंनी थंकरनुं कहइ छइ॥ धम्मा उणं॰॥ पोणाइत्ल्योपम ऊणा इ त्रिणि सागरोपमिइं ऊपना॥ नच्चा॰
॰॥ श्रीवीर सुधर्मस्वामि॥ जंबुस्वामि लगइ इत्यर्थः॥ जुग॰॥ पुरुष जुगमी आपर्या इ॥ अंतकर॰॥ मोक्षगांमीनव॥ भूमि॰॥ का
लते जुगंतकरभूमी॥ अजिणा णं॰॥ सकल संसय छेदक पणाइं करीनइ अस बहि। पणि सर्वज्ञ नथी॥ स॰॥ सघ
लो अक्षरना॥ [illegible]

सन्निपात०॥ संयोगवंत सर्वसास्त्रना जाणाई तेहथी ॥ जिणाई वि०॥ जिननीपरि अवितथ अविपरीत बोलता ॥ चक्कवट्टी०॥ संती
॥ कुंथु अर इत्यादि ॥ तीर्थंकर तउ विमानथकी कथई तेह सर्व विमानमुं स्वरूप कहीइ छइ ॥ लोकपुरुषना गला स्थान किईं
अपना ग्रैवेयकनइं विमान नाथाथडा ०॥ रचना ग्रैवेयकना देवतानउं तेह मध्य यो गइ थया ते मारइ कमनुं स्वरूप कहइ छइ

सन्निवातीणं जिणा इव अवितहवागरमाणाणं उक्कोसिया चोद्दसपुव्विसंपया हुत्था। ततो तित्थ
यरा चक्कवट्टी होत्था। तंजहा। संती कुंथु अरो। ततो गेविज्ज विमाणपत्थडा पं० तं० हेट्ठिमगेवेज्ज वि
माणपत्थडे। मज्झिमगविज्ज विमाणपत्थडे। उवरिमगविज्ज विमाणपत्थडे। हेट्ठिमगविज्ज विमा
णपत्थडे तिविधे पं० तं०। हेट्ठिमहेट्ठिमगविज्ज विमाणपत्थडे। हेट्ठिममज्झिमगविज्ज विमाणपत्थडे।
हेट्ठिमउवरिमगविज्ज विमाणपत्थडे॥ मज्झिमगविज्ज विमाणपत्थडे तिविधे पं० तं०। मज्झिमहे
ट्ठिमगविज्ज विमाणपत्थडे। मज्झिममज्झिमगविज्ज विमाणपत्थडे। मज्झिमउवरिमगविज्ज विमाणप
त्थडे। उवरिमगविज्ज विमाणपत्थडे तिविधे पं० तं०। उवरिमहेट्ठिमगे०। उवरिममज्झिमग०। उवरिमउवरिम
गविज्ज विमाणपत्थडे। जीवा णं तिट्ठाणनिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताते चिणिंसु वा चिणंति वा
चिणिस्संति वा। तं इत्थिणिव्वत्तिते पुरिसनिव्वत्तिते णपुंसगणिव्वत्तिते। एवं चिण उवचिण बं
ध उदीर वेद तह णिज्जरा चेव। तिपदेसिता खंधा अणंता पन्नत्ता। एवं जाव तिगुणलुक्खा पोग्गला अ
णंता॥ ति ठाणं समत्तं॥३॥ तिट्ठाणनिव्वत्तिए०॥ त्रिणि स्थानकनां कर्यां पुद्गल पापकर्मपणइ॥ चिणिंसु०॥ संकल्पा॥ चि
णंति॥ उवचिणिंसु०॥ पोष्या॥ बंध०॥ बांध्यां निमाप्या। नीपाया॥ उदीर०॥ उदीरयां ते अध्यवसायमइ विषइं आणी उदइ नाक
ट्यां मइ विपाक पइसाणयां॥ वेद्या०॥ भोगव्या॥ निर्जरयां ते प्रदेसथकी परहयां॥ कर्मतउ पुद्गलमय छइ तिसणीं कहइ छइ
तिठाणं समत्तं ३॥ अ०॥ त्रीहिला अध्ययनइं विसलइ सूत्रइं कर्मचिणवादिक कहिउं॥ ईहां नइं अंतकरिवानुं स्वरूप कहइ छइ॥ ॥

डाक्टर भाऊदाजी ... MEMORIAL

अंतकिरिया०॥ भवनो अंतकरवो॥ तिहां खलु अ वाक्यालंकारिइं॥ एपहिली अंतकिरिया॥ कोइक पुरुष देवलोकादिकनइ विषइ ऊई
थोडइ कर्मइं करी॥ पच्चायाया विसं०॥ मनुष्यपणइ आव्यो एतलइ सुकर्म ऊपनउ॥ सेणं०॥ उम्मयथकी तेतलो चककरि वडा
थयकी रागादि यालिवइं मुंडथइ नइ॥ आगार०॥ घुअइं घरथकी नावइं अविविक घरथकी॥ अणगारपणा मइ॥ पव्वइत्ते०॥
पुक्तउ॥ संयमबहुल प्रथम्यादि रक्षणपरई हनइ॥ संवर०॥ आश्रवनिरोध अथवा इंद्री कषायनो निग्रह॥ संवरतोसं
यमइ ज्ञेयइ। पणि संयम अलगो कहिउ॥ तजीवदयाछइ॥ प्रधानछइ तेऊणा वानइ॥ यतः॥ एगंचिय एत्थ वयं॥ निद्दिट्ठं जिणव

चत्तारि अंतकिरियाउ पं० तं०। तत्थ खलु इमा पढमा अंतकिरिया अप्पकम्मपच्चायाते यावि भवति। से णं मुंडे भ
वित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वतिते संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले लूहे तीरट्ठी उ
वहाणवं दुक्खक्खवे तवस्सी तस्स णं णो तहप्पगारे तवे भवति णो तहप्पगारा वेयणा भवति। तहप्प
गारे पुरिसजाते दीहेणं परियाएणं सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाति सव्वदुक्खाणमंतं कर
ति जहा से भरहे राया चाउरंतचक्कवट्टी पढमा अंतकिरिया। अहावरा दोच्चा अंतकिरिया महाकम्म

रहिं सव्वहिं॥ पाणाइवाय वेरमण॥ भवासेसा तस्सूरस्कदा॥ १॥ संयमसंवरइ बहुउ पसमम विसेषथकी ऊइ तत्रणी तकहइ छइ॥
समाहि०॥ उपसम अथवा ज्ञानादिक॥ रुक्खो०॥ निःस्नेहानइ रूक्ष तेसणी तकहइ छइ॥ लूहे०॥ सरीरमई विषइ अनइ मननइ विष
इ दुर्गंधा कोइं करहितपणाइं करी निहर अथवा॥ तारकई०॥ कर्ममल नइलुं रहतलुं थो। एहवउ किम थाइ तेकहइ छइ॥ तीरट्ठी०॥ सा
वसमुद्रपारनउ प्राथैला हार अथवा भवसमुद्रनापारनउ रहिलाहार॥ अथवा भवसमुद्रनइ पारि रहिवइ जेहनइ॥ उवहाण०॥ सिद्धां
तनो आधार तेउ सोग॥ थसणी ते जोगइं करी। मझीतस्णी इतिग्यागवंत॥ दुक्खक्खए०॥ दुःखनुं कारण कर्म अथवा दुःख तेहनउ खपवण
हार तेत विकरी खपवाइ तेतणी तकहइ छइ॥ तपस्वी०॥ अभ्यंतर कर्म इंधणनइ बालिवानइ अगिसरीखउ॥ निरंतर सुसध्यानछइ जे
हमइ तत॥ तस्स णं०॥ नो तवे र०॥ तेहनइ तथा प्रकारनउ॥ अत्यंत घोर वर्द्धमानस्वामीना सरीखउ अत्यंत तप महीं॥ वेदनादिक उपस
र्गनहीं॥ पर्व्वी॥ पुरि०॥ पुरुषनो प्रकार॥ दीह०॥ घणकालनइ चारित्रइ सीझइ॥ निष्ठितार्थथाई॥ अथवा सिद्धिगमन जोग्यथाई॥
बुज्झति०॥ बुध्यति॥ घातीकर्मनइ क्षयइ समस्तवस्तुजाणइ॥ मुच्चइ०॥ सर्वोपग्राही कर्म थकी मुकाइ॥ परिनि०॥ कर्मकृत विकार टालवइ
टाढउ थाइ॥ सव्वदु०॥ सारीरीमानसी दुःखनउ अंतकरइ॥

ठाणा० ४

जहा स० ॥ पुर्वदिक्षाणाया श्रीभरतथकी अनइ । हेमवंतपर्वतरूपभारे अंतकरइ त्यइ पृथवीनो तेहनो जधर्णोतं चाउरंत० ॥ सर्वा धीसिधथकी आवीरा जाय पणइ केवलपामिउं ॥ तपा वेदना पण्हवी नहवी ॥ लघुकर्मी पाछिलइ भवइ तेमाटइ ॥ १ ॥ अहाव० अथ अपरि बिवइ बीजी ॥ महाकम्म० भारेकर्मपणइ ऊपनउ ॥ महाकर्मरिव पवानइ ॥ तहप्पगारे० घोरतप ॥ घोर वेदना ऊपसर्ग दिनी होइ ॥ निरुद्धे० ॥ थोडा कालनइ वारि अइसी ऊ । जिमतेग जसुकुमालस मशानिका ऊसर्ग करिउ एकरूप

पच्चायाते तया वि भवति । से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वतिते संजमबहुले संवरबहुले जाव उवहाणवं दुक्खक्खवे तवस्सी तस्स णं तहप्पगारे तवे भवति तहप्पगारा वेयणा भवति तहप्पगारे पुरिसजाते निरुद्धेणं परियाएणं सिज्झति जाव अंतं करेति जहा से गयसुकुमाले अणगारे दोच्चा अंतकिरिया ॥ २ ॥ अहावरा तच्चा अंतकिरिया महाकम्मपच्चायाते यावि भवति से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वतिते जहा दोच्चा नवरं दीहेणं परियाएणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेति जहा से सणंकुमारे राया चाउरंतचक्कवट्टी तच्चा अंतकिरिया अहावरा चउत्था अंतकिरिया अप्पकम्मपच्चायाते या वि भवति से णं मुंडे भवित्ता जाव पव्वतिते संजमबहुले जाव तस्स णं णो तहप्पगारे तवे भवति णो तहप्पगारा वेयणा भवति तहप्पगारे पुरिसजाते निरुद्धेणं परियाएणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेति जहा सा मरुदेवी भगवती चउत्था अंतकिरिया ॥ चत्तारि रुक्खा पं० तं० उन्नए नाम

महा तप सिरा छिति ता कलप मांन अंगार ऊपजा वी वेदना सही थोडइ कालइ सीधो ॥ ए बीजी अंतकिरिया ॥ २ ॥ महा वेदना सराग पणा माटइ ॥ दीहे णं० दीर्घतर भव पर्याइ सीधो ॥ ३ ॥ सवीर पणानइ विषइ जीणा पाइ । कर्मपणइ करी अल्पकर्म नहीं विद्यमान तपो वेदनाव ॥ गजाकु टबी सीधी ॥ ऊं० ॥ आऊषानी समाप्ति सीधी तेतलो तप वेदना नही ॥ ४ ॥ ए पूर्वोक्त दृष्टांत अनेहा दृष्टांतक कह्या ॥ तेम घला समिन्ना नही ॥ दस घका सरिखाई उत्तर तो भरुदेव्या नइ मुंडि इत्ववि न्ना ॥ तेइ वस घकानधा ॥ सावध कीछइ । तत लादि सघका सरिखाई तेथा थावरा पाव विसेष अथवा फल घकी सपत्तइ पात मितइ भूत तत लामुडा सवि तोइ त्या दिनु फल ७४

३ ठाम थाजे परव करात थानालो ठे० ४

मो क्षा तेता मरुदेव्याई सांधी ॥ ए बुरूप विसवनइ अनकि रियाकही ॥ हिवइ तेहनी उसरूप दृष्टांत दृष्टांतइ कहइ करीकहइ छइ सुत्र २६ ॥ रुखा० ॥ द्रव्य विक्षेतो गाछ कही सपइ ॥ उन्नए० ॥ एक द्रव्य थिवइ तेह ऊबउत्ता वइ ऊं चउतउ असोकादि ॥ एक द्रव्यइ अंबउ ॥ तावइ तेजा त्यादिक इही ताते लिंबादि ॥ अनइ एक द्रव्यथकी नीचउ अनइ तेहइ जात्यादिता विइ ऊंचउ असोकादि ॥ एकद्रव्यइ नीचउ ॥ अनइ जात्यादिना वइ पणि हीणा लिंबादि ॥ इति चउभंग ॥ अथवा पुर्वि इऊं चउहुतो ॥ हि परंउ कइ हारिउ ४

उन्नते णामं एगे उन्नते उन्नते नाम एगे पणते पणते नाम एगे उन्नते पणते नाम एगे पणते एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं० उन्नते नाममेगे उन्नते तहेव जाव पणते नाममेगे पणते चत्तारि रुक्खा पं० तं० उन्नते नाममेगे उन्नतपरिणते १ उन्नते नाममेगे पणतपरिणते २ पणते नाममेगे उन्नतपरिणते ३ पणते नाममेगे पणतपरिणते ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं० उन्नते नाममेगे उन्नतपरिणते चउभंगो ४ ॥

वडां पणि ऊंचो छइ इम कालनी अपेक्षाई चउभंगी ॥ एवामेव चत्ता रि० इमहिज ॥ पुरुषजाया० ॥ पुरुषप्रकार अणगार अथवा ग्रहस्थ ॥ पन्नत्ता० कह्या ॥ पुरुष द्रव्य इऊंचउ ॥ सरीरिहातउ ऊंचउ ॥ कुलइ । ऐश्वर्यादिक इऊंच ऊंचउ अथवा लौकिक गुणइ ऊंचउ ॥ अथवा सरीर नइ गुणइ ऊंचउ ॥ प्रवर्ज्याइं ऊंचो ॥ अथवा ऊतमस घि इं करीऊंचउ ॥ अनइ सुगति इं पणि ऊंचउ ॥ कामदेवादिवत ॥ बीजइ सीगइ ऊंचउ ते तिमइज ॥ पणए० ॥ हीणा विहारादिक इहीणो ॥ अथवा दुर्गति गमन थाइ तो ॥ सिघलाई विलास तकवत ॥ १ ॥ अथवा ब्रह्मदत्तवत ॥ २ ॥ बीजो प्रमाक्षमुंकी संवेगि इवहिउ ॥ सेलकवत ॥ अथवा मेतार्यविनं चउथउ ऊदाईनृपमारकवत ॥ अथवा कालकसूरी आनीप रिइं ॥ ४ ॥ इम दृष्टांत दार्ष्टांतिक सघु वयइ कह्या ॥ हिवइ विसइ पइ कहइ छइ ॥ एक ही रूऊंचउ ॥ अनइ असुभ रसादिं नीचपणुं छोडीनइ । सुभ रसादिऊन्नत पणइं परिणम्यो ॥ १ ॥ बीजइ भांगइ सुभ रस पणुं छोडिऊं ॥ नीचो नीचो ॥ अनइ असुभरसपरिणम्यो ॥ इम दार्ष्टांतिक सुत्र जोडिव उ ॥ प्रणाम ते आकार ॥ बोधिक्रिया अनइ करा त्रिणितइ ॥ तिहां आकारआश्रीरूप नु सुत्र ॥

आचार तसी लो चार ॥ क नतपणुंतए हनइं निःदिष्ठि पणाइं ॥ बाव नो तरइं नइ वि षइ सीलहु सुत्र अनइ आ चारनुं सूत्र तु ऊं कहि जइ ॥ व्यव हार० ॥ माहो माहि लवुं दवुं ॥ अथ वा विनादाऊ न पणुं तत हनइं श्लाघा इं करी प्राक मी तपुरषा कार विासम अथवा विरी तु जो थिनुं

अन्नयरूवे० अन्नतरूप तसंस्थान रूडमइं । अवयवादिक नो सुंदरपणाथकी ॥ दार्ष्टांतिकनइं विषइ ॥ एहस्तआश्री पणि इमइं ऊंरूडउं ॥ संस्थान अवयवादि ॥ प्रकृति आश्री कोइ गीसाधुना वेषनो धरणहार ॥ रूडइ साधु मइ विषइ बाधप रिणामनो आपणाइं ५ सूत्र ॥ उन्न० ॥ अवउ जात्यादिकपणइ अथवा ऊंचो पुरुष ॥ उन्नतमन० ॥ उदारादि गुणासहित मन ॥ एवं संकप्प० ॥ संकल्प तेविचार ॥ तेह्म उन्नतनाम गात्र ॥ उन्नत० ॥ संकप्पइं त्यादि ॥ ४ ॥ उन्नत संकल्प ते ऊंचउ विचार ऊदा र्यादिपणइ करी अथवा रूडइ अर्थि करी ॥ पन्न० ॥ सूक्ष्म अर्थनि उ विचार तेहनइ ऊनत पणुं ते अविघहइ करी ॥ दिट्ठि० ॥

चत्तारि रुक्खा पं तं उन्नतनाम मेगे उन्नतरूवे तहेव चउसंगो ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं
उन्नतेनामं ४ ॥ ६ ॥ चत्तारि पुरिसजाया पं तं उन्नतेनामं उन्नतमणे उन्न ए ४ ॥ ७ ॥ एवं संकप्पे ॥ ८ ॥
पन्ने ९ दिट्ठी १० सीलाचारे ११ विवहारे १२ परक्कमे १३ एगे पुरिसजाए पडिवक्खो नत्थि चत्तारि रु
क्खा पं तं उज्जूनामं मेगे उज्जू उज्जूनाम मेगे वंके चउसंगो एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं
उज्जूनाम मेगे उज्जू एवं जहा उन्नतपणतेहिं गमो तहा उज्जू वंकेहिं वि भाणियव्वो जाव परक्कमे

उन्नतपणुं एहनइं तपो तइं इहलाइं नहीं ॥ सघलइं के वानो विपरीतात प्रणतपणुं तावि छुं ॥ एगे पुरुसजाए पडि० ॥ इहां ए कला पुरुषइं ऊंचा इ हिवा ॥ पणि दृष्टांत ना कहिवा नहीं ॥ जसणुं मनादिक तो दृष्टांत नइं विषइ संभवइ नहीं ॥ उज्जु० ॥ एकइ देसइ सरल अनइ सरल स्वभाव तेरूडा सरल फल उपजा वइ करी सरल स्वभाव ॥ वंके० ॥ वांका फल अथवा ॥ वंके० ॥ पा छु आफल ॥ वीजइ पदइं पहिलुं पद वांकुं ॥ अथवा कालनी अपेक्षाइं एहस पहिलुं सरल हतउ ॥ अनइ हवडाइं सरल छइ ॥ अथवा मलि समो अनइ छेहडइ समो ॥ इम पुरुषपणि ॥ उज्जु० ॥ बाहिरि समो सरीरगति अनइ वचननी गति विशेष करी ॥ अनइ माहि निर्माईपणइ करी सुसाधनी परिइं सरल ॥ बीजइ लोगइ माहि इं मायापणइ करी नइ वांकी उसाधुवत् ॥ त्रीजइ लोग इं कारणि वस्पइं थकी बाहिरि वांको अनइ माहि इं सरल प्रवचन गोपु [illegible] नी रक्षा नइ विषइ प्रवृत्त साधुनी परिइं ॥ चउथ इ पूर्ववत् ॥ अथवा कालनी अपेक्षाइं ते पहिलुं सरल हतो ॥ हिवणां सरल छइ इत्यादिक कहिवउं ॥ जिम ऊंनत नो प्रणतनो गम ॥ सरीखा पाठ कह्यो ॥ प्रतिपक्ष संयात इं तिम ॥ उज्जु० ॥ वक्रनी परि ॥ तेर ॥ चउभंगा कहिवा ॥ परक्कम लगइं ति दो हमइ प्रक्षना

ओधि ॥ अथवा ज्ञान अथवा नयन उमन ॥ एह मऊ इं ऊंनत पणुं ते अविघइ वइ करी ॥ हिवइ क्रिया प्रणाम नी अपेक्षा इं सूत्र ३ ॥ उन्नयनाम मेगे ऊंन य सोहा याद ॥ ४ ॥ सील ते नमस्कार माहि तह मउ जे आचार तसी ला चार ॥ अथ

वा सीलइं ॥ स्वभावना विष

दृष्टांतसहित ॥ अनइ ७ ॥ एकला पुरुषनी चउसंगी । हवइ पुरुषना विचारनइ विषइ । अनेक कहइ छइ ॥ पडिमा० ॥ प्रतिमा पडिव ज्यानइं । आ तिज्ञानो बोलवी ॥ याचिवानी पाणी यादि ॥ यथा दाहि सि मि एतो अनंतर पाणग जायमि त्यादि ॥ पुच्छणी ० ॥ मार्गादि नुं पूछिवुं ॥ अथवा कोइ एक सुत्रार्थनुं पूछिवुं ॥ अनुन्नपती ॥ अवग्रहादिकनुं याचिवउं ॥ पुट्ठस्स० ॥ पुछ्या अर्थनुं पडु तर ॥ हिवइं भाषाना प्रस्ताव माटइं भाषाना भेद कहइ छइ ॥ तासजाया ० ॥ भाषाना प्रकार ॥ कायाणि इं यथा अनइ वचनइ उ पइ कोटा इत्या तत्स्य या ॥ सत्यभाषा ॥ यथा आत्मा छइ ॥ मोसं० ॥ आत्मा नथी ॥ सत्यामोसं० ॥ उभयरूप यथा आत्मा छइ पणि अत्मान उ के अस्थि इ ॥ असच्चामोसं० ॥ साधुइ नहीं जुवउ कइ नहीं ॥ ते जिमु जाइ आपि ॥ हिवइ पुरुष तु स्वरूप १३ तेर सूत्रइ कहइ छइ

पडिमापडिवन्नस्सणं अणगारस्स कप्पंति चत्तारि भासाओ भासित्तए तं जायणी पुच्छणी अणुन्न
वणी पुट्ठस्स वागरणी चत्तारि भासा जाता पं तं सच्चमेगं भासंजातं बीइयं मोसं तइयं सच्चामो
सं चउत्थं असच्चामोसं चत्तारि वत्था पं तं सुद्धेनामं एगे सुद्धे सुद्धेनामं एगे असुद्धे असुद्धेनामं ए
गे असुद्धे असुद्धेनामं एगे असुद्धे एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं तं सुद्धेनामं एगे सुद्धे चउसंगो
एवं परिणत रूवे वत्था सपडिवक्खा चत्तारि पुरिसजाता पं तं सुद्धेनाम एगे सुद्धमणे एवं संकप्पे जा
चउसंगो ४

सुद्धे० ॥ एक वस्त्र निर्मलुं निर्मल करणा माटइं ॥ सुद्धे० ॥ वली निर्मलुं तंतु ॥ आगमीया कालनी अपेक्षाइं मलनइं प्रसंगवइ अथवा पुर्वि ऊजलुं हतुं । हिवडां पणि ऊजलुं छइ । हिवइ पुरुष जातिइं सुद्ध अनइ निर्मल ज्ञानादिकइ पणि सुद्ध ॥ अथवा कालनी अपेक्षाइं ॥ एवं परिणए० ॥ सुद्धपणुं परिणामुं ॥ एवउ संगी इम कहइ ॥ सुद्धे णाम एगे सुद्ध परिणए । इम व्यापार पद इम रूप आश्री जो डिवकं ॥ वत्था सपडिवक्खा ॥ वस्त्र प्रतिपक्ष सहित तेपुरुष साथि इं जो डिवा सहित ॥ सुद्धनाम मेगा सुद्धमणे ॥ बाहिर चोथा । इम आगल्या ६ बोल ॥ एवं सात एकला ॥ पुरुषां वस्त्र साथि इं जोडवानहीं ॥ हिवइं पुरुषना अधिकार माहि व ली कहइ छइ ॥

सुया०॥ दीकरा०॥ अतिजात०॥ पितानी संपदा नइं ऊल्लंघीनइं विशिष्ट संपदानइं पुहुतो ऋषभ सुवत्॥ अणुजाए०॥ पितातुल्यसंप
पेदाइ जिम महायशा आदित्ययससुतुल्य॥ अवजाए०॥ पिताथकी हीनसंपदाइवाय्या भरतनी आपक्षाइं आदित्ययसवत्॥
कुलिंगाल०॥ कुलनइं कलंकवाघकी इंगालसरीषउ॥ कुंडरीकवत्॥ सुतनइं सषिनइं विषइं प्रवर्त्तिइ। ततएणीतेहना ४
त्सद॥ अतिजात०॥ सीहगिरीनी अपक्षाइं वयरस्वामी॥ अणुजाततेसिय्यं भवनी आपक्षाइं यसोभदु॥ अपजात०॥ तेसइंबाकु
नी आपक्षाइं स्थिलभद्रवत्॥ कुलंगार॥ कुलदालकवत्॥ अथवा कंडरीकपमारकवत्॥ सच्चे०॥ साचुबोलइ प्रतिज्ञा निर्वहइ॥

वपरक्कम चत्तारि सुता पं तं अतिजाते अणुजाते अवजाते कुलिंगाले चत्तारि पुरिसजाता पं
तं सच्चेनामं एगे सच्चे सच्चेनामं एगे असच्चे एवं परिणते जाव परक्कम चत्तारि वत्था पं तं सुती
णामं एगे सुती एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं तं सुतीणामं एगे सुती चउभंगो सुतीणामं एगे असु
ती एवं जहेव सुद्धेणं वत्थेणं भणितं तहेव सुतिणावि जाव परक्कम चत्तारि कोरवा पं तं अंबप
लंबकोरवे तालपलंबकोरवे वल्लिपलंबकोरवे मिंढविसाणकोरवे एवामेव चत्तारि पुरिस

सच्चे०॥ संजमीपणाइं करीनइं हितुवउ॥ एबीजो सत्य॥ अथवा आगइंसाचो हतो अनइं हिवणां साचो छइ॥ सच्चेनाम मेगे अ
सच्चे०॥ तस्सा चुं बोलइ पणि संजिमरहित॥ एबीजो पद॥ एअनुजाई च्यारि॥ पदे करवा चउभंगी नी॥ सच्चेनाम मेगे सच्चे
परिणत०॥ साचु बोलइ॥ साचुं परिणम्यु ज्ञानादि॥ जावसद्दमा हिं सच्चरूव०॥ सच्चमणे॥ सच्च संकप्पे॥ सच्चपसे०॥ सच्चदि
ट्ठी॥ सच्चसीलायारे॥ सच्चववहारे॥ सच्चपरिक्कमे॥ इसघला बोलनी चउभंगी करिवी॥ सच्चेनामामाणा सच्चरूवेई त्यादि॥
एपुरुषना अधिकार माहि वलीआनेरुं कहइ छइ॥ सुयीनाम०॥ सुता वस्त्र पवित्र॥ नामसंता वनाइं सुया०॥ वलीसुयइ तेसंस्कार
इ पवित्र॥ सुयी०॥ पुरुषनइं विषइ सुवइ। तेपवित्र सरीरपणाइं करी एतलइ कोहिजसरीर नही॥ वलीसुवइ तेस्वनावइ॥ एवं
ऊद्देच०॥ पणि परिइ जिम सुद्धवस्त्र सघातइं कहिउ तिमइं जि सुचिसंघाति इं। परक्कमा लिंगि लगिइं कहिवउ॥ अनइं पणि १६
एरुंव॥ तिहप्रांतकसहितकहिवउ॥ आगिल्या ७ सुत्र एकला पुरुषना॥ वली पुरुषना अधिकार माहइ अनइं रुं कहइ छइ॥
एवं ६ सूत्रे धयो॥ १५

अंबपलंबकोरवे०॥ आंबानो॥ पलंब०॥ फलसमुहनी पजावणाहार॥ कोरव०॥ डोडो॥ तेहना फलनो डोडो॥ वली०॥ कालीगडी याहि
कनो डोडो॥ मिंढ०॥ मीढानासीगजसरिषुं फल छेडेहनउ डोडो॥ आउलि डोडउ इस्यिषं॥ डोडातो घणी जातिना छइ॥ पणि पुरुष
संघातिइं मिलवानइं काजइ इहां च्यारिनो इजि प्रयोग॥ एवामेव०॥ जे पुरुष सेवीतानइं कालिइं उपगाररूप फल दिइं ते अं
बफलंबकोरवसमा॥ प्यपुरुष अतिघणिइं कालिइं कष्टिमोटइं उपगारफल करइ ते तालप्रलंबकोरवसरिषउ॥ जे कष्टविना वि
हिली फल आपइ तेवल्लीप्रलंबकोरवसरीषो॥ अनइं जे सेवीतानइं मीटावचनइं जि बालइ पणि उपगार कांइ न करइ॥

जाता पं तं अंबपलंबकोरवसमाणे तालपलंबकोरवसमाणे वल्लिपलंबकोरवसमाणे मिंढवि
साणकोरवसमाणे चत्तारि घुणा पं तं तयक्खाते छल्लिक्खाते कट्ठक्खाए सारक्खाते एवामे
व चत्तारि भिक्खागा पं तं तयक्खायसमाणे जाव सारक्खातसमाणे तयक्खातस्स भिक्खा
गस्स सारक्खातसमाणे तवे पन्नत्ते सारक्खातस्स भिक्खागस्स तयक्खायसमाणे तवे पन्नत्ते

ते मिंढविषाणकोरवसमा मइं तेआउलिनो डोडो सौवर्णवर्णसो लइ॥ पणि फल अषाद्य आपइ ते सरीषो पुरुषना अधिकारनइं
उविलीकहइ छइ॥ घुणकाष्टकीटक॥ त्वच तवा हिरलीकालि षाइं ते त्वचषादक॥ छल्ली ते मांहिली तेहनउ षानार ते छल्लीषाद
क॥ काष्टनउ षाणहार॥ सारषाए०॥ काष्टनो मध्य तेहनो षाणहार ते सारषाद॥ भिक्खाग०॥ भीषवानी अथवी साल अथवा
नो षवइ करी साधननो करणहार॥ ति तिक्षकः॥ तयरक्खायसमाणे०॥ अंतप्रांतसाता षा पणइ करी आविलकरइ अंत प्रांत
आहार षाइ॥ जि आलपनत आहार ल्यइ ते छल्ली षादसमानि॥ विगइनी वीकरइ॥ तेकाष्ट षादसमानइं॥ सर्वकामगुणाइं षारइं॥
ते सारषाद समानि॥ हिवइ च्यार तिहनु नात पक परिणमलइ छइ॥ त्वच षायसमाणस्स भिक्खागस्स०॥ वैक्कुमरीषो असार आहार
नाषाणहारनइं कर्मना तेदवा षकी॥ वज्रसार तप थाइ॥ सारषा०॥ सारषादक भिक्षाकनइं त्वचाषादक घुण सरीषो तप कुइ॥ तेसरी
षथानो षाणसार घुणकाष्टनइं तेदीन सकइं॥ तिम ते चारित्रीउ कर्मकाष्टनइं तेदवा असमर्थ॥ छल्ली षादक घुण समा निइं लिहा

नइ थकु रवादकघुं असरिषउ एनी आप्रकाइं करी एक विसिष्टत्ता उजनइ करी ॥ काहपादघुंणसमानिइं तप अतिसम्महीअ
नइ अतिमंदनही ॥ कर्मलिप्ता प्रत्तिइं काष्ट खाद कातिसागनइ सार षाद घुणसमानिइं नी आपसाइं असार सो ठी यणाइक
कैरी छेलीषाद घुंणसमानिइं तपतितपकर्मलिप्ता प्रतिइं सारषादनइ काष्ट तपनी परितेसमर्थनिही ॥ अनइ अकुषाद
तपनी परिइं अतिमंदपाणिनहीं ॥ त्वाद्दलइना गिइं प्रधान तप ॥ बाजइ अप्रधान ॥ त्रीजइ प्रधान ॥ चउथइ अप्रधान ॥
अनंतर वनस्पतीना अवयवना पाणहार घुणकह्या ॥ हिवइ वनस्पती कहइ छइ ॥ वनस्पती० ॥ काय० ॥ सरीर छइ जेहनइ ॥

वणस्सिरकायसमाणस्सणं सिरकागस्स कहरकाय समो तवे पन्नत्ते । कहरकासमाणस्सणं सिरकाग
स्स सालिस्कायसमाणा तवे पन्नत्ते । चउविहा तणवणस्सतिकाइता पं तं अग्गबीया मूलबी
या पोरबीया खंधबीया । चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने णेरइए णिरयलोगंसि इच्छेज्जा माणु
संलोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए अहुणोववन्ने नेरइए निरयलोगंसि
समुब्भूयं वेयणं वेयमाणे इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छि
त्तए ॥१॥ अहुणोववन्ने णेरइए णिरयलोगंसि णिरयपालेहिं भुज्जो २ अहिट्ठिज्जमाणे इच्छेज्जा माणु

तृणरूप वनस्पतीकाय ॥ अग्ग० ॥ अग्रबीज बीज छइ जेहनुं ते कोरंटकादिक ॥ अथवा अग्र बीज जेहनुं ते सालादि ॥ मूलबीज छइ जेहनुं
ते कमलकंदादि ॥ पोरबीआ० ॥ पर्वबीज ॥ सेलडीआदि ॥ खंध० ॥ थडुं बीज छइ जेहनुं ॥ ते सालरिआदि ॥ एहुं सुं कह्या
॥ आनरा बीरूहसमुच्छिमनथा कह्या ॥ पाणि आणवा जिमसुंआं तर विरूहनथाइ ॥ एवं वनस्पतीमाहीं वनुं चऊगणुं कहिउं ॥ हिवे
जीवनासरणपापणामाइं घका नारिकीनुं फल कहइ छइ ॥ अहुणो० ॥ ततकालनो ऊपनो । घणा कालनउ नही ॥ निरए० ॥ नरक
तिहां ऊपनो ते नारकी ॥ हिवइ सी प्रश्न आविवा वांछइ पुणि आवी न सकइ ॥ समुब्भूयं० ॥ प्रबलपणइ ऊपनी ॥ पाठांतर विप्रडु
समुरवलेनता० ॥ एकवेलाइं ऊपनी ॥ वंलीपाठांतर विपुर ॥ समुदत्तता० ॥ माटी अथवा समुद्र रूप वेदना वेदता ॥ अहिट्ठि ११
ज्जि० ॥ आकमीता ॥ नरकनइ विषइ वेदवा योग्य ते नरकावेदनी यथ असुर ना मकपादिक अवी असाता वेदनीय ॥

असरकोभि ॥ तेहनी स्थिति निम्नगइ आसा छ पिइं ॥ आवदे० ॥ रसनइ आणतो गवे ॥ आनआनं० ॥ आदेसथकी आणेविरवइ ॥ अवत्रुपचे
द्यकर्मरूप बेडीइं बांध्या आविवा असमर्थ ॥ नरयाउसि० ॥ नरकनुं आउखुं आण क्षयि इत्यादि ॥ एनारकी असंयमनो आश्रव
परिग्रह तेह ट्टथकी ऊपजइ ॥ ते सणीसंयमनो आश्रव परिग्रह विरूस्थानकिरं कहइ छइ ॥ निग्रंथी० ॥ अभ्यंतर मिथ्यात्वादि
क। बाह्य हिरणादिक ग्रंथ बेधाइ तेहु ॥ तेह थकी नीकली तेनिग्रंथी साधवी ॥ संघाडीउ० ॥ ऊपरि ओढवानो पछेडो ४ परिवा
परि० ॥ ना गविवा ॥ एवं दु० ॥ बिहाथनी पोहोली तेऊ आमाहि ओढइ ॥ बिपछेडी त्रिणिहाथनी पुहोली तेमां हिली । एक
गोचरी इ ओढइ ॥ एक फेर इजातां ओढइ ॥ एक ४ हाथनी पुहोली समोसरणि ओढइ ॥ हिवइ नारकी ध्यान थकी थाइ ॥ ध्याउं

संलोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए ॥२॥ अहुणोववन्ने णेरइए णिरतवे
यणिज्जंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेतितंसि अणिज्जिन्नंसि इच्छेज्जा० णो चेव णं संचा ॥३॥ एवं
णिरताउअंसि कम्मंसि अक्खीणंसि जाव णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए ४ इच्चेतेहिं चउ
हिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने नेरतिते जाव णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए । कप्पंति निग्गंथी
णं चत्तारि संघाडीओ संधारित्तए वा परिहरित्तए वा तं एगं दुहत्थवित्थारं दो तिहत्थवित्थारं ए
गं चउहत्थवित्थारं चत्तारि झाणा पं तं अट्टे झाणे रुद्दे झाणे धम्मे झाणे सुक्के झाणे अट्टे
झाणे चउव्विहे पं तं अमणुन्नसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसतिसमण्णागते यावि भवति

तध्यान ॥ अंतर्मुहूर्त्त चित्तस्थिरता ते ॥ दुष ते हेतुं कारण अथवा तिहां ऊपर्ने नुं ॥ अथवा ऋतु० ॥ पाडिउं तिहां ऊपनुं ते आर्तध्या
न ते हरू अध्यवसाय ॥ हिंसादिक विषइ अतिक्रूर परिणाम ॥ ऊपनुं ते रौद्र ॥ श्रुत धर्म चारित्र धर्म सहित ते धर्म अशुभ प्रकार क
र्मनइ साधइ ते सुक्ल ॥ अथवा सोक नइ छाडइ ॥ अथवा सुक्ल ॥ अमनु० ॥ अमनोज्ञ अनिष्ट पामीतरि ॥ असमणुन्न०
पोतानइ अप्रिय सब्दादि विषयनो ॥ संप्रयोग० ॥ संबंध ते णइ करी नइ ॥ संपउत्ते० ॥ सहित ॥ तस्स विप्प० ॥ तेहनो विओ
ग तेहनी चिंतानइ ॥ समन्नागए० ॥ पुहतो ॥ ए तध्यान अनइ ध्यानी नुं अभेद जाल भवया थकी ध्यानी पुरुषनइ ध्यान

जघन्नीद॥ अथवा अमनोज्ञसंप्रयोगसंप्रयुक्त जीवइ नइं तेहना वियोगनी चिंता मइ॥ साम॰॥ जावुं ते आर्त्तध्यान॥ मणुन्नसं॰॥ वल्लभधनादिनउ॥ अवि॰ अवियोगनुं॥ आतंक तेरोग॥ ३॥ परिजु॰॥ सेव्या जे काम॰॥ मनोहर भोग॥ सद्दादि॥ अथवा॥ काम॰॥ शब्द रूप॥ भोग॰॥ गंधरसस्पर्श॥ तेहनो जे संप्रयोग तेणइं सहित॥ अथवा परि जुसिय॰॥ क्षीण थया जरादिकइं करी॥ एका मनोग तेणइं संप्रयुक्त एहवो। तेहना अवियोगनी चिंता मइं प्रवृत्तो ते आर्त्त। बीजो लोग वल्लभ आश्री॥ चउथउ सद्दादि लाग आश्री॥ सार्ख्या तरनइं विषइं बीजो अनइं चोथउ लेद एक करवा थकी त्रिणि जलेद छइ॥ आर्त्तध्याननो पवउप्पा लेद ते नियाण कपलइ॥ एह आर्त्तध्यान॥ हिवइ आर्त्तध्यानना लक्षण कहइ

मणुन्नसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसतिसमण्णागते यावि भवति आतंकसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसति समण्णागते यावि भवति ३ परिज्झुसितकामभोगसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसति समण्णागते यावि भवति अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पं तं कंदणता सोयणता तिप्पणता परिदेवणता रुद्दझाणे चउव्विहे पं तं हिंसाणुबंधि मोसाणुबंधि तेणाणुबंधि सारक्खणाणुबंधि रुद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पं तं उसन्नदोसे बहुलदोसे अन्नाणदोसे आमरणांतदोसे

इछइ। तिहां लक्ष्णते॰॥ उलखाइ॥ मनमाहिं जे दुःख ते लक्षइ कइ तउ हि पणि एणइं करी ते लक्षण॥ कंदणया॰॥ मोटइं साद्दइं रडवुं॥ सोयणया॰॥ दीनपणुं तिप्पण॰॥ आंसुभुंमुकवुं॥ परिदे॰॥ वारिवारि क्लिष्ट बालिवउं॥ हिवइ रौद्रध्याननाभेद कहइ छइ॥ हिंसा॰॥ जीवनइं वधबंधनादिकइं करीनइं पीडा तेहनइं॥ अणु॰॥ बांधइ॥ निरंतर करइ एहवध्याननी हिंसानुबंधी॥ मोसाणुबंधी॰॥ असत्य॥ अणु॥ बांधइ॥ बोलइ॥ वाडा ते डोअबता वचन तेणइं करी ते मृषानुबंध नुबंधी॥ तेणाणु॰॥ चोरी तीव्र क्रोधादिनइं आकुलपणइं करी॥ अणुबद्ध॰॥ निरंतर वार ते तेणाणुबंधी॥ संरक्षण॰॥ सर्वकषाय करी मइरा थकउं॥ विषयनां साधन धनकुं भलावेंधछइ॥ हिंसी तिसंरक्षणाणुबंधी॥ हिवइ रौद्रध्याननां लक्षण कहइ छइ॥ उसन्नदोस॰॥ हिंसादिक्या रिमा हिलो अनेरा हो बहुइ॥ बहुलदोस॰॥ बहुलदोसे॰॥ हिंस्यादि

चिंतादोष कइ॥ अथवा बहु वध वध्यादि षदिं आदि दोष दि॥ अन्नाणदोस॰॥ अज्ञान॰॥ कुशास्त्रनां प्रकाशथकी नरकेनां कारण हिंसादिक धर्म नइ विषइ धर्मनी बुद्धि प्रवर्त्त ॥ ते अज्ञानदोष॥ वाचनो तनिमानी बिधादोष हिंसादिक नइं विषइ मरणां वउं॥ निरंतर॥

१८

नथा आमरणांतदोस॰॥ मरणांत लगि इम पश्चात्तापविना हिंस्यादिकने विषइ प्रवर्त्तवउं॥ का लकसुरीयवत॥ धर्मध्यान विक्रप्रकारिइं॥ चउपडोयारे॥ स्वरूप १ लक्षण २ आलंबन ३ अनुप्रेक्षा ४ एविक्रमध्यविषइ प्रत्योवतार॰॥ अवतरिवुं छइ धर्मध्यान तुंते। वाचनानारवतु॰ पदावतार एहीज च्यारि पदनइ विषइ अवतार छइ। एध धर्मध्याननउ॥ आणा॰॥ तीर्थंकरना वचन तेहनुं विचारिवुं॥ अथवा॥ भवचन॥ विजए॰॥ परिचक्कोउइ ते आज्ञा विजइ॥ अवाय॰॥ रागादिकना कष्ट व्या॥ इहलोकि परलोकि अनर्थ॥ विजए॰ तेहनुं आलोचवुं ते निस्संयिक करिवो॥ विवाग॰॥ शुभाशुभकर्मनां फलनो वि॰॥ निश्चय उथवा ज्ञानावरणी ते ज्ञाननइ आवरइ इत्यादि॥ संठाण वि॰॥ संस्थानलोकद्वीपसमुद्रादिकनां आकार तेहनो नि

धम्मे झाणे चउव्विहे चउपडोयारे पं तं आणाविजए अवायविजए विवागविजए संठाणविजए धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पं तं आणारुयी णिसग्गरुयी सुत्तरुयी ओगाढरुयी धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पं तं वायणा पडिपुच्छणा परियट्टणा अणुप्पेहा धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाउ पं तं एगाणुप्पेहा अणिच्चाणुप्पेहा असरणाणुप्पेहा

श्चय॥ हिवइ लक्षण कहइ छइ॥ आणारुयी॰॥ सिद्धांतनो अर्थ निर्युक्तादि ते आज्ञा॥ तेणइं करीनइं। रुचि॥ सद्दहिवुं ते आज्ञारुचि॥ निसग्गरुइ॰॥ स्वभाविइं सद्दहिवुं उपदेस विना॥ सुत्तरुइ॰॥ सिद्धांत थकी सद्दहिवउं॥ उगाढरुइ॰॥ द्वादशांगी मइं अवगाहवइ सद्दहिवुं ते अथवा साधुना उपदेस थकी सद्दहिवुं॥ धर्मना आलंबन कहइ छइ॥ धर्मध्याननां प्रासादना सिखरनइ विषइं जीणइं वलगी चडीइ ते आलंबन॥ वायणा॰॥ वाचना देवी निर्जरा काजि॥ पूछणा॰॥ ससंकितसूत्रादि गुर्वादिनइं पूछिवउं॥ परियट्टणा॰॥ पूर्वि भण्यां सूत्रादिकनुं अणवीसार वामइं अथिं अथवा निर्जरानइं अर्थि गुणावलीअभ्यासवुं॥ अणुप॰॥ सूत्रार्थनुं चीतिववउं॥ हिवइ अनुप्रेक्षा कहइ छइ॥ अणु॰॥ ध्यानकीधा केडइं अर्थनुं आलोचवुं ते अनुप्रेक्षा॥ एकलो हुं छउं माहरो को नथी॥ ॰॥ एगाणुप्पेहा॰॥ आत्मानइं सबाह्य रहित पणि एकाकी नी नी वनातएकानुप्रेक्षा॥ हवइ असरणानुप्रेक्षा कहइ छइ॥ असरणाणुपेहा॰॥ आत्मानइं शरण असरणनो विचार माता पिताकोई थाइ। अरिहंतनो थाइ इत्यादि॥

दीवानो प रिइ तेअ विचारी ए तलइऊ साद स्थित रूपा दिना पर्यायनइ विषइ नि वातघरइ नादी वा नो परिइ निः प्रकंप खिज्ञात ए गंत वित र्कअविचा री एवी उ लेइ ॥ सुह रूकिरि ए० ॥ तमा हत ऊवा तइ कालइ निरूध्यमन वचना या गकेवली नइ अछ निरूद्धका य या गात इ वइ ए ध्या नऊइ ॥

संसाराणुं० ॥ व्यारिगतिविषइसर्वअवस्थानइअनुरूपवि तिमही । अनुप्रेक्षा ॥ दिवइसुक्लकहइछइ ॥ इरूस्थवितर्क सविचारी पृथक्त्व नात एकद्रव्य आश्रित उत्पादिस्थित विनासादि पर्यायनइ लक्षिकरी अथवा विस्तार पणाइकरी ॥ वितर्क० विचार तेश्रुतगतश्रु अनइ आलंबइकरी नाना नयनो अनुसरणहार एहवउछइ जेहनइ विषइ ते पृथक्त्व वितर्क सुजइछइ वितर्क तेश्रुतनो आ लंबनकइ जेहनइ तेणइकरी श्रुतइऊ वितर्क कहीयइ ॥ सविचारी० अर्थथकी व्यंजननइ व्यंजनथकी अर्थनइ विषइ ॥ मनादिक योगनु आनराथकी अनेरानइ विषइ संचारि विअं ते विचार ॥ अनइ विचार सहीत प्रवर्त्तइ ॥ ते सविचारी कहीइ ॥ एपहिलु स्थ लउनउ ॥ एगंत वितर्क० ॥ एकपणाइ ते अंतदिइकरी ते लक्षनही एकउ उत्पादि पर्याय माहिलो अनेरा एकपर्यायनइ ॥

संसाराणुप्पेहा सुक्केझाणे चऊव्विहे चऊप्पऊयार पं तं पुहुत्तवितक्केसवियारी एगंतवितक्केअ
वियारी सुहुमकिरिते अणियट्टी समुछिन्नकिरित अपडिवाति सुक्कस्सणंझाणस्स चत्तारिलरक
णा पं तं अव्वहे असंमोहे विविग विउस्सग्गे

एणी अवस्थाइ सुक्ष्म काय क्रिया उत्सासादिक केवलीनइ रहइ ते सूक्ष्म क्रिया ॥ अनियट्टी० ॥ वधता प्रणाममाटइ ॥ निवर्त्तइ नहीं ॥ तेसणी सुक्ष्म क्रिया अनिवृत्ति नीजउ सेहइ ऊ सेहगइ कायिकादि क्रिया वीलसीकरवानइ विषइ योगरूंधवइकरी ॥ तसमुच्छिन्नक्रि या ॥ अपडिवाई० ॥ पडइनही ते चउथो भेद ४ छेहलो सुक्लनो भेद नइ विषइ एअनुक्रम केवली ॥ अंतर्मुहूर्त आयुम ष छे तिइ तेवो प्रयाहोकर्मवेदनीमतइ ॥ समुद्घातकरी अथवा । स्वनाविइसरिखो स्थितिछतइ योगनिरोग कं । इतिहापर्याप्तसंज्ञीनातेकालपर्याप्त पणुपाम्यातेवेलानाउपयमनोयोग ऊतलोहोइ । तेहमो असंख्यातमोभाग ॥ समइ समइरूधतो ॥ असंख्यातइसमइ सर्वमनोयोग रूधइ ॥ तेवा पर्याप्ता बेइंद्रीनउ जेतलो उपवचनयोग हुइ ॥ तेहनो असंख्यातमो भाग समइसमइरूधतो ॥ असंख्यातइसमइ सर्ववचनयोगरूधइ ॥ एसुक्ष्मपनक नउ पहिलइसमइ ॥ नउ जघन्यनो जेतलोउ ॥ ज घन्यकाययोगहुइ । तेहनउ असंख्यातमोभाग समइसमइरूधतो ॥ असंख्यातइसमइ सर्वकाय यो गरूधी ॥ पछइ शरीरनी स्थिरता तेसी लसी तेहमइ पोहोवइ ॥ पांचह्रस्वाक्षर कहवानाजेतलो कालतेतलोगइ ॥ तेतलो काल सेलसी इरहइ ॥ काययोगरूंधवामांहिउ ॥ तिवारि सुक्ष्म क्रियाअनियट्टी ध्यानप्रारंभ्यो ॥ तिहालगइ ॥ जोलगइ काययोगरूंधीइ छि का पछइ सेलसीनइ विषइ ॥ वोछिन्नकिरिए अपडिवाइ एचउथउ भेद ते भवमध्यछइ ॥ हिवइ लक्षणकहइछइ ॥ अव्वहे० ॥ देवनी दिकनइ उपसर्गइ न चलइ ॥ असंमोहे० ॥ देवमादिकनीकीधी माया सुक्ष्म पदार्थ ... सर्वआत्मा सरीर संजोगऊथाक

आलंबइकर्णा एहवोजे वितर्कपूर्व गतश्रुताश्रित ॥ अथवा व्यंजनरूप अथवा अर्थरूप वितर्क ते ॥ तेहनउ विचार अर्थथकी व्यंजननइ विषइ अथवा अनेराथकी अनेरानइ विषइ ॥ तेमनादिकयोगनु अनेराथकी अनेरानइ विषइ संचार नही तिवानथी अविचारि नइ विषइ

सीजाणइ ॥ विउग्गे० ॥ निसंगपणाइ देह उपधिनो त्याग ॥ हिवइ आलंबन कहइछइ ॥ तेअगाथी ॥ अहरवंति मद्दवअज्जव ॥ मुत्तिउ ति एमुएपहाणाउ ॥ आलंबणाइ पेहिका ॥ सुक्कझाणं समारोहइ ॥ १ ॥ हिवइ अनुप्रेक्षा कहइछइ ॥ अणंतवत्ति० ॥ अनंतभवजीवरलिउ तेवीततिबुंत ॥ २ ॥ विप्परिणामाणुप्पेहा० ॥ पुद्गलोदिवस्तुसर्वनु विपरीणामपणु चिंतवइ ॥ २ ॥ असुभाणु० ॥ संसारनु असुभपणु जेरूपना वितिमरीतिइऊसरीरमादिकीटकवाइ ॥ इत्यादिचीतवइ ॥ अवाया णु० ॥ आश्रवथकी कष्ट आवइ ॥ कोहोयमाणोय अणिग्गहियाइ इत्यादिचिंतवइ ॥ ४ ॥ ध्यानथकी देवतापणि पामइ ते सणी देवस्थि तिसूत्र ॥ स्थिति० ॥ अनुक्रमतिमयहा राजाप्रधानादिक मनुष्यस्थितिनी परिइ ॥ देव० ॥ सामुक्त इ० ॥ देव ॥ नामवाक्यालंकारि ॥ एक

सुक्कस्सणंझाणस्स चत्तारि आलंबणा पं तं खंतीमुत्तीमद्दवे अज्जवे सुक्कस्सणंझाणस्स चत्ता
रि अणुप्पेहाउ पं तं अणंतवत्तियाणुप्पेहा विप्परिणामाणुप्पेहा असुभाणुप्पेहा अवायाणुप्पे
हा चउव्विहा देवाणुट्ठिती पं तं देवेनाममेगे देवसिणातेनाममेगे देवपुरोहितेनाममेगे
देवपज्जलणेणाममेगे चउव्विहे संवासे पं तं देवेणाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गछेज्जा
देवेणाममेगे छवी तेसद्धिं संवासं गछेज्जा छवीणाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गछेज्जा छवीणाम
मेगे छवी तेसद्धिं संवासं गछेज्जा चत्तारि कसाया पं तं कोहकसाए माणकसाए मायाकसाए लोभ

कसाए ॥ सिणा ए० ॥ प्रधान देवइज स्नातक ॥ देवता तेहऊस्नातक ते प्रधान अथवा देवतानो स्नातक प्रधान ॥ एवं पुरोहि त सांतिकर्मकारी ॥ देवपज्जलणे० ॥ वर्णवादबोलवइकरी । दीपावइस्तोहमीपरिइतो ॥ हिवइ देवस्थितिना प्रस्तावथकी देवनउसं वास कहइछइ ॥ संवासं० ॥ मिथुननइअर्थिइ सिवऊं ॥ देवना० ॥ एकएकदेवता ॥ देवीनइ सिवइ ॥ १ ॥ एकेक देवता ॥ छवि० ॥ मनु ष्यणी तिर्यंचणी साथिइ सेवइ ॥ २ ॥ मनुष्य तिर्यंचदेवीनइ सेवइ ॥ ३ ॥ मनुष्य मनुष्यणी तिर्यंचणीनइ सेवइ ॥ अनेतरसंवा सकहिऊ ॥ ते संवास माहि नाकइ ध्यथकी थाइ ॥ तेसणी माहिनो संगोकषायकहइछइ ॥ कर्मकूपोउपचगपडइ ॥ सुषदुषफल रूपोपकरइ ॥ तेकषाय ॥ अथवा जीवनइमइलोकरि तेकषाय । अथवा जीवनइ हणइ ते कषाय ॥ कर्मतिसाकूपनउ तेकषा य ॥ अथवा कर्मनालाभनुहेतु अथवा कर्मनिइ विषइ पाकूचाडइ तेकषाय ॥ क्रोधइतक्रोध ॥ अथवा कोपवृत्ते क्रोध ॥ क्रोध मोहनीनाउपजाव्यउजीवनउपरिणाम विसेष ॥ जात्यादिक गुणवतइ इमानवृत्तमाने ॥ अथवा वचवानीवचनेनु बोलवु ॥

अथवा बंधाइ एणी मायाइं करी तमाया ॥ लो ॥ अ० ॥ अथवा वांछीइ एणइं करी अथवा वांछवुं ते लोभ ४ व उपतिट्ठिए को
हे० ॥ पं० ॥ आरनइ विषइ क्रोधरहित आयपतिट्ठिए० पोताना अपराधथकी इहलोकि कष्ट अनर्थ पामइ तेहनइ वि
षइ क्रोध ते आत्मप्रतिष्ठितक्रोध ॥ परि इआक्रोस वइकरी उदेरयो जे क्रोध ते परप्रतिष्ठितक्रोध ॥ अथवा पर रूप तिको
सइ ते प्रतिष्ठितक्रोध एव्यार प्रकारइ जीवनइ विषइ क्रोध ते उभयप्रतिष्ठितक्रोध ॥ आक्रोस्या विना कारण विना केव
ल क्रोध वेदनीनउ उदय थकी रूप हुइ ते अप्रतिष्ठितक्रोध ॥ ए ४ प्रकारि जीवक्रोध लाभनइ विषइ ॥ प्रतिष्ठि उछइ तउ
हि पणि आत्मादिनइ विषइ अलगरूपना परणथकी अप्रतिष्ठनक होइ । पणि सर्वथा अप्रतिष्ठितनही ॥ जो सर्वथा अप्रतिष्ठित

कसाए एवं णेरइयाणं जाव वेमाणिआणं ॥ चउपतिट्ठिते कोधे पं तं आतपइट्ठिए परपइट्ठि
ए तदुभयपइट्ठिए अपतिट्ठिए एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं २४ एवं जाव लोभे व
माणियाणियाणं २४ चउहिं ठाणेहिं कोधुपती सिया तं खेत्तं पडुच्च वत्थुं पडुच्च सरीरं पडुच्च
उवहिं पडुच्च एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं २४ एवं जाव लोभे वेमाणियाणं २४ चउव्वि
धे कोधे पं तं अणंताणुबंधी कोहे

नीयइ ॥ चउपइट्ठिए कोहे० ॥ एसूत्रना फल थाइ चउवीस इंडकइं थानि
जातिनउ क्रोध थइ ॥ तिहां एकेंद्री विगलिंद्री मइ आत्मादि प्रतिष्ठित पणुं अवारस वेनु पुर्वसिधि इतणइ प्रणाम मइ भवानइं उ
पना ते आश्री जाणिवु ॥ इम जिमान माया लोभना ४ लक्षण वा ॥ इम चउवीस इंडकइ ठा लियविवा ॥ का हे० ॥ क्रोधनी उतिप
त्ति हुइ ॥ खेत्तं पडुच्चे० ॥ नारकादीनुं त्याना नुं त्याना नुं रूप जाणवा क्षेत्र नक्षत्र आश्री ॥ वत्थु० ॥ सचितनादि वस्तु ॥ अथवा ॥ वत्थु० ॥
घर आश्री ॥ सरीरं० ॥ दुसंस्थित तेथ पाडुवी परिइं रहित ॥ अथवा करूप ते आश्री ॥ उपधी० ॥ जिम अपगरणहइ ॥ इम चोवीसि दुरक
एकेंद्रीयादिनइ सवातरना अनुलक्ष्मा नापरिणामथकी जाणिवु ॥ इम मान माया लोभक्रोधनी परिइं ॥ चउवीस दुइकिलेवा ॥ अनंत
भव आत्मारहित बांधइ ते अनंतानुबंधी अथवा ॥ अनंतु अनुबंध ॥ निरंतरबंध थइ जिहमो ॥ सम्यग्दर्सनसहितना वइ ॥ समा ८०
दिस्वरूप उपमासमादिवरण लवनउ विबंधी ते हना चारित्र मोहनी थ पणथकी रूप समादिक इअकरी चारित्र आनो अल्प पण
थकी ॥ यथा अमन सत्कोन संइम अवरहित तेसं नीमहो ॥ तीसु ॥ मोटइ मूलगुणादिकरूप इहां चारित्र इकरी वा रित्री अमन संजो

इसंजीनीपरिह ॥ एह अकारणा अस्ती जिहि थ दर्सित्रे सूनीय ॥ पंचवीस विधि चारित्रमोहनी ॥ तउपदमेसुया णउ इए । नियमई
स्या हि विरुद्ध ते चारित्रना आवरणहार नेइ पणथकी युक्तामलइनही ॥ एह अकारणाथकी सात विधि दर्शनमोहनीय ॥ एके
वीस विधि चारित्रमोहनीय इम युक्त रूं ॥ पद्दामलुयाणइ त्यादि जिम कहिउं । ते अनंतानुबंधीनइ सम्यकना आवरणहार पणाइन
हीं ते सुं । समक सहित तेहोणहार उपसमादिकना आवरणहार पणइ । अन्यथा ॥ अनंतानुबंधी एउ । सम्यक वे आवरणाप
णाथकी ॥ अनेरइ मिथ्यात्व इसु प्रयोजन जिसणि आवरणानइ आवरवइ अनवस्था प्रसंग रूप मइ ॥ यथा केवलियनाणलंभो
नमछ्य खएकसायाणं ॥ इसि कषायनइ केवलिज्ञाननइं आवरणहार पणि होइ पणि कषायनो क्षय । ते केवलज्ञाननाकार
णपणि कहकहो ॥ तेलणोशमवइ केवलरूप उइ । इम अनंतानबंधीनो सेत्यापसमनइ पोहोचइ ॥ अनइ तेहनइ असा वि

अपच्चक्खाणकसाते कोहे पच्चक्खाणावरणे कोहे संजलणे कोहे एवं णेरइयाणं जाव वेमाणि
आणं २४ एवं जाव लोभे वेमाणियाणं २४ चउव्विहे कोहे पं तं आभोगणिव्वत्तिए अणाभोग
णिव्वत्तिते उवसंते अणुवसंते एवं णेरइयाणं जाव २४ एवं जाव लोभे वेमाणियाणं

सम्यक्त्वपणि नहोइ ॥ जिसइ विधदर्सनमोहनीय कहिउं ते सम्यक्त्वनइं सहचारीपणइ करी उपसमादि गुणना सम्यक
त्वनइ विषइ उपचार थकी टीकाकारइ कहिउं इम मुनि कहिउ ॥ नथी प्रत्याख्यान तेहनइ विषइ । ते अप्रत्याख्यान देसवि
रतनउ आवरणहार ॥ २ ॥ पच्चक्खाण सर्वविरति । रूप ते अमर्याद इ दाइकरा ॥ वरण० ॥ आवरइ ते प्रत्याख्यानावरणी ॥ ३ ॥ संजल
ण बालइ ते सर्वविरतिमइं ते संज्वलन ॥ क्रोधादि ४ ते संजलनो यथाख्यात कहिउं ॥ यथाख्यातचारित्रनउ आवरणहार ४ इ
म मान माया लोभ प्रकारइं जाणवो ॥ एह ना सहचार्य पुरुषइ इम कहिउं ॥ अनंतानुबंधी उ क्रोधादि सम्यक्त्वनाहाणि
करइ ॥ पच्चइ देसविरति ॥ सर्वविरतिना आवरवाथकी अनुक्रमइ एहा ॥ अप्रत्याख्यानीया ४ प्रत्याख्यानीया ४ सदादि विषइ धामीनइ
प्रवलइ ॥ ते रागादि पइ प्रवलइ ॥ संज्वलन क्रोधादि ४ ते संजलइ ॥ उपइ ख्यातनकइ कहिउं ॥ एच उवीस इंडकइ कहिवा ॥
आभोगनिवत्तिए० ॥ क्रोधनुं फल जाणतो क्रोध पइ ॥ अणा० ॥ अजाणता क्रोध करइ ॥ उपसं ते० ॥ अणउदइ आव्या ॥ अणउव
संत ॥ उदइ आव्यो क्रोध ॥ एकेंद्री आदिनइ पाछिलइ सवइ सहीठतो ते णि आपणइ जाणवुं ॥ अणाभोग ते सवनो अ
पक्षाइ ॥ अनइ नारकादिकनइ रूपसात ते विसहू रूदयना अनो वपथकी ॥ नीवलाइ ॥ अनुपसांत ते रूवयनां वि
लोइ ॥ एव नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥ इम मान माया लोभ ॥

छिवइ एक साय यंदं जीत्रिणि काल नुं फल कहइ छइ ॥ चयन॰ कषाय प्रणम्या जीव नइ ॥ कर्मपुद्गल नो ग्रहिवुं ॥ उपचयन ते चिण
नुं आबाधकाल मुकी नइ ज्ञानावरणी आदि पणाइ अं चिवउं । तइ प्रथम छिली स्थिति नइ विषइ । विसखही नास्थिति सिंचइ इम
जोल गिइ कतक हीनइ विषइ । विसखहीन [illegible] वइ ॥ बांधवउं ते ज्ञानावरणी आदि पणइ ॥ सिंध्यानुं वली कषायना
परिणाम थकी निकाचवुं । उदीरवुं ते अणउदइ आव्या नुं ॥ आकर्षी नइं विषइ घालिवुं ॥ खेदवुं ॥ ते [illegible] स्थिति नाइंय
थकी उदय अप्राप्त कर्मनुं उदीरणा नइ करवइ करी उदइ ना आवध की उदइ आव्यानुं लागविवुं ॥ निर्जरा ते क्रोधना अग
करवा थकी कुइ ॥ क्रोध दिकना क्षय इ थकी तस र्वनिर्जराकुइ ॥ निचि॰ ५ ३ ॥ ते त्रिणि काल नी ॥ पन्नवणा माहि लासं ग्रह
गाथा लखी इ छइ ॥ आय पइट्ठियं १ खितं पडुच्च २ अनुता न बंधीया ३ आलोग ४ चिण ५ उव चिण ॥ बंध उदीरण ॥ वेयतह नि
ज्जरा चेव ॥ १ ॥ आत्मप्रतिष्ठितआदि क्रोध आदिक छ्या ॥ २ खितं पडुच्च आदि क्रोध दिक छ्य ॥ अनुना ण बंधि आदि क्रोध दिक छ्या

जीवा णं चउहिं ठाणेहिं अट्ठकम्मपगडीउ चिणिंसु तं कोहेणं माणेणं मायाए लोभेणं एवं
जाव वेमाणियाणं २४ एवं चिणंति एसदंडउ एवं चिणिस्संति एसदंडउ एवामाणेणं तिन्नि
दंडगा एवं उवचिणिंसु उवचिणिंति एवं चिणिस्संति बंधिंसु उदीरिंसु ३ णिज्जरिंसु ३ निज्जरिंति
णिज्जरिस्संति जाव वेमाणियाणं एवमेक्केक्के पदे तिन्नि २ दंडगा सो णियव्वा जाव निज्जरिस्सं
ति चत्तारि पडिमाउ पं तं समाहिपडिमा उवहाणपडिमा विवेगपडिमा विउस्सग्गपडिमा

चिण आदि कभंजा ॥ प्रकार कह्या ॥ पुर्विइं निर्जरा कही ॥ ते निर्जरा ना प्रतिमादिक अनुष्ठान थकी थाइ । ते भणी ते कहइ छइ ॥ सु
त्र ३ ॥ ए विठाणा माहि विक्रमुं नइ कही छइ ॥ ईहीं कही ते चउ ठाणा माटइ एक सुत्रकुं कही ॥ एहनो अर्थ तो पुर्विइं कहि
उ छइ ॥ वली काइयक सुनाविवी नली आहीं कहीइ छइ ॥ समाहि॰ ॥ सुत्र अनइ चारित्र ते ह नइं विषइ प्रतिमा ॰ प्रत
ज्ञा ॰ अभिग्रह ते समाधि प्रतिमा ॥ अथवा । समाधि ॥ द्रव्य समाधि ते प्रसधि ते हनइं विषइ अभिग्रह ते समाधि प्रतिमा
उपधान ते तप विसय ॥ विवेक ते अशुद्ध ना त्याग ॥ तस्त्र सरीर ते हनो त्याग ॥ वित्रसय ॰ काउसग ॥

Dr. BHAU DAJI

नहा ॰ पुर्वादि चिहुं दिसि प्रत्येक प्रत्येक च्यार च्यार पाहोर काउसग एवं पोहोर १६ थाइ ॥ सुभद्रा एहवी जे संज्ञा वीइ छइ ॥ किहां
दीठी नही ते भणी लिखी नही ॥ महा भद्रा ते पुर्वादि चिहुं दिसिइं प्रत्येक २ अहोरात्रि काउसग्ग च्यार अहोरात्रिइं पुरी थाइ ॥
सर्वतो भद्रा ते पुर्वादि दस दिसिइं अहोरात्रिइं प्रमाण काउसग्ग ॥ दस अहोरात्रिइं पुरी थाइ ॥ मोक प्रतिमा ते मात्रक प्रश्रवण नइ
तिहां खुल्लिका मोक सोल भक्ति पुराइ ॥ वडी अढार भक्तिइं पुराइ ॥ जवमध्या ते दाति कवल आदिक इकरी आदि अतिपातली वधि
जाडी ॥ वज्रमध्या ते आदि अंति जाडी विचिइं पातली ॥ ए प्रतिमा ते जीवास्तिकाय छइ ॥ तद्विपरीत अजीवास्तिकाय कहइ छइ
॥ अस्ति॰ हुतु । छइ । अभइ हसइ ॥ काय॰ प्रदेसना रासि ते अस्तिकाय अथवा अस्ति सब्द प्रदेस ते हनो जे राशि ते
अस्तिकाय ॥ अस्तिकाय ते मुर्त्ती अमुर्त्ती बिहु भेद छइ तिहां अनुक्रम कहइ छइ ॥ धर्मास्तिकायादि अरूपी एअमुर्त्ती पुद्गल रूपी

चत्तारि पडिमाउ पं तं भद्दा सुभद्दा महाभद्दा सव्वतोभद्दा चत्तारि पडिमाउ पं तं खुड्डिया मोयप
डिमा महल्लिया मोयपडिमा जवमज्झा वइरमज्झा चत्तारि अत्थिकाया अजीवकाया पं तं
धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए चत्तारि अत्थिकाया अरूविकाया
पं तं धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए चत्तारि फला पं तं आमे णा
मं एगे आममहुरे १ आमे णामं एगे पक्कमहुरे २ पक्के णामं एगे आममहुरे ३ पक्के णामं एगे पक्कमहुरे ४
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं आमे णामं एगे आममहुरफलसमाणे ह्व ४ चउव्विहे सच्चे

ते नणी रूपी ते वर्ण गंध रस स्पर्श वंत ॥ तथा विपरीत ते अरूपी ॥ अनंतर जीवास्तिकाय कह्यु ॥ हिवइ ते हनो जे विसेष पुरुष ते ह
नुं स्वरूप फल दृष्टांत करी कहइ छइ ॥ आम॰ ॥ काचुं छतुं एक ॥ आममहुरे॰ ईषत् ते थोडुं सुं मधुर ॥ काचुं छतुं एक पाका सरिखुं मधुर अ
त्यंत मधुर ई स्वर्थः ॥ पाकुं छतुं एक आम॰ ॥ मधुर॰ ॥ ईषत् मधुर ई त्यर्थः ॥ पाकुं छतुं एक पक मधुर अत्यंत मधुर ई त्यर्थः ॥ पुरुष ते आम
॥ वय श्रुत इं करी नइ काचो ॥ आममधुर फलसमान ते उपसम आदि मधुर पणइं थोडुं ॥ अनइ काचो इ पणि पक मधुर फलसमान
इं ते प्रधान उपसमादि गुणयुक्त ॥ तथा पाको वय श्रुतिइं करी पाको ॥ पणि आममधु समानि ते उपसम आदि मधुर पणुं थोडुं ॥ ३ ॥ पा
को वय श्रुतिइं अनइ पक फल समान ते उपसम आदि गुण घणा ॥ ४ ॥

अनंतर पकमधुरउक्त॥ ते तो सत्यादिक गुणयोग थी थाइ॥ अनइ सत्यनो विपरीत ते मृषा॥ अनइ सत्यासत्य हेतु कारण ते प्रणि
धान ते इहां सूत्र कहइ छइ॥ काउज्जुययया०॥ कायानुं सरलपणुं॥ भासुज्ज०॥ भाषानुं सरलपणुं॥ भावउज्ज०॥ मननुं सरलपणुं॥ अ
विसंवा०॥ अविप्रतारिवउं॥ मोसे०॥ मृषा॥ कायअणुज्ज०॥ कायानुं असरलपणुं प्रवर्त्तविउं॥ ते कायमृषा भाषी नी असर
लाई॥ विसंवा०॥ विप्रतारिवउं॥ प्रणिधान०॥ व्यापार॥ मणप०॥ मननो व्यापार आर्त्त आदिक [illegible] ध्यानइ॥१॥ इम वचन॥२॥ काया॥३॥
उपगरणप्रणिधान ते लौकिक लोकोत्तर रूप उपगरण वस्त्र पात्र आदिकनो ते हनु संयमनइ काजइ५ असंयमनइ काजइ प्रवर्त्ताविवउं
ते उपगरणप्रणिधान॥४॥ एवं पंचेंदियाणं। निरइयाणं। जाव वेमाणियाणं॥ एकेंद्री आदिक वर्ज्या ते ते हनइ मनादिकनो

पं तं काउज्जुययया भासुज्जुययया भावुज्जुययया अविसंवायणाजोगे चउव्विहे मोसे पं तं काय
अणुज्जुययया भासुअणुज्जुययया भावअणुज्जुययया विसंवादणाजोगे चउव्विहे पणिहाणे पं तं
मणपणिहाणे वइपणिहाणे कायपणिहाणे उवकरणपणिहाणे एवं णेरइयाणं पंचिंदिया
णं जाव वेमाणियाणं २४ चउव्विहे सुप्पणिहाणे पं तं मणसुप्पणिहाणे जाव उवगरणसुप्पणि
हाणे एवं संजयामणुस्साण वि चउव्विहे दुप्पणिहाणे पं तं मणदुप्पणिहाणे जाव उवकरण
दुप्पणिहाणे एवं पंचिंदियाणं जाव वेमाणियाणं २४ चत्तारि पुरिसजाया पं तं आवतभद्द
ते णाममेगे णो संवासभद्दते १ संवासभद्दते णाममेगे णो आवातभद्दते २ एगे आवातभद्दते वि

नो ते हनइ प्रणिधान किहांथी॥ हिवइ प्रणिधान विसेष कहइ छइ॥ सुपणि०॥ रूडउ जे संयमार्थपणा थकी मनादिकनो
व्यापार ते सुप्रणिधान॥ ए मनुष्यनाइं दंडकमांहि एक संयती मनुष्यनइं चारित्रपरिणाम छइ। ते माटइ ए व्यापारि प्रणिधान
संयतीनइ ज होइ॥ दुपणिहाणे०॥ असंयतीमनइ अर्थिइ मनादिकनो व्यापार ते दुप्रणिधान॥ ए पांचेंद्रीनइ कहुं॥ पुरुषना अ
धिकार थकी वली अनेरइ प्रकारिं चउभंग सूत्र कहइ छइ॥ आवत०॥ पहिलो मेलापक करतां॥ भद्र०॥ देखीनादि सुख ८२
कार॥ संवास०॥ थम्या पछी॥ नो सद्द०॥ संडुं हीओ न करइ॥ संवास भद्रक॥ एक ठार हितां उपगार करइ॥२॥ नो आवाय भ०॥

मधुरवचन न बोलइ॥ वज्जं०॥ पाप अथवा वज्रनी परिइं तो रात हिंस्यादिक पाप॥ अप्पणो०॥ एक कलहादिक करतो पछइ प
श्चात्तापकै सहित पोताना पाप देषइ॥ पणि पारकुं न देषइ॥ परना पाप प्रति उदासीनपणा थकी॥१॥ परनुं पाप देषइ
पणि पोतानुं न देषइ॥ ते अभिमानी विकुं पाप कहइ॥ थए मइं दुःश्रुत कीधुं॥ अथवा उदीरइ॥ उपसमावा प्रवलो
प्रवर्त्ताविइ॥ अथवा वज्ज०॥ कर्म तेहनइ॥ उदीरइ॥ पीडानइ उपजावइ॥ करी उदयनइ विषइ पइसारिइं॥ एक आपणु व
ज्ज॥ पाप अथवा कर्म उपसमावइ॥ निवर्त्तावइ॥ पणि पारकुं नहीं॥ अब्भुट्ठे०॥ एक ऊठइ आगमनादिकइ उठही कस्नो थाइ

संवासभद्दए वि ३ एगे णो आवातभद्दए णो संवासभद्दते ४ चत्तारि पुरिसजाया पं तं अप्पणो णाममे
गे वज्जं पासति णो परस्स परस्स णाममेगे वज्जं पासति ४ चत्तारि पुरिसजाता पं तं अप्पणो णाममे
गे वज्जं उदीरेति णो परस्स ४ चत्तारि पुरिसजाया पं तं अप्पणो णाममेगे वज्जं उवसामेति णो पर
स्स ४ चत्तारि पुरिसजाया अब्भुट्ठेइ णाममेगे णो अब्भुट्ठावेति ४ एवं वंदेति णाममेगे णो वंदावेइ
४ एवं सक्कारेइ सम्माणेति पूएइ वाएइ पडिपुच्छइ पुच्छइ वागरेति सुत्तधरे णाममेगे णो अत्थ
धरे अत्थधरे णाममेगे णो सुत्तधरे चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो चत्तारि लोगपाला पं तं

॥ पणि उठाडइ नहीं ते सर्वहीं पाद्धिक॥ अथवा॥ चारित्रइ रूडो॥ एक उठाडइ पणि ऊठइ नहीं ते गुरु॥ एक ऊठइ उठाडइ ते
समोवडिना ३॥ बीजा उठाडइ उठइ नहीं ते जिनकल्पी। अथवा अविनीत॥४॥ इम वांदइ नहीं वांदावइ॥ सत्कारिइ तेव
स्त्रादिकनइ देवइ॥ सन्मान ते स्तुत्यादि॥ पूजइ ते योग्य पूजाइ॥ वावइ ते र[illegible] वइ परनइं। पणि नो वाच्या विइ०॥ परपांहि
पोतानइ गुण[illegible] ते कूपाध्यादि॥ वांदइ तो गइसी[illegible]॥ त्रीजइ ते गइ[illegible] एक ग्रंथ अर्थ[illegible] ते न
गइ॥ ३ चोथइ जिनकल्पी॥ जिहां न थाकइ थाति तिहां सघलइ उदाहरण पोतानी बुधि जोडिवुं॥ पडिपुच्छइ०॥ सूत्रार्थ ग्रहइ पुछइ॥ प्र
श्न करइ॥ वागरइ॥ पडुत्तर करि॥ ए सघला बोलनी चोभंगी करवी॥ एक सूत्रनो धरणहार पणि अर्थ नहीं। ते माटइ तेनो सूत्र ना
२॥ बीजइ ते गइ अर्थधर इति प्रिडत॥ त्रीजइ भाग पिंडत॥ चउथइ जडो॥ वली पुरुषना अधिकार थकी वलि पुरुषनुं स्वरूप कहे

हिवा लो गपालादिनु स्वरूप कहइ छइ ॥ इंद्र ॥ तपरमैश्वर्य थ्या गपनकी नाकर अथवा मोटा ॥ गा ॥ रक्षत ॥ शब्दात्तदीपबाचक्की अथवा आराधवायोग्य थकी ॥ ईहां जे दक्षिण नाया स्वामी तो श्री लोलोकपाल तत उत्तर नायास्वामी नो चो थउ ॥ एवं एगंतरिया ॥ स केइ नालोकपालनु तेनाम तेनामसमन कुमार ब्रह्म लोक शुक्र प्राणत इनालोकपालनुं नाम ॥ अनइ जे लोकै ईसानेंद्रना

सोमे जमे वरुणे वेसमणे एवं बलिस्स वि सोमे जमे वेसमणे वरुणे धरणस्स काल
वाले कालवाले सेलवाले संखवाले भूताणंदस्स कालवाले कोलवाले संखवाले से
लवाले वेणुदेवस्स चित्ते विचित्ते चित्तपक्खे विचित्तपक्खे वेणुदालिस्स चित्ते विचित्ते
विचित्तपक्खे चित्तपक्खे हरिसप्पभे सुप्पभे पभकंते सुप्पभकंते हरिस्सहस्स पभे सुप्पभे
सुप्पभकंते पभकंते अग्गिसिहस्स तेऊ तेऊसिहे तेऊकंते तेऊप्पभे अग्गिमाणवस्स
तेऊ तेऊसिहे तेऊप्पभे तेऊकंते पुन्नस्स रूते रूतंसे रूतकंते रूतप्पभे विसिट्ठस्स रूते
रूतंसे रूयप्पभे रूयकंते जलकंतस्स जले जलरते जलकंते जलप्पभे जलप्पभस्स जले
जलरते जलप्पभे जलकंते अमितगतिस्स तुरियगती खिप्पगती सीहगती सीहविक्कमगती
अमितवाहणस्स तुरियगती खिप्पगती सीहविक्कमगती सीहगती १ वेलंबस्स काले महाकाले
अंजणे रिट्ठे पभंजणस्स काले महाकाले रिट्ठे अंजणे घोसस्स आवत्ते वियावत्ते णंदियावत्ते
महाणंदियावत्ते महाघोसस्स आवत्ते वियावत्ते महाणंदियावत्ते णंदियावत्ते २० सक्कस्स सो
मे जमे वरुणे वेसमणे ईसाणस्स सोमे जमे वेसमणे वरुणे एवं एगंतरिया जाव अच्चुयस्स
चउव्विहा वाउकुमारा पं तं काले महाकाले वेलंबे पभंजणे चउव्विहा देवा पं तं भवणवासी वाणम
तरा जोतिसिया विमाणवासी चउव्विहे पमाणे पं तं

म ॥ तम हाअठ ॥ लोतिक सेंद्रस्सार अच्युतेंद्र नालोक पालनानाम सरिखा ॥ कालादि ॥ वेलंब ॥ नाम ॥ एवं चउविध देवताकह्या ॥ तेस व्वीप्रमाण छइ ॥ ते सर्व प्रमाणप्रक

दव्वप्पमाण ॥ जाणवुं तप्रमाण ॥ अथवा जेणे करी मवी इत प्रमाण ॥ दंडव ॥ ४ ॥ धनो ॥ तथा धनुष्यादिकइं करी सरी
र ॥ दिअर्थ ॥ अथवा इ ॥ विंदु द्रव्यमंगुलादिक ॥ द्रव्य जीवादिकनु अथवा घण इत्यनुं जीवधमादिकनुं ॥ अथवा प
रमाणवादिद्रव्य नइ विषइ ॥ अथवा पर्यायइ मनइ विषइ ॥ एतलानइ विषइ ॥ अथवा एतलानुं प्रमाण तइ द्रव्य प्र
माण ॥ द्रव्य यथा ॥ सपलइ जाणिवके ॥ तिहां द्रव्य प्रमाण बे कहि छइ ॥ प्रदेस निष्पनु अनइ विभागनिष्पनु ति
हां परमाणवादि अनंत प्रदेशिक पर्यंत ते प्रदेस निष्पन्न ॥ विभाग निष्पन्न मान ॥ ते पंचविध इमान तथा ऊ
न ॥ सइ आदि रसमान तमान वितिय ॥ उन्मान तत्रो तु आदि ॥ अवमान तहस्तादि ॥ गणितातत एकादि ॥ प्रतिमानते गुंजा
दिवस्त्रादि ॥ क्षेत्र ॥ आकास ते क्षेत्र प्रमाण ॥ प्रदस निष्पन्नादि बे कहि छइ ॥ तिहां प्रदेस ते एक प्रदेसावगाढ आदि ॥ अ
संख्येय प्रदेसावगाढ पर्यंत ॥ विभाग निष्पन्न तत्सं मेयें अंगुलादि ॥ काल ॥ समयाता तेहनु नाम विभक्ता छइ ॥ प्रद

दव्वप्पमाणे खेत्तप्पमाणे कालप्पमाणे भावप्पमाणे चत्तारि दिसाकुमारि महत्तरियाओ पं तं रूया
रूयंसा सुरूवा रूयावती चत्तारि विज्जुकुमारि महत्तरियाओ पं तं चित्ता चित्तकणगा सतेरा

स निष्पन्न एकसमय स्थित्यादि ॥ असंख्येय समय पर्यंत ॥ विभाग निष्पन्न ते समय आवलिकादि ॥ ते अनइ कालनो
द्रव्य इत्यादि ॥ ताइ द्रव्य प्रमाणमा हिं आवइ ॥ अलगा कांइं कह्यां ॥ एतला सर्व ॥ जीवादि द्रव्य विशेष पणइ करीए वि
कनइ तद्नापर्याय पणुं जाणिवुं ॥ अनइ द्रव्यनइ आश्रिपणुं कहिउं ॥ १ ॥ साव इ ॥ अथवा भाव नुंपर्याय प्रमाण ते भाव प्रमा
ण ॥ ते गुण नयसंख्याए त्रिकालादि ॥ तिहां गुण ते जीवना ज्ञानदर्शनादि गुण ॥ तिहां ज्ञान ते प्रत्यक्ष अनुमान ॥ आगम रूप
प्रमाण इति ॥ नय ते नैगमादि ॥ संख्या ते एकादि ॥ हिवइ देवता अधिकार नइ विषइ देवलोक सूत्र ४ कहीइ छइ ॥ दिसाकु
मारी ॥ महत्तरिका ॥ अति प्रधान ते दिक्कुमारी महत्तरिका ॥ अथवा तद्मा हिं अतिहिं मोटी ते ॥ दि ॥ मध्य मरुचकनो
वस नारी ॥ जीन मात्र अरिहंतनु ॥ नालछेदादिक करइ ॥ विज्जु कुमारी उ महत्तरिका ते विदिसि रुचक मां वसनारी ॥ जीम ती अ
अरिहंत थकी आरे देवीहाथि दीवा रिदसिइ गाइ ॥ ए देवता कह्या ॥ ते संसारी कह्या ॥ तेहनो संसारस्वरूप कहइ छइ ॥

भगंतरया ॥
१ २
३ ४
५ ६
७ ८
१० १२
उत्तर पनत्रथ ॥ एगंतरीया ॥ कल्प पालपरि पकलोकपा लनइ करव ॥

८३

संसारखुं० ॥ अरऊं परऊं समवुं ते संसार ॥ जीवपुद्गलरूपद्रव्यनुं समवुं ते द्रव्यसंसार ॥ चउदराजमाहि समवुं ते क्षेत्रसंसा
र ॥ कालते दिवसिपक्षादि । तथा पल्योपमादिकविषे पलटावुं नारकादिक जीवनइ जीवनइ ते कालसंसार ॥ संसा
रस्थाना अर्थ उभाण अनइ उपयोगी अथवा उदयिकादिक तेहनां थकुं ॥ अथवा वावलीदिकनुं त्य परिणाम ते एहनुं स्वरूप जे ते
भावसंसार ॥ एहुआदिक संसार छइ छिवाद नइ विषइ अनेकनयें करी विचारीइ ते समणइ छिवादक कहइ छइ ॥ दृष्टि० न
यें ते जिहां बोलीइ अथवा तेहनो जिहां नामली इइ । अथवा तिजिहां पडइ छइ० ॥ अवतरइ ते छिवाद ॥ अथवा छिवात घाति
कहीइ ॥ परिकाम० सिद्धगंडीयादिकनी विचारणा ॥ सुत्राइं० बावीस सूत्र विकुनइ नयइं विचारतां ८८ सूत्र थाइ ॥ पु
वगए० एसमस्तसूत्रमाहि पहिलुं गणधरइ । पुर्वरच्यां ते समणी पुर्व तेहनां नाम प्रमाण ॥ तद्यथा ॥ उपाय० ॥१॥ अग्गणी
यं २ वीरियं ३ अधिनथिउववायं ४ ॥ नाणप्पवाय ५ सह ६ आयप्पवाय ७ कम्म ८ ॥१॥ पुर्वं पच्चखाणं ए विज्जणुवा०

सातामणी स्रूस्रणं दविंदस्स देवरन्नो मज्झिमपरिसाए देवाणं चत्तारिपलिउवमाइं ठि
ती पन्नत्ता ईसाणस्स देविंदस्स देवरन्नो मज्झिमपरिसाए देवाणं चत्तारि पलिउवमाइं ठिई प
न्नत्ता चउविहे संसारे पं तं दव्वसंसारे खेत्तसंसारे कालसंसारे भावसंसारे चउविहे दि
ट्ठिवाए पं तं परिकम्मे सुत्ताइं पुव्वगए अणुओगे

अवझपाणाउ ११ किरियाविसाल पुर्वं १३ चोदसं
मिबिंदुसारं ३ १४ ॥ २ ॥ उप्पाए पयं कोडी ॥१॥ अग्गेणीयंमि छन्नउइ लरका ३ सहिंलरकाउ अथिनथिमि ॥४॥ ३ एगपऊणा कोडी ॥
नाणपवायंमि होइ पुव्वंमि ॥५॥ एगा पयाण कोडी । छहस्सया सच्चवायंमि ॥ ६ ॥ ४ ॥ छवीसं कोडीउ ॥ आयप्पवायंमि होइ पयसं
रवा ४ ॥ कम्मप्पवाय कोडी । असीलरकहिअमिहिय ॥ ८ ॥ ५ ॥ चुलसीइसयसहस्सा ॥ पच्चखाणंमि वन्नियापुव्वे ॥ ९ ॥ एकापयसा
णकोडी । दससहस्स अहिया अणुप्पवाए ॥ १० ॥ ६ ॥ छवीसं कोडीओ ॥ पयाण पुव्वे अवंझनामंमि ॥ ११ ॥ पाणाउम्मि य कोडी । छपन्नलख
खहिआउ मिहिया ॥ १२ ॥ ७ ॥ नवकोडीउ संखा ॥ किरियविसालंमि वन्निया गुरुणा ॥ १३ ॥ अद्धंतेरसलरका ॥ पयसंख्या बिंदुसारंमि
॥ १४ ॥ ८ ॥ तिवाकल्हा उ संखा ॥ कि तहस्सइविषइपरस ... पुर्वइ ॥ अणुरुप० सुत्रना सह सारिखो ॥ अ
थवा अनुकूल ... तानी अर्थ सघातिए ... ॥ अंग प्रविष्ट ते अंगइ मडी ... ॥ तेयो ८८

प्रायश्चि ग । तिहां तीर्थंकरनां पहिलुं सम्यक्त्व मिथ्या आदि पुर्वभवनो सर्वसंबंध कहीइ जिहां ते मूलप्रथमानुयोग जिहां ॥ कुलगरादिकनो संबंध
त्त।उ.४ कहीइ ते गंडिकानुयोग ॥ एपुर्वमाहितो प्रायश्चित्तविधिकुलो । तेसणी प्रायश्चित कहइ छइ ॥ सूत्र २ नाणपा० ॥ ज्ञान नइ प्रायश्चि
त्त ते ज्ञानप्रायश्चित्त जे सणी पापछेदइ ते सणी प्रायश्चित ॥ अथवा बाहुल्य पणाइ चित्त नइ साधइ ते प्रायश्चित्त ॥ एणाइ कारणि ज्ञान
प्रायश्चितक कहीइ ॥ इमदर्शन ॥ चारित्रप्रायश्चित्त ३ ॥ वियत्त० व्यक्तगीतार्थ तेहनुं कृत्य० कार्य ते प्रायश्चित ॥ गीतार्थ गलि
तो होतुं मारके आलोतां जिकांइ गीतार्थ करइ ते सर्व पापनुं विसोधनारूप छइ ते समणी व्यक्तकृत्य प्रायश्चित कहीइ ॥ अथवा ज्ञानादि
वसुद्धि निमित्त छइ जे प्रायश्चितली इइ आलोचनादिक करीनइ ते ज्ञानप्रायश्चित ॥ विशेषइ प्रस्ताव ... सोगपणाइ सावद्य ... गीता
र्थ दीधकं ते विदयु कृत्य प्रायश्चित एतलइ मध्यस्थ गीतार्थइ दीधकं ते दिकृत्य ॥ पाठांतरइं ॥ वियत्तकिच्चे० प्रतीत कारीके कार्य
वियाख्यादि ॥ प्रतिसेवणा० ... । ते परिणमनासदधकी ॥ अथवा सविवा योग्य वस्तुना सेवधकी ... ॥ तिहां परिणा

चउव्विहे पायच्छित्ते पं तं णाणपायच्छित्ते दंसणपायच्छित्ते चरित्तपायच्छित्ते वियत्तकिच्चे पायच्छित्ते
चउव्विहे पायच्छित्ते पं तं पडिसेवणापायच्छित्ते संजोयणापायच्छित्ते आरोवणापायच्छित्ते पलिउंचणा

मनासदधकी ते कारणइं सेवइ ते कुसलपरिणाम ते कल्पप्रतिसेवणा । अनइ रागद्वेषइ सेवइ ते पाडुउ परिणाम ते दर्प्पप्रति
सेवणा ॥ सेववा योग्य वस्तु । ते प्रतिसेवणा ॥ तेहना २ प्रकार ॥ मुलगुणनी प्रतिसेवणा पांचइं ते छइ हिंस्यादि ॥ उत्तरगुणपडिसेव
णा ते पिंडविसुध्यादि ॥ तेहनुं जे प्रायश्चित ते पडिसेवणा प्रायश्चित ॥ संजो० सरिषा दोषघणा एकठा मेली नइ एकउ प्रा
यश्चित देवुं ते संजोयणा प्रायश्चित ॥ एक अपराधनुं प्रायश्चित दीधुं अनइ वली अनेक दोष सेव्या ॥ तिवारिइं दसदिहावली
ते दोष सेव्यो ॥ तिवारिइं वली ते रूप प्रायश्चित आव्यो ते आरोवणा प्रायश्चित ॥ यथा ॥ पांच दिहाडानुं प्रायश्चित लीधुं अनइ
वली ते दोष सेव्यो । तिवारिइं दस दिहाडी वली ते दोष सेव्यो तिवारिइं ॥ दिहाडा इमछ मससवाडा लगइ ॥ ते ऊपरांति तप नथी ए
तीर्थनइ विषइ ॥ सप्ततपात एमाहिं जि आवइ ॥ ३ ॥ पलिउंचणा० परिकुंचन० ॥ अपराधनुं द्रव्यादिक आदि करी परिकरइ ते
मु ॥ इंद्रपसविभनइ अचित्तक हइ ॥ छित्र अनेरू कहइ ॥ कालआश्री सुसकालइ दुर्भिक्षक हइ ॥ भाव आश्री नीरागनु सरागक हइ
विस्तारइ हनउ अवहारथको जाणिवो ॥ तेहनुं जे प्रायश्चित । देवुं ते परिकुंचना प्रायश्चित ॥ ४ ॥ हिवइ प्रायश्चित तो काल नो अप

*तथात्रा
व्यानर
पिंडप्रहि
वाथकी।
तपाणि
जीनिहा
थिसदि
उातदप
।णिअस्था
रूताल
दपणि
आक्षीक
भी।का
तादाथ
।पत्कन
मेली न
इ। उप्रा
यं।अन
देवुं।
तसंजो
यणा

साइसी जइ तेनलो कालकहइछइ॥ पमाणकाल॰॥ प्रमीयते॰ जीणइ करी सोवरसपल्योपमादि तेमाणकाल॥ ते
अद्धा कालहु तेविशेष दिवसादिमनुष्य दिन अपर सीइ विशेषमाणकालो॥ दिवसप्रमाण इम कीहइ छइ॥ चउ पोरसी उ दिवसे॥
राईबिउ पोरसी चेव॥१॥ अहाति॰॥ यथायु॰॥ नारकादि ताबाल तेदिइ आऊखुं तेयथायु॥ ते इहुं ताहिश दिप्पा निरकरो मइं
बांधि उ कें तेहसयकी॥ केनारकादिपणइ जीवमइ रहिवइ ते यथायुनिर्वृत्तिकाल॥ अथवा जिम आउखुं बांधिउं तिम आऊ
पानोकाल ते यथानिर्वृत्तिकाल॥ ए तलइ नारकादि सवनइ विषइ रहिवउ एहपणि अद्धाकाल छइ॥ आऊषा कर्म नइं ले
गवइं सर्वसंसारी जीवनइं वर्त्तणारूप ते आऊखानुवृत्तिकाल॥२॥ मरवानो अवसर ते मरणकाल। एपणि अद्धाकालनो
जि विशेष॥ पाणिमरणि विशेष्योडछउ ग्रह्यो। मरवानो समय ते मरणकाल ३ अद्धाकाल॰॥ अद्धाकाल॰ कालजिए विशेषनइं
कालज्ञिवइपणि कालस इहुंशता कालवर्णादिक प्रमाणि थाइ। तेसंकाटालवा भणी अद्धाकाल कहिउं ते कालनउ कालात मर
णकाल ते सूर्यनाचालवारूप मनुष्यक्षेत्रमाहिं समय आवली आदि पुद्गलपरावर्त्तपर्यंत ते अद्धाकाल ४॥ एकालइम

पायछित्त चउव्विहेकाले पं० तं० पमाणकाले अहाउयनिव्वतिकाले मरणकाले अद्धाकाले चउव्वि
हे पोग्गलपरिणामे पं० तं० वन्नपरिणामे गंधपरिणामे रसपरिणामे फासपरिणामे भरहेरव
तेसु णं वासेसु पुरिमपच्छिमवज्जा मज्झिमगा बावीसं अरहंता भगवंता चाउज्जामं धम्मं पन्नवयंति
तं० सव्वातो पाणातिवायाओ वेरमणं एवं मुसावायाओ अदिन्नादाणाओ सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं।

नापर्याय मुंचऊठाणुं कहिउं॥ विवइपर्याय अधिकार थकी पर्यायरूप परिणामनुं चउठाणुं कहइ छइ॥ परिणाम॰ पुद्गलि
अवस्थाथकी अवस्थांतर पोहोचवुं॥ तेसर्वथा पुद्गला अवस्थइं नरहइ॥ अनइं सर्वथा विणसइं पणि नही॥ जिमघृतघो
रूवयुं वस्त्र जीर्ण थयुं इत्यादि॥ वर्ण प॰॥ कृष्णादिक वर्णनो परिणाम॰ अनुसरवुं॥ अथवा अनेरा वर्णमइं मूकि
इ कृष्णादिक वर्ण पुद्गल नुं थावुं ते वर्ण परिणाम॥ एम गंधादि॥ ए अजीव परिणामकहिउं॥ हवइ जीव परिणा
मकहइछइ॥ जिम निवइंधुं आरितिहि तिवांकइ जिहनइं विषइ॥ तेथकु यमि॥ बहिद्धा॰॥ मिथुनपरिग्रहो तेहनो

८५

जीतवडु। ७-२

जाणइ॥ आदान॰ परिग्रह अथवा ग्रहीइ ते आदान एतलइ ग्रहिवायोग्यवस्तु ते धर्मोपकरणपणि होइ ते टालवा नइक
हइछइ॥ बहिद्धा॰॥ धर्मोपगरणथी बाहिर वस्तु ते परिग्रहिइ॥ ईहां मिथुन ते परिग्रहनइ जि विषइ छइ॥ ते सर्व आणाय
हीसनी कांइ सोगवाइ नही॥ तेसणं मिथुनपरिग्रह अभाहि आवइ॥ आर जाम अनइं पंच याम ते सच्चिमा रूपे थाइं॥ ऋजुजडा
इ॥ ऋजुप्रज्ञा जिननाबारा ज ग्रात ह्मनइं परिग्रह थयो॥ इमकहइ छइ ते मैथुनवर्जिवा समर्थ नहो॥ विचला अनइ विदेह नाती
र्थंकरना साधु ऋजुप्राज्ञ॥ ते परिग्रह वर्जिवइ मिथुनपणि छांडइ॥ पुरिमा उज्जुजडा उ॰॥१॥ पुरिमाणु दुविसोज्झा उ॥२॥ गाथा॥

सव्वेसुणं महाविदेहेसु अरहंता भगवंता चाउज्जामं धम्मं पन्नवयंति तं सव्वाउ पाणातिवायातो वे
रमणं जाव सव्वाउ बहिद्धादाणाउ वेरमणं। चत्तारि दुग्गती पं० नेरइयदुग्गती तिरिक्खजोणियदुग्गती म
णुस्सदुग्गती देवदुग्गती। चत्तारि सोग्गईओ पं० तं० सिद्धसोगती देवसोगती मणुयसोगई सुकुलपच्चा
याति चत्तारि दुग्गता पं० तं० नेरइयदुग्गया तिरिक्खजोणियदुग्गया मणुस्सदुग्गया देवदुग्गया। चत्ता
रि सोग्गया पं० तं० सिद्धसोग्गता जाव सुकुलपच्चाया ४ पढमसमयजिणस्स णं चत्तारि कम्मंसा खवी
णा भवंति तं णाणावरणिज्जं दंसणावरणिज्जं मोहणिज्जं अंतराततं ४ उप्पन्ननाणदंसणधरेणं

॥ माहाव्रतनपालइ ते दुर्गति जाइ। तेसणं दुर्गति दुर्गतीयाकहइछइ॥ मनुष्यदुर्गति ते दुःखीया मनुष्यनी अवतारइ॥ देवदु
र्गति ते कल्विषीयादिकनो अवतारइ॥ मनुष्य सुजाति ते कुलीनो थाइ॥ सुकुलपच्चाया॰॥ ते देवलोकथी नइं ईक्ष्वाकादि कुल
नइ विषइ आविवउ। अथवा जन्मपामिवो॥ ते सुकुल प्रत्यायाति आविवुं॥ अथवा प्रत्याजाती॥ ते मनुष्यपणुं॥ दुर्गता॰॥ दुर्गति
या। ते दुर्गतिनां जीव॥ अनंतर सिद्धादिकथा॥ ते सिद्ध ते आठकर्मनइं क्षयइं थाइ ते आत कर्मक्षय करवानो अनुक्रम कहइछइ
पढमसमय॰॥ प्रथमसमयइ जिनसंजोगी केवली थया छइं तेहइं च्यार कर्म ते समुखइ। अंसात तेहनाभेद ज्ञानावरणादि

खीणा स० क्षीणघाती ज्ञानावर्णादि रूपनुं जे ज्ञान अनइ दर्शनि धरइ तेउ त्पन्नज्ञानदर्शनधर सर्वपदार्थसाक्षात जाणइ
कांइ छानुं नथी ते अरहा अथवा रहवा दि पुजानि योग्य तिस अरहंत रागादिकना जीपवाथकी जिन केवल० परिपूर्ण
ज्ञानछइ जेहनइ त्यातइ ते केवली चत्ता० च्यारि कर्मना अंसखेवइ पढमसमयसिद्ध० कर्मक्षिपविवानो अनइ सिद्धथा
तानो एक जि समयनामं सवधकी प्रथम समयइ सिद्ध इम कहीइ सेजु० ते समकालि खेपवइ एसिद्धकह्या हिवइ असि
द्ध नइ होस्या दिविकार जुइ तिरुषी तेकहइ छइ हासनुं जे रूपजे वकं कुइ पासित्ता० लोडादिकनो खेष्टा देखीनइ साधि
आ० कांइ हास्यकारी जे बोलीनइ संजन० तथा विद्वाक्य खेष्टादिक संजा रियइ सुताए० कांइ एक वचनसोसलीनइ
अरहा जिणा केवली चत्तारि कम्मंसे खवेंति तं वेदणिज्जं आउयं नाम गोतं पढमसमयसिद्धस्स
णं चत्तारि कम्मंसा जुगवं खिज्जंति तं वेयणिज्जं आउयं णाम गोतं चउहिं ठाणेहिं हासुप्पत्ती सि
×पासित्ता- ता भासित्ता सुणेत्ता संभरेत्ता चउव्विहे अंतरे पं तं कट्ठंतरे पम्हंतरे लोहंतरे पत्थरंतरे एवामे
अ ३ व इत्थिए वा पुरिसस्स वा चउव्विहे अंतरे पं तं कट्ठंतरसमाणे पम्हंतरसमाणे लोहंतरसमाणे पत्थरंत
रसमाणे चत्तारि भयगा पं तं दिवसभयते जत्ताभयते उच्चत्तभयते कब्बालभयते चत्तारि पुरिस
२ न वली असिद्धनुस्वरूप कहइ छइ अंतरि० आतरं तेविसेष कंठंतर० बिहु काष्टमहा रूपनीप जावादिकइ विसेष तथासामा
न्यकाष्ट अनइ चंदन पम्ह० पासर गोडी आदि लोहंतर० असंतती धार इंकरी आंतरं पठेतरात चिंतामणि काकरि
आतरं एवामव इत्थी० स्त्रीनइ स्त्रीयां तरनी आपक्षाइ आंतरं पुरुषनइ पुरुषांतरनी आपक्षाइ आंतरं काष्टांतर तुल्य
आंतरं ते पदवी त्यागपवणादिकइंकरी पम्ह० अनइ जिवस्त्रांतरि समानि आंतरं ते सुकुमालवचनइं करी लोहंतरस
मानि आंतरं ते स्नेहनइ छेदवइकरी परीसहादिकनइ विषइ असंगपणइकरी पत्थंतरसमानि ते चिंतामणि मनोरथपूरक
पणइकरी विसिष्ठगुणइकरी अनइ पदवी त्यागपणइकरी जाणिवउं वली पुरुषनुं विसेषांतर कहइ छइ चत्तारि भयगा
स्तक जेहनइ पोषीइ ते भृतक कर्मकरइत्यर्थ दिन दिन प्रति इं मजुरी आपी कामकराबीइ ते दिवसिनो भृतक ---- देसांतरि जात्रा ॥ ८५

वाटनो सषाथो ते यात्रा भृतक २ उच्च० जेमुलनुं अनइ कालनुं प्रमाण करी यथावरसिं कामकरावीइ ते उच्चितो भृतक ३ क
बु० भूमिनाषणनहार उड्डोडादि ते कबाड भृतक ते बेहाथ अथवा त्रिणि हाथ भूमि षणिवा मठुं आतलुं मुल आपसुं ४ एलौकी
क पुरुष कह्या हिव इलोकोत्तर पुरुषनो विसेष कहइ छइ संपागडउ० आगीतार्थ समीपि इं अकल्पनी कल्पदिकासेवणहार
निपडिच्छ० गीतार्थ समीपि अकल्पनीकल्पादिकनउसेवणहार ना० एहवो नहीं एतलइ आगीतार्थ समीपि इं अकल्पनीकल्पनो
गवइ पणि गीतार्थ समीपि इं नहीं ते बुकसथी जइ ते बीजइ गीतार्थ समीपि सेवइ आगीतार्थ समीपि इं न सेवइ तेकषा
यकुशील श्री जइ बकुशनी पिइं सेवइ एप्रतिसेवना कुशील एत्रिजुं नो गिहमो टइकारणि इं बुकसादिनी यतनाइ नो धरणी सेवइ
त्ता तापं तं संपागडपडिसेवी णाममेगे णो पच्छन्नपडिसेवी पच्छन्नपडिसेवी णाममेगे णो संपाग
डपडिसेवी एगे संपागडपडिसेवी वि पच्छन्नपडिसेवी वि एगे णो संपागडपडिसेवी णो पच्छन्नप
डिसेवी चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सोमस्स महारन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पं तं कणगा
कणगलता चित्तगुत्ता वसुंधरा एवं जमस्स वरुणस्स वेसमणस्स बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइ
रोयणरन्नो सोमस्स महारन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पं तं मित्तगा सुभद्दा सुविज्जुता असणी एवं जम
स्स वेसमणस्स वरुणस्स धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्नो कालवालस्स महारन्नो
चत्तारि अग्गमहिसीओ पं तं असोगा विमला सुप्पभा सुदंसणा एवं जाव संखवालस्स भूताणंदस्स णं णागकु
मारिंदस्स णागकुमाररन्नो कालवालस्स महारन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पं तं सुणंदा सुभद्दा सुजाता सुमणा
अथवा कारण विना पासत्थादि सेवइ चउथइ लोंगई सेवइ ते निर्ग्रंथ अनइ स्नातक ४ आंतरां अधिकार माटि इं देवीगणानुं आंत
रुं कहइ छइ वइ रोयण० विविधप्रकारि इं जे दीपइ ते विरोचन उत्तर दिसि ना वासी तेहनो इंद्र ते विरोचनेंद्र एवं यिम कालवा
लोनी अग्रमहिषीनां जिनाम ते कालवाल

मलपाल ॥ संखपाल लोकपाल नाम तेहनो इं ॥ जाव माहिं इं कोलवाल २ सेलपाल ३ संखवाल ४ इतिः ॥ अणन्द ... तिणि ... धरणेंद्र ॥ असा
सदुद्धा ... इंद्र तस ॥ विज्जुदेव ॥ रविकांत २ अ॰ मिमिरद ३ उस ४ जलकांत ५ अमितिंग ६ वेलंब ७ घोष ८ ए हना लोकपालनी
चोथे नायधरनी ॥ लोकपालनी नायीसरिषा नाम ॥ उत्तरे नाइंद्र ॥ विज्जुदाली १ ॥ हरिसह २ ॥ अग्गिमानव ३ विसिस्ट ४ जलप्रभ ५

एवं जाव संखवालस्स जहा धरणस्स एवं सव्वेसिं दाहिणिंदलोगपालाणं जाव घोसस्स जहा भूताणंदस्स
एवं जाव महाघोसस्स लोगपालाणं कालस्स णं पिसाइंदस्स पिसायरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पं तं क
मला कमलप्पभा उप्पला सुदंसणा एवं महाकालस्सवि सुरूवस्स णं भूतिंदस्स भूतरन्नो चत्तारि अग्गमहि
सीओ पं तं रूववती बहुरूवा सुरूवा सुभगा एवं पडिरूवस्सवि पुन्नभद्दस्स जक्खिंदस्स जक्खरन्नो च
त्तारि अग्गमहिसीओ पं तं पुन्ना बहुपुत्तिता उत्तमा तारगा एवं माणिभद्दस्सवि भीमस्स णं रक्खसिंदस्स रक्ख
सरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पं तं पउमा वसुमती कणगा रयणप्पभा एवं महाभीमस्सवि किंनरस्स
णं किंनरिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पं तं वडेंसा केतुमती रतिसेणा रतिप्पभा एवं किंपुरिसस्सवि
सप्पुरिसस्स णं किंपुरिसिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पं तं रोहिणी णवमिता हिरी पुप्फवती एवं मा
हापुरिसस्सवि अतिकायस्स णं महोरगिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पं तं भुयगा भुयगवती महाक
च्छा फुडा एवं महाकायस्सवि गीतरतिस्स णं गंधव्विंदस्स चत्तारि अग्ग पं तं सुघोसा विमला सुस्सरा
सरस्सती एवं गीयजसस्सवि चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पं तं चंदप्पभा
दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा एवं सूरस्सवि णवरं सूरप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा इं
गालस्स णं महागहस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पं तं विजया वेजयंती जयंती अपराजिया एवं सव्वेसिं ८६

अमितवाहन ६ प्रभंजन ७ महाघोष ८ ए हना लोकपालनी नायीनानाम ॥ एतानां लोकपालनी नायसिरिषा नाम ॥ [illegible]
हिक ॥

अवरअंतरा नो अधिकार थको अ चिंतनुं अंतरं कहइ छइ ॥ चत्तारि गोरस ॥ गायनो रस तेह रसनी उत्पत्ति ॥ महिषी आ
दिनादुध मइ विग्रह। पुलि गोरस सघ प्रवत्तिइं ॥ सरीर नइं मननइं विकार करइ ते भणी विगई ॥ स्नेह रूप विगइ तस्नेह विग
इं ॥ तेल घी वसा ॥ हाडमाहिलु तस्स चरबी तेहनुं ऊकाली घीक रिछइ ॥ मा खण ॥ महारस पणइ करी महाविकार नो कारणारिमा
टइ महाविगइ ॥ अथवा मा टा जीवनाघात ना कारण माटइ महाविगइ ॥ खीर ॥ दहिं ४ नवणीयं ४ घयं ४ महातेल ॥ ४ गुड
महग्गहाणं जाव भावकेउस्स सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो चत्तारि अग्गमहि
सीओ पं तं रोहिणी मयणा चित्ता सोमा एवं जाव वेसमणस्स ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो
सोमस्स महारन्नो चत्तारि अग्ग पं तं पुढवी राती रयणी विज्जू एवं जाव वरुणस्स चत्तारि गोरस
विगतीओ पं तं खीरं दहिं सप्पिं णवणीतं चत्तारि सिणेहविगतीओ पं तं तेल्लं घयं वसा णवणीतं
चत्तारि महाविगतीओ पं तं महुं मंसं मज्जं णवणीतं चत्तारि कूडागारा पं तं गुत्ते णाममेगे गुत्ते गुत्ते णाममे
गे अगुत्ते अगुत्ते णाममेगे गुत्ते अगुत्ते णाममेगे अगुत्ते एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं तं गुत्ते णाममे
मज्ज मधु मंसं ३ वेव तहा ॥ उग्गाहिमयं च दसमा ॥ गाइनुं १ भइसिनुं २ ऊंटडीनुं ३ बालीनुं ॥ गाडरीनुं एपांच दुध विगइमाहिं ॥ बा
जी विगइ माहिं नही ॥ ऊंटडीनुं दधि नथाइ ॥ बीजा एव दही विगइमाहिं ॥ एच्यारि नामा भणाते विगइमाहिं ॥ तेल ४ ॥ तिलनुं
अलसी एतर कसुंबानुं ॥ सरिसी ॥ एच्यारि विगइमाहिं ॥ बीजा तांडोली आदि विगइमाहिं नही ॥ गुल दोलो। घरा ... सल
चरा खवर ... विगइमाहिं ॥ दसमी विगइ पकवाननी ॥ अचितना अधिकार कह्या ॥ हिवइ घरनाइ प्रांत के हइ छइ सूत्र ४ कूड ॥ सिघर
टइ ॥ अथवा सुंईहइ केवली बीजउ गुप्त तिबार ... दवार करी ॥ अथवा पुविहुदा कोटइतो हिवण पाणि दो कि कै छइ ॥ इम पुरुषलु
गडइ करी गुप्त ॥ अनइ बीजुं अडी जी प्रवकरी गुप्त ॥ अथवा पुवि दो कि उहतो टिंवणा पाणि दो कि उ छइ ॥ ... तां गइ साधु ॥ बीजे
इलाहि ... गडइ दाकि ... अव्रती ॥ २ ॥ बीजइ जिन कल्पी ॥ ३ ॥ वापइ असंयती ॥ ४ ॥

ऊटना सरिखो आकार छइ जे साला नो ॥ ते कूटागारसाला ॥ गुप्ता नाम मेगे गुप्ता ॥ एक कूडागारनी परि इ जाणिवुं ॥ एवामेव
० ॥ इम ४ ॥ गुप्त ते परिवारि करी वीटी अथवा घरमाहि रह्यो ॥ अथवा वाडि इं टींको ॥ अथवा गुहस्थ साव बल बलवान
हो ॥ वली बीजउ गुप्त ते इंद्री गुप्ति इं पणि करी ॥ पहिलइ सांगइ आर्या रि बीजइ सांगइ अव्रतिणी ॥ त्रीजइ सांगइ राजस
ती गुफा माहि रह्यो ॥ चोथइ त्यागिणी को कसात्यां थई ॥ ते प्रिं इंद्रीय पणि करिके ॥ इंद्री ते अवगाहना सहित छइ । ते काल
अवगाहना के रूप छइ ॥ अवगाहइ जीव जेहनइ विषइ ते अवगाहना सरीर ॥ तिहां द्रव्य अवगाहना ते अनंते द्रव्य

गा गुत्ता ४ चत्तारि कुडागारसालाउ पं० तं० गुत्ता णाम मेगे गुत्तदुवारा अगुत्ता णाम मेगा अगुत्त
दुवारा अगुत्ता णाम मेगा गुत्तदुवारा अगुत्ता णाम एगा अगुत्तदुवारा एवामेव चत्तारि त्थीउ पं०
तं० गुत्ता णाम मेगा गुत्तिंदिता गुत्ता णाम मेगा अगुत्तिंदिता ४ ॥ चउव्विहा उगाहणा पं० तं० दव्वोगा
हणा खेत्तोगाहणा कालोगाहणा भावोगाहणा चत्तारि पन्नत्ताउ अंगबाहिरियाउ पं० तं०
चंदपन्नत्ती सूरपन्नत्ती जंबुद्दीवपन्नत्ती दीवसागरपन्नत्ती चउट्ठाणस्स पढमो उद्देसउ ॥ १ ॥ ठ ॥

द्रव्यनी अवगाहना ते द्रव्यावगाहना ॥ क्षेत्र जेहनउ अवगाहना ते क्षेत्रावगाहना ॥ अढीदीप ते कालावगाहना
वर्णादि सहित पुद्गल ते भावावगाहना ॥ अथवा द्रव्य नुं पर्याय चिकीआ ओढइवुं ते द्रव्यावगाहना ॥ क्षेत्र अइ आ
श्रइवुं ते क्षेत्रावगाहना ॥ कालि आश्रइवुं ते कालावगाहना ॥ वर्णादिकइ आश्रइवुं ते भावावगाहना ॥ अ
थवा गाहना ते प्रज्ञप्ती माहि कहइ ते सर्व प्रज्ञप्ती कहइ छइ ॥ प्रकर्षइ जाणी इ अर्थ जेहनइ विषइ । ते प्रज्ञ
प्ती ॥ अंगबाहिरि ॥ आचारांगादि अंगथी बाहिरि कालिक श्रुतरूप । तिहां सूरपन्नत्ती जंबुदीवपन्नत्ती ए पांचमा
अंगना उपांग ॥ चंदपन्नत्ती दीवसागरपन्नत्ती ते पइन्ना रूप ॥ इहां ४ अंगबाहिरि कह्यो ॥ जे राय
पसेणी नइ प्रज्ञापना कहीइ । ते पांचमा अंगमाहि अर्थ छइ ते माटि अंगबाहिरि । ते भ्यारे ज ॥ चतुर्थस्थानस्य
प्रथमोद्देसकः समाप्त ॥

हितसरी
२ ॥ असं
ख्येय अव
इ ससरा
रिइ २ छ्या
छइ तेहनइ
त्रा अवगाह
ना ॥ असं
ख्या तास
मय नी स्थि
ति ते का
लावगाह
ना ॥ वर्ण
दि सहित
ते भावोग
गाहना ॥
अथवा अ
वगाहना
ते आका
२ प्रदेस
। जे सलो
६१

पुविप्रि अनी कही ते ताप्रतिसंलीणा कहइ ॥ ते जाणाइं ते लणी ॥ प्रतिसंलीन कहइ छइ ॥ सूत्र ४ क्रोधनिग्रह करी उदयप्राप्त निष्फल करण
लीण ते प्रतिसंलीण । तिहां क्रोधना उदयनुं रूंधिवुं ॥ ते क्रोध प्रतिसंलीनता ॥ इम मान माया लोभ ॥ एहथकी विपरीत ते
अप्रतिसलीन ॥ वली पडिसं० ॥ पाडुआ मन नइ टालवइ । रूडा मननइ प्रवर्त्तावि वइ एह प्रतिसंलीन । ते मनअप्रतिसंलीन ॥
इमवचन काय ३ रूडा सर्णादिक नइ विषइ ॥ राग टालिवो ॥ पाडुआ नइ विषइ द्वेष नहीं । ते इंद्रीप्रतिसंलीन ॥ विपरीत ते
अप्रतिसंलीन ॥ ए चइ अ संलीन इजप्रकारी तरिद्रूसतर सुअइ कुर्इछइ ॥ दीणा ७ ॥ दीने पणा सहित अनइ वली दीन ते दीणा
रूपा य ही लोचना धार ॥ लोलघोडो अथवा पहिलुं दीन अनइ पछइ दीन ॥ अथवा बाह्य पणि दीन । अंतरंग पणि दीन ॥ १ चउरं

चत्तारि पडिसंलीणा पं० तं० कोहपडिसंलीणे माणपडिसंलीणे मायापडिसंलीणे लोभपडिसं
लीणे चत्तारि अपडिसंलीणा पं० तं० कोहअपडिसंलीणे जाव लोभअपडिसंलीणे चत्तारि पडि
संलीणा पं० तं० मणपडिसंलीणे वतिपडिसंलीणे कायपडिसंलीणे इंदियपडिसंलीणे चत्ता
रि अपडिसंलीणा पं० तं० मणअपडिसंलीणे जाव इंदियअपडिसंलीणे ४ चत्तारि पुरिसजाता पं०
तं० दीणे णाम मेगे दीणे दीणे णाम मेगे अदीणे अदीणे णाम मेगे दीणे अदीणे णाम मेगे अदी
णे ॥ १ ॥ चत्तारि पुरिसजाता पं० तं० दीणे णाम मेगे दीणपरिणए दीणे णाम मेगे अदीणपरिणते अदी
णे णाम मेगे दीणपरिणते अदीणे णाम मेगे अदीणपरिणते ॥ २ ॥ चत्तारि पुरिसजाता पं० तं० दीणे
णाम मेगे दीणरूवे ॥ ६ एवं दीणमणे ४ दीणसंकप्पे ५ दीणपन्ने ४ दीणदिट्ठी ४ ॥ १ ॥ दीणसीलाचारे

दि विषइ करी ॥ दीनमन ते खराब उज ऊंचो वितर्क नहीं ॥ दीणसंकप्प ए० ॥ ऊंचुं चिंतवतइ पणि केवाइ प्रकारि इं नीचो चितवइ करइ ॥
दीनपन्न ॥ दीनप्र ज्ञा ते हीणो सुक्ष्म अर्थ आलोचइ । ते बुधि विस्तरि इ नहीं ॥ दीनदृष्टि ते सोलार दृष्टि ॥ दीनसीलाचा
र ते हीणा धर्मानुष्टानः ॥

गीकरवा
॥ १ ॥ दीन
ते बाह्य
वृत्ति इ ली
न ते मुख
करमावा
दि सहित
तमसार ॥
अनइ दी
नपरिणा
त ते अ
तिरंगि
हीनवण
इ परिणा
म्या ॥ दी
नसहन
अधृति
मइ ऊक
हिवा ॥
दीनरू
वे ते जी
र्ण वस्त्रा

दीनव्यवहार तेमा दोमां किंश्रा पवुं लखुं तनपणि दीतुं । अथवा हीणो विवाद ॥ हीण परक्काम ० हीनपुरुषाकार ॥ ही
नहति तदीननासरिषी आजीविका ॥ हीणजाती ० ॥ दीनजातीतदीनपणासहित ययुं पुरुष तेहनइ याथइ ॥ अथवा
दीनपणुं जिमकुं हतिमयाथइ । तदीनयावी ॥ अथवादीनपणासहितो जे पुरुष तकन्हइ जाइ तदीनयावी ॥ अथवा
हीणां जाति छइ जेहनी तदीनजाति ॥ दीनमोपरि अथवा दीणुं सावइ तदीणभासी ॥ दीनगंकुर मइसवइ तदी
दीणववहारे ९ ॥ ९ ॥ चत्तारि पुरिसजाया पं तं दीणे णाममेगे दीणपरक्कमे दीणे णाममेगे
अदीणपरक्कमे ४ ॥ १० ॥ एवं सव्वेसिं चउभंगो ॥ णायव्वो ॥ चत्तारि पुरिसजाया पं तं दीणे णाममे
गे दीणविती ४ ॥ ११ ॥ एवं दीणजाती दीणभासी १२ दीणोभासी १४ चत्तारि पुरिसजाता पं तं
दीणे णाममेगे दीणसेवी १५ एवं दीणे णाममेगे दीणपरियाते ४ ॥ १६ ॥ एवं दीणे णाममेगे दी
णपरियाले सव्वत्थ चउभंगो १७ चत्तारि पुरिसजाया पं तं अज्जे नाममेगे अज्जे ४ चत्तारि पुरि
सजाता पं तं अज्जे णाममेगे अज्जपरिणए ४ एवं अज्जरूवे अज्जमणे अज्जसंकप्पे अज्जपन्ने
अज्जदिट्ठी अज्जसीलाचारे अज्जववहारे अज्जपरक्कमे अज्जविती अज्जजाती अज्जभासी अज्ज
ओभासी अज्जसेवी अज्जपरियाए अज्जपरियाले एवं सत्तरस आलावगा १७ जहा दीणेणं भ
णिया तहा अज्जेण वि भाणियव्वा चत्तारि पुरिसजाया पं तं अज्जे णाममेगे अज्जभावे अ
ज्जे णाममेगे अणज्जभावे अणज्जे णाममेगे अज्जभावे अणज्जे णाममेगे अणज्जभावे १८

भली पुरुषना अधिकारनां ए अढारसुत्र कहइ छइ ॥ अज्जे ० ॥ आर्यनाववहद ॥ खवत्रे ० ॥ जाईकुलकर्म ७ सिप्प भासा एना
णं नरत्ताय ॥ दंसणआरित्यनवहा ॥ मिलासमगजीवणपसमाई ॥ १ ॥ आर्य क्षेत्रनी ऊपनो ते क्षेत्रार्य ॥ अज्जे ० ॥ आर्यक्षेत्र
नी ऊपनो ॥ वली पापकर्म रहित ॥ आर्यभाव ते ज्ञानादिक गुणसहित ॥ अनार्यभाव ते क्रोधादिकसहित ॥ एअढारसुत्र थया ॥

मासवा ॥ दीनपरि
याए ० ॥ ही
णनासरि
षी प्रव्रज्या
बइसइ हनो
ते दीनप
र्याय ॥ दी
नपरिया
ले ० ॥ दीणो
परिवार छ
इ जेहनउ
तदीनप
रिवार ॥
एम घणा
इ च्यारि भां
गा जाणा
वा ॥

वली पुरुषजातिनां जे दृष्टांत ते कहइ छइ ॥ चत्तारि उसभा । पं । तं । जातिसं ० ॥ कु ० ॥ बल ० ॥ जा ० ॥ मातापक्षसहित ॥
कु ० ॥ पितापक्षसहित ॥ बल ० ॥ भारवहिवासमर्थ ॥ रूप तसरीर सुंदरपणुं ॥ इमपुरुषआपहणा जाणिवा ॥ च्यारि हाथी
चत्तारि उसभा पं तं जातिसंपन्ने कुलसंपन्ने बलसंपन्ने रूवसंपन्ने एवामेव चत्तारि पुरिसजाता
पं तं जातिसंपन्ने जावरूवसंपन्ने चत्तारि उसभा पं तं जातिसंपन्ने णाममेगे नो कुलसंपन्ने ।
कुलसंपन्ने णाममेगे नो जातिसंपन्ने एगे कुलसंपन्ने वि जाईसंपन्ने वि एगे नो जातिसंपन्ने
नो कुलसंपन्ने एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं जातिसंपन्ने ४ चत्तारि उसभा पं तं जाति
संपन्ने नामं एगे नो बलसंपन्ने ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं जातिसंपन्ने नामं एगे नो ब
लसंपन्ने ४ चत्तारि उसभा पं तं जाइसंपन्ने नामं एगे रूवसंपन्ने ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं
तं जातिसंपन्ने नामं एगे नो रूवसंपन्ने एवं ४ चत्तारि उसभा पं तं कुलसंपन्ने नामं एगे नो बलसं
पन्ने बलसंपन्ने नामं एगे ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं कुलसंपन्ने नामं एगे नो बलसंपन्ने
४ चत्तारि उसभा पं तं कुलसंपन्ने नामं एगे णो रूवसंपन्ने ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं
बलसंपन्ने नामं एगे णो रूवसंपन्ने ४ चत्तारि हत्थी पं तं भद्दे मंदे मिते संकिन्ने एवामेव चत्तारि
पुरिसजाया पं तं भद्दे मंदे मिते संकिन्ने चत्तारि हत्थी पं तं भद्दे णाममेगे भद्दमणे भद्दे णाममेगे

नयादिक लक्षणे करी अनइ वनादिविलासविहारी धीरपणादि गुणयुक्त ते भद्र ॥ धैर्यादि गुणमइ विषइ अनइ वेगनइ विषइ मंद ते मंद ॥ अनइ हिगना परिइ पातलो अनइ बीहीकण ते मृग ॥ भद्रादिक त्रिहुं नां लक्षणे सहित ते
संकीर्ण ॥ पुरुषपणि इम जाणिवो ॥ वली च्यारि जातिना हाथी ॥ भद्र ते जाति अनइ आकारिइं करी प्रशस्त ॥ अनइ भद्रम
न जेहनुं छइ ॥ अथवा ते भद्रनासरिखुं मन जेहनुं ते भद्रमन धीर इत्यर्थः ॥ मंदमन ॥ अथवा मंदनासरीखुं मन ते मंदमन ॥
अत्यंत धीर नहीं इत्यर्थः ॥

मृगमन तेबीहीकणा ॥ संकीर्णमन तेलडा दिक्रियाई नाथोडा थोडा मननालक्षण सहित मन तेसंकीर्णमन विचित्र मन इत्यर्थ ॥ एचउ संगीहाथीनो तेहनइ अनुसारि ४ पुरुषनी प्ररूपणा। प्रमसूत्र जाणिवा ॥ हिवइ हाथीनालक्षणकहइ

मंदमणे सद्दे णामं एगे मियमणे सद्दे णामं एगे संकिन्नमणे। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं सद्दे णामं एगे सद्दमणे सद्दे णामं एगे मंदमणे सद्दे णामं एगे मियमणे सद्दे णामं एगे संकिन्नमणे। चत्तारि हत्थी पं तं मंदे णामं एगे सद्दमणे मंदे णामं एगे मंदमणे मंदे णामं एगे मियमणे मंदे णामं एगे संकिन्नमणे एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं तं मंदे णामं एगे सद्दमणे तं चेव चत्तारि हत्थी पं तं मिते णामं एगे सद्दमणे मिते णामं एगे मंदमणे मिते णामं एगे मियमणे मिते णामं एगे संकिन्नमणे एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं मिते णामं एगे सद्दमणे तं चेव चत्तारि हत्थी पं तं संकिन्ने णामं एगे सद्दमणे संकिन्ने णामं एगे मंदमणे संकिन्ने णामं एगे मियमणे संकिन्ने णामं एगे संकिन्नमणे एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं संकिन्ने णामं एगे सद्दमणे तं चेव जाव संकिन्ने णामं एगे संकिन्नमणे। मधुगुलियपिंगलक्खो अणुपुव्वसुजायदीहलंगूलो। पुरओ उदग्गधीरो सव्वंगसमाहितो सद्दो ॥१॥ चलबहलविसमचम्मो थूलसिरो थूलएण पेएण। थूलनहदंतवालो हरिपिंगललोयणो मंदो ॥२॥ तणुओ तणुयग्गीवो तणुयत्तओ तणुयदंतनहवालो। भीरू तत्थुव्विग्गो तासी य भवे मिते णामं ॥३॥

चल० चपल ॥ बहल० थूल विसम ॥ चलसहित चामडउ जेहनुं ॥ थूल० मोटोमस्तक ॥ थूलएण० जीडइ ॥ पेएण० पुंछनइ मूलइ करी सहित ॥ आंगुल नख दांत अनइ वाल जेहना ॥ हरिपिं० सिंघनी परिइं पिंगल० नीला लोचन जेहनी ते मंदनामा गज विसेषकहइ ॥ तणुगांहा० तणुउ पातली ॥ तणुगी० पातलीग्रीवा ॥ तणुतणु० पातली चामडुं ॥ पातला दांत नख अनइ वाल ॥ भीरू० बीहकणो स्वभावइ स्वभावइ जे त्रस्त ॥ सयूथना कारणनावइ अपथकी जे बाकामनाकरवा दिलसहित ॥ बीहकणउ ॥ कष्ट विहारइ ते त्रिहालोहिलइ अवाइ तिहांऊद्वेग वंत ॥ तासिथ० पातइ त्रसइ। परनइ पणि त्रासवइ ॥ नवि। मिए० तिसउ नाम विउगओ विसेष कहइ ॥ ३ ॥

एतसिं० एत्रिणिहस्तीना लक्षणा कह्या ॥ तथोवा थोवं० तेमाहिलां थोडा थोडा लक्षण ॥ रूवे० रूपइ करी ॥ सील० स्वभावइं सहितिइं करी ॥ जो अणुहरइ० जे हाथी अनुसरिइ ते लक्षणधरिइ। ते संकीर्ण नाम गजविसेष कहइ ॥ भद्दोम० ॥ भद्रा सरद ऋतइं माचइ। ते मंदि आवइ ॥ मंदवली वसंत ऋतिइं मदि आवइ ॥ मृगहेमंति माचइ ॥ संकीर्ण सर्वकाल माचइ ॥ दांतहि रूप इ सद्दो ॥ माद्दा हत्थणा आहेरा इह ॥ गतावतहिय मिउ ॥ संकी० नामसयऊ हुताइ ॥१॥ अनंतर संकीर्णमणो ते मननुं स्वरूप कहिउं ॥ चलाखरूपक हिवा नइ स्त्रीकथादि कथा ते संख्यगता आदिनुं सूत्र कहि छइ ॥ चत्तारि विगहाउ० ॥ विकथा संयमनइ बाधक पणा प्रकारनइ विकथाउ कथा ॥ कथा० वचननी पद्धति ते विकथा कहीयइ ॥ इत्थी० ॥ स्त्रीकथा ॥ स्त्रीकथा एमकहिउं। तस्त्रीवि प्रइपणइ करी संयमनइ विकद्ध पणा सकी ति कथाउ जाणिवी। इम आगलि

एतेसिं हत्थीणं थोवा थोवं तु जो अणुहरति हत्थी रूवेण व सीलेण व सो संकिन्नो ति नायव्वो ॥४॥ भद्दो मज्जइ सरए मंदो उण मज्जति वसंतंमि मिओ मज्जति हेमंते संकिन्नो सव्वकालंमि ॥५॥ चत्तारि विकहाओ पं तं इत्थिकहा भत्तकहा देसकहा रायकहा इत्थिकहा चउव्विहा पं तं इत्थीणं जाइकहा इत्थीणं कुलकहा इत्थीणं रूवकहा इत्थीणं णेवत्थकहा भत्तकहा चउव्विहा पं तं भत्तस्स

पाणि जाणिवुं ॥ भक्त तेभोजन ॥ इत्थीणं जातिकहा ॥ ब्राह्मणी आदि जातिमाहिली अनेरी जातिनी ॥ ब्राह्मणी जातिइं घरघरणादि करइ नहीं इत्यादि प्रसंस्या अथवा निंद्या ॥१॥ कुल० उग्रादिकुलनी जेपनी माहिली प्रसंस्या अथवा निंद्या ते कुलकथा ॥२॥ रूवकथा० ते अमुकइ जातिनी स्त्री सुरूप। अमुकइ जातिनी कुरूप कहइ ॥ तेन्रथा भूषनय नादि वखाणइ विषाउइते ॥३॥ पहिरवानो वेस ते काछवा लइ ॥ अमुकइ देसइ ते कइन वालइ ॥ इत्यादि वेसनी प्रसंस्या निंद्या ॥ उत्तरनी स्त्री नइ छिइ ... इत्यादि ॥ निंद्या प्रसंस्या ॥ स्त्रीनी कथा करतां ... ॥ प्रसंगादोसा ... मनादिबी कुलनी कलत्र ॥

ठाणां०ठा० अमुकडी एकरसवतीमाहि एतलुं एकसाकघाघालवुं इमकरंबुं आइ इत्यादि तत्कानी आवापकथा १ एतली जातिना पक्कवानत
तली जातिनासालणा तत्कानी निर्वापकथा २ अमुकडी एकरसवती माहिं तीतरादिक नुं .... मास एतलुं एकघालि
वुं तत्कानी आरंभकथा ३ अमुकडी रसवती माहिं एतला द्रव्य लगइ। तथा एतलो द्रव्य अस्स्इ। तत्कानी निष्ठापनक
था ४ देसविकहा० अमुकइ देसइ विधि रचना तथा जेननी माणिक्य बहुलमिका दिकनी अमुकुं पहिलुं जमाइ इत्यादि देस वि
धिकथा १ देसविकप्पकहा० तुधान्यनी नि:प्प त्तिनीप्री कृत्र कूप देवकुल रचना दिनी प्रसंस्या निष्ठा तद्देसविध विकल्पक
था २ देसछंदे० गम्यागम्यनो विभाग जिमलाट देसनइ विषइ मामानी टी किरी गम्य अन्यत्र अगम्य इत्यादि देसछंदकहा ३

आहारकहा भत्तस्स आवावकहा भत्तस्स आरंभकहा भत्तस्स णिट्ठावणकहा देसकहा चउव्वि
२ देसव हा प० तं देसविहिकहा देसविकप्पकहा देसछंदकहा देसनेवच्छकहा रायकहा चउव्विहा प० तं रन्नो अति
देकहा याणकहा रन्नो निज्जाणकहा रन्नो बलवाहणकहा रन्नो कोसकोट्ठागारकहा चउव्विहा कहा प
र ४ ऊ० २ तं आरकवणी विरकवणी संवेगणी णीव्वेगणी आरकवणी कहा चउव्विहा प तं आयारारकवणी

देसमल निपथ्य तस्यास्याविक तथा विस्तार निमत्त वेषस्त्री पुरुषना नुकद्विम जे तद्देसनिपथ्यकथा ४ देसकथाथी रागद्वेषनो उत्पत्ति आदिं घणा दो
बारस्त्री षउपजइ रन्नो अतिताणकहा० राजा नगरमाहिं आवता श्रृंगारि परिवारइ नयण आणंद करसो परहइ १ रन्नो निजाणकहा० रा
घकार जा नगरमाहिंथी नीकलवानी कथा। वाजित्रासेन्यादिक इसो इताना नीकलइ छइ ० बल० हस्ती आदि वाहन० जेसरादिक तत्स्नी कथा
दसारद्ध जे एहवा सेन्यसुं कोण सरस्व सारस माथाइ ३ कोस० भंडार कोट्ठागार० धाननो कोठार तेहनी कथा परपरं नासस्या हवइ
एण ३२ एसमा जे णा राजा कहाइ ४ ए राजकथा वोलतां दिसासल वोमिलइ गयानी तत्परि संका आवइ कोइ एक निसापुं कर थाल हइ इत्या
दि दोषउपजइ ४ अरकवणी० जीणी कथा इआत्मा माहकथकी आकर्षीतवे ध्रुविंद्र आणी इतिआदिपणी १ निरपेवणी० जे
णीइ करी श्रुत सन्मार्ग थकी उन्मार्ग नइ विषइ। तथा कुमार्ग थकी सन्मार्गनइ विषइ आणीइ तत्विक्षेपणी २ संवेगणी० वेरा
गनी करणहारि सवेगणी अथवा एणइ करी नइ श्रुताप्रतिबोधइ तत्संबोधनी ३ अथवा श्रुतानइ इसोइ कसी तिपणी निर्वेदनी ४ ४४०
आयारक्खेवणी० आचारनइ परुपइ अहिंपणी माहथकी आहारातालकारी तत्आचारक्खेवणी

ववहार० दोषनी सुधि निमति प्रायश्चित्तनुं कहइ २ पन्नत्ति० सुंसयमालसिधकइ इसो संस आदिक लवानइ कहइ ३ वइ माह
तो जेसो कताणवुं ४ तत्र ३ दिट्ठिवाय० सुक्ष्म वाद रुपवादिक सुविचार सुंकहिवुं ४ अनेक भंकइ छइ ए आचार
दि० व्यारि ३ ग्रंथ लखा तेहनइ कहिवं इकरी मोहथकी आत्मा आकर्षाइ एणइ करी तत्आचारादि ४ अव्याख्या पणी
नो व्यासि हलदनी एपरमार्थ विक्षा वरणं तवा पुरिसक्कार यस मिइ गुज्झाउ उच्चइ इस्सइ खलु संसो कहाय अक्ख
व० एरसो ५ ससमयं० पोतानउ इसिद्धांत कहइ पहिलुं तेहना गुणादीपावइ तिवारिपछी परसमय कहइ तेहना दोष दे
षाडइ २ परसमयं० परसमयनउ दोसे कहिता० दोषाडीनइ स्वसमयना गुणनउ स्थापनाकरइ समवाद कहइ०
परसमनइ विषइ कोइएक सहृसाचउ होइ तेकहीनइ मिछावायं कहित्ता सम० परसमयनइ विषइ जे मिथ्यावादकहा

ववहारारकवणी पन्नत्तिरकवणी दिट्ठिवातअरकवणी विरकवणी कहा चउव्विहा पं तं ससमयं वइ लव
कहेइ ससमयं कहित्ता परसमयं कहेइ परसमयं कहित्ता ससमयं ठावतित्ता भवति सम्मावातं कहित्ता
कहेइ सम्मावातं कहित्ता मिछावातं कहेइ मिछावातं कहित्ता सम्मावातं ठावइत्ता भवति ४ संवेगणी
कहा चउव्विहा पं तं इहलोगसंवेगणी परलोकसंवेगणी आतसरीरसंवेगणी परसरीरसंवेगणी
णिव्वेगणी कहा चउव्विहा पं तं इहलोगे दुच्चिन्नाकम्मा इहलोगदुहफलविवागसंजुत्ता भवति १

आस्तिकवादीनादृष्टिकहइ एपचउथा ४ इहलोक० मनुष्यनुं असतपणुं देषाडी मनुष्यनइ वेराग्य उपजावइ १ परलोक नर
ग तिर्यंचनां दुखदेषाडी वेराग उपजावइ तथा देवतापणि विषवादइर्षाय वियोगादिक दु:ष सादि देषडइ २ आतम० जेमा
हारु सरीर असुचि वली असुचि थकी उपनुं असुचि आहारिइ नाकसु इहां मतिबंध कस्योइ इत्यादि ३ परसरीरसंवेगणी प
णि इमइजि अथवा परस्सरिर तिमृतक सरीर ४ इह लोकनइ विषइ दुच्चिन्ना० चोरी आदिक कर्म इहलोकनइ विषइ
दुषफल तिकर्म रुपाइ इहलोकइ दुःखरूप उपजावइ तत्परलोकदुषफल तेहनं विपाक अनुभवतुं निसइ करी संयुक्त
चोरादिकनी परिइ १

वइ लवक हो तइस अस्यारस पइ एवा थी अथ वासम्य ग्वाद ते आस्तिक पणुं मिथ्यावाद ते नास्तिकपणुं तिहां आस्तिकवादीना दृष्टिकहइ एत्री जो अनइ एथ विपरीत नास्तिकवादीना दृष्टिकहइ नइ २

वीजइ लोगि इनारकी ॥२॥ गर्भमाहि घी ऊच्या थिया तिर्यञ्चादिक ईव्या भ्रातजीजो ॥३॥ दुर्वई ते अस्सु लक मकिरा काक पंखी
आदिक पराइ रूप नो आमइ वली नरग त्याग पक भकिर इ छइ तिचउघउ ॥४॥ सुची ते कर्म नी वोसंगा ॥ तीर्थंकर दानना दा
तार रात पहिलइ तिहां सुवर्ण दृष्टि पामइ ॥१॥ बीजइ सुसाध ॥२॥ तीजइ तीर्थंकर ॥३॥ चउथइ तो गर्भ देवतानइ ताव
रचा ॥ तीर्थंकरादिनी परि ॥४॥ एकवाक्यही तेतो वचनना विस्तर हिउ ॥ हिव इकायना विसेष कहइ छइ ॥ किसे नाममे
गे किसे० पहिलुं सरीर दुर्बलुं अनइ पछइ दुर्बलुं ॥ अथवा ज्ञानादिक तेहवा विस्तर हीन अनइ वली कृश तसरीरादिक करी ॥

इहलोगे दुच्चिन्ना कम्मा परलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति २ परलोगे दुच्चिन्ना कम्मा इहलोगे
दुहविवागसंजुत्ता भवंति ३ परलोगे दुच्चिन्ना कम्मा परलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति ४
इहलोगे सुचिन्ना कम्मा इहलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति १ इहलोगे सुचिन्ना कम्मा परलो
गे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति ४ एवं चउभंगो तहेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं किसे णाममे
गे किसे किसे णाममेगे दढे दढे णाममेगे किसे दढे णाममेगे दढे चत्तारि पुरिसजाया पं तं
किसे णाममेगे किससरीरे किसे णाममेगे दढसरीरे दढे णाममेगे किससरीरे दढे णाम
मेगे दढसरीरे ४ चत्तारि पुरिसजाया पं तं किससरीरस्स णाममेगस्स णाणदंसणे समुप्पज्जति णो द

॥१॥ पहिलुं दुर्बल पछइ दृढ सरीर अथवा ते विस्तर हीन ॥ अनइ सरीर दृढ ॥२॥ पहिलुं दृढ सरीर पछइ कृश ॥ अथवा दृढ
सत्व अनइ सरीर दुर्बल ॥३॥ पहिलुं दृढ अनइ पछइ दृढ ॥ अथवा सत्व दृढ अनइ सरीर दृढ ॥४॥ किसे नाममेगे
किससरीर० ॥ एवं संघी पूर्व ल्या जस्सु अनइ मिलती छइ ॥ किसे० ते विषइ दुर्बल ॥ किससरीर० ॥ सरीर पणि दुर्बल ॥ द
ढसरीरि० ॥४॥ जसनइ ज्ञिन उत्तम गाइ करी ज्ञान कुरूप उपजइ छइ ॥ किससरीरस्स नाममेगस्स० जेसनइ सरीर नइ विषे तप
इ करी ॥ ते व्यानइ सुभ परिणाम नइ वइ तदावरण कर्मना क्षयोपसम ना विसेष सबधी अथवा केवलज्ञान रूप ८१
जइ ॥

पणि दृढ सरीरी नइ न ऊपजइ ॥ पुष्ट सरीर माटइ । बहु आहार ग्रहणइ करी तथा विधसुभ परिणाम न थावतइ करी
दीघा पसम नो पणि अभाव ॥१॥ दृढसरीरस्स० ॥ दृढ सरीर नइ ज्ञानदर्सन ऊपजइ ते किम । कर्मनइ क्षयोपसमइ वा बाधक बसा
य तेणइ करी । पणि कृससरीर नइ न ऊपजइ । तका । सरीर नी समाधि ना अभाव माटइ ॥२॥ एगा० ॥ एक दृढ सरीर नइ कृससरी
र नइ ऊपजइ । तका । विसिष्ट संघयण छइ ॥ अल्प आहार छइ । सुभ परिणाम छइ । तिवारइ बिहु नइ ऊपजइ ॥ पणि कोई आहुं दु
बलानो विवक्षा न करिवी ॥ एक दुर्बल जोडा नइ न ऊपजइ ॥४॥ ज्ञान दर्सन नि रूप किहां छइ ॥ हिवइ ते हनो व्याघात कहइ छइ ॥

ढसरीरस्स दढसरीरस्स णाममेगस्स णाणदंसणे समुप्पज्जति णो किससरीरस्स एगस्स किससरी
रस्स वि णाणदंसणे समुप्पज्जति दढसरीरस्स वि एगस्स णो किससरीरस्स णाणदंसणे समुप्पज्जति
णो दढसरीरस्स चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अस्सिं समयंसि अतिसेसे णाणदंसणे
समुप्पज्जिउकामे वि ण समुप्पज्जेज्जा तं अभिक्खणं अभिक्खणं इत्थिकहं भत्तकहं देसकहं रायकहं
कहेत्ता भवति १ विवेगेणं विउस्सग्गेणं णो सम्ममप्पाणं भावित्ता भवति २ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयं
सि णो धम्मजागरियं जागरित्ता भवति ३ फासुयस्स एसणिज्जस्स उंछस्स सामुदाणियस्स णो सम्मं गवे

निग्रंथी कहीइ ते घी अनेरा साधु पणि ग्रहिता जाणिवं ॥ अस्सिं स० ॥ एप्रत्यक्ष अनंतर समय नइ विषइ ॥ अइसेस० ॥ अतिसय
सय ॥ मतिज्ञानादि ४ चक्षुदर्सनादि ३ ए केवली थी तस ॥ अति० ॥ एसे पनइ अतिक्रमुं सर्व जाणवइ करी जे ज्ञान ते अतिस
य ज्ञान केवलई सर्व ॥ उपजवा कामी ॥ पणि न ऊपजइ ते ज्ञाना दिना अभिलाषना अभावसणी ॥ अभिक्खणं० ॥ वारवार वि
कथा करइ ॥ विवेग० ॥ असुध्द दिक सागनुं करिवुं ॥ विउस्सग्ग० ॥ काउस्सग्ग नुं करिवुं ॥ नो सम्म० ॥ तेणइ करी समय आत्मा नइ
भावइ नहीं ॥ पुव्व० ॥ पहिलो भाग रात्रिनो ॥ अपररत्त० ॥ रात्रिनो पाछिलो भाग तेह जे काल तदाजे समय ॥ अवसर धर्म जागरिका
नउ तत्पर वीरा त्रि । पर रात्रि कालसमाय तेहनइ विषइ कुटुंब जागरिका नइ ... निषेध इं धर्मप्रधान जागरिका जागइ नहीं ॥३॥ फा
सुयस्स० ॥ फासुक० ॥ प्र० गयो ॥ असु० ॥ असो स्वादिक प्राण तिहथी ते प्रासुक निर्जीव ॥ एसणिज्जस्स ॥ दूषाइ गतवाई ॥ उंछमादि

दोषरहित पणाइ करी तेप थालोथ ॥ उंछस ॥ अंछ ग्रहि ॥ अल्प अल्प पणाइ करीय हीइ ते उंछ ॥ समुदाण ॥ घर घर माहिं केवार हित समुदानना आहारनो गवेषणा ह्यार मकुइ [illegible] इच्छति ॥ अनंतरोक्त विक्रयका रिइ ॥ निग्रंथना प्रस्तावमा टइ ऊसा ध्युनइ निषेध छइ ते कहइ छइ ॥ महो सव नी पुलिमा नु पडिवो स्वाध्याय नंदी आदि सुत्रनी वाचना न करवी ॥ अनुप्रेक्षा ॥ तेह अर्थ चिंतवीत विधुं ध्यान रूप ते हनु निषेध नहीं ॥ आसाढी पुलिमा नै तरात पडिवो ॥ इंद्रमहापाडिवए ॥ आसु पुलिमा नै तर पडवो ॥ कत्तियपाडि ॥ कातिकि चउमासा नै तर पडिवो ॥ तसुगिम्ह पा ॥ चित्री पुलिमा नै तर पडिवो ॥ एहां पडिवा नइं विषइ जेतला दिहाम होत्सव प्रवर्त्तइ ते तला दिहाडा तिहां सझाय न करवउ पुलिमाल

तस्सा भवति ॥ इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं णिग्गंथाण वा निग्गंथीण वा जाव णो समुप्पज्जेज्जा चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे समुप्पज्जेज्जा तं इत्थीकहं देसकहं रायकहं नोकहेत्ता भवति विवेगेणं विउस्सग्गेणं सम्मम प्पाणं भावेत्ता भवति पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरेत्ता भवति फासुयस्स एसणिज्जस्स उंछस्स सामुदाणियस्स सम्मं गवेसित्ता भवति इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा जाव समुप्पज्जेज्जा नोकप्पति निग्गंथाण वा २ चउहिं महापाडिवातेहिं सज्झायं करेत्तए तं आसाढपाडिवए इंदमहपाडिवए कत्तियपाडिवए सुगिम्हपाडिवए नोकप्पई निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा चउहिं संझाहिं सज्झायं करेत्तए तं पढमाते पच्छिमाते मज्झण्हे अड्ढरत्ते कप्पइ निग्गंथाण वा २ चउक्कालं सज्झायं करेत्तए पुव्वण्हे अवरण्हे पओसे पच्चूसे

गिइ पाणि पडिवा वर्जीइ छइ तेम हो छ वेनी अनुक्रमि मा टइ ॥ अकालइ सझाय करतां प्रत्यनीक देवता छलइ ॥ सूर्यनां अणि मिलि ॥ लोक विरुद्ध पणइ बलीलाय ॥ विमासा हार ॥ विरुद्ध ॥ दोन्हं याम माहि घणी ॥ पढमा ॥ सूर्य उगतां संध्या ॥ पछिमा ॥ सूर्य आथमतानी २ घडी ॥ पुव्वण्हे ॥ पहिलो पुहर ॥ अवरण्हे ॥ पाछिलो पुहर ॥ पओसे ॥ रात्रि नो पहिलो पुहर ॥ पच्चूसे ॥ रात्रि नो पाछिलो पुहर ॥ एहि कहु सझाय न प्रवर्त्तां नइं लोक नइं स्थिति नुं ग्यान होइ ते भणी

सतकदं ३·३

लोकस्थिति तेहनुं स्वरूप कहइ छइ ॥ लोक नी व्यवस्था लोकस्थिति विविधा छइ ते लोकस्थिति ॥ आकास नइं विषइ प्रतिष्ठित घनवात तनुवात ॥ वायनइ विषइ घनोदधि प्रतिष्ठि ॥ घनोदधि नइ विषइ प्रतिष्ठित रत्नप्रभा दि पृथिवी ॥ पृथिवीनइ विषइ प्रतिष्ठित त्रस ॥ बेइंद्रियादि ॥ तेवली त्रस रत्नप्रभादिक पृथ्वीनइ विषइ प्रतिष्ठिइ ॥ तेपणि विमान पर्वतादि पृथवी प्रतिष्ठित पणा थकी ॥ तेहनां त्रस प्राणी पृथवी प्रतिष्ठित कीवा वा ॥ विमान पृथवी आकास प्रतिष्ठित नइं आधारि रह्या छइ ॥ ते लिव लोक लिंग माया जोणि वउ ॥ अनइ थावर ते इहां बादर वनस्पति आदिग्र हिवा ॥ अनइ सुदम ते सकल लोक व्यापी छइ ॥ अनंत २ त्रस प्राण कह्या हिवइ तेहनउ विसष ४ सूत्र इ करी कहइ छइ ॥ तहे नामम गे ॥ सेवक थकां जिम कहीइ तिम प्रवर्त्तइ तेते हे ॥ २ ॥ नोतहे नाममेग ॥ ते सेवक कहि नइ कहइ प्रवर्त्तइ ॥ २ ॥ सोवत्थी नाम ॥ स्वस्ती एसउ बोल तां विचिरिइ ॥ तासोव

चउव्विहा लोगट्ठिती पं तं आगासपइट्ठिए वाते वातपतिट्ठिए उदही उदहिपतिट्ठिया पुढवी पुढविपइट्ठिया तसा थावरा पाणा ४ चत्तारि पुरिसजाया पं तं तहे नाममेगे नोतहे नाममेगे सोवत्थीनाममेगे पहाणेनाममेगे चत्तारि पुरिसजाया पं तं आयंतकरे नाममेगे णोपरंतकरे १ परंतकरे णाममेगे नो आयंतकरे २ एगे आयंतकरे वि परंतकरे वि ३ एगे णो आयंत

स्तिक मुख मांगलीक्यां सा टादि ॥ पहाणे ॥ सेवकना स्वामी सहित नादा तार ते स्वामी ते प्रधान ४ ॥ आयंतकरे ॥ पोतानां स्वनो अंत करइ ॥ नो परंत ॥ पणि परना स्वनो अंत न करिइ ॥ तेधर्म देसना न दीइ ॥ प्रतिकबुधा दिक [illegible] ॥ परंतकरे ॥ मार्ग नइं विषइ प्रवर्त्तावि वइं करी परना भवनो अंत करिइ पणि पोताना भवनो अंत न करइ ॥ अचरिम सरीरा वार्या दि ॥ श्री जइ तागइ तीर्थंकरादि ॥ चउथइ तेंगइ पोचमा आरा ना आचार्य ४ ॥ अथवा पोतानो ऊअंत ॥ मरण करइ ते आत्मां तकरइ ॥ १ ॥ परनइ मरण करइ ते परांतकरइ ॥ श्री जइ बिंडुनी ॥ चउथइ अवधक कोई नइं नमारइ ॥ अनइ पातइ न मरइ ॥ अथवा आयंतकरे ॥ पोतानइ बस्य कलो कार्य करइ ते आत्मांतंत्रकर ॥ नोपरंतकरे ॥ पणि परनइ वस्य पणइ कार्य न करिइ ते नी परतंत्रपर ॥ १ ॥ पिहिलइ तागइ तीर्थंकर ॥ बीजइ शिष्य ॥ २ ॥ श्री जइ आचार्यादि ॥ [illegible]

जं किंचिमि च्छामि० ति काइं खाटु कीधु हुइ ते हनो गर्हा ए० एह प्रकारि पन्नत्तिगा गरहा नीपजे वितिगिच्छा मि नी बुद्धि कहीइ ३ एवं विध प्रति पत्ति० ४ गर्हा नु करि वुं ते गरहनुं कहिवउ ते प्रज्ञापक आगर्हा वा० वनां ते रि विप न्नत्ति० त्य कार्य थाप कीधुं तरसुं मिच्छामिद्ध कडं एहवु हि वा मिळ

इम ख्याति मां गा ल वा॥ एक परिहृष्टां तरखाम कजा णावो॥ पोतानइ कां जइ तिपोतइ खेद उपजावइ ते आत्मतम। पलिप रनइ खेद न उपजावइ ते आचार्यादि॥ परसिष्यादिक मइ॥ तम०॥ खेद उपजावइ ते पर तम॥ इम ख्याति मां गा करवा॥ अथवा आत्मानइ विषइ अज्ञान अथवा क्रोध छइ जेहनइ ते आत्मातमः॥ इम वीतगो॥ आत्मानइ दमइ०॥ उपसम वेत करइ ते अ घवासी थवइ। ते आत्मदमन म तिक बुध॥१॥ पर शिष्य अथवा अश्वादिक नइ दमइ। तिपरइ मणि पोतानइ न दमइ॥२॥ इम चउभंगा कहिवी॥ हिवइ दमक पणुं तिपापनो गर्हाथि की थाइ तेह लो अह्य कहइ छइ॥ गरहा०॥ गुरु साखिइ आत्मा नी निंद्या ते गर्हा कहीइ॥ उवसं०॥ जामि ति०॥ मनमाहि एहवुं वेद उपजइ गुरु समीपि जाइनइ हुं आलोयइ एहवउ परिणा म ति एक गर्हा॥१॥ एतोहज्री अहीं अनथी तो गर्हा कि म कहीइ। गुरु कहइ एहवउ परिणाम ते गर्हानुं कारण छइ॥ गर्हा की

करणो पएं तकरध चत्तारि पुरिसजाता पं० तं० आतंतमे नाममेगे नो परंतमे परंतमे ना म० ४ चत्तारि पुरिसजाया पं० तं० आयंदमे नाममेगे नो परंदमे ४ चउव्विहा गरहा पं० तं० उवसं पज्जामित्तेगा गरहा वितिगिच्छामित्तेगा गरहा जं किंचि मिच्छामी तेगा गरहा एवं पि पन्नत्ते गा गरहा चत्तारि पुरिसजाया पं० तं० अप्पणो नाममेगे अलमंथु भवति णो परस्स पर स्स नाममेगे

ते एक चउथी गर्हा इम ज की धपापनुं म कासिबुं ते गर्हा नुं कारण छइ ते भणी ते गर्हा कहीइ॥ अथवा उवसंपज्जामि ति०॥ अतीचा र निषधुं इम पोतानां दोष प्रति वजवा रूप एक गर्हा। तथा वितिगिच्छामि०॥ जं संकाकरुं छउं॥ निःसं कि तजिन साधित। साव प्रति इ अथवा निर्दोष गुरु प्रतिइ इम पोतानां दोष लुं इम जाणि बुं ते एक गर्हा॥२॥ जं किंचि मिच्छा०॥ जे काई साधु नइं अनु चित बइ ते कुंवा बुं बउं॥ यद्यपि साधीत करतो नथी प्राणि मनसाई अतिल पुछे कं॥ अथवा जे काई साधु नइ करवा योग्य वस्तु छइ॥ ते अ आ कुं विप्री नमव सूं छं। अथवा तेहु मिथ्या करुं छउं॥ अथवा मलेछनी परि प्रवर्त्त कं छउं॥ मलेछनी परि आचरुं छउं। एम पोतानां दोष जाणिवा रूप गर्हा ३॥ पिढन्नत्ति गा०॥ पाडुए अनुष्ठान इ प्रवर्त्त्या तिवारि इ कुणइ सीष दीधी तिवारि इ पोतानुं म नमस माहि आरणवा नइ पोतानुं पाडवुं दोल वानइ मनमाहि दुषम हित बोलइ॥ अथवा चित वइ ते गर्हा॥ पाउं ति रि एवं पन्नेति गा०॥ इस नमो पन्नप कछं॥ ए रूप गर्हा ४ स घ लइ पाना नी दोष पडि वजवारूप गर्हा जा णि इ॥ गर्हा ते पोता मा दोष करइ ते हनइ प्राणि अन रानइ म हीइ॥ ते सणी दोष नावर जण हार जो वस्तु स्वरूप के

हइ बइ स तर ७ चउ संगी कहइ छइ॥ अप्पणो० आपणो आत्मानइ॥ दुमथि०॥ अनुमति खर्च तानइ॥ अलंमथु०॥ निषधिक०॥ नो परस्स०॥ पणि परमई निषेधान सकइ॥ इम भंगा॥ अथवा सिथरं तर खाषाइ ति अलंमथु ते समर्थ मइ कहीइ। ते सणी एक पो ता तो आत्मा निग्रह करवा समर्थ॥ नो प०॥ पणि परनइ निग्रह करवा समर्थ नहीं॥ एम चउभंगी॥ चत्तारि मग्गा०॥ चारि मार्ग॥ उज्जुनाम०॥ धुरि आधरा मारग अनइ छेहडइ पाधरा अथवा उज्जु०॥ सोलइ पाधरा पताइ॥ अत्यंत निर्वचमवी पणि सरल पणाइ सोलइ॥ एधुरि सरल अनइ छेहडइ वांकउ। इम धुरि वांकउ बे हडे सरल। एक धुरि बेहडेवी कां०॥ अथवा पंचसरल अन इ तच्चथी सरल। एक पंच सरल अनइ तत्रथी वांको। इम चउभंगी॥ एवामेव०॥ पुरुषा ते पहिलुं ते सरल अनइ पछइ पणि सर

अलमंथु भवति णो अप्पणो २ एगे अप्पणो वि अलमंथु भवति परस्स वि ३ एगे णो अप्पणो अलमं थु भवति णो परस्स ॥४॥ चत्तारि मग्गा पं० तं० उज्जू नाममेगे उज्जू उज्जू नाममेगे वंके वंके नाममेगे उज्जू वंके नाममेगे वंके ॥४॥ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं० उज्जू नाममेगे उज्जू ४ चत्तारि मग्गा पं० तं० खेमे नाममेगे खेमे खेमे नाममेगे अखेमे ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया खेमे णाममेगे खेमे ४ ॥४॥ चत्तारि मग्गा पं० तं० खेमे णाममेगे खेमरूवे खेमे णाममेगे अखेमरूवे ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं० खेमे णाममेगे खेमरूवे ४ चत्तारि से

ल॥ अथवा अभ्यंतर सरल अनइ बाह्य पणि सरल॥ इम चोभंगी॥ अथवा पाठांतर इ उज्जु नाममेगे उज्जुमणे०॥ ते हपणि इम जाणिबा इ सरल अनइ अभ्यंतर पणि सरल॥ खेमे नाममेगे खेमे०॥ धुरि निरुपद्रव अनइ छेहडइ पणि निरुपद्रव ॥अ० अथवा धुरि क्षेम पणाइ प्रसिद्ध॥ छेहडइ क्षेम पणि प्रसिद्ध इम ४॥ एवामेव०॥ खेमे०॥ धुरि क्रोधादिक उपद्रव रहित प णाइ क्षेमकारीउ॥ छेहडइ पणि तेहवउ जि इम ४॥ खेमे०॥ उपद्रव रहित पणाइ करी तां तईं क्षेमकारीउ॥ अनइ क्षेमरूप आकारि इ पणि क्षेमकारीउ॥ एवामेव०॥ खेमे नाममेगे०॥ खेमरूवे ते तउ तां चलिंग युक्त साधु॥ खेमे नामं एगे अखे मरूवे०॥ कारणि उ मलिंग रहित साधु॥ ...॥ जीउ इ विक्रुईते उ घइ अन्य तीर्थी॥ अथवा गृहिस्थ॥

ह्रांतस र्दि बाप गाथको ॥ इम अ ग्नि सिखा पलिखुंम सिखाना परिकहि वा ॥ स्त्री संजुतिमइ ऊिलोडि वुं ॥ वाय मंडलिया ॥ मंडल इ करीऊ धउ प्रव र्त्तावाय ॥ वामा ॥ डा वइ पासइ रह्योवाय अथवा प्र तिकूलस्व भाव ॥

संबुक ॥ संख ॥ वा० ॥ डावइ पासइ रहिश्या थका वामक हीइ ॥ अथवा प्रतिकूलगुणभाट इवामकहीयइ ॥ अनइ वामवत्ते ॥ द... वहे प्रसिध ॥१॥ वामिना ॥ डावइ पासइ रह्यो अथवा प्रतिकूलगुणकीइ ॥ दाहिणावत्ते ॥ पणि दहिणावर्त्त ॥२॥ दाहिणो ॥ जिमणइ पासइ रह्यो अथवा अनुकूलगुणदायक ॥ अनइ दाहिणावत्ते ॥ आवर्त्तनपणि दक्षिण ॥४ ॥ पुरुष पणि वामतप्र तिकूलस्वभाव ॥ वामवर्त्तति विपरीत प्रवर्त्तक ॥ बीजइ लागइ प्रतिकूलस्व भावइ जाणइ ॥ कारता वस्यइ अनुकूल प्रवर्त्तइ ॥२॥ अनुकूलस्वभाव छतइ कारणि प्रतिकूल प्रवर्त्तइ ॥३॥ चउथइ अनुकूलस्व भाव अनइ अनुकूल प्रवर्त्ति ॥४॥ धूमसिहाओ ॥ धू मसिष्या ॥ वामा ॥ वामपासइ प्रवेस्यां थकी अथवा अथवा प्रतिकूलस्वभावपणइ करी ॥ वामवत्ती ॥ डावइ पासइ वलवा थकी

बुका पं तं वामे णामगे वामावत्ते वामे णाममेगे दाहिणावत्ते दाहिणे नाममेगे वामावत्ते दाहिणे णाममेगे दाहिणावत्ते ८ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं वामे नाममेगे वामाव त्ते ४ चत्तारि धूमसिहाओ पं तं वामा नाममेगे वामावत्ते ४ एवामेव चत्तारि इत्थीओ पं तं वामा णाममेगा वामावत्ता ४ ॥११॥ चत्तारि अग्गिसिहाओ पं तं वामा नाममेगा वामावत्ता ४ एवामेव चत्तारि इत्थीओ पं तं वामा णा ४ ॥१३॥ चत्तारि वायमंडलिया पं तं वामा नाममेगा वामावत्ता ४ ॥ १४ एवामेव चत्तारि इत्थीओ पं तं वामा णा ४ चत्तारि वणसंडा पं तं वामे णाममेगे वामावत्ते ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं वामे णाममेगे वामावत्ते ४ ॥१७॥ चउहिं ठाणेहिं निग्गंथे

वामावत्ता ॥ डावइ पासइ वलवा थका वामावर्त्ती इत्यादि वि ... ॥ एम अस्त्रीसुं चउभंगी जलवी ॥ हिवइ स्त्रीनो स्वभाव एउक्त लाम इ मिलीनइ करइ ॥ धूमसिष्याणी परिइ ॥ स्त्रीहिं मिलाम इ ऊपताप ऊपजावइ अग्निसिखा वत् ॥ तथा चपलस्वभाव वाय मंडलियानी परिइ ॥ एहवी स्वभाव स्त्री नाविकु ऊऊइ ॥ तेणइ नीत्रि च्छि देखा यद्या ॥ वामे नाम गेवामवत्ते ॥ वाम ते डावइ पासइ ऊहिवउ ते वणषंड ॥ अथवा प्रतिकूल स्वभावे ॥ अनइ वामवर्त्ति वामचलनेम ॥ ते डावइ पासइ वल वरकत ॥ अ पेनी पणा थकी ॥ अथवा डाबा गमा वायु रइ ॥ कुपा वीता पणा थकी वामावर्त्त ॥ इत्यादि चउभंगी ॥ पुरुष नो वामवर्त्त ते प्रतिकूलस्वभाव ॥ वामावर्त्तते पत्राति इति पणित ॥ इत्यादि चउभंगी जोडवी ॥१७॥ वीसंगी कही ॥

वामावर्त्त चउभंगी ४ एवामेव स्त्री इीउ ॥ वामा ॥ स्त्री प्रति कूलस्वभा वपणा थ की ॥ वामा वर्त्तति वि परीत प्रव र्त्तइ करइ ॥ इम पुरुष नी परिइं च उभंगी क रवी ॥ संघ नमइ एतत उभइ पणि जे धूम सि ष्यादिहष्टां त ग्रह्या ते स्त्री नइ स्त्री लिंगी आ

१५४

अनंतर अनुकूलस्वभाव अनइ अनुकूल प्रवर्त्तक कहिउ ॥ निग्रंथपणि एहवो हउ ॥ समुचय इ अनेचि प्रवर्त्ती ॥ पणि आचारनइ अतिक्रमइ नहीं ॥ आलवमाणे ॥ प्रथमि बोलतो ॥ अथवा साध्वी विणा बोलइ पहिलो बोलावतउ साध्वी मइं ॥ संलव ॥ माहोमाहिं भलां इं बोलतो ॥ नाइकमति ॥ निग्रंथनो आचारभइं ऊक्तं घइ नहीं ॥ एगो ॥ एगाओ एसिद्धं ॥ नेव विहे । न संलावे ॥ साधु एकलो स्त्री संघातइ । ऊलो न रहइं बोलइ नहीं ॥ तिस घचसाह वीसु ॥ पणि ईहां मारग पूछवादिक एका कारणकरणां । साध्वी सुं बोलता दोष नहीं ॥ पंथपुछमाणे ॥ मारग पुछतो ते साधर्मिक अथवा यहा स्व नइ अनु वइ आ रामिइ करइ इह अर्थ ईहां अनमइ जाना मारगकी हो ॥ पंथदेसमाणे वा ॥ साध्वीनइ मारग दिषाडतउ दि धर्मसीलता इहरो मारग ए ॥ असणं वा ॥ असनादिक ॥ देतमा तो ॥ देतो धर्मसीलअसनादिक लइ ॥ असनादिक दव

निग्गंथी आलवमाणे वा संलवमाणे वा णातिक्कमति पंथं पुच्छमाणे वा पंथं देसमाणे वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दलमाणे वा दलावेमाणे वा तमुक्कायस्स णं चत्तारि णामधि ज्जा पं तं तमेति वा तमुक्काएति वा अंधकारेति वा महंधकारेति वा तमुक्कायस्स णं चत्तारि णाम धिज्जा पं तं लोगंधकारेति वा लोगतमसेति वा देवंधकारेति वा देवतमसेति वा ४ तमुक्कायस्स णं चत्तारि नामधेज्जा पं तं वातफलिहेति वा वातफलिहक्खोभेति वा देवरन्नेति वा

रावात ॥ इह आर्याआ विधुहनइ असनादिक देवरावउं ॥ घरादिकनइ विषइ ॥ तमुक्कायस्सणं ॥ तमस्कायनइ ॥ तमई त्या दिसहइ ॥ बोलावतां साधुनो आचार ऊलंघइ नहीं ॥ यथार्थपणा थकी ॥ तम ॥ अपकायना परिणाम स्वरूप अंधकारन उ ॥ काय ॥ समुह ते तमस्काय ४ ॥ तिहमानाम ॥ तामतेवा ॥ तम ॥ अंधकाररूपपणा थकी तमक हीइ ॥ इति ते रूपदेखाड वानइ ॥ वा विकल्पइ ॥ तामाकायति वा ॥ धुरलाधनाम ते अंधकार मात्र नां बोलणहार ॥ आगलाधनाम ते अत्यंत अंधका रमा बोलणहार ॥ लोगंधयारेतिवा ॥ लोकमाहि एमरीषा अनेरउ तेहवउ अंधकार नहीं ॥ तेसणं लोकं अंधकार ॥१॥ देव धकार ॥ देवतानइ पणि अंधमं करइ । देवता नाम शरीरनी प्रभानइ पणि आछादइ । देवतां बोलता थका पणि संचिं करी तिहां जाइ नहीं ॥४॥ हिवइ आगला धनाम ते काय नि इश्य कारी ते गुणनाम ॥ मरीये ॥ आगिलाते वायनइ हणवा थकी ॥ अ

गलिनी परिघ ॥ अर्गला तेहनी वातपरीघ ॥ वाय्प लिहलो ॥ वायनइ काजइ अर्गला नी परिइं सोतइ ॥ तेहनी गतिनोऊ
इ ॥ तेवातपरीघ क्षोभ ॥ पातो तेरइ वातपरीघ क्षोभ ॥ वायनइ रखला वइत ॥ किहां एक वायनो तेरि देवपरीघ अनइ देवपरि
घो र धुरलो वेपदनइ ठामि इ पछे पदइ छइ ॥ देवपरीघ० देवता तेहमा दि जइ नसकइ । तेहनी लोगल सरीषो ते देव
परिघ ॥ देवता निइं सीस अपजावइ ते देव परिक्षोभ ॥ २ ॥ देवरं० ॥ देवता नइ ॥ अरणप० अटवीनो परिखलवे तेन
इं करी नास वा नास्तान सको ॥ अर तप ॥ ३ ॥ एतनो पाहिलोपुगलो नो अर्थ ॥ देवबुद्ध० देवतातनइ पणि दुराधिगम ॥ तिमकट
क अं गमता दोहिलुं ति म देवतानइं तेतस्काय इं अंगमतां दोहिलुं ॥ वली तमस्कायनुं स्वरूपकहइ छइ ॥ ऊंकइ यम
२ संस्थानिसंस्थितापणा माटइ । सोधर्मादिक्यारिइ आवरइ छइ ॥ उक्तं च ॥ तमुकाए पांतं ति किं संठिए ॥ प ॥ गो ॥ अहेमल्ल
गामुलसंठिए ॥ उप्पिं कुक्कुडपंजरसंठिए पन्नत्ते ॥ इति ॥ पुर्वे तमकायवचनपर्याय कहिया ॥ हिवे इअर्थपर्याय इकरीपु

दिवबुद्धतिवा तमुकाते णं चत्तारि कप्पे अवरित्ता चिट्ठंति तं सोधम्मीसाणसणंकुमारमाहिं
द चत्तारि पुरिसजाता पं तं संपागडपडिसेवी णाम मेगे पछन्नपडिसेवी णाम मेगे पडु
प्पन्ननंदी नाम मेगे णिस्सरणंदी णाम मेगे चत्तारि सेणाउ पं तं जतित्ता णाम मेगा न
पराजिणित्ता पराजिणित्ता नाम मेगा णो जतित्ता एगा जतित्ता वि पराजिणित्ता वि एगा नो जति
त्ता नो पराजिणित्ता एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं तं जतित्ता नाम मेगे नो पराजिणित्ता रु

रूषनुं स्वरूप कहइ छइ ॥ सुत्र ५ ॥ संपागड० संप्रगट ॥ अगीतार्थ प्रत्यक्ष सेवइ ॥ मुलगुण अथवा उत्तरगुण दर्प थकी अथ
वा कारणइ सेवइ ॥ पछन्नपडिसेवी० एकांतइ प्रतिसेवइ ॥ २ ॥ पडुप्पन्न० वस्त्र सिष्यादिक लाभइं करी । निंदइ ।
हर्ष करइ ॥ ते प्रत्यक्ष नंदी ॥ अथवा सिष्य आचार्यादि पदवी धर ॥ प्रत्यक्ष घाया ते लाइ करी निंदइ ॥ हर्ष तेअ० ॥ निस्स
रनंदी० ॥ प्रोहुणा नइं शिष्यादिक नइं अथवा पोतानइं गछादिक थी नीकलवइ करी । हर्षइ ॥ वली पाग तरइ ॥ पडुपन्नसेवी० ॥ थ
मालब्धि सेवइ पणि अनुचित करइ । तेतउइ नहीं ते अ० ॥ ३ ॥ जइत्ता० ॥ वैरीनाकेटक नइ जीपइ वैरीना कटक थकी सोगइन
हीं ॥ १ ॥ पराजि० ॥ हारइ पणि जीतइ नहीं ॥ बीजा ते जीतइ नइ हारइ कारणवस्यइ ॥ अन्य थी ते संग्राम नुं मन ऊकरइ । ते जीपइ
ने हीनइ हारइ नहीं ॥ ४ ॥ पुरिस० ॥ साधुपुरुष ॥ जइत्ता० ॥ परीसहा नइ जीतइ ॥ पराजि० ॥ परीसह थकी उद्वेग न पामइ ॥ महा
वीरवत् ॥ ८५

वीजइ कुंडरीकवत् ॥ २ ॥ त्रीजइ कदाचित परीसहनइ जीतइ कदाचित कर्मविस्पइ हारइ ॥ सिलैराजा ऋषिवत् ॥ ३ ॥ चोथइ सांराक
परासह जसमइ नथी ऊपनो ते जाणिवा ४ ॥ ऊतिहा नाम मग जयइ ॥ एवैरी ना कटक नइ जीतीन इ जीतइ ॥ एकजाती नइ हा
रिवइ सेणी ॥ पुरुष० ॥ इम साधु पुरुष परीसहकनइ विषइ मिलवें ॥ जीम वा गो पुरुत ववइका कषाय छइ ॥ तेसतीक आय
नुं स्वरूप कहइ छइ ॥ क्रोधते आगलि हृदयउ रसर ॥ इहां माया दि गिलि स्वरूप कहीइ छइ ॥ केयणा० ॥ केतन० ॥ समु
वयहूवा कोवस्तु ॥ अथवा फुलना करंडीया नुं मुं ॥ हित्य अणस्थानक ॥ वंसीमुलकेयणे० ॥ वांसनुं मुल ॥ केतन ॥ वांकुं ॥ मिंढ वसाणि
० ॥ के टानु सींग ॥ के० ॥ वांकुं ॥ गामु० ॥ बलद नुं मात्रु ॥ के० वांकु ॥ अवलेहणिया० ॥ वंसकील तातमातली छोडी कतरइ ते ॥
ले० ॥ वांको ॥ वंसमुलकेतनादि सरषी माया ते मायावंत ना असरलना लिइ थकी जाणवी ॥ जिम वंसीमुल ॥ अतिगुपि
चत्तारि सेणाउ पं तं जइत्ता णामं एगा जयइ जइत्ता णाम मेगा पराजिणति पराजिणित्ता णाम मे
गा जयति पराजिणित्ता णाम मेगा पराजिणति एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं जइत्ता णाम मे
गा जयति रु चत्तारि केतणा पं तं वंसीमुलकेतणा ते मिंढविसाणकेतणा ते गोमुत्तिकेत
णा ते अवलेहणिता केतणा ते एवामेव चउव्विहा माया पं तं वंसीमुलकेतणसमाणा जाव अ
वलेहणिताकेयणासमाणा वंसीमुलकेतणासमाणं मायं अणुप्पविट्ठे जीवे कालं करेति णे
रइएसु उववज्जति मिंढविसाणकेतणासमाणं मायं अणुप्पविट्ठे जीवे कालं करेति तिरिक्खजो
णिएसु उववज्जति गोमुत्ति जाव कालं करेति मणुस्सेसु उववज्जति अवलेहणिता जाव देवेसु
उववज्जति चत्तारि थंभा पं तं सेलथंभे अट्ठिथंभे दारुथंभे तिणिसलयाथंभे एवामेव च
वांको ॥ कोए क मीमाया एरुवी ॥ आजालि तिक्षबोलइ अल्प अल्पतर अतिहिं असैल्य असरलपणइं करी जाणिवउं ॥ इम अनुतानुबं
धी अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान ॥ संज्वलन रूप माया जाणवी ॥ वाचनीतर मइ थि पइ पिहलु ॥ अमान नुं सुत्र दीसइ छइ ॥ अन
इ तिवार पछी माया नुं सुत्र ॥ तिहां अनंतसूत्र एम ॥ चत्तारि सं तीउ पन्नत्ता उं ॥ पव्वतराती ॥ पुढवीराती ॥ रेणुराती ॥ उदकराती

एवामेव चउव्विहे कोहे इत्यादि मायासुत्रनी परि ज्ञाणि वउं ॥ सलंसत थालो पुटो ॥ सेलथंभ० ॥ पाषाणनो थांभो ॥ ति
णस० ॥ वृक्षविसेष तेहनो ॥ लेता० ॥ काष्ठ ते अंतरगसार ॥ तेहनो थांभो ॥ सेलस्तंभादिसरिषो जे मान ॥ तेमा
नवंत नमवाने अणावइ प्रणाइंकरी जाणिवउं ॥ अणुपविद्धि० ॥ तेहनइं दइ भवसीतोषको ॥ एविस्थडइ ए ति अनंतानु
बंधीयादि प्रकारि मान जाणिवउं ॥ किमिरागरत्ते० ॥ मनुष्यादिकना लोहीमाहिं उपजइ लाक्षा तेहना कीडा तेहनो रस
अति जाडो ते वस्त्रइं नांषीनइ कीडा अरहा परहा समता लाला मुकइ तेहमिश्रित पाणीई रंगरते तेणइं रंगि रंगयुं
ते किमिरागरंग । तथा कीडा मरीनइं कालवस्तु कीदुं ते किमिरागरत्तेणइं रंगइ ते किमिरागरक्तवस्त्र रागनो
उपरिट्ठमाणे पं० तं० सेलथंभसमाणे जाव तिणिसलताथंभसमाणे ४ सेलथंभसमाणं माणं
अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति नेरइएसु उववज्जति एवं जाव तिणिसलताथंभसमाणं माणं
अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति देवेसु उववज्जति चत्तारि वत्था पं० तं० किमिरागरत्ते कद्दमरागर
त्ते खंजणरागरत्ते हलिद्दरागरत्ते एवामेव चउव्विहे लोभे पं० तं० किमिरागरत्तवत्थसमाणे
कद्दमरागरत्तवत्थसमाणे खंजणरागरत्तवत्थसमाणे हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणे किमिरागरत्त
वत्थसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ नेरइएसु उववज्जति तहेव जाव हलिद्दराग
रत्तवत्थसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जति चउव्विहे संसारे पं०
अर्थ तिम घलइ इम करिवउ ॥१॥ कद्दम० ॥ नगरनो चलहउ ॥२॥ खंजण० ॥ दीवाना कोडीआनी मली ॥३॥ हलद्द प्रसिद्ध ॥४॥
किमिरागरक्तवस्त्रादि सरिषो ॥ लोभ ते लोभवंतना अंतर्गत उदय होय तो लोभ तेह अतिसय इं होणा परिणामइ करी
जाणवउं ॥ तथा किमिरागरक्तवस्त्र बालि ऊषतुं पणि रंग मुकइ नहीं ॥ इम हिं मुउ पण लोभ न मुकइ ॥ तेलोभना अं
नानुबंधीउ ॥ एक कषायकथा ॥ कषायथकी संसार वाधइ ॥ तेणइं संसारनुं स्वरूप कहइ छइ ॥ संसरवुं ते संसार ॥ मनु
ष्यादिक पर्यायथकी नारकादिक पर्यायनइं पुहचवउं ॥ ५६

नेरइए० ॥ नारकी यायुः आऊषु नामगोत्रादिकर्म तेहनइं उदइं ते जीव नारकी कहीइ ॥ उक्तं च ॥ नेरइए णं नेतिनेर
इएसु उववज्जइ अनेरइए नेरइएसु उववज्जइ गो० ॥ नेरइए नेरइएसु उववज्जइ ॥ ति ॥ नारकीनुं संसरण ॥ उ
त्पत्ति देशनइं विषइं जावुं ॥ अथवा अनेरी अनेरी अवस्थानइं पुहचवुं ॥ ते नेरयिक संसार ॥ अथवा संसरि जीव जेह
नि विषइ ते संसार च्यारि गतिरूप ॥ नारकी इं अनुभवी ते गतिरूप अथवा परंपराई च्यारि गतिरूप जे संसार ते नेरयिक सं
सार ॥ इम तिर्यंचादि संसार ॥ एक कहिउ संसार ते तउ आऊषइ हुइ तइ कहइ ते सलोआऊषानुं सुत्र कहइ छइ ॥ जाइ कहइ ते
आऊषुकर्म विसेष ॥ जेणइं करीनइं नारकीना तावनइं विषइ धरीइं प्राणीनइं ॥ ते नेरयिकायुः ॥ इम तिर्यंचादिक
तं० णेरतियसंसारे जाव देवसंसारे चउव्विहे आउते पं० तं० णेरतिताउते जाव देवा
उते चउव्विहे भवे पं० तं० नेरतितभवे जाव देवभवे चउव्विहे आहारे पं० तं० असणे
पाणे खाइमे साइमे चउव्विहे आहारे पं० तं० उवक्खरसंपन्ने उवक्खडसंपन्ने परिजुसि
यसंपन्ने सत्तावसंपन्ने चउव्विहे बंधे पं० तं० पगतिबंधे ठितीबंधे अणुभाव बंधे
आऊषु जाणिवुं ॥ एआऊषुं ते भव विषइं हुइ ॥ तेसलो भवनुं सुत्र कहीइ छइ ॥ ऊपजिवुं ते भव ॥ नरकि ऊपजवुं ते
नेरयिक भव । इम तिर्यंचादिकनइं विषइं ॥ तउ जीव आहार करइ । तेसलो आहारनुं सुत्र कहइ छइ ॥ तिलाड
वस्तु आहारीइ ते आहार ॥ असइ० ॥ खाइए ते असन कहेनादि ॥ पीजीइ ते पाणी सावीरादि ॥ खावानुं प्रजोजन बहुं छे
हुमइ ते खादिमः ॥ स्वादनुं प्रजोजन छइ जेहनुं ते स्वादिम तांबूलादि ॥ उवक्खरसंपन्न० ॥ उपस्करीइ संस्कारीइ जेणइं
करी ते उपस्कार हिंग्वादि तेणइं करीनइं संपन्न ते उपस्करसंपन्न ॥ तथा पचवुं ते उपस्कृत ते तेणइं करीनइं जे संपन्न ऊ
दनमंडकादि ॥ पाठांतर ॥ नाणवक्खरसंपन्न० ॥ हिंग्वादिकइं करी असंस्कृत उदनादि ते नावक्खरसंपन्न ॥ सत्ता विहूणी
पचवा विना ॥ संपन्न० ॥ निपनुं ते सत्तावसंपन्न ईत्यादि ॥ द्राखादि ॥ परिजु० ॥ पर्युषित रात्रि वासी राषवुं तेणइं करी सं
पन्न ते पर्युषित संपन्न इारकादि ऊसंगे तेवासी राषीइ का पाडी बाइ अथवा आदणादि ॥ एतावता उकर्म बंतनकुः

तनणी कर्मनुंस्वरूपकहइछइ॥ चऊव्विहेबंधे पं०॥ सकषायपणाथकी कर्मयोग्यपुद्गलनुंग्रहिवुं तेबंधक० पगति० कर्मनीप्रकृतिजिज्ञानावरणीयादि ८ तेहनोजिबंध तेप्रकृतिबंध अथवा विसेषरहित॥ कर्मनुंसमुच्चइबंधते प्र०॥ स्थिति०॥ तेहनइंजकर्मनीप्रकृतिनइ॥ जघन्यादिकस्थितिनउजिबंध तेस्थितिबंध॥ अनुभाव विपाक तीव्रादिरसरूप तेहनोबंध तेअनुभागबंध॥ प्रदेसनुंप्रकृतिप्रकृतिनइबांधवुं तेसंबंधकरवो तेप्रदेसबंध॥ मर्यादासहितगुडादिमोदकबंधवत्॥ उवक्कमे०॥ उपक्रमीइं ते उपक्रम॥ कर्मनुंबांध्यापणाइकरीजदीस्यापणाहिकइंकरी॥ परणामिवावुंहेतुजीवसक्तिविसेषतेऊपक्रमअनेरइंगामइं एहनुंनामकरण कहियइं॥ अथवाऊपक्रमिवुंतेऊपक्रम आरंभवो॥ बंधनादिकनुंआरंभवुं॥ बंधणोवक्कमे०॥ कर्मप्रकृतिनुंजीवप्रदेसनुंपरस्परइंसंबंधवुं। तेह्नुआइकरीवोछिउ

पदेसबंधे चउव्विहे उवक्कमे पं० तं बंधणोवक्कमे उदीरणोवक्कमे उवसामणोवक्कमे विप्परिणामणोवक्कमे बंधणोवक्कमे चउव्विहे पं० तं पगतिबंधणोवक्कमे ठितीबंधणोवक्कमे अणुभावबंधणोवक्कमे पदेसबंधणोवक्कमे उदीरणोवक्कमे चउव्विहे पं० तं पगतिउदीरणोवक्कमे ठितीउदीरणोवक्कमे अणुभावउदीरणोवक्कमे पदेसउदीरणोवक्कमे

लोहसिलाकानासंबंधनीउपमाइंआणवुं तेबंधनोपक्रम॥ कर्मफलनोकालअणपोहोतइं। उदइविषइंआणवुं। तेउदीरणोपक्रम॥ तथाउदयिउदीरणानिधत्तनिकाचनाईत्यादिअणाकरवा पणाइकर्मनुंस्थापवुं तेतेउपशमातेहनउउपक्रम विप्परिणाम०॥ उद्यकेत्रादिकइतथाकरणविसेषइ॥ अवस्थांतरइंप्पाकुवाडिवुं तेविपरिणमततेहनोऊपक्रम॥ बंधनुंकारणविऊंमकारइं॥ प्रकृतिबंधनोउपक्रम जीवपरिणामयोगरूप॥ स्थितिबंधनउऊपक्रमकषायरूप॥ स्थितिनइंकषायनाहेतुपणाथी॥ अनुभागबंधनउउपक्रमकषायरूप॥ प्रदेसबंधनोऊपक्रमतेहजयोगरूप॥ ऊदीरणोवक्कमविऊप्रकारिइ॥ पगतिउदी०॥ जिमूलप्रकृतितथाउत्तरप्रकृतिनीबलवीर्यविसेषइंआकरषीउदयमांविषइंप्रवेसीइ तेप्रकृतिऊदीरणा तेहनोउपक्रम ठितीउदी०॥ वीर्यविसेषइंप्राप्तउदयरसवेदीइ तेअनुभागऊदीरणा॥ पादेसऊदी० ५

प्राप्तउदयनियतपरिणामाण कर्मप्रदेससाथिइ॥ अप्राप्तउदयनियतपरिमांण कर्मप्रदेसनुंउयवेदवुंतेप्रदेसउदीरणोपक्रम॥ इहांपणिकषाययोगरूपपरिमाणतेऊपक्रमकहीइ॥ अथवाआरंभवुंतेऊपक्रम॥ प्रतिउपसमनोपक्रमादि ४ उपक्रमसमुच्चयइ उपसमनोपक्रमकहिऊंछइ। तेणाइंअनुसारिइंजाणिवुं॥ तथाप्रकृतिविपरिणामोपक्रमादि ४ लोगासमुच्चयइ॥ विपरिणामनोपक्रमकहिऊछइ। तेहनीपरिइंजाणिवुं॥ उपक्रमतेप्रकृत्यादिकनउपरिणामाविवा॥ समर्थजीवनुंवीर्यजाणिवुं॥ चऊव्विहेअप्पाबहुए०॥ पं०॥ पगतिअप्प०॥ प्रकृतिनइंविषइंअल्पबहुतपणुंअंभदिनीउपयोगाइं। जिमसर्वस्तोक०॥ सघलाइंथाणाथी॥ प्रकृतिनुंबांधणहारउपसांतिमाहा

उवसामणोवक्कमे चउव्विहे पं० तं पगतिउवसामणोवक्कमे ठितीअणुभागपदेस उवसामणोवक्कमे विप्परिणामणोवक्कमे चउव्विहे पं० तं पगतिठितीअणुभागपदेस विप्प चउव्विहे अप्पबहुते पं० तं पगतिअप्पाबहुए ठितिअणुभागपदेसअप्पाबहुए

हादिगुणस्थानकवरतीसाधुजिसणीतेहनइंएकविधिकर्मनउबंधछइ॥ बहुतरबंधगतिउपशांतमोहादिमोहसाधुनीऊपेक्षाइंसूक्ष्मसंपरायगुणस्थानकवरतीसाधुतेह्नणीछविधिकर्मनोबांधणहारछइ॥ तेथकीसाततविधिकर्मनोबांधणहार॥ बहुतरबंधक तेहथकीआठविधकर्मनोबांधणहारबहुतरबंधक॥ ठितिनइंस्थितिनइंविषइंअल्पबहुतपणुं यथासर्वथोवासंजयस्सजहन्नउठिइबंधो॥ पजिंदियबायरपज्जत्तस्सजहन्नउठिईबंधोअसंखेज्जगुणेईत्यादि॥ अनुभागविसेषइंअल्पबहुपणुं॥ यथा सव्वथोवाइंअणंतगुणवुढिट्ठाणाणि॥ असंखगुणट्ठाणाणि॥ अणंतभागवुढिट्ठाणाणि असंखगुणाणि॥ प्रदेसनइंविषइ॥ अल्पबहुपणुंयथा॥ अठविहबंधगस्सआऊगाणोथोवो॥ नामगोयाणंउन्नोविसेसाहिउ॥ नाणदंसणावरणंतरायाणंउन्नोविसेसाहिउ॥ मोहस्सविसेसाहिउ वेयणिज्जस्सविसेसाहिउ॥ संकाम०॥ ययप्रकृतिनइंजीवबांधइ तेहनइअनुभावइकरी प्रकृतिअंतरनइंविषइरह्यो॥ दलतवीर्यविसेषिइंकरीपरिणामावइ तेसंक्रम॥

Dr. BHAU DAJI
भाऊदाजीइत्यस्य ...

पगइसंक्रमः॥ सप्रभेदाइं तत्स्वरूप जाणवुं॥ अथवा मूलप्रकृति उत्तरप्रकृति अनुसंक्रमः॥ स्थितिनुं वधारवुं घटाडिवुं॥ अथवा प्रकृति
अनंतरनी स्थितिनइ पोहचाडिवुं॥ ते स्थितिसंक्रमः॥ तथा अनुभागसंक्रम पणि ईम जाणवुं॥ जे॥ तथा जे कर्मद्र
व्यनुं आनेरी प्रकृतिनइं स्वभावइं परिणमाविवउ॥ तत्प्रदेशसंक्रमः॥ निहत्त॥ निधत्तवुं॥ स्थापवुं ते निहत्त
अथवा निहत्त कहीइ॥ उद्वर्तन अपवर्त्तन रहित शेषकरण नइ अजोग्यपणाइ करी स्थापिवुं ते निधत्त॥ निकाइ॰ कर्मनुं
नि॰॥ अतिहि॥ काचिता॥ बांधवुं ते निकाचित कर्मनुं सर्वकरण नइ अजोग्यपणाइं करी स्थापिवुं॥ अथवा पूर्वबंध
कर्मनुं ताती एकठी मेली। लोहसिलाका नउ संबंध ते सरिषो ते निधत्त॥ अनइ ताती एकठी मेली। कूटी लोहसि
लाका। ते सरिषो सर्वथा निकाचित॥ इस्यां निधत्त निकाचित नइ विषइ॥ प्रकृत्यादि नो विशेष ते समुच्चयइ

चउविहे संकम्मे पं तं पगतिसंकम्मे ठितीसंकमे अणुभागसंकमे पएससंकमे चउव्विहे
णिहत्ते पं तं पगतिणिहत्ते ठिती अणु पएसनिहत्ते चउव्विहे निगायइ ते पं तं पगति
णिगायिते ठिति अणु पएस णिगायिते चत्तारि एक्का पं तं दविएक्कते माउएएक्कते
पज्जवेक्कते संगहएक्कते चत्तारि किती पं तं दवितकती माउयकती पज्जवकती संगहकती

प्रकृत्यादि चउ विध थाणवुं छइ तिम जाणवुं॥ अनइ विसेषबंधनां भेदस्वरूप जाणनहार छइ तेणइं कर्मप्रकृ
तिनो संग्रहणी जोवी॥ अनंतर अल्प बहु अपतु कहिउ॥ तेहमांहि अल्पतन अल्पातएक॥ ते साप्रत तेहनी आप
काइ बहु॥ तेहनी अल्प बहुतना कहणहार॥ एक कति सर्वसिहनइं चउठाणइ अवतरवउ॥ सुत्र त्रिणि कहइ
छइ॥ ते सापतहनी आपकाइ बहुस्मृता व्यारि इ एक कह्या॥ दविएक्कते॰॥ संग्रहनइं द्रव्य सय एक॥ माउए
कए॰॥ संग्रनइ उत्पत्ति स्थानक एक॥ पज्जवएकते॰॥ पर्याय सम एक॥ संग्रह॰॥ संग्रहिवुं ते समूह एके॥ व्यारि क
तीयं कती॥ संख्यावाची बहुवचनांत सह कती॥ कितला॥ दविएकती॥ कितला द्रव्य॥ माउएकती॥ कितला॥ मा
इका पद॥ पज्जवकती॥ कितला पर्याय॥ संगहकती॥ कितला सालिग्रा भूमादि॥ १०८

सर्व॰॥ सर्वनाम साहवए॰॥ ते सचित्तादि वस्तुनुं नाम॥ सर्व कीजइं ते नाम॥ सर्व व्याकल्पना इं करीइ॥ इम सर्वई अपदहवुं स्थाप
वुं ते स्थापना सर्व स्थापना ते अक्षादिकरूप जाणिवा॥ आएससव्वए॰॥ व्यवहार साषा। यथा। जिम घृत घणुं विइ सर्व
षपिउ कहिवाइ॥ तथा ग्राममाहिलो अधिक सर नाठइ सर्व ग्राम नाठउं कहिवाइ। ए व्यवहारवचनइ इत्यादि आदेशसर्व॥ नि
रवासेससव्वए॰॥ निर्विशेष सर्व ते एक अनर्थ ते जातिनां सर्व माहि लास्यइ पणि फिर नहीं॥ जिम देवता सर्व अतिमिषए
अर्थ सर्वो देव महालाला सइ पणि कदाही फिरइ नही ते निर्विशेष सर्व॥ अनंतर सर्व प्रकृषि कहिउ ते प्रस्तावइ की सर्व मनुष्य
क्षेत्रनइ पर्यंतवरती पर्वतनइ विषइ॥ सर्व तिरिछी दिसि विदिसिनइ विषइ। कूट परूपइ छइ॥ माणुसुत्तरस्स णं
॰॥ ईहां कूट दिसिइं कह्या छइ॥ तिम कूट विदिसिइं पणि जाणवा॥ अनइ कितला एक एहमांहिलो दिसिइं पणि छइ॥ अ मिकुं

चत्तारि सव्वा पं तं णामसव्वए ठवणसव्वए आएससव्वए निरवसेससव्वए माणुसुत्तरस्स णं
पव्वयस्स चउदिसिं चत्तारि कूडा पं तं रयणे रतणुच्चए सव्वरयणे रतणसंचए जंबुद्दीवे २
भरहेरवतेसु वासेसु तीताते उसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीउ
कालो होत्था जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवतेसु वासेसु इमीसे उसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए एवं से

णिनइ विषइ २ रत्नकूट गरुडवेणुदेवनो आवासस्थानक कूट छइ॥ अनइ दक्षिण दिसिनइ विषइ रत्नोच्चयकूट॥ यंघांतर
नइ विषइ॥ ए कूटनुं नाम विलंबसुपद एहवे बीजुं नाम छइ॥ वेलंबक वायुकुमारनाइंद्रनो आवासस्थानक कूट छइ॥
नइ दक्षिण [illegible]॥ तथा ईसाणकोणनइ विषइ सर्वरत्नकूट॥ वेणुदाति सुवर्णकुमारनाइंद्रनो आवासस्थानक
इ कोट छइ॥ वायव्यकोणनइ विषइ। रत्नसंचयकूट। एहबीजुं नाम प्रभंजनकूट॥ प्रभंजन वायुकुमारनाइंद्र नउ आवा
सस्थानक छइ॥ ए सावद्वीपसागर प्रज्ञप्ती संग्रहणीनइ अनुसारिइं कह्या छइ॥ ईहां चउगणमां छइ व्यारि कूट कह्या छइ॥
अनेरा पूर्व दक्षिण पश्चिम। उत्तरनइ प्रत्येक त्रिणि २ कूट छइ एवं १२ कूट एक एक का देवता अधिष्ठित छइ॥ उक्तं च॥ पुव्वेण तिन्नि
कूडा॥ दाहिणउ तिन्नि तिन्नि अवरेण॥ उत्तरउ तिन्नि सावा चउदिसिं माणुसनगस्स॥ अनंतर मानुषोत्तरना कूट कह्या॥

छिवइ मातुघोतरिहं आवस्या हात्रइ वकहइ छइ॥ पद०॥ संख्यास्थानक॥ संख्यास्थानक अनेक प्रकारि छइ॥ नि हांस
वि चाहीसु छजघन्य पद॥ तिजघन्यपदि हि ध अरिहंतादि अयस्पकुछइ॥ भुमिका इसडसाल॥ बामषला २६२ वनंते

रि सागरोवमकोडाकोडीउ कालो ह्यत्था जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु आगमेस्साए
उसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीउ कालो भविस्सइ जंबुद्दी
वे २ देवकुरुउत्तरकुरुवज्जाउ चत्तारि अकम्मभूमीउ पं तं हेमवए हेरन्नवए हरिवासे रम्मग
वासे चत्तारि वट्टवेयड्डपव्वया पं तं सद्दावई वियडावई गंधावई मालवंतपरियाए तत्थ णं च
त्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति तं साती पभासे अरुणे पउमे जंबुद्दी
वे २ महाविदेहवासे चउव्विहे पं तं पुव्वविदेहे देवकुरा उत्तरकुरा सव्वे वि णं णिसढणीलवं
तवासहरपव्वया चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं पं तं जंबुद्दी
वे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं सीताए महानदीए उत्तरे कूले चत्तारि वक्खारपव्वया पं तं चि
त्तकूडे पम्हकूडे नलिणकूडे एगसेले जंबुमंदरपुर सीताए महानदीए दाहिणे कूले चत्तारि
वक्खारपव्वया पं तं तिकूडे वेसमणकूडे अंजणे मातंजणे जंबुमंदरपच्चत्थिमेणं सीउदाए महा
नदीए दाहिणे कूले चत्तारि वक्खारपव्वया पं तं अंकावती पम्हावती आसीविसे सुहावहे जंबुमंदर
पच्च सीउदाए महाणदीए उत्तरे कूले चत्तारि वक्खारपव्वया पं तं चंदपव्वए सूरपव्वए देवपव्वए णागप
व्वए जंबुमंदरस्स पव्वयस्स चउसु विदिसासु चत्तारि वक्खारपव्वया पं तं सोमणसे विज्जुप्पभे गंध
मायणे मालवंते जंबुद्दीवे २ महाविदेहे वासे जहन्नपए चत्तारि अरहंता चत्तारि चक्कवट्टी चत्तारि
बलदेवा चत्तारि वासुदेवा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा जंबुद्दीवे २ मंदरपव्वते ५५
चत्तारि वणा पं तं भद्दसालवणे

नंदनासोमणसमिह सिखरइं पंडगवन तीर्थंकर नइं अभिषेक करइ॥ तेनणी अ॰ अभिषेकसिला॥ पडुंकंबलसिला दक्षिणदि
दिसि आदिश्र कुंकं मइं जाणवो॥ विरकल॰॥ पहोली॥ काले॰ आदिकरि हो॰॥ सुसमसुसमकाल आदि करीनइं॥ एहजअर्थ
वली गाथाइं करी कहइ छइ॥ जंबु॰॥ जंबुद्दीपसंबंधी के तेजंबुद्दीपक॥ धातकीखंडद्वीप पुष्कर॥ जंबुद्दीपदि पहं जे आवस्य

नंदणवणे सोमणसवणे पंडगवणे जंबुमंदरपव्वए चत्तारि अभिसेगसिलाउ पं तं पंडुकंब
लसिला अइपंडुकंबलसिला रत्तकंबलसिला अतिरत्तकंबलसिला मंदरचूलियाणं उवरिं च
त्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं पन्नत्ता एवं धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धे वि कालं आदिं करेत्ता जाव मं
दरचूलियत्ति एवं जाव पुक्खरवरदीवपच्चत्थिमद्धे जाव मंदरचूलियत्ति जंबुद्दीवगं आवस्सगं
तु कालाउ चूलिया जाव धायइसंडे पुक्खरवरे य पुव्वावरे पासे जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स चत्तारि दा
रा [illegible] विजए वेजयंते जयंते अपराजिते ते णं दारा चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं तावतियं
चेव पवेसेणं पं तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढीया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति तं विजए
वेजयंते जयंते अपराजिते जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतवासहरपव्वय
स्स चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं तिन्नि तिन्नि जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं तं

एकोरुय॥ आवस्पछइ जे॥ कहा विपलटा इनही॥ जंबुद्दीपसंबंधि उवस्तुनो समुद्र॥ पुष्करे॥ स्नु आदि संभवति तेकहइ छइ
काल॰॥ सुषमसुषमरूप काल धुरि आरइ ४ कोडाकोडि सागरोपम ते॥ मंदरचूलिकांत जितावक प्यात संबंधि
घरनइं विषइ॥ पुक्खरवरसमइ दिवइ॥ पुव्वावरे॥ पुर्वार्द्ध पश्चिमार्द्ध नइं विषइ॥ प्रत्येक प्रत्येक [illegible] जोणावु॥ अक्खि
नही॥ [illegible] जाणवा॥ महाहिमवंतनी आप साइं नो हानो तेचुल्लहिमवंत॥ तिहनी पुर्वनाणसा पश्चिम [illegible] पासी
बि बिसा [illegible] नीकली॥ चउसु विदिसासु॥ ईसाने अग्नि नैरति वायव्यकुणि॥ [illegible] उलिघी मउ॥
एत्थ णं॰॥ एसा [illegible] विषइ॥ अंतरदीवा॰॥ समुद्रमाहि [illegible] अंतरद्वीप॥ [illegible]

छ जोयणसयाइ तेतलेअंतरदीप॥ तेहनां कोणां (?) चउविहा मणुष्य ... दीपइ
वइ च्यारि ज्ञातिनां मनुष्य वसइ छइ॥ मनुष्य नांना मद्वीप सरिखा जि जाणवा॥ तेह्यार दीपथकी च्यारि ... सुसमु
द्रमाहिं तेसाथा कथ (?) रइइ॥ तिहां बीजा ४ दीपा ... ७०० जोयण लांबा पहोला॥ एमए केकाली ... व बार तां सा
तमइ चउक हइ॥ ... जोयण जाइए। तिहां नवसइं जोयण नां ... लां बा पहोला ... दीपा ...
... पल्योपमनाअसंख्यातमा भाग देवआऊखइ॥ आव ... जोयण ऊंचो॥ एर वर ता ... विषइ सिखरी

एगूरुयदीवे आभासियदीवे वेसाणियदीवे णंगोलियदीवे तेसु णं दीवेसु चउव्वि
हा मणुस्सा परिवसंति तंजहा एगूरुता आभासिता वेसाणिया णंगोलिया तेसु णं दीवा
णं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं चत्तारि जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं० तं०
हयकन्नदीवे गयकन्नदीवे गोकन्नदीवे सक्कुलिकन्नदीवे तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा
परिवसंति तं० हयकन्ना गयकन्ना गोकन्ना सक्कुलिकन्ना तेसु णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमु
द्दं पंच जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं० तं० आयंसमुहदीवे मेंढमुहदीवे अओ
मुहदीवे गोमुहदीवे तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा तेसु णं दीवाणं चउसु विदिसासु लव
णसमुद्दं छ जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं० तं० आसमुहदीवे हत्थिमुहदीवे सीह
मुहदीवे वग्घमुहदीवे तेसु णं दीवेसु मणुस्सा भाणियव्वा तेसु णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं
सत्त जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं० तं० आसकन्नदीवे हत्थिकन्नदीवे अकन्न
दीवे कन्नपाउरणदीवे तेसु णं दीवेसु मणुया भाणियव्वा तेसु णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमु
द्दं अट्ठ जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं० तं० उक्कामुहदीवे मेहमुहदीवे विज्जुमुहदीवे
विज्जुदंतदीवे तेसु णं दीवेसु मणुस्सा भाणियव्वा तेसु णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं णव १००
जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं० तं० घणदंतदीवे ल

पर्वत॥ इसाणादि ऊणि ... महा ... अट्ठावीस द्वीप जाणवा॥ एत्थणं॥ लवणनी विचाला दससहस्र जोयण
विष्कंभ ... महालिंजर॥ मोटा ऊदक कुंभ
मइ संठाण ... पाताल॥ पातालनी परि अगाध ... गंभीर ...

ट्ठदंतदीवे गूढदंतदीवे सुद्धदंतदीवे तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति तंजहा घणदं
ता लट्ठदंता गूढदंता सुद्धदंता जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं सिहरिस्स वासहरपव्वयस्स चउसु वि
दिसासु लवणसमुद्दं तिन्नि २ जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं० तं० एगोरुयदीवे
सेसं तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव सुद्धदंता जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेतितंताओ चउ
द्दिसिं लवणसमुद्दं पंचाणउइं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थ णं महतिमहालता महालिंजरसंठाणसंठि
ता चत्तारि महापायाला पं० तं० वलयामुहे केउए जूवए ईसरे तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलि
ओवमट्ठितीता परिवसंति तं० काले महाकाले वेलंबे पभंजणे जंबुद्दीवस्स णं बाहिरिल्लाओ वेतितं
ताओ चउद्दिसिं लवणसमुद्दं बायालीसं बायालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थ णं चउण्हं वेलंध
रणागराईणं चत्तारि आवासपव्वया पं० तं० गोथुभे दओभासे संखे दगसीमे तत्थ णं चत्तारि देवा महि
ड्ढीया जाव पलिओवमट्ठितीता परिवसंति गोथुभे सिवए संखे मणोसिलाए जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बा

तेतलइं पाताला॥ अथवा पातालनइ विषइ रह्या मोटा पाताला॥ मुखि १०००० जो० पहोला॥ पेटइं मध्य लाख जो० पहोला॥ ... जोयण ऊंचा॥ ऊपलइ ... पाताला॥ मध्य भागइ वायपाणी॥ मूलि जि वाय॥ ... वासी काला दिक देव ...
... वेलंधर॥ लवणसमुद्रनी सिष्या ... अथवा बाहिरि जाती ... वेलंधर॥ ना
ग कुमार ... नागकुमार ... वेलंधर नाग ... पर्वत ...
... हुता ... जाणवा॥

इसानकूणा दिकविदिसिमइ विषइ। वेलंधर नाल कं डिवंद्रीजे नागराजा तेम्रनुवेलंधर नागराजा॥ वंद्रमा नइ॥
पत्तासिंसु०॥ वंद्रमानी सोमकां तिमाटइ॥ वस्तुनुं प्रकासवुंकहिउं॥ सुर्यनीआगतांकिरणमाटइ॥ तविस्सु०॥ वंद्रनुतं
पाडवुंकहिउं॥ चारिआचितव्यारिकहिकीनादेवता॥ जावसेणी नीच्यारि हिमदेवता॥ चक्कवाल०॥ वलयनुं पुरुलपणुं

दिविलाउ विद्दयं ताउ चउसु विदिसासु लवलसमुद्दं बायाली सं बायाली सं जोयणसहस्साइं उगा
हित्ता एत्थणं चउ एहिं अणुवेलंधरणाग रातीणं चत्तारि आवासपव्वता पं तं कक्कोडए विज्जु
प्पभे केलासे अरुणप्पभे तत्थणं चत्तारि देवामहिड्डीया जावपलिउवमट्ठितीया परिवसं
ति तं कक्कोडए कद्दमए केलासे अरुणप्पभे लवणेणंसमुद्दे चत्तारि चंद्दा पत्तासिंसुवा पत्तासं
तिवा पत्तासिस्संतिवा चत्तारि सुरिता तवतिंसुवा तवंतिवा तवतिस्संतिवा चत्तारि कित्तीया
उ जाव चत्तारि सरणीउ चत्तारि अग्गी जाव चत्तारि जमा चत्तारि अंगारया जाव चत्तारि भावकेउ
लवणस्सणंसमुद्दस्स चत्तारि दारा पं तं विजए वेजयंते अपराजिते तेणंदारा चत्तारि जोयण
इं विक्खंभेणं तावतितं चेव पवेसेणं पं तत्थणं चत्तारि देवा महिड्डिया जावपलिउवमट्ठितीया परिव
संति तं विजए वेजयंते जयंते अपराजिते धायइसंडेणंदीवे चत्तारि जोयणसयसहस्साइं चक्क
वालविक्खंभेणं पं जंबुदीवस्सणं दीवस्सबहिता चत्तारि भरहाइं चत्तारि एरवयाइं एवं जहा सद्दुदेस
ते तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव चत्तारि मंदरा चत्तारि मंदरचुलिया॥ ७॥ ७॥ ७॥ ७॥ ७॥७॥

वउक्कुद्देस०॥ बीजा ठाणानो त्रीजो उद्देसो॥ धुरिसए नउ अधिकार छइ तेसलो समुद्रे छइ तिहांलवणमाटइ लवणकह्या
छइ॥ आदी च्यार २ तसर्व लेवा॥ एमनुष्य क्षेत्रनुं वर्णन कहिउं॥ हिवइ क्षेत्र नासरीसापणा छकी नंदीस्वरद्वी
पनी वस्तु नुं वर्णन कहिउ॥

जंबुलवणधायइ॥ कालोदपुष्करादिद्वीपलीइ॥ वारुणोदी २ घयरसु॥ नंदीसर अरुणादी वुद्दीं॥ ...नंदीस्वर॥
नंदीस्वरइ उत्तेमनुष्यद्वीपनी आपणाइं छ कूत कहिकरी वरतन तेलं दीप छइद्वीप॥ चक्कमज्झ०॥ वविलीज
अवयवतेमध्यदेसभाग।तेकदा वित आघो पाछोइ छइ॥ तेसलं चक्कमज्झ देसभागते अत्तेल वविइंप्रदेशादिकइ आघो
पाछोवनहीं॥ अंजनरूपवर्ण तिनउ मुलिदससहस्स जोयणनुं छाहोलपणुं कहिउं छइ॥ अम्रइद्वीपसागर अनुक्रमीसंअणमाहि

णंदीसरवरस्सणं दीवस्स चक्कवाल विक्खंभस्स बहुमज्झदेसभाग चउदिसिं चत्तारि मंदरचुलियाती
अंजणगपव्वता पं तं पुरच्छिमिल्ले अंजणगपव्वते पच्चत्थिमिल्ले अंजणगपव्वते दाहिणिल्ले अंज
णगपव्वते उत्तरिल्ले अंजणगपव्वते ते णं अंजणगपव्वता चउरासीतिं जोयणसहस्साइं उद्धं उच्च
त्तेणं एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं मुलदसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं तदाणं तरं तं मायाए प
रिहायमाणे २ उवरिमगं जोयणसहस्सं विक्खंभेणं पन्नत्ता मुल एगतीसं जोयणसहस्साइं छव्वी
त्तेवीसजोयणसते परिक्खेवेणं उवरिं तिन्नि २ जोयणसहस्साइं एगं च बावट्ठं जोयणसतं परि
क्खेवेणं मुलविच्छिन्ना मज्झसंखित्ता उप्पिंतणुया गोपुच्छसंठाणसंठिता सव्व अंजणमया अच्छा लण्ह

अच्छा०॥ आकास स्फटिकनी परिनिर्मल॥ जावसहमा हिं॥ सुण्हा०॥ सुक्ष्म पुद्गलस्कंधि इंनीपनां। झिमकोणुं सुवाडुं॥ लण्हा०॥ सुंहालां घुं
टयांसु गडानी परिइं॥ घट्ठा०॥ घस्यानी परि घस्या केकसस खिइं करीनी पाषाणप्रतिमानी परिइं॥ मट्ठा०॥ मठारयानी परिइं मट्ठारया
सुंहालइ आरत्नइं पाषाणप्रतिमानी परिइं अथवा॥ पुंडाणइं करी मइ पछइ सानी परिइं साध्यायइ तकारणसवी॥ नीरया०॥ रजरहि
त॥ निम्मला०॥ कठणमलरहित अथवा धूयालु गडासरिखा॥ निःपंक०॥ लीनामलरहित॥ अथवा पकारहित॥ निक्कंकड छा
या०॥ आवरणरहितामा ला अथवा अकलंक सोभा॥ सप्पभा०॥ देवता नइ आनद रूपजी विवादि प्रत्तावसुकें अथवा प्रातिइस
कृतिकरइ तस्वप्रता॥ समिरीया०॥ किरणसहित॥ सउज्जोया०॥ वस्तुनइ प्रकासवइ कह्योतसहित॥ पासाईया०॥ मननइ प्र
सादकर। दरसणिज्जा०॥ देषवाजोग्य जेतांआं खिसम नथाकइ॥ अभिरूपा०॥ मनोहर॥ पडिरूवा०॥ जोनार प्रतिरमणीक॥

भरतामाहि
दसरूकइरत्ने
जोयणमा
विरागोपा
कुलपणुं॥
कंदत ७०
५०० जो०
नुंछाहोल
पणुं॥ अन
इ स्हंडइं रूप
रि ७७४००
जो०॥ पुहो
लपणुं कहि
उं छइ॥ त
मतांतरिक
घटइ॥ ते
तउक वलि
नइंगम्य॥
सर्वअंजन
कं नामाका
लोरत्नेम
र्व तमइते
वामकालो

बहुसमा० ॥ असंतसमारमणीय ॥ सिद्ध० ॥ सास्वता ॥ अथवा सिद्धसास्वती अरिहंतप्रतिमानां आयतन स्थानक ते सिद्धायतन ॥
मारक० ॥ आयतनद्वारनइ विषइ ऊभ मंडप ते मुष । तेपटसालरूप ॥ पेछा० ॥ पेषणुं ते माटिक तेजोवानइ अर्थइं ऊंचइ रूप
मंडप ते प्रेक्षागृहमंडप एम सिद्ध छइ ॥ वज्ररतनबिंबपति माय अक्षाटक० ॥ पेषणानाटकनाकरणहार ॥ लोकनइं बइ

डिरूवा तेसिणं अंजणगपव्वयाणं उवरिं बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पं तेसिणं बहुसमरम
णिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि सिद्धायणा पन्नत्ता तेणं सिद्धायणा एगंजो
यणसयं आयामेणं पन्नासं जोयणाइं विरकंभेणं बावत्तरिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं तेसिणं सिद्धाय
णाणं चउदिसिं चत्तारि दारा पं तं देवदार असुरदार णागदार सुवन्नदार तेसुणं दारेसु च
उव्विहा देवा परिवसंति तं देवा असुरा णागा सुवन्ना तेसिणं दाराणं पुरतो चत्तारि मुहमंडवा
पं तेसिणं मुहमंडवाणं पुरउ चत्तारि पिच्छाघरमंडवा पं तेसिणं पिछाघरमंडवाणं बहुमज्झदे
सभागे चत्तारि वइरामया अरकाडगा पं तेसिणं वइरामयाणं अरकाडगाणं बहुमज्झदेसभागे
चत्तारि मणिपेढियातो पं तासिणं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि सीहासणा पन्नत्ता तेसिणं सी
हासणाणं उवरिं चत्तारि विजयदूसा पन्नत्ता तेसिणं विजयदूसाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि वइ
रामया अंकुसा पं तेसिणं वइरामतेसु अंकुसेसु चत्तारि कुंभिका मुत्तादामा पं तेणं कुंभिका मु

सणारूप प्रसिद्ध ॥ विजयदूस्य० ॥ चंदुआरूप वस्त्र ॥ अंकुस ते आगलि वस्तु कहीसि ते तेहनइ बिलगाडवा निमित्तइं ॥ कुंभिका०
कुंभप्रमाण मोती छइ ॥ त्यमासा विचइ तेह कुंभक ॥ मुक्तादाम० ॥ मोतीनी माला ॥ कुंभनु प्रमाण ॥ हो असइ उपसइ ॥ हो अमइ कु
ंभइ आ ॥ चत्तारि सइया उकुलउ ॥ चत्तारि कुलवा पाउ ॥ चत्तारि पंडया आ छइ ॥ चत्तारि आढया दोणा उ ॥ सहो आ
ढ्या उ कुंभ उ ॥ कोल्ला असइ मझि मकु ॥ सयमुष्क सउ ति ॥ १०२

तदद्ध० ॥ तेहमोतीनें अर्द्धप्रमाण छइ जेहनुं कुंभपणुं ॥ मिश्रं० ॥ तेमाहि अर्द्धकुंभके कें० ॥ अर्द्धकुंभप्रमा
ण मोतीनी मालाइ ॥ सव्वउ० ॥ सर्वदिसिविषइ ॥ समंता० ॥ सर्वविदिसिविषइ ॥ संपरि० ॥ वीटी ॥ चेइय० ॥ चैत्य
सिद्धायतननइ ढूकडा जे थुभ० ॥ थुभ सातचित्यरूप ॥ अथवा चित्तनइ उल्हासपणानो करणहार कीथ्यस्तु प ते० ॥ संपलि

त्ता दामा पन्नत्ता २ अन्नेहिं तदद्धुच्चत्तपमाणमित्तेहिं चउहिं अद्धकुंभिकेहिं मुत्तादामेहिं
सव्वतो समंता संपरिखित्ता तेसिणं पिछाघरमंडवाणं पुरउ चत्तारि मणिपेढियाउ पन्न
त्ताउ तासिणं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि २ चेतितथुभा पन्नत्ता तासिणं चेतितथुभाणं प
त्तेयं २ चउदिसिं चत्तारि मणिपेढिआतो पं तासिणं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि जिणप
डिमाउ सव्वरयणामतितो संपलियंकणिसन्नाउ थुभाभिमुहीउ चिट्ठंति तं रिसभा वद्धमाणा
चंदाणणा वारिसेणा तेसिणं चेतितथुभाणं पुरउ चत्तारि मणिपेढियाउ पं तासिणं मणि
पेढियाणं उवरिं चत्तारि महिंदझया पं तेसिणं महिंदझयाणं पुरतो चत्तारि णंदाउ पुक्
खरणीउ पं तासिणं पुक्खरणीणं पत्तेयं २ चउदिसिं चत्तारि वणसंडा पं तं पुरच्छिमेणं दा
हिणेणं पच्चच्छिमेणं उत्तरेणं ॥ पुव्वेणं असोगवणं ॥ दाहिणओ होइ सत्तिवन्नवणं ॥ अवरेणं चं
पगवणं ॥ चूतवणं उत्तरपासे ॥ १ ॥ तत्थणं जे से पुरच्छिमिल्ले अंजणगपव्वते तस्सणं चउदि
सिं चत्तारि णंदाउ पुक्खरिणीउ पं तं णंदा णंदुत्तरा आणंदा नंदिवद्धणा ताउ णंदा पुक्खरिणीउ
एगं जोयणसयसहस्सं आयामेणं पन्नासं जोयणसहस्साइं विरकंभेणं दसजोयणसयाइं उ
व्वेहेणं ॥ पयासति पलोवावाली छइ एणी प्रतिमा चैत्यस्तुप साहमी तेसो हामुं मुष ॥ महिंद० ॥ अतिमोटो ध्वज ॥ अथवा महेंद्र० ॥
सक्रेंद्र नी ध्वजा नाम री मोटी ध्वजा ते महेंद्रध्वज ॥ सास्वती सर्व पुक्खरिणी ते । नंदा जिकहीइ ॥ सत्तवण० ॥ सप्तच्छदनामा
दृक्षीवन ॥ एकेक्री २ प्रतिइं नो कलवा पइस वानइ काजइ ॥ त्रिणि दिसनइ सन्मुख त्रिसोपाननी पंक्ति छइ ॥

ठाणांग॰ इंद्रानी पटिंईं श्वेत तेहनो शिषर रूपामयइ ॥ तेसणं दक्षिणशिषा इं मुग॰ ॥ शिखरकर ब्रह्मजहना ते दधिमुख पर्वत ॥ सं
बद्दल विमल निम्मल ॥ दहिघण गोखीरहार संकासा ॥ गगणतलमणुलिहंता ॥ सोहंता दहिमुहा रम्मा ॥ १ ॥ विहासासु॰
वट्टेणं । तासिणं पुरक्खरणीणं पत्तेयं २ चउदिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा तिसिणं तिसोवाणपडि
रूवगाणं पुरतो चत्तारि तोरणा पं ते पुरच्छिमेणं दाहिणेणं पच्चच्छिमेणं उत्तरेणं ता सिणं पुरक्खरिणीणं
पत्तेयं २ चउदिसिं चत्तारि वणसंडा पं ते पुरतो दाहि॰ पच्चो उत्तरेणं पुव्वेणं असोगवणं जाव चूय
वणं उत्तरपासे । तासिणं पुरक्खरणीणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि दहिमुहगपव्वया पं तेणं दहिमुहग
पव्वया चउसट्ठिं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं सव्वत्थसमा पल्लगसं
ठाणसंठिया दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं एगतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसए परि
क्खेवेणं सव्वरयणामता अच्छा जाव पडिरूवा । तासिणं दहिमुहगपव्वयाणं उवरिं बहुसमरमणि
ज्जा भूमिभागा पं तं सेसं जहेव अंजणगपव्वयाणं तहेव णिरवसेसं भाणियव्वं जाव चूतवणं उप्प
रिपासे । तत्थणं जेसे दाहिणिल्ले अंजणगपव्वते तस्सणं चउदिसिं चत्तारि णंदाउ पुरकरिणीउ
पन्नत्ताउ तं भद्दा विसाला कुमुदा पोंडरगिणी ताओ णं णंदाउ पुरकरिणीउ एकं जोयणसय
सहस्सं सेसं तं चेव जाव दहिमुहगपव्वता जाव वणसंडा । तत्थणं जेसे पच्छिमिल्ले अंजणगपव्व
ते तस्सणं चउदिसिं चत्तारि णंदाउ पुरकरिणीउ पं तं णंदिसेणा अमोहा गोथूभा सुदंसणा सेसं तं
चेव तहेव दहिमुहगपव्वया तहेव सिद्धायतणा जाव वणसंडा । तत्थणं जेसे उत्तरिल्ले अंजणगपव्व
ते तस्सणं चउदिसिं चत्तारि णंदाउ पुरकरिणीउ पं तं विजया वेजयंती जयंती अपराजिया ताउणं
पुरकरिणीउ एगं जोयणसयसहस्सं तं चेव पमाणं तहेव दहिमुहगपव्वता तहेव सिद्धायतणा जाव १०३

हसाणा कूणा दि ४ विषइ ॥ रतिनाकर बाघकी रतिकपर्वत ॥ दक्षिणार्द्धलोकनानायक पणा बकी ॥ स विंड नी इंद्राणी नी राजधा
नी ॥ अग्निकूणि नानुई निर रतिकाणिनार रतिकरपर्वत विषइ नाराजो ॥ इसान इंद्र नराध लोकनो अधिपति छ ॥ तिलणा तेहनी
य कैली कृस्ना दि नामि ॥ अग्रमहिषी तेहनी राजधानी वायवकूणि ॥ इसान कूणिनो रतिकर पर्वत विषइ जाणिवी ॥ एवं कतरिइं नंदी
श्वरद्वीप विषइ च्यार अंजनके पर्वतना ॥ सोल दहिमुखपर्वतना बईतीस जिनभवन छइ ॥ इहां च्यारि कोतिनाद वसा चउमा
वणसंडा । णंदीसरवरस्सणं दीवस्स चक्कवालविक्खंभस्स बहुमज्झदेसभागे चउसु विदिसासु चत्तारि रति
करगपव्वता पं तं उत्तरपुरच्छिमिल्ले रतिकरगपव्वते दाहिणपुरच्छिमिल्ले रतिकरगपव्वते दाहिणप
च्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते उत्तरपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते । तेणं रतिकरगपव्वता दसजोयणसया
इं उड्ढं उच्चत्तेणं दसगाउतसयाइं उव्वेहेणं सव्वत्थसमा झल्लरिसंठाणसंठिया दसजोयणसहस्साइं वि
क्खंभेणं एगतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसए परिक्खेवेणं सव्वरयणामता अच्छा जा
व पडिरूवा । तत्थणं जेसे उत्तरपुरच्छिमिल्ले रतिकरगपव्वते तस्सणं चउदिसिं ईसाणस्स देविंदस्स दे
वरन्नो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुदीवपमाणाओ चत्तारि रायहाणीओ पं तं णंदुत्तरा णंदा उत्तरकुरा देव
कुरा कण्हाए कण्हराईए रामाए रामरक्खियाए । तत्थणं जेसे दाहिणपुरच्छिमिल्ले रतिकरगपव्वते ।
तस्सणं चउदिसिं सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुदीवपमाणाओ चत्तारि रायहा
णीओ पं तं समणा सोमणसा अच्चिमाली मणोरमा पउमाए सिवाए सुतीते अंजुए । तत्थणं जेसे दाहि
सु तेहनां पडिवा नइ विषइ ॥ संघरौ तिह विषइ अनेरा बलीय ॥ जिनभवनादिक देवकाय नइ विषइ हर्ष पामका इंद्रादिक महिमा
करता थका सुखइ रहइ छइ ॥ इम जीवाभिगमादिक लिख्यं छइ ॥ जो अनेराई वली तथाविध ना सिद्धायतन छइ ॥ इमके हितानि
रुध नही ॥ सोल से दहिमुह सेला ॥ कुदामल सरववेद संकासा ॥ कस्सायति लावत्रीसं ॥ कर गिरिबा दिशि ति सि ॥ १ ॥ तेहथा मु

गाणंगवा
त्री विवा

पव्वयो वा हिरिस्यनासरिषा। २ तिकपर्वतिवत्रीसछइ" एतलइ बेबपर्वति नुविइं भणिइं विषइ" बाहिर दुकडा" बेब २ तिकर आ ए वा" बत्रीस रतिकर विषइ। बत्रीस सिद्धायतन छइ" अनइं पुर्वलां वीस भणि घालतां ५२ बावन सिद्धायतन थाइ" मतांतर नइं मिलइ" तद्वेत्ता केवली मइ णम्य" पुर्वइ कहिउं ते तीर्थंकिरना सोप्पा माटइ सवस हर" तिव णं सत्य

ण पच्चिछिमिल्ले रतिकरगपव्वाते तस्स णं चउद्दिसिं सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो चउन्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवपमाणमेत्ताओ चत्तारि रायहाणीओ पं० तं० भूता भूतवडेंसा गोथुभा सुदंसणा अमलाते अछराते णवमिताते रोहिणीते तत्थ णं जो से उत्तरपच्छिमिल्ले रतिकरगपव्वाते तस्स णं चउद्दिसिमीसाणस्स देविंदस्स देवरन्नो चउन्हमग्गमहिसीणं जंबुदीवपमाणमेत्ताओ चत्तारि रायहाणीओ पं० तं० रयणा रयणुच्चया सव्वरयणा रतणसंचया वसुताते वसुगुत्ताते वसुमित्ताते वसुंधराते चउव्विहे सच्चे पं० तं० नामसच्चे ठवणासच्चे दव्वसच्चे भावसच्चे आजीवियाणं चउव्विहे तवे पं० तं० उग्गतवे घोरतवे रसणिज्जूहणता जिब्भिंदियपडिसंलीणता चउव्विहे संजमे पं० तं० मनसंजमे वतिसंजमे कायसंजमे उवगरणसंजमे चउव्विहे चियाते पं० तं० मणचियाते वतिचियाते कायचियाते"

नुं सुत्र कहइ छइ" नामसच्चे० ते नामसत्य" सत्य एवनं नाम स्थापना भ्रआदिकनइ विषइ की जइ ते स्थापना सत्य" उपयोग रहित सा व कुं बोलइ ते द्रव्य सत्य" उपयोग सहित साधु बोलइ ते भावसत्य" सत्य ते चारित्र मो विसय छइ" ते तणं चारित्रनाउ द्योपायक अधिकारना सुत्र कहइ छइ" आजीविया०" गोसालाना सिष्य नइ" उग्रतप०" अ ष्टमादिक" घोरतप" आत्मनिरपेक्ष" रसनिज्जू० " ते इ ह ल्या का दिकनी आ संसार हित ता सा तनुतप" त्यारत वि०" श्री तमानी आपस्ली रहि तृ इ प " रसाली कुं हलिया०" एतादिर सनो परित्याग जिब्भिंदियपडि०" मनोज्ञामनोज्ञ आहार विषइ रागद्वेष रहित" एहनइ प्रकार तप" अनइ अरिहंत सुभकारी इत्यादि" मन वचनकाया नुं अकुसलपणा नुं रुंधिवुं। कुसलपणा नु उदीरिवुं" तेम मादि संयम" उपगरणसंजम०" ते बहुमोल्यवस्त्रनो त्याग" चिया ए०" त्याग" मनादिकनो त्याग" अथवा मनादिक करी साधुनइ दानुं देवुं"

उपगरणचियाए०" पात्रादिक करीनइं" सज्जादिकनुं देवुं ते उपगरण त्याग" अथवा उपकरणानुं छोडवुं ते उपगरण त्याग" ४ नथी जेहनइं कांइं एहवुं ते जात ते अकिंचन निःपरिग्रही ईत्यर्थ" मनवचनकायाइं निःपरिग्रही" अनइं उपगरणपणि निःपरिग्रही" तेपणि धार्मि उपगरण सहित" चतुर्स्थान के द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ पुर्वला उद्देसा मइं विषइ" जीवना पर्याय कह्या" इहां जीवना पर्याय कहीयइ छइ" तथा बीजा उद्देसा मइं छेहलइ

उवगरणचियाते चउव्विहा अकिंचणता पं० तं० मणअकिंचणता वतिअकिंचणता कायअकिंचणता उवगरणअकिंचणता द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ चत्तारि रातीओ पं० तं० पव्वयराती पुढविराती वालुयराती उदगराती एवामेव चउव्विहे कोहे पं० तं० पव्वयरातिसमाणे पुढविरातिसमाणे वालुयरातिसमाणे उदगरातिसमाणे पव्वयरातिसमाणं कोहं मणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ णेरइएसु उववज्जति पुढविरातिसमाणं कोहं मणुपविट्ठे तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति वालुयरातिसमाणं कोहं मणुपविट्ठे मणुस्सेसु उववज्जति उदगरातिसमाणं कोहं मणुपविट्ठे समाणे देवेसु उववज्जति चत्तारि उदगा पं० तं० कद्दमोदए खंजणोदए वालुओदए सेलोदए एवामेव चउव्विहे भावे पं० तं० कद्दमोदगसमाणे

सुत्र कइं नइ विषइ चारित्रकहिउं" क्रोधादिक छइ ते तणे धुरलइं सुत्रि इ क्रोध कहीइ छइ" चत्तारि०" राति" राई०" रेखा" एहनो व्याख्यान मायादिकनी परिइं जाणिवुं" क्रोध इहां कुं रुक्यो" अनइं मायादिकना सुत्र साथि इं नकह्यो ते सुत्रनी विचित्रगति छइ" क्रोध ते जीवइ छइ ते तणे भावनुं स्वरूप कहिवा हेतइं तना सुत्र कहइ छइ" जेमादि कादवपड्यो तिकर्दमादक" जिहां पइ ठां खुतां कसइं चलाइ" खंजन०" दीवादिकनी रखं अं न०" काजल तुल्य पगनइ लेप मात्र नउ करणहार" कर्दमना लेप विसय थालु का तत्र सिद्ध तेला गो छे तो पणि पाणीस्य का पुएतलइ अल्प प्रयास" एरीला इ ते सणी अल्पलेपनी करणहारी" सेलोदए०" नान्हा पाषाण तेवगादिकनइ स्पर्सइं जे करइ पणि कांइ ठुष नकपजा वइ। अनइं लेपनुं लेगा डइ

डाक्टर भाऊदाजी इत्यस्य स्मारकम्
Dr. BHAU DAJI

१०४

कर्दमादिक व्यापिसहित कर्दक जाणिवुं ॥ सावृत जीवनउ राग दिकपरिणाम छइ ॥ तेसरांकर्दमादकादिसरिषउं जाणवुं ॥ कर्म लेप नालगाडवाधका ॥ एताप्रकृहित ॥ हुवई ते वर्व सपुरूषसहश्च तइकरूछइ ॥ रूयसंप० ॥ सघन इरूपतउ सर्व पंषीनइ छइ अपणिइ हो तेविरुचिस्पालाग्रदाइ ॥ रूयसं० ॥ मनोज्ञ सहितसपणि ॥ नोरूप० ॥ मनोज्ञ रूपवृतनही काईलवत ॥ १ ॥ बीजइलागइ समुछिमसुडा ॥ २ ॥ त्रीजइ मयुर ॥ ३ ॥ चोथइ काक ॥ ४ ॥ अपुरूपमनोज्ञ शब्दसहित पणि प्रसुस्तरूप नही ॥ १ ॥ इम ज्यारे संगं अथवा पुरूष तसाधु ग्रहिवा । तेएक प्रियवादीपणासहित । पणिरूडा साधुना वेषरहित ॥ १ ॥ इम ४ अथवा प्रसिद्ध सि सिद्धांतदेसनादि स्वाध्यायरूपसघसहित ॥ अनइ लोच इकरी विरलावाल एहवुं रूतमागछइ शउसुं ॥ तपकरीपातलुसरी

एवंजाणोदगसमाणे वालुउदगसमाणे सेलोदगसमाणे कद्दामोदगसमाणं जाव मरणपवि
ट्ठि जीवे कालं करेइ णेरइएसु उववज्जति एवंजाव सेलोदगसमाणं जाव मरणपविट्ठि जीवे
कालं करेइ देवेसु उववज्जति चत्तारि पक्खी पं तं रूयसंपन्ने नाममेगे णो रूवसंपन्ने रूवसं
पन्ने नाममेगे णो रूयसंपन्ने एगे रूवसंपन्नेवि रूयसंपन्नेवि एगे णो रूयसंपन्ने णो रू
वसंपन्ने एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं रूवसंपन्ने नाममेगे णो रूवसंपन्ने ह्व चत्तारि
पुरिसजाया पं तं पत्तियं करेमीतेगे पत्तियं करेति पत्तियं करेमीतेगे अपत्तियं करेति अप
त्तियं करेमीतेगे पत्तियं करेइ अपत्तियं करेमीतेगे अपत्तियं करेति चत्तारि पुरिसजाया पं तं

रमलमलिनदेह ॥ अल्पोपकरण आदिलक्षणसहित । सुविहितसाधुना रूपनउधरणहार एहविरूरूपइ संपन्न साधु यथायोग्य जाणइ ओडवउ ॥ ४ ॥ सांगा करवा ॥ पत्तियं करेम० ॥ प्रीतिकरूं अथवा प्रराय० ॥ प्रतीतकारी के करूं पणि एणी प्रीतितेत प्रीतीति तेस्ति २ पत्तिणा मघरणा माटइ अथवा करवी करवाङ्ग अपल छइ तिवि षइ निपुणपणा भाव्इ ॥ अथवा सि साअपपणा माटइ पत्तियं करेति० ॥ प्रीतिनकरइ ॥ १ ॥ बीजइ सांगइ प्रीतिकरूं कहइ पणि करइ अप्रतीत तेपहिलो धक उविपरीत तेमाटइ ॥ २ ॥ त्रीजइ अप्रीतिकरूं कहइ । तप्रीतिजिम पञावानउस्व सोव ॥ ३ ॥ स्वाबउ स्गम

अप्पणो नाममेगे पत्तियं० ॥ एकपोतानइ पाउ नाउादिना दिकइ करीनइ आनंद उपजावइ तेस्वारथीया माटइ ॥ नो परस्स० ॥ परनइ नही ॥ १ ॥ एकपरनइ उपजावनइ पणि पोतानइ नही ॥ परउपगारी माटइ ॥ त्रीजइ बिहुनइ उपजावइ उ सस्वार्थनिर्द्वि प्रइ तत्सरणावला ॥ ३ ॥ चउथइ बिहुनइ न उपजावइ ॥ अथवा पत्तियं० ॥ पोतानइ प्रतीत उपजावइ ॥ परनइ नही ॥ इम ज्यार सांगा ॥ पत्तियं पवेसामीति० ॥ प्रीति अथवा प्रतीति एकरइ ॥ एहवुं परचित्तनइ कुं पइसारूं इम कहइ ॥ पत्तियं० ॥ पवेसइ ॥ अनकरइ पणि तिमइ जि ॥ १ ॥ इम ४ सांगा करवा ॥ अपणो नाममेगे पत्तियं पवेसइ० ॥ एक पोताना चित्तनइ विषइ प्रती

अप्पणो णाममेगे पत्तियं करेति णो परस्स परस्स नाममेगे पत्तियं करेति णो अप्पणो ह्व
चत्तारि पुरिसजाया पं तं पत्तियं पवेसामीतेगे पत्तियं पवेसेइ पत्तियं पवेसामीते
गे अप्पत्तियं पवेसेति ४ चत्तारि पुरिसजाया पं तं अप्पणो नाममेगे पत्तियं पवेसेइ णो
परस्स परस्स ह्व चत्तारि रुक्खा पं तं पत्तोवए पुप्फोवए फलोवए छायोवए एवामेव च
त्तारि पुरिसजाया पं तं पत्तोवारुक्खसमाणे पुप्फोवारुक्खसमाणे फलोवारुक्खसमाणे छा
तावारुक्खसमाणे भारुणं वहमाणस्स चत्तारि आसासा पन्नत्ता तं जहा जत्थ णं अंसाओ अंस
साहरइ तत्थवि तस्स एगे आसासे पन्नत्ते जत्थवि य णं उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेति तत्थवि

तपइसारइ ॥ नो परस्स० ॥ पणिपरचित्तनइ विषइ प्रीतीतन पइसारइ ॥ इम ४ सांगा ॥ पत्तोवए० ॥ झाझा पानडासहित ॥ इम पुष्प फल छायासहित इहसो ॥ एवामेव० ॥ ऐसरिषा पुरूष ते ॥ लोकीक लोकोत्तर तथा विधि उपगार करवइ करी इस सूत्रा वेषकी जाणवा ॥ तिहां सुत्र देवादिक उपगारकर वाघकी पाहिला वृक्ष सरिषो जाणवउ ॥ १ ॥ बीजइ अर्थ दाता ॥ २ ॥ त्रीजइ महा उपगारकारक ॥ ३ ॥ चोथइ अनर्थघातकी ता पव इकरी सवे तानइ निरंतर उपगारकारक ॥ भारं० ॥ भार ॥ भमन मनो तार तवहितानइ ज्या र ॥ आसासा० ॥ वीसामा ना गाम अवसर नइ से दिइ की ॥ जत्थ० ॥ त अवसरनइ विषइ ॥ अं साउ अंस साहरइ० ॥ एक षंधाथकी बीजा षंधा लिगइ ॥ तत्थवि० ॥ त अवसरनइ विषइ एक वीसामो ॥ १ ॥ १०५

स साधरहितानइ॥ एनागकुमारादिकिनास्थानक कह्या तिहां॥ वासं उवेति॰॥ रात्रिइं वासो वसइ॥ जच्च वियणं॰॥ जिहां आदीक होज
आवात जोलगाणि॥ कहा॰॥ एअमुकउएरथु बालाइ तेयावकहा यावजीवइ तिष्ठ॥ एतलइ जिहां जावजीव रहइ॥ वासइ ति
हां श्रावकइ एकवीसामो॥ श्रमणोपासक तिम श्रमणोपासक॥ तेहनइ संसारव्यापाररूप भार॥ तेहनइ मुकवइ करीनइ वीसामो
चुगाम तेआस्वासा॥ विचिनास्वरूपएणनाम॥ एमुरनइ परलोक थकी बीहतानइ त्राणरूपकु इ ते आस्वासा॥ स॰॥ ते श्रावक डिनाग
मनइं सगाइं निर्मलबुद्धिइंकरी॥ आरंभनिइं परिग्रह तेहुवा परंपरानाकरणहार॥ संसारकांतारनाकारणरूप परिणइकरी कोडिवासो
गप॥ एहवो विचारता इंडीसु सटनइं धस्पपणइं करी॥ कदाचित परिग्रहनइ विषइ प्रवर्त्तई तउपणि मोटउ भेद सता पञ्चनइं सत्यइं बहूइं॥

।ते य से एगे आसासे पन्नत्ते जत्थ वि य णं णागकुमारावासंसि वा सुवन्नकुमारावासंसि वा वासं उ
वेति। तत्थ वि य से एगे आसासे पन्नत्ते जत्थ वि य णं आवकहाए चिट्ठति तत्थ वि य से एगे आसासे प
न्नत्ते एवामेव समणोवासगस्स चत्तारि आसासा पं० तं० जत्थ वि य णं सीलव्वतगुणव्वतवेरमणप
च्चक्खाणपोसहोववासाइं पडिवज्जइ तत्थ वि य से एगे आसासे पन्नत्ते जत्थ वि य णं सामाइयं देसा
वगासियं सम्ममणुपालेइ तत्थ वि य से एगे आसासे पन्नत्ते जत्थ वि य णं चउद्दट्ठपुन्नमासिणीसु *मुद्दि ९

वली विचारइ॥ इयमन्नाणं माणं॥ इयमन्नाणं मणुस्समहप्पं॥ त्य किललइ विसेसा॥ विरवदिमो बालबालंच॥ २॥ जत्थ विय
णं॰॥ जिहां अवसरनइं विषइ॥ सीलव्वय॰॥ सील॰ समाधि विसेष॥ अथवा अलव्वर्य विलव॥ वय॰॥ व्रत तेस्थूल प्राणतथा ता
दि विरमण॥ गुण॰॥ गुण व्रत दिग्व्रत॥ अनइं उपभोग परिभोग व्रत रूप॥ विरमण॰॥ अनर्थदंडनो विरमण अथवा रागादिक थकी
निवर्त्तिवुं॥ पच्चक्खाण॰॥ नउकारसी आदि॥ पोसह ते अष्टम्यादि पर्वदिननइ ताइ धिहाडइ उपवासनुं करिवुं। ते पौषध पवास
पडिवजइ॥ तत्थवि॰॥ तिवारिइं॥ स॰॥ ते श्रावकनइं एकवीसामो॥ सावद्ययोगनुं वर्जिवुं॥ निर्वद्ययोगनुं सेविवुं॥ ते सामायिक
*कोकनइ विषइ रहेवो॥ महाविम्रमण तेतथाइ॥ तथादेस॰॥ दिसि व्रत विषइ ग्रही जे दिसि तेहनां परिमाणनो विभाग तेहनइ विषइ जे अव
कास॰॥ रहिवुं॥ अथवा अवकास्य॰॥ अवतार॥ अथवा तेहनउ विषइ छे जेहम उ ते देसावगासिक॥ एतलइ संष्या रूपनुं संखेप राखणदि
नप्रतिइ॥ अथवा चउदनी एमादि सर्वव्रतनुं संखेपवुं॥ ते देसावगासिक॥ अणुपालेइ॰॥ अणुडसेवइ ते एकवीसामो॥ १०६

पडिपुन्न पोस॰॥ असोराविइल तिइ पोषध चउविध आहारादि ते आहार सरीरसत्कार त्याग॥ ब्रह्मचर्य॥ अव्यापार॥ अपश्चिमस
पत्ते मांगलिकते परिहरिवा नइं अपश्चिम॥ मरणनइं अंतिकपनी तमारणांतिकी॥ सलेषीइ पातलां करिइं॥ एणइं करीकषा
यसरीरादिक तेसंलेषना तपविसेष॥ अपश्चिम॥ मारणांतिक संलेषणा झुसणा॥ सेविवुं तेणइं करीनइं॥ झुसीइ॥ सेव्या अ
थवा तेणइं करीनइं॥ झुसिउ ए॰॥ देहकेपचो॥ पडियाइ॰॥ पच्चक्खां॥ पाद्व॰॥ ग्रहनी परिइं॥ ते अषपणइं स्थिरपोतुपादपो
पगत अनेसणविसेष इस्यर्थः॥ कालमण॰॥ मरणकाल अणवांछता॥ वि॰॥ रहिइं॥ उदिय॰॥ उन्नत कुल बल समृधिइं करी
उदयवंत॥ अनइ वली उदयते परम केवलादिकइं करी जेणो जिम सरघप्रसिद्ध॥ बीजइ लोगइं जेणो ति मई जो॥ आथम्यो

पडिपुन्नं पोसहं सम्मं अणुपालेइ तत्थ वि य से एगे आसासे पन्नत्ते जत्थ वि य णं अपच्छिममारणंति
तसंलेहणाझूसणाझूसिते भत्तपाणपडियातिक्खिते पाओवगते कालमणवकंखमाणे विहर
ति तत्थ वि य से एगे आसासे पन्नत्ते चत्तारि पुरिसज्जाया पं० तं० उदितोदिते णाममेगे उदितत्थ
मिते णाममेगे अत्थमितोदिते णाममेगे अत्थमियत्थमिते णाममेगे भरहे राया चाउरंतच
क्कवट्टी उदितोदिते बंभदत्ते णं राया चाउरंतचक्कवट्टी उदितत्थमिते हरिएसबले णं अणगा
रे अत्थमितोदिते काले णं सोयरिए अत्थमितत्थमिते चत्तारि जुम्मा पं० तं० तेयोए दावरजुम्मे

ते सूर्यनी परिइं॥ सर्वसमृधइं करी थकी स्टए घयापणा थकी॥ अनइ दुर्गति विषइ गया पणा थकी ब्रह्मदत्त वत॥ आथम्यो ते हीणकुल
इं जेपाना दासाणीउ। दरिद्री पणादिकइं करी नइ उदयो ते समृधइं कीर्तिइं सुगति लाभादिकइं करी॥ जिम हरिकेसबल अणगार॥ ३॥ त
उन्नांतर नउ जेपार्जिइ॥ निविगोत्रिक कर्मना वस्यथकी चंडाल कुलथाम्यु॥ दासागादरिद्री आथिमा सुर्यनीपरिइं उदय रहित पणा
थकी। पछइ स्या रित्र पडिवज्यो निःप्रकंप चरणगुणा तेणइं आवर्ज्यो देवता ते सानिधकरइ प्रसिद्ध पाम्यो सुगति ते करी तेणइं करी जेणो
॥३॥ तथा आथम्या ते सुर्यनी परिइं दुःकुल जेपाना दुकर्मकारी॥ कोलिसिम्मछितवर्जित तेणइंकरी आथम्यो वली आथम्या तेदुर्गतिजा
वादिकइंकरी॥ जिम कालक नामइ॥ सुकर॰॥ सुयर तेणइंकरी आहेडउ नगरइ तेसो करा कर॥ दुःकुलि उपना ते दिन प्रतिइं ५०० महिष

मारवाघकी पद्धिलें आस्यो ॥ अनइ सातमइं नरगइं गयाय पणा थी पछइ पणि आघस्यो ॥ जेह्म विचित्र नावइ करी वीतवइ ॥ तेतउ
जीवपदार्थ ॥ तेसर्व च्यारि राशि माहि अवतरि ॥ तेसणी तेकहइ छइ ॥ जुम्मा० ॥ च्याकडा तेसघलानी राशि ॥ तिहां चउकडइं चउक
इं ॥ तेसघला चउकडानी राशि जिनइं जेतयुग्म नाम कहीयइं ॥ अनइं चउकडइंगणतां छेहडइं त्रिण रहइ ॥ तेराशिं अंक त्रियइं ॥
अनइ चउकडइंगणतां छेहडइं बि बिवधइ ॥ तेराशि द्वापरयुग्म कहीइं ॥ अनइ छेहडइं एकवधइ तो तेराशिदं त्रस्य अंक होयइं
इहां गणितसंख्यानइं विषइं ॥ बेकोयानी राशि तेयुग्म नामइं बोलावीइं ॥ अनइ एकोयानी संख्या तेउज नामइं बोलावीइं ॥
तसिघा तेनी २ बेना एतलइं समा ओकाते बेकोज ॥ अनइं विषम ओक तेयकोज ॥ हिवइ तेतयुग्म माहि लीराशिना रकी आदिकनइं
विषइं कहइ छइ ॥ नेरइया० ॥ नारका चउकडइंगणतां छेहडइं किवारिइं च्यारि वाधइ । किवारि त्रिण ॥ बे एकवाणि वधइ तेसणी ना
रकी माहि च्यारि संख्यानी राशी लाभइ ॥ २४ दंडकइं समई ति जाणवउ ॥ वलीजीवनुं स्वरूप कहइ छइ ॥ सुरा० ॥ वीर ॥ सोमाइ

कडजुम्मे तेयोए दावरजुम्मे कलिओए नेरइयाणं चत्तारि जुम्मा पं तं कडजुम्मे तेउए दावरजुम्मे कलि
ओए ४ एवं असुरकुमाराणं जाव थणियकुमाराणं एवं पुढविकाइयाणं आउ तेउ वाउ वणस्सइ बेइंदि
याणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं वाणमंतरजोइसियाणं वे
माणियाणं सव्वेसिं जहा नेरइयाणं चत्तारि सुरा पं तं खंतिसुरे तवसुरे दाणसुरे जुद्धसुरे खंतिसुरा
अरहंता तवसुरा अणगारा दाणसुरे वेसमणे जुद्धसुरे वासुदेवे चत्तारि पुरिसजाया पं तं उच्चेणामम
गे उच्चछंदे उच्चेणाममेगे णीतछंदे णीतेणाममेगे उच्चछंदे णीएणाममेगे णीयछंदे असुरकुमा

सूर अरिहंत श्रीमहावीर वत् ॥ बीजइ स्थानइं दृढप्रहार ॥ त्रीजइ स्थानइं कृष्ण वत् ॥ जेहनइं तेणइं त्रिसिं सहस्रा त्रिसंग्राम मइं जवा देखीध
उ ॥ सरीर कुलरूपादिकइं करी ऊंचउ ॥ उच्छंद० ॥ उदारपणादिकइं करी ऊंचो अभिप्राय ॥ ऊंचो ते तिम ईज ॥ अनइ नीच हां हतउ
पणपणादिक युक्त ॥ सरीर कुलरूपादिकइं करी नीच ॥ अनइं उच्चाभिप्राय उदारपणादिकइं करी सहित ॥ अनंतरे नीच ऊंच १०७
अभिप्राय कह्या ॥ तेतउ लेस्या विसेष छइ ॥

असुरादिकनइं ४ लेस्या ॥ विशेषतउ आगलि कही ॥ नाविइं ६ लेस्या कहइ ॥ सर्व देवतानइं ॥ मनुष्य तिर्यंचगति ॥ गर्भज पंचेंद्रि
नइं गर्भज मनुष्यनइं ॥ उदारइ ॥ सावइ ॥ समुच्चयइं ६ लेस्या लाभइ ॥ पृथ्वी ॥ अप्प ॥ वनस्पतीनइं तेजोलेस्या ते देवता उपजइ
तेसणी हुइ ॥ एणी लेस्याइं करी विचित्र परिणामनां मनुष्य हुइ ॥ तेसणी दृष्टांत सहित वली मनुष्यनुं स्वरूप कहइ छइ ॥
जाणा० ॥ जान ते सकटादि ॥ जुत्ते० ॥ बलदादिकइं जोतरिउ अनइ बली जुत्ते० ॥ यान पणि जोग रूडुं अथवा सामग्री सहि
त ॥ अथवा पुर्वापरकालनी अपेक्षाइं तेपुर्विइं जोतरिउ हतो ॥ हिवडां पणि जोतरिउं छइ ॥ बीजइ स्थानइं जोतरिउं ते तिम
इज ॥ अजुत्ते० ॥ अयुक्त ते जोतरवा की विपरीत ४ ॥ इम पुरुष युक्त ते धनादिकइं करी अनइ वलीयुक्त ते योग्य अनुष्ठानइं करा

राणं चत्तारि लेसाओ पं तं कण्हलेसा णीललेसा काउलेसा तेउलेसा एवं जाव थणियकुमा
राणं एवं पुढविकाइयाणं आउवणस्सइकाइयाणं वाणमंतराणं सव्वेसिं जहा असुरकुमाराणं
चत्तारि जाणा पं तं जुत्ते णाममेगे जुत्ते जुत्ते णाममेगे अजुत्ते अजुत्ते णाममेगे जुत्ते अजुत्ते णा
ममेगे अजुत्ते एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं जुत्ते णाममेगे जुत्ते जुत्ते णाममेगे अजुत्ते ४ चत्तारि
जाणा पं तं जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजा
या पं तं जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते ४ चत्तारि जाणा पं तं जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे जुत्ते णामम
गे अजुत्तरूवे ४ ॥ अथवा रूडइं परिवारिइं करी ॥ अथवा पुर्वकालइं धन धर्म अनुष्ठानइं युक्त हतो अनइं पछइ पणि तेहवो इज छइ
॥ इम चउभंगी ॥ अथवा युक्त ते उचितलिंगइं करी अनइं वली युक्त ते साधुलिंगइं करी ते साधु ॥ १ ॥ बीजइ निन्हव पासत्था दिउच्युलिंगी ॥ २ ॥
त्रीजइ प्रत्येकबुद्धादि ॥ ३ ॥ चउथइ गृहस्थादि ॥ युक्त ते बलादिकइं युक्त ॥ युक्तपरिणत० ॥ आजीतरिउ थतो सामग्रीइं करी जातरूपा सरिषो
परिणाम्यो ते सामग्रीइं पुर्ण छइ ॥ इम पुरुष ४ युक्त ते धनादिकइं करी ॥ अनइ युक्त परिणत ते जोग्य अनुष्ठानइं करी ॥ चउभंगी ॥ वली
४ ॥ वली यान जोतरिउं ते तिम इज ॥ युक्तरूप ते सुंदराकार अथवा प्रसस्त ॥

इम पुरुष ते युक्त धनादिक इंकरी॥ अथवा ज्ञानादिकइं करी॥ युक्त रूप ते यष्टिर वेसिइंकरी। अथवा युक्त रूप सुवेषि तसा
धुनो वेषी॥ इम ४ युक्त ते तिमइं ज्ञि॥ युक्त ते सो स्ता तेजो तरि उ सोतइ॥ अथवा जो तस्यानो स्ता स्ता जइ नइ छइ॥ तेयु
क्तसोस॥ पुरुष ते युक्त गुणाइ करी॥ अनइ सुक्त सो स्तात योग्य मो स्ता सहित॥ ऊग॥ वाहाणा अस्वादि वडुला अथवा गा
ल्लादेसनु वेष प्रमाण चउरंसावदिका सहित ऊपाणा तेयु ग्मकहीइ॥ ३ त्रि॥ वडराना सामग्री पलांण दिक इं करी अनइ वली युक्त
१० ते वेगादिक इंकरी ४ ऊ इमथा न सुयुक्त रूप रिण तरूपत्रो सो एय ४ च्यार आलावा पुरुष सहित कहीया॥ तिम युगसंघात इंए पणि

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं जुत्ते णाम मेगे जुत्तरूवे ४ चत्तारि जाणा पं तं जुत्ते णाम मेगे जुत्त
सोभे ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं जुत्ते णाम मेगे जुत्तसोभे ४ चत्तारि जुग्गा पं तं जुत्ते णाम
मेगे जुत्ते ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं जुत्ते णाम मेगे जुत्ते एवं जहा जाणेण चत्तारि आला
वगा तहा जुग्गेण वि पडिवक्खो तहेव पुरिसजाया जाव सोभेत्ति चत्तारि सारही पं तं जोयाव
इत्ता णाममेगे नो विजोयावइत्ता विजोयावइत्ता नाममेगे नो जोयावइत्ता एगे जोयावइत्ता वि वि
जोयावइत्ता वि एगे नो जोयावइत्ता नो विजोयावइत्ता चत्तारि हया पं तं जुत्ते णाम मेगे जुत्ते जुत्ते
णाम मेगे अजुत्ते ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं जुत्ते णाम मेगे जुत्ते ४ एवं जुत्तपरिणते जु
त्तरूवे जुत्तसोभे सव्वेसिं पडिवक्खो पुरिसजाता चत्तारि गया पं तं जुत्ते णाम मेगे जुत्ते ४ एवामेव चत्ता
रि पुरिसजाता पं तं जुत्ते णाम मेगे जुत्ते ४ एवं जहा हयाणं तहा गयाण वि भाणियव्वं पडिवक्खो तहेव पुरिसजाता

बीजो छोडइ पणि जोतरि नहीं॥ ते जोतरनारो जुउ छोडणहारो जुउ जाणवो॥ २॥ एक जोतरिइ अनइ छोडइ॥ ३॥ चोथइ छोडइ नहीं
जोतरिइ नहीं ४॥ अथवा जोयावइत्ता॥ जोतरावइ पणि विजोयावइत्ता॥ विछोडइ नहीं॥ इम लोकोत्तर पुरुष जोतरइ ते साधुनइ सं
यमोद्यम प्रवर्त्तावइ॥ अनइ विछोडइ ते अजोग्य अनुष्ठान थकी निवर्त्तावइ १॥ इम ४॥ हयना सूत्र॥ गजना सूत्र वानानी पर
जाणवा॥

४ बोल जोडिवा॥ अनइ सुरिष सुपाणि जोडिवा॥ जाव छेहलो स्ता सानो आलावो॥ सारही॰॥ सागडी॥ जोयावइ ती॥ एक सकट विषइ बलदादिकनइ जोतरइ पणि॥ नो वि॥ पाणि छोडइ नहीं॥ अनइ

१०८

जुगारिया॰॥ २ चत्तारि॥ पंथजाइ॰॥ एक पंथनइ विषइ जाइ॥ नो उप्पह॰॥ पणि उन्मार्गिइं न जाइ ४ इम ४ च्यारि पुरुष। सा वद्यु कीत
साधु संयम तार नउ वहिनार पंथगामी पणि उत्पंथगामी नइं नहीं ते अप्रमत्त॥ १॥ बीजइ द्रव्यलिंगी आदि॥ त्रीजइ प्रमत्त॥ चउथइ
इ सिद्ध अथवा पंथ ते स्वसमय॥ उत्पंथ ते परसमय॥ ते पहिलइ सांगइ स्वसमय जाणइ॥ पणि परसमय न जाणइ॥ ४॥
एक पुष्फ रूवसंपन्ने॥ णो गंधसंपन्ने नामं एगे॥ आउलि फुलवत्॥ बीजइ सांगइ कदंब बकुलकुल॰ त्रीजइ सांगइ जाईना फुल॥
चोथइ बोरडी आदिकना फुल॥ इम ४॥ पुरुष रूवसंपन्ने॰॥ रूपवंत अथवा साधुवेष सहित रूपयुक्त ४ जाति १ कुल २ बल ३ रूप ४

चत्तारि उग्गारित्ता पं तं पंथजाती णाममेगे णो उप्पहजाती उप्पहजाती णाममेगे णो पंथजाती एगे पंथ
जाइ वि उप्पहजाती वि एगे णो पंथजाती णो उप्पहजाती चत्तारि पुप्फा पं तं रूवसंपन्ने नामं एगे नो
गंधसंपन्ने गंधसंपन्ने नाममेगे नो रूवसंपन्ने एगे रूवसंपन्ने वि गंधसंपन्ने वि एगे णो रूवसंपन्ने णो गंधसं
पन्ने एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं तं रूवसंपन्ने नाममेगे णो सीलसंपन्ने ४॥१॥ चत्तारि पुरिसजाया पं तं
जातिसंपन्ने णाममेगे नो कुलसंपन्ने ४॥२॥ चत्तारि पुरिसजाया पं तं जातिसंपन्ने नाम मेगे णो बलसंपन्ने
बलसंपन्ने णाम मेगे णो जातिसंपन्ने ४।३॥ चत्तारि पुरिसजाया पं तं एवं जातीय रूवेणता चत्तारि
आलावगा ४ एवं जातीय सुतेणाय ४ ५ एवं जातीय सीलेणय ४ ६ एवं जातीय चरित्तेणाय॥४॥
७ चत्तारि पुरिसजाया पं तं कुलसंपन्ने णाममेगे णो बलसंपन्ने ४ ८ एवं कुलेणय रूवेणय ४ ९ कुलेणाय
सुएणाय १० ४ कुलेणाय सीलेणाय ११ कुलेणाय चरित्तेणाय १२ ४ चत्तारि पुरिसजाया पं तं बलसंपन्ने णाम
मेगे णो रूवसंपन्ने १३ एवं बलेणाय सुतेणाय ४ १४ एवं बलेणाय सीलेणाय १५ ४ एवं बलेणाय चरित्तेणाय
४ १६ चत्तारि पुरिसजाया पं तं रूवसंपन्ने णाम मेगे णो सुयसंपन्ने ४॥ एवं रूवेणाय सीलेणाय १८ एवं रूवेणाय चरि
त्तेणाय १९ चत्तारि पुरिसजाया पं तं सुयसंपन्ने णाम मेगे णो सीलसंपन्ने २० एवं सुएणा तय चरित्तेणाय ४॥२१॥
चत्तारि पुरिसजाया पं तं सीलसंपन्ने णाम मेगे णो चरित्तसंपन्ने ४॥२२॥ एते एके वीसं भंगा भाणियव्वा॥ ॥

१ जा॰ कुल
२ जा॰ बल
३ जा॰ रूप
४ जा॰ सुत
५ जा॰ सील
६ जा॰ चारि
७ कु॰ बल
८ कु॰ रूप
९ कु॰ सुत
१० कु॰ सील
११ कु॰ चारि
१२ ब॰ रूप
१३ ब॰ सुत
१४ ब॰ सील
१५ ब॰ चारि
१६ रू॰ सुत
१७ रू॰ सील
१८ रू॰ चारि
१९ सु॰ सील
२० सु॰ चारि
२१ सी॰ चारि

६३६

श्रुत ५ सील ६ चारित्र ७ ए सात पदनइ विषइ॥ एकवीस हिक संख्या गिणा एकवीस त्वो संगी थाइ॥

आमलानी परिइं मधुर ते आमलक मधुर। अथवा आंमलेजम मधुर॥ मुद्दीया०॥ द्राषनी परि मधुर। अथवा द्राषजमधुर॥२॥
षीरमहुर०॥ अथवा षीरनी परि मधुर॥ षंडम०॥ षंडनी परि मधुर॥ एवा०॥ एजिम च्यार फल वधता वधता मधुर प
णा सहित॥ तिम आचार्य इं मुद्दकि अबक्तर॥ अक्ततातोऊपसमादिगुणरूप मधुर परणा सहित॥ आय०॥ एकोपाता
लुवेयावच्च करइ पणि परलोकनही॥ तथा धम अथवा विसंलागी॥ बीजइ लोगइ परोपकारी॥ पणि स्वार्थी जनही॥ त्री
जइ लोगइ स्थिवरकल्पीक॥ ३॥ चौथइ प्रतिमाप्रतिपन्न साधु तथा अरासरीया॥४॥ करइ०॥ एकवीयावेच करि इयाणि वा छ

चत्तारि फला पं तं आमलगमहुरे मुदितामहुरे खीरमहुरे खंडमहुरे एवामेव चत्तारि आयरिया
पं तं आमलगमहुरफलसमाणे जाव खंडमहुरफलसमाणे चत्तारि पुरिसजाता पं तं आतवेतावच्च
करे नाममेगे णो परवेयावच्चकरे ४ चत्तारि पुरिसजाया पं तं करेति नाममेगे वेयावच्चं णो [illegible]
पडिच्छति पडिच्छइ नाममेगे वेयावच्चं णो करेइ ४ चत्तारि पुरिसजाया पं तं अट्ठकरे णाममेगे णो मा
णकरे माणकरे णाममेगे णो अट्ठकरे एगे अट्ठकरे वि माणकरे वि एगे णो अट्ठकरे णो माणकरे च
त्तारि पुरिसजाया पं तं गणट्ठकरे णाममेगे णो माणकरे ४ चत्तारि पुरिसजाया पं तं गणसंगहकरे
णाममेगे णो माणकरे ४ चत्तारि पुरिसजाता पं तं गणसोभकरे णाममेगे णो माणकरे॥४॥

इनही तेनिस्पृही॥१॥ बांछइ पणि करि नही ते आचार्य॥ त्रीजइ स्थिवरकल्पिक॥ चोथइ जिनकल्पिकादि॥ अट्ठकरे०॥ अर्थकरे॥ हितनी
प्राप्ति अनइ अहितनो परिहार करइ॥ ते अर्थकार राजादिकनइ देसांतरि जावादिकनइ विषइ अर्थमु करणहार मंत्री जाणि
वो अथवा उपदेसथकी अर्थ नु करणहार ते मित्री जाणि वउ॥ नो मान करइ०॥ पणि अभिमान न करइ ते कंइ आ पुछिउ थको
कि मकहीस एहवा अभिमानरहित ४ गण०॥ साधुनो समुदाय तेहनइ॥ अर्थ०॥ कार्य करइ आहारादिक उपदेसदइ पणिनो
मान०॥ मान न करइ ते कंइ गछनां कार्य किं छंडं॥ एहवउ मान न करइ॥ मान करि पणि जे पहसन[illegible]करइ॥ इमइ
गणसंगहकर०॥ आहारादिक अनइ ज्ञानादिक देवइ करी॥ संगह०॥ गछमेलइ ते धर्म रिइ॥ तिहां देव्य संग्रह ते आहारादि भ
ावसंग्रह ते ज्ञानादि। पणि मान न करइ॥ ४॥ गणस्य सकार०॥ गछनो धर्मनि इप्रवर्त्तावइ विकरी॥ वषाणि वि[illegible] द्या सिद्धि तेनइ
म तइ करी सोभा करइ॥ वाणि मुउनइ कहइ तो करूं एहवु मान न करइ॥

गणसोहि०॥ प्रायश्चित्तादिवादिकइ करी गछनी सोधिकरइ पणि मान न करइ॥ अथवा संकितादिदोष सहित आहार पाणी नइ विष
इ अणाकल्पाजि एहसनइ परिसुद्धिकरि पणि मान न करइ॥ बीजइ लागइ अभिमान नो लीधो नउ आइ सुधि करवा॥ त्रीजइ अभि
मानइ करिइ सोधि करि पणि करइ ते कहया थको जाइ॥ चउथइ एकुन करइ॥ रुवणाममेगे जहि०॥ साधुनो वेष छोडइ क्री
रणा वसइ॥ चारित्रलक्षण धर्म न छांडइ॥ दिगंबर माहि रह्या मुनि जेम परिइ॥ बीजइ लागइ निन्हव॥ त्रीजइ लागइ वेष अन
इ धर्म बेउ छोडइ॥ चउथइ सुसाधु॥ धम्मं नाममेगे जहि०॥ जिन आज्ञारूप धर्म छांडइ पणि॥ नो गणसंठिति॥ पोतानां
गछनी काधी मर्यादा नि छोडइ॥ इहां कइ एक आचार्य निइं तीर्थंकर नइ अनुपदिसि इ मर्यादा कीधी जे अन्हे वृहत्कल्पादि श्रुत

चत्तारि पुरिसजाया पं तं गणसोहिकरे णाममेगे णो माणकरे ४ चत्तारि पुरिसजाता पं तं रूवं
नाममेगे जहति नो धम्मं॥१॥ धम्मं नाममेगे जहति नो रूवं २ एगे रूवं पि जहति धम्मं पि जहति ३
एगे नो रूवं जहति नो धम्मं जहति ४ चत्तारि पुरिसजाया पं तं धम्मं नाममेगे जहति नो गणसंठि
तिं ४ पियधम्मे नाममेगे नो दढधम्मे १ दढधम्मे नाममेगे नो पियधम्मे २ एगे पियधम्मे वि दढधम्मे
वि एगे नो पियधम्मे नो दढधम्मे ४ चत्तारि आयरिया पं तं पव्वावणायरिते नाममेगे णो उट्ठावणा

अनिया गछमांमा भुमइ नादेवु॥ इम कीधइ छतइ अनेरा गछनो देवा जेोग्य कइ ते हांन थइ॥ तेणइ जिनाज्ञाना अराधक वा
थकी धर्म छांडि पणि गछमर्यादा न छांडी जेसलो तीर्थंकर नो उपदेस इम छइ जो जोग्य कइ ते सर्वनिइ श्रुत देवु जि॥१॥ बी
जइ लागइ ग्या जपपणि परगछनानइ तेणइ गछनी मर्यादा छोडी तो पणि धर्म मि छांडि के आज्ञा सेप॥ त्रीजइ अजोग्य नइ द्यइ
॥ अनइ जोग्यनइ दीइ॥ अस्योग नइ देवाथी धर्म छोडिउ॥ अनइ परगछनां साधुनइ जोगनइ दतां गछनी मर्यादा छांडी॥३॥
चउथइ श्रुत नाअव्यवछेदनइ॥ काजइ पर स्थापिनइ पातानो करी नइ दद तां धर्म निन छोडिउ अनइ गछनी सामाचारी इ पणि न
छांडी॥४॥ प्रियधर्म ते धर्म नी प्रतीत छइ। सु षइ धर्म पडिवजइ॥ नो दढधम्म०॥ पणि दृढ धर्मनी नही आपदा आवइ चल
लवा लवइ॥ एतलइ दस विध वियावच्चादि करइ॥ पणि धैर्यादि गुणइ करी दुर्बल॥१॥ बीजइ दृढ धर्मी आदरयो धर्म आपदी
आवइ पाणि छोडइ नही॥ पणि प्रियधर्मी नही॥ तिकष्टइं धर्म पडिवजवा थकी॥ बोधइ लागइ॥ प्रति बोधक॥ धर्माचार्य
ते प्रमे जानइ अनेइ उहावण पणि न करइ॥

ठाणां॰ बा

एकेकमाहि एक सांगउला सइ ॥ एकेकमाहि बे ॥ एकेकमाहि त्रिणि श्री ब मुक ॥ प्रव्रज्या वइ ॥ उवहाला करावइ एवं ३ ॥ उ
द्देसण॰ ॥ अंगादिक सणावा सरिषउ करइ त्यागवइ हिवणा वी नइ पणि ॥ नोवायण॰ ॥ वांचणा न द्यइ ॥ वच्छ्यइ तो गइ अति
बोधक धर्माचार्य ॥ ग्रही अथवा साधु तेउ देसना बावेना बेउ न करइ ॥ पव्वावण॰ ॥ अंते॰ ॥ तेह नउ शुद्ध सूत्र रत्नणवा त्या उप
की मीरूप स चिपणि वाचना रूप स चिन्ह ही ॥ वउ बइ बिहु व्यतिरिक धर्म प्रति बोधना रूप शाखि ॥ बाह्य अस्य भर ग्रंथ भ
कोनी कल्पातत निग्रंथ साधु ॥ रायणिए॰ ॥ दीक्षा दिरूप उं २ नै तेणाइ करीनइ व्यापार करइ ते रात्रिक पर्याय जि॰ ॥ सम॰ ॥
श्रमण निग्रंथ ॥ महाकम्म॰ ॥ हिंसादिक इं करी नइ मोटा कर्म छइ जेहनइ ते महाकर्मा ॥ महाकिरिए॰ ॥ मा टीका थिक्या
दि क्रियाक र्म बंधन नुं हेतु छइ जेहनइ ते महाकिरिय ॥ तथा ॥ अणायावि॰ ॥ सीतादि सहिवा रूप आतापना न लिइ ॥ मंद
यरिति १ उद्दावणायरिए नामं एगे नो पव्वावणायरिए २ एगे पव्वावणायरिते वि उद्दावणायरिते
वि ३ एगे नो पव्वावणायरिते नो उद्दावणायरिते धम्मायरिति चत्तारि आयरिया पं० तं० उद्देसणाय
रिए णामं एगे नो वायणायरिते धम्मायरिए चत्तारि अंतेवासी पं० तं० पव्वावणंतेवासी नामं एगे णो
उद्दावणंतेवासी ४ धम्मंतेवासी चत्तारि अंतेवासी पं० तं० उद्देसणंतेवासी नामं एगे नो वायणंतेवा
सी १ वायणंतेवासी ४ धम्मंतेवासी चत्तारि निग्गंथा पं० तं० रातिणिये समणे निग्गंथे महाकम्मे महा
किरिए अणायावी असमिते धम्मस्स अणाराहते भवति १ रातिणिते समणे निग्गंथे अप्पकम्मे
अप्पकिरिते आयावी समिते धम्मस्स आराहते भवति २ ओमरातिणिते समणे निग्गंथे म
हाकम्मे महाकिरिते अणायावी असमिते धम्मस्स अणाराहते भवति ३ ओमरातिणिए समणे निग्गं
थे अप्पकम्मे अप्पकिरिते आतावी समिते धम्मस्स आराहते भवति ४ चत्तारि णिग्गंथीओ पं० तं०
अथवा माटइ ते अनातापी ॥ असमिइए॰ ॥ समितिइं करी नइं असमतो ॥ एह वउ हुइ ते धर्मनउ अणाराधक हुइ ॥ अप्पकं॰ ॥ लघुक
र्म ॥ अप्पकि॰ ॥ कायिक्यादि क्रिया अल्प ॥ आतापना नो लेणहार ॥ समतिइ समतो एहवउ हुइ ॥ ते धर्मनो आराधक हु ११०
इ ॥ ओमरायणिए॰ ॥ पर्यायइं करी नइ लघु रात्रिक ते अवमरात्रिक ॥

इमनिग्रंथी श्रावक श्राविकाना प्रत्येक २ च्यारि गम्मा ॥ च्यारि च्यारि सुत्र करवा ॥ मातापिता सरिषा ते श्राविक ते साधु
ना उपगार विनाइ साधु नइ एकांति वाछलनउ करणहार ॥ १ ॥ भाइ सरिषो ते अल्प प्रेम पणि करी कदाचित् काइक
हुणा बोलइ पणि कार्य उपनइ अत्यंत वाछिलकारी ॥ २ ॥ मित्र समान ते साधु थकी उपगार वचनादिकइ अणावइ प्रे
म टालीजाइ ॥ पछइ साधु नइ आपदाइ आवइ गनारिन ही ३ ॥ सपत्नी सरिषो इति स्वर ताइ इ जेहनइ ते सपत्नी सउकि ज
जिमासाकिनी छिद्रानि वधकी अवगुण जोतोइ ॥ इमाज साधुना दुषणा देषइ ॥ उपगार काइ न करइ ते सउकि सरिषा ४ ॥ अ
रायणिया समणीओ निग्गंथीओ एवं चेव ४ चत्तारि समणोवासगा पं० तं० रायणिते समणोवासते महाक
म्मे तहेव ४ चत्तारि समणोवासियाओ पं० तं० रायणीया समणोवासिया महाकम्मा तहेव चत्तारि
गमा चत्तारि समणोवासगा पं० तं० अम्मापितिसमाणे भातिसमाणे मित्तसमाणे सवतीसमाणे
चत्तारि समणोवासगा पं० तं० अद्दागसमाणे पडागसमाणे खाणुसमाणे खरकंटयसमाणे ४
समणस्स णं भगवतो महावीरस्स समणोवासगाणं सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे चत्तारि पलि
हाग॰ ॥ आरिसा सरिषो ते साधु उत्सर्ग अपवाद आवड जेहवा परूपइ तेहवा ह्रदय हतं करी पडिवज्जइ ॥ जिम आरीसा भा
स्विता नउ डालावा जेहवा देषाडीइ तेहवा दीसइ ॥ ते साधुनो वचन सर्व निसंक पणाइं पडिवजइ ॥ १ ॥ जेहनुं चित्त विचित्र द
सना रूप वायरिकरी न इं डोलावइ ते पताका सरिषो ॥ षाणुस॰ ॥ षीला सरिषो जे कदाग्रह छ्यकी गीतार्थ इं पणि चाल
वी सकीइ नहीं ते देसनानइ अनुयोगपरइ त्यजै वल्पतो नो कहो ग्रहन छोडइ ॥ अनइ गुरु मइ उवचनरूपीर कांटइ वींधइ
ते निष्ठुर कांटा सरिषो ॥ षरा॰ ॥ निष्ठुर आतेरा रक्षित कांटा छे जेहनइ बिषइ सुलादि तेणाइ व्रसई लगड विलग्यु विणा फाटेने
ग्रो ॥ जेकुदाग्रहनउ मुंकावणहार छइ तेहनइ जिसदो षवतकरइ ॥ षोडिकादइ ॥ ४ ॥ श्रावक नाइं अधिकार माटइ सवली
श्रावक नी जे अधिकार कहइ छइ ॥ समणोवा॰ ॥ अणा दस्किनइ देवता ना अधिकार थकी वली देवता नुं स्वरूप कहइ छइ

म आतोअप
णी ॥ मुषणा
सयला उग्र प्र
र ३ ॥ २ ॥ सव
ति ॥ साधु
दुषणा देषी न
ततपणा ॥ अ
नुपकारी यस
मुवनी सभानो
सिधीय ते ॥
गाथा ॥ छिद
पेही ॥ पमाय
षुलिया लि
मिव मुवरइ
सदो सवतो
कप्पया ॥ साधु
जणति णस
मगाणइं ॥ ६ ॥
१ गाथा ४
अविचुरमा
स्थालबाउ

अविधुस्तं
गाथा ॥ अमा
चिं तइ नइ क
जाइ ॥ न दिह
रवलिउ बिकु
इ निनिहो ॥
एगंत वछोला
हुइ ॥ जे लुस्स
जेणा समो
सद्दो ॥ १ ॥
मातिम॰ उप
वा या हु ॥ हि
य ए स सिलोकु
विय ॥
णाम दा णा
विणयकम्म
॥ नाइ सामा
कुलो ॥ पराम
विकुरसिमुहा
उ ॥ २ ॥ मित्त
समा ॥ सजुष
वारवबुनाहि
नां प्रातिकूतत
गाथा ॥ मितस
मा णमाणा ॥
इं सिंकरु सइ अ
उछिडक छे ॥

तोसंचा०॥ नसकइ॥ इहमा०॥सो प्रश्रावी॥ कामसो०॥ मनोज्ञसब्दादिविषइं॥ मु०॥ मूर्छित तेहनुं स्वरूप असंतं तइइ। त अण
अत्यइइ॥ मुकाणो॥ गोध०॥ आकांक्षा सहित अइ मईलच॥ तेहनइ विषइ स्नेहरूपरागसडीइकरी गुंथाणो॥ अज्झोववन्न
०॥ अत्यंत तेहनइ विषइ मन॥ नोआढाति०॥ आदरवं तमथाइ॥ नोपरि०॥ एसवस्तु वस्तुरूपइ मन निक्रुवइ॥ नोअहबं०॥
नोअर्थ बंधनि तेएहाइकरी अमुकुं कार्य करिवुं॥ एहवो निश्चय नकरइ॥ नोनियाणं०॥ एमा हारिइसो थनिआणुं
नकरइ॥ नो ठिइप०॥ तेहनइ विषइ रहिवानो विकल्प नकरइ॥ अकु॥ एहनइ विषइ रहुं॥ अथवा एमाहारिइंसो॥ एह
वीमर्यादाइकरी प्रकृष्ट आचारात प्रकल्प तेनकरइ॥१॥ संक्रिंते०॥ संक्रम्यो॥२॥ इहेव०॥ इहवणां आऊं॥३॥ प्रतिजाते०॥
दयता नागंध विपरीत॥ प्रतिलाम०॥ इंद्रीमननइ अणऊल्हादक एवेकुंस ए एकाछिंदि अवइ॥ असंतअमनोज्ञपणुं आ
णवानइ ऊं आकह्या॥ उद्दं०॥ ऊंचो मनुष्यनो गंध ४०० अथवा ५०० जोजन लगइ॥ हव्वमा०॥ सीघ्रआइ छइ॥ स्रतादि

तावमाइं हिंती पन्नत्ता चउहि ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमाग
च्छित्तए णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए तं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभो
गेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववन्ने से णं माणुस्सए कामभोगे नो आढाइ नो परियाणाति
णो अट्ठं बंधइ णो णियाणं पकरेति णो ठितिप्पकप्पं पकरेति ॥१॥ अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु
दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते तस्स णं माणुस्सए पेमे वोच्छिन्ने दिव्वे संकंते भवति ॥२॥ अहुणोव
वन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते ४ तस्स णं एवं भवति इयण्हिं गच्छं मुहुत्तेणं गच्छं
तेणं कालेणं अप्पाउया मणुस्सा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति ॥३॥ अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु
कामभोगेसु मुच्छिते ४ तस्स णं माणुस्सए गंधे पडिकूले पडिलोमे यावि भवति उड्ढंपि य णं माणुस्स
ए गंधे जाव चत्तारि पंच जोयणसयाइं हव्वमागच्छति ॥४॥ इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे
इह। तेमहिंऊं दिवडिऊं दिसांसलइ अथवा अनेरो परिइ॥ तिमगंधना पुद्गलपाणिनवे जोऊनलगइंगया॥ तिहां आगल्या पुद्गलमइंइ
गंधि पणाइ परिणामवइ। ते आगल्या वली आगल्या नइ परिणामवइ इम ४००। ५०० जोयण जाई॥

आचरिए०॥ आचार्य ते प्रतिबोधदायक अथवा सीनोदेणाहार अथवा अर्थना कहिणहार॥ इति॥ एहवरूप दे आउवा नइ॥ उपा
ध्याय ते सूत्रदाता॥ आचार्य ना उपाध्याय विद्यादि विषइ प्रवर्त्तावइ ते प्रवर्त्तक॥ प्रवर्त्ताइ प्रवर्त्तावा संयम नइ विषइ॥ साधु
तेहनइ सील तेडावइ क रिइ ते स्थविर॥ गणानुं धणी गणा तणा ता ऊ धिकरनो सोख अथवा आचार्य नो सेनाल नो कारणा
ह्वा इ साधु विसय॥ सिद्धांत प्रसिद्ध॥ गणावछे०॥ ते गणना देसनो धणी नेतक तला एवरूप॥ गणना साधु समुदाय ग्रही नइ ग
च्छना अभ्यंतरनइ कार्यइ कूप धिनी गवेषणाकार इइ देसमाहि विचरइ॥ इमा०॥ एअत्यक्ष॥ एयारूवा॥ आदिकहु प्रत्यक्ष स्वरूप छइ॥
तिहवीपाणिकाली नि रिई करइ नहीं॥ दिवा०॥ सवीमी उपनी अथवा अनंत॥ दिव्य दे०॥ विमानादिक द्युति॥ जुई०॥ सरीर नी ऊ

देवलोगेसु माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए चउहिं ठा
णेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए तं अहुणोववन्
ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिते जाव अणज्झोववन्ने तस्स णं भवति एवं
अत्थि खलु मम माणुस्सए भवे आयरिए ति वा उवज्झाए ति वा पवित्ती ति वा थेरे ति वा गणी ति वा
गणधरे ति वा गणावच्छेदे ति वा जेसिं पभावेणं मए इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती ल
द्धा पत्ता अभिसमन्नागया तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि जाव पज्जुवासामि ॥१॥ अहुणोववन्ने देवे
देवलोगेसु जाव अणज्झोववन्ने तस्स णं एवं भवति एस णं माणुस्सए भवे णाणी ति वा तवस्सी ति वा
अइदुक्करदुक्करकारए तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि जाव पज्जुवासामि ॥२॥ अहुणोववन्ने देवे देव
पनीकांति॥ अथवा युति ते इस्पृहरिवारनो संजोग॥ लद्धा०॥ उपार्जी जन्मांतरइं॥ पत्ता०॥ ते हिवडां मांमी॥ अभिस०॥ सोगावस्था
नइ विषइ प्योकृति॥ तंगच्छा०॥ ते माटइ जाऊं॥ ते स०॥ ते पुरुष नइ॥ वंदामि०॥ स्तुतिकरुं॥ यावत पद थकी॥ नमं०॥ प्रणाम करुं॥
सक्का०॥ आदरकरवइ करीसत्कारुं॥ अथवा वस्त्रादिक इंसत्कारुं॥ सम्माणेमि०॥ योग्यप्रतिपत्ति इंसन्मानुं॥ कल्लाणं मंगलिकं॥ द
वतं चितं ए एणो बुद्धि सेवुं॥ नाणी०॥ श्रुतज्ञानादिवंत॥२॥

एमनुसंक्षि
प्तनु असु
ल पणुं कुं
आन इम
ब जोइन
क परोति
वकोगंध
आव्यो आ
णइमही
जिमल गंधा
णो ठियनउ
विषयुपत
लोहविलगइ
ऊं उदारीक
नो आपहा
इसंसवाई
छेइ॥ अन्य
दाल से जो
ज नादिष
माणा वि
माननइ विं
थइ इ विध्ना
वाऊं नीघ
टाणी सइ
किंमसीत

कनइ विषइ
सुपमादि आ
गविषइ ४००
जोयण कह्यु
चित कल्या
ण आइ॥ अन्य
दाकाले नइवि
षइ ५०० जो
यणपणि आ
इ॥ तत्तणं
मनुष्यतिर्यं
च वेउ॥ नाम
गरमलन
हनइ वफल
पणाइ करी
नइ दु गिंधि
नो पलिव कु
लपणो कइ
हव्वमा०॥
गच्छाम०॥ ते
गंध मनुष्य
लोक माहिं
आवणहा
र॥ प्रति इ
१११
साहोमाउ
वइ॥

नेवं४

माय ति वा जाव माहिं पिया ति वा भाया ति वा भज्जाइ वा पुत्ताइ वा तं गच्छामि णं० तेमाटइ जाउं तेहनइं समीपि प्रगट थाउं पासंतु ताव मे इममेतारूवं पाठांतरि इमएयारूवं ३ मित्र ते पहिलइ स्नेह तं सखी ते बालमित्र सुहृत्ते सजन हेतना वांछणहार सहाय ते० सहचर अथवा एक कार्यनो प्रवर्त्तक संगतिए ति० जे संघातिइ परिचीकृत तेसिं च णं अम्हे तेसंघातिइं अम्हे माहोमाहिं संगारे पडिस्सुए० संकेत अंगीकार कीधउं जो मे पुव्विं चयति० जिको एआ पतिमाहि पहिलो चवइ से संबोहेएव्वो० ते प्रतिबोधवो मनुष्यभवमइ विषइं बे कुउ गीइ संकेतकीधो हुइ तेमाटे एकलइ पूर्वादिकनइ आऊखइ सवनपति माहिं ऊपनो तिहां थोवीमनुष्य ऊपनो बीजोलउ पूर्वादि जीवी सोधर्मादिकनइ विषइ ऊपनो ते इहां प्रतिबोधवा आवइ ४ अनंतर देवनुं आविवुं कहिउं

लोएसु जाव अणज्झोववन्ने तस्स णमेवं भवति अत्थि णं मम माणुस्सए भवे माता ति वा जा वसुण्हा ति वा तं गच्छामि णं तेसिमंतियं पाउब्भवामि पासंतु ता मे इममेतारूवं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुत्तिं लद्धं पत्तं अभिसमन्नागयं ३ अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु जाव अणज्झोववन्ने तस्स णमेवं भवति अत्थि णं मम माणुस्सए भवे मित्ते ति वा सही ति वा सुही ति वा सहाए ति वा संगतिए ति वा तेसिं च णं अम्हे अन्नमन्नस्स संगारे पडिस्सुए भवति जो मे पुव्विं चयति से संबोहेतव्वे इच्चेतेहिं जाव संचाएति हव्वमागच्छित्तए ४ चउहिं ठाणेहिं लोगंधगारे सिया अरहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं अरहंतपन्नत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे पुव्वगते वोच्छिज्जमाणे जायतेए वोच्छिज्जमाणे ४ तेहनइ अवतारे अंधआलुं थाइ तेसनुं प्रतिपक्ष अंधकार कहइ छइ लोकनइ विषइ अंधकार द्रव्य थकी अनइ भाव थकी थाइ अरिहंतादिकनइ भवछेदि थिकइ द्रव्य अंधकार थाइ उत्पादरूप प्रवचन माटइ जिम छत्र भंगादिकनइ विषइ २ उत्कृष्टादि थाइ जायतेव० अग्नि विच्छेदानइ द्रव्य तम अंधकार थाइ ते अग्नी भस्मनावइ इहवउ छइ अथवा दीवादिकनाअभाव माटइ अनइ भाव थकी अंधकार तिहां क्षमादि भावनइ विषइ आगमादिकना अभाव थकी थाइ ११२

पूर्वइं देवागमन कहिउं एटलइं काणांयक दीलो देवतानाउ अधिकारनां सूत्र कहइ छइ उत्कासस्थानो सूत्र लगइ सूत्र ५ अरिहंतहिं० जिणि बोलइ अंधकार थाइ तेतीर्थंकरना प्रभाव माटइ अनइ निर्वाणसमइ अजुआलुं ते देवताने आविवा थकी अजुआलुं देवंधयारे० जिम लोकनइ विषइ अंधकार थाइ तिम देवतानइ विषइ पणि जाणो कल्पनइ अंधकार थाइ तेतीर्थंकरादिकनइ अव्वच्छेद जातिंतेहना प्रभाव माटइ देवतादिकनइ विषइ उद्योत थाइ ते अरिहंतादिकना जन्मादि विषइ देवतानुं ऊसेतियाते तेसमुदायते एकठा मिलइ देवुक्कलिया० देवतानी लहिर देवकहकहे० देवतानाहर्षमिउ जिकोलाहल जहा तिठाणे० बीजा स्थानाकनापहिला उद्देसामइ विषइ जिम देवेंद्रादिकनुं आविवुं कहिउं छइ

चउहिं ठाणेहिं लोउज्जोते सिता तं० अरहंतेहिं जायमाणेहिं अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अरहंताणं णाणुप्पयमहिमासु अरिहंताणं परिनिव्वाणमहिमासु ४ एवं देवंधगारे देवुज्जोते देवसन्निवाते देवुक्कलिता ते देवकहकहते चउहिं ठाणेहिं देविंदा माणुसं लोगं हव्वमागच्छंति एवं जहा तिठाणे जाव लोगंतिया देवा माणुसं लोगं हव्वमागच्छेज्जा तं० अरहंतेहिं जायमाणेहिं जाव अरहंताणं परिनिव्वाणमहिमासु चत्तारि दुहसेज्जाउ पं० तं० तत्थ खलु इमा पढमा दुहसेज्जा से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वतिते निग्गंथे पावयणे संकिते कंखिते वितिगि
तिमहस्सीयणिक हिवउं परंइहां निर्वाणनो बोल तेचउथउ पुविइ अरिहंतादिकना जन्मादिकनइं विषइ देवागमन कहिउं हिवइ अरिहंतमाउ प्रवचनइ विषइ जेपापुवी मिलइ रहिउं अनइ जे रूडा मिलइ जिरइ हिवउं ते साधु महि उवासउपासु ऊपासउ कहइ छइ सूत्र २ उपासउ० दुःखदायक सेज्जा उपधिको पाटला नी परिइ भावथकी पाउआ विरूप ताइ करी दुःश्रमणपणानो कारणादि तिवारं मनोमन प्रवचन अस्तु लक्षण परलोक प्रार्थनाइ कामा सम ३ स्नानादि प्रार्थना ४ तत्थ खलु इमा० तेमाहि पहिली एडुःखसेज्जा तिको इएक तारे करमि निग्गंथिया जिनसासनविषइ संकित० वीतरागना भाषानइ विषइ संसयसहित कंखिए० मतांतर नइ साधुलपविवानी बुधि वितिगिच्छिए० फलप्रतिसंकावंत

सद्दसमा० बुद्धि विकट कांषइ । यथ निग्रंथप्रवचन ना ता वसायो छइ एहवो टाइ इ ॥ कलुससमा० ए सावई मन ही अविपरीत बुद्धि ॥ नि० ॥ नो सद्दहइ ति० सामान्यपणइ सद्दहइ नही । ज एताव इभ [illegible] नो पत्तिय० प्रतीति न आणइ विशिष्टइ नही ॥ नो रोए० अविक अभिलाष इकरी नवि वांछइ ॥ मणं उच्चावयं० अध्मंजस मन थाइ तिवार पछी ॥ विणिघा० धर्मभ्रष्ट थाइ अथवा संसार पडिवजइ ॥ पढ० पहिली दुःखशय्या ॥ १ ॥ सएणं ला० पोताना लाभ संतोष न पामइ ॥ परस्स० बीजाना लाभनी आस्था करइ ॥ एम करी आपणो अथवा परना लाभ [illegible]
पीहइ० [illegible] लोकगुं पर ना ला इम वांछइ ॥ पत्थेइ० साधु कांइ याचइ ॥ अभि० लोभ [illegible] अधिक [illegible]
॥ २ ॥ श्री जो सुगमम् ॥ वसामि० वर्त्ततो ॥ संबाहण० शरीर ना हाड नइ सुखादिक जाणिवानइ ॥ निमुणपणइ करी [illegible]

च्छति तत्थसमावन्ने कलुससमावन्ने निग्गंथं पावयणं णो सद्दहति णो पत्तियति णो रोएइ निग्गं थं पावयणं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे मणं उच्चावयं नियच्छति विणिघातमावज्जति पढमा दुहसेज्जा १ अहावरा दोच्चा दुहसेज्जा से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ जाव पव्वतिते सएणं लाभेणं णो तुस्सति परस्स लाभमासाएति पीहेति पत्थेति अभिलसति परस्स लाभमा[illegible]साए माणे जाव अभिलसमाणे मणं उच्चावयं नियच्छइ विणिघायमावज्जति दोच्चा दुहसेज्जा २ अहावरा तच्चा दुहसेज्जा से णं मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए दिव्वे माणुस्सए कामभोगे आसाएइ जाव अभिलसति दिव्वमाणुस्सए कामभोगे आसाएमाणे जाव अभिलसति मणं उच्चावयं नियच्छति विणिघातमावज्जइ तच्चा दुहसेज्जा ३ अहावरा चउत्था दुहसेज्जा से णं मुंडे जाव पव्वइए तस्स णं एवं भवति जया णं अहं अगारवासमावसामि तदा णं अहं संबाहण परिमद्दण गातब्भंग गातुच्छोलणाइं लभामि जप्पभिइं च णं अहं मुंडे जाव पव्वतिते तप्पभिइं च णं अहं संबाहण जाव गातुच्छोलणाइं णो लभामि से णं संबाहण जाव गातुच्छोल णाइं आसाएति जाव अभिलसति से णं संबाहण जाव गातुच्छोलणाइं आसाएमाणे जाव मणं उच्चावयं निय च्छति विणिघायमावज्जति चउत्था दुहसेज्जा ॥ ४ ॥ घासज्जा ॥

मर्दन को [illegible] ॥ अगत ॥ जे हण इ ते ॥ [illegible] ॥ गात्र [illegible] धोविवो [illegible] ॥ गातुच्छोल [illegible] दुःख सुख [illegible] १९३ रीत ते सु

महा० ॥ अति न [illegible] ॥ क्रियु [illegible] ॥ अधिन उकरता हार ॥ कम्मं [illegible] ॥ साधना साधवाध की कर्म [illegible] करता [illegible] ॥ नावा [illegible] तप कर्म तन प [illegible] ॥ थाइ [illegible] ॥ पढि [illegible] [illegible] ॥ [illegible] न ते आ मत्र तणा

दहा० ॥ सो कमइ असावइ ॥ इरुपा नी प्रवृत्ति इ छइ [illegible] ॥ अथ [illegible]
[illegible] ॥ आरोगाइ० ॥ वीर्य दिवरीते ॥ बलिया० ॥ तल वत ॥ कल्ल० ॥ पुष्ट सरीर ॥ अन्नयराइं० ॥ अनेसनादि
चत्तारि सुहसेज्जाओ पं तं तत्थ खलु इमा पढमा सुहसेज्जा से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वतिए निग्गंथे पावयणे णिस्संकिते णिक्कंखिते निव्विति गिच्छिए नो भेदसमावन्ने नो कलुसस मावन्ने निग्गंथं पावयणं सद्दहइ पत्तियइ रोएइ निग्गंथं पावयणं सद्दहमाणे पत्तियमाणे रो एमाणे नो मणं उच्चावयं नियच्छति णो विणिघातमावज्जति पढमा सुहसेज्जा १ अहावरा दोच्चा सुहसे ज्जा से णं मुंडे जाव पव्वतिते सएणं लाभेणं तुस्सति परस्स लाभं णो आसाएति णो पीहेति णो पत्थेति णो अभिलसति परस्स लाभं अणासाएमाणे जाव अणभिलसमाणे नो मणं उच्चावयं नियच्छइ णो वि णिघायमावज्जति दोच्चा सुहसेज्जा अहावरा तच्चा सुहसेज्जा से णं मुंडे जाव पव्वइए दिव्वमाणुस्सए का मभोगे णो आसाएति जाव नो अभिलसति दिव्वमाणुस्सए कामभोगे अणासाएमाणे जाव अणभि लसमाणे नो मणं उच्चावयं नियच्छति णो विणिघायमावज्जति तच्चा सुहसेज्जा ३ अहावरा चउत्था सुहसेज्जा से णं मुंडे जाव पव्वतिते तस्स णं एवं भवति जइ ताव अरहंता भगवंतो हट्ठा आरोगा बलिया कल्लसरीरा अन्नयराइं उरालाइं कल्लाणाइं विउलाइं [illegible] पग्गहिताइं [illegible] महाणुभा गाइं कम्मक्खयकरणाइं तवोकम्माइं पडिवज्जंति किमंग पुण अहं अब्भोवगमिओवक्कमियं वेयणं नो सम्मं सहामि खमामि तितिक्खेमि अहियासेमि घवा अलेकार ॥ पुर्वोक्ता थुनिं विलक्षणपणुं दिवाड वानइ अर्थ
अब्भोवगमि० लोच ब्रह्मचर्यादिक ॥ उवक्कमि० आयु ॥ उपक्रमी ॥ उत्पद्याइ ॥ एणइ करी उपक्रम ज्वर अतीसारादि
कनी वेदना ॥ नो० ॥ निश्चयइ ॥ सहामि० ॥ सम्यक् पणइ करी जिम सुभटवैरीना माथासी [illegible] इ लागइ ॥ तिम वेदना थु
को सहुं नही ॥ खमामि० ॥ कोप रहित थकुं ॥ तितिक्खेमि० ॥ अदीनपणइ थकुं ॥ अहियासेमि० ॥ करडी परि करी [illegible]

तप माहि लो अनर तु ॥ उराली ॥ ॥ आसन सादिदोष रहित तप लिइ ऊंहा ॥ चित्रयु क्त ॥ कला णइं ॥ मां गलिक रूप ॥ विपुलाइं ० ॥ घणा दिन ना ॥ प्रयुक्ताइं० ॥ अति हिइसु यम सहित ॥ पग्ग हियाइं० ॥ आदर पू णइ पडि वज्जिउ

आस्रुनास्रुंनहीएसएमवीएकार्यछइ॥किंमन्ने०॥वितर्कनइअर्वइ॥कछत्ति०॥कुइ॥एकांत्ति०॥एकांतितेसवीधा॥पापकर्मकीइ एतलइ।जातीर्थंकरसरिखातथादिकेनुं॥कष्टसहिइ॥नउकुंआज्ञावगामियाअनइउवकमियावेदनाकिंमनसउ॥जानसउ ता एकांतिकर्मलागइ॥सउ॥ताएकांतिनिर्जराथाइईसर्व॥४॥एतुपः॥मासव्या वर्तेइनिर्गुणा॥सुधपसउसावंततसुगुण निर्गुणानेवांचणींबइअउपाग॥सुगुणातवांचणेउपाग॥एहवकंविकुसूत्रइदेषाडइछइ॥विगइ०॥विगइनालोलपी॥ अविउसविपाकुडं०॥अणाऊपसम्मो॥पाकुडे०॥अधिकरणकारीकाय॰एवांवारणी अडेणा।ओणकाया॥वली कुकलिउ

ममंचणं अज्ञावगमि उवक्कमियं सम्मसहमाणस्स अतितिरकमाणस्स अरवममाणस्स जाव अण
हियासिमाणस्स किमन्नेकछति एगंतसोमे निछुराक छति चउज्ञा सुहासेज्ञा ४ चत्तारि अवायणिज्ञा पं तं अविणीए विगईपडिबधे अविउसवितपाकुडे माई चत्तारि वायणिज्ञा पं तं विणीते अवीगतीपडिबंधे विउसवितपाकुडे अमाई चत्तारि पुरिसजाता आतंतरनाममेगेनोपरंतरा परं तरनाममेगेनोआतंतरा एगेआयंतरावि परंतरावि एगेनोआयंतरानोपरंतरा चत्तारि पुरिस जाया पं तं दुग्गएनाममेगेदुग्गए दुग्गएनाममेगेसुग्गाते सुग्गतेनाममेगेदुग्गए सुग्गएनाम

इ छि अधिकारकहइछइ॥ आयंतरा०॥पोतानइपोषइ॥घणि॥नाथरंतर०॥परनइभणपोषइ॥तेजिनकल्पीतेपोतानुं कुकामकरइ॥पणि उपादेसवाचनादिनथइ॥१॥बीजइतीर्थंकर परार्थअकारक सगवेतसकलसवार्थरे हितं॥परप्रज्ञपीमनकरवानइविषइते॥२॥त्रीजइस्वार्थकारी परार्थकारी ते स्थिवरकल्पी सुविहित अनेक नतीकरेसवारे वाघकोस्वार्थकारी॥सिघंत नीदेसना देवाथी परार्थकारी॥३॥चउथइ बिहुनइ अनुपकारी मुग्धअ ॰घवाकोइएके यथाछंदाइमलो कपुरुषकोडिवो॥हिवइ बिहुनइ अनुपकारी ते तो दरिद्री तेते णोदरिद्रीनुं सुत्र कहइछइ॥दुग्गए०॥पहिलुंपति धन्यहीणा पवलिकरी॥अथवाशीलादिकपाणिस्करी हीन दरिद्री॥अनइवलीदु गए०॥तिपवेपणिदरिद्रीअ॥अथवाढुग्गए०॥द्रव्यथकी दरिद्री धन्यहीण वलीदुर्गातितेसावचकी दरिद्रीशीलादिरहित ॥१॥बीजइतोगइदरिद्रीदरिद्रीवलीइधनाढि अथवाद्रव्यथकी दरिद्री अनइ भाव इधनाढि॥२॥त्रीजइपहिलुंधनाढि

१

वलीइ २ रिद्री ॥ अ नइ अथवा भाव इदरि द्री न हइ भाव इधना ढि ॥ ३ ॥ त्रीज इ पहिलुं क इ अ नाढि ॥ क्वचि भा व इ धनाढि रा व इ ध ना ढि ॥ ४ ॥

११४

दरिद्रीकोएकव्रतीकुइतेतलोव्रतस्वरूपकहइछइ॥दुग्गए०॥पहिलुंदरिद्रीधनहीणा पवणइकरी॥दुब्बए०॥असम्यग् व्रतनोधणी॥अथवाइदुब्बए०॥पोतानीत्रिविडिनीअपेक्षारहितथइवेनोकरणहार॥अथवाऊठामिवाइरि॥१॥बीजइतो गइदरिद्री छतो सुब्बए०॥कुडाव्रतनोपालणहार॥त्रीजइतोगइपहिलुंसुव्रतीपणइदरिद्री॥३॥चोथइधनाढिनइसुव्रती ४दुग्गएततिमइजि॥दुप्पडियाणंदे०॥तेकीधउउपगारनजाणइ॥बीजइदुग्गएततिमइजि॥सुप्प०॥कीधोउपकारजा णइ॥त्रीजइधनाढिकोउपगारनजाणइ॥३॥चउथइधनाढिनइउपगारजाणइ४॥हिवइदुगतिजाइ तेतलो तिसु

मेगेसुग्गए चत्तारिपुरिसजाता पं तं दुग्गातेनाममेगेदुब्बते दुग्गएनाममेगेसुब्बए सुब्बएनाम मेगेदुग्गए सुब्बएनाममेगेसुब्बते ४ चत्तारिपुरिसजाया पं तं दुग्गातेनाममेगेदुप्पडिताणंदे दुग्गातेनाममेगेदुग्गाते गामी दुग्गएनाममेगेसुगतिगामी ४ चत्तारिपुरि सजाया पं तं दुग्गएनाममेगेदुगतिंगते दुग्गातेनाममेगेसुगतिंगते ४ चत्तारिपुरि सजाया पं तं तमेनाममेगेतमे तमेनाममेगेजोती जोतीनाममेगेतमे जोतीनाममेगेजोती ४ चत्तारिपुरिसजाया पं तं तमेनाममेगेतमबले तमेनाममेगेजोतीबले जोतीनाममेगे तमबले जोतीनाममेगेजोतीबले

कहीइछइ॥दुग्गए०॥ततिमइजि॥दुगतिगामीतेदुर्गतिनाजानार॥बीजइतोगइदरिद्री सुगतिनोजानार॥२॥त्रीजइधनाढिदुर्गतिनाजानार॥३॥चउथइधनाढिसुगतिनोजानार॥४॥दुग्गए०॥तिमइजि॥दुगइ गए०॥दुगतिगयो यात्रानालाककुपरिकाप्योधकोतेहनइमारवाप्रवर्त्यो तेतीपारीनीपरिइमवर्त्यो संगीध५॥तम०॥अधं कू तिअज्ञानपणुअथवाप्रकासपणुं।पहिलुंपणि अधकं वलीतम०॥पछिपणिअंधकं॥१॥बीजइतोगइपहिलुंअंधकं॥जोइ०॥ पछइज्ञानउपार्यारूपअजुयालुंअथवायशपाम्यानुंअजुयालुं॥२॥इमवउसगी॥४॥तमकुकर्मकरणइकरीनइमइलजस्वभा व॥तेमबल०॥अज्ञाननुंबलछइजेहनइ अथवाअधर्मरानइविपइबलछइ जेहनइ तेअसवारी स्वीरादिक॥१॥ तमातेतिमइजि॥ ज्योति०॥ज्ञाननुंबलछइ।अथवा ज्योति०॥सूर्यनुंअजुयालुं॥अथवाअजुआलानइविषइबलछइजेहनइ तेज्योतिबलतेसदाचा री।ज्ञानवंत अथवादिनचारीआचारादि॥जोई०॥ज्योतितेसंकर्मकारीपणइकरी ऊजलोस्वभाव॥तमबलतेतिमइजितेस

दाचारी णिअ शीलो अ थवाका रणि रा त्रिनो वि चरणहा र॥३॥वे उ द्रहस दाचारी ज्ञानवं त।अथ वादिवस नो विच रणहार॥ ४॥

तम ततिमइत्र ॥ तमबलपक्कलत्ते० ॥ तम० ॥ मिथ्या ज्ञान अथवा अंधकार तेह्नी ऊ बल छइ जेहनइ ॥ अथवा अंधकारनइ विषइ ब
लात पकुलत्ते० ॥ समर्थाई निइ विषइ अथवा अजुआलानइ विषइ । अनइ बलनइ विषइ २ तिकुरइ तेथ्यो तिबल प्ररंजण ॥ २
ज्योति० ॥ सम्यग्ज्ञान अथवा ॥ अंजुयालुं ॥ तमबल पकुलत्ते० ॥ तम० ॥ मिथ्या ज्ञान अथवा अंधकार तेह्नी जाजबल तेहनइ विषइ
अथवा अंधकारनइ विषइ अनइ बलनइ विषइ । २ तिकरइ ते तमाबल प्ररंजण ३ ॥ ज्योइ० ॥ ज्योतिततिमइत्र ॥ ज्योईबल० ॥
सम्यग्ज्ञान अ० ॥ अजुआलुं तेह्नी ऊबल तेहनइ विषइ । अथवा ज्योति विषइ । अनइ बलविषइ । २ तिकरइ ते ज्योतिबलप्र
रंजण ॥ इहां पणि पुर्विला सुत्रनउ त्यपुरुष प्ररंजण ॥ राहपुर्वक लवउ ॥ एतलइ पहिलो बउ संगीनो परिइ ॥ पुरुषनी
विस्तारा ताडिवो ॥ अथवा तम ते तिमइत्र ॥ अनइ तमनइ बलिष्ठ करीनइ संवर तोला रूपी तेत तमाबल प्रकलजण प्रकास ब्या
रीत्या ॥ बीजइ अंधकार बारी ॥ त्रीजइ प्रकास बारी ॥ चउथइ ॥ चउथइ कस्यइ एककारण ना वस थका अंधकार रियाल्पा ४ ॥ चि

चत्तारि पुरिसजाया पं. तं. तमनामामेगे तमबलपक्कलणे तमनामामेगे जोतीबलपक्कलणे
४ चत्तारि पुरिसजाया पं. तं. परिन्नायकम्मे नामामेगे नो परिन्नायसन्ने परिन्नायसन्ने नामामेगे
नो परिन्नायकम्मे एगे परिन्नायकम्मे वि परिन्नायसन्ने वि एगे नो परिन्नायकम्मे नो परिन्नायसन्ने ४
चत्तारि पुरिसजाया पं. तं. परिन्नायकम्मे णाममेगे नो परिन्नायगिहावासे परिन्नायगिहावा
सेणाममेगे णो परिन्नातकम्मे ४ लित अनइं ज्योतिबल प्रक्कलण ॥ १ ॥ परिनाए० ॥ ज्ञ प्रज्ञाइं करीनइ स्वरूप थका जा
णी एप्रत्याख्यान प्रज्ञाइं परिहरयो कर्म कृषणादिक जणइं ते परिज्ञातकर्म ॥ नोपरिज्ञातसंज्ञ० ॥ जिणइं आहारा
दिसंज्ञा जीती नइ ॥ परिहरी नथी ते नोपरिज्ञातसंज्ञ । ते कोण एक साधु अथवा श्रावक ॥ बीजइ सो गइं रुडी भावनाइं सा
ध्या पणा थकी आहारादिसंज्ञा रहित पणि कर्षणादिकर्म परिहरयां नथी ते श्रावक ॥ त्रीजइ साधु ॥ चउथइ असंयती ॥
परिज्ञातकर्म० ॥ सावद्य करवा कराविवा अनुमोदवा रहित अथवा कर्षणादिकर्म रहित थका ॥ नोपरिज्ञा
यगिहवासे० ॥ पालियुं इस्यो वास रहित नही ते अप्रव्रजित ॥ बीजइ आरंभ छोडि कीनथी पणि घर रहित एहवउ छइ अप्रव्र
जित ॥ त्रीजइ साधु ॥ चउथइ असंयती ॥ ४ ॥

हां एक प कलणो व हवउ पांठ छइ तिहां अज्ञानने रबलइ अ थवा ॥ अं धकार नि विषइ अ थवा ज्ञान नइ बलि अथवा प्र कासनइ बलइ प्रक लनी ॥ मा ताबाइ ए तलइ एह नउ एहन उ आचार ते मनोब ल प्रकोल

११५

परिन्नायसन्ने० ॥ संज्ञा आहारादिकनी रहित ॥ बीजइ आरंभ छोडि नथी विसइ गुणगणाइं वर्तवा थकी पणि ॥ नोपरि० ॥ घर
वास रहित नही एहवा श्रावक ॥ बीजइ आहारादिसंज्ञा सहित साधु ॥ त्रीजइ घरवास नइ संज्ञा रहित साधु ॥ चउथइ अ
संयती ४ ॥ इहत्थे० ॥ एह जन्मनइ विषइ भोग सुखादिकनउ अर्थ छइ जेहनइ अथवा आरंभी एहवउ जेडी वुद्धि छइ जेह
नी ते इहार्थ अथवा इहां छइ एहवउ लोग पुरुष ॥ अथवा इहलोक प्रतिलोग पुरुष ॥ नो परत्थे० ॥ जन्मांतरनइ विषइ
अर्थ छइ जेहनइ ते परार्थ अथवा परास्थ एहवो नही ते नो परार्थ नो परास्थ ॥ बीजइ साधु अथवा बालतपस्वी त्रीजइ
श्रावक अथवा विकुलोकनइ विषइ प्रतिबद्ध ते ॥ अथवा । वागुरी आदि ॥ अथवा मुंड ॥ अथवा इहां इविवक्षित ग्रामादिकवि

चत्तारि पुरिसजाता पं. तं. परिन्नायसन्ने णाममेगे नो परिन्नायगिहावासे परिन्नातगिहावासेना
ममेगे ४ चत्तारि पुरिसजाता पं. तं. इहत्थे णाममेगे नो परत्थे परत्थे नाममेगे नो इहत्थे ४ चत्तारि पुरि
सजाता पं. तं. एगेणं णाममेगे वड्ढइ एगेणं हायति एगेणं णाममेगे वड्ढइ दोहिं हायति दोहिं णा
ममेगे वड्ढइ एगेणं हायति दोहिं नाममेगे वड्ढति दोहिं हायति चत्तारि कंथका पं. तं. आइन्ने नाममे

षइ निर्द्वंद्व तेइ इहस्थ ॥ अनइ तिहां ऊरहिवाना प्रतिबंध थकी नोपरस्थ परगाम नउ रहिणहार नही ॥ बीजइ परगामनो रहि
णहार ॥ तेहना प्रतिबंध थकी इहस्थ नही ॥ ४ ॥ त्रीजइ बिहुं गामि प्रतिबद्ध ॥ चउथइ बिहुं गामि अप्रतिबद्ध साधु
॥ एगेण० ॥ एकइ श्रुतज्ञानइं करी वद्धइ० ॥ वाधइ ॥ एगेणं हायइ० ॥ एकइ सम्यग्दर्शनि हीणो थाइ ॥ जिम कोइ एक
बहुश्रुत । सविधणइ परिठ्यो पणि सिद्धांतनी भ्रमी तनहीं तिसिद्धांतना प्रत्यनीक ॥ बीजइ लोगइ श्रुतज्ञानइं करी वाधइ
॥ अनइ दोहिं हा० ॥ सम्यक्त्व नइ विनयि हीणो थाइ ॥ त्रीजइ ज्ञान अनइ क्रिया बिहुं करी वाधइ ॥ अनइ एकइं सम्यक्त्वि
इं हीणो थाइ ॥ चउथइ ज्ञान क्रिया बिहुं करी वाधइ ॥ अनइ सम्यक्त्व विनय बिहुं हीणो थाइ ॥ अथवा ज्ञानइ वाधइ । अनइं
रागि हीणो थाइ ॥ १ ॥ अथवा क्रोधइ वाधइ । मायाइं हीणो थाइ ॥ १ ॥ क्रोधइ वाधइ । माया लोभइ वाधइ ॥ २ क्रोध मान वाधइ
इ । मायाइं हीणा । क्रोध मान वाधइ । माया लोभि हीणो थाइ ॥ ४ ॥ कंथगा० ॥ पाठांतरइ ॥ पकंथगा ॥ अश्वविसेष ॥ आ
इन्न० ॥ पहिलो दिगा दिगुणइं करी व्यापित ॥

अनइवली आकार्सात पछइपणितेहवज जि ॥१॥ बीजइ पहिलुं आकार्स अनइ पछइ खलुकातगली ३ अविनीत पछइ
२ पहिलुं खलुक पछइ आकार्स ॥३॥ पहिलु पछइ खलुक ॥४॥ एवामेव० ॥ इम पुरुषपणिइं पहिलुं ॥ आइने
॥ वेगादिगुणव्याप्त ॥ अनइवली आइसोत ॥ पछइ पाणितेहवो ज ॥ पहिलु गुणव्याप्त पछइ खलुकगलीया अविनीतसरि
खो ॥२॥ इमचउभंगो ॥ कंथगा० ॥ अश्वविसेष ॥ आइन्ने० ॥ गुणवंत ॥ आइसया एविहरइ० ॥ गुणविनय वेगादिकपणइं क
री ॥ विह० ॥ विचरइ ॥ पाठांतरइ वहति० ॥ प्रवर्त्तइ ॥१॥ आइन्ने० ॥ गुणवंत ॥ खलुकत्ताए वि० ॥ अनइ रानइ रूप रिच
उवा नदीइ । तेणइ करी गलीयानी परि विचरइ ॥२॥ खलुकथक अ आकीर्स पणइ विचरइ तत पहिलुं गली उपछइ
गुणवंतथाइ ॥३॥ ते जघइ पहिलो गली ३ पछइ गली ३ ॥४॥ पुरुष ते ॥ आइन्ने० ॥ गुणवंत ॥ आइसत्ताए वि० ॥ विनयावेगा

गो आइन्ने । आइन्नेनाममेगे खलुंके खलुंके नाममेगे आइन्ने खलुंके नाममेगे खलुंके
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं० आइन्नेनाममेगे आइन्ने चउभंगो चत्तारि कंथगा पं० तं० आ
इन्नेनाममेगे आतिन्नत्ताते विहरति आइन्ने नाममेगे खलुकत्ताते विहरति ४ एवामेव च
त्तारि पुरिसजाया पं० तं० आइन्नेनाममेगे आइन्नत्ताते विहरइ चउभंगो चत्तारि कंथका पं० तं०
जातिसंपन्ने नाममेगे णो कुलसंपन्ने ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं० जातिसंपन्ने नाममेगे
चउभंगो चत्तारि कंथका पं० तं० जातिसंपन्ने नाममेगे णो बलसंपन्ने ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजा
ता पं० तं० जातिसंपन्ने नाममेगे णो बलसंपन्ने ४ चत्तारि कंथगा पं० तं० जातिसंपन्ने नाममेगे णो रू

दि गुणवंत पणइ जि विचरइ ॥१॥ बीजइ पहिलुं गुणवंत । पछइ खलुकपणइं विचरइ ४ ॥ वाचनांतरनइं विषइ पुरुषनी
बि चउभंगीनी घातविचत्रसूत्र गतिमाटइ ॥ कंथका० ॥ अश्वविसेष ॥ जातिकुलबलरूप जएतलापदनइं विषइ द ११६
सचउभंगी प्रकर्षनी ॥ दसदाष्टांतिकचउभंगी ॥

जइ० ॥ परनइं परिसवुं ॥ सीहत्ताए० ॥ सीहनी परिइं सूरपणइं घरथकी नीकल्यो अनइं ॥ सीह० ॥ उद्यतविहारीपणइं ॥

वसंपन्ने ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं० जातिसंपन्ने नाममेगे णो रूवसंपन्ने ४ चत्तारि कं
थगा पं० तं० जातिसंपन्ने नाममेगे णो जयसंपन्ने ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं० जातिसं
पन्ने ॥ एवं कुलसंपन्नेण य बलसंपन्नेण य कुलसंपन्नेण त रूवसंपन्नेण य ४ कुलसंपन्नेण त
जयसंपन्नेण त ४ एवं बलसंपन्नेण त रूवसंपन्नेण त ४ बलसंपन्नेण त जयसंपन्नेण त ४ सव्व
त्थ पुरिसजाया पडिवक्खा चत्तारि कंथगा पं० तं० रूवसंपन्ने णाममेगे णो जयसंपन्ने ४ एवा
मेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं० रूवसंपन्ने नाममेगे णो जयसंपन्ने ४ चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०
सीहत्ताते नाममेगे निक्खंते सीहत्ताए विहरति सीहत्ताए नाममेगे निक्खंते सियालत्ताए विहरति
सियालत्ताए नाममेगे निक्खंते सीहत्ताए विहरति सियालत्ताए नाममेगे सियालत्ताए विहर
इ चत्तारि लोगसमा पं० तं० अपइट्ठाणे नरए जंबुद्दीवे पालते जाणविमाणे सव्वट्ठसिद्धे म
हाविमाणे चत्तारि लोगे समा सपक्खिं सपडिदिसिं पं० तं० सीमंतए नरए समयक्खेत्ते उडुवि

सिंघनी परिइ विचरइ घरछांडीनीकल्यो अनइ ॥ सीयालनी परिइं दीनपणइ विचरइ ॥ इम चउभंगो ४ ॥ पुर्वइ प्र
रूपनइं अस्वादिक संघातिइ जात्यादिक गुणइ करी सरिखाई कही ॥ हिवइ अप्रतिष्ठानादिकनी प्रमाणथकी स
रिखाई कहइ छइ ॥ लोगसमा० ॥ सरिखा ॥ पालकनु देवकोधकं सोधर्म इ संबंधी कं थ्यान तेहज विमान ॥ अ
घवायान० ॥ जंबु तेनीधंकिरादिनइ वातेणइ विमानइ वसी जाइ ते यानविमान ॥ वेत्तारि लोके समा० ॥ व्या

रिवाना लोक नइ विषइ समाप्त कहइ छइ ॥ सपरकं ० ॥ पक्षपासां तत्ताइम रिषा एतलइ दिसनइ विषइ सरिषा तेसारषत्नुं नही ॥ सवार्थसिद्धि विमान ॥ सपडिदिसं ० ॥ विदिसइ सरिषा पुत्रलानइ सा कुडा जेथस्यइ तेऊ पराक्र परिरहइ तिवार अथवा परिमाणइ सरिषा वस्तु आघोपाछो रहइ तिवारिइ दिसि विदिसिइ सरिषानऊ इ तिमणि अतितसरिषा पणु उत्तरावानइ ए विसेषपणा कह्या ॥ पिहिला नरकनइ विषइ पहिलइ पाथडइ ४५ लाष जोजन प्रमाणु सीमंतक नामइ इंद्रक नरकावासो पहिलो ॥ समय ० ॥ कालसहित तेताइंस तिम्रोत मनुष्य क्षेत्र ॥ पहिलइ देवलोकि पहिलइ परतरइ ऊडु नामइ विमान ४५ लाष जोजन तेनुं पहिलुं इंद्रक विमान ॥ ईष

माणे इसीपब्भारा पुढवी उड्ढलोगे णं चत्तारि बिसरीरा पं तं पुढविकाइया आउवणस्सइ उराला तसा पाणा अहेलोगे णं चत्तारि बिसरीरा पं ते एवं तिरियलोए वि ध चत्तारि पुरिसजाया पं तं हिरिसत्ते हिरिमणसत्ते चलसत्ते थिरसत्ते चत्तारि सेज्जपडिमाओ पं तं

तथा ऊरत्नप्रभादिकनी अपेक्षाइ प्राग्भार ० ॥ ऊर्ध्वपणादिक छइ ये हवं तेइ षत्प्राग्भार ॥ आठ पणिपोहोलपणि इ एतलइ रत्नप्रभा सर्षकी नान्ही ॥ ईषत्प्राग्भार तो ऊर्ध्वलोकि इ छइ तेउर्द्धलोकना प्रस्ताव माटइ आगल्युं सूत्र कहइ छइ ॥ बे सरीरा ० ॥ एक प्रथवीकायनुं सरीर २ ॥ बीजुं तत्र आगलि सविइं मनुष्यपणा सिद्धात सरीर ॥ तिवारपछी कोइ एकाभासिज्जइ ॥ तिसतणो बीजुं सरीरन घरी ॥ इम अपकायो वनस्पतीकायो ॥ उराला ० ॥ स्थूल त्रसप्राणी ते बेइंद्रियादिक । हिवइ तेऊ वाऊ अनइ विगि लिंद्रीमां हिली नीकली अनंतर सविइं मनुष्यपणा सिद्धात जाइ ते तेणीइ हां उदार त्रसप्राणी ते बेइंद्रियादि ग्रा नइ तेउ हिवणिं पवें बीउ अहिवा ॥ ३ ॥ तो बेसरीरा कोइ एक होइ ॥ के ऊर्ध्व ० ॥ विगलाललिऊ विरइ ॥ नकिंचन लसिज्जासुऊमा तस्ती ॥ ३ ॥ तिर्यग्लोकना अधिकारथकी ॥ तिरिछा लोकना ऊपना ॥ पुरुषजातक कहइ छइ ॥ हरीसत्ते ० ॥ लज्जाइ करी । परिसहसम रूवानइ काऊइ । अथवा रणांगणानइ विषइ ॥ सत्त्व ० ॥ सत्व जेहनइ । ते ह्रीसत्व ॥ हरीमणसत्ते ० ॥ कुऊ तमकुल जाति रथि लोक हस्यइ एहवी लज्जाइ करी मननइ विषइ । पणि कायानइ विषइ नही एहवऊ सत्व छइ जेहनइ ते ह्री मनःसत्व कायानइ विष

ते लो अभिग्रह हालइ नइ पालइ एहवुं देषाडवानइ सूत्र ४ अभिग्रहनां कहइ छइ ॥ पहनइ विषइ । सूई एतत्सज्या तेसंथारू तेहना प्रतिमा ० ॥ अभिग्रह तत्सज्या प्रतिमा तिहां ॥ उद्दिष्ट फलकादिक माहिलुं अमुकुं पदास पणि अन नइ नहीं लिऊं ॥ १ ॥ पपुवेइ ऊहिऊ छइ तेहोज जो देषीस तो लेइस पणि अनेरूं नही ॥ २ ॥ तद पणि जो तेहोज सय्यांतरघरि हस्यइ तउ ग्रहीश ॥ अनेरानाघरनुं आणी नइ सुईस नही ॥ ते हिवलो फलकादिक जो यथासंथा रिउ हस्यइ तो लइस अन्यथा नहीं ४ ॥ एहमा हिला धुरिला २ प्रतिज्ञानइ विषइ गछनिर्गत अभिग्रह करइ ॥ आ गली २ प्रतिज्ञामइ विषइ । अनेरा साधु अभिग्रह करइ ॥ अनेनेरे गछमां हिला साधु ४ प्रतिज्ञानो अभिग्रह करइ ॥ वत्थपडिमा ० ॥ वस्त्र ग्रहवानी प्रतिज्ञा ते अभिग्रह ॥ कपासीमा हिलुं अमुकउ वस्त्र जाचीस ४ पाय

चत्तारि वत्थपडिमाओ चत्तारि पायपडिमाओ पं चत्तारि ठाणपडिमाओ पं चत्तारि सरीरगा जीवफुडा पं तं वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए चत्तारि सरीरगा कम्मुम्मीसगा पं तं उरालिए

पडिमाउ ० ॥ काष्ठपात्रादिक अमुकुं एक याचीस ॥ १ ॥ जे देषीस ते याचीस ॥ २ ॥ दातारनुं पोतानुं लागविलबे त्रिलिपात्र मांहि फिरतउ लोगवीनु याचीस ३ ॥ पपात्र नापीनुं हसइ ते याचीस ४ ॥ ठाणपडिमाउ ० ॥ काउसग्ग दिकनइ अर्थइ ठाम तेहनइ विषइ ॥ प्रतिमा ० ॥ अभिग्रह ॥ तिहां अमुकुं अचित्तठाम आश्री तिहां संका वनप मालादिक करीसि । तथा काई एक अचित्तभीत्यादिनइ कोठिगासि तिहां थोडो पगसालवादि करीसि ॥ १ ॥ संकोच न प्रसारणादिक क्रिया करीसि तीत्यादिक ऊठींगीसइ पणि पग नही वलावुं ॥ २ ॥ संकोचन प्रसा रणकरी सिपणि ऊठींगवउं अनइ मगनुं वला विवुं ए बेन हीकरूं ॥ ३ ॥ ए ऊपी विषइ त्रिनिइ वाना नही करूं ४ ॥ अनंतर सरीर रपिष्टा नुं रूपि वु कहिऊ ॥ हिवइ सरीरना प्रस्ताव माटइ वली आनरूं कहइ छइ ॥ सुत्र २ ४ सरी जीवफुडा ० ॥ जी वइ व्याप्यां ते बिकीयादि ४ इहां ऊदारिक नकहिऊ ते की ॥ ऊदारीक मुआ पछी पणि सरीर पडिउ हसइ ॥ अनइ ए ४ जीव विना होसइ नही । एणाइ स्वरूपइ सरिषां ४ ए ॥ तेसणा ऊदारीकनग्रहिऊ ॥

ठ विषइऊ क्रीटकपा दिसयना विक्रदेषा ऊरवाथकी काप्राइस वहि ... हो ... सहादिक करीपरुषा थकी अधि रभ छइ ऊऊहनुत वलसत्व बुगमहा दिकइन्हा गइलिते इससत्व ... नरथिस यकहि

११९

धा॥ सरीर॥ कम्मुमीसगा०॥ कर्मिइकरी मिश्र छइ॥ जिम अदारिक वैक्रिय आहारक माहो माहिं मिल्या छइ पणि एकठां नथी
तिमकामेणनसही॥ ७॥ कार्मण पणि रिसुं तलोलीसा वछइ। एसरीरकर्मि करी फरस्यो कह्यो॥ हिवइ फरसवाना प्रस्ताव थकी सु
त्र रूकहइ बइ विउ अस्ति काथि लोकप्रादेस २ प्र तिइ॥ फु डे०॥ फरस्यो तिथ्यो॥ ४॥ बादर काय अप जनइ॥ लोकफ
रस्यो॥ इहां तेजकाय नथी तेतला माटइ॥ जे बादर तेजकाय फरस्यो पणि सर्वलोक न हो तिसणे ५ बादरकायम
थी॥ बादर प्रथवीपाणी वायवनस्पती तेसुक्ष्म सर्वलोक थकी नी कली रत्न प्रभादि घनोदध्यादिक नइ विषइ॥ रजुआ
दिक गति इकरी रूपजतो अपर्याप्त वस्थानइ विषइ प्रत्येक सर्व फरस्पइ॥ भावदि न रहित॥ अनइ एपर्याप्त वस्थानो
घा बादर तेजकाय अनइ त्रसलोक नो असंख्यात मो भाग फरस्पइ॥ बावसु क्ष्म सर्व लोकमाहिं घामरानइ। ए
रि बादर माहिं रूपजवानइ वाटइ वहे तां सर्व लोक फरस्पइ॥ एणइ ५ लोक फरस्यो कह्यो॥ ते लोक ना प्रस्ताव थकी
लोकमाहि लोवस्तुनी सरिखाई कहइ छइ॥ पएसये रात्तेइत्तो०॥ प्रदेसमहि अमां ताइ तुल्य एस घला ए असख्याति
विउचित्र आहारते तमते वक्कहिं अस्तिगाएहिं लोगेफुडे पं तं धम्मस्थिकाएणं अ
धम्माच्छिकाएणं जीवस्थिकाएणं पोग्गलस्थिकाएणं वक्कहिं बादरबोंदरे कालेहिं जमव
छमा लोहिं लोगफुडे पं तं पुढविकाइएहिं आउ वाउ वणस्सइकाएहिं वक्कारिपएस
ग्गेणं तुल्ला पं तं धम्मच्छिकाए अधम्मच्छिकाए लोगागासे एक जीवे वक्कद्दामगा
प्रदेसातेतला २ छइ॥ पुविहिं प्रथिव्यादिकइ लोक फरस्यो कह्यो ते प्रथिव्यादिक ना प्रस्ताव माटइ वली आनरूं कहइ छइ
वउ रू०॥ आरनुं सरीर॥ तेसु बसंस०॥ एकलुं कंडी परि दृष्टि गोचर निआवइ॥ पृथ्वी॥ पाणी॥ तेउ॥ वनस्पती॥
ते बादर निगोद जाणवा॥ बादर वायनइ पांचसुक्ष्मनासरीर अनेक अथवा अनेक मिलइ तो दिनदीसइ तेतणो तेक
ह्यो व्यापिकस्या॥ अनइ वनस्पती इहां साधरणग्रहिवी॥ हिवइ प्रथिव्यादिक सरीरनुं आ घिननइ अगोच
रपणुं कहिउ॥ ते प्रस्ताव थको इंद्रीनुं स्वरूप कहइ छइ॥

११८

इंद्रियत्था०॥ इंद्रि इंइ करीनइ जाणीइ ते इंद्रीयार्थ सब्दादि ते॥ पुट्ठा॥ इंद्री संघातिइं फरस्या थका॥ वेदंति॥ जाणी
इ॥ नयन मन वर्ज्या ते हनो विषय मन फरस्या ईजाणइ तेसणे॥ एजीव पुद्गल जुइं इंद्रिय [illegible] हारिकरीया
हे कनइ ग्राह्य परणुं कहिउं॥ हिवइ ते हनो गतिधर्म कहइ छइ॥ जीव पुदगल थको अन्य वस्तु नइ गतिन थी तेस
णी बेयहा॥ वक्कहिं॥ व्यातिप्रकारि जीव पुदगल॥ नोसंचाएति०॥ नसकइ॥ ब हितालोगं ताओ॥ लोकां तथको बाहि
र एतलइ अलोकमाहि इ॥ गमणाय०॥ अई॥ गति अस्लावेणं०॥ अलोक माहिं जावानो गति नथी॥ सहजि इंजु
खलाघ एहवो॥ जिम दीवानो सिखा नो स्वभाव ऊंचो ऊठीन जाइ १ निरूवग्गहता ते०॥ धर्मास्तिकायनई अभावइ उ

रंतासु पएसंसवत्ति तं पुढविकाइयाणं आउ तेउ वणस्सइकाइयाणं वक्कारिइंदियत्था पुट्ठा
वेदेति तं सोतिंदियत्थे घाणिंदियत्थे जिब्भिंदियत्थे फासिंदियत्थे वक्कहिं गाणेहिं जीवा य
पोग्गला य णो संचाएति बहिता लोगंता गमणताते तं गतिअस्लावेणं णिरुवग्गहत्ताते
लुक्खताते लोगाणुस्लावेणं वक्कविहे णाए पं तं इनसकइ जेतणो ते विना गति नइ आधार कारण
छइ॥ जिम पांगलो कांई वस्तुना आधार पाषइ हीडी न सकइ॥ २॥ लुक्खताते०॥ लुक्ख पणा इ करी वेलुनी मुठीनी
परिइ अलोकमाहिं जई न सकइ॥ जेतलो लोक नइ अंतिपुदगल लुखा थइ जाइ॥ जिम कर्मना पुदगल जीवइ आगलि
न जाइ॥ अनइ जीवे पणि कर्म आगलि न जाइ॥ तिम स्वभावइ ऊ लोक बाहिरि जावानो गति नहीं॥ जउ जीव कर्म
आगलि न जाइ तो॥ सिद्ध कर्म रहित छइ। ते अलोकमाहिं कां न जाइ॥ तिहां हेतु॥ लोकमाहिं पणि जीव गति ते
कर्मनइ आधारइं करि छइ। अनइ सिद्ध तउ कर्म रहित। ते हनइ लोकमाहिं गति नहीं तउ अलोकमाहिं किम जात॥ ३
लोगाणु०॥ लोकानुसाविन०॥ लोकनी मर्यादाइं अलोकमाहिं जई न सकइ॥ जिम सूर्य नुं मांडलुं पोताना विषयमाहिं
ज गति करइ॥ पणि अन्यत्र नहीं॥ तिम लोकनइ रूंलघी अलोकमाहिं न जाइ ४॥ अनंतरो क्त अर्थ जे छइ॥ ते हेतो
दृष्टांतइं ही यइ बिसइ ते तणा दृष्टांत कहिवानइ सूत्ररूपक कहइ छइ॥ वक्कविहे णाए पं तं०

उ कंच॥ पुढ
व्यणस्सइं।
वकं पुणपा
सइ अपुवं
गंधरसेय
फासस्स।
बुध पुदगल
य गति।

MEMORIAL

तिहां जाणीइ एहनइ विषइ ते ज्ञान। ज्ञान ते दृष्टांत। तिहां एक मधर्म्मीक दृष्टांत। जिम ईहां अग्नि छइ जे भणी धुंयाडो छइ॥ बीजो अग्नि सरिषो दृष्टांत। अग्नि नथी ते भणी धुंयाडो नथी॥ जिम जलाशय मां हि धुंयाडो नही॥ आख्यायन कदृष्टांत विक्रांत दिई॥ एक चरित्र जिम निपाणुं तेउपनुं कारण अभिदत्तनी परि॥ बीजो कल्पित। जिम महवेत नइ यौवन अनंत छइ। इम कहिवउं॥ तथा जिम पांडुपत्रि इं कुसुमनलिन इक हिउं॥ जह तुम्हे तह अम्हे॥ तुम्हे वि य होहीहा जहा अम्हे अप्पाव्हइ पडंतं॥ पडुयपत्तं किसलयाणं॥१॥ अथवा श्रीनत उपमा। जिम एहना हाथ सुकुमाल जपनीनी परि इत्यादि॥ अथवा ज्ञान०॥ युक्ति जे भणी ज्ञाननुं हेतु छइ ए॥ जिम केणइ एकइं पुछिउं॥ जव मुल्यइ कील्यो॥ तिवारि आगल्यो बोल्यो॥ सुकरी एकाक टनुथीला सता। इत्यादि॥ हिवइ ते ज्ञानना च्यारि भेद कहइ छइ॥ आहरणं०॥ अप्रसिद्ध जे अर्थ ते प्रसिद्ध करानइ प्रतीतनइ विषयइ आणीइ ते आहरण। यथाधापात उपनुंकारण॥ अभिदत्तनी परि॥ आहरण। तद्देसे० जिहां दृष्टांतनइ अवयवइं करी दार्ष्टांतिकसुं उपमा मेलीइ॥ तद्देसोदाहरण जिम एस्त्रीनुं मुषचं

आहरणे आहरणतद्देसे आहरणतद्दोसे॥

द्रमा सरीषुं इहां चंद्रमानइ विषइ सौम्यपणुं छइ॥ एगुणरूप अवयवइं करी मुषसुं उपमा मेलीइ। जे भणी तद्धना मुष विषइ नयणना सर्वकलंक रहित छइ॥ आहरणतद्दोस०॥ एहीज आहरणनउ सा क्षीत। अथवा प्रसंगि तज दोष ते आहरणदोष॥ जिम कोइ एक कहइ कुंस वधी असत्य परिहरुं॥ जिम गुरूनां मस्तक कापवानी परि॥ जिम गुरूनुं मस्तक वाढइ तिम असत्य सर्वथा न बोलुं॥ एस दोष दृष्टांत॥ अथवा जेवा न करतो सपाप बोलइ॥ जिम लोक कहइ॥ साकु आधक्या वा विकुडी॥ सुविधी जाग रूडउ॥ सा पुत्र धीसुं मरूडुं॥ इत्यादि एस दोष दृष्टांत॥ अथवा नारद वत्॥ एदृष्टांत सदोष॥ एतला माटइ जे साक्षात लाहारनइ पुत्र यागादि संसारना कर्म तिहनइ विषइ। धर्म नी प्रतीति उपजइ ते भणी॥ जिकेणइ एकइ बुधिवंतिइ आज गमीया मुं॥ जिम केणइ एकइ आमबास्यां। घोडानी पायो ति प्रतिनी पज्जावण हारा इथिर। एणइ करी जग नउ नीपजावणहार ते कुंभार सरीषो थया उ॥ ११८

उववन्नासोवणए०॥ वादीनाइं प्रश्नमां धवानइ कामइ। वस्तु थाप्यइ थइं नइ। ते विघटावा नइ काजिइ प्रतिवादी विरुद्धार्थनउ दृष्टांत मलइ ते उपन्यासोपनय॥ जिम केणइ कहइं कहिउं। आत्मा कर्मनो कर्त्ता नथी। जे भणी आत्मा अरूपी छइ आकासनी परिइं तिवार आगल्यो बोल्यो। जो आकास सरिषो आत्मा तो सुषदुषनो भोक्ता पणि आत्मा नही। इम ताहारुं वचन विघटिउं। अथवा जिम केणइ एकइ कहिउं मासषातां दोष नथी। यत भणी प्राणीनुं अंग छइ॥ जिम गाइनुं दुध ते प्राणीनुं अंग छइ॥ ते जिम षाहीइ पीजीइ। तिम ते षाईए॥ तिवारि आगल उ बोल्यो। जिम अन्न जिम तां दोष नही। तिम षातां नादिकि रानुं पणि मास षातां दोष नही॥ अथवा जिम कोई एक कहइ जीतीत वस्त्र आत्रनो संग्रह न करइ॥ सम नादेवनी परिइं॥ तिवारि आगल्यो बोल्यो॥ जो ऋषभदेवनी परिइं अप्रव त्रिवुं तो कंम डलादिक पणि न साहवुं॥ तथा पुरुष कर्मको करइ। जे भणी धननो अरथी छइ ते माटइ षइहोपिहिलुं

उववन्नासोवणए। आहरणं चउव्विहं पन्नत्तं अवाए१ उवाए२ ठवणाकम्मे३॥

ज्ञान ते ज्ञान सिद्धांत सरिषुं॥ बीजुं ते देस थी सरिषुं॥ त्रीजुं ते सदोष। व उथुं ते वादीनइ उत्तर रूप॥ हिवइ एहना प्रत्येक ना भेद कहइ छइ॥ अवाए०॥ अपायना च्यार॥ द्रव्य थकी जीव शिवदत्त॥ बिहु भाई एं वासणी अनर्थनुं मुल जाणी द्रहमां हि नाष्या॥१॥ क्षेत्र थकी अपायनुं कारण॥ सत्यादिक जाणी यादव द्वारिकापुरी छोडी द्वारिका गया॥२॥ काल थकी द्वारिकाना विनास जाणी तप की धन केतलइ दी हाली धी॥३॥ भाव थकी कृपायदंडचंडा कोइक क्रोध पाइउ जाणी क्षमा आणी॥ इहां ए सुत्र क गुरूइं उडकी षाथी ते कथा॥४॥ उपाय ना ४ प्रकार॥ द्रव्य थकी सुवर्णादिक उपाय॥ उपावानी परिइं॥ क्षेत्र थकी उषिहलादिक परिक्रम॥२॥ काल थकी घडीयाला प्रमुष कालनुं जाणवुं॥३॥ भाव थकी अभय कुमारिइं अनी बालावार चंडालप्रगट कीधो ते उपरिइं द कुमारीनी कथा कहिवइ चोरादिकाना भाव जाणिउ अभयकुमारिइं तेहनी परिइं॥४॥ ठवणाकम्म०॥ स्थापवु ते स्थापना॥ तेहना कर्मनुं करिवुं ते स्थापनाकर्म जेहनइ दृष्टांत इकरी परमत दुषवी स्वमत स्थापीइ ते स्थापनाकर्म ज्ञान। अथवा पोतानु दुष णडि हां टालवानइ पोताना मतनी जिहां स्थापना कीजइ। जिम कोएक माली राजमारगिइं फेरइ गया ते अपराध टालवा ते उपरि फुलनो ढग कीधा॥ लोकि पुछि उए स्युं॥ इस्युं गीदेनो लोकि उजाकीधी॥ एस्य स्थापनाकर्मज्ञान॥३॥

पडुप्पन्नविणासी ०॥ अत्र सूत्र० उपजतो अपाय टालवुं॥ जिम व्यवहारीइ बेटी प्रमुख सुंदर तेहनुं सील राषवा
सणी घरि कुलदेवता आगलि नाटक मंडाविउं। ते सणी राजानइ घरि नाटक हुं उ जाणिउं तिहां जावा नासइ तो र
षइ सील संगाथाइ ते सणी॥ अनइ आज निज घरि उछव कहीइ राजा आगलि निरुत्तर थया॥ इम गुरुइ सिष्यनइ आगलि प
ण अवगुण ऊपजवानुं कारण टालवुं। ते प्रत्युत्पन्न विनासी ज्ञात ४॥ ए आहरण कहिउं॥ हिवइ आहरणतद्देस कहि
इ छइ॥ अणुसट्ठि० सत्गुणनइ कीर्त्ति वधइ करी॥ आगलि स्वानां गुण जिहां थाइ सवी इ ते अनुशास्ति जिम सुभद्राइ त्रि(?)
त्यालि उघाडी। लोकि इ अहो सीलवंती कहो प्रसंसा ए आहरणतद्देश ज्ञात॥ इहां उपदेस पणु तेइ म॥ अणुसट्ठि
०॥ सुभद्रा लोकिइ प्रसंसी एतला उमात्र लाभ पण॥ गुणु काढिउं संबंधि सर्वत अपंडित अधिकार माटइ कहिउं॥१॥ उ
वालंभे० तिहां गुरू सिष्यनइ सीष देवानइ काउइ उलंभो दीजइ॥ जिम मृगावती आर्यानइ चंदनबाला आर्याइ इंडदी
धो॥ उलंभो ते कालज्ञाणि नही॥ उलंभो तद्देस २॥ पुछा० प्रश्न॥ जिम सगवंतनइ कोणीकिइ पुछिउं स्वामी नरमरी
किहां जाइं। सगवंतिइ कहिउं सातमी नरगि जाइ॥ तो हुं किहां जाईस। छठीइ॥ सातमीइ कां न जाउं। स्या मा कहि चक्रवर्त्ति जाइ

पडुप्पन्नविणासी आहारणतद्देसे चउव्विहे पं० तं० अणुसट्ठे उवालंभे पुच्छा णिस्सावयणे ४ आहारतद्दोसे चउव्विहे पं० तं० अधम्मजुत्ते॥१॥

उं चक्रवर्त्ति नहीं स्युं ताहुं॥ रत्न निधान नथी॥ पछइ उत्तमरत्न करीनइ। सर तसाधतां उतमाली देवताइ गुफानइ बारणइ
मार्‍यो छठी मरणि इ गयो॥ सगवंतनइ पुछिउं प्रश्न ते देवाइ॥ निस्सावयणे०॥ जिम सुसिष्यनइ उदेसी। अनेरानां प्रतिबो
धनइ अर्थइ उ बोलवुं ते निश्रावचन जिम क्रोधी सिष्य जाणी। क्षमावंत सिष्यनां गुण वर्णवइ क्रोधीनइ संभलाविनइ
अथवा जिम गोतम उदेसी उपदेस देता अनेरानइ। पणि उपदेस दीधो॥ गोतम आश्री कहिउं ते देसपणुं बाकी स
र्व एहनो परिकर॥ ए आहरणतद्देस कहिउं॥२॥ हिवइ आहरणतद्दोस कहइ छइ॥ अधम्मजुत्ते० उदाहरणतक हितां सांभ
लणहारानइ अधर्मनी बुद्धि ऊपजइ ते अधर्मयुक्त॥ जिम नलदाम कोलीना दीकरानइ मांकोडइ करडिउं॥ मांकोडानइ
मारणि इ बिलखाणानइ उत्तमोद करइ करी सर्व मार्‍या॥ इत्यादि॥ चाणाकीइं काटवाल स्थाप्या उपाय करी स्वार एक गामल्या
विषमिश्र आला उनदेई सर्व मार्‍या॥ एक घा मांसलतां श्रोतानइ अधर्मनी बुद्धि ऊपजइ॥ ते सणी ए अधर्मयुक्त आहर १२०
णतद्दोषज्ञात॥ एयतीइं एहवा दृष्टांत न कहिवा॥१॥

पडिलोम०॥ जिहां प्रतिकूल पणुं कहीइ ते धुर्त्त साधु इ धुर्त्त थावउ॥ एहवुं कहीइ जिहां ते प्रतिलोम॥ जिम चंद्रप्रद्योतइं अ
भयकुमारनइ अपहरिउं॥ [illegible] नइ तेहनो पणुं एतला सणी। ते दृष्टांत सांभलतां श्रोतानइ इम करवानी बुद्धि ऊप
जइ ते सणी सदोष॥ [illegible] एहनइ सदोष पणु ते उसूत्र मांटइ॥२॥ अत्तोवणए०॥ [illegible]
त्यातात्मा नाहि आवइ ते अ[illegible] जिम राजाइं पिंगलक नामा सुतार पुछिउ एतलाव अवतुं किम रहइ। तिवारिइ
पिंगलइ कहिउं। बोलीस लक्षण पुरुष उडाटीइ तो अवतुं रहइ॥ राजाइं कहिउं तुं ज ग्राछइ॥ प्रधान कहिउं राजा तुं किएक पिं
गल। तमारी तिहां डाटो। ए आत्मोपनीत ४ दुरोवणीए०॥ दुःपणइ बोलीइ। ते दुरुपनीत जिम कोइ एक प्रव्राजक॥ जो ल
साही मा बलानइ बोलो॥ कांपाइ एक इ धुर्त्तइं बोल्या वो। तेणइ अस्तेउ मक तरदीधो॥ ते किम॥ तन्ननइ डालसुं॥ अ
स्नेता माच्छ्ना खाउ॥ तखाउ मद्यसहित॥ मद्य पीउ॥ वेस्यागमनसहित। तस्करा चोरी सहित। चोरी करा। ए बुट्टा सु

पडिलोमे अत्तोवणीते दुरोवणीते उवन्नासोवणए चउव्विहे पं० तं० तव्वत्थुते तदन्नवत्थुते पडितसे

हेतु॥ कुलीनता इम न करइ। तक हइ हुं तादासीसुत छउं॥ ए दुरूपनीत वचन ४ आहरणतद्दोष कहिउं॥३॥ उप
न्यासोपनय कहइ छइ॥ तव्वत्थु०॥ तेह जि ते वस्तु ते तइ वस्तु॥ वेणइ कांइ युक्त दृष्टांत नुं घापिवुं॥ ते तद्वस्तुकउ
पन्यासोपनय ज्ञात॥ जिम कोइ एक इं कहिउं॥ जलनइ कांठइ वडरूष छइ। जेहनां पानडां जलमांहि पड्यां ति
हनां जलचर जीव नीपना॥ थलि पड्यां तेहनां थलचर जीव नीपना॥ डाहो कहइ॥ विचइ पड्यां तेहनुं सुं नीपनुं इत्यादि
हेतिइ निराकाध्यो १॥ तदन्नवत्थु०॥ ते एकी अनेरुं उत्तर ते तहेउ [illegible] तो कोइ एक घाइ तथा बोलइ॥
तुघा अनेरइ गामिइं मुंकइ। तेहनुं सुं नीपजइ। तिवारिइं तेणइ उत्तर मकइ॥ पडितत्ते०॥ धुतारा संघातिइं धुर्त्तखावुं॥
जिम कोइ एक धुर्त्तइं [illegible] कहइ [illegible] तेहनइ एकठो अ पुं॥ तिवा
रिइं जवातक [illegible] एवा तजाणुं छउं॥ इम कही घणो कोडि जीपी। तिवारिइं अनेरइ धुर्त्ति मिल्या। तकरइ
॥ उघ्र पियाम प्रिंडिक॥ धारई अणुतायं सयसदेस्सं॥ जइ सुयपुव्वि दिज्जइ॥ ते॥ अह निस्सुयं मोरयं देइ॥१॥ इहां सरिषा
पणुं ते ए। ते अपुवसि सतला वाक हिउं॥ अनइ अपुवसिं सतला मुंए॥ एहनइ शीनपणुं जाणवुं॥३॥

हेऊ० केणाइ कइ श्रुत्वा[illegible]उं॥ तो पहुतर करिइं ते हेतुं॥ जिम केणाइ एक कइ पुछिउं जीव मुलिइ कांल्यो। आगलि आक
हइ फांसुं नथी मलतां तेणइ कारणइ लीउं छइ॥ तथा केणइ एक कह्युं कि॥ ब्रह्मचर्यादिक कष्ट कां करो तेन करीइ
तो नरक मांहु पड्यां मवा पडिइ। कोइ एक कहइ कि उं दीक्षा कां लीउ कां पालो दीक्षा॥ तस्मात् सुख कहइ सु करीइ दीक्षा विना मो
क्ष न पांमीइ ४॥ एपुर्वोक्ति ज्ञानइ छिअइ॥ अनेराइ विसंवाद छांते संसवइ छइ तेनथी नकह्यो॥ तेहमां छिउं आव
तेरइ॥ अथवा सम्यग्प्रकारि इं अहित जाणतां नथी॥ एउपन्यासोपनय कहिउं ४॥ एज्ञानकहिउं॥ हिवइ ज्ञानवंत
हेतुक हइ छइ॥ सुत्रथी हेउ चउविहे० पं०॥ जायए०॥ दिनादिकालना विलंब करइ। तथा पक॥ तेकोइ एक अ
सताइं सत्तरि नइ कहिउं। ऊजेणी इ आउ। आकंदनां लीडा रूपेइ रूपेइ वेवहुत्तो॥ गाथा। इमकालनो विलंबकरावी
। इच्छाइ प्रवर्त्ती। एकाय पापना ॥१॥ थावए०॥ जेएपक्षथापइ। तेस्थापक॥ जिमप्रव्राजिक धुर्त लोकनइ कहइ॥
जेलोकनामध्य भाग विषइ छइ म हीधुं बकूफ लहीयक कूइ॥ इमग्रामग्राम प्रति लोकनो मध्य देखाडतो हींडइ॥
कोएक श्रावक कहइ। लोकनो मध्य तो एक जंठां मिजाइ। ठामि २ किम देखाडइ छइ॥ इम निरुत्तर करी लीधुं छेवी

हेऊ ४ हेऊ चउव्विहे पं तं जावते थावते वंसते लुसते ४ अथवा हेऊ चउव्विहे पं तं

पोतानो पक्ष थाप्यो॥२॥ वंसते॥ परनइ व्यामोह रूप जावइ॥ सकटतित्तिरी आइक धुर्तनी परिइं ते वंसक॥ को
एक गाडलइ छबी जातां बाटइ टइ मुई तित्तिरी लीधी॥ नगरि इ आव्यो धुर्ति पुछिउं॥ सकट तित्तिरीनुं मुल
तर्प्पणालोडिका मुल्य कहिउं। धुर्तइ साखी आ कीधा॥ गाडलु लेतां सागडी मांनापइ॥ धुर्तइ साखी आ कहा व्या॥
गाडलुं लीधुं सागडी विषवाद पाम्यो गयो॥ तेआगल्या नइ व्यामोह तत्र मपाही लीधुं ते वंसक॥ लुसए०॥
जिवंसक त्री जइ त्री अइ हेतइ जेठेतरां णो छइ तेवला प्रपंचइ करी। वंसक पालीया नइ छेतरी टालवोलइ
ते लुसक॥ तेसाकटी मेंइ कोइ एक धुर्तनिइ कहिउं तेणइसी षव्यो। तापला धुर्तकिने आव्यो॥ कहिउं [illegible]
[illegible] माहरी तर्प्पणालोडिका सकट तित्तिरीनुं मुलमागीइ छइ ते आपि॥ धुर्तइं ता स्वनिइ कहिउं॥ एह
[illegible] नइ सानु आपणीइं [illegible] प्रहलालीआपि॥ तेसानु अहलावती जसागडी इग्रही। इमकां ए

तो माहा रा। जेम लो तिइं न पं लालोडि का०॥ सानु ओहला व ती तिइं आ पवी कहा जई॥ तप्प ला०॥ सानु ओ तेह न इ हला वइ ते नप्पणि ला डिका॥ इम कहीं टालवो ली एलुस क॥४॥१॥ अथवा हेउ॥

पच्चरके०॥ इंद्रीनाप्रयोग विना जे अवधि ज्ञानादिकइं करी जाणीइ॥ अणुमाणे०॥ धुमइं करी जिम अग्नि जाणीइ॥ उवमे०॥ जि
मउपमाइं करी जाणीइ। जिमगाय्य तेमा मा वउपद॥ अनइ गो०॥ बलद बकुसरिषा॥ तेगवि त्रिबलद जाणइ॥ आगमे०॥
सिद्धांतइं करी जाणीइ॥ अहवा हेऊ चउ०॥ अत्थितं अत्थि सो हेऊ०॥ जउइ हो धुम छइ। तो अग्नि छइ॥ अथितं णत्थि सो हे
ऊं०॥ जो अग्नि छइ तउ ते थी विरूध सीत नथी॥२॥ नत्थितं अत्थिसो हेऊं०॥ जो अन्यादि नथी तो सीत छइ॥ नत्थितं नत्थि सो
हेऊं०॥ जो वृक्ष हइ समथी तो वन नथी ४॥ ए आठ वचनगाननइ अर्थ तहवा देजे नप्रमाणनइ अनुसारि इं गणा धरिइं कहिउं
छइ। एहेतु उस छइ ज्ञान विसिषक हिउं॥ तेप्रस्तावथकी वली ज्ञाननो विशेषे संकहइ छइ॥ संख्यानो जइ एणइ करीत
संख्या ण गणित इत्यर्थ॥ परिकम्म०॥ संकलनादि गणितसास्त्र॥ इमव्यवहार पाटी मिश्रव्यवहारादिक नकलदगणि

पच्चरके अणुमाणे उवमे आगमे अहवा हेऊ चउव्विहे पं तं अत्थि तं अत्थि सो हेऊ अत्थि
तं णत्थि सो हेऊ णत्थि तं अत्थि सो हेऊं णत्थि तं णत्थि सो हेऊं चउव्विहे संखाणे पं तं प
रिकम्मं ववहारे रज्जूरासी आहलोगेणं चत्तारि अंधगारं करेंति तं णरगा १ णेरइया २
पावाइं कम्माइं ३ असुभा पोग्गला ४ तिरियलोगे णं चत्तारि उज्जोतं करेंति तं चंदा सुरा मणी जोती
उड्ढलोगे णं चत्तारि उज्जोतं करेंति तं देवा देवीउ विमाणा आभरणा चउत्थस्स तइओ उद्देसओ सम्मत्तो ३

त्या॥ रज्जु०॥ रज्जुं गणित इत्यर्थः॥ रासि०॥ त्रैरासिक पंचरासिकादिक। एच्यार भेदइ छे त्रनुं कगणितक हिउं॥ त
प्रस्ताव थकी छे त्रनु विभागकहइ छइ॥ आहेलोगे० अधोलोकि इच्यारि वस्तु अंधकार करइ छइ॥ नरक नइ नारकी
ते स्वस्वरूप माटइ अंधकार करइ छइ॥ पावाइं क०॥ ज्ञानावरणी आदिकर्म मिथ्यात्व अज्ञान रूप ते अंधकार करइ छ
इ॥ अथवा अधोलोकना अंधकार मांहि जीव नइ ऊप जावइ तेसणी पापकर्म अंधकारना कारण छइ॥ असुभा पोग्ग
ला०॥ अंधकारपणइं जि पुद्गल परिणम्या छइ ते॥ तिरिय०॥ तीछइ लोकि मणि०॥ चंद्रकांतादि॥ जोती०॥ अग्नि॥ चउ
स्थान ऊदेसो॥३॥ त्रीजानइ छेहइ लइ सुत्रइ देवता नइ देवी कह्या॥ तेतो लोगवंत नइ सुखी थाइ छइ॥ एणइ संबंधि चउथउ

उदसिंधुरलिसुत्रइं । तोगइंसुरचौ या पुरुषकहइ ठइ पसप्पगा० ॥ अतिविंवालइं ॥ वलो गमइअघेंदुदेशानुदेस प्रति
जाइ ते प्रसर्पक कहीइ ॥ अथवा आरंभपरिग्रहना विस्तारनइं विषइ पोक्त्वेइ तेप्रसर्पक कहीइ ॥ अणुपन्ना० ॥ अणुसंपना
लोगसहा दिलेहनइं कांइ । ४ न अथवा स्त्री या दिके ॥ ऊपाइन्ना० ॥ उपजा विवा ॥ अथवा अणऊपना लोगनुं ॥
उप्पाइन्ना० ॥ ऊपजीवणाहारवतउ ॥ एग० ॥ कोएक ॥ प० ॥ प्रकर्षिइं जाइ ॥ अथवा प्रकर्षिइं जाणाहारु कइ ॥ लोगीअ
२ छीछीवइमकरइ ॥ भरतईराहतांतरइं ॥ सोरितमइ गिरनिकुंजेसु ॥ कुंमारइबंधवंपिक्क ॥ पुरिसा जो कोईधणलुंचा ॥
१ ॥ पडुप्पन्नाणं० ॥ पुर्विला ऊपना ॥ वालंतरि ॥ पडुप्पन्नाणं० ॥ वर्तमान कालना ॥ लोगना ॥ अविप्पकगाणं० ॥ अ
वियोगनइं कांइ ॥ एगाय० ॥ एककोएकजाइ ॥ २ ॥ अणुप्पन्नाणं० ॥ अणऊपनासुपनइ ऊपजा विवा यकजाइ ॥ ३ ॥

चत्तारि पसप्पगा पं० तं० अणुप्पन्नाणं भोगाणं उप्पाएत्ता एगे पसप्पए पडुप्पन्नाणं भोगाणं
अविप्पओगेणं एगे पसप्पति अणुप्पन्नाणं सोक्खाणं उप्पाएत्ता एगे पसप्पति पडुप्पन्ना
णं सोक्खाणं अविप्पओगेणं एगे पसप्पति णेरतिताणं चउव्विहे आहारे पं० तं०
इंगालोवमे मुम्मुरोवमे सीतले हिमसीतले तिरिक्खजोणियाणं चउव्विहे आहारे
पं० तं० कंकोवमे बिलोवमे पाणमंसोवमे पुत्तमंसोवमे ।

वर्तमानकालनासुखनइं कांइ । एककोएक जाइ तेप्रवर्त्तइ ॥ ४ ॥ लोगनइं अर्थइं प्रवर्त्तना हारु कर्मविधघको नारक
पणाइ ऊपजइ । एणाइं सबंधिइं नारकीनउ आहार कहइ छइ ॥ इंगालोवमे० ॥ इंगालनी ऊपमाइं थोडा काल दाहनउ
उपजावणाहार ॥ १ ॥ मुम्मुरे० ॥ घणा काल माहाहमी ऊपजा वाघको [illegible] त्रासडीनाप रिइं ॥ २ ॥ सीतले० ॥ ताढिनी वेला
उपजाविवाघको ॥ ३ ॥ हिमसीयले० ॥ अत्यंत शीतवेदना ऊपजा विवाघको ॥ ४ ॥ पहिलीर मर गिइं अनुक्रमइ
जाणिवउं ॥ आहारना अधिकारघको तिर्यंचिमनुष्य देवनउ आहार कहइ छइ ॥ लोहादिक पंखीनइं हुइ ॥ आहारस
माधइ पतिणमइ एणी ऊपमाइं केतलोएक तिर्यंचनइं आहार ॥ बिलोवमे० ॥ बिलनइं विषइ कोइएक दुव्य प्रइप तो
बिलकाई सवाद न वेइ नही ॥ एणी ऊपमाइं केतलो एक तिर्यंचनइं आहार ॥ अलेकसे । मलेकसे ॥ गलोमाहि जेतानइ

पिहलो सुत ॥ बीजो असुर ॥ त्रीजो असुरतर ॥ चउथउ असुरतम ॥ व दिसप्प ॥ जोणिवउ ॥ वनमंतर० ॥ प्रसेसनी
यवस्या दिसहित ॥ आहार कहइ ते ते भावा त्यागप छइ ॥ भावानाप्रस्ताव घको आ आसी विषनुं सूत्र कहइ छइ
आसी० ॥ डाढ तेहनइं विषइ छइ जेहनइं ते आसी विष ॥ तेएक कर्मघको एक जातिघकी ॥ तिहां कर्मघकी ते तिर्यंचि
मनुष्य ॥ ते किस्या एक गुणघकी आसीविष थाइ ॥ अनइ देवतानइं आसी विष पणुं तेसहस्त्रार लगइ सापादिकइं करी
परनइं मारवाघको ॥ जातिघकी आसी विषइ ते वृश्चिकादयः ॥ हवइ ते हना विषइनउ गोचर केतलो ॥ द्दसदंत ॥ उ
तर ॥ प्रत्त ॥ समर्थ अर्द्धभरतप्रमाण एतलइ २६३ जोजनप्रमाण ॥ मिशं० ॥ एहवा मानवइ ॥ एतला प्रमाणवे ॥

मणुस्साणं चउव्विहे आहारे पं० तं० असणे जाव साइमे देवाणं चउव्विहे आहारे पं० तं० व
न्नमंते गंधमंते रसमंते फासमंते चत्तारि जातिआसीविसा पं० तं० विच्छुतजातिआसीविसे
मंडुकजातिआसीविसे उरगजातिआसीविसे मणुस्सजातिआसीविसे विच्छुयजातिआसी
विसस्स णं भंते केवइए विसए पन्नत्ते पभूणं विच्छुयजातिआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्तं
बोंदिं विसेणं विसपरिणयं विसट्टमाणिं करेत्तए विसए से विसट्टताए नो चेव णं संपत्तीए
करिंसु वा करेंति वा करिस्संति वा ।

बोंदि० ॥ सरीर ॥ विसेणं० ॥ पोतानी दाढामइ व्यासिइं करी ॥ विसपरिणयं० ॥ विषरूप ॥ पाठांतरइ ॥ विसपरिणयं० ॥
विषव्याप्त ॥ विसट्टमा० ॥ विकसति० ॥ विषइ लुसकं सरीर करवानउ ॥ विसए० ॥ विषाधि ॥ से विसट्टयाए० ॥ से० ॥ ते
वीछीनइं ॥ वि० ॥ विषइनइं अर्थिइं करी एतलो विषय छइ । नाचेवब्रि० ॥ नही ॥ संपत्तीए० ॥ एहवुं सरीर संपजा
विवानइं द्वारिइं करी कोइ नथी ॥ करता नथी ॥ करस्यइ नही ॥ इहां त्रिकाल कह्या ते एतला तणी । जे त्रिण
काल विषइ एहवा विषसहित वीछी लाभइ । पणि एहवु विष प्रयुंजइ नही ॥ एहवुं जाणवानइ ॥ १ ॥

=पाण
मसोवमे
० ॥ वांडा
लनेमांसु
ते जिम नि
दनीक अ
नइ छावाग
त्या गएक
बो तिर्य
चना आहा
र कहइ ॥ ३
पुत्रमांस०
जिम पुत्रनु
मांस स्नेह
पणइ करी
खानाहरि
लुं ॥ तिम क
तिर्यंचनो
आहार अ
तिहिंसाता
दाहिजे ते
पुत्रमांसो
वम ४ ॥

=विसट्ट०
विसइफा
टइ एतलु
विषा हाइ
ॐ ॥ अवि
सुरनो अर्थ ॥

मंडुक०॥डेडको॥उरग०॥सर्प॥सम०॥४५ लाषजोयणनुंसरीर॥विषपरिणामिइं तो व्याधिबइ ते आदिकारष
को व्याधिकहइछइ॥वाइए०॥वायषको ऊपनुं व्याधि॥पित्तषको ऊपनुं व्याधि॥संत्तिए०॥श्लेष्मा थी ऊपनउ त
व्याधि॥संनिवाइए०॥वातादिक बेत्रि तिन इंसंजोगिइं करी ऊपनउ व्याधि॥ए व्याधि कहिउं॥हिवइ व्याधिनु प
डीगरणुं वेसुत्रइं कहइछइ॥तिगिछा०॥पडीगरणुं॥विजो०॥विद्य ए पडीगरणानो १ लेद॥ऊषध॥२॥रोगी ३॥उ
वेयावच्चनो करणाहार ४॥एउ व्यारोगनुं पडीगरणुं कहिउं॥हिवइ भाव रोगनुं पडीगरणुं कहइछइ॥ नीवीनु

मंडुकजातिआसीविसस्सपुच्छा पन्नत्तं मंडुकजातिआसीविसे सरहप्पमाणमेत्तं बोंदिवि
सएणं विसएणं सेसं तं चेव जाव करिस्संति वा॥२॥ उरगजातिपुच्छा पन्नत्तं उरगजातिआसी
विसे जंबुद्दीवप्पमाणमेत्तं बोंदि विसेणं सेसं तं चेव जाव करिस्संति वा मणुस्सजा
तिपुच्छा पन्नत्तं मणुस्सजातिआसीविसे समयखेत्तप्पमाणमेत्तं बोंदि विसेणं विसपु
रिणातं विसट्टमाणिं करत्तए विसएसे विसट्ठताते नो चेव णं जाव करिस्संति वा॥ चउव्वि
हे वाही पं तं वातिते पित्तिते सिंभिते सन्निवातिते चउव्विहा तिगिच्छा पं तं विज्जो उ
(आतमारोग ... वैद्य)
सहाइं आउरे परियारते चत्तारि तिगिच्छगा पं तं आततिगिच्छते नाममेगे णो परतिगिच्छए ४
करिवउं॥वस्त्रादिक निर्मलि आहारनो लेवो॥उणोदरी करवी॥कायुसग्ग करिवउं॥सिक्षाइं समवुं॥वेयावच
करिवुं॥विहार करिवो॥सुत्रार्थनां मांडलमां बेसिवा॥इत्यादि ऊपाइ महारोग टालिवउ॥इहां सन्निकृ
तुं ऊदाहरण॥तिगिछगा०॥पडीगरणाना करणाहार॥तिउ आपषको ज्वरादिकना टालणहार॥नावषका
रागना टालणहार॥आयतिगि छइ०॥एकापातानु ज्वरादिकनुं पडीगरणु करिइ॥पणि परनुं न करइ॥ १२३

(left margin:)
गालबइ
ऊडाहषया
माटइ पणि
अनेरगाडा
लन थीत
निर्दोष बइ
अधुवा आ
यश्चित ले
इ स्नेह थयो
२ बीजइं लां
गइ ऊदाह
थयो अनेह
हो प्रलाग
३।३।चउथर
सांगइ बिऊ
नहो॥ अतो
ऊहि०एकव्र
णमां दिउह
ति मध्यकष्ट
घणुं पणि
बाहिरिउद्दा
नहो॥२।५
ऊ०७

इम चउ संगा ४ पोतानाथडीगरणानो करणहार।पडीगरणानाकरणहारनालेद इसुत्रइं कहइछइ॥वणाकरनाममे
गे०॥वर्ण०॥गुंबडु रुधिरादिक काढवानइं अर्थिइं छेदकरिइ पणि वलतुं छिद्र मेलइ नही।एउ भावषको नावषको अती
चारादिक ष तकरइ पणि टालवानउ ऊपाय न करइ॥वण०॥बीजइं अतीचारनुं कांधुरु इऊवइ पणि पातइ षत न करइ
॥२॥इम च्यारि॥बीजइं लागइ ला बीजा अतीचार टालइ पणि करइ नही संसार तयषको २ इम च्यारि॥१ वणाकर०॥
एकवणाकरइ॥नोवणसाररक्क०॥पाटी पाडीयादिकइ संलाजनकरइ॥बीजइं संलालनकरइ पणि व्रणकरइ॥२॥इम
च्यारि४॥ अतीचाररूप व्रण आश्री॥एक अतीचार करइ पणि ऊसीलादि संसर्गनुं टालिवउं॥अनइ नियाणु परिहरवुं

चत्तारि पुरिसजाता पं तं वणकरे नाममेगे णो वणपरिमासी वणपरिमासी नाममेगे णो वण
करे एगे वणकरे वि वणपरिमासी वि एगे णो वणकरे णो वणपरिमासी चत्तारि पुरिसजाता
पं तं वणकरे णाममेगे णो वणसारक्खी ४ चत्तारि पुरिसजाया पं तं वणकरे णाममेगे णो वण
सारोही ४ चत्तारि वणा पं तं अंतोसल्ले नाममेगे णो बाहिंसल्ले ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजा

इत्यादि उपाय इं करी अतीचार लागतारा षइं मही॥बीजइ नियाणुं परिहरिवादिकइं करी अतीचार लागतारा षइ तेउ
विलोकीधस अतीचार नइ टालइ।पणि भवो न करिइ॥३॥इम चउ संगो॥वणाकार०॥एक व्रणाकरइ पणि ऊ
षधादिक निइं देवइं करी व्रणनइ रूढइ नही॥एव्यारि संगा कहिवा॥इम भाव व्रणनी अपेक्षाइं।एक अतीचारक
रइ।पणि प्रायश्चितादि पडिवजवइं करी अतीचार नइ रूधइ नही॥१॥प्रायश्चितादि पडिवजवइं करी पुविलोकी भस अतीचा
र रूढइ।पणि नवा न करिइ॥२॥इम ४ ए पोताना परना पडीगरणाना करणाहार कह्या॥हिवइ वलि नइं दृष्टांतिं रूप
नातेर कहइछइ॥सुत्र॥अंतोसल्ले०॥माहि सालजतलइ ते व्रण दासइ नहीत॥नो बाहिं सल्ले॥बाहिरि घणुं दीसइ न
ही॥बाहिरि मांटि केदीसइ॥पणि अभिंतरि घाउ न हो॥३ इम ४॥पुरुष आश्री एक धुरते पणइं करी अंतरि उष॥

(right margin:)
४ बीजइ
लांगइ बा
हिरि घणुं दी
सइ पणि न
ते अंतमां
हि घणुं नही
।२॥इम ४
पुरुष आश्री
इम उरूआ
ग लिआलो
इ नसीतण
इकरी अंतो
सल्ले०मा
हि साल अ
तीचाररूप
।नो बाहि०
पणि बाहि
रि शाल नै
थी तउडा
हनथीन
थया १ बी
जइ ला ग
इ बाहिरि

पति॥ संवृत्तआकारिमा टइबाहिरिंडुस्सनहीं॥१॥ बीजो बाहिरुडुस्स तेआगल्या नइंकारणि विसे घइंकरी साषा वो
लइ पतिमा हिंडुस्सनहीं॥२॥ इम४॥ पुरूषना अधिकारथका उपुरूषुना लेष कहिवानइंखु त्र थकेरूइंथइ॥ सङ्गोसे०॥ अति
हिंप्रसंस्यां सावरूडां ज्ञानपणाथको अनइबली सेजंस०॥ अनुलाम पतिरूडा साधुनां॥ सेजंस ते तिमज॥ पावंसे०॥
अतिहिं पापीतअव्रतीसम्यगदृष्टी॥२॥ पावंसे०॥ तेअतिहिं पापी सावघकी मिथ्यादृष्टि कइकरी॥ अनइं सेजोसे
०॥ कारणाना वसथकी रूडइं अनुष्टानइं करी प्रसंस्य ऊदाईराजा मारण हारनी परिइं॥३॥ चउथइ स्त्रीं गइ तेहिइंअप्रस

थापं तं अंतोसल्ले नाम मेगणे बाहिंसल्ले ध वत्तारि वणापं तं अंतोदुट्ठे नाम मेगणे बाहिं
दुट्ठे बाहिंदुट्ठे नाम मेगे नो अंतोदुट्ठे ध एवामेव वत्तारि पुरिसजाता पं तं अंतोदुट्ठे नाम मेगे नो बा
हिंदुट्ठे ध वत्तारि पुरिसजाया पं तं सेजंसे णाम मेगे सेजंसे सेजंसे नाम मेगे पावंसे पावंसे
नाम मेगे सेजंसे पावंसे नाम मेगे पावंसे वत्तारि पुरिसजाया पं तं सेजंसे नाम मेगे सेजंसे सालि
सए सेजंसे णाम मेगे पावंसे तिसालिसए ध वत्तारि पुरिसजाया पं तं सेजंसे णाम मेगे से

व्यजिवारिइं पापकरवा प्रवर्त्तीइं तेअवस्थानुं ४॥ अथवा यहीस्थपणाइं नइं वि षइ॥ अथवा चारित्रलेवा निअवसरिइं ए
कसे जंसहुइ॥ अनइबली सेजंस ते चारित्र वि षइ अथवा विहार करवा नइं अवसरिइं। इम ४॥ सेयंसे०॥ एकलाव
थकी द्रव्यथकी अतिहिं प्रसंस्य॥ सेयंसे तिसालिसए०॥ श्रेष्ठपणानी बुद्धि नइं ऊपजा विवइं करी अनेरा नइंसं
जेस पुरूषहइ॥ सालिसए०॥ तेसरीषो पाणि सर्वथा सेजंस नहीं॥१॥ एतावघकी से जंसरूडा परिणामनी वेलाइं
अनइं पाइ अपरिणामनी वेलाइं॥ पाथंसए तिसालिसए०॥ पापऊपजावोनी बुद्धिइं करी अनेरापापी सरिषो पाति १२४
सर्वथा पापी ऊनहीं॥२॥ त्रीजइं सावघकी पापी अनइं संव्रेताकार पणाइं करी अनेरा श्रेयांस सरिष कनेहीपणि सर्व
था श्रेयांस नहीं॥३॥ सावघकी पापी अनइं। अनेरा पापी सरिषउ॥४॥ सेजंसे०॥ संव्रताकारपणाइं करी॥

सेयांसे त्तिमन्नइ०॥ पोतानाआत्मानइं सेजंस करी मानइ॥ अथवा लोके सेजंस करी मानइं॥ अनइ सेजंस घुंकोपो
तानइं अगमतां वेणाइं करी अरु विघका जि पोतइं जिपा पीघणु करी मानइ अथवा दुर्वलो दोषमाटइं लाकिइपा वा
करी मानी रह्इ उदारावृत॥२॥ पापीछतउ मिथ्या असहितपणामाटइ पोतानइ सेजंस करी मानइ॥ ऊतीबीनी परिइं
अथवा तदनइं सवकिरीते। सजंसकरीमानीइ॥३॥ वउथइ रूपा मते अव्रतीपणाथको अनइं पोतानइं पापी करी
जाणइ। सम्यग्दृष्टीपणामाटइ। अथवा असंयतीनइं संयती पापकारी जाणइ ४॥ सेयांसे०॥ सेजंस ला
वथको अनइं अथवको रूडइं अनुष्टानपणाइंकरी। वली सेयंसे त्ति०॥ श्रेयकारी आपरिणामनइं ऊपजा विषइक मा
सालिसएमन्नइ०॥ अनेरा जिसेंजस सरिषोकरी मानइं लोक अथवा पोतइं इमकरी जाणइ॥ इम वउसे गोध

तं से त्ति मन्नति सेतं सेणाम मेगे पावंसे त्ति मन्नति ध वत्तारि पुरिसजाया पं तं सेयंसे
नाम मेगे सेयंसे त्ति सालिसे त्ति मन्नति सेयंसे नाम मेगे पावंसे तिसालिसए त्तिम
न्नति ध वत्तारि पुरिसजाया पं तं आघवइत्ता णाम मेगे णो परिभावइत्ता परिभावइत्ता
णाम मेगे णो आघवइत्ता ध वत्तारि पुरिसजाया पं तं आघवइत्ता णाम मेगे णो उंछजी
विसंपन्ने उंछजीविसंपन्ने णाम मेगे णो आघवइत्ता ध

आघवइत्ता०॥ प्रवचनपरूपइ॥ पातिमोपरिभा०॥ जिनसासन प्रभावी न सकइ॥ उदारक्रियारहितमाटइं
अथवा एवं उंछानुवृतनहीं॥ अथवा उत्सर्गादिकइंकरी प्रवचनना अर्थ जिज्या विहिंवा नसकइ॥ इम४॥
भाग॥ अथवा आघवइत्ता०॥ सूत्र कहइ॥ पातिना परिभावइत्ता०॥ अर्थ नकरइ॥ इम४॥ आघवइत्ता०॥
सूत्रार्थ करइ॥ पातिनाउंछजी विसंपन्ने०॥ एषणानइ विषइ तत्पर नहीं॥ आपदाइं पणि ओसंविगो सा
धु॥ अथवा सविग्र पाहिक। विहार थकी ऊसारूप इ ते॥ सुधाचारित्रिया मागुणदीवे पोवतो प्रवचनसुधुंपरूपइ तेऊसं

MEMORIAL

णासु लंबाभ्रि ॥ घवको धर्म्मसिद्धि पवइ ॥ इम ४ तृणाकर वा॰ पुर्वे इसाधु रूपई पुरुष नी परूपक पणाइं करी अनइ
उछे जीवी परा इकाइ गुणवी सा लाकहूी । हिवइ सोल नाम रिषा पणा नकी वृक्ष नी विति थाक रहइ छइ ॥ अथ
वा पुर्विइं उछजीवी साधु कहि उं ॥ तेह नइ विक्रइ लब्धि सहित नइ इहां विकुर्वितां नइं विकुर्व प्रकारि क्रियाकुइ तेहू
रहइ छइ ॥ चउविहा रुरका वि॰ ॥ आति प्रकारि इ वृक्ष नी सारा ॥ प्रवाल॰ ॥ नवा अंकुरा ॥ पानडा फुल फल ॥ एणइ प्यारि
गी वृक्ष नी सारा ॥ अथवा विगुव्वणा॰ ॥ साधुइ वृक्ष विकुर्वइ ते अंकुरा पानडा फुल फल सहित विकुर्वइ ॥ तिं ॥ एपुर्वी
प्ररूपकादिक पुरुष स्वतीर्थीक एसं बहु बलो तीर्थिक नो स्वरूप कहइ छइ ॥ वातिसमोसरणा॰ ॥ वादी॰ ॥ तीर्थिक ते ॥ स
मोसरइ॰ ॥ ते जिणां मांहीं सलइ । ते समवसरण ॥ ते वादी समोसरण ते मानां विधि भत ॥ किरियावादी॰ ॥ जीवाजीवादि

चउविहा रुक्ख विगुव्वणा पं॰ तं॰ पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए चत्तारि समोसरणा
पं॰ तं॰ किरियावादी अकिरियावादी अन्नाणियावादी वेणतियावादी णेरइयाणं चत्तारि
वादिसमोसरणा पं॰ तं॰ किरियावादी जाव वेणतियावादी एवं असुरकुमाराणवि जाव थणिय
कुमाराणं एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं चत्तारि मेहा पं॰ तं॰ गज्जित्ता णाममेगे णो

पदार्थनो आस्तिवदइ ते आस्तिक वदइ ते आस्तिक ॥ तेहनुं जे समवसरण ते क्रियावादीनो ते समवसरण ॥१॥
पुर्विलो छता पदार्थमा निषेधवाचको ॥ अक्रियावादी नास्तिकइं स्पर्धः ॥२॥ अज्ञानइं जे श्रेय एहवी ऊहनी प्रति
ज्ञा ते अज्ञानवादी ३ ॥ विनय जे कीधइं मोक्ष हुइ ॥ एहवं बोलइ ॥ ते विनयिक वादी ४ ॥ एहेना तेहनी संख्या
असीसयं किरियाणं ॥ अकिरियवाईण होइ चुलसीइं ॥ अन्नाणियसत्तट्ठी ॥ वेणइयाणं च बत्तीसं ॥१॥ एसं
ख्या आगलि वा नीऊ पाय लखाइ छइ ॥ ते सर्व वृत्तिमाहि थी जाणिज्यो ॥ एसमोसरण वृक्षवासि डंडकि अवतारइ १२५
छइ ॥ पं॰ विंद्रीनइ मनपणा सहित भारइ ४ समोसरणा संभवइ ॥ अनइ एकेंद्री विगलेंद्री नइ मन रहित पणा मा

टइ संभवइ नहीं ॥ ते माटइ सूत्रमाहि निषेध्या ॥ हिवइ पुरुषना अधिकार थकी दृष्टांत सहित ४० सूत्र ४ पत्ता पुरुष स्वरूप कहइ
छइ ॥ गज्जित्ता॰ ॥ गाजइ पणि वरसइ नहीं ॥ एपुरुष पक्षमेलइ छइ ॥ गज्जित्ता॰ ॥ गाजवानी परि गाजइ ॥ दान ज्ञान व्याख्यान
अनुष्ठान विरामइ जी पवानी माटी प्रतिज्ञा करइ पणि । नावासित्ता॰ ॥ वरसइ नहीं ॥ ते कार्यसिरा डइ नवडावइ ॥१॥ कार्य
सराडइ चडावइ पणि माटी प्रतिज्ञा न करइ ॥२॥ इम ४ ॥ विज्जुयाइत्ता॰ ॥ वीजली करइ । इम कोइ एक पुरुष ॥ गज्जित्ता॰ ॥ ऊंची
प्रतिज्ञा करइ पणि ॥ मा विद्यु॰ ॥ वीजली करवानी परि इं जे करइ । ते आडंबर न करइ ॥१॥ वीजइ आडंबर करइ पणि दान न द्य
इ ॥२॥ त्रीजइ बिऊ करइ ॥ चउथउ न किंचित् पुरुष ४ ॥ कालवासी॰ ॥ अवसरइ वरसइ ॥ पुरुष ते कालवासी ॥ दीन ज्या

वासित्ता वासित्ता णाममेगे णो गज्जित्ता एगे गज्जित्तावि वासित्तावि एगे णो गज्जित्ता णो वासित्ता
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं॰ तं॰ गज्जित्ता णाममेगे णो वासित्ता ४ चत्तारि मेहा पं॰ तं॰ गज्जि
त्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता विज्जुयाइत्ता णाममेगे णो ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं॰ तं॰
गज्जित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता ४ चत्तारि मेहा पं॰ तं॰ वासित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता ४ ए
वामेव चत्तारि पुरिसजाया पं॰ तं॰ वासित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता ४ चत्तारि मेहा पं॰ तं॰ का
लवासी णाममेगे णो अकालवासी ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं॰ तं॰ कालवासी णाममेगे
णो अकालवासी ४ चत्तारि मेहा पं॰ तं॰ खेत्तवासी णाममेगे णो अखेत्तवासी ४ एवामेव

ख्यान पराप गारादि अवसरिइं करइ ॥ नो अका॰ ॥ अणअवसरिइं न करइं ॥ इम ४ ॥ खेत्रा तेधर्मपनुं क्षेत्र त्रिस्थानक पुरु
ष ते खेत्रवासी ॥ पात्रनइ विषइ दान श्रुतादिक द्यइ ॥ नो॰ ॥ पलि कुपात्रइ न द्यइ ॥१॥ त्रीजइ ते विविक विकल ॥ अ
थवा माटा ऊदार पणा थकी ॥ अथवा प्रवचन प्रभावनादिक कारणानां वसंथकी पात्रि इं विकुंइ च्यइ द्यइ ॥३॥ चउथो ए
ण ४ ॥ ना गइ जे परि पणइ मन्ना वक्रानइ न दीइ ४

एकामेदश्रंकुराऊपजावह्छिनता ॥ पणिताना निमवइत्ता ॥०॥ छेदिडाखुधुसफलनकरइ ॥४॥ एणीपरिइं अमापियरो
॥०॥ माता पिताना निम ॥०॥ बोलइनही ॥ इमलोकोत्तर आश्रीगुरुसिषिनइ उछेरिमही ॥ ७ ॥ दसवासी ॥०॥ नरता
दिक्षेत्रविषइ ॥ अथवा वर्षा २ तिनोकालरूपदेसनइविषइ । अथवा । वडीआव्योघणो । वरसइघो हुइ ३ त दसवर्ष ।
सद्दवासी ॥०॥ आवइसरतद्दो थइ नइदेस अथवा आवीवर्षारुतइ अथवा आव्यो तेसर्ववरसइ ते सर्ववरषा
२ ॥ पछेत्रघकी देसविषइ ॥ कालघकासघलइ ॥ १ ॥ अथवापोताघकी सर्वपणइकरी ॥ २ ॥ अथवाकालघको
देसविषइ ॥ क्षेत्रघकीसघलइ ॥ ३ ॥ [illegible] देसनिइ । अथवा पोताघकी सघलइ ४ ॥ अथवा पोताघको
देसिइकरी अनइकालघकी सघलइ ५ अथवा क्षेत्रघकी सघलइ ६ अथवा क्षेत्रघकी अनइ कालघकी देसनइ

चत्तारि पुरिसजाया पं तं खत्तवासी णामामेगे णो आखत्तवासी ४ चत्तारि मेहा पं तं जणाति
त्ता णामामेगे णो णिम्मवइत्ता । णिम्मवइत्ता णामं मेगे णो जणइत्ता ४ एवामेव चत्तारि अ
म्मापियरो पं तं जणइत्ता णामं मेगे णो णिम्मवइत्ता ४ चत्तारि मेहा देसवासी णामामे गे
णो सव्ववासी ४ एवामेव चत्तारि रायाणो पं तं देसाहिवती णामं मेगे णो सव्वाहिवती ।

विषइ ॥ अथवा पोताघको देसिइकरी सघलइ ॥ ७ ॥ अथवा क्षेत्रघकी देसनइ विषइ ॥ पोताघको देसिइकरी अनइं
कालघकी सघलइ ॥ अथवा कालघको देसे अनइ पोताघकी देसकरी ॥ अनइ क्षेत्रघकी सघलइ एइ इमनवइ
नांगइं करी वरसइ ते देसवासी अनइ सर्ववरषी ३ ॥ वउघउस्सुगम ॥ रायाणो ॥०॥ राजा ॥ देसाहिवई ॥०॥ जेरा
जा आपणा क्षेत्रनइं मिघनीपरिइं । देसनइ थ्योगप क्षेम करवा पणाइकरी ठकुराई करइ ॥ पाणिना सद्वाहि
वई ॥०॥ सघला क्षेत्रनो ठाकुर नही तीलनाठकुरनी परिइं ॥ अनइ जेसघलइ आज्ञी वर्त्तावइ ॥ तेसवाधिप
निपणिना देसा ॥०॥ पात्सप्रमुषइ आज्ञावत्त्रावी नसकइ ॥ ते देसाधिपति नही ते देसोकना ठकुराई जेणी ॥ २ ॥
त्रीजइ सर्वनोनइं देसनो ॥ एतलइ सघुलराज्य ॥ ३ ॥ अथवा चोजइ देसनउ अधिपति थइनइ सर्वनउ ॥ १२६

अधिपतिथाइ वासुदेवादिकनीपरिइं ॥ चउत्थउ सर्वादि ४ ॥ एकमहइ ॥ तावइं ॥०॥ उदकस्नेहवर्ति प्रथवीनइ करइ । एतल
इ धाननीपजाविवा समर्थ ॥ जिमहामेघ ॥ घणो हइकरी एकवर्षलिगइ प्रथवीनइ स्नेहवती करइ ॥ नवासेवइ ॥०॥ अथ
वानकरइ धाणो नालुषपणाथकी ॥ एह्यारिमघसरीषापुरुष । जएकवार नइ ऊपदेसइकरी अथवीदानइकरी तेघ
णाइ दानइं करी ॥ सुसखसावसहित अथवा ठकुराई सहित जीवनइं करइ ॥ ते पहिला मेहसरिषउ ॥ इमत्तोकत
रत्तोकतम ॥ कालनो आपत्तीइ बीजउ त्रीजउ ॥ पुरुषजाणिवुं ॥ घणीवार नइ उपदेसिइकरी जीवनइ थोडउ का
ललगता ऊपगार करइ ॥ अथवा न करइ ते चउथउ ॥ ४ ॥ करंडीउ ते वस्त्राभरणनुं स्थानक लोकप्रसिद्ध ॥ सोवा | आदिकि ७५

चत्तारि मेहा पं तं पुक्खलसंवट्टते पज्जुन्ने जीमुते जिम्हे पुक्खलसंवट्टए णं महामेहे ए
गेणं वासेणं दसवाससहस्साइं भावेइ ति पज्जुन्नेणं महामेहे एगेणं वासेणं दसवाससयाइं
भावेति जीमुतेणं महामेहे एगेणं वासेणं दसवासाइं भावेति २ जिम्हेणं महामेहे बहूहिं
वासेहिं एगं वासं भावेति वा ण वा भावेइ चत्तारि करंडगा पं तं सोवागकरंडए वेसिताकरंडे
ते गाहावतिकरंडाते रायकरंडाते एवामेव चत्तारि आयरिया पं तं सोवागकरंडगसमाणे वे
सिताकरंडगसमाणे गाहावइकरंडगसमाणे रायकरंडगसमाणे ग ॥०॥ ते वांडालनउ करंडीउ ते,
माहिं कुत्सितानां चर्म्मपिंड अथ । चर्म्मादिकोपवानउ समुदाय तेहनुं साजन ते अत्यंत असार ॥ १ ॥ वेस्यानउ करंडीउ लाषिइं
पुरित आभरण मलामासहित तेनुं साजन ते काइएक रूडुं पणि काजानी आपराइ असार ॥ २ ॥ गहपति ॥०॥ तेधनवंताका
टंबिकनउ करंडीउ ते विशिष्ट माणिकसुवर्णनो आभरणइ सहित पणाथकी सार तर ॥ ३ ॥ अनइ राजानउ करंडीउ
ते अमुल्यकर नोदिकना साजन पणाथकी सार तम ॥ इमआचार्यपणि सुत्रार्थअनइ क्रियारहित अथवा अन्यतीरतीए
अत्यंत असार ॥ पश्चालकुंनथ्योडुसुं सरणो कइ पणि वचननइ आडंबरिइं मुग्धलोकनइं रंजवइ पणि । गुणविनतणा
सधो ३ ॥ स्वसमयपरसमयनउ ज्ञान क्रियादिगुणसहित गणधरसरिषउ सारतर ॥ ३ ॥ जेसमस्त आचार्यनइं गुणइं ।
तीर्थकरसरिषउ तेसारतम ॥ चउथउ सुधर्मा स्वामीनी परिइं ॥

सालेः॥ सालनामा वृक्ष नी जाति इंस्युक सालपरियाएः॥ साल वृक्षनाइ जि पर्यायि बोल्डी घणा लोकनइ सुषकारी इत्यादि गुणसहित ॥१॥ सालनउ वृक्ष पणि ॥ एरंडपरिः॥ एरंडानापर्यायि । ते वृक्षा अल्पोपन ही ॥२॥ एरंड नामा वृक्ष नीजाति पणि ॥ सालपरिः॥ घणा होडिडी आदि गुणसहित ३॥ एणीपरि आचार्य कुलमकुलना रूपनातथा अ न मगुरुना शिष्य ॥ सालिपरिः॥ हीन क्रियादिकि उई अलुंष्टनइ करीसहित ॥१॥ सालि ते तिमज अनइ एरंडपरिया कहिउ । ते तथा विपरीत ॥२॥ त्रीजउ चउथउ ॥४॥ सालि ते तिमहीजि ॥ सालिपरिवारः॥ सालि हेत्ते नोजि परिकर छे

चत्तारि रुरका पं तं सालेनाममेगे सालपरियाते सालेनाममेगे एरंडपरियाते ४ एवामेव चत्तारि आयरिया पं तं सालेनाममेगे सालपरिताते सालेनाममेगे एरंडपरियाते एरंडेणाममेगे ४ चत्तारि रुरका पं तं सालेनाममेगे सालपरिवारे ४ एवामेव चत्तारि आयरिया पं तं सालेनाममेगे सालपरिवारे ४ सालदुममझयारे जह साले णाम होति दुमराया इय सुंदरआयरिए सुंदरसीससमुणेयव्वे १ एरंडमझयारे जह साले णाम होति दुमराया इय सुंदरआयरिए मंगुलसीससमुणेयव्वे २ सालदुममझयारे एरंडे णाम होति दुमराया इय मंगुलआयरिए सुंदरसीससमुणेयव्वे ३ एरंडमझयारे एरंडे णाम होति दुमराया इय मंगुलआयरिए मंगुलसीससमुणेयव्वे ४ चत्तारि मच्छा पं तं अणुसोयचारी पडिसोयचारी अंतचारी मझचारी

जेहनइ ॥ इम ४ ॥ आचार्य गुरुकुल श्रुतादिकई करी सालिनी परिइं सालि ॥ सालिपरिवारः॥ सालवृक्षसरीषा गुरु साधुनउ परिवार छइ जेहनउ ॥१॥ सालि ते मज ॥ एरंड सरिषा निर्गुण साधुनउ परिवार ॥२॥ एरंडः॥ श्रुतादिक गुणइ एरंड सरीषउ आचार्य ॥३॥ एरंड उच उसंगादीधा विवानइ वलीगाघा कहइ छइ ॥ जिम सालि वृक्षनइ ॥ मध्यभाः ॥ वे विइं उ देसालः॥ जिम सालि वृक्षना मिपा बिल्या वृक्ष सोरा ज कूइ ते मा टउ सालि वृक्ष से वचिलउ ॥ एम आचार्य पणि सुंदर अनइ सिष्य पणि सुंदर जाणिवो ॥१॥ सोगो ॥ मगल ॥ असुंदर ॥२॥ अणुसोयचारीः॥ नदी आदिकन उ प्रवाह वहइ तिम उचालइ ॥१॥ साहामा चालइ ॥२॥ प्रवाहनइ अंति कांठइ चालइ ३ मध्य चाले ॥४॥ १२७

तिहा कः॥ साधु ॥ अणुसोयचारीः॥ जे साधु अतिग्रहकरी उपाश्रयना सीम धा धुरि मांडी अनुक्रमइ घरि घरि भिक्षा माटइं ते अणुसोयचारी मच्छनी परिइं ॥ जे छेहडइथी विहिरतो विहिरतो उपाश्रय आवइं पहवो अतिग्रह धरइ २ अनइ जे छेहडइथी २ कुइ ति हाथी विहिरइं ते ३ ॥ अनइ विचनइ घरि विहिरइ ॥४॥ मधुसिथः॥ मीणनउ ॥ गोलोः॥ वाटलो पीडक ॥ जउः॥ लाषनउ ॥ दारुः॥ काष्टनो ॥ एगोलो अनुक्रमइ सुकुमाल ॥ कठिन कठिनतर कठिनतम जाणवा ॥ इम पुरुष एगोला सरिषा जाणवा ॥ परीसहादि षमवा नइ विषइ ॥ सुकुमाल ॥ दृढ । दृढतर ॥ दृढतम ॥ सचेनां धणं जाणवा ॥ अय जो लादिध एकेकथा हिं अधिक अधिक सार जाणवा ॥ पुरुष एप्यार गोला सरीषा ते आरं तिइं कर्म थाकिमे ते हनइ भारइं करी वडता २ भार कमलिघु । वा अथवा । पितामात पुत्र कुलनइ विषइ ॥ एकेकथा हिं वडतउ स्नेह सार ते गोलइ करी गोला सरिषउ ॥ हिरण्यादिक गोला अनुक्रमइ ॥ रत्नगुणा ॥ गुणाधिक ॥२॥ गुणाधिकतर ३ गुणाधिकतम ॥४॥ जाणवा ॥ तिम पुरुष पणि समछिइ

एवामेव चत्तारि भिरकागा पं तं अणुसोयचारी पडिसोयचारी अंतचारी मझचारी चत्तारि गोला पं तं मधुसित्थगोले जउगोले दारुगोले मट्टियागोले एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं मधुसित्थगोलसमाणे ४ चत्तारि गोला पं तं अयगोले तउगोले तंबगोले सीसगोले एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं अयगोलसमाणे जाव सीसगोलसमाणे चत्तारि गोला पं तं हिरन्नगोले सुवन्नगोले रयणगोले वइरगोले एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं हिरन्नगोलसमाणे जाव वइरगोलसमाणे चत्तारि पत्ता पं तं असिपत्ते करपत्ते खुरपत्ते कलंबचीरितापत्ते एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं असिपत्तसमाणे जाव कलंबचीरितापत्तसमाणे चत्तारि कडा पं तं

करी अम्बाहाना दिक गुणइं करी एकेकथा हिं वडतो जाणवा ॥ असिः॥ षडगनातहनी अक्रेपत्र ॥ करवतेः॥ करवत ॥ खुर पतेः॥ छुरपलो ॥ कलंः॥ सस्त्र विसेष ॥ एय पुरुष सा धुस्ने हपा सछेदइ असी पत्रनी परिइं सनेह मार वक्री वृत ॥ जे बार वार कहइ ते कहे तो छेदइ ॥ ते करवत सरिषउ ॥ जिम करवत घणी वार आवइ आवइं वस्तुनइ छेदइ । तिम श्रावक व घ्राणा दिसा लगतइ २ कदाचित स्नेह हरहीत थई दिक्षा लीइ ॥२॥ छुरपलो जिम केसनइ कापइ पणि मुल का टीन सकइ तिम सर्व स्नेह टालिवा असमर्थ ते दिसइ त्रिपालि ॥३॥ कदंबचीरीय सस्त्र जिम वस्त्रनइ कापीन सकइ ॥ तिम स्नेह छेद वानइ मनोरथइ करइ ते चउथउ अविरती सम्यग दृष्टी ॥४॥

इसा दिम थिलां बाबुकुलो नीपजइ तेकडानी परइं ते कडो कहीइ॥ एणइं कारणि॥ आगडाइं नीपनो कडो ते कहीइ॥ सुंब
कडे॰॥ इसा विसेषनउ कडो॥ बिदल॰॥ वांसनी सलीनउ कडो॥ चम्मकडे॰॥ वादरइत्त रिइत्त रिउ म चक्कादि॥ कंबल॰॥
कांबलउ॥ एहनइ विषइ॥ अल्प १ बक्र २ बक्रतर ३ बक्रतम ४॥ एहना अवयवनउ बंधीयालउ जाणिवो तिम गुर्वादिक
नइ विषइ स्नेह सुं जाणवुं॥ थोडइं वांकइ विघटइ ते सुंबकडासमान॥ इम प्रतिबंधइ चउतां २ जाणवा॥ जिम गुरु ऊप
रि जोडीइं। तिम पछइ अनेरा ऊपरि जोडीइ॥ ४॥ चउप्पया॰॥ थलचर पंचेंद्री तिर्यंच॥ एगखुरा॰॥ एकइ जि पग पग
नइ विषइ॥ खुरी छइ यहना इ ते अश्वादि॥ एवं द्विखुरा॰॥ गवादि॥ गंडी॰॥ सोनारनी अहिरणि ते सरीषा पगलां

सुंबकडे बिदलकडे चम्मकडे कंबलकडे एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं. तं. सुंबकडसमाणे जाव कंबलकडसमाणे चउव्विहा चउप्पया पं. तं. एगखुरा दुखुरा गंडीपदा सणप्फया चउव्विहा पक्खी पं. तं. चम्मपक्खी लोमपक्खी समुग्गपक्खी विततपक्खी चउव्विहा खुड्डपाणा पं. तं. बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया संमुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया चत्तारि पक्खी पं. तं. णिवतित्ता णाममेगे णो परिवइत्ता परिवइत्ता नाममेगे नो निवइत्ता एगे निवइत्तावि परिवतित्तावि एगे नो निवतित्ता नो परिवतित्ता एवामेव चत्तारि भिक्खागा पं. तं. णिवतित्ता णाममेगे णो परिवतित्ता ४ चत्ता

२ सविरं मोस्तन जाइ॥ सद्दसो टक इ प्यातसमुच्छिम॥ तिर्यंचि नइ विषइ रह्यो छइ योनि ते तिर्यंचयोनिया॥ एच्चतुःपदादि
त्रिणि सूत्रइं तिर्यंच कह्या ते को॥ इहां ता पुरुषनउ अधिकार चालइ छइ। ते एतला तणी जे ए तिर्यंच पुरुषलिंगी थाक ह्या
छइ ते सर्व पुरुषनो अधिकार माहि कह्या नउ दोषन हो॥ निवतित्ता॰॥ माला माहि थी नीकलइ॥ नो परि॰॥ पणि बा
लपणामाटइं ऊडी न सकइ॥ परिवइत्ता॰॥ ऊडी सकइ। पुष्टि पणि करी पणि १ नो निवइत्ता॰॥ माला माहि थी नीकली
सकइ नही बीहीकरा सर्णा॥ २॥ त्रीजइ पुष्टो ३ चउथइ अति बील॥ ४॥ निवइत्ता॰॥ एकउ तीणा वरीका जिइं कृपा अथवा
नीकलइ पणि॥ नो परिवइत्ता॰॥ समीन सकइ॥ गल्याण अथवा आलस्य अथवा लज्यालु सणा॥ १॥ त्रीजउ चउथउ सुगम॥ ४

छे जहना ते गंडीपदा ते हस्त्यादि॥ सणप्फया॰ नषसहित पद ते सिंह सिंघादि॥ चर्ममय पांष छइ जेहनी ते॥ समुद्ग पक्षी॥ विततपक्षी ए बिउं अढी द्वीप बाहिर छइ॥ खुड्डपाणा॰ ते अधम उ व अनंत

१२८

निक्कट्ठे॰॥ निकृष्ट तपि दुर्बल करी नइ तेह सदेह॥ अनइ वली निकृष्ट तसा वषका कषाय पातला कीधा॥ १॥ निक्कट्ठे॰॥ सरीर
कृस पणि॥ अनिक्कट्ठे॰॥ कषाय पातला न कीधा॥ २॥ अनिक्किट्ठे॰॥ सरीर जाडुं पणि॥ नि॰॥ कषाय पातला॥ ३॥ चउथइ
बिहु जाडा अथवा डबलुं पहिलुं अनइ पछइ डबलुं॥ इमघउ तं गीमलवो॥ एसु त्रदापा विवानइ आगलिं सूत्र कहइ छइ
निक्कट्ठे॰॥ तेस सरीरी॥ निक्कट्ठप्पा॰॥ कषायादिक नइ मथवइ करी॥ आत्मा पणि निकृष्ट कषायनो पुष्टाइ रहित ते आ
त्मा दुबलो॥ १॥ बीजइ सरीर कृस अनइ आत्मा कषायइं पुष्टो॥ २॥ त्रीजइ आत्मा कषायिं दुबलो। अनइ सरीरिइं पुष्टो
॥ ३॥ चउथइ बिहु पुष्टो॥ बुहे॰॥ रूडी क्रियाइं करी नइ बुध॥ उक्तं च॥ पठकः पाठकश्चैव॥ ये चान्ये तत्त्वचिंतकाः॥ स

रि पुरिसजाया पं. तं. णिक्कट्ठे णाममेगे णिक्कट्ठे णिक्कट्ठे णाममेगे अणिक्कट्ठे ४ चत्तारि पुरिसजाया पं. तं. णिक्कट्ठे णाममेगे णिक्कट्ठप्पा णिक्कट्ठे णाममेगे अणिक्कट्ठप्पा ४ चत्तारि पुरिसजाया पं. तं. बुहे णाममेगे बुहे बुहे णाममेगे अबुहे ४ चत्तारि पुरिसजाया पं. तं. बुहे णाममेगे बुहहियए ४ चत्तारि पुरिसजाया पं. तं. आयाणुकंपए णाममेगे नो पराणुकंपए ४ चउव्विहे संवासे पं. तं.

र्वे व्यसनिनो राजन्॥ यः क्रियावान् स पंडित॥ वली बुध ते सविवेक मन पणाइं करी॥ बीजइ॥ बुध निसज॥ अबुध ते
अविवेकी मन पणाइं करी॥ २॥ त्रीजइ अबुध ते असत् क्रियाथको॥ बुध ते विविवेक सहित॥ ३॥ चउथइ रूडी क्रियारू
डे मन रहित॥ वली एह अर्थ दीपावइ छइ॥ बुध ते क्रियाथकी॥ बुध हियए॰॥ हिइं पणि बुध स विवेकी मन पणाइं क
री॥ अथवा बुध ते सारस्वत॥ अनइ बुध हृदय ते कार्य विषइं। अमूढ॥ इम ४ करवा॥ आयाणुकंपए॰॥ पोतानी हित
नइ विषइ॥ अथवा प्रत्येक ते प्रत्येकबुध अथवा जिनकल्पी॥ अथवा पर ऊपगार बुद्धि रहित निर्दय॥ नो पराणुकं॰
पारकाहितनइ विषइ न प्रवर्त्तइ॥ १॥ पराणुकं॰॥ परोपकारइं प्रवर्त्तइ ते पोतानां हितनो कार्य पूरो करीनइं। पछइ प
रहितनइ विषइ॥ एकांति प्रवर्त्तइं ते तीर्थंकर अथवा पोतानां स्वार्थ रहित पुरुष ते॥ नो आयाणु॰॥ पोतानुं हित कार्य पू
रुं करी रह्यो ते तेण नो आत्मानुकंपक॥ अथवा पोतानुं हितकार्य मूंकी पर ऊपगार बुद्धिइं प्रवर्त्तइ ते॥ त्रीजो चउथो गइ

पोतानास्वार्थरहित॥ एकांतपरोपगाररुचिऊपरि मितार्थ यनिजदृष्टांत॥२॥ श्रीजगछिवरकल्पी३ वउघडलोग इणपातम्यकालसुकरीकादि॥४॥ अनंतरे पुरुषनालेदकह्या॥ हवइपुरुषनइकाजइं विदिजजाय्युं परवशप णुं तेसबहुकहइछइ॥संवास०॥ स्त्रीसंघातइंएकठुंसुवुं॥ तामेथुन॥ दिवि०॥ विमानिकनोसंवास॥ असुरस वमपति॥ रक्कस०॥ विंतर विसेष॥ संवासंग०॥ मिथुनसेवाइं प्रवर्त्तइं॥ पुरुषनाअधिकार सणोवली अपध्वं

दवि असुर रक्कास मणुास चउव्विहे संवासे पं तं दवेणामामगे देवीए सद्धिं संवासंग छंति देवेनामामगे असुराए सद्धिं संवासंगछंति असुरेनामामगे देवीए सद्धिं संवासं गछंति असुरेनामामगे असुराए सद्धिं संवासंगछंति चउव्विहे संवासे पं तं देवेनामामगे देवीए सद्धिं संवासंगछंति देवेनामामगे रक्कसीए सद्धिं संवासंगछंति रक्कासेनामामगे देवी ए सद्धिं संवासंगछंति रक्कसेनामामगे रक्कसीए सद्धिं संवासंगछंति ४ चउव्विहे संवासे पं तं देवेनामामगे देवीए सद्धिं संवासंगछंति देवेणामामगे मणुस्सीए सद्धिं संवासंगछंति मणु स्सेनामामगे देवीए सद्धिं संवासंगछंति मणुस्सेनामामगे मणुस्सीए सद्धिं संवासंगछंति ४ चउव्विहे संवासे पं तं असुरेनामामगे असुरीए सद्धिं संवासंगछंति असुरेनामामगे रक्कसीए सद्धिं सं वासंगछंति ४ चउव्विहे संवासे पं तं असुरेनाम_मगे असुरीए सद्धिं संवासं गछंति असुरेना मामगे मणुस्सीए सद्धिं संवासंगछंति ४ चउव्विहे संवासे पं तं रक्कासे नामामगे रक्कसीए सिद्धं संवासंगछंति रक्कसेनामामगे मणुस्सीए सद्धिं संवासंगछंति ४ चउव्विहे अवध्वंसे पं तं आसुरे अभिओगे संमोहे देवकिव्विसे चउहिं ठाणेहिं जीवा असुरत्ताते कम्मंपगारेति तं

असुवाउजेणाइं अनुष्ठानइं असुरकुमारपणुं ऊपार्जइतेणाइं करानइं आत्मानी जेवासना तेला वनाकहीइ॥

॥अवध्वंसे० क० चारित्रनाफलनउ विनाश

सकहइछइ ॥ अवध्वंस ०॥ चारित्र नउअघवा ॥ तिहनाफलनेअ सुरादिला वनाइकरी ऊपजाय उविनास ॥ आसुर ०॥ जेणाइं कर्म्मिइक री असुर कुमारमा हिंऊपजइ ते असुर भावना ते ताइकर्म्मि जेदेवता ऊपजोय्या १२ ए ते असुर॥

एलावनासहआ सोउगियादिकविषइमजिजांणिवो॥ आतियोगनी।लावनाइंऊपजाव्यो तेआलियोग॥ संमोह नीलावनाइंऊपजाव्योतेसामोह॥ किल्विषनीलावनाइंऊपजाव्यो तेकिल्विष॥ कंदर्प्पलावनाइंऊपजाव्यो ते कंदर्प्प एपाचमी॥ अपध्वंस आनेरासिद्धांतविषइकहिऊछइ॥ पणिइहांचउगणामाटइंमकहि उ॥ आह्चकंद र्प्प १ देवकिल्विस २ अलिउगा ३ आसुराय ४ संमोहा ५ एसाउसंकिलिठा॥ पंचनिहोलावणासणिया १॥ एहमा हिलोऊकोजेणालावनाइंवर्त्तइं॥ तेविधिमादेवताविषइऊपजइं॥ चारित्रलेसानोप्रभावपकी॥ तंकेव॥ जोसंजु उविएयासु॥ अप्पसह्हासुवहइकहिंवि॥ सातव्विहेसुगछइ॥ सुरसुसइउ॥ चरणहीणो॥२॥ जेणलावनाइंजे जांऊपजइ।तेस्वरूपकहइछइ॥ असुरत्तात०॥ असुरपणाइंऊपजवानाकर्मकरइ॥ कोहसील०॥ क्रोधनइस्वलाव

कोहसीलत्ताते पाहुडसीलयाए संसत्ततवोकम्मेणं निमित्ताजीवयाए चउहिं ठाणेहिं जीवा आ भिओगत्तातकम्मंपगारेति तं अत्तुक्कोसणं परपवाएणं परपरिवायतेणं भूतिकम्मेणं कोउय करणेणं चउहिं ठाणेहिं जीवा संमोहत्ताएकम्मंपगारेति तं उम्मग्गदेसणाए मग्गंतराएणं कामा संसपओगेणं भिज्झानियाणकरणेणं चउहिं ठाणेहिं जीवा देवकिव्विसियत्तातकम्मंपगारेति तं

इकरी॥१॥ पाहुडसी०॥ कलहमइंकरवइंकरी॥ संसत्ततवो०॥ आहारऊपध्यादिकनइंअर्थइंतपकरइ॥ ३॥ निमित्तजी०॥ आ हारऊपध्यादिकनइंअर्थिइंलालअलालादिकहिवइ॥ आजीविकाकरइ॥४॥ आलिउग०॥ सेवकनीवाकर्मकरवा जोगपवाइ तेहवोकर्मऊपार्जइ॥ अनुक्कोसणं०॥ पोतानागुणानइ अलिमानिइं॥१॥ परपरिवाएणं०॥ परनीनिंद्या इ॥२॥ भूतिकम्म०॥ क्षीरादिकनइ राखआदइंकरीरक्षादिमइंकरवइ॥३॥ कउकुककर्म०॥ सौलाग्यनिमित्तस्नानकराव वइ॥ समोह०॥ मुह्याइं॥ मतिनपसरइं॥ तेमुढात्मादयविसेष॥ उम्मग्गदेसणाए०॥ सम्यग्दर्सनादिलावमार्ग तेह दितजेधर्म्म तेऊपदेसिइं॥१॥ मगंतराएणं०॥ जेम्मार्गमिइकाजइप्रवर्त्ततेउजइ तेहनइंअंतरायनइंकरवइ॥२॥ कामासंसपओगेणं०॥ सद्दादिकनाअलिलाषनइंकरवइ॥३॥ मिज्झानियाणकरणेणं०॥ गिद्ध०॥ लोस॥ गृधपणु तेणाइंकरी नियाणानइंकरवइं॥

=का३०मा सीनिमतइं सनानक रइ॥ अवि सुरनो अर्थ ऊ॰२

नइं हास्य ऊ पुजा वइं॥ वि०॥ इडंजा लइकरी प १ नइ विस्मा वइ॥ कंद्प्प ०॥ सोइ दे वता नी त तावना करइ॥ एअपथ्य क ते अप्रबंति तनइ होइ तेसा० प्र थ्रेया कहइ ई॥ सुत्रेश्चा ठ ८ इहलो कपडि०॥ नि वहा दिकन इअर्थेइ ल्स इ॥ परलोक पडि०॥ जन मांतरिइंका मादिक नइ अर्थेइ॥ दुह ०॥ थिऊन

एआन रिइं ठामिइं इमक दिक्षेछइं॥ उम्मग्ग देसइ मग्ग नासउ॥ मग्ग विप डिवत्ती॥ मोहेणाय मोहेता॥ समोहेत्ता वऊणइ॥ १२॥
देवकिब्बिस०॥ देवता पापी देव एहुउ कार एावी फरस करवा योग्य नही॥ अवर्ण०॥ अश्लाघा ते अवर्णवाद बोलु ऊघाडिवु
इत्यर्थ॥ एआन रइ ठामिइं एमक दिक्ष छइं॥ नाणस्स केवलीणं॥ धम्मायरियाण सघस्स ऊणं॥ सो सं अवन्न वायं॥ किबि
सियं सावं ऊणाइं॥ १॥ ४॥ इहां कंदर्प्प भावना चऊठाणां माठइं नथी कही॥ पणि एहनां अवसर माटइं दषाडी इछइ॥ कंद
प्प कुक्कुइए॥ दव्वसील अ विहासण कार एय॥ विम्हावें तोय पर॥ कंदप्प भावणं कुणइं॥ १॥ कंदर्प्प दीपइ तेहवी
वाक करइ॥ कु०॥ भांडा वेष्टा॥ दव्व०॥ दव्व०॥ दर्प्प थिकी ऊतावलो चालइं बोलइं॥ हा०॥ वि षइ अनइं वचना दिकइं करी पर

अरहंताणं अवन्नवयमाणे। अरहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स अवन्नवयमाणे। आयरियउवज्झा
याणं अवन्नवयमाणे। चाउवन्नस्स संघस्स अवन्नवयमाणे। चउव्विहा पव्वज्जा पं तं इहलोग
पडिबद्धा। परलोगपडिबद्धा। दुहतो लोगपडिबद्धा। अपडिबद्धा। चऊव्विहा पव्वज्जा। पं तं पुरऊ
पडिबद्धा। मग्गऊ पडिबद्धा। दुहतो पडिबद्धा। अप्पडिबद्धा। चऊव्विहा पव्वज्जा। पं तं उवाय
पव्वज्जा। अक्खात पव्वज्जा। संगार पव्वज्जा। [illegible] विहा पव्वज्जा। चऊव्विहा पव्वज्जा। पं तं तुयावइत्ता

इ अर्थेइं॥ अपडिबद्ध०॥ आ संसार हित प्रभ्रज्या नइं आदरइं तसाधु॥ पुरऊ०॥ आगलि सचि आहारादि पामा सइं
एह वइं प्रतिबंध इ लेइं॥ मग्गउ पडि०॥ पछिलां स्वजना दिकइं दीक्षा लीधी छइ तेहनइं प्रतिबंधि इं ल्यइ॥ ३॥ उत्तऊ
अपडि०॥ पुर्विलीपरिइं॥ उवाय०॥ अवपात० सद्गुरु नी सेवा थकी जे चारित्र ल्यइं॥ १॥ अरवाय प०॥ चारित्र ल्यइ॥
अथवा ... अ परिछितेना साइं फल्गुर क्षितनी परिइं॥ संगार०॥ संकेत तऊ उत्तुं एह वउ बोल॥ तिणइं करी चारित्र ल्यइ॥ ३॥ ४
वामेतार्यनी परिइं। तऊ पिछलो चबुइं तप्रतिबोधवो तसाकृत॥ ३॥ विहग०॥ पंखीनी परिइं परिवारना वियो
गनी परिइं॥ एकोकी देसांतरि इं ऊइं दिक्षा ल्यइ॥ पाठांतरि अडिय प०॥ दारिद्र आबिइं अथवा बिरोइ घरमांसको चा
रित्र ल्यइ॥ ४॥ ४॥ तुयावइत्ता०॥ पीडा ऊपजावीनइं चारित्र ल्यइ॥ जिम मुनी वेदनां पुत्रनइं सागरचंदइं दीधी॥ १॥ १३०

अथवा विद्यादिकनुं
ऊयावइत्ता०॥ एमाठां तरं॥ उद्ध०॥ बलात सरीर नुं तिदप्पाडीनइं जे दीयइ॥ २॥ पुया वइत्ता०॥ ध्यानांतरइ पोहो
चाडीनइं दीक्षा दिइ॥ आर्यरक्षित नी परिइं॥ अथवा उत्तं०॥ दुषणनइं टालवइं करी निर्मलि करीनइं जे दीक्षा दीइ॥
बुयावइत्ता०॥ जे बोलावीनइं दीइ॥ जिम गोतमइं करसणीं परिइं॥ अथवा तहनइं दूकदिऊहतु जे चारित्र लईसि ए
हवुं पचारीनइं लवरावइ॥ अथवा तुं इमक हइ॥ जेऊ चारित्र लईस॥ एहवी प्रतिज्ञा करावीनइं दीइ ए॥ पाठांत
रइं॥ मोया वइत्ता०॥ पर बस्पथकी मुंकावी द्यइ॥ जिम तेलनइं अर्थे इंदासी पणुं पामा बहिनइं साईइं मुंकावी दिक्षा दीधी

पुयावइत्ता। मायावइत्ता। परिपुयावइत्ता। चउव्विहा पव्वज्जा पं तं नडखइया। सडखइ
या। सीहखइया। सियालखइया। चउव्विहा किसा पं तं वाविया। परिवाविया। णिंदिता प
रिणिंदिता। एवामेव चऊव्विहा पव्वज्जा पं तं वाविया परिवाविया णिंदिया परिणिंदिया

॥ ३॥ परिपु०॥ घृतादिक हरवउं जे ऊनात परिपुऊ ते णइं करी लोसवाही दीक्षा दीइ॥ सुहस्ती आचार्यइं जिम रंक धनउ
खइया०॥ संवेग विकल वषाण करवइं॥ लोऊन ऊपार जानइं षाखुं जे प्रभ्रज्या माहिं छइं॥ नटावानी परिइं तेनटष
दिता॥ अथवा नटावानी परिइं संवेग सुंन्य धर्मकथा रूप स्वत्ता वछइ जेहनइं विषइ॥ इमसटादिकनइं विषइ
जाणवुं॥ सडु०॥ बलदेषाडवइं करी आजीविका करइ॥ सीहखइया०॥ स्वर पणइं करी आगल्यानइं बीहाबी दि
ली आहार लईया इ॥ सीयालख०॥ दीनपणाइं आजीविका अथवा सीयालनी परिइं गमिवां भिषा लाहीडइ॥ ४॥
किसा०॥ धन्य नइं अर्थेइं क्षेत्र नुं बाविवुं करइ ते करसणीं॥ वाविया०॥ जे करसण एकवार वाइ॥ १॥ परिवावीया
०॥ बेत्रिणि वार ऊपाडीनइं स्थानांतरिइं रोपाइ सालिनी परिइं॥ २॥ णिंदिया०॥ एकवार अन्य जातिना तृणान
इं टालवइं सोधइ॥ ३॥ परिणिंदिया०॥ बेत्रिणि वार तृणानइं टालवइं सोधीइ॥ ४॥ इम प्रभ्रज्या॥ वाविया०॥ त
सामायिकनइं आरोपवइ॥ १॥ परिवावीया०॥ महाव्रतनइं आरोपवइ। निरतीचारनइं अथवा सातीचारनइं

मुलयत्नो प्रायश्चित्त देवुं॥ निंदियाः॰ एकवार नइ अतीचार नइं टालवइ॥ परिनिं॰ वारंवार आलोवइ॥ धणपुं॰॥ प
लानइ विषइ॥ लुणितं पुंजित। निर्मलिका धउधान्य नो ढगलो तेसरिषी प्रव्रज्या ते सकल अतीचार रहित॥१॥ धन
विरल्लियः॰ खलानइ विषइ माकलुं कीधुं॥ वायिपुणिकं पणि ढगलो नथी कीधो॥ पणि ढगलउ थास्यइ जिम ते
प्रव्रज्या सो प्रयत्ने पणाइ करी विहिलो निर्मली थास्यइ॥२॥ धन्नविक्खित्त॰ बलद नां खुराइं करी षांदालुं
तेणाइ करी धान्य वीषरालु तेसरीषी ते अतीचार रूप कचवरइं सहित छइ॥ घणि उपयोग मिलइ काई एक माडइ
रीनि निर्मली थास्यइ॥३॥ धन्नसंकड्ढि॰ जे धान्य क्षेत्रमाहि थी कपाडी खलइ आणिउं तेसरीषी ते घणा अती
चार सहित पणाथकी बहुतर कालइं निर्मली थास्यइ॥४॥ ए विचित्र प्रकारनी प्रव्रज्या ते संज्ञीना वसथकी जाइ

चउव्विहा पव्वज्जा पं. तं. धन्नपुंजितसमाणा। धन्नविरल्लितसमाणा। धन्नविक्खित्तसमाणा। धन्नसंकड्ढितसमाणा। चत्तारि सन्नाओ पं. तं. आहारसन्ना भयसन्ना मेहुणसन्ना परिग्गहसन्ना। चउहिं ठाणेहिं आहारसन्ना समुप्पज्जति तं. ओमकोट्ठताते छुहावेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं मतीते तदट्ठोवओगेणं। चउहिं ठाणेहिं भयसन्ना समुप्पज्जति तं. हीणसत्तताते भयवेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं मतीते तदट्ठोवओगेणं॥

ते तेणी संज्ञा सूत्र ५ पां वइकहइ छइ॥ संज्ञा॰ चितनापणुं ते असाता वेदनीय मोहनीकर्मनइ उदयइ करी उपजाव्यो विकारइं सहि
त आहारादि संज्ञी तेआहार नो अभिलाष॥ भयसंज्ञाते भयमोहनी नो करी उपजाव्यो जीवनो परिणाम॥ मैथुनसंज्ञाते
वेदमोह उदयि करी उपजाव्यो मैथुननो अभिलाष॥ परिग्रहसंज्ञाते चारित्रमोहनीनि उदयिइं करी उपजाव्यो परि
ग्रहनउ अभिलाष॥ ओमको॰ ठालइ कोठइ॥ मईए॰ आहारकथा सांभलवा दिकइ॥ तदट्ठोवओगेणं॰ ते
करी उपजाव्यो नइ अर्थनइ विषइ उपयोग दिवइ॥ हीणस॰ सत्वनइ असावइ॥ मईए॰ भयनी वार्त्ता सांभलवा थ
की॥ अथवा बीहामणुं काई एक देषवा थकी॥ तदट्ठोवओ॰॥ सात भय मनमाहि आणइ वारंवार॥४॥ 131

उपचित मांस सोणितइं करी॥ मइए॰ मैथुननी वार्त्ता सांभलवइ करी बोलावा बुद्धि तेणइ करी॥ तदट्ठो॰ मैथुननो अर्थनुं चींत
वणा करइ॥ अविमुत्तयाए॰ सपरिग्रह पणाइं करी॥ मइए॰ सचित्तादि परिग्रहना देषवा थकी॥ तदट्ठो॰ परिग्रहनी
चींतवणा॥ संज्ञीते तो कामछइ तेसणी काम नुं सूत्र॥ काम तेसएा दिक देवतानां काम। एकांतिक अत्यंतिक मनोज्ञ
पणाइ करी॥ प्रकृष्ट रतिनो जे रस तेहनुं स्थानक छइ तेसणी शृंगार रति रूप छइ॥ यदाह॰ स्त्रीपुरुष अन्योन्य आल
वादिक इं रतिपामइं ते शृंगार॥ मनुष्यनां काम तिककरुणा॰॥ सोकस्वभाव तेह तुं मनोज्ञ॥ पशुक रीसे ए एकदीठा
नहा पणाइंकरी॥ शुक्र सोणितादिकइं थकी उपनु जे शरीर तेह नइं आश्रयापणाइ करी। सोक सहित पणाइं करी क
+ तिर्यंचना कामते॥ रुणा॥ बीभत्सा॰॥ निंदनीक॥ निंदानां स्थानक पणाथकी॥ बीभत्सा रस ते दुर्गंछा॥ निंदा मई छइ॥ नारकीनां कामते

चउहिं ठाणेहिं मेहुणसन्ना समुप्पज्जति तं. चित्तमंससोणियाए मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं मतीते तदट्ठोवओगेणं। चउहिं ठाणेहिं परिग्गहसन्ना समुप्पज्जति। अविमुत्तयाए लोभवेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं मतीते तदट्ठोवओगेणं। चउव्विहा कामा पं. तं. सिंगारा कलुणा बीभत्सा रोद्दा। सिंगारा कामा देवाणं कलुणा कामा मणुयाणं बीभत्सा कामा तिरिक्खजोणियाणं रोद्दा कामा णेरइयाणं। चत्तारि उदगा पं. तं. उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोदए उत्ताणे णाममेगे गंभीरोदए गंभीरे णाममेगे उत्ताणोदए ३॥

रोद्दा रौद्रा ते अत्यंत अनिष्ट पणाइ करी क्रोधना उपजाविवापणाथकी रौद्र रस ते क्रोध स्वभाव छइ॥ ए काम तुच्छ सत्व
×गंभीर नइ न बांधइ× वंतनइ बाधइं ति दृष्टांत सहित कहइ छइ॥ सूत्र ८॥ उदगपाणी॥ उत्ताणे॰ उछ पणाथकी पातलुं॥ अनइ वली उत्ताणो
दए॰ निर्मलपणाइं करी तेमाहिली वस्तुनुं स्वरूप देषाडइ॥ एहां उत्ताणोदएकी धुत प्राकृत नो साली माटइं॥१॥ उत्ता
2 णे निमज्ज॥ गंभीरोदए॰ डोहोलपणामाटइं माहिलुं स्वरूप देषाडइ नहीं॥२॥ गंभीर॰ पाणीना प्रचुरपणाथकी अ
गाध पणाइ॥ उत्ताणोदए॰ अछपणाइ करी माहिलुं स्वरूप देषाडइ॥३॥

गंभीर ते अगाध अनइ गंभीरोदए० ते ऊंडो होइ करीनइं गंभीर ॥ पुरुषते ॥ उन्नतो० ॥ ए गंभीर ते पोतानो म
द अनइ दैन्यपणुं बाहिरि देखाडवइ करी ऊपनो जे विकार ते सहित काय वचननी चेष्टा ॥ उन्नत हियए० दीनप
णासहित अनइ आगिल्यानुं गुह्य धरिवा असमर्थ चित्त ॥१॥ उन्नतो०॥ कारण वस्यइं चेष्टा विकार देखाडइ ॥ गं
भीर हि० ॥ बीजा परिइं तेहनउ स्वरूप तान ऊंणा ता ॥ हृदय थकी विपरीत छइ ॥२॥ गंभीर ते दीनपणासहित छ
इ ॥ पणि कारणना वस्य थकी ढांकइ दीनपणइं करी ॥ उन्नत हृदय ते पूर्ववत् ॥३॥ चउथउ ते पहिला थकी विपरीत ॥४॥
उत्ताण ते मातला पणा थकी ॥ उत्ताणोभासी ते० ॥ उत्तान सरिखा जे अवस्था सइं दीपइं ॥ ते स्थानक नावस थकी ॥१॥ उत्तान

गंभीरणाममेगे गंभीरोदए एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं उन्नए नाममेगे उन्नए हियए
उन्नएणाममेगे गंभीरहियए ४ चत्तारि उदगा पं तं उत्ताणेणाममेगे उत्ताणोभासी उत्ताणे
णाममेगे गंभीरोभासी ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं उत्ताणेणाममेगे उत्ताणोभासी उ
त्ताणेणाममेगे गंभीरोभासी चत्तारि उदही पं तं उत्ताणेणाममेगे उत्ताणोदही उत्ताणेणाममेगे
गंभीरोदही ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं तं उत्ताणेणाममेगे उत्ताणहियए ४ चत्तारि उदही

ते तिम इति ॥ गंभीरोभासी ०॥ अगाध सरीखुं दीपइ ते संकोच स्थानक पणादिकइं करी ॥२॥ गंभीर ते अगाध ॥ उत्ताणोभासी
०॥ उत्तान सरिखुं दीपइ ॥३॥ ते पूर्वोक्त गंभीर तं अगाध अनइ गंभीरोभासी ०॥ गंभीर जस सरिखुं दीपइ ते ह
वो जि स्थानक नइं आश्रयपणा थकी ॥४॥ पुरुष ते उत्तान ॥ तुछ ॥ अनइ उत्ताणोभासी ते तुछ सरिखो जि भासइ ॥ तुछपणुं दे
खाडवा थकी अनइ विकारना देखाडवा थकी ॥१॥ तो बउ उपणि निजस्वरूप गोपवी रह्यो छइ ॥२॥ त्रीजो ते छे गंभीर पणि
कारणना वस्यइं थकी तो बडापणुं देखाडवइ ॥३॥ चउथउ सुगम ॥ उदधिना सूत्र ऊदकनी परि ॥ ढांढी तिक सहित जा
णिवा ॥ अथवा उत्ताणो० ॥ पहिलुं ऊंडो नहीं ॥ उत्ताणोदही० ॥ अनइ पछइ पणि ऊंडो नहीं ते एहस ॥ उदधिनु ॥ ते बाहिर १३२
लो समुद्र विषइ ॥ वेलिइं नइं अत्ता कू पहिलुं ऊत्तान अनइ पछइ वेलि आवइ तिवारिइं गंभीर अगाध ॥ २॥

पहिलुं गंभीर अनइ पछइ वेलि गइ तिवारिइं ऊत्तान ३॥ चउथउ सुगम ॥ समुद्रना प्रस्ताव थकी समुद्र ना तं
पिहरु गंभीर अनइ पछइ वेलि गइ तिवारिइं ऊत्तान ३॥ चउथउ सुगम ॥ समुद्रना प्रस्ताव थकी समुद्र सरिखुं चारित्रादि दुस्तर कार्य जु करु
णाक्षार कहइ छइ ॥ तरगा० ॥ तारा० ॥ समुद्दं तरामि० ॥ एक इम कहइ ॥ समुद्र सरिखुं चारित्रादि दुस्तर कार्य जु करुं
अनइ ॥ समुद्र इम तरइ० ॥ दुस्तर कार्य करइ ॥१॥ समुद्दं तरामि० ॥ दुस्तर कार्य जु कोइ इम कह्य नइ ॥ गोपयं तरइ० ॥ गोपग
लो सरिखा दिस विरत्या दिक अल्पतम आदरइ ॥२॥ गोपग लास रिखु कार्य कि होनइ अतिसमर्थपणा थकी समुद्र
सरिखा कार्य साधइ ३॥ चउथउ सुगम ॥४॥ समुद्दं तरिता० ॥ एक समुद्र सरिखा कार्य करीनइं ॥ समुद्दे सीयंति ०॥ समु

पं तं उत्ताणेणाममेगे उत्ताणोभासी उत्ताणेणाममेगे गंभीरोभासी ४ एवामेव चत्तारि
पुरिसजाया पं तं उत्ताणेणाममेगे उत्ताणोभासी ४ चत्तारि तरगा पं तं समुद्दं तरामी
तेगे समुद्दं तरइ समुद्दं तरामीतेगे गोप्पयं तरइ ४ चत्तारि तरगा पं तं समुद्दं तरित्ताणाममे
गे समुद्दे विसीयति समुद्दं तरित्ताणाममेगे गोपये विसीयति गोपयं ४ चत्तारि कुंभा पं तं
पुन्ने नाममेगे पुन्ने पुन्ने णाममेगे तुच्छे तुच्छे णाममेगे पुन्ने तुच्छे णाममेगे तुच्छे एवामे
व चत्तारि पुरिसजाया पं तं पुन्ने णाममेगे पुन्ने ४ चत्तारि कुंभा पं तं पुन्ने नाममेगे पुन्नोभासी

द्र सरिखा कार्य निर्वाह नसकइ कर्मना क्षयोपसमना विचित्रपणा थकी ॥१॥ समुद्र तरीनइ गोपइ इसीदाइ ॥२॥ गोप
इ सरिखा कार्य निर्वाह नसकइ कर्मना क्षयोपसमना विचित्रपणा थकी ॥ पुरुष केहवइ इव्हुं ॥ पुसि०
ई उतरी समुद्रि सीदाइ ॥३॥ गोपइ उतरी गोपइ इसीदाइ ४ पुरुष कइ विवली जोसनइ इहा तिइ केहइ छइ ॥ पुसि०
पुसि तिसकल अवयव इ करी सहित अथवा प्रमाणोपेत ॥ अनइ वली पुन्न ते माहि नरखो ॥२॥ बीजउ इंतागइ भा
हि वालुइ २॥ तुछ ते पुरा अवयव नहीं अथवा नाहानउ ॥ चउथउ सुगम ४॥ अथवा पहिलो अनइ पछइ प
णि सरखो ॥ इम चउभंगी करवी ॥ पुरुष ते पुसि जाति दिगुणो करी वली पुसि ते ज्ञानादिगुणइं करी अथवा पहि
णि सरखो ॥ इम चउभंगी करवी ॥ पुरुष ते पुसि जाति दिगुणे करी वली पुसि ते ज्ञानादि गुणइं करी अथवा पहि
हिवा पुसि ते धन्यइ करी अथवा गुणइ करी अनइ पछइ पणि तेणइं जि पुसि ॥४॥ पुसि० ॥ अवयव इकरी देही
यादि पुसि अनइ ॥

पुन्नो नामं एगे सुच्छो तासी । तिहां ते काउ पुरुष धर्मादिकइ करी पूर्ण, पुन्नो नामं एगे तुच्छो तासी, तुच्छे नामं एगे पुन्नो तासी, तुच्छे नामं एगे तुच्छो तासी ॥ ४

पुलो तासी त आगाहारनइं । पुणसिरी घउ जि दीपइ ॥१॥ पुर्णीत तिमइ जि । तुच्छो तासो० ते किस्या एक ह तु घको । किसुं एककायतिकु सुकरिवा असमर्थ तिन्नणा लोग आहारनइं तुच्छ सरिषउ दीपतो दीसइ ॥४॥ इमइ ॥ पुरुष ते पुणं धर्म श्रुतादिकइं करी । पुर्णो तासी० । ते तेहनाजोग्य पघ की । पर्णसरीषो दीपइ ॥१॥ ते तेहना परिकरि विना तुच्छ सरिषो दीसइ ॥२॥ जोजइ तुच्छ नर री घो तुच्छ घर प्रस्तावो चित प्रवर्त्तिवा घको । पुणसिरिषो दीसइ ३ वउ थइ धर्मश्रुतादिकइं करी रहित । अनइ तुच्छो वतासो० । परिकर पणइ नही तेणइं तुच्छ सरिषो दीसइ

न्ना तासी । पुन्ने नामं एगे तुच्छो तासी । तुच्छे नामं एगे पुन्नो तासी । तुच्छे नामं एगे तुच्छो तासी । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं० पुन्ने नामं एगे पुन्नो तासी ४ चत्तारि कुंभा पं० तं० पुन्ने नामं एगे पुन्नरूवे पुन्ने नामं एगे तुच्छरूवे ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं० पुन्ने नामं एगे पुन्नरूवे ४ चत्तारि कुंभा पं० तं० पुन्ने वि एगे पियट्ठे पुन्ने वि एगे अवदले तुच्छे वि एगे पियट्ठे तुच्छे वि एगे अवदले एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं० पुन्ने वि एगे पियट्ठे तहेव चत्तारि कुंभा पं० तं०

पइ ॥४॥ पुर्णीत पाणीयादिकइं वली पुर्णीत पुरा अथवा पुन्यात पवित्ररूप घइ ये हतुं । तुच्छरूवे० सांणो आकार ॥२॥ इमचउ तणी ४ ॥ पुरुष ते पुर्ण ज्ञानादिक वली अनइ पुर्ण अथवा पवित्ररूप ते रजोहरणादि द्रव्य लिंगइं करी सुसाधु ॥१॥ तुच्छरूवे० ते सुसाधनइं कारणइं वस्त्रइं द्रव्य लिंग छांडिउं ॥२॥ तुच्छे० ज्ञानादि हीण ते निन्हवादि ३ ॥ चउथइ ज्ञान अनइ द्रव्य लिंग रहित गृहस्थादि ४ ॥ पुन्ने वि एगे० अर्थ तिमइ जि । पितट्ठे० एक कोइ एक प्रियकारी उ सोनारनइ जे तसु वरणादिकनो नीपनो ते स्त्र सारई त्यर्थ ॥१॥ अवदले० एक एक पाकुं ईमृत्तिकादि द्रव्यन जे नीपनो अथवा अपदलात विदिसीय जुई का चा पाकउ ते तणी असारई त्यर्थ ॥२॥ तुच्छ वि० एक तुच्छ घकउ प्रियकारी ३ ॥ अनइ एक तुच्छ अवदाल ४ ॥ १३३

इम पुरुष ते पुर्ण धर्मश्रुतादिकइं करी अनइ पियट्ठे० प्रियवचनदानिं करी ते प्रियसारई त्यर्थः ॥ परोपकार प्रति अजोग्यई त्यर्थः ॥ अवदाल० ते प्रियार्थ सरिषो नही ॥ परोपकार प्रति अजोग्यई त्यर्थः ॥ तुच्छ वि० तुच्छपणि प्रियकारी ३ ॥ तुच्छपणि एक अवदल ॥४॥ पुन्ने वि० एक कुंभ पाणी इं भरिउ छतो पणि ॥ विस्संदति० अवइ पाना विस्संद० न श्रवइ ॥२॥ तुच्छ विएगा० थोडुं जल पणि एक स्रवइ ॥३॥ एक थोडुं जल न श्रवइ पुरुष ते पुर्ण धर्मश्रुतादि किरइ ते उ एक ॥ विस्संदई० दानदिइ अथवा श्रुतदिइ ॥ तुच्छवि० थोडुं धनादि छइ पणि विस्संद० धनादिइ ॥ तिन्नि० फुटो ॥ जज्जरिय० जर्जरित चारित्र ते छेद आवर्ज्जि करी ॥ परिस्रावी ते सु

पुन्ने वि एगे विस्संदति पुन्ने वि एगे णो विस्संदति तुच्छे वि एगे विस्संदति तुच्छे वि एगे नो विस्संदति एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं० पुन्ने वि एगे विस्संदति तहेव चत्तारि कुंभा पं० तं० भिन्ने जज्जरिए परिस्साई अपरिस्साई एवामेव चउव्विहे चरित्ते पं० तं० भिन्ने जाव अपरिस्साई चत्तारि कुंभा पं० तं० महुकुंभे नाममेगे महुप्पिहाणे महुकुंभे नाममेगे विसप्पिहाणे विसकुंभे नाममेगे महुप्पिहाणे विसकुंभे नाममेगे विसप्पिहाणे एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं० महुकुंभे नाममेगे महुप्पिहाणे ४ हियय[illegible] अपावं अकलुसं जीहा वि य महुरभासिणी णिच्चं जंमि पुरिसंमि विज्जति से महुकुंभे महुपिहाणे ॥१॥

दम अतीचारइं करी । अपरीश्रा ते निरतीचारइं करी ॥ इहां तो पुरुषनो अधिकार छइ ते चारित्र कहिउं ते स्युं ते चारित्रनइं चारित्रीउ लक्षणइं भलउ इति सर्व णदोष नही ॥ ८ ॥ महुपिहाण० मध्यइं करी सरिउ ढांकणुं छइ ते कुंभनइं अथवा मधुइ ढांकणुं ॥ हियय० मन० अपावं० हिंसा रहित ॥ अकलुसं० अप्रतीति रहित ॥ जीहा पणि नित्य मधुर भाषइ ॥ जंमि० जे पुरुषनइं विषइ छइ ॥ एह वउ नित्य ॥ से महु० ते मधुकुंभ सरि षो० मधु सरिषु ढांकणुं ॥१॥

जं लियं०॥ जेह ते मन॥ कलुसमयं ॥ अप्रतीतिसहित ऊपलक्षण थकी पापसहित परिणाम। तमधुकुंलविष्ठदांक तासरिषो॥३॥ चउव्विह उपसर्ग ते ऊपसर्गनो करणहार॥ तत्र उपसर्गकहइ छइ॥ सुत्र ५॥ ऊपसर्ग करनारना भेद कहइ छइ॥ तेहनां उपसर्ग मात्र ते दिव्य कह्या॥ आयसं०॥ पोतावकी ऊपजाइ॥ हास०॥ हासिइ करइ जिम चेला गोचरी जाता विंतरी हुंकाई रक मागिऊं॥ खेलइ इक हिंडं। खेलइ कहिऊं तेऊ आमेल वांछित पो मसुं तो ते दस्सु पाम्यं॥ विंतरीन इस्त्राम किआ बो आधीन। साधु॥ विकलथया। रूपांतर करी विंतरी इयुरु मइ जाण विऊं॥ गुरुइ

हियमपावमकलुसं जीहा वित कडुय तासिणं निच्चं। जंमि पुरिसंमि विच्छुति। से मजुकुंभे विसपिहाणे॥२॥ जं हियं अकलुसमयं जीहा वियमहुर तासिणी निच्चं। जंमि पुरिसंमि विच्छुति। से विसकुंभे मजुपिहाणे॥३॥ जं हियं कलुसमयं जीहा वियकडुय तासिणी निच्चं। जंमि पुरिसंमि विच्छुति। से विसकुंभे विसपिहाणे॥४॥ चउव्विहा उवसग्गा पं० तं० दिव्वा माणुस्सा तिरिक्खजोणिया आयसंवेयणिज्जा। दिव्वा उवसग्गा चउव्विहा पं० तं० हास पउस वीमंसा पुढो वेमाता। माणुस्सा उवसग्गा चउव्विहा पं० तं० हास पउस वीमंसा कुसी

विविधमात्रा हास्यादि वस्तु छइ जेहनइ॥ उपसर्ग विषइ ते हासादि सघला प्रकारि इते हास्य इकरा नइं प्रद्वेषकरइ इत्यादि संयोगिक ऊपसर्ग जिम संगमो पारबइ ऊपसर्ग करीनइ द्वेषकरतो हुउ॥ देवइ मनुष्यना हास्य थकी ते जिम गणिकानी दासी किशी क्षुल्लक नइ ऊपसर्ग करती हुइ॥ क्षुल्लक डंडइ ताडी। ऊगाडउ राजा लगइ गया॥ खेलइ श्री देहनउ दृष्टांत कहिऊं॥१॥ पउस०॥ द्वेषथकी ते गजसुकुमाल नइ जिम सोमल ब्राह्मणइ॥ वीमंसा०॥ परीक्षा थकी जिम चाणिकइ चंदगुप्तनइ धर्मकहिऊं॥ चंदगुप्तइं धर्म परीक्षा नइ काजइ। लिंगी सघला तेड्या॥ अंतेउरमाहि सघला पाहि धर्मकहिवरावंत॥ बीजा

जिम गविले गया॥ तथा वातपितादि सर्वरोग॥ तथा विहिकथा॥४॥ ते उपसर्ग सहित वा थकी ते कर्म नो उदय कइ तेह तणा कर्मनु रूप कहइ छइ॥ कीजाइ ते कर्म ते ज्ञानावरणादि॥ सुसात पुन्य प्रकृतिरूप

दर्शनी सघला बोल्या साधुनइ बोल्या॥३॥ कुसीलपडि०॥ अब्रह्म व्रत नुं पसेविवुं॥ जिमसांकइ कथा आमइ अधि साधुमाकल्यो। ते काइएकमकरी गृह नइ घरि पइठो तेहनी त्रिणि स्त्री इंगिम दीधा॥ प्रत्येक प्रत्येक च्यार पाहोर साधुनइ ऊपसर्ग कीधा साधु नक्षो भ्यो॥४॥ तथा०॥ भयथकी स्वानादि नो॥१॥ प्रद्वेषथकी चंडकोसीआ सग वेतडस्यो॥२॥ आहारनइ हेति इसिंघादिक॥३॥ अपत्य०॥ तेहोस॥ लयणति घर तेहरा क्षवा काजइ काग डीयादि डसइ॥४॥ आय०॥ पोतावकी॥ संव०॥ करइ॥ घट्टणाया०॥ आंखिमां हिं रज पडीइं। चोलतां दुखवा आव

लपडिसेवणया तिरिक्खजोणिया उवसग्गा चउव्विहा पं० तं० भया पदोसा आहार हेउं अवच्चलेणसारक्खणता। आयसंवेयणिज्जा उवसग्गा चउव्विहा पं० तं० घट्टणता पवडणता थंभणता लेसणता। चउव्विहे कम्मे पं० तं० सुभे नाममेगे सुभे सुभे नाममेगे असुभे असुभे नाम० ४ चउव्विहे कम्मे पं० तं० सुभे नाममेगे सुभविवागे॥ असु सुभे नाममेगे असुभविवागे ४

वेलीसु सात नवा पुन्य नो संचय करावइ। ते रतादिनी परि इं॥१॥ सुभ ते तिम इत्यादि। असुसात पापनो संचय थाइ॥ ब्रह्मदत्तादिनी परि इं॥२॥ असुभ पापप्रकृति रूप अतिकष्ट सहइ इह रि केसा बलनी परि इं। सुसात अकाम निर्जरि थी सुसनो संचय करइ॥३॥ असु ते०॥ चउथइ माठो प्रमुख॥४॥ सुत्त०॥ सातापणइ बांधिऊं॥ सुत्त वि०॥ सातापणइ उदइ आवइ॥१॥ सुत्त०॥ सातापणइ बांधिऊं॥ असुसा०॥ संक्रमवा नाव सथकी असुत पणइ उदइ आवइ॥ कर्म विषइ कर्मांतिनउ प्रवेस हुइ संक्रामननां मइ करणा वसथकी। तेतलां मुलप्रकृति अणालहाइ उत्तरप्रकृति संक्रमा थइ। आत्मा अध्यवसायनइ प्रयोगइ करी॥ तथा मतांतरआ श्रीगयो॥ मातु णमोउयं खलु॥ देसणा मोहं चरित्ता मोहं च॥ सेसाण पइडीणं॥ उत्तरविहा संक्रामा भयणीयं॥१॥ ते बां धिऊं असुभ सपणइ अनइ सुभ सपणइ उदइ आवइ ते संक्रम भंगी जालगानी पेरि॥३॥

इ अथवा गलामां हिं श्वासनां अं ज्ञवादिक ऊपनइ पाडइ॥१॥ पवडणता०॥ अनइ बोलतां पडइ ऊरक ऊपजइ॥२॥ थंभणाया०॥ घणीवेला ऊत्ते रिहिं बइ पगादि थंभन थाइ॥३॥ लेसणता०॥ पगासंकोचवीवेठो तिमइ

प्रकृति आदिक्यारि बोल। एणइ जठाणइ बीजइ उद्देसइ कह्या छइ तिम जाणिवा॥ हिवइ कर्मनुं स्वरूप तो संघ छइ जा
णइ ते तेणइ संघनुं स्वरूप कहइ छइ। श्रमणादि। ते संघ तो बुद्धिवंत हुइ ते तेणइ बुद्धिनुं स्वरूप कहइ छइ॥
अनइ बुद्धि ते मति नउ विसेष छइ। ते तेणइ मतिनुं स्वरूप कहइ छइ॥ संघ०॥ गुणरत्ननुं पात्र जे स्तत जी
व तेह्नउ संघ०॥ समूह॥ तपकरवा थकी श्रमण॥ अथवा निदानरूप थापरहित हुउइ मन इकरी सहित ते समन
न अथवा समुं मन ते समन॥ उक्तंच०॥ सो समणो जइ सम णो॥ सा वि ण य जइ नइ न हुइ पावमणो॥ सयणे य जणे
य समो॥ समो य माणो वमाणेसु॥१॥ अथवा सं०॥ समताइं करी सत्रु मित्र नइ विषइ॥ श्रणइं०॥ प्रवर्त्तित श्रम
ण॥ आरक्ष॥ नत्थि य सो कोइ वेसो॥ पियं वसद्देसु वेवज्जा विज्ञ॥ एएण होइ समणो॥ एसो अन्नो वि पज्जाउ॥
+ठितीक म्म ४ १ चउव्विहे कम्मे प तं पगडीकम्मे अणुभावकम्मे पदेसकम्मे चउव्विहे संघे पं तं सम
णा समणीउ सावगा साविया उ चउव्विहा बुद्धी पं तं उप्पत्तिया वेणतिता कम्मिया
पारिणामिया चउव्विहा मई पं तं उग्गह मई ईहा मई अवाय मई धारणा मई अह
श्रावक ३ इम शृणोति जिनवचनसां भलइ ते श्रावक। अथवा अर्वति थार्थसद्दहइ ते श्रावक गुणवंत। सात खेत्र नइ विषइ
धन्य बीज वाइ ते व क्री॥ अष्टकर्मनुं रज वीखरइ ते कहीइ॥ श्रावक सद्द महत्व अर्थ अथवा पदार्थ चिंतवइ विष
इ श्रद्धावाधइ ते श्रावक॥ पात्रि इधन्य वावइ॥ पुन्य संच इ अनइ साधुनी सेवा करइ ते क ... इम श्रावक। इमश्रा
विका पणि कांनुं माटइ स्त्री पणि अर्थ तिम इ जि॥ उप्पत्तिया०॥ तत्काल सांभली अर्थ विघटइ मती॥ तेह्वउ
पजावइ॥ नंदपुत्र रूहा नी परिइ॥ गुरु सेवा थी ऊपजइ ते वैनयिकी॥ कार्यनां समुद्र निस्तार वा समर्थ धर्म
अर्थ काम सास्त्र नउ सार सूत्रार्थ जेणइ ग्रहिउ ... लोकनां फलवंती॥ निमित्त सिद्ध पुत्र सष्यादिनी परिइ॥ कम्म
या०॥ आचार्य रहित विज्ञान ते कर्म आचार्य रहित विज्ञान ते सत्य॥ अथवा किंवा रिक इं करी इ ते कर्म॥ क
र्मना अभ्यासी जे लाध्यो कर्मनि परमार्थ॥ हिरन्यक कषी दिकनी परिइं॥ पारिणामकी०॥ दीर्घकाल लगइ १३४

पूर्वापरनुं अर्थनुं आलोचवुं॥ तत्परिणाम ते थकी ऊपनी ते परिणामिकी अनुमांन कारणमात्र॥ दृष्टांत इं करी साध्य॥ पा
की वय इ पुस्यो थाइ॥ कल्याण अनइ मोक्ष फल सहित॥ अभयकुमारादिकनी परिइ॥ मइ०॥ जाणवुं ते मति समुच्चय
इ वस्तुनुं समस्त विसेष रहित पहिलुं ग्रहिवुं। ते हज उग्गह मति ते अवग्रह मति विसेष थकी जे ते इनी वस्तुना त्त दनुं
आलोचवुं॥ आलोचवुं ते ईहा मति २ निश्चय करिवुं ते अवाय मती ३ आलोच्यानुं धरवुं ते धारणा मती॥ अरंज र०॥ उ
दक कुंभ०॥ तेहना उदक॥ समाण०॥ सरीषी मति ते घणा अर्थ ग्रहिवा नइ विषइ विचारवा नइ विषइ॥ असम
र्थ ते अल्प मति घणा थकी अनइ अस्थिर मति घणा थकी जिम अरंजरोदक सीघ्र घटइ। तिम ते मति घटी जोइ॥१॥
वा चउव्विहा मती पं तं अरंजरोदगसमाणा वियरोदगसमाणा सरोदगसमाणे सा
गरोदगसमाणे चउव्विहा संसारसमावन्नगा जीवा पं तं णेरइया तिरिक्खजोणीया म
णुस्सा देवा चउव्विहा सव्वजीवा पं तं मणजोगी वइजोगी कायजोगी अजोगी अहवा चउ
व्विहा सव्वजीवा पं तं इत्थिवेयगा पुरिसवेदगा णपुंसवेदगा अवेदगा अहवा चउव्वि
नदी आदिना वीरडा ना उदक सरीषी मति ते मति थोडी सी सारूपणइ अर्थ ग्रहिवा समर्थ। जिम वीरडानुं पाणी
घटइ वे हिलुं पणि न वु आवइ। तिम ते थोडी वली २ ऊपजइ ... उदक समान इं ते विस्तीर्ण पणा थकी बहु जण
नइ उपगारी पणा थकी मति मोटी इं नहीं २॥ सागरोदक सरिषी ते सकल पदार्थ ग्रहिवा अत्यंत विस्तीर्ण किहिइं
घटइ नहीं॥ तेहना बुद्धिनउ पार पणि कोइ न पामइ॥४॥ एहवी मति ते जीवकइ हुइ ते सणि जीवना सूत्र
५ ईहां मन जोगी अपीति ते कहइ ते बीजाइ बि जोग छइ तो तिकां न ग्रह्या। ते मन नुं प्रधान पणा माटइ मनो
योगी कह्या ते नारका दि॥ वचन योगी बेइंद्रियादि॥ काययोगी एकेंद्रियादि॥ अजोगी ते। ते रुंध्या जोग अन
इ सिद्ध॥ अवेदगा०॥ अवेदक सिद्धादि

आषिमा विषयानुं समुचइं जग्रहिवुं अवग्रह इहारूप ते चक्षुदर्शनि । ते चक्षुदर्शनी चउरिंद्रियादिक ॥ अचक्षु तेस्पर्शइंद्रियादि अवक्षु एकेंद्रियादि ॥ नोसंजयादि ते सिद्ध ॥ जीवनाअधिकारथकी पुरुषना लक्षसूत्र वि
उइ कहइछइ ॥ मित्ते० ॥ मित्र ते इहलोक विषइ उपगारी पणाथकी । वली मित्र ते परलोकना उपगारी पणा
थकी सद्गुरुवत् ॥ मित्र ते स्नेहवंतपणाथकी ॥ अमित्र ते परलोकना साधनना विघ्न सवाथकी कलत्रादिनी परि
॥ अमित्ते० प्रतीकुलपणाथकी अनइ मित्र ते निर्वेदनइं उपजाविवथी ॥ परलोकना साधनना उपगारीपणाथकी अ
विनीतकलत्रादि ॥३॥ अमित्र ते प्रतिकूलपणाथकी ॥ वली दुर्गति तेनी करणी करावि वाथकी ॥४॥ अथवा पच्छिलुं पव

हा सव्वजीवा पं तं चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहिदंसणी केवलदंसणी । अहवा चउव्वि
हा सव्वजीवा पं तं संजया १ असंजया २ संजयासंजया ३ णोसंजयाणोअसंजया चत्तारि पुरि
सजाया पं तं मित्ते नाममेगे मित्ते मित्ते नाममेगे अमित्ते अमित्ते नाममेगे मित्ते अ
मित्ते नाममेगे अमित्ते चत्तारि पुरिसजाया पं तं मित्ते नाममेगे मित्तरूवे चउभंगो चत्तारि पुरिसजाया पं तं मुत्ते नाममेगे मुत्ते मुत्ते नाममेगे अमुत्ते चत्तारि पुरिसजाया पं तं
मुत्ते नाममेगे मुत्तरूवे ४

इ कालआश्रीचउभंगीकरवी ॥ मित्ते० ॥ मित्रा इ चेतस्नेह छइ तेइ करी मित्ररूप ते बाह्यरूप बारकरवाथकी ॥३॥ मु
त्ते० ॥ ते कसंगादुव्यथकी । वली मुक्त ते भावथकी रागरहित सुसाधवत् १ ॥ अमुक्त ते रागसहितपणाथकी रा
कनी परिइ ॥२॥ अमुक्त ते दुव्यथकी मुक्त ते भावथकी राज्यावस्थानइं विषइ उपनुं केवलज्ञान भरतवत् ॥३॥ व
उथइ गृहस्थ ॥४॥ अथवा कालआश्री पच्छिलुं पछइ चउभंगी करिवी ॥ मुक्त ते रागरहित ॥ मुक्तरूप ते विरागी
साधुरूपे ॥ अमुक्तरूप ते नीरागी गृहस्थरूप श्री महावीरवत् ॥२॥ त्रीजइ रागसहितपणाथकी ॥ मुत्तरूवे० ॥
यतीरूप० ॥ यती विषइ धुर्त साधु ३ चउथइ गृहस्थ ॥४॥ जीवनाअधिकारथकी जीवनानि २ सूत्र कहइछइ

DAULAT ... MEMORIAL

१३६

वनाअ
धिकारथ
की क्रिया
नासूत्र
कहइछइ
॥ पवंवग
लिंदीयज
॥ पूर्वकेंद्री
आदि चउ
रिंद्री वर्जी
ते हमइ पा
चमी क्रिया
ते क्रियाकु
इ ते सर्व ॥
यद्यपि वे
इंद्रियादिक
मा हिसाथ्या
दइ नसम्य
कथी ऊइते
अल्पपणा
थकी विव
क्षुंनही ॥
सोलइंदे
ड किहां

वलीजीवनासूत्र २ अधिकारतलासूत्रकहइछइ ॥ असंमारं० ॥ अणहणतां ॥ जिह्वामयाउ० ॥ रसनामांम वाथ
की ऊपनुं त्यमाने दातरू पा ज सुषा ते हनउ ॥ अविरो० ॥ अणीहणान होकि ऊइ ॥ पते लइ बेइंद्रीनीजी सनुं सुष
न हणइ ॥ जिह्वामए सो० ॥ जीसेंद्री नी हाणि नुं त्य ऊपते हना । असं० ॥ संजोगनउ आमलणहारइछइ ॥ तिमफास० ॥

पंचिंदियतिरिक्खजोणिया चउगईया चउआगईया पं तं पंचिंदियतिरिक्खजोणि
या पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणे णेरइएहिंतो वा तिरिक्खजोणिएहिं
तो वा मणुस्सेहिंतो वा देवेहिंतो वा उववज्जेज्जा से चेवणं से पंचिंदियतिरिक्ख
जोणिए पंचिंदिय उहमाणे णेरइयत्ताए वा जाव देवत्ताए वा गच्छेज्जा मणुस्सा चउग
ईआ चउआगतिता एवं चेव मणुस्सा वि बेइंदियाणं जीवा असमारंभमाणस्स च
उव्विहे संजमे कज्जति तं जिब्भामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवति जिब्भामए
णं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति फासामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवति
एवं चेव ४ बेइंदियाणं जीवा समारंभमाणस्स चउव्विहे असंजमे कज्जति तं जिब्भा
मयाओ सोक्खाओ ववरोवित्ता भवति जिब्भामएणं दुक्खेणं संजोगित्ता भवति फासा
मयाओ सोक्खाओ ववरोवित्ता भवति एवं चेव सम्मद्दिट्ठिताणं णेरइयाणं चत्ता
रि किरियाओ पं तं आरंभिता परिग्गहिता मायावत्तिया अपच्चक्खाणकिरिया सम्मदि
ट्ठिता असुरकुमाराणं चत्तारि किरियाओ पं तं एवं चेव एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं
रि कहइ कहइ ॥ ते क्रीयावंत कुइ जिते पारका वितागुणनसाडइ ते नप्रकासइ ॥ एमइ अधिसूत्र २ थइ छइ

संतगुणे ॰॥ पुरुषनाछतागुण ॥ नासणा॰॥ नसाडइ अछतवइं ते नमानइं ॥ कोहे॰॥ रोषेण॰॥ रीसइं ॥ पडि
नि॰॥ परनीपूजाप्रसहइवइ ॥ अकयन्नुयाए॰॥ पारकोऊपगारकोधमेजाणइ नहीं ॥ २ ॥ मिछत्ताभि॰॥ मिथ्या
त्वमइं कदाग्रही करीइं ॥ संतिगुणे॰॥ छतागुणदीपावइ ॥ बोलइ ॥ किहांएक ॥ असंतगुणे ॥ एहवो पाठ
छइ ॥ अछतागुण बोलइ ॥ अज्झासववत्तियं ॰॥ गुरुकर्मी पिताशत्त गुरुना गुण बोलइ ॥ परछंदाणुं॰॥ आगि
लामइं अभिप्राय वर्तावुं ॥ २ ॥ ज्ञानादिकार्थमिह हेत इं ॥ ३ ॥ कयपडिकयत्ति॰॥ कोणइं किइं ऊपगारको
धसे अथवा गुणबोल्यां ॥ ते वलतो ऊसीकलथावानइं अछतागुण तेहनाकीर्तिइ ॥ ४ ॥ एगुणनस्साडवा
वऊहिं ठाणेहिं संतगुणेनासेज्जा तं कोहेणं पडिनिवेसेणं अकयन्नुयाए मिछ
त्ताभिनिवेसेणं वऊहिंठाणेहिं संतगुणेदीवेज्जा तंजहा अज्झासववत्तिं परछंदा
णुवत्तिं कज्जहेऊं कयपडिकयतेतिवा णेरइयाणं वऊहिं ठाणेहिं सरीरुप्पत्ती
सिया तंजहा कोहेणं माणेणं मायाए लोभेणं एवं जाव वेमाणियाणं णेरइया
णं चऊठाणनिवत्तितसरीरे पं तं कोहनिव्वत्तिए जाव लोभनिव्वत्तिए एवंजाव वेमा
णियाणं वत्तारिधम्मदारा पं तं खंती मुत्ती अज्जवे मद्दवे वऊहिंठाणेहिं जीवाणेरति
दिकतउसरीरइकोऊइ तेतणीसरीरनी उत्पत्तिनुं स्वरूपकहइछइ ॥ कोहेण॰॥ इहांक्रोधादिकतेकर्मबंधनाहे
तुवइ । अनइकर्मतेसरीर उत्पत्तिनुं कारणछइ ॥ तेतणो क्रोधादिकइकरी नरकादिकनांसरीरनीऊत्तिप
त्तिऊइ ॥ वऊठाणनि॰॥ विऊप्रकारिनीपज्याव्यानारकीनासरीर ॥ क्रोधइनीपनासरीरनारकादिकना ॥
इहांऊत्पत्तितेसरीरनुंप्रारंभवऊं ॥ निवर्ति तेसरीरनुंनीपजाविवुं ॥ क्रोधमइ निग्रहवइ तोधर्मऊइ तेत १२९

णाधर्मनुस्वरूपकहइछइ ॥ धम्मदारा॰॥ चारित्ररूपजेधर्मतेहनाबारणा॰॥ उपायधर्मआविवानु पणइंबारणांइं धर्म
आवइ ॥ एखांत्यादिकधर्मनांबारकेह्या ॥ छिवइ आरंभादि तेनरकनाघार बंधतेकहइछइ ॥ सुत्र ध नेरइयत्ताए = ठुसिर
॰॥ नारकीपणानणी ॥ कर्म॰॥ आऊखादिबांधइ ॥ अथवापांठांतरइं ॥ नेरइया ॥ उत्ताए॰॥ नारकीनाआऊखापणइं ॰॥ [illegible]संसा
॥ कर्म॰॥ दल ॥ प॰॥ बांधइ ॥ महारंभयाए॰॥ इछापरिमाणेवलीमर्यादानथीकांधप ५ एणइकारणिम्मा टऊआरंभते दि ॥ ऊ॰६
[illegible] यत्ताएकम्मं पकारेंति तंजहा महारंभत्तातेमहापरिग्गहत्ताते पंचिंदियवाहेणं कुणि
माहारेणं वऊहिंठाणेहिं जीवा तिरिक्खजोणियत्ताएकम्मंपगारेंति तंजहा माइल्लता
ए णियडिल्लताते अलियवयणेणं कुडतुल्लकूडमाणेणं वऊहिंठाणेहिं जीवा मणुस्स
त्तातेकम्मंपगारेंति तंजहा पगतिभद्दताते पगतिविणीययाए साणुक्कोसयाए अमच्छरि
याए वऊहिंठाणेहिं जीवा देवाउयत्तातेकम्मंपगारेंति तं सरागसंजमेणं संजमासंजमे
णं बालतवोकम्मेणं अकामणिज्जराए वउव्विहे वज्जे पं तं ततेवितते घणे झुसिर

त्रघव्यादिनइं उपमर्दमइकरी तेचुऊरत्ताहि ॥ महापरि॰॥ महातेतिमईऊ ॥ परिग्रहतेहिरणपुसुवर्णद्विपदच
तुःपदादि ॥ कुणिम॰॥ मांसनइंआहारिइ ॥ माइल्लियाए॰॥ मायावीयापणइ ॥ एतलइमननोकूटलाईइ ॥ नियडि॰॥ आ
गल्लानइंवंचवानइंकाजइकायानोविष्टानुंकरिवुं ॥ २ ॥ कुड॰॥ कुडीत्राजुई ॥ कुडामापतेहनइव्यापारिइ ॥ पगति
भ॰॥ स्वभावइंपरनइंसंतापनऊपजावइ तेतइक ॥ १ ॥ साणुको॰॥ दयासहित ॥ ३ ॥ अमछ॰॥ परनागुणनीअदेखा
इनकरि ॥ ४ ॥ सरागसंजम॰॥ सकषायचारित्रिइ । जितणीवीतरागनइंआऊखानोबंधनथी ॥ संज॰॥ देसविरति ॥
बाल॰॥ बालकनीपरितेबालकतेमिथ्यात्वीतेहना ॥ तवोकम्म॰॥ तपनइंकरवइ ॥ अकामनि॰॥ निर्जरानाअभि
लाषविनाक्षुधादिकनइंसहिवइ ॥ अनंतरदेवऊत्पत्तिनुकारणकह्याछइं ॥ देवतावाजित्रनइं विषइररूछइ तेत
णीवाजित्रादिकनास्वुत्रेद्कहइछइ ॥ वऊ॰॥ वाजित्र ॥ तत॰॥ वीणादिक ॥ वितत॰॥ पटहादिक ॥ घनतेकांसतालादि
क ॥ ३ ॥
[illegible]

अंचिए० रहीरहीनाचइ॥ रिभिए० गीतसहितपदनी संज्ञाइं नाचइ॥ आरभडे० नाचतां बहीवली बोलइं॥ भि
सोले० नाचतांनी चोपडइ॥ गीए० गीत॥ उक्खित्त० धुरिगातां मधुर॥ पत्तए० कलालिलेई गाइ॥ मंद
ए० कतर तो स्वर मांडिइं मोडिइं मुकइ॥ रोविंदए० बेहडइजाणइ रोइबइइस्यो रागकरइ॥ मल्ले० फु
लनी माला॥ गंथिमे० सूत्रसंघातिइंगुंथबइंनी पनी माला॥ मालानइं वीटियइ जेनी पनुं ते वेढिम मुगटा
दि॥ पुरवइनी पनुं ते पुरिमं ते माटी हुसा ऊन तेहना बिंडपुरवइ॥ अथवा वंसनी सलाकानुं जे पंजर ते फु
लिइं करी पुराइ ते पुरिमं॥ संघातिम० माहोमाहि फुलनी घणी माला नइं मलवइनी पनुं ते॥ विस्तुथा

चउव्विहे नट्टे पं० तं० अंचिए रिभिए आरभडे भिसोले चउव्विहे गए पं० तं० उक्खित्तए प
त्तए मंदए रोविंदए चउव्विहे मल्ले पं० तं० गंथिमे वेढिमे पुरिमे संघातिमे चउव्विहे
अलंकारे पं० तं० केसालंकारे वत्थालंकारे मल्लालंकारे आभरणालंकारे चउव्विहे अ
भिणए पं० तं० दिट्ठंतिते पांडुसुते सामंतोवातणिते लोगमज्झावसिए सणंकुमारमा
हिंदेसु णं कप्पेसु विमाणा चउवन्ना पं० तं० णीला लोहिता हालिद्दा सुक्किला महासुक्कसह
स्सारेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं चत्तारि रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं

करइ ते णइ करी ते अलंकार॥ केसइं करी मइं विस्तारकराई ते केसालंकार॥ अभिणए० एक अंगी नो अर्थहि
त्रिमाहिनथी॥ देवतानाअधिकार लगी वली देवतानासूत्र २ केहइ छइ॥ सोहम्मय पंचवन्ना॥ एकेकहाहाणी ए
ज्ञी सु. हस्सारा॥ दो दो तुल्ला कप्पा॥ तेणपरं पुंडरीयाउ॥१॥ जे मेघ की मरणलेगइ जेहनई रहइ॥ ते भवधा
रणिय सरीर॥ रयणी० हाथ। अनिरायंघ नइ बिबइं साथ माहे ते ते रयनी कहियइ॥ पाणिइं हाथ संमुंख इंहा
बधुराली छइं॥ सनत्कु० वत्ता१० वला ए जोइ८ सोहम्मीसाणे॥ सनं कुं तिरयणी उ॥ इक्किक हाणी सेसा॥ दुगे य दु
गे य चउक्के य॥१॥ गेविज्जेसु उन्निय॥ इकार यणी अणुत्तरसु॥ रसु भवधारणीसरीर॥ अहिं ते ते तर वेक्रि

यतो लाख जोयण नु छइ। ए देवता कह्या॥ ए देवता उअपकाय पणइ ऊपजइ॥ तेसणी ऊदकगर्भनु स्वरूप कहइ छइ॥
सुत्र २॥ दगगब्भा० पाणी नागर्भनी परि इंगर्भ ते दगगर्भ काल नी तर इंपाणी घरसवानु कारण। तेह ना जणा व
णाहार। ते ऊदकगर्भ॥ उस्सा० ठार॥ महीया० धुंयरि॥ सीया० अत्यंत ताढि॥ ऊसिण० अत्यंत उस्न। ए
ऊणइ दिहाडइ उपना ते दिनथी निर्विघ्न होइ तो ऊत्कृष्ट ऊं ब गइ मसवाडइं ऊदक प्रसवइं॥ अनेइ रा इम कहइ
इ पवन आसलां वृष्टि वीजली। गाजि। सीत। ताप। किरण। जलकुंडु। जलमछ॥ इंद्रधनुष ए दस मेघ गर्भ रस

पन्नत्ता चत्तारि दगगब्भा पं० तं० उस्सा महिया सीया उसिणा चत्तारि दगगब्भा पं० तं०
हेमगा अब्भसंथडा सीतोसिणा पंचरूविता माहे उ हेमगा गब्भा फग्गुणे अब्भसंथ
डा सीतोसिणा उ चेत्ते वतिसाहे पंचरूविता चत्तारि माणुस्सीगब्भा पं० तं० इत्थिताए पु
रिसत्ताए णपुंसगत्ताए बिंबत्ताए अप्पं सुक्कं बहुं ओयं इत्थी तत्थ जायति अप्पं ओयं ब
हुं सुक्कं पुरिसो तत्थ जायति दोन्हंपि रत्तसुक्काणं तुल्लभावे णपुंसओ इत्थीओ तत्समा

ववानो हेतु॥ हेमगा० हीमनुं पडिवुं॥ अब्भसंथडा० मेहिइं आकासनुं आछादिवुं॥ सीओसिणा० अत्यंत सी
तो स्न॥ पंचरूविया० गाजि वीजि॥ जलवाय। आसलो एपांच रूप सहित ऊदकगर्भ॥ ते म स बा डा न इ ते दिहडे दिषा
उइ छइ॥ माहे० माह मासवाडइ हीम पडवइ गर्भ बंधइ॥ फग्गुणे० फागुणइ आसलइ आकास आछादवइं ग
र्भ बंधाइ॥ चैत्रमासि इं सीत ताप हिमइं गर्भ बंधाइ॥ विसाखि इं पंचरूप थाइ गर्भ बंधाइ॥ गर्भना अधिकार थकी स्त्री
न उगार्भ कहइ छइ॥ बिंबताए० बिंब गर्भनु प्रतिबिंब ते गर्भनइ आकार इ लोहीना परिणाम। पणि गर्भ नहीं॥
आनरइ य थिइ के हिं ऊ छइ। जे स्त्रीनइं वायु थकी गर्भ रूप लोही॥ बंधाइ ते बिंब॥ तुल्लेसो॥ गर्भ बंधवानु विचित्र का
रण कहइ छइ॥ अप्पं सुक्कं बहुं ओयं इत्थी तत्थ जायइ॥ अप्पं ओयं बहुं सुक्कं। पुरिसो तत्थ जायइ॥१॥ दोन्हं
पि रत्तसुक्काणं॥ तुल्लभावे नपुंसओ॥ इत्थी ओयसमाओगे बिंबं तत्थ य जायइ॥२॥

गर्भ तो जन्म हुइ। जन्मांतर उपजवुं॥ उपजवानो अधिकार कह्यो तेथी पूर्वमांहि विस्तार इम कह्यो छइ। ते सर्व पूर्व
नुं स्वरूप कहइ छइ॥ उत्पाद पूर्व तिपिहिलु तेहनी चुला०॥ अग्रिम आचारांगनी चुलिका। ते रूप उजे वस्तु०॥
अधिकारनी समाप्ति विसेष अध्ययननी परिइं। ते चुला वस्तु तच्चारि छइ॥ उत्पाद पूर्व तिका व्यविरस प्पछइ॥ ते
सर्व काव्यनुं स्वरूप कहइ छइ॥ कव्वे० काव्य ते ग्रंथ॥ गज्जे० गद्य ते छंदरहित बोधिकुं॥ सत्रपरिज्ञा अध्ययननी
परिइं॥ पज्जे० पद्य ते छंद करी बांधिउं॥ विमुक्ता अध्ययननी परिइं॥ कत्थे० कथाइ करी बांधिउं ज्ञाता अध्ययननी परिइं
गेए० गान जोग्य० इहां कथा नइं गान ए बोल ते गद्य पद्य मांहि आवइ॥ तो अलगा कां कह्या ते एतला भणी। क
थ्यातिक था माटइ जुई ग्रही॥ गान ते गान जोग्य॥ एह वइ विसेष इ जुई ग्रही॥ अनंतर गानक हिउं ते तो भाषा

लोगबिंदुसारपज्जवसति ॥ उप्पायपुव्वस्स णं चत्तारि चूलवत्थू पं० ॥ चउव्विहे कव्वे पं० तं० गज्जे
पज्जे कत्थे गेए ॥ णेरतिताणं चत्तारि समुग्घाता पं० तं० वेयणासमुग्घाते कसायसमु
ग्घाते मारणंतीयसमुग्घाते वेउव्वियसमुग्घाए ॥ एवं वाउक्काइयाण वि ॥ अरहतो णं अरि
ट्ठनेमिस्स चत्तारि सया चोद्दसपुव्वीण मजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरसन्निवाईणं
जिणो इव अवितहवागरमाणाणं उक्कोसिया चोद्दसपुव्विसंपया होत्था ॥ समणस्स णं

वेदनाइ करी जीवना प्रदेसनुं बाहिरि काढिवुं॥ ते वेदनासमुद्घात॥ कषायसमु०॥ २॥ मरणनइं अंतिं तइं मरइ जि
विक्रियसमुतघातइं मरइ॥ विक्रियसमुघात ते लब्धि विसेष छइ॥ ते लब्धिना प्रस्ताव थकी सुत्रलब्धिनुं स्वरूप
कहइ छइ॥ अजिणाणं० असर्वज्ञपणा थकी॥ जिणसं० जिन सरिषा ते अविघटनु बोलवा थकी॥ अमइ जेह
बुझा नइं दीठु तेह व उपदेस करवा थकी॥ सव्वक्खरस० जे अक्षरादि अक्षरना॥ संनिवात० वअणादिकना सं
योगा ते एकेका अक्षरना अनंता अर्थ छइ जेतला तेतला अनंता संयोगी आ अक्षरनुं ज्ञान छइ जेहनइ एपातइ जिन
सरिषा कह्या तेहनुं कारण कहइ छइ॥ जिसलो जिणा इव० जिननी परि सार्चु बोलइ॥ उक्कोसिया० कही वित
वतेला उपराति अधिका न थया

छइ॥ ते भाषा तो लोकना प्रदेस पूरइ॥ अनइ समुघात तो सर्वलोक मइ पूरइ॥ ते सर्व ... वाना सरिषा पणा थकी समुघातनुं स्वरूप कहइ छइ॥ समुग्घाया० सरीर बाहिरि जीवना प्रदेसनुं काढिवु॥ १३८

ते माहिलि देवलोकि गया। ते सर्व देवलोकनुं स्वरूप कहइ छइ॥ पूर्व अनइ पश्चिमना गमा बिहुं बेहडउ अर्द्धचंद ते सर्व अर्द्ध
चंद्रमा सेद्धाण॥ देवलोकतो छेत्र छइ॥ छेत्रना प्रस्ताव थकी समुद्रनुं स्वरूप कहइ छइ॥ एकेको जे जुजुअ छइ रस छइ
पाणी सरिषो रस नहीं ते प्रत्येकरस॥ लवणसरिषुं उदक छइ जेहनुं ते लवण॥ पाणी तरि लवणोद अर्थ ते ही जि॥ १॥ वारु
णोए० मद्यसरिषुं पाणी छइ जेहनुं ते सर्व वारुणी चउथ॥ दुधसरिषु पाणी छइ जेहनु ते खीरोदक पांचमो॥ घीस
रिषुं पाणी छइ जेहनु ति घृतोदक छठो॥ ए समुद्र कह्या॥ समुद्र मांहि ते आवर्त निछइ। तेहनु दृष्टांति कसहित कहइ छइ

भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वादीणं सदेवमणुयासुराए परिसाए अपराजियाणं उक्कोसि
ता वातिसंपया होत्था ॥ हेट्ठिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचंदसंठाणसंठिया पं० तं० सोहम्मईसाण
सणंकुमारमाहिंदे ॥ मज्झिल्ला चत्तारि कप्पा पडिपुन्नचंदसंठाणसंठिया पं० तं० बंभलोग लंतए
महासुक्के सहस्सारे ॥ उवरिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचंदसंठाणसंठिया पं० तं० आणते पाणते
आरणे अच्चुते ॥ चत्तारि समुद्दा पत्तेयरसा पं० तं० लवणे वारुणोए खीरोदे घतोदे ॥ चत्ता
रि आवत्ता पं० तं० खरावत्ते उन्नतावत्ते गूढावत्ते आमिसावत्ते ॥ एवामेव चत्तारि कसाया पं० तं०
खरावत्तसमाणे कोहे उन्नतावत्तसमाणे माणे गूढावत्तसमाणा माया आमिसावत्तसमाणे लोहे

सुत्र २॥ चत्तारि०॥ आवर्तन०॥ धुमणी चक्र मइं आकारिइं॥ खरावत्ते०॥ कठोर आवर्त्त॥ उन्नतावत्ते०॥ ऊ
चकं॥ गुढावत्ते०॥ ए दोनीगां ठीनी परिइं॥ आमिसावत्ते०॥ पंषीयादिक मासादिक मइं अर्थइं आवर्त्तन करइ॥ ४॥
आरिआ वर्त्तसरिषा कषाय ते परनइं वाडवु करवा थकी॥ महा रोद्र॥ अथवा क्रोध ते खरपरावर्त्तसरिषु॥
आगली वस्तुपर त्रेरणा दिनइ जिम वायु ऊंचु उपाडइ। तिम ओपणि ऊंचु लखवइ ते तउ उन्नतावर्त्तसरि
षो मान॥ अंतरकलो न जाइ। ते गुढावर्त्तसरिषी माया॥ ३॥ अनर्थना संगि मइ विषय पडवाना कारण थकी आ
मिषावर्त्तसरिषो लोभ॥

एउपमा उत्कस्ता क्रोधादिक नइ जाणिवी॥ हिवइ एहनुं फलकहइछइ॥ अणुपविट्ठं॰॥ एहवी कषायनइं विषइ
पोहोता थका॥ एकषाय अशुभपरिणाम अनइं अशुभकर्मबंधननाकारणछइ तेहणी दुर्गतिआपइ॥ एनार
ककह्या तेविक्रियलब्धिकरी देवतानइं तेसरीषा छिइ। तेहणी देवताइं जनोसदननां त्रनुस्वरूपकहइछइ॥
देवतादिकनाल्लदतो जीवनइं कर्मइंकरीथाइ तेहणीकर्मनुं स्वरूपकहइछइ॥ जीवाणं॰॥ जीवइं॥ चउठाण॰॥ नारका

खरावत्तसमाणो कोहं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति णेरइएसु उववज्जइ उन्नतावत्तसमाणं
माणं एवं चेव गूढावत्तसमाणं मायमेवं चेव आमिसावत्तसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे का
लं करेति णेरइएसु उववज्जइ अणुराहा नरकवेयजेतार पन्नत्ते पुव्वासाढा एवं चेव उत्तरासा
ढा एवं चेव जीवाणं चउट्ठाणनिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणि
स्संति वा नेरइयनिव्वत्तिते तिरिक्खजोणितनिव्वत्तिते मणुस्सनिव्वत्तिते एवं उवचिणिंसु वा उ
वचिणिंति वा उवचिणिस्संति वा एवं बंध उदीर वेत तह निज्जरा चेव चउपदेसिया खंधा अणंता
पन्नत्ता चउपदेसोगाढा पोग्गला अणंता चउसमयट्ठितीया पोग्गला अणंता चउगुणकाल
गा पोग्गला अणंता जाव चउगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पन्नत्ता चउट्ठाणस्सम्मत्तं॥ ४॥ ४॥

एतलइ पापप्रकृति अल्पप्रदेसनी तीव्र अल्पप्रदेसनी काधी॥ नेरइय॰॥ नारकी बलइं नीपजाव्या इम तिर्यंचादिक ब्रत
तइं नीपजाव्या॥ उवचि॰॥ वली वली विरत्या॥ बंध॰॥ सघलि बंधननो तेगाढि बंधनइं बांध्या॥ उदी॰॥ जि दल उदइ आ
व्यां तेमां हिं अणउदइ आव्यां दल तेह आकर्षीनइं वेदवुं॥ वेद॰॥ समइं समइं प्रतिइं प्राताना रसनइं विपाकिइं ल्लोग
वुं॥ निजरा॰॥ समइं प्रतिइं कर्मनुं निर्जरवुं॥ पुद्गलना अधिकारथकी वली द्व्यादित्तदिइं पुद्गलनुं स्वरूपकहइछइ॥
वेउघाठाणनउ चउघउक्रदेसी सम त्तो॥ ४॥ चउठाणं सम्मत्तं॥ ४॥ जीवाजीवचउठाणइं अवतरया॥ पंचठाणइने

दिककथा त्तगतो नापजा व्यापुद्ग लअसुत्त पदिणा मघकं॥ पावस्रात ०॥ अमं स्वरूप शानाव रणीआ दिपणा चिणिंसु ०॥ आग इनाकर्म पुद्गलस त्तातिइ ...॥
१४०

हजि अवतारइछइ॥ चउठाणमइं बेहिल्लइसुत्रइं अजीवनोपरिणामकह्या॥ ईहांधुरिलइसुत्रइं जीवनाप्रणामकहीछइ
महा॰॥ मोटांव्रत तेसर्वजीवादिकनइंमहोउपगारमाटइ॥ कहियं॥ पढमंमि सव्वजीवा॥ बिएचरिमयसव्वदव्वाई॥ स
सामहव्वया खलु॥ तद्देकदेसणदव्वाणं॥ १॥ तेउमनइं एकादसिकरी॥ अमइवलीमाटापणु तेजीवाजीवलगणि २
त्रिविधित्रि पचषवइकरी॥ अथवादेसवृत्तिनी अपेक्षाइं माटइमोटां जगुणवंतनां व्रत तिमहाव्रत॥ पं॰॥ पचूव्यां
स्वामहावीरइ॥ अनइ आदिदेवइ। पणि बावीसिइं नहीं॥ एववन स्वामीइं जंबुस्वामी प्रतिइं कहिउं॥ सव्वाउ॰॥
सघला॰॥ अस्थावरसूक्ष्मबादर। करिवुं करावुं अनुमोदवानइं भेदइं॥ अथवाद्रव्यथकीछकायविषइ॥ क्षे
त्रथकी त्रिलोकविषइ॥ कालथकी अतीतादि अथवा रात्र्यादिविषइ॥ भावथकी रागद्वेषइंकरी॥ प्राण॰॥ इंद्रीउच्छ्वा
स आउषादिकनुं॥ अतिपात॰॥ प्राणीकहइ षाविध्वंसवा एतलइ प्राणनाविसोगकरिवो इत्यर्थः॥ तेप्राण

पंचमहव्वया पं० तं० सव्वातो पाणातिवायातो वेरमणं जाव सव्वातो परिग्गहातो वेरमणं

तपातत थकी॥ विरमण॰॥ ज्ञानदर्शनचारित्रपूर्वकनिवर्त्तवुं॥ १॥ सव्वाउ॰॥ सर्वथकी व्रतासावद्यनुं निषेधवुं॥ १अ
ठतालाषनुं काढिवुं॥ २॥ अपांतरनुं कहिवुं॥ तेइश्वरिइं जगतकीधं इत्यादि ३॥ गरहा॰॥ पारकी निंद्यानुं करिवुं॥
एथकी अनइं बोलिवुं। बोलाविवुं॥ अनुमोदिवुं॥ मृषानुं अथवा द्रव्यथकी सर्वधर्मास्तिकायादिद्रव्यनइं विषइ॥
क्षेत्रथकी सर्वलोकालोकविषइ कालथकी अतीतादिविषइ अथवा रात्र्यादिविषइ॥ भावथकी कषायनोकषा
यइंकरीमृषानुं बोलिवुं तमृषावाद तेहनुं निवर्त्तिवुं॥ तेसर्वथकी मृषावादनुं विरमण॥ २॥ सव्वाउ॰॥ सर्वथकी
अदत्तिना लेवा लेवराविवादिकथकी॥ अथवाद्रव्यथकी सचित्ताचित्तद्रव्यविषइ॥ क्षेत्रथकी ग्रामादिविषइ॥ का
लथकी अतीतादिविषइ॥ अथवा रात्र्यादिविषइ॥ भावथकी रागद्वेषमोहइंकरी॥ अदत्त॰॥ स्वामीनुं अणदीधुं॥ तेह
नुं ग्रहण आदान॥ लेवुं। तेहथी विरमण॰॥ निवर्त्तिवुं तेसव्वाउ अदिना॰वि॰॥ सव्वाउ॰॥ सेववा सेवराविवादिकथी॥ अ
थवा द्रव्यथकी॥ उक्त मनुष्य तिर्यंचनइं विषइ॥ अथवा रूपनइं विषइ॥ रूपते लक्षणरहित अनइं रूपसहगततेह

वणासहित॥ षेत्रथकी त्रिलोक्यविषइ कालथकी अतीतादि विषइ॥ अथवा रात्र्यादि विषइ॥ भावथकी रागद्वेषिइं करी
मिथुन॰ स्त्रीपुरूषनुंजोडलुं तेहनोकर्म ते मिथुन तेहथकी निवर्त्तवऊं ते वेरमण ते॥ सव्वा३॰॥ सर्वथकी तेद्रव्य
वादिकथकी अथवा द्रव्यथकी सर्वद्रव्य विषइ॥ क्षेत्रथकी लोक विषइ॥ कालथकी अतीतादि विषइ अथवा रात्र्यादि
५ परिग्रह ५ विषइ॥ भावथकी राग द्वेषइ प॰॥ अहिं तेहथी निवर्त्तवऊं ते वेरमण॥ व्रतनाप्रस्तावथकी अनुव्रत कहइ छइ॥
नाहोनाजे व्रत ते अनुव्रत॥ नाहोना परं ते महाव्रतनी अपेक्षाइं अल्पऊपगारी पणाथकी॥ अथवा महाव्रत कह्या
केडइं कहीए ते अनुव्रत एतलइ ऊत्तक ह्यइं सौ गीइ पहिलुं इं चारित्र ल्यो। नालवराइंतो अनुव्रत पालो॥ तेसतीअ
नुव्रत अथवा सर्वव्रतनी अपेक्षाइं नाहाना गुणवंत नाजे व्रत ते अनुव्रत॥ थुल॰॥ बेंद्रियादिजीव॥ स्थुल परं जेह
नइं एतलासणी जे लोकिकमार्गिइ पणि एहनइ जीव सदहइ तेसणी स्थुलवस्तुनइ विषइ अतिदुष्ट जेमबावा
द तेहथी निवर्त्तवुं॥ २॥ थुला३॰॥ मोटी वस्तुनी चोरी अतिदुष्टाध्यवसायपुर्वककरवी ते अदत्तथकी निवर्त्ता वि

पंचाणुव्वता पं. तं. थुलातो पाणाइवायातो वेरमणं थुलातो मुसावायातो वेरमणं थु
लातो अदिन्नादाणाउ वेरमणं सदारसंतोसे इच्छापरिमाणे पंचवन्ना पं. तं. कन्हा नी
ला लोहिता हालिद्दा सुक्किला पंचरसा पं. तं. तित्ता जावमहुरा पंचकामगुणा पं. तं.
सद्दा रूवा गंधा रसा फासा।

वुं॥ तेस्थुला३अ॰॥ ३॥ स्वदारासंतोष ते पोतानी स्त्रीथकी आनेरी विषइ इच्छानिवृति॥ ४॥ इच्छा॰॥ धनधान्यादि परि
ग्रहनी इच्छा अभिलाषनुं जे प्रमाण ते निवृति॥ ५॥ इच्छापरिमाण विषइ इंद्रियना विषइनुं परिमाण करिवुं वरते
तेणी इंद्रियना विषय कहइ छइ॥ सुत्र १३॥ इहा वर्ण ५ रस ५ कह्या पणि बिआदि संख्यागनीपऊइं तेतनथी कह्या॥
काम॰॥ मदन॥ अथवा अभिलाष तेहना जे ऊप जावणहार॥ गुण॰॥ पुद्गलनाधर्म तिका मगुण अथवा वा
ञ्छीइं ते कामगुण॥ ५४१

सज्जंति॰॥ संगसंबंध करइ॥ करमणादि विषइ॥ २ ज्जंति॰ रागइ पोहो चइ॥ मुच्छंति॰॥ मुर्छाइ॥ चिंणीघा॰॥ मरणपामइ॥
मणादिनीपरिइं॥ अथवा असंसारथामइ तिहाइ॥ पाम्यानइ विषइ असंतोषिइं करी अणपाम्यानी वांछावंत॥ अझो
तेहनइं विषइ एकचित्तथाइ॥ तेऊपार्जवानइ विषइ॥ अधिकपणुं करइ॥ उपाय्यचिंइ तेहनी घटनाकरइ॥ अ
परिन्नाया॰॥ ज्ञपरिज्ञाइ करी नथी स्वरूप नजाणिऊं। तेह नउ अनइ प्रत्याख्यान परिज्ञाइं करी परिहर्यानही॥ अ
हियाए॰॥ हितनुंकारण नथइ॥ असुहाए॰॥ पुन्यसणी नही॥ अथवा असुह॰॥ असुखपणानी॥ अखमाए॰॥ अजोग्यपणा

पंचहिं ठाणेहिं जीवा सज्जंति सद्देहिं जावफासेहिं एवं रज्जंति गिज्झंति अज्झोववज्जंति पं
चहिं ठाणेहिं जीवा विणिघायमावज्जंति सद्देहिं जावफासेहिं पंचठाणा अपरिन्नाता जी
वाणं अहिताते असुहाते अखमाते अणिस्सेसाते अणाणुगामियत्ताते भवंति
तं सद्दा जावफासा पंचठाणा सुपरिन्नाता जीवाणं हिताते सुहाते जाव आणुगामि
यत्ताए भवंति तं सद्दा जावफासा पंचठाणा अपरिणाता जीवाणं दुग्गतिगमणाए भवं
ति सद्दा जावफासा पंचठाणा परिणाया जीवाणं सुगतिगतिगमणाए भवंति तं सद्दा जा
व फासा पंचहिं ठाणेहिं जीवा दोगतिं गच्छंति तं पाणातिवातेणं जावपरिग्गहेणं पंच
हिं ठाणेहिं जीवा सोगतिं गच्छंति पाणातिवातवेरमणेणं जावपरिग्गहवेरमणेणं

णं॥ अथवा असमर्थपणासणी॥ अनिस्से॰॥ कल्याणसणीनही॥ अथवा मम्क्षसणीनही॥ अणाणुगा॰॥ जेसुनबंधसवांत
रिकडइ जाइ तिमनथी॥ सुपरिन्नाया॰॥ ज्ञपरिज्ञाइ स्वरूपथी जाणया॥ प्रत्याख्यानपरिज्ञाइं परिहर्या॥ दुग्गइगा॰॥
नरकादिकगतिनीप्राप्तिसणी थाइ॥ सुगइग॰॥ सिध्यादिपामि थाइ॥ हिवइ दुर्गतिसुगतिनुं पामवानु कारण विसे
षिइं कहइ छइ ते सुगम॥ संवरनइ तप ते मोक्षनाहेतु छइ॥ संवर ते कह्यो। हिवइ तपना भेद
कहइ छइ॥

सद्दप्रतिमा बिकु दिहाडइ पुरी थाइ॥ महासद्दा ४ दिहाडइ पुरीथाइ॥ सर्वतोसद्दा दस दिहाडइ पुरीथाइ॥ सुसद्दाका ह्यी जोनहीतसणो विस्तारीनहो॥ सर्वतोसद्दा तप्रकारांतरइ कह्यो छइ॥ तिहां सर्वतोसद्दा॰ तोबस्ति दिइ एक काउसग्गरूप एक तपरूप काउस्सग्गरूपा तकह्यो॥ तपरूपना त्रिद लकुडी नइ थडी तिहां लुकडीा ते एक आदि पांचक पवासिइ कुइ। तिहनी स्थापना। पारणांना दिन २५ वलीत एकआदि सातिरूपवास इकरी कुइ एक सोर्वनु ५ दिहाडई नइ तपइंकरा पुरीथाइ पारणाना दिन ४९ वडी नीस्थापना॥ सदुत्तरप्रतिमा बिकु लिदिइ लकुडी घडी॥ तिहां लकुडी ते पांच आदि नवरूपवास इपुरीथाइ। एकसो पंचोतिर १७५ दिहाडा तपना॥ पारणा २५ दिन॥ वडी ते पांच आदि अग्यारिरूपवा सिइ पुरीथाइ॥ त्रणिसिबाणु दिहाडा तपना॥ पारणा ४९ पहिनी स्थापना॥ एकर्म निर्जराहेतु तपकह्यो॥ कर्मतेसंयमइ करी आवतां रहिइ॥ संजमनो जीवादिक नोकुइ तिणी

पंच पडिमाता पं तं सद्दा सुसद्दा महासद्दा सब्वतोसद्दा सद्दुत्तरपडिमा पंचथावर काया पं तं इंदथावरकाय बंभथावरकाए सप्पथावरकाए समुत्तीथावरकाए पयावई

थकं इत्यादिक जीवकहइ छइ॥ थावर नामकर्मना उदयथकी थावर तेप्रथिव्यादि तेहनी काय॰॥ रासि ते समुह॥ अथवा स्थावरकाय सरीर छइ जेहनु॥ इंदथावरकाय॰ इंद्रियतेहनउ अधिपति छइ तेहणी इंद्रीन ३ ॥ यस्थावरकाय तेस्थावर काय। इंद्री स्थावर काय ते प्रथिवीकायनुं नाम॥ ब्रम अेह ते अपकाय॥ सल्प ते अग्निकाय॥ समुती॰॥ वायकाय प्रजापति वनस्पतीकाय॥ हिवइ पांच थावरना नायक कहइ छइ॥ थावरकाया हिवइ॰ स्थावरकाय प्रथिव्यादि

		१२३४५६७	५६७८९१०११
५६७८९	१२३४५	४५६७१२३	८९१०११५६७
७५९५६	३४५१२	७१२३४५६	११५६७८९१०
९५६७८	५१२३४	३४५६७१२	७८९१०११५६
६७८९५	२३४५१	२३४५६७१	१०११५६७८९
९९५६७	४५१२३	६७१२३४५	६७८९१०११५

थावरकाए पंचथावरकायाहिवती पं तं इंद थावरकायाहिवती जाव पयावई थावरकाताहि

नाजि अधिपति॰॥ नायक ते थावरकाया अधिपति सुमसताबीइ छइ॥ ते इंद्रो दिपांच जिम पुर्वादिदसिना इंद्रादि देव अधिपति॥ नक्षत्रना अश्वयमादि अधिपति॥ दक्षणोत्तराद्ध लोकनादि मसक्रिइ अधिपति। तिम इंद्रादि प्रथिव्यादि स्थावर काय नइ अधिपति १४२

एदव तो अवधिवंत कुइ। तेहणी अवधिनुं स्वरूप कहइ छइ॥ ज हिंदसणे॰॥ अवधि इंकरीय अर्थनुं अवधुत अवध्यदर्शतेन त॥ सभु॰॥ उपजणहार छइ॥ तपदमा याए॰॥ अवधिदर्शनि उपाजिवानइ पहिलइ समइ॰॥ खभाइ॰॥ खभा ताइ पलाइ स्तर्ध॰ अप्पत्तयं॰॥ प्रथवीनइ बिषइ थोडा जीव देषीनइ बीहइ॥ तथा घणा जीव ब्योकु देषी बीहइ॥ अथवा अल्पत्तत॰॥ थोर प्रथवी देषी पामइ पुर्वइ तेहनइ घणा प्रथिवीनी संताव नाहती अनइ थोडी देषी चिंतइ एसुं एतलो डवइ॥१॥ कुंथु॰॥ अ संत घणा कुंथुयानीरासि प्रथवीमाहिं देषी अत्यंत बिस्मय करी अनइ दया इंकरी छोभ लइ॥२॥ महतिम हालयं॰॥ अ तिमोटो महोरगसरीर सापनुं सरीर बाह्यद्वीप वरती॥ जोयणसहस्त्रप्रमाणनुं देषी॥ विस्मय थकी अथवा जयथकी॥३॥ देव॰॥ महर्धिक देव॥ जावमाहिं सुतिक॥ महानुभाग॥ महाबल॥ महासौख्य देषीनइ विस्मय थकी ४ पुरिसु

वती पंचहिं ठाणेहिं उहिंदसणे समुप्पज्जिउकाम वि तप्पढमताते खभा तेज्जा तं अप्पभूतं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाति खभा तेजा कुंथुरासिभूतं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमताते खभा तेज्जा महतिमहालतं वा महोरगसरीरं पासित्ता तप्पढमताते खभा तेज्जा देवं वा म हिड्डियं जाव महासोक्खं पासित्ता तप्पढमताते खभा तेज्जा पुरेसु वा पोराणाइं महतिमहा लताइं महाणिहाणाइं पहीणसामिताति पहीणसेउयाति पहीणगोत्तागाराइं उच्छिन्न सेउयाइं उच्छिन्नगोत्तागाराइं जाइं इमाइं गामागरनगरखेडकब्बड ८ मडंबदोणमुह

नगरनो एक देसप्राकारलिइ॥ आवरिउ ते प्यर॥ पुरा॰॥ घणा कालना। किहां एक पाठ उरालाइं छइ ते मनोहर॥ महतिमहा॰॥ विस्तीर्ण घणा इकरी महानिधान॰॥ महामुल्य रत्नादि पणाइं करी॥ पही॰॥ जेहना धणी हीणा थया॥ पही॰सेइ॰॥ हीणा थयात माहिं अछि केतं २ धननासींचणहार पुत्रादिक अथवा हीणा थया॥ सेउ॰॥ पालिए तेलइ। ते जाणीवानुं स्वरूप॥ अथवा सेउ॰॥ तेहनउमारग ते निधाननुं अति घणाइं काल इकरी से नालना करवानइ असावइ मारग पणि भागा जाडि थइ किंबहुना॥ डाटणहारना त्यागा गोत्तागाराइं॥ कुलना घर तेह पणि हीणा थया॥ अथवा डाटणहारनाना मअनइ आकार

MEMORIAL

ग छिन्नसा० सर्वघानाधारणी॥ जाइंसमाइं जिए०॥ ग्राम ति० जिहां राजा नो कर॰ जिहां आवीनइं लोकादिक कर इंत आ
गर लोहादिक त्पत्ति स्थानक रइ हित तेनगार॥ खेड ते धुलिप्राकारसहित॥ कर्बट ते कुत्सितनगर॥ मंडब ते बुक
प्फर बिगाउमाहि गामनहीं॥ दोणमुख ते जलथलना बिहुमारग॥ पट्टन ते जलथलमाहिलो एकपंथसहित आ श्रम।
ते तीर्थनास्थानक॥ संबाह ते जिहां पर्वतानाकडणादि विषमस्थानक परचक्रनाभयथकी राखवानइं विषइं धान्यादिक
संग्रहइ॥ संनिवेस ते प्रस्तत लोकनुं प्रवेस जिहां॥ सिंघाडए० श्रृंगाटक बुं त्ताकुं॥ तिं॥ श्रृंगाटक ते त्रिखुणाकुं॥ ति
ग०॥ जिहां त्रिणि वाट मिलइ॥ चउक्क०॥ च्यारि मारग मिलइ॥ चच्चर ते आठ मारग मिलइ॥ चउमुख ते देहरुं॥ महापं
पहेसु णगरणिद्धमणेसु सुसाण सुन्नागार गिरिकंदर संति सेलोवट्ठाणभवण गिहेसु संनिखित्ताइं
चिट्ठंति ताइंवा पासित्ता तप्पढमयाते खलु एछा इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं उहिदंसणे समु
प्पज्जिउकामे तप्पढमताते खलु एछा पंचहिं ठाणेहिं केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिउका
मे तप्पढमयाते णो खलु तेछा अप्पभूतं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमाते णो खलु तेछा सेसं
तहेव जाव भवण गिहे संनिखित्ताइं चिट्ठंति ताइंवा पासित्ता तप्पढमयाए णो खलु एछा
पथ ते राजमारग॥ पंथ ते मारगमात्र॥ नगरना॥ नि०॥ खाल नइं विषइ॥ मसाण नइं विषइ॥ सुनागार प्रासिद्ध॥ गिरि आ
दि नइं विषइ॥ ० इंडइ जिगृहसमूह इ ते प्रत्येक रजो डीइ ते णइ। गिरिगृह ते पर्वत ऊपलो घर॥ कंदरगृह ते पर्वतगु
फा। अथवा पर्वतनाकंदर॥ संतिगृह ते जिहां राजानां सांतिकर्म होमादिक कीजइ॥ सेलगृह ते पर्वत कोरीनइं
जिको धर्मउपस्थानगृह ते आस्थानमंडप अथवा सेलोपस्थानगृह ते पाषाणमंडप॥ भवनगृह ते जिहां कुटंबीया
वसता हुइ॥ अथवा भवन ते चउसालगृह ते ऊरडादिमात्र॥ एतलानइं विषइ॥ संनिखित्ताइं०॥ निधान डाट्या॥ चि० २४३
रह्या छइ॥ ताइं०॥ ते देखीनइं पासीनइं॥ ते पुर्विइं एहवुं दीठुं नही। ते णोइ विस्मय पामवाथकी अथवा लोभथी॥५॥
केवली ते णो खलु तेछा०॥ यथास्थित वस्तुनाद पवाथकी अनइं क्षीणमोहनीयपणाइं करी॥ भय विस्मय लोभ नइं अभाव।
री॥ अतिगंभीरपणाथकी न थोभाइ॥ तथा नरकादिकनासरीर बीभत्स अनइं उदार देखी केवली न थोभाइ॥ एणइ स्ते
बधिइं सरीरनी परूपणा कहइ छइ। ए स्थां नारकादिक विमानिकनां सरीर॥ जे पंचवर्णी कह्या ते निश्चयनथी व्यवहा
रथकी ते एकवर्ण छइ॥ पंचसरीरगा०॥ उत्पत्ति नासमयइं थकी आरंभी क्षीण २ प्रति विसलीं णाइ ते सरीर॥ उदार०॥
प्रधान॥ उदार ते हुं ऊदारीक॥ प्रधानपणुं ते हनइं तीर्थंकर गणधरादिकनासरीरनी अपेक्षाइं ते तेणी ते ऊपरांति कोई
प्रधान नथी॥ अथवा उराल०॥ मोटकं एहमइं मोटपणुं ते साधिक हजार योजनप्रमाणपणाथकी॥ वैक्रियलक्ष प्र
माणनुं छइ पणि ते स्वर्वदा नर हि॥ कर्कव०॥ जोयणसहस्समहियं॥ उद्दपण गिंदिएतरुगणेसु॥ मच्छजुयले सहस्सं॥ उर
गेसु य गब्भजाएसु॥१॥ अथवा उराल ते अल्पप्रदेसइं निष्पन्नपणाथकी जिम सोडीनाकाष्टनी परिइं ते ह जि अ रालिक॥
इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं जाव णो खलु एछा णेरइयाणं सरीरगा पंचवन्ना पंचरसा पं तं कि
ण्हा जाव सुक्किला तित्ता जाव महुरा एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं पंच सरीरगा पं तं उरालिए
वेउव्विते आहारते तेयते कम्मते उरालियसरीरे पंचवन्ने पंचरसे पं तं किण्हे जाव
सुक्किले तित्ते जाव महुरे एवं जाव कम्मसरीरे सव्वेवि णं बादरबोंदिधरा कलेवरा पंचव
न्ना पंचरसा दुगंधा अट्ठफासा पंचहिं ठाणेहिं पुरिम पच्छिमगाणं जिणाणं
अथवा ऊरालिक॥ मांसहाडनसाइं करी महत्वं ते ह जि ऊरालिक। विबिध अथवा विसिष्ट जे क्रिया ते विक्रिया॥ तिहां ऊपनुं ते
विक्रिय॥ अनइं नारकी देवतानुं ते सहिजइ॥ आहार०॥ कार्य ऊपनइं॥ चऊदपूर्वधि रियोग नइं बलइं करी ग्रहीइ ते
आहारक॥ संसयछेद वादिक अर्थिइं श्रुत केवली आहारक करी वीतरागनइं वलि जाईं कार्य करी आवइ॥३॥ तेयए०॥
ते ऊनइं विषइ ऊपनुं ते तैजस॥४॥ कम्म ए०॥ कर्मनउ विकार ते कार्मण सर्व सरीरनो कारण॥५॥ इहां ऊदारीक सरीरथ
की विक्रिय सरीर ते सूक्ष्म पुद्गलइं नीपनुं अनइं बहुप्रदेसइं नीपनुं॥ इम अनुक्रम इं लवुं॥ बादरबोंदिधरा०॥ पर्याप्तपणा
इं करी नइं स्थुलाकारना धरणहार॥ कलेवरा०॥ सरीर मनुष्यादिकनां॥ ते हनइं विषइ पांच वर्णादिक यलाइ ते सरी

रनाअवयवघकीआपत्ताइं जिमएकअांबिमा हिंघणा बंसी ॥ अनइअबादरा बोंदिधर जिसरीर तत्र अपर्याप्ता वस्थाइं जऊं तिहांअवयवपुरा नीपना नथी ॥ तेहणां वस्त्रादि पुरी संख्या नलाभइ तेहणी बादर ग्रहिऊं ॥ हिवइ शरीर नाधर्म विसेष कहइछइ ॥ दुग्गामं॰ ॥ दो हिंसुतक ष्टिइ एतलांवाना सिष्यमइं समकावियां ऋजुजड मइवक्रजड रमणाघकी ॥ दुआइक्खं॰ ॥ वस्तुतुं तत्वस बिमइंकष्टइंकहिबाइं ॥ महावक्रनइआटोपइकरानइ । सषिप्र तिइं बोधतां सगवंतनइंकष्टकपउइअम ऋपजइ तेहणां कष्ट इमसघलइ लेवुं ॥ दुविसज्जं॰ ॥ ऋजुऋ विहिंचीदषाडतां कष्टएक बालकहइं ॥ तेसरिषा सघला बालमसमकइ ॥ ऋजुजडनीपरिइं ॥ पाबांतरइंदुविरुब्बवं॰ ॥ संकाकाढतां दोहिली ॥ दुपस्सं॰ ॥ देषाडतां दोहिलुंतत्त्वं दुतितिरक्खं॰ ॥ परीसहरवमतां दोहिला एतलइपरीसहादिक ऋपजइ ॥ सषिमइद्दमादिकंइंकरावतां दोहिलां ॥ दुरणुचरं॰ ॥

दुग्गामं सवति तं दुआइक्खं दुविसज्झं दुपस्सं दुतितिरक्खं दुरणुचरं पंच ट्ठाणेहिं मज्झिमगाणं जि णाणं सुग्गामं सवति तं सुआतिरक्खं सुविसज्झं सुपस्सं सुतितिरक्खं सुरणुचरं पंचट्ठाणाइं समणेणं सगवया महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वन्निताइं निच्चं कित्तिताइं निच्चं बुइयाइं निच्चं पुइयाइं निच्चं पसत्थाइं निच्चमब्भणुन्नाताइं सवंति तं खंती मोत्ती अज्जवे मद्दवे लाघवे पंच

अनुष्ठानकरावतां दोहिलुं । अथवा तेहनां तीर्थनइं विषइएकहइ कहिवुं अनइ कहिइं वहिंइंबा देषाडवुं ॥ वस्तुनुंतत्त्वसबिप्रतिइं तकरतां आचार्यनइंकष्ट ॥ दुपस्सं॰ ॥ दुतितिरक्खं॰ ॥ दुरणुचरं एत्रिणि बोलत्या तइंपणिं आचार्यमइंकरतां कष्ट ऋजुजडादिपणाघकी ॥ सुग्गामं॰ ॥ सषिमइं ऋजुप्राज्ञपणाइं करानइं अल्पकष्टमइं प्रतिबाधी अनुष्ठानन इविषइप्रवर्त्तावीइ तेसणां ॥ तीर्थंकरनइं सोहिलुं । इहां सघलइ बोलिइं सोहिलुं जोडिवुं ॥ वन्नियाइं॰ ॥ फलघकी कीर्त्तितनामघकी ॥ बुइयाइं॰ ॥ प्रगटवाचाइं स्वरूपघकी कह्या ॥ पसत्थाइं॰ ॥ प्रसंसा श्लाघा ॥ अब्भणुन्नाइं॰ ॥ करवा योग्यपणाइं अनुमतिदीधी ॥ खंती॰ ॥ क्रोधनउ निग्रह ॥ मुत्ती॰ ॥ लोभनउ ॥ अज्जवं॰ ॥ मायानो ॥ मद्दवं॰ ॥ माननउ ॥ लाघवं॰ ॥ द्रव्यघकी उपगरणहलवा ॥ भावघकी त्रिणिगारवनो त्याग ॥ १४४

सच्चे॰ ॥ सत्पुरुषनइंहितुकांतेस तथ्यं घांतरइं सत्यश्यारि विधिहितुं कहिकंछइ ॥ मनवचनकायानो त्याग । असमंजसननहीअ नइसरलपणुं ॥ संयमतेहिंसादिनी निवृत्ति १७ भेद ॥ तपा डोइ जेणइं करीआत्मानइं अनइकर्म नइं तेतप ॥ अणस णादि १२ भेद ॥ चियाए॰ ॥ संविग्नीएकसंभोगिकनइं सक्कादिकनुंदेवुं ॥ गाथा वात्र ॥ नाकयपच्चरकाणो ॥ आयरिय गि लाणबालवुड्ढाणं ॥ दज्जासणाइंसंते ॥ लाहकयवीरियायारो ॥ १ ॥ संविग्गअन्नसंभोइयाण ॥ देसेज्ज सड्ढगकुलाइं ॥ अंतरतावासंभोइयाणं ॥ दासअइसमाहिंचि ॥ १ ॥ बंभ॰ ॥ ब्रह्मनइंविषइ ॥ वास॰ ॥ वसवुं एबिजूणांवत्नो इंद्रिय विघधर्मजतीनो ॥ आनरइंअंधिरवंती मद्दवइत्यादिकहिकंछइ ॥ तिहालाघवचियाए एबिजूराष्टमइं गामि अकिंचन नइंसोव्यकहीयाछइ ॥ हिवइ साधुनाजधर्मनउ भेदत्यतप ॥ बाह्यतपनो भेदत्य हतिसंक्षेपतेकहइछइ ॥ उक्खि

ट्ठाणाइं समणेणं सगवता महावीरेणं जाव अब्भणुन्नायाइं सवंति तं सच्चे संजमे तवे चिताते बंभचेरवासे पंचट्ठाणाइं सम॰ जाव अब्भणुन्नायाइं सवंति तं उक्खित्तचरते नि क्खित्तचरते अंतचरते पंतचरते लुहचरते पंचट्ठाणाइं जाव अब्भणुन्नाताइं सवंति तं अन्नातचरते अन्नइलायचरए मोणचरइ संसट्ठकप्पिते तज्जातसंसट्ठकप्पिते

एतलइ वासीवस्त्रादितप्रांत ॥ लुह॰ ॥ निस्नेह । इहां पिहिला बेतेतावातिग्रह ॥ त्रीजा आदितद्रव्यातिग्रह ॥ तथा गातोरउता बइट्ठोकइ तोंकांलिकंइत्यादि ॥ भावातिग्रह ॥ ग्यतादुद्रव्यइंहाघघरडाकइ अघघानघरडाकइ । अमुंकोदु धमाहारीओपिदेपं अथवाआजुअमुंकादुव्यल कंइत्यादि द्रव्यातिग्रह ॥ अन्नाय॰ ॥ सगाई । अथवापोतानुं ऋधि पणुं अणदेषाडिइंजेभिक्षानइंअर्थइं अटइ तेअज्ञातचरक ॥ अन्नइलाय॰ ॥ जिबारिइं अन्नपाणइंरहीनसकइ तिबा रिइंलेउ ॥ अथवा आनराग्लानमइंकाजइआहारनइं अर्थिइंविचरइ । किहांएक अन्नाव ल । एसवउपाठ तेजननो उकोलघकी ॥ पहिलुं अथवापछइ विचरइ ॥ एकालातिग्रह ॥ मोण॰ ॥ मौनव्रतिइंविचरइ ॥ संसट्ठकप्पिए॰ ॥ धरडइतेज नहस्तादिकइंदीजेतुं जिहनइंकल्पइ ॥ तिहांदिकतेसंसृष्टकल्पिक ॥ तज्जाए॰ ॥ देयद्रव्य विहरावइछइ । तेजातिनइंद्रव्य

चावरए॰ ॥ तोन्नानइ ।
डलामादि घीकादि कोतआहा रनइअर्थि इअतिग्र हविसष घोजवरए ॥ विवरइ निरिक्रं॰ ॥ हाडुलाम दिघोआ कादिइ ॥ अंतं॰ ॥ अप्पानुंऊ गारिऋवा लादि ॥ प्र ऊहिइंओ ततेप्रांत

घरउग्गहे छइ॥ हस्तना उनादितणइं दीजइ तुं कल्पइ तेह्ना तसंसृष्ट कल्पिक॥ उवतिह्नित॥ घरमाहिं दुकडुं ऊद्धरेल तेउसं
सुद्धसणाए॥ अनीवार२२ह्नितएषणासंकितादिदोषरह्नित अनइ सातप्रकारनी एषणा तेणइं अथवा आनरी एषणाइं
विचरइ॥ तेसुद्धेषणक॥ संखादत्ति॥ दातिनी संख्याइं विचरइ॥ एकवार जेतलुं आतपडिउं तेदाति॥ दिट्ठ॰ ऊपाडि सांतन्हे
थइ तेहइं जविहरइ तेदृष्टलाभिक॥ पुट्ठ॰॥ साधुनइकहइ विहरस्यो इमपूछइ तोविहरइ॥ आयंबिलिए॥ आंबि
लइं विचरइ॥ निविति॥ घृतादिकविगई थकी साधुनो कल्पे ते निर्वितिक॥ पुरिमड्ढीए॥ बेपोहुर लगइं पच्चक्खा
ण॥ परिमियपिंडवाय॥ द्रव्यनाप्रमाण थकी॥ पिंडवाय॥ तिह्नां दिकनउ लाभ छइ जेह्नइ॥ ते परिमितपिंडपातिक॥ भिन्न
॥ कटकाथयो॥ पिंड॥ आहारनी साथु थादिकनो लाभ छइ त्यइ नइं ते अरसाहार॥ रसरह्नित॥ हींगादिकनउ नी

पंचट्ठाणाइं जाव अब्भणुन्नायाइं सवंति उवतिह्निते सुद्धेसणिते संखादत्तिते दिट्ठलाभीते पु
ट्ठलाभिते पंचट्ठाणाइं जाव अब्भणुन्नायाइं सवंति तं आयंबिलिते निव्वितिते पुरिमड्ढिते प
रिमतपिंडवातिते भिन्नपिंडवातिते पंचट्ठाणाइं जाव अब्भणुन्नायाइं सवंति अरसाहार
विरसाहार अंताहार पंताहार लुहाहार पंचट्ठाणाइं जाव सवंति तं अरसजीवी विरस
जीवी अंतजीवी पंतजीवी लुहजीवी पंचट्ठाणाइं जाव सवंति तं ठाणातिते उक्कुडुआसणिते
पडिमट्ठाती वीरासणिए

पमो तेविरसाहार तेलादिवर्जित॥ लुहाहारे॥ रूखाहार॥ अरसआहारि आजन्म लगिइं जीवइ ते अरसजीवी॥
इमविरसादिस घलइ॥ ठाणा॰॥ काउसग्ग ते॥ अतिद॰॥ करइ॥ अथवा॥ अतिथ॰॥ तेहनुं इषो होवइ ते॥ उक्कडुकासनी
कतपीठादिकनइ विषइ आसणअणलगाडि इं बइसइ ते अलिस्य हृत्यइनइ ते॥ पडि॰॥ एकरात्रिकादिक त्यप्रतिमा ते
णइं करी काउसग्ग विसथइं रहइ॥ तेप्रतिति प्रतिमास्थायी॥ उ॰ सिंघासणि बइसी नइं पग लगाडइ सिंघासण नइंकाढुवइ
त्य अवस्थाइं तेवीरासणं दुःकरपहवीकारणानेणा। वीर॰॥ साहाम्नीक नो ऊ आसण तेवीरासन छइ जेह्नइ तेवीरासनीक १८५

निसद्दौ ह्या॥ बइसवुं तेहनापांचालद॥ बेकुपग बरोबरि ऊभोडइ फरसइं बइसइ। तेसमपादपुत॥ गाथनी परिबइसवु ते
गो निषिद्यका यिहां बेकुपग ऊभोडइं करि बइसइ॥ तेमाहिलो एकपग ऊपाडइ। तेहस्तिसुंडिका पर्यंका॥ अर्द्धपर्यं
का तेप्रसिद्ध। तेलेखाइं विचरइ तेनिषद्यक॥ दांडानी परि॥ आयत॰॥ दीर्घपणु पगनइं पसार वइसइ जेहनइ तेडडायि
तिक॥ माथुनइ पानी त्यइं लगाडइ॥ पुठि अणलगाडइं लगडानी परि शिर सूइ। अलिस्य हृत्यथकी तेलगडास्तायी॥ सी तो तथा
दिकनुं सहवारूप त्यआतापनाकरइ॥ तेआतापक॥ नथात्यहनइं प्रावृत्त॥ प्रावरण ते अप्रावृत्तक एतलइ वस्त्ररहित॥
घणास्नहो ते अकडुयक॥ इहां आतापनाना लखलभाइ छइ॥ सुतानी आतापना ऊतकृष्टी॥ बइठानी मध्यम उभानी जघ
न्य॥ उधि मुषिस्युत ईऊतकृष्टी॥ पासानरिमडम॥ चितासुइ ते मध्यमे जघन्य॥ गोदुआसण बेसइ ते ऊतकृष्टी॥ म

णासणिए पंचट्ठाणाइं जाव सवंति तं दंडायतिते लगंडसाती आतावाते अवाउडते अकंडु
यते पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे सवति तं अगिलाते आ
यरियवेयावच्चं करेमाणे एवं उवज्झायवेयावच्चं थेरवेयावच्चं तवस्सिवेयावच्चं गिला
णवेयावच्चं करेमाणे पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे सवंति

उतकडुंआसण मध्यम। पल्लंगी तेजघन्य॥ हस्तीसुंडिका ते बेऊहाथऊं चाकरीऊ लोरहात ऊतकृष्टी। एकइ पग इरह
इ तेमध्यम। बेकुपगसेंइं मुंकीकाला रहित जघन्य॥ इहांस्थाना तिगसधृयद्यपि आतापनामां हिंडिआवइ तथापि
प्रधानअप्रधाननी विवक्षा पुनरुक्त दोषनहीं॥ ५॥ महानिज्जरे॰॥ मोटोकर्मनाह्नयनोकरणहार॥ महापज्ज॰॥ म
हानिरजरा थकी सवनइं नसाडवइं करी मोटउ अतवइ त्यहनउ तेमहापर्यवसानक हीइ॥ अगिलाए॰॥ हर्षरहित थ्कु
मानइं करी इत्यर्थः॥ आय॰॥ आचार्य पुंचप्रकारिइं॥ तद्यथा॥ प्रव्राजनाचार्य १ दिग्याचार्य २ सुत्रउद्देशनाचार्य
सुत्रसमुद्देसनाचार्य ४ वाचनाचार्य ५॥ तेहनुं वियावच्च॥ तेह्रूदिधर्मना त्यधर्मना आधार करी वस्तुतेणइ
करी आचार्य तिहं आधारादेवउ॥ करमाणे॥ करता॥ उव॰॥ सुत्रदाता॥ थिवर ते उसताम इधर्मनइ विषइ स्थिरकरइ
अथवा ऊाती करी साठिवरसनो। पर्यायवी सवबेरसनो॥ सुत्रइं समुवायांगनो धरणहार॥ तपस्वी तेमासक्षपकादि॥ गि
लाण॥ व्याध्यादिग्रस्त॥

सिढ०॥ नव दिक्षित॥ साधर्मिक ते प्रवचन मइं लिंगिइं करी सरिषो॥ कुल ते चांद्रादिक साधुनो सरिषो समुदाइं॥ गुण ते कुलनो समुदाय॥ संघ ते गुणनो समुदाइं॥ इम विऊ सुश्रुष करी अतितर तपस्युं ते दस विधि वेयावच्चे करि दे‍ऊ॥ कऱ्हुं व०॥ आयरिय उवझाये॥ थेर तवसी गिलाण सेहाण॥ साहंमिय कुलगण संघ॥ संगयं तं मिह कायव्वं॥१॥ संतोगिकं एक ठाम आहार नउ माडलाय संघातिइं छइ तेहनइं॥ विसंतोगिकं ते मांडलाबाहिरि करता॥ नाइकमइ०॥ आज्ञा अतिक्रम इ नही॥ ययुक्त ऊकार्यकी धमाटइं॥ सकिरियाठाणं॥ असु सकर्मबंध युक्त स्थानक ते अकार्य ति पडिसवित्ता०॥ तेहनो सेवणहार कइ॥१॥ सेवीनइं गुरु आगलि आलोइ नही॥२॥ आलोइनइं॥ नो पट्ठ वेइ०॥ प्राय श्चित करमां वा मांडइ नही॥ पट्ठवित्ता०॥ प्रारंतीनइं॥ णो णिव्विसए०॥ पुरूं न करइ॥ अथवी प्रारंती नइ प्रायश्चित सेव इ नही॥४॥ जाइं इमाइं०॥ यए प्रसिद्ध पलइं करी प्रत्यक्ष॥ थेर राणं०॥ स्थिवर कल्पीनी॥ ठियकप्पाइं०॥ आचारनइ विषइ॥ =स किरिय०॥ प्रस्तावात् अशुभ अकर्मबंध युक्तस्थानं अकृतिविस एन देता॥ प्रतिसवित्ता सवंति॥ अविशुद्ध प द०॥२॥

आगिलात सेहवेयावच्चं करमाणे अगिलाते कुलवे० आगिलायसंघवे० अगिलात साहम्मियवेयावच्चं करमाणे पंचविहेण णहिंसमणे णिग्गंथे साहम्मितं संतोतितं वि संतोतितं करमाणे णातिक्कमति तं सकिरियट्ठाणं पडिसेवित्ता भवति पडिसेवित्ताणो आलोतित्ता आलोइत्ताणो पट्ठवेत्ति पट्ठवित्ताणो णिव्विसति जाइंइमाइंथेराणं ठिति प कप्पाइं भवंति ताइं अतियं चियं २ पडिसेवति सेहं दहं पडिसेवामि किं मे थेरा करेस्संति पच विहेणं हिंसमणे निग्गंथे साहम्मितं पारंचियं करमाणे णातिक्कमति ते

कल्पनीक योग्य विसुद्ध पिंड सय्यादि तत्स्थिति प्रकल्प अथवा स्थिति ते मासकल्पादि॥ प्रकल्प ते आहारादि॥ ताइं०॥ ते अतियंचियं०॥ अति २ क्रमीनइं ते आचारघकी अनेरु पडीसवी०॥ सेवइ॥ स्थिवरकल्पघा डान उ साधु आलोवइ जे ए सवबा योग्य नही॥ ते सेवितां गुरुं रुक्षइं बाहिर नही करिइ॥ तिवारिइं आगल्यो कहइ॥ से०॥ ते अकल्पनीकं व स्तु॥ हंद ते कोमलामंत्रणवचन॥ ह०॥ कुं॥ पडिसेवामि०॥ सेवकुं छुं॥ किं मे थेरा०॥ गुरु मुझ मइ स्युं करिसइ॥ १५६
रूसइ स्यु तइ पणि मुझ नइ काइं एक रवाश्री अन्नाक्य॥ परंचियं०॥ दसमुं प्रायश्चित देता तेलिंग फेरवा वीनइ माहि लितो॥ नाइक मइ०॥ सीमायक अ ते क्रमइ॥ ते॥

कुलवसति०॥ चंद्रादिक कुलिइं वसइ॥ गछवासी इत्यर्थ॥ अनइं ते दउ कुलना लदरुणी माहोमाहि कलह नइं ऊपजो वच इकरी॥ असुविहि०॥ सावधन थाइ॥१ गणे०॥२॥ हिंसा पेही०॥ साधम्दिकनइ मारवु गावषइ॥ छिद्द प०॥ छिद्रानइं अर्थ इकरी॥ असुविहि०॥ सावधन थाइ॥१ गणे०॥२॥ हिसा पेही०॥ साधर्मिक नइ मारवु गावेषइ॥ छिद्दप०॥ छिद्रानइं अर्थ
इ अथवा आगिल्यानइं हीलवानइं अर्थि इं प्रमादादिक छिड जोइ ४॥ अत्तिरक०॥२०॥ वारंवार॥ पासिणा०॥ प्रश्न ति इ अथवा आगिल्यानइं हीलवानइं अर्थिइं प्रमादादिक छिड जोइ ४॥
अंगुष्ठादि अथवा सावद्यानुसांननी पृछा॥ आयत्नाइं॥ असंयमनो स्थानक प्रयुंजइ॥८॥ आचार्य उपाध्याना गा णो म्रि०॥ गछ विषइ॥ वुग्गहे०॥ कलहनास्थानक॥ आणंवा०॥ अहो साधु तिइं एक रवुं॥ एवंरूप॥ धरणं०॥ एतिइं नकरिवुं॥ एवंरूपे वास मंपउ०॥ यायम पलइ प्रयुंजइ नही॥ साधुमाहोमाहि कलह करइ॥ यसणी आज्ञा वस्य करी नधी मुंक्या॥ अथवा जे ग्योग्य पणइं आज्ञादिक नइ प्रवर्तावइ॥ ते आचार्य संघातिइं साधु वदिइं एतले एकलह
नथी मुंक्या॥ अथवा जे ग्योग्य पणइं आज्ञादिक नइ प्रवर्तावइ॥

कुलवसति कुलस्सात्तदात अच्छुट्ठित्ता तसवति गणेवसति गणस्स तदात अच्छुट्ठेत्ता भवति आयरियउव वति हिंसप्पेही छिद्दप्पेही अत्तिरकणं २ पसिणाइं तणाइ पउंजित्ता भवति आयरियउव ज्झायस्सणं गणंसि पंच वुग्गहट्ठाणा पं तं आयरियउवज्झाएणं गणंसि आणं वा धारणं वा नो सम्मं पउंजित्ता भवति आयरियउवज्झाएणं गणंसि आहाराइणिताते कितिकम्मं नो सम्मं पउंजित्ता भवति आयरियउवज्झाते गणंसि जे सुत पज्जवजाते धारेति ते काले २ णो सम्मं पउंजित्ता भवंति

आयरियउवज्झा तगणंसि जे सुत पज्जवजाते धारेति ते काले २ णो सम्मं पउंजित्ता भवंति॥ अ नुस्थानक॥ इम सघलइं अथवा गुदार्थ पदइं करी दृष्टांतरना गीतार्थनइ आं हीनउ गीतार्थ अतीचार कहिवरावइ॥ अ नुस्थानक॥ इम सघलइं अथवा गुदार्थ पदइं करी दृष्टांतरना गीतार्थ नइ आंही नउ गी तार्थ साधिइं ते आज्ञा॥ अनइ एकवार नइ आलोवइं करी मनमांहि प्रायश्चित धरिइ॥ जे एहनुं एतलुं प्रायश्चित ते गीतार्थ साधिइं ते आज्ञा॥ अनइ एकवार नइ आलोवइं करी मनमांहि प्रायश्चित धरिइ॥ जे एहनुं एतलुं प्रायश्चित तेधारणा ते सम्यग् न प्रवर्तावइ तिवारिइं कलह थाइ॥१॥ तेहउ आचार्यादि आहाराति णिताते०॥ रत्नविकुल दिइ धरणा ते सम्यग् न प्रवर्तावइ तिवारिइं कलह थाइ॥१॥ तेहउ आचार्यादि॥ आहारातिणिताते०॥ रत्नविकु लदिइं अधीक केतनादि॥ तावधकी ज्ञानादि॥ इहां ज्ञानादि नैकरी व्यापार करइ॥ तेरात्रिकदीक्षा इंवडो ते जे उवडो छइ अधीक केतनादि॥ तावधकी ज्ञानादि॥ इहां ज्ञानादि नैकरी व्यापार करइ॥ तेरात्रि कदीक्षाइं वडो ते जे उवडो छइ॥ तेहनइं॥ कितिकम्म०॥ वांदणुं॥ वणा पियं०॥ विनय ते सम्यग् न प्रवुंजइ॥२॥ तेही जे॥ सुय पज्जवजाए०॥ सुत्रार्थना प्र तेहनइं॥ कितिकम्म०॥ वांदणुं॥ विणा पियं०॥ विनय ते सम्यग् न प्रउंजइ॥२॥ तेही जे॥ सुयपज्जवजाए०॥ सुत्रार्थनाप्र कार नइ धरिइं॥ ते हनइं काले २ यथा वसरिइं॥ न सम्ममणुं०॥ ग्रंथ वचावइ नही॥३॥ तथा ते ही जे गिलाण सेहिनी व्य कारनइ धरिइं॥ तेहनइं काले २ यथावसरिइं॥ नसम्ममणुं०॥ ग्रंथ वचावइ नही॥३॥ तथा ते हीज गिलाण सेहिनी व्य

या वचन कहइं॥ नो सम्मम०॥ पोतइं उद्यमी न थाइं॥४॥ तेहीज अणापुछि०॥ गछवासीनइं अणपुछिइं जि विहा
र करइ पणि॥ नो आपु०॥ पुछीनइं चालइ॥५॥ पं० वुग्गह०॥ पांच अकलह नां स्थानक॥ निसिज्जाउ॥ बइसवाना प्रकार॥
उक्कुडुई०॥ बइसवानइं विषइ॥ आसणा अणलागो अनइं पगि इंउ नोर हो॥ समपाया०॥ बराबरि इं तलमि विषइ॥ जोडलइ

सम्ममणुपवाएत्ता भवति आयरियउवज्झाए णं गणंसि गिलाणसेहवेयावच्चं नोसम्म
मब्भुट्ठित्ता भवति आयरियउवज्झाए गणंसि अणापुच्छियचारी यावि हवति नो आपुच्छि
यचारी आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि पंच वुग्गहट्ठाणा पं० तं० आयरियउवज्झाए णं गणं
सि आणं वा धारणं वा सम्मं पउंजित्ता भवति एवमधारणिता तत २ आयरियउवज्झाए सुत्तप
ज्जवजाते धारति ताते काले २ सम्मं अ३ एवं गिलाणसेहवेयावच्चं सम्मं आयरिय
उवज्झाते गणंसि आपुच्छियचारी यावि भवति णो अणापुच्छियचारी पंच निसिज्जाउ
पं० तं० उक्कुडुई गोदोहिता समपायपुत्ता पलियंका अद्धपलि... यंका पंच अज्ज...
ट्ठाणा पं० तं० साहुअज्जवं साहुमद्दवं साहुलाघवं साहुखंती साहुमुत्ती पंचविहा जो
इसिया पं० तं० चंदा सूरा गहा णक्खत्ता ताराउ पंचविहा देवा पं० तं०

पग लागो॥ पलियंका०॥ तीर्थंकरनी प्रतिमानी परिइं पद्मासन॥ अद्धपलियंका०॥ साथलनइं विषइं एक ऊ पग मुं
कइ॥ अज्जव०॥ रागद्वेषना वीकापणा रहित यत्सामायिक वंत तेहनुं कांम तत अनुंष्टान ते संवर इत्यर्थ॥ तेहना
तद पांच॥ साहुअज्जव०॥ सम्यक् सहित पणउं करी॥ साहु०॥ रूडो॥ आर्यव०॥ मायानो नियह अथवा ऊ तीनुं स
रलपणुं॥ एवं सेष बोल॥ आर्यव सहित भरी नइं प्राहि दवघाइ॥ जइसणा देवनुं सुत्र॥ ज्योतिष्क विमानिक वि १४७
सेष तेहनइं विषइ रूपना तेया तिक॥ क्रीडादि करइ ते देव

अथवा तेहनइं स्तवीए ते देव॥ नवि०॥ आगिल इं देवपणास्पइ ते पर्याय नइ आयागपएहअनागो जउ व्य त्रूत ज देव ते तेव्य
द्रव्य देव ते जोका आंतरार हित विमानका दिमुं आऊमुं अनुसवतां विमानिकादेव ते भाव देव॥ परियारणा०॥ वेदनाउदय
नुं पडीगाणुं॥ काय परि०॥ स्त्रीपुरुषनइ कायाइं मैथुननुं सेवितुं ते ईसान लगिइं॥ इस्म अधलइ फरसादिनउ अर्थक रवउ॥
गीत वयका दिकइं परियारणा नवी॥ संगामिया०॥ ए पांच संग्राम नइ पपिआ वइं॥ तेलणो सांग्राम नीक॥ गंधर्व अनइ नाट
कीया संग्रामि पपिइंना वइ ते सही पांच कह्या॥ अणिया हिवई०॥ कटक मांहि प्रधान॥ पायत्ता०॥ पालीना समुह रूप कटक

सचित्तदव्वदेवा णरदेवा धम्मदेवा देवातिदेवा भावदेवा पंचविहा परियारणा पं० तं० काय
परियारणा फासपरियारणा रूवपरियारणा सद्दपरियारणा मणपरियारणा चमरस्स णं असु
रकुमाररन्नो पंच अग्गमहिसीउ पं० तं० काली राती रतणी विज्जु मेहा बलिस्स णं वतिरातणिंदस्स
वतिरातणरन्नो पंच अग्गमहिसीउ पं० तं० सुंभा निसुंभा रंभा निरंभा मयणा चमरस्स णं अ
सुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो पंच संगामिया अणिया पंच संगामिया अणियाहिवई पं० तं० पाय
ताणिते पीढाणिए कुंजराणिते महिसाणिते रहाणिते दुमे पायत्ताणियाहिवई सोदामे
आसराया पीढाणियाहिवई कुंथू हत्थिराया कुंजराणियाहिवती लोहितक्खे महिसा
णियाहिवती किन्नरे रहाणियाहिवती बलिस्स णं वतिरायणिंदस्स वतिरायणरन्नो पंच
संगामिया अणिया पंच संगामियाणियाहिवती पं० तं० पायत्ताणिते जाव रहाणिते महद्दु
मे पायत्ताणियाहिवती महासोदामे आसराया पीढाणियाहिवती मालंकारे हत्थिराया कुं
जराणियाहिवई महालोहियक्खे महिसाणियाहिवई किंपुरिसे रहाणियाहिवती धरणं

पीढाणिए०॥ अस्वनुं कटक॥ दुमनामिं पायक मांहि वडेरो॥ सोदाम नामि घोडामांहि प्रधान घोडो॥ कुंथु नामि वडो हाथी
॥ लोहितक्ष नामि वडो महिष॥ किंनर रथनो अधिपति॥

स्स णं णागकुमारिंदस्स णा॰ पंचसंगामिया अणिया पंचसंगामिया अणियाहिवई पं तं पायत्ता
णिया जाव रहाणिते सद्दसेणे पायत्ताणियाहिवती जसोधरे आसराया पीढाणियाहिवई
सुदंसणे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई नीलकंठे महिसाणियाहिवती आणंदे रहाणिया
हिवई ३॥ भूयाणंदस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो पंचसंगामिया अणिया पंच
संगामिया अणियाहिवई पं तं पायत्ताणीए जाव रहाणिए दक्खे पायत्ताणियाहिवई सुग्गी
वे आसराया पीढाणियाहिवई सुविक्कमे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई सेयकंठे म
हिसाणियाहिवई नंदुत्तरे रहाणियाहिवई वेणुदेवस्स णं सुवन्निंदस्स सुवन्नकुमाररन्नो
पंचसंगामिया अणिया पंचसंगामिया अणियाहिवई पं तं पायत्ताणीते एवं जहा धरणस्स
तहा वेणुदेवस्स वि वेणुदालियस्स जहा भूयाणंदस्स जहा धरणस्स तहा सव्वेसिं दाहिणि
ल्लाणं जाव घोसस्स जहा भूयाणंदस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव महाघोसस्स सक्क
स्स णं देविंदस्स देवरन्नो पंचसंगामिया अणिया पंचसंगामिया अणियाहिवई पं तं
पायत्ताणिए जाव उसभाणिते हरिणेगमेसी पायत्ताणियाहिवती वाऊ आसराया पीढा
णियाहिवई एरावणे हत्थिराया कुंजराणिताहिवई दामड्ढी उसभाणिताहिवई माढरे
रहाणिताहिवई ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो पंचसंगामिया अणिया जाव पायत्ताणि
ते पीढा॰ कुंजरा उसभा रहाणिते लहुपरक्कमे पायत्ताणियाहिवई महावाऊ आसराया पीढाणिय १४

= अग्गमहिसी ... ॥

सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं० सौधर्मेंद्रादिक दक्षिण ना पासा नुं तेपहिलुं एक ते विषम संख्या छइ । तसंखे विषमसंख्या ना अधिपति पणा
थकी त्रीजो पांचमो सातमुं । अग्यारमुं नोमुं अग्यारमुं । एहना इंद्रना अधिकार सौधर्म इंद्र नइ कह्या ॥ ईसानेंद्रादिक बी
३ । बि ते समसंख्या ते हनां अधिपपणा थकी ॥ बीजो चोथो ॥ छठो आठमो दसमो बारमो । एइंद्रनां निकादिनाम ईसा
नेंद्रनां निकाना नाम सरीषा छइ ते सणंकुमारा ॥ एक उत्तरणं इमकहिउं ॥ सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं० ॥ ईसानेंद्र ईसान
दिसि ना अधिपति ते बेनी संख्या नो क्रम पणा थकी । बीजो इंद्र आदि समसंख्या ना सघला उत्तर ना कहाइ ॥ पांचमु सातमु
देवलोक ए आषां छइ पणि एहना इंद्र विषमसंख्या ना सरीषा पणा थकी ॥ सौधर्मेंद्र नो परिइंद कहाणा नो अगमा कहीइ ॥ ईम ऊ
छे ठा आठमा ना इंद्र पणि समसंख्या ना सरिषा पणा थकी । ईसानेंद्रनो परिइंद ऊतरनी गमा ऊ कहीइ ॥ देवेंद्रस्तव ना मा पहि
नु सिंघात ते इहां बार इंद्र विवक्ष्या छइ तेहनइ अमुं स्मारिई बार नी अपेक्षा इं ई ली आरणनुं नाम सेन्ना बीइ छइ ॥ अथ घा
ब्यारि देवलोकि विरहइ इंद्र घाइ । तेअसुत्रमा हि आरणस्स इमकहिउं ते विघटइ ॥ एदेवनी अक्रू व्यता कही ते उपरि अथ

पुप्फदंते हत्थिराया कुंजराणि॰ महादामड्ढी उसभाणि॰ महामाढरे रहाणियाहिवती जहा स
क्कस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव आरणस्स जहा ईसाणस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं
जाव अच्चुयस्स सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो अब्भितरपरिसाए देवाणं पंच पलिओवमाइं ठिई पं ई
साणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो अब्भितरपरिसाए देवीणं पंच पलिओवमाइं ठिई पं पंचविहा प डिहा
पं तं गतिपडिहा ठितीपडिहा

बंसायनाजीवनइ देवनो गति स्थित्यादिनुं प्रतिघात छइ ते कहइ छ
इ॰ पडिघा॰ प्रतिघात तेह णावुं । तिहां । गइपडिहा ॥ सुभ देवगत्यादि नउ प्रतिघात ते देवतानी गति पामवा योग्य पण
इ छतिइं विकर्मना करवा थकी तेहना अणपामवइ थाइ ॥ जिम प्रवज्या नइ पालवइ । सुभ देवगति पामवा योग्य कुंडरीक प
णि पापथकी कुंडरीक नरगि इं गयो ॥ ठिई॰ ॥ सुभ देवगति योग्य कर्म नि उपार्जवुं आयु विसेष थकी प्रतिघात ते स्थिति
प्रतिघात । यदाह ॥ दीर्घकालस्थित्यायु । र्हस्वकाल स्थित्यायु । पकरइ

बंधण॰॥ नामकर्मनी उत्तरप्रकृतिरूप ऊदारिकादिकं बाल दिइंसुरबंधननो प्रतिघात ॥ उपलक्षणथी सरीरनो अंगोपांग
संघयण संस्थाननउ प्रतिघात पणि कहिवउ ॥ ३ ॥ भोगपडिहा॰ प्रसस्तगति स्थितिबंधनादिना प्रतिघात थकी भोगन
उ प्रतिघात । प्रसस्तगति विना भोगादिक हुइ नहीं । प्रसस्तगति ते भोगनुं कारण छइ । तेहनइ अभावइ भोगनो अभाव
॥ ४ ॥ बल॰ प्रसस्तगत्यादिनइ अभावइं बलादिकनो ॥ प्रतिघात थाइ ते प्रसिद्ध । इहां बल ते सरीरथी ऊपनुं ॥ वी
र्य ते जीवथी ऊपनुं ॥ पुरुषाकार ते तेथ॰ पराक्रम ते कार्यसाधवा उद्यम विवुं ॥ अथवा पुरुषाकार ते पुरुष नुं कार्य
पराक्रम ते बलवीर्यनुं व्यापार विवुं ॥ ५ ॥ इवइ देवगतिनो प्रतिघात ते चारित्रना अतीचार थकी ऊपज्यू । तत्तरा

बंधणपडिहा भोगपडिहा बलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमपडिहा पंचविहे आजीवे
पं॰ तं॰ जातिआजीवे कुलाजीवे कम्माजीवे सिप्पाजीवे लिंगाजीवे पंच रायककुहा
पं॰ तं॰ खग्गं छत्तं उप्फेसं पाहणाउ वालवीयणि पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थेणं उदिन्ने परिस्स
होवसग्गे सम्मं सहेज्जा खमिज्जा।

तरगुण श्री आजीविका ते हनउ विसेष कहइ छइ ॥ जाति॰ जाति ब्राह्मणादिक एतलइ सरिषी जातिनां नइ पोतानी जाति ऊपजा
वीनइ सरकादिक थकी जीवइ ॥ ते जाति आजीवक ॥ इम सघलइ ॥ कुल॰ उग्रादिक ॥ अथवा गुरुकुल ॥ कर्म ते कर्षणादि
अथवा आचार्य रहित सल्प ते तुंनवादिक ॥ अथवा आचार्य सहित ॥ लिंग॰ ज्ञानादिसूं न पालइ करी साधुनइ लिंग
इ जीवइ ॥ आनरइ ग्रंथि लिंगनइ गमिगणा छइ । गण तेम ल्लादिगणउ णावी । पपांवइ कपटइ करी ॥ साक्षात आपो पुरुषा
थी आजीविका करइ ॥ अनंतर श्रोहरणादि साधुनुं लिंग कहिउं ॥ हिव षड्गादि राजानुं लिंग कही छइ पंच राय॰ ॥ पांच
राजाना । ककुहा॰ चिह्न ॥ उप्फेसं॰ सिपरक मुगट विसेष ॥ खुत्तव ॥ श्रवणे ए पंचक कुहाणि ॥ जा निराया णि
चिधस्वयणि ॥ बेन्नंखग्गा बाहरण ॥ मांडुतह छामराउय ॥ १ ॥ पदवइ राजादिकई चारित्रलीधन छइ ॥ तीसरा गछइ तो हिप १४८

णिल वस्तुथ्य वलंबा परीसहा सहइ ते कहइ छइ । जाणइ आवादीइ ते वद्धमत ज्ञानावरणादि घाति कर्म ॥ तेहनइ विषइंति
प्रइ ते छद्मस्थ सकषायई त्यर्थः ॥ उदिन्न॰ ॥ उदइ आव्या ॥ सम्मं सहेज्जा॰ सम्यग् कषाना उदयनइ रूंधइ नइ करी सहइ
इ ॥ तेसयनइ अभावइ बलइ नही ॥ सुसटनीप रिइं ॥ खम॰ क्षमाइ करी क्षमइ ॥ ति॰ ॥ अक्षी दीनपणाइ क्षमइ ॥ अहि॰ अहिया
इ ॥ तेसयनइ अलावइ बलइ नही ॥ उदिन्नकम्म॰ मिथ्यात्वमा हनी आदिना उदय थोऊदमइं ॥ अयं॰ ए प्रत्यक्ष पुरु
स इत अदिकपणइ करी वलइमलो ॥ उदिन्न कम्म॰ मिथ्याचामा हनी आदिना उदय ॥ ऊ ॥
॥ उम्मत्तगत्त ए॰ मद्यरादिकइ करी मइ विकल सत वित्तछइ तेणइं ॥ मए॰ मुरुनइ ए पुरुष ॥ अक्को॰ आक्रोसइ
सरापति दुर्वचनइ करी ऊलंताइ ॥ उपहास्य करइ ॥ अथवा अवहसई ॥ मुंसुं अदावति करिइं ॥ निछोडइ बलात्कारि

तितिक्खेज्जा अहियासेज्जा उदिन्नकम्मे खलु अयं पुरिसे उम्मत्तगभूते तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति
वा अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भंछेति वा बंधति वा रुंभति वा छविच्छेदं वा करेति पमारं वा नेति
॥ उद्दवेइ वा वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं भिंदति वा विभिंदति वा छिंदति वा अवहरति वा । जक्खाइ
ट्ठे खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति वा तहेव जाव अवहरति वा २ ममं च णं तब्भववेयणिज्जे
कम्मे उदिन्ने भवति तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति वा जाव अवहरति वा ३ ममं च णं सम्मं असहमाणस्स

आ हीनइ परहोनाषइ ॥ निर्लछइ ते दुर्वचनइ करी ॥ बांधइं ते रासडी आदिक री ॥ रुंधइ ते किसी मांहि घातइ ॥ छवि॰
हस्तादि सरीरना अवयव नउ छेद करइ ॥ पमारं॰ मरणनो प्रारंभ मुर्छा विसेष ॥ अथवा मरणानुं स्थानक तिहां ॥ नेइ॰
पोहो वाडइ ॥ उद्द॰ अपद्रावत मारइ ॥ अथवा पमारं नेइ॰ मरणनइ पोहोवाडइ ॥ उद्दवति॰ उपद्रव करइ ॥ पडिग्ग॰ पा
त्र ॥ पायपुंछण रजोहरण ॥ अभिंदइ॰ छूला कारिइं ॥ बेदालइ॰ ॥ विभिंदइ॰ विगलो मुकइ ॥ अथवा वस्त्र मइ ॥ अविंद
इ॰ घा उस्युकापइ ॥ विभिंदइ॰ विसुधिंकापइ ॥ छिं॰ छिंदा ते पात्र फाडइ ॥ अव॰ अपहरई॰ चोरइ ॥ पुव्विं
कहिउं ते ति प्रूअवलंबी इंनइ परीसहादिक सहइ ॥ आक्रोसादिक माहि आक्रोस परिसैस्हणं अनेर वधपरिसह माहि इ
आवइ ॥ परिसहा आश्री ॥ तथा रूपं सगि आश्री जो ताइ आक्रोसादिक मनुष्यना प्राद्वेषकादिक रूपस माहि आवइ ॥

तेआरत्नद ऊपसर्गनाग्रीमा हितुंरूपसह्यो ऊपसर्ग ॥१॥ जखाइट्ठे॰ देवताइं अधिष्ठ्यो छइ ए पुरुष ॥ तेणइकरी मुझ
नइ ए आक्रोसादिक करइ छइ ॥२॥ परीसहो पसर्गनउ कारणहार मिथ्यात्वादि कर्मनउ वस्यवर्ती छइ ॥ ममं॰ मुझनइ पणि
मनुष्यनइं स विद्यकर्म वेदीइ तेकर्मनउ उदय थाइ छइ ॥ तेणइ मुझनइ आक्रोस करइ छइ पणि एहनो वांक नही ॥३॥ मैं
ममं च॰ ए पापना अस्त्रीरुनाको ध आक्रोस्सादि मुझनइं सम्यग अणसहइता ॥ किं॰ सुं थाइ ॥ एगंतसो॰ सर्वथा
अरवममाणस्स अतितिरवमाणस्स अणहितासमाणस्स किमन्निकज्जति एगंतसो मे
पावेकम्मे कज्जति । इमेवणं सम्मं सहमाणस्स जाव अहियासमाणस्स किमन्निकज्जति ए
गंतसो मे निज्जरा कज्जति ५ इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थे उदिन्ने परिसहोवसग्गे सम्मं
सहेज्जा जाव अहियासेज्जा पंचहिं ठाणेहिं केवली उदिन्ने परिसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा
जाव अहियासेज्जा तं खित्तचित्ते खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति वा तहे
व जाव अवहरति वा । दित्तचित्ते खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे जाव अवहरति वा
२ जक्खाइट्ठे खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे जाव अवहरति वा ३ ममं च णं तब्भ
ववेयणिज्जे कम्मे उदिन्ने भवति तेण मे एस पुरिसे जाव अवहरति ४ ममं च णं सम्मं
सहमाणं तितिक्खमाणं अहियासमाणं पासित्ता बहवे अन्ने छउमत्था समणा निग्गंथा
पापकर्म ॥ असातादि ॥ कज्जइ॰ संचइ ए परीसहानाकरणहारनइ पापबंधसइ ॥ मुझनइं सम्यगसहितां निर्ज
रा थाइ ॥ खित्तचित्त॰ पुत्रनइं सोकादिकइं करी ॥ निष्टचित॰ चेतनारहित ॥१॥ दित्तचित्त॰ पुत्रजन्मादिकइं १५०
करीनइं दर्पसहित चित्तनो जन्म तथयो छइ ॥ पासित्ता॰ देषीनइं अनेरा सहिसइं । येतणे अनेराउतमन
इ अणुमादिइ वालइ ॥ वली छद्मस्थनुं अनइं केवलीनुं स्वरूप कहइ छइ सूत्र ए ॥

ए हेतुना अर्थ भगवतीना पांचमा सतकना सातमा उदेसानी चूर्णिनइं अनुसारिइं कांइ एक लषीइ छइ ॥ वृ
त्तिकार कहइ छइ ॥ हेऊं न जाणइ॰ ॥ विकृ ऊ म अग्निनुं चिन्ह तेधुम ते हेतु कहीइ ॥ तजाणइ देषइ सदहइ ॥ अन
इ ते हेतुनइं पुद्गलेचइ ए ४ येहवा सम्यक्दृष्टी जाणइं तिहवी मिथ्यात्वी न जाणइ ॥ मिथ्यात्वी आश्री कहइ छइ ॥ हेतु न जाणइ
ते विसेष पक्षको ग्रहइ नही ॥ ईहां नकार छे तनिषेधनो अर्थ नथी बोलतो । कुत्सितनउ अर्थ बोलइ । तेणइ मिथ्यात्वी सम्य
य प्रकारिइ हेतु न जाणइ । इत्यर्थः ॥१॥ हेतु न पासइ॰ ॥ सामान्य प्रकारिइं देषइ नही ॥ न बुझइ॰ ॥ सदहइ नही ॥ बोधि सब्द
सद्दहिवानो पर्याय छइ । तेहणं ईहां बुझइ ॥ सद्दहिवानउ अर्थ कीधो छइ ॥ न अभिगच्छइ॰ ॥ ते वस्तु रवानइ कारणइ
नापाहो बइ ॥ ए चतुर्विध हेतु ॥ हेतुमन्नाणमरणं॰ पिड तमरणनो हेतुअनाणतो अज्ञान मरण मरइ॰ ॥ करइ ता ॥ हएली
उदिन्ने परिसहोवसग्गे एवं सम्मं सहिस्संति जाव अहियासिस्संति ५ इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं
केवली उदिन्ने परिसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा जाव अहियासेज्जा पंच हेऊ पं० तं० हेउं ण
जाणइ हेउं ण पासति हेउं ण बुज्झति हेउं णाभिगच्छति हेउमन्नाणमरणं मरति पंच हेऊ
पं० तं० हेउणा ण जाणइ जाव हेउणा अन्नाणमरणं मरति २ पंच हेऊ पं० तं० हेउं जाणइ जाव हे
उं छउमत्थे मरणं मरति ३ पंच हेऊ पं० तं० हेउणा जाणति जाव हेउणा छउमत्थमरणं मरति ४
हेतु कहीइ ॥१॥ वली हेऊणा न जाणइ॰ धुमादिकइं करी अग्न्यादिक जाणइ जेहवुं सम्यग्दृष्टी तेहवुं मिथ्यात्वी दृष्टी
न जाणइ । तेहणं मिथ्यात्वी आश्री व्यापरि हेतुक कहइ छइ ॥ हेतिइं करी न जाणइ सम्यक्दृष्टीना सरिषु नदे. पइ
इत्यादि ॥ मरणनइं हेतिइं करी अज्ञानमरण मरिइ ते हेतु कहीइ । ए पांचमुं हेतु ॥२॥ हेतु जाणइ॰ ॥ सम्यग्दृ
ष्टी पणइ करीनइ सम्यग् जाणइ ते हेतु कहीयइ ॥ हेतु छउमत्थ॰ ॥ सम्यग्दृष्टी पणाथकी अज्ञानमरण नही अन
इ हेतुइं करी वस्तु जाणइ तेमाटइ केवली पणि नही ॥ एणइ कारणिइं केवलीमरण नही । तेमाटइ छद्मस्थमरण
मरइ ॥३॥ हेऊणा जाणइ॰ ॥ हेतुइं करी जाणइ इत्यादि ४ ॥

पंच अरहंत अबंध जाणइ। हेतु विना वस्तु। नृया० छद्मस्थ सर्वथा न जाणइ तिकाइ एक जाणइं। इत्यर्थः ईहां नकार
सर्व निषेध नइ अर्थ नथी। देस निषेध नइ अर्थ छइ १ इम हेतु विना देषइ नही २ सद्दहइ नही ३ तिह नइ जो
ईवइ नही ४ हे० अहेउ छउमं० अध्यवसायादि सात हेतु मरवानां छइ। ते विना निरुपक्रम पणाइ करी छद्मस्थ
मरण मरइ ५ अहेऊणं न जाणाई० अध्यवसायादिक केवलीपणाथकी हेतु नइ अजाणइ जाणइ देषइ इत्यादि० तेअ
हेतु कहीइ। तिम अनंतरोक्त छद्मस्थ अहेतइं करीनि हेतुं न जाणइ। ईहां पणि नकार देसनिषेधः तिसणि किंचित जाणइ
इत्यर्थः पासइ इत्यादि तिमईज। अहेऊणं छउ० अहेतइं करी उपक्रम नइ अभावइ छद्मस्थ मरण मरइ ए पांच
मुं अहेतु ६ अहेऊणं जाणई० हेतु विना केवली माहि धुंमादिक वस्तु जाणइ। तिम पासइ इत्यादि अहेउ०

पंच अहेऊ पं तं अहेऊणं याणति जाव अहेऊं छउमत्थमरणं मरति ५ पंच अहेऊ पं तं अ
हेऊणा न जाणइ जाव अहेउणा छउमत्थमरणं मरति ६ पंच अहेऊ पं तं अहेऊ जाणति जाव
अहेऊं केवलमरणं मरति ७ पंच अहेऊ पं तं अहेऊणा जाणति जाव अहेउणा केवलिमरणं
मरंति केवलिस्सणं पंच अणुत्तरा पं तं अणुत्तरे नाणे अणुत्तरे दंसणे अणुत्तरे चरित्ते अ
णुत्तरे तवे अणुत्तरे वीरिते पउमप्पभेणं अरहा पंचचित्ते होत्था ते

अहेतुना उपक्रम विना केवलमरण मरइ अहेउणा० अहेतइं करी जाणइ केवली माटइ तिमा देषवादि ८ ए हेतुनां अर्थ
मात्र कह्या छइ पुरुं तत्व तउ बहुश्रुत जाणइ। एश्री अभयदेवसूरीनुं वचन। क्षयथकी अनेरा प्रधान नथी ते अनुत्तर ए
हनइ प्रधानपणउं तिहां सर्वथा आवरणनां क्षयथकी अनुत्तरज्ञान अनुत्तर दरिसन। ते ज्ञानावरण दर्शनावरणना
क्षयथकी। अनुत्तर चरित्र० अनुत्तर तव० तिमोहनीना क्षयथकी। ईहां तप ति चारित्रनो भेद छइ अनइ चारि
त्रा तमोहनी नइ क्षइं छइ तिसणि तपनुं प्रधानपणुं तमोहनी क्षयथकी छइ। सलीसी अवस्थानइ विषइ शुक्लध्यान
नां भेद केवली नइ छइ ध्यान ते अभ्यंतर तपमां छिइ तिसणि अनुत्तरतप अनुत्तरवीर्य तिवीर्यांतरायना क्षयथ
की ए

१५१ | १५१

दर्शनात्त
सामान्य
तु जाण
समुत्पन्न
ते ऊपनुं
चित्रसुदि
पुन्निमाइ
परिनिव्र
त्तिमो
क्षिगया
मागसिरव
दि ११ मता
तरनइ आम
नइ फाल्गु
नवदि ध
नि दिनइ
पव ववे०
पद्मप्रभ
ना सुत्रनी
परिइ पुष्फ
दंतनु सूत्र
लेखवउं

केवलीना अधिकार थकी तीर्थंकरना सूत्र १७ पउ० नवग्रैवेकथकी चव्यो चव्या मू० गभ० व० ऊपना हि ऊपनो माघवदि
६ ऊपनुं कार्तिकवदि १२ जन्म। कार्तिकसुदि १३ प्रव्रज्या मुंडे० केसकषायादि टालवइ मुंड अगा० घरथकी नीकली
नइ अणगा० अमणापणा नइं पव्व० पकर्षइ पोहोता अथवा अणगारपणइ पवेसी दीक्षा लीधी अणं ते० प
र्यायना अणंतपणाथकी अनुत्तर सर्वज्ञानमांहि कृष्णा पणाथको निरावरणे ते सर्व आवरणना क्षयथकी निव्वा
घाते अप्रतिघाती पणाथकी निरावरण ते सर्व आवरणना क्षयथकी आघवाकडाली त्यादिक नइ विषइ षलाइ नही कि

चित्ताहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते चित्ताहिं जाते चित्ताहिं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्व
इए चित्ताहिं अणंते अणुत्तरे णिव्वाघाते णिरावरणे कसिणे पडिपुन्ने केवलवरनाणदंस
णे समुप्पन्ने चित्ताहिं परिनिव्वुते पुप्फदंते णं अरहा पंचमूले होत्था मूलेणा चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते ए
वं चेव एवामत्तेणं अभिलावेणं इमातो गाहातो अणुगंतव्वातो ॥ पउमप्पभस्स चित्ता मूले पुणहो
इ पुप्फदंतस्स। पुव्वाइं आसाढा सीयलस्स उत्तर विमलस्स भद्दवता १ रेवति त अणंत जिणो पूसो ध
म्मस्स संतिणो भरणी। कुंथुस्स कत्तियाउ अरस्स तह रेवतीतो त २ मुणिसुव्वयस्स सवणो अस्सिणि
णमिणो नमिणो चित्ता पासस्स विसाहाउ। पंच य हत्थुत्तरो वीरो ३ समणे भगवं महावीरे पंचहत्
थुत्तरे होत्था तं हत्थुत्तराहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहरिते हत्थुत्तराहिं जाते
हत्थुत्तराहिं मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए हत्थुत्तराहिं अणंते अणुत्तरे जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने
पंचठाणस्स पढमो उद्देसउ सम्मत्तो

केवली एवं० अनंतरोक्त स्वरूप पइ करी एएणं० अनंतर कही छइ ते णाइ
अत्य हइ अभिलावेणं० सूत्रपाठि एत्रिणि सूत्रस्य इनी गाथा अणुगंतव्वाउं० अनुसरवी तकरिवी एम विस्तर तीर्थंक
रना अधिकार मूल अवमानुं व्याख्यानइ अनुसारइं जाणिवी तेह सिवाय मांहि लो बीजउ विसाग पंचमाठाणनो पहिलो उदेसो

सिणे० स
र्वण्दार्थनो
आणवाव
को संपूर्ण
तत्वा तांना
अवयवनी
अपेक्षाइं
पांडुं नही
पुर्णिमाना
चंद्रमानीप
रिइ केव
ले० उह
नइ अनं
ज्ञान सघाइं
ऊनथी अ
थवा केव
ल ते शुद्ध
पणा थकी
वर ते प्रधान
ने ज्ञीनात
विसप्तनु
जाण

पुर्वलिइं सुत्रइं केवली निग्रंथिआश्री अधिकार कहिउं ॥ इहां बप्रस्तावि निर्ग्रंथिआ साधुहाइ छइ ॥ जे कल्पइं ॥ कुण उनही ॥ इमा उ ॥ आगलि नाम कहीइ छइ तेणइं करी प्रत्यक्ष ॥ उद्दिट्ठाउ ॥ सामुञ्चयइं कही ॥ यथा महानदी पणि इम न जाणीइ केतली ॥ तत सरणा ॥ गणियाउ ॥ संख्या सहित ॥ यथा पंच पणि इम न जाणी ते पांच केही ॥ तेरुरणा ॥ विंजियाउ ॥ प्रगट कीधी ॥ यथा ॥ गंगा ॥ महन्नवाउ ॥ बहुउदकपणाइं करी नइं महासमुद्र ॥ अथवा समुद्रगामिनी ॥ महानदीउ ॥ अंतो मा ॥ मसवाडामांहिं ॥ दु ॥ बि वार त्रिणि वार ॥ उत्त ॥ बाहुइं घाइं करी ऊलंघवु ॥ संतरित ॥ नावाइं करी ऊलंघवउं

नो कप्पई निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा इमाउ उद्दिट्ठाउ गणियाउ विंजियाउ पंच महन्नवाउ महानदीउ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा संतरित्तए वा तं गंगा जउणा सरऊ एरावती मही उत्तरित्तए वा संतरित्तए वा तं गंगा जउणा सरऊ एरावती मही ॥ पंचहिं ठाणेहिं कप्पंति तं भयंसि वा दुब्भिक्खंसि वा २ पव्वहेज्ज व णं कोइ उदउघंसि वा एज्जमाणंसि महया वा अणारिएसु ५

अथवा उत्तरिवुं ते एकवार ॥ संतरिवुं ते अनेकवार ते न कल्पइ जे भणी आत्मसंयमनइं उपघाति इकरी बाधि त्रमइं सबलो लागइ ते भणी न उतरवी ॥ यतं आह ॥ मासस्स तिं तरति त्रिय ॥ दगालवा एकारभाणीति ॥ उदकलेप तनाति प्रमाण जललंघुं ऊतरिवुं ॥ एणा बमोटी नदी ॥ तथा बली एहवी मोटी नदी आलरी होइ तेही मास मांहि एकवार ऊपरांति ऊतरवी नहीं ॥ एऊतरतां मगरादिक ताणइ ॥ सरीर अपाइ आदि बुडइ ॥ नावा कदाचि बुडइ । इत्यादि अनर्थ ऊतरतां ऊपजइं ॥ हिवइं अपवाद कहइ छइ ॥ सयंसि वा ॥ राजानइं तथा विरोनइं सइं बतिइं उपद्रवादिक लुस वानइं तत्पिं करी ॥ दुभिक्खे ॥ भिक्षानइं अलावइं ॥ २ ॥ पव्वहेउ व णं कोइ ॥ प्रत्यनीक कोइ एक तिहां गंगा निं विषइं लो लतो हुइ ॥ उदउघंसि वा ॥ गंगादिकनां ऊन्मारग गामीपाणी आवइं ते उदक ॥ उघ ॥ ते प्रवाह ते णइं करी बुडवा मइं सयिइं करी ॥ महता ॥ मोटइ आडंबरिइं ॥ अणारिएसु ॥ जीवितव्य अनइं चारित्र नालुसणहार ऊमलेछादि प्रराल वी तइ ऊतइ ॥ अथवा मलेछ आवतेछ तिइं ॥ एपुण आलंबनकेतइं ॥ नदी ऊतरतां दोष नही ॥

पढमपाउसंसि ॥ आषाढ श्रावण ते पाउस कहीइ ॥ ते मांहे प्रथम पाउस ते आषाढ अथवा ऋतिमां दिवसि विदिली ऋति ते पाउस ॥ अथवा च्यार मसवाडा नउ वर्षाकाल ते प्रावृस कहीयइ ॥ तिहां सित्तरि दिन प्रमाण पाउसनउ बीजउ भाग । तिहां तत्र गामादिकि जावुं न कल्पइ ॥ पहिला भागनइ विषइं पणि दिन पंचास नइं विषइ ॥ अथवा दिन वीस प्रमाणनइं विषइं पणि जावुं न कल्पइ ॥ ते पतला भणी दिन ५० नो विषइ अथवा दिन २० निषइ जीवा कुल प्रथवी भाटइ ॥ ऊक्तं च ॥ एक्के अणि तिगहि वीसइ राइं सवीसइं मासं ॥ तेण परं मग्गिगहियं ॥ गिहिनायं कत्तियं जाव ॥ १ ॥ अल्लि यहितंति ॥ निश्चइं जनहो ते उपद्र व्यादिक इं नी कलइ ॥ उक्तं च ॥ असिवादिकारणेहिं ॥ अहवा वासं न सुट्ठुयारद्धं ॥ अहिवड्ढियं मि वीसा ॥ इयरेसु सवीसई मासो ॥ १ ॥ ऊ संवच्छरनइ विषइ [illegible] अधिकमास हुइ ॥ तिहां आषाढ थकी वीस दिहाडा लगइ गणि ॥ अन स्थिर ही कति कारण पडइ अन्य जाइ पणि ॥ आन रास वच्छरनइं विषइं ५० दिन लगइ गणि अन स्थिर हो ॥ ते कारणि जा

णो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा पढमपाउसंसि गामाणुगामं दूइज्जित्तए पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ तं सयंसि वा दुब्भिक्खंसि वा जाव महता वा अणारिएहिं वासावासं पज्जोसविताणं णो कप्पइ निग्गंथाण वा २ गामाणुगामं दूतिज्जित्तए

[illegible] इहां आतापनादोष ॥ बकायविराहणया ॥ आवडुणं विसमखाणुकंटकेसु ॥ वअणामस्मि रूहरूरको ॥ सावय तेण उबद्दवे ॥ १ ॥ अखुलिस्सु पयसेसु ॥ पुढवाइं जीवलोइ दुविहेसु ॥ उल्लपयावणं आगमणं ॥ इहरा ताउ हरी कुंथु ॥ २ ॥ गामाणु ॥ अनुक्रमइं ॥ ग्रामनो [illegible] परं प्राथइं एकथा बीजइ जाइ इत्यादि ॥ अथवा एक ग्राम थी आगलु नाही नुंप कइं आवसत अनुग्राम । ते ग्रामानुग्राम प्रतिइं ॥ दुई ॥ विहार करवउ नकल्पइं ॥ एउत्सर्ग हिवइं अपवाद कहइ छइ ॥ पद्धाहेउ वणं कोइ ॥ कोइ एक ग्राममांहि बाकाढइ ॥ उदोत्या घोसिवा ॥ प्राणी नउ प्रवाह आवतइं ॥ इत्यादि कारणा आबिइं नासतां दोष नहीं ॥ उक्तं च ॥ आबाए दुभिक्खे सदए ॥ उघंसि वा महंसि ॥ परिसवणं ताणवा ॥ एहा परउ वाकारि जोसि ॥ १ ॥ एथा कालनइं विषइं जि रहिघा इते वासावास ॥ अथवा वर्षाऋतिनइं विषइ ॥ आवास ॥ रहिवुं ते वासावास ॥ ते उघन्य सौ ७० दिन का त्रिकी पुर्विमाल गि इं ॥ मध्यम ते ४ मास प्रमाण ॥ उत्कृष्टो ६ मास ॥ वलोमब्रीयारा ॥ समस्त प्रणइं करी वसीनइं ॥ ते पर्युषणा कल्पइं करी नियम छइ ॥ आरंत्वा मइइं सर्वः ॥ पर्युषणाकल्पइं मक रिवुं ॥ कालादरी करवी ॥ नव विगइ नउ त्याग ॥ पीठफल गादिक संस्तारनुं ग्रहिवुं ॥ उच्चारादिकनां ताजन ग्रहिवा ॥ लोचकरिवो ॥ नवो सिष्य नइं दिक्षा न दवी ॥ पुर्वलां ग्रह्या

= चतुर्मास प्रमाणे ए बाकतरवा हइ इतिवि वेषेतः तत्र सप्ततिदिन प्रमाणे प्रा वृषो द्वितीय भागता वतन कल्प ते ॥ एवं गतु प्रथमभाग पिपंचास ते दिन प्रमा णेन कल्पते ॥ जीवव्याकुलत्वात् ॥ अविचारना अर्थ ॥ १

राघडु गलच आदि मइ तऊइ ॥ नवां ग्रहइ ॥ सिध काले जोर रातदिवस विमलां ऊपगरणनुं ग्रहिवुं ॥ सबाजो ऊन ऊपरां तिन जावुं ॥
ते अदीगा जातो अदीगाऊ वलतो ना एवे सबाजो ऊन ॥ गणहा० ॥ आनरा को एक आचार्य कि कारइ अपुर्व कृतइ छइ तेसंघा
टा कर आहार छइ ॥ जा तेक कारी ते कृत नग्रहीइ तो विछेतिजाइ ॥ ते ग्रहिवा नइ कां जिइं वउमासा माहि जावा कल्पइ
दंसणहा ॥ दर्सनप्रभावक ना जे सास्त्र मइ अर्थ ॥ थिरहट्ठ० ज्ञानाइदे तइ चउमासुं रहितु छइ । तहां आनंद लानाइ
त्यादिकादोषऊपजइ छइ तेटालवानइ कांजइ ॥ आयरिय उवज्झा० ॥ आचार्यऊपाध्याय ॥ सिवीसु लिहा० ॥ सरीर श्री
जुइ थाइ तेकालकरतेइ ॥ ते गछनइ विषइ अनेरा आचार्य नाअनावसले तेगणआग्रथिवानइजाइ ॥ अथवा ॥ वी
सु लिज्जा० ॥ तेसाधुनइं आचार्य नइ वीसासछइ तेतणा तेगण आस्थिवा नइंजाइ ॥ पोतिइ त्यहिं त्रि दूरहणछइ गआ वा
यें ऊपाध्या तेसंघकी ॥ बाहिरि अनेरानउ ॥ वीया वच्चकरवानइ आचार्यादिके माकलइ । तिहां वीयावच्चकर

पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ तं णाणट्ठयाए दंसणट्ठयाए चरित्तट्ठयाए आयरियउवज्झाया णं वा सेवी
सुं लिज्जा आयरिउवज्झाणं वा बहिता वेयावच्चकरणत्ताए । पंच अणुग्घातिमा पं० तं० ह
कम्मं करेमाणे मेहुणं पडिसेवमाणे राती भोयणं भुंजमाणे सागारितपिंडं भुंजमाणे ध

वा जाइ ॥ उक्तं च० असिव १ ओमोयरिए २ रायदुट्ठे ३ भय ४ गेलन्न ५ नाणाई तिगस्सट्ठा ६ वीसंभणा ७ पंचमो णं वा ॥
अणुग्घाइमा० ॥ उघात ॥ लघुकरवा कहया तप विसेष ते नथी जिहां ते अनुद्घात । ते प्रायश्चित ते छइ नइ आवइ ते अ
नुघातिक ॰ हत्थ० प्रसिद्ध ॥ मेहुणं० मैथुन अति क्रमादि दोष इं सेवतु ॥ रात्रिभोजन नाच्यार लइ ॥ ३ थ्यघको अस
नादि ॥ हित्रघो समय दितमाहि ॥ को लघकी दिवसिनु ग्रहिऊ ॥ दिवसनइ लोग विवु ॥ दिवसनु ग्रहिउं रात्रिइं लाग वि
वु ॥ रात्रिनुं ग्रहिऊं दिवसइ लोग विवु ॥ रात्रिनु ग्रहिऊं रात्रिइ लोग विवु ॥ इम चउभंगी रूप ॥ सावधी रागद्वेष पिंड करी
भुंजइ ॰ समता ॥ यद्यपि फासुइ छइ ॥ तथापि क्षुधा दिदोष तो दोहिला ॥ कदाचित दोष इ अजीआलइ कोडी आदि दोसइ ॥
तथापि एअना वीसम्मि लगुणनी विराधनालगी ॥ असे दोहिला नी परि परिहरइ ॥ घरसहित ते सागार तेहना ॥ १५३
पिंड आहार उपधि रूप ॥ ५ ॥ तथा चोक्तं ॥ तणडार डगल मल्लग ॥ संथार पीढ लेवाइ ॥ सेज्जायर पिंड ॥ नहोइ व
हिउ ॥ १ ॥

तसि उत्तर जिम तो दोष ॥ तार्थंकर नोनिषेध ॥ अज्ञात उंछ लिंगिन्न भावना नी अघाट लइ ॥ हलवाए पुण पुनर पिक्षमा
ओदवानी अघाटलई ॥ इत्यादि ॥ राजा व क्षत्रिया दित इनो पिंड ॥ जे हनइ राजा निषेध करवो छइ ते राजा नउ पिंड वर्ज
वउ अन्यनी सउना ॥ अष्ट विध राजपिंड ॰ असणाइया चउरो ॥ वच्छ पाय कंबल चिवं ॥ पायपुंछणं चितसा ॥ अट्ठ विहो
रायपिंडो उ ॥ १ ॥ एलो गयता आज्ञा भंगादि दोष ॥ कुसोलए करी भानइ ॥ लोभघकी साधुनो एषणा न उव्याघात धाइ
॥ चोरादिक नी संका ऊपजइ साधुऊपरि ॥ इत्यादि ॥ साजोना अंतेउर मोहिं पइसतो ॥ नाइक्कम० ॥ आंशी अथवा आ
र अतिक्रमइ नहीं ॥ नगर कउइ ॥ सव्व० ॥ दिसि विदिसि नइ विषइ ॥ गुप्त ते प्राकार वीऔहा पतणा छकी ॥ गुप्तद्वार ते पो
लि दिवायकी ॥ तपकरइ ते श्रमण ॥ मा हणो एह बोलइ ते माहण ॥ एवेकु सछइ ॥ उत्तर गुण नइ मुल गुण वे तसंयु
तइ तेसर्व ॥ अथवा श्रमण ते साक्यादि० माहण ते ब्राह्मण ॥ नो संचाएंति० नसक इ ते कुण पानन इं अर्थि इ नगर बाहि

रायपिंडं भुंजमाणे ॥ पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे रायंतेउरमणुपविसमाणे नाइक्कमंति तं नगरे सि
या सव्वतो समंता गुत्ते गुत्तदुवारे बहवे समणमाहणा णो संचाएंति भत्ताए वा पाणाए वा निक्ख
मित्तए वा पविसित्तए वा तेसिं विन्नवणट्ठताए रायंतेउरमणुपविसेज्जा पाडिहारियं वा पी
ढफलगसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणमाणे रायंतेउरमणुपविसेज्जा हयस्स वा गयस्स वा दुट्ठ
स्स आगच्छमाणस्स भीते रायंतेउरमणुपविसेज्जा परो वणं सहसा वा बलसा वा बाहाते गहा

रि नी कली पईसीनो कलवुं ते नगर बाहिरि इं तिहां नइ कुलिजावुं । ते नगर माहिं पाबउ आविवुं ॥ तेसं विन्नवणट्ठया
ए० ते श्रमणा ना कार्य मइ अर्थि ॥ वीहापनाय० वीनविवा मइ अर्थि इं अंतेउर माहिं राजा होइ तिहां ॥ राजा नइ कं
हिवा नइ काजिइं जाइ ॥ अथवा त्माटिकी राणी नइ कहिवा अंतेउर माहि जाइ ॥ इहां समण साक्यादिक पी छइ । तेहनइ
अर्थि इं ऊअंतेउर माहि जाइ ॥ ते अपवाद रूप छइ ॥ तिका इएकु अन्य ते संघादिकनुं कार्य अवलंबीनइ जाइ ॥ १ ॥ को
र्य सिधइ पाछा आपीइ ते प्रातिहारिक ॥ पीढ० ॥ तेवाजवटादिक ॥ फलग ते कृणणनु पाटीऊ ॥ सज्जांते सर्वांग प्र
माण पाटीयानी ॥ संथारा ते नामो पाटीयानी ॥ अथवा सय्या ते वसति तेहनइ अर्थि इं संथारा ते सेय्या संथारा

Dr. BHAU DAJI

पञ्च पितमाणे० ॥ तपा बाञ्आ पवाञाइ ॥ जिणइकारणइ त्यं जिहांथा आणपे कुइ ते तिहां जिञ्आप्रवुं ॥ इहायद्या विना पाठ
तं आप्रवुनकुइ ॥ तेनणं आणाकहिऊं यहिऊं जाणिवुं ॥२॥ पारावलं० परकोयक ॥ सहसा० आकस्मा ते ॥ बलसा० बला
कारिइं बाहिरं ग्रहीनइ आं तेउर माहि घातइ ॥४॥ बहियावरण० नगरथी बाहिरिइं ॥ आ० आराम विषइं ॥ उद्या ननइ वि
षइ रह्यो छइ साधु ॥ आराम ते विविध फुलनी जाति इं लालित ॥ उद्यानते त्वा पिइं करी स्यालित ॥ तेस्या धुनइं राजा नउं आंते
उर लोक ॥ सद्वो० वउपारवर ॥ संप्र० वीटानइं ॥ संनिवेस० ॥ रहइ ॥ आंतेउर वाचिइं इम रह्या माटइं दोषनहीं ॥५॥
आंतेउर माहिं गयाए दोष सघादिइं डीना विषइ जागइ ॥ एषणा सुडनहोइ ॥ अगार कथाइं विकलथाइ ॥ साधुनइं
गृधपणुं ऊपजइं ॥ पुर्वला अगारसोस रिइं इत्यादि ॥ एअंतेः पुरनी स्त्री आश्री कहिऊं ॥ तस्त्रीना प्रस्ताब घकारस्त्री नउं जअ
धिकार कहीयइ छइ ॥ उवियडा० वस्त्ररहित ते तकहा वित ऊ दरुं नकुइ ता हिपणिकहिवाइ ॥ तेणइकारणिइं ॥ सह
य रायंतेउरमणुपविसइज्जा ॥ बहिता वणं आरामगयंवा उज्जाणगयंवा रायंतेउरजणो सव्व
त्ता समंता संपरिक्खिविआणं संनिविसिज्जा ॥ इच्चेतेहिं पञ्चहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे जावणा
तिक्कमति ॥ पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेणसद्धिं असंवसमाणी विगब्भं धारइज्जा ॥ तंइत्थी उवियडा
डा उन्निसंन्ना सुक्कपोग्गलं अहिट्ठिज्जा ॥ सुक्कपोग्गलसंसिट्ठं वासे वत्थं अंतो जोणीए अणु
पविसिज्जा ॥ सयंवा से सुक्कपोग्गलं अणुपविसिज्जा ॥ परोवा से सुक्कपोग्गले अणुपविसिज्जा ॥
माहिं घाओ एतलइ पहिरणारहित इत्यर्थः ॥ तेउविहिता ॥ अथवा उलपटरहित तेउविहिता यताइ मतइं ॥ उन्निसि
आ० पाउयीपति इवइठी कुइ ॥ एतलइं गुह्य प्रदेसिइं करी पुरुषथकी निकट ठकेऊं वीर्य तेणइ पर डोयलूं मि
पटादि ते केणइ एक प्रकारिइं तिहां नइं चोपी बइठी कुइ ॥ तिवारिइं ॥ सुक्कपुग्गले हिट्ठिज्जा० ॥ तवीर्यतस्त्रीयो
निइं करीनइं घणी लिपइ ॥ सुक्कपोग्गलसंसट्ठे० वीर्यइं परडिऊं वस्त्र ॥ से० ॥ तस्त्रीनुं ॥ अंतो० ॥ योनिमाहिं पइसइ ॥ व
स्त्रकहिऊं तिम उपलक्षणथी आनकूपणि जाणवुं ॥ केसीनी मात्ता केसीनी परिइं ॥ अथवा पणाना नइं कांइ ॥ आहत्या
लाहीं रूधवानइं कांइ ॥ वीर्यजरडआलुगडानइं । राइ ॥ अथवा अजाणपणइं वीर्य इं रवरडिऊं वस्त्र पिहिरिउं कुइ

विया डणावा० ॥ सिध्धंत नाथइं पाणी । तस्नान अनकालद ॥ तपाणी विसबठइ ॥ सीतोदक कूपाऊपाणी ते । तला
वादिकनुं ते मांहि नुं तेणइ करी ॥ आयममाणी० सुचिकरती ॥ पुर्वलुं पडुउलपाणी मांहि नुं वीर्य त्या नि मांहि जाइ
पइसइ ॥५॥ अपत्त० बार वरस लगिइं ॥ अप्राप्तत्या वन रतुनी अलावघकी ॥ अति क्रांता या वन ते ५५ वरस ऊ
परांति अथवा ५० वर्ष ऊपरांति ऋतुनाअलावघकी ॥ जातवेधा ते आजन्मथकी वांझिणी निबीज ॥ गलनपुट्ठा ॥
जिलानपणइं फरसी तरोगिइं पीडी ॥४॥ दोमणस्सिया० स्नोकसहित ५ निश्चो उया ०५ नित्य० ॥ सदा एतलइ
ऋतिविषि दिहो डानहीं ॥ सदा रुधिरश्रवइं ॥१॥ अणोउया० ॥ ऋतु ऊनावइ ॥२॥ वावनासाया० व्यापन० ॥ विण
ठऊं रागिइं करी ॥ श्रोत० ॥ गर्भ श्रयनुं छिडते ॥३॥ नइ प्रति ज्ञाइं अति प्राइं ॥ मइ ॥ बोला वाइ ॥ कहीइ
सीउदगवियडेणवा से आयममाणीए सुक्कपोग्गला अणुपविसिज्जा ॥ इच्चेतेहिं
पंचहिं ठाणेहिं जाव धारइज्जा ॥ पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणी
विगब्भं नाधारइज्जा ॥ तं अप्पत्तजोव्वणा अतिक्कंतजोव्वणा जातिवंझा गिलाणपुट्ठा
दोमणंसिता ॥ इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेणसद्धिं संवसमाणी विगब्भं ना
धारइज्जा ॥ पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणी विगब्भं नाधारइज्जा ॥ तं
निच्चोउया अणोउया वावन्नसोया वाविद्धसोया अणंगपडिसेवणी ॥ इच्चेतेहिं प
हिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणी विगब्भं नाधारइज्जा ॥ पंचहिं ठाणेहिं ॥ तं उउम्मिता
वावद्धसोया ॥५॥ वाधिंकरी व्यापिऊं श्रोत तकहिऊं तहीऊ ॥ एतलुइ स्नोतन छत्रुइं वाता दिकइं करीनइ तिहनोंस क्ति ह
णाणी ॥४॥ अणंगपडिसे० ॥ मुखादिकनइं विषइ मिइ घुन सेवइ ॥ अथवा अणंग० ॥ काम ते ऊपराऊ परिघणो
पुरुष नइ सेवइ ॥ अथवा इं डीया नित अंग । ते विना अनेरी परिइं सेवइ ॥ तअनंग ॥५॥ उऊमिणी० ॥ ऋतुकाल
नइ विषइ ॥

तेह
थी त्या
नि माहि
वीर्य पइ
सइ ॥ सय
वा से० ॥
पुत्री पि
तासी लया
षवानइ का
जइ ॥ तिइ
त्या नि मा
हिइं वीर्य घा
ति ॥३॥ परा
वा० ॥ सासु
आदिक व
कु नइं दीक
रानइ काज
इं वीर्य लेइ
त्या नि
माहिं घा
तिइ ॥१॥

+ विस्या
वत ३.२

निकाम० अतिहिं एतलइ वीर्य विक्रूटइ तां लगइं पुरुषनइं॥ पडि० सेवइ॥ समागता वा० मासिआ क्यावीर्य
नापुद्गल॥ स०॥ तेस्त्रीनी त्यां नि नइ दोषिइ करीनइं विध्वंसाइं। तेवीर्यनी सक्तिस्त्रणइ॥ अथवा लिंगनइ
फलवइकरीनइ॥ त्यां निबाद्धिरिबीर्य पडइ॥ २॥ उदिन्नवा० उदिन्न० उत्कृष्ट॥ पिनसहित लोहीकुइ तेअबा
उकुइ॥ पुराबा० गर्भना अवसर पहिलं॥ देवकंमुणा० देवतानइ आराधइ॥ गर्भधरवानी सक्ति हुंअ लाव
कुइ॥ अथवा देवतानइ काइ एक द्रव्य संयोग कीधो कुइ॥ तिकर्मलक होइ तेहनइ प्रलावइ
॥ पुत्ररूपत्यफल ति॥ नि विइ० लाधुं नकुइ॥ एतलइ न एड कर्मइ पुत्रपामीइ ते कर्म संचिवुं नकुइ॥ अ
णिगामम पडिसेवणिया विसवति समागतावा सेसुक्कपोग्गला पडिविद्धंसंति उदिन्न
वा सं पित्तं सोणितें पुरावा देवकंमुणा पुत्तफलेवा नो निविट्ठे सवति इच्चेतेहिं जाव नो
धारइज्जा पंचहिं ठाणेहिं निग्गंथा निग्गंथीउय एगउ ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चे
तेमाणा णातिक्कमंति तं अत्थेगइया निग्गंथा निग्गंथीउय एगं महं अगामियं छिन्ना
वायं दीहमद्धं मडविमणुपविट्ठा तत्थेगयतो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेतेमाणा णा
तिक्कमंति अत्थेगतिया णिग्गंथा २ गामंसिवा नगरंसिवा जाव रायहाणिंसिवा वासं उवागता
धवा पुत्रफल० पुत्र आपइ तेमाटइ दाम नुं नाम पुत्रफल॥ तेजन्मांतर विषइं॥ नो निविइ० दोधकं न होइ॥ स्त्रीना
अधिकार थकी॥ साधवी आश्री सुत्र छेकहइ छइ साधुसाधी॥ एगउ० एकठा ठां० कायोत्स र्ग अथवा बइसवु
सेज्जं० सुवुं निसीहियं० स्वाध्याय ना स्थानक॥ चेयमाणा० करतां॥ नाइ० आज्ञा उलंघइ नही॥ अत्थेगइया०
केटलाएक॥ एगं० तेहवा वीजा नही॥ महं० मोटी॥ अगामि० ग्राम रहित अथवा वाडवां त्यां गप नही॥ छिना
वेएकाकी एक॥ एगं॥ तेहवा वीजा नही॥ महं० मोटी॥ अगामि० ग्राम रहित अथवा वाडवा त्यां गपनही॥ छिना
वायं० साधु गाकुला दिक ना॥ अपातं० आविवा जावा॥ छिन्ना० छेदाणां छइ॥ दीहमद्ध० लांबा मारग छइ॥ ते
हनइ विषइ॥ अथवा पय अटवी कुलघता दीर्घकाल लंगइ तेहवी अटवी॥ जीतारनइ विषइं॥ दुर्भिक्षादिक कारण
नी वमथकी पइवा॥ तत्थेगउ॥ तिहां एकठां स्थानादिक करतां आज्ञा माहात्म्य सामाचारी उलंघइ नहीं॥ १५५

त्रिहां राजा नइ अति ध्यक करी इ ते राज्य धणी नी ति हां॥ वासं उवागया॰॥ वास रहिवा गया॥

एगइया॥ एकेक निर्ग्रंथ अथवा निर्ग्रंथी॥ उप॰ हिहां॥ उवस्सयं० उपाश्रो तेणा वापतिनुं गृहादिक॥ लभंति॥ पा॰ भ॰॥
एगइया ना॰ एकेकसाधु अथवा साधीनया मइ॥ तिहां एक वार हिंता आज्ञा अतिक्रमइ नहीं॥ २॥ अथेगइया॥ गृहीपति
नो उपाश्रो अणलाधइ॥ एगईया॰ एकेक नागकुमारना आवासनइ विषइ वासोरह्यो॥ अत्थे० छइ॥ ते नागकुमार
नास्थानक नासुंना पणाथकी॥ अथवा घणा लोक तिहां वासोरह्या छइ॥ तेमाटइं नीधणी आयपणा माटइ॥ साधवीना
रक्षानइ अर्थिइं॥ तिहां एकठा स्थानादिक करतां॥ आगमोक्त सामाचारी उलंघइनहीं॥ ३॥ मुसइत आमोषक॥ तेचोरहोसइ
छइ॥ तेवां छइ॥ निर्ग्रंथीना चीवर पडि॰ वस्त्र छइ॥ तिहां॥ पडिघा॰ वस्त्र लेवा जिहां वांछइ॥ तिहां साध्वीनां रक्षानइ का
एगतिता य त्थ उवस्सयं लभंति एगतिया णो लभंति तत्थेगतो ठाणं वा जाव नातिक्कमंति अत्थे
गतिता निग्गंथाय २ नागकुमारावासंसिवा सुवन्नकुमारावासंसिवा वासं उवागया तत्थेगतो
जाव णातिक्कमंति आमोसगा दीसंति तेइच्छंति निग्गंथीउ चीवरपडियाए तो पडिगाहित्तए
तत्थेगउ ठाणं वा जाव णातिक्कमंति जुवाणा दीसंति तेइच्छंति निग्गंथीउ मेहुणपडियाए पडि
गाहित्तए तत्थेगतउ ठाणं वा जाव णातिक्कमंति इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं जाव णातिक्कमंति
पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे अचेलए सचेलियाहिं निग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे नाइक्कम
ति तं खित्तचित्ते समणे णिग्गंथे णिग्गंथीहिं अविज्जमाणेहिं अचेलए सचेलियाहिं निग्गंथीहिं
उइ एकस्थानकादि ४॥ जुवाणादी॰ जुवान पुरुष दीसइ छइ। ते वांछइ निर्ग्रंथीनइ॥ मे॰ मैथुननइ प्रतिज्ञा अर्थिइं॥ पडिग्गा॰ ग्रहिवा
जिहां वांछइ। तिहां एकस्थानकादि ५॥ एअ अपवादसुत्र। अनइ उत्सर्ग ते अपवाद सहित छइ ते. अचेलए॰ वस्त्ररहित साधु॥ सच
लियां॰ वस्त्रसहित साधवी संघातिइ॥ संवस॰ एकठा व॰ एकठा वसतो आज्ञा उलंघइ नहीं॥ खित्तचित्त॰ सोकि करी विक्षि
प्त चित्त एहवा जतीनइ॥ समणे निग्गंथे अवि॰ अनेरा साधु जालवणहार॥ अवि॰ नथी तेवारिइं॥ साधी हरआदिक
नी परिइं ते साधुनइं जालवती आज्ञा अतिक्रमइ नहीं॥ अनइ साधु पाणि साधी संघाति इ वसतां आज्ञा अतिक्रमइ नहीं॥

द्विलिवन्न॰॥ अधिक हर्षघको विकलचित्तसाधु॥ ऊपाइइ॰॥ देवतानइ अधिष्ठइ॥३॥ उन्मादप्राप्त तेवातादिकना दोषथकी॥४॥ नेगांघीव पच्चाविए॰॥ कारणानावसथकी तृषादिकनइ साध्वीइ दीक्षा लीधी हुइ॥ आनेरा साधुनइ आवइ। साधुसाध्वी एकठार हितां आज्ञा अतिक्रमइ नही॥६॥ तो साधु अचेलकादिक छइ। ते बालपणा माटइ॥ अथवा माटा हुयां तां गुरुपणा माटइ इत्यादिक कारणइ अचेलउं आवइ॥ ए अपवादसुत्र उत्सर्गप्रतिषेध साधुसाध्वी संघातइ एक वाउ वसवुं तेवसनुं करइ तो साधुनइ दत्तनिर्ई करी माहोमाहि बालवइ करी लज्जा लोपतइ करी आज्ञाभंगादि अनर्थ घणो ऊपजइ॥५॥ उविंघिमैं नाअतिक्रमइ यो कहिक ॥ ते ता अतिक्रमवुं ते आश्रवरूप छइ। ते हेतु प्रतिपक्ष ते संवर

सद्धिं संवसमाणे णातिक्कमति एवामतेणं गमएणं दित्तचित्तं जक्खातिट्ठं उमायपत्तं निग्गंथीपव्वाविय तेसमाणे णिग्गंथ हिं अविद्धमाणहिं अचेलए सचेलियाहिं निग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे णातिक्कमति पंचआसवदारा पं तं मिच्छत्तं अविरती पमादो कसाया जोगा पंचसंवरदारा समत्तं विरती अपमादो अकसाती तमजोगितं पंचदंडा पं तं अट्ठादंडे अणट्ठादंडे हिंसादंडे अकम्हादंडे दीट्ठीविप्परियासिता दंडे मिच्छदिट्ठियाणं

२॥ एवि आदि अधिकार कहइ छइ॥ आश्रव॰॥ जीवरूपीयातलावनइ विषइ कर्मरूपजलनुं आविवुं॥ ते कर्मबंध नुं सर्घः॥ तेहना कारणानी परिइं॥ कारणां ते कषाय कर्मआ विनानउ॥ संवर ते जीवरूपीयातलावनइ विषइ॥ कर्मजलनुं आवतां रुंधिवुं॥ तेहना कारणानी परिइं कारण ते रुंधवाना उपाय॥ मिथ्यात्वादि ५ सम्यक्त्वा ५ एदसना अर्थ पहिलइ हताबंधमां छइ तिमजाणवा॥ जेणइ करी पोतइं डंडाइए॥ अथवा अनेराजीवनइ दंडीइए। ते दंड॥ अट्ठादंड॰॥ अपनी अथवा थावरनी पोतानइ अर्थि इं अथवा परनइ अर्थिइं जे हिंस्या कीजइ ते अर्थदंड॥ तेहथी विपरीत ते अनर्थदंड॥२॥ मुझनइ एणइ मार्युउ मारि छइ मारस्यइ। एणाइ अभिप्रायइ। यसर्व विरी आदिनो वधतां हिंस्यादंड॥३॥ अनेरानइ मारवानइ हेतसरमुक्यो अनइ लागो ते अनेरानइ ए अकस्मात दंड॥४॥ मित्रनइ घमाहेरी ते दृष्टिईम अज्ञानपणाइ ते मारइ। ते दृष्टिविपर्यासदंड॥५॥ १५८

तेस क्रियास्थानकमादिए पांचक्रियास्थानांतइं इसहइं बोलावीइ॥ सेष आइ क्रिया स्परना मइं बोलावीइ ते तिहां मिथ्यात्व क्रिया तेपोतना अवइ जात्यादिकनइ अर्थि हे उकबोल्इ॥१॥ अदत्ता क्रिया ते आत्मानइ ज्ञातीलानइ अर्थि अदत्त लिवुं॥२॥ अध्यात्म क्रिया ते केणाइ दुहव्यो नथी मन इऊ बाटजक रइ॥३॰ मानक्रिया॰॥ तेजात्यादि मदिइ मातो थकउ परनी हीलनादिक करइ॥ अमित्रक्रिया ते माता पिता बहिन आदिनउ अल्प अपराधइ ताढि॥ तेहनइ बोलवुं आक्रोसवके॥ ताडना दिकतीव्रदंड करइ॥ माया क्रिया ते मनवचनकाया ते धुर्त पणइ प्रवर्त्तावइ॥६॥ लोभक्रिया ते मोटा सावद्य आरंभ परिग्रह नइ विषइ लोभीउ प्रवर्त्तइ॥७॥ ईर्यापथिकी या ते उपसांत मोह हिगुणा गाणाना साधुनइ एक विध कर्मबंधन॥८॥ आवक्रिया प्रस्ताव माटइ कही॥ नवरं विगलिंया॰॥ याकेंद्री बेंद्री तेंद्री

णारइयाणं पंचकिरिया उपं तं आरंभिता १ परिग्गहिता २ मायावत्तिता ३ अपच्चक्खाणकिरिया ४ मिच्छादंसणवत्तिया ५ एवं सव्वेसिं निरंतरं जाव मिच्छदिट्ठियाणं वेमाणियाणं नवरं विगलिंदिता मिच्छदिट्ठीण भन्नंति सेसं तहेव पंच किरियाउ पं तं काइया १ अहिगरणिता २ पाउसिया ३ पारितावणिया ४ पाणातिवात किरिया ५ णारईयाणं पंच एवं चेव एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं पंच किरियाउ पं तं आरंभिता १ जाव मिच्छादंसणवत्तिया ५ णारयाणं पंच किरिया णिरंतरं जाव वेमाणियाणं पंच किरियाउ पं तं दिट्ठिया १ पुट्ठिता २ पा

चउरिंद्रीनइ सुत्रइं॥ मिच्छदिट्ठियाणं ए। विसेषणानकहिकं जेतलो ते हनइ सम्यक्त्वना अभावलो। सदा मिथ्यात्व छइ॥ अनइ सास्वादन ते अल्पपणामाटइं लषवुं नहीं ते रुणो विसेषरहित समुच्चयइ इम कहिवुं ते एहनइ पांच क्रिया छइ॥ कायविणा ते कायकी॥ पुढ्ठीया॰॥ तेजीवादिकनइ रागादिकइं करी पुछवाथकी अथवा फरसवाथकी॥ पाडुची यो॰॥ अधिकरणथकी ते खड्गादिकथकी॥ पाउसिया॰॥ प्रद्वेष ते मच्छर थी॥ पारितावना ते दुःख ऊपजाविवाथकी॥ दिट्ठिया॰॥ अस्वादि वीत्रामणादिक जोवा जावाथकी॥ पुट्ठीया॥ ते जीवादिकनइ रागादिकइं करी पुछवीथकी अथवा फरसवाथकी॥ पाडुचीया॥ ते जीवादिक आश्री आदेषाई थकी॥

सामंतोवणीवाईया० अश्वादिक नइं जोवानइं तिम दिसथकां हर्षइ तेहनइं कीधा लागइ साहत्थिया० पोतानइं हाथइ पथजीवादिक अहाइ तेणइ करी जे अन्य जीवनइं मारइ नेसत्थिया० यंत्रादिकइं करी जीवो जीव नइं निसरइ ३ आणावणिया० उपयोग विना पात्रादिक लीइ मूंकइ ४ अणवकंखवत्तिया० इहलोकपरलोकमा अनर्थ सांभलवा हइन ही ५ पेज्जवत्तिया० रागथी दोसवत्तिया० द्वेषथी पओगकि० मनवचनकायाना व्यापारथकी समुदाणकि० अष्टकर्मनु ग्रहिवु ईरियावहिया० योगनिमित्त बंध तेकायाना योगथकी एम मादि किरियासमुच्चयपदइ चउवीसदंडकमाहि मनुष्यनाडंडकमाहिं नइ विषइ संभवी यइ। शेषनां ईर्यावहि कि

डो चियाउ सामंतोवणिवाइया ४ साहत्थिता ५ एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं २४ पंचकिरिताता पं० तं० णेसत्थिता १ आणवणिता २ वेयारणिया ३ अणाभोगवत्तिया ४ अणवकंखवत्तिया ५ एवं जाव वेमाणियाणं पंचकिरियाउ पं० तं० पेज्जवत्तिया दोसवत्तियार पउगकिरियाउ ३ समुदाणकिरिया ४ इरियावहिया ५ एवं मणुस्साण वि सेसाणं नत्थि पंचविहा परिन्ना पं० तं० उवहिपरिन्ना उवस्सयपरिन्ना

या नाता उपसातमो हादित्रिलिंगुणठाणानासाधुनइ जइ तरुणी ईमि कहिउं एवं इम मणुस्साणं सेसाणं नत्थि ईहां जीवसमाहि एकेंद्रीयादिकनइं जे ऊक्रियाउ कहीउ ते तेपुर्वल्या तेवनी आपसाई सघलीइ ला नही बीजइ हाणइं क्रियाउ बिक बिक केरी अहीं ईहां पांच पांच नइं एक मइं करवइं यही अनइं तारकादिक वउवी सिईं डंडकिइं विस्तारी तेतलांपुनरुक्त दोषन ही क्रियानो विस्तारार्थ तेबीजा ठाणानापहिला उदेसाथकी जाणवो एक रिया कर्मबंधनत कही हिवइ तेहनी निर्जरानो उपाय कहइ छइ परिन्ना० वस्तुनुं स्वरूप जाणवापुर्वक पचखवुं ते परिज्ञा बे लिइंइं ऊपाया गसुन्यनइं द्रव्य प्रज्ञा ऊप त्यागसहित पचखवुं तेहनइं भावप्रज्ञा रजोहरणादिक ऊपधिनुं अथवा असुद्ध नुं पचखवुं १ ऊपाश्रयप १५७

रिज्ञा २ इम राशब पद जाणिवा कषायनुं पचखवुं ते कषायपरिज्ञा अथवा सर्वनुं पचखवुं ते ऊपधिपरिज्ञा १ संयमनइं अनइं आत्मानइं पालवानइं काजइं जे सेवीइं ते ऊपाश्रय तेअसुद्धनुं पचखवुं ते ऊपाश्रयप रिज्ञा २ इमासेषपद जाणिवा कषायनुं पचखवुं ते कषायपरिज्ञा इमाया गप तातथा णा परिज्ञा ते व्यवहार ना धणी नइं कहइ तेतलां व्यवहारक हइ छइ ववहार० साधुनी प्रवृत्तिनिवृत्तिरूप व्यवहार कहीइ आनितइतु कारण जे ज्ञान ते रूपणि व्यवहार जिकहीइ तिहां जेणइं करी नइं अर्थ जाणीइ ते आगमते केवलमनःपर्यवसाय अवधि वऊदपुर्व नवपुर्वरूप १ [illegible] आचारांगादिक श्रुत नवादिपुर्व ते श्रुत तेहजछइ [illegible] अतिसयसहित छइ तेसणां ते आगम कहीइ केवलवत् २ जे आगीतार्थ हिइ गुढार्थपदइं करी देसा

कसायपरिन्ना जोगपरिन्ना भत्तपाणपरिन्ना पंचविहे ववहारे पं० तं० आगमे १ सुते आणा ३ धारणा जीए ५ जहा से तत्थ आगमे सिता आगमेणं ववहारं पट्ठवेज्जा णो से तत्थ आगमे सि ता जहा से तत्थ सुते सिया सुतेणं ववहारं पट्ठवेज्जा णो से तत्थ सुते सिया एवं जाव जीए

तरिइं रहस्यांग तीर्थमइं अतीचारनुं प्रायश्चित्त कहि वरावानइं काजइ पुछावइ ते कहइ तिहांथकी जे कहि आवइ तेप्रायश्चित्त बलनुं आनरानइं दी कइ ते आणा ३ संविग्न गीतार्थइं द्रव्यादिक आश्री कोइएकनइं प्रायश्चित्त दीधु तिधमरीनइं अ नरानइं तिमइ जदीइ ते धारणा ४ [illegible] वचनाकरणहार अनइ गच्छनां आधार सत साधु गुरु प्रायश्चित्त जाणवा यो ग्य जा इ तिथकी अनिरासाधु जे हनइं पोतानामसघाडा आदिनइं प्रायश्चित्त दीधुं ते हनइ जिम दर प्रायश्चित्त जाणवाइ ते सघाडीया धरी गीतार्थ ते धारणा ४ द्रव्यक्षेत्र काल भाव आश्रीसंघयणधीर्य आदिनी हाणि अवलिवी प्रायश्चित्तदेवुं तजीत अथवा जे गच्छनइं विषइ कारणवसइं सुत्रथकी अधिक प्रायश्चित्त आवी यइ प्रवर्तावुं बलनुं गवमा दि कहइ ते जीत आगमादिकनामननी वानइं विषइ ऊप गायबादेक दइ छइ जहा० यथा प्रकारइ से० तेहनइं तत्थ० तिणा वेमाहि आगमे सिया० केवली आदिक माहिलउ अनरो हइ प्रायश्चित्त आवानइं अवसरइं आगमेण० केवली आदिमाहिलइ अनेरिइं करीनइं ववहार प्रायश्चित्तनुं दे० तेकइ पट्ठवेज्जा० प्रवर्तावनही पतिअरमपा सिइं नहीं आगमना तेमाहि मुख्य केवली कहिइं प्रायश्चित्त लिवु केवलीअ सं० वइमनः

पर्य जा नाकजूप्र यश्चित्तलेवु इमकेवली नइ असोवइ जावनवपु र्वाकहि इ लेवु प आगम जे आगम नानाचेतो ऊतकहि इ पट्ठवेज्जा प्रायश्चि तिइ प्रवर्त वु इमप क्षिकनइं आ साइं जा वजीतिइ प्र वर्तवऊ पदरूपनी विसेषिइं कहइ

पच्छावहिं॥ यम किम आगमादिक कहइ। तिमतिम प्रायश्चित लेवुं॥ एवली समुच्चयइ संग्रहार्थ इणइ करीता ॥ इहा पालइ॥ प्रत्येक २ फल कहइ छइ॥ स० ॥ दिवइ किं सुदस्सगवेन। श्रमा दि मुष्पा तंकुण प्रजानइ छइ॥ आगमबलिया० आगम बलसहित। श्रमण निग्रंथ केवली आदि मुख्य॥ इच्चेतं॰ ॥ एय पंचविह ववहार॥ जया २ जिवारिइ २ जहिं २॥ तिहां अवसरनइ विषइ॥ तया २ तिवार २ तहिं॰ ॥ ते ते अवसरनइ विषइ॥ अनिस्सित॰ ॥ सर्व आसंसा रहित॥ उवस्सितं॰ आजीकार करीनुं॥ अथवा निश्रित तस्सिषि॰ उपाश्रित॰ ॥ तेहउ शिष्य ते यावच्चकरा॥ अ० ॥ तेह थकी अनेरा ते गणवासी॥ अथवा निश्रि ते राग उपश्रित॥ तेह्वे द्वेष रहित॥ अथवा आहार आणी निश्रित ते आहार आणी आपसि पदवी दोनी॥ उपश्रित ते साधि पोतानानी अनइं अनेरानी। वली सिष्य अनइ कुलादि मीरा कुलनो॥ सम्म तेह नउ गुरुपणु तेहुं वाइ प्रायश्चि तादनो। तेहनी दाषि न करइ ते रहित॥ इमस म्मं ववहरमाणे॰ प्रायश्चित देतो। पछे यात रहित प्रवर्ततउ आराधक कहइ॥ आ णा॰ ॥ जिनोपदिस गुरु वचन॥ आम तीनातो प्रस्तावे थकी वली कहइ छइ॥ सुत्र २ स उंय॰ ॥ साधु नइ॥

उम्हा स तत्थ जीते सिया जीएणं ववहारं पट्ठवेज्जा इच्चेतेहिं पंचहिं ववहारं पट्ठवेज्जा। आगमेणं जाव जीतेणं जहा से तत्थ आगमे जाव जीते तहा तहा ववहारं पट्ठवेज्जा। से किमाहु भंते आगमबलिया समणा निग्गंथा इच्चेतं पंचविहं ववहारं जया जया जहिं जहिं तया तया तहिं तहिं अणिस्सितोवस्सितं सम्मं ववहरमाणे समणे निग्गंथे आणाए आराहए भवति॥ संजतस्स णं भंते सुत्तस्स वा जागरस्स वा पंच सद्दाजाव फासा। संजतमणुस्साणं जागराणं पंचवखु जा पंतंस दाजाव फासा॥ असंजयमणुस्साणं सुत्ताण वा जागराणं वा पंच जागरा पंतं सद्दा जाव फासा॥

वारिइं ते साधु नइ नथी। जे सणी सुतां तथ प्रमाद छइ। तेसणी सुतां साधु नइ इंद्री तत कर्मबंधन ना कारण कुइ॥ जागतां साधु नइ पांचे सच्छा दिकुतानी पतिसुतानास्यो अप्रिनोपविइ इंद्रिय नी साक्षिरे ताणतो॥ अनइं कर्मबंधननुं कारण ज प्रमाद विति वारि साधु नइ नथी। तेइं इंद्रिक पर्मबंधनना कारण न कहइ॥ संयत थकी विपरीत असंयत कहइ छइ॥ असंयत नइ सुताभ इ अनइ जागतां प्रमादो पण मादइ इंद्रिय कर्म बंधनना कारण पणा इकरी तेहनी सत्ता नावा ले हणा बाघकी पांच जागतानी परिइ जागतो॥

सुत्ताणं॰ ॥ निंदुवेसन विन्हइं। पांच जागतानी परिइ जागता ते आणा सुता॥ एतल इ सुता साधु नइ। सद्दादिक जागतां अप्रिनी परिइ॥ अणाहणा नीकुइ॥ अनइ कर्मबंधना अनोव नुकारण ते अप्रमाद छइ। ते १५८

संयतना असंयतना अधिकार थकी वली सुत्र २ कहइ छइ॥ जीवा णं॰ ॥ अयं जती जीव॥ २ जनी परिइ २ ज॥ जीवनां स्वरूपनइ परउवाघकी तकर्म॥ आहियंति॰ ॥ बांधइ॥ जीवा॰ ॥ संयत जीव ते॥ २ यं वमंति॰ ॥ कर्म हणइ॥ संयतना अधिकार थकी वली सुत्र कहइ छइ॥ उपघात॰ ॥ असुद्ध पणुं॥ आधाकर्मादि सोलउ उगम दोष करी भातपाणी उपगरण ऊपा अयतनुं असुद्ध पणुं ते उगमो पघात॥ इमसघलइ॥ उत्पादनस्योल॥ धात्रादि दोष करी सहादिक असुद्ध ते उत्पादनोपघात॥ सं किता दि१० एषणानइ दोषकरी सहादिक असुद्ध ते एषणोपघात॥ परिकम्मोपघात ते वस्त्र पात्रादि कनुं छेदवा सीद बादि किइं करी अकल्पनीय पणुं तिहां त्रिणि वेला उपरांति वस्त्र फाडवु सीवइ ते वस्त्र परिकम्मोपघात॥ परिहरणा॰

पंचविहेणं भंते जीवा रत्तं आढिज्जंति। तं पाणातिवातेणं जाव परिग्गहेणं पंचविहेणं भंते जीवा रयं वमंति तं पाणातिपातवेरमणेणं जाव परिग्गहवेरमणेणं पंचमासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति पंच दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहित्तए पंच पाणगस्स पंचविहे उवघाते पं तं उग्गमोवघाते उप्पायणोवघाए एसणोवघाते परिकम्मोवघाते परिहरणोवघाते

लागविवुं ते णकुरी उपघादिक तुं अकल्पनीय पणुं ते परिहरणो पघात॥ तिहां अप छिनु एकलु अकल्पनी पणुं ते। एकाकी अणइ विचरइ॥ तेहनुं लोगविल॥ जउपगरण तेह णाणु कहइ॥ पसिधांतनी मर्यादा॥ अनइ जो एकाकी गछ स्त्रष्ट थकोइ पनि संविगी विग या दिप्र बंध २ रहित पणइ॥ प्रवर्त्या कहइ॥ ते यदा प्रिमो जोइगछ मांहि आवइ ते उपनि ते हनुं उपनि अणाहणा णा कहइ॥ अनइ उपाश्रयनुं अकल्पनीय पणुं॥ ते मास अनइ व्यारि मास ३ परांति कालउल्लंघइ। तथा मास अनइ चौमासि २ थकी वली ते हज द्विगुण विचर हिता नइ दोषन ही॥ इहां मासनइ व्यार मास ऊपरांति ते गाइं हि अइ रहइ तेहनइ॥ कालाति क्रांत दोष अनइ बेमास अनइ वे चौमासी बिणा टालइ एणइ छूटि अइ॥ २ हितानइ उपस्थान दो॥ तस्क्रोदितुं अकल्पनीय पणुं ते विधिइ यदि कं लोगवीउ इत्यादि॥ व्यारिलोगा॥ तिहां पहिलुं त्रीजउ तेहनी अनुज्ञा॥ बीजा चउथा लागानुं सातंत ग्रहिवानइ विषइ देवानइ विषइ॥ पतिगविवानइ चिन्हइ अनुज्ञा नथी॥

विसोही० ॥ तेउगमादिक दोषिकरीरहित सुद्धादिकनुं कल्पनीयपणुं ॥ एउपधातनइं विसुद्धनाप्रतिपक्षणाकारणतो
जीवहुइ ॥ ते जीव एक अद्धमिकहुइ ॥ अधर्मी ते दुर्लभबोधी ॥ अनइं धर्मिक ते सुलभबोधीहुइ ॥ एहवी करइ छइ
सूत्र २ दुर्लभबोधि० जेणइं कर्मिइं करी जिनधर्म पामता दोहिलो थाइ । ते मोहनीआदिक भवोधइ ॥ अरिहंतना
अवर्णवाद ते अश्लाघाबोलता ते अरिहंत नथी नास्तिक रिद्ध अथवा छै तो इमकहेइ, ए तीर्थंकर जाणता लोगको
लागवइ ॥ अनइं जो तीर्थंकरिइं लोगालोगव्या तो आपणी कोनं लाग वी इत्यादि ॥ अरिहंत नउ परूप्यो धर्म श्रु
तचारित्रिरूपनउ अवर्णवादबोलइ तउ तइम ॥ सिद्धांत तत्वं प्राकृत ताभाइ बोधिउ छइ ॥ चारित्रनइं सुधाइ । अथ

पंचविहा विसोही पं. तं. उग्गमविसोही उप्पायणाविसोही एसणाविसोही परिकम्मविसोही परिहरणविसोही पंचहिं ठाणेहिं जीवा दुल्लहबोहियत्ताए कम्मं पकरेंति तं. अरहंताणं अवन्नं वदमाणे अरहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स अवन्नं वदमाणे आयरियउवज्झायाणं अवन्नं वदमाणे चाउवन्नस्स संघस्स अवन्नं वदमाणे विवक्कतवबंभचेराणं देवाणं अवन्नं वदमाणे

*३२ तो हानइं छइ ॥ इत्यादि ॥ उत्तर ॥ सिद्धांत प्राकृत ते बालादिकनइं सुखइं समजिउं आइ ॥ एमो टउ कृप गार ॥ चारित्र ते श्रेय छइ ॥
प्यसणं अनंतर मोक्ष आपइ ॥ २ ॥ आचार्य उपाध्याय ना अवर्णवाद बोलतो ॥ यथा एक बालक ॥ इत्यादि ॥ उत्तर ॥ बा
लक आचार्य मोटइं दोषनही । बुध्यादिकइं करी गरढादिकथी अधिक ॥ ३ ॥ च्यारि वर्ण प्रकार छइ ते हना । ते चातुर्व
र्णसंघ ते हनउ अवर्णवाद बोलतउ । यथा । ए स्यो संघ ॥ समवायनइं बलइं पसुना संघनी परिइं । उन्मार्गनइं पणि
मार्ग करइ ॥ इत्यादि ॥ उत्तर ॥ साध्वादिक संघ ज्ञानादि गुणनासमुदायथको मार्गगामी पणि उन्मार्गगामी नही ॥ ४ ॥
विवक्क० ॥ उदइ आव्यो तप ब्रह्मचर्य नुं फल देवायुकादिक कर्म ते विपक्क तपो ब्रह्मचर्य ते हनउ ॥ अवर्ण बोलतो ॥ यथा
धणाइ वाता छे नही ॥ कइ तो कदाचितादथाइ तो ॥ देव ताते स्युं ॥ विटनी परिइं कामासक्तनी परिइं ॥ अविरत ॥ अणिमिष
कर्माभावे घर हित तिणइं मुया समि मि सइं ॥ प्रवचनना कार्यनइं प्रपिनावइ ॥ उत्तर ॥ देवता ते छइं ॥ नाहोइत
तु कुण सइं तु सइं छइ किम ॥ अनइं कामासक्तेस्यां तो वेदनीक मनी उदय थकी ॥ मोहनी मे घनकरि ते देवता नंतु खराव १५९
वर ॥ अनइं ए प्रधान विसोहइ ॥ अनइं तीर्थनो क... उरि विडइ । ए न थी ... ते ... कालनासाध्ययकी ॥

अरिहंतनो वर्णवाद ॥ ए सगादासमो ... सक्षनुं ... समनाद कयपुण्या ॥ अस्तु तेसङ्घ वय ... ... जियं तिजिणा ॥
... अरिहंत परूपित धर्मनउ धर्मनो वर्णवाद ॥ यथा ॥ वक्क पयास ... सारा ॥ अइअ यरसणा ... सो ... जय ॥ ... उथ
... अरिहंत परूपित धर्मनउ धर्मनो वर्णवाद ॥ यथा ॥ उपगार अकोधइं पर ... तकरवा रक्ष ॥ संताणे ॥ वर्णवा
उ ... देयि ... गुणियाधम्मा ॥ १ ॥ आचार्यनउ वर्णवाद ॥ यथा ॥ संघउ परो तिअ नारा कोगुणो नेघा ॥ देववर्णवाद यथा ॥ देवाणं
॥ यथा । ... सघा ... ॥ संघउपरोति अनारा कोगुणो नेघो ॥ देववर्णवादो यथा ॥ देवाणं गु
... दामील ॥ विसयदि सनि मो दीया ... वणो ॥ अकुरसघा देवि समं ... काउणा करिति ॥ १ ॥ संजत संयतनो प्रस्ताव
प्रको ॥ वली ... करइ छइ ॥ पडिसंलीणा० ॥ इंद्रियार्थनो ... प्रवहार साधु । विरह लुश्री । तउ अद्दीतप्रथमनय ... माटे भाटइ ॥
अनइं सोत्रेंद्रियना विषयनुं आलिवुं ॥ घणा कर्मनइं क्षयोपसमइ छइ ॥ तमाचइंद्रियनइ विषइ ॥ प्रवृत्तनपणु वडवुं । अनइं अप्र

पंचहिं ठाणेहिं जीवा सुलभबोहियत्ताए कम्मं पकरेंति तं. अरहंताणं वन्नं वदमाणे जाव विवक्कतवबंभचेराणं देवाणं वन्नं वदमाणे पंच पडिसंलीणा पं. तं. सोइंदियपडिसंलीणे जाव फासिंदियपडिसंलीणे पंच अप्पडिसंलीणा पं. तं. सोइंदियअप्पडिसंलीणे जाव फासिंदियअप्पडिसंलीणे पंचविहे संवरे पं. तं. सोइंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे पंचविहे असंवरे पं. तं. सोइंदियअसंवरे जाव फासिंदियअसंवरे पंचविहे संजमे पं. तं. सामा
तितसंजमे ॥ ... इंद्रियनाक्षयो प्रशमथको घणो क्षयोपसमें चक्षु रिंद्रीना विषयनुं आलापणुं हुइ ॥ इमघाणादिक त्रि
हुनइं प्रधान पणुं वडउ तु अनइं क्षयोपसमथलो २ अप्रडिसंलीन तोयलइं ॥ इंद्री गोपवानथी ॥ ते इंद्री नु आगोपवणहार
श्रोत्रेंद्रीयादिक संवरवु ॥ संजम० ॥ पापथकी निवरवुं ॥ सम० ॥ रागादिरहित तेहनुं जे ॥ आय० ॥ प्रवर्त्तवुं ते समाय ॥ स
माय तेहज सामायिक ॥ अथवा समाय करीने पनुं ते सामायिक ॥ अथवा समाय ए हनुं फल छइ ते सामायिक ॥ अथ
वा सम० ॥ ज्ञानादिक तेहनइं विषइ ॥ असवा तेणइं करी ॥ आय० ॥ प्रवर्त्तवुं ते समाय ॥ समाय ते हीज सामायिक ॥
अथवा ॥ सम० ॥ रागादिरहितनइं ॥ आय० ॥ ए गुणानउ लाभ ते समाय ॥ अथवा सम० ॥ ज्ञानादिकनउ लाभ ॥ आय ॥
... समाय ॥ समाय ते ही ते सामायिक ॥ अथवा सम ॥ मित्रनइं विषइं ॥ अथवा मित्रा का ॥ आय० ॥ प्रवर्त्तवुं ... सोयइंधागा

सर्वचारित्र सम्बन्ध सामायिक जाणिवु [illegible] आरि सपरिवका अनइ रात्रिवका॥ ना
ना लिख्या रित्रनाघा२॥ तिहांपहिलु छिमाय [illegible] सम्मुख्य॥ सामा यिक॥ तेहना बि भेद॥ पहिलु इत्वरकालिक॥ टीं
त्रजावजीवक॥ तिहां इत्वरकालिक ते सामायिक पहिलो छेहला तीर्थंकरना तीर्थमइ विषइं॥ मध्यम तणा श्रावकना
मइ हुइ॥ जावजीवक तेबिहला तीर्थंकर स्वामी विषइ तेहना तीर्थ विषइ विपइ हुइ॥ छेदोपस्थापनीय सकालिक॥ सा
मायक तेसंयम॥ इमसंयमलहइ छेदोपस्थापना॥ तेसंयम॥ इत्यादि॥ पूर्वपर्यायनइ छेद करी॥ माहाव्रतनइ विषइ स्थापि
वुं तेछेदोपस्थापनीक॥ स्थापवुं तेमहाव्रत आरोपवुं॥ तेबीजुं नाम छेदोपस्थापनीय तेपणि बिहुंभेद
निरतीचार मइ सातीचार॥ तिहां इत्वर सामायिकना सिखनार॥ [illegible] अथवा पार्श्वनाथना साधु वर्द्ध
मान पडिवजइ ते निरतीचार॥ अमइ या हनइ मूलघात प्रायश्चित्त दीजइ॥ तेसातीचार॥ पहिला नइ छेहला तीर्थंकर
इ विषइ हुइ॥ ३॥ परिहार॥ तपो विशेषइ करी विशुद्ध हुइ जेहनइ॥ तेपरिहार विशुद्धक॥ अथवा परिहार॥ ना पापवि
शेष तेहथी विशेष शुद्ध छइ जेहनइ विषइ तेपरिहारविशुद्ध॥ अथवा तापादि विशेष करी विशुद्ध छइ जेहनइ विषइ ते

बादा वहा वाणी यसंजाम। परिहार विसुद्धितसंजमे। सुहुमसंपरायसंजमे। अहक्खायच रि

परिहारविशुद्धक॥ तेबि भेद॥ तेबिकुल॥ निर्विशमानक॥ बीजो निर्विष्टकायिक॥ तिहां परिहार विशुद्धचारि
त्रना सेवणहार निर निर्विशमानक कहीइ॥ अनइ परिहारविशुद्धचारित्र सेवी रह्या तेहनइ निर्विष्टकायिक कहीइ ए॥
इहां नव जणानउ गण हुइ॥ तिवारि ते परिहारीक॥ अनेरा च्यार तेहना॥ वेयावच्चना करणहार अनुपरिहारीक॥ एकवा
चनाचार्य गुरु स्थ ते॥ ते कल्पस्थित॥ तिहां निर्विशमानकनउ तप॥ ग्रीष्म जघन्य चउथ॥ मध्यम छट्ठ॥ उत्कृष्ट अठ
म॥ सीयालइ जघन्य छट्ठ॥ मध्यम अट्ठम॥ उत्कृष्ट दसम॥ वरसालइ जघन्य अट्ठम॥ मध्यम दसम॥ उत्कृष्ट द्वादस॥ पार
णइ आंबिल॥ अनइ रानइं सर्वनइ आंबिल हुइ॥ इम ४ जण छमास वाडा लगइ तप करी॥ वली अनेरा ४ छमास वा
डीलगइं तप करइ॥ पछइ वाचनाचार्य वली छमास वाडी लगइ तपकरइ॥ इम सर्वइ अढार मासनउ आचार छइ॥
तथा स्यो कल्पोत्सेलीकीदीरूप॥ संपराय॥ कषाय छइ जिहां ते सुक्ष्म संपराय ते बिभेद॥ विशुद्धमानक॥ अने
इ संक्लिशमानक॥ तिहां विशुद्धमानक ते क्षपक श्रेणि नइ अनइ उपसमश्रेणि चडतानइं॥ अनइ संक्लिशमा
नक ते उपसम श्रेणिथी पडतानइ परिणाम विशेषि जाणवउ॥ ४॥

अथाख्यात अथ यथाख्यात करीनइ अनइ॥ यथाख्यात॥ कहिउं ते॥ यथाख्यात संजम तेबि भेद॥ [illegible]
सांतमाहनइ क्षीणमोहनइ हुइ॥ केवलीआवाआयोगनइ अजोगीनइ हुइ॥ पछइं डी जाइनइ॥ आमा॥ सयदादि
अणाकरतानइ॥ सतरभेदसंयमम पहिलो ज्ञाचाल्तदसयम नाक्हुइ॥ संयमति पापथकी॥ पृथ्वीथकी ते अनुसंव॥ अवीकी
यनइ संघट्टादिकथकी निवृत्त थवुं॥ ते पृथ्वीकायसंयम॥ इम वनस्पतीकाय लगइ जाणिवु॥ असंयम नु सूत्रते मथ
मथकी विपरीत वखाणिवुं॥ इहो पंचेंद्री अनाहारण॥ तो पंचविधि धर्मसंयम कहिउं के॥ तेहइ इ॥ नीअ॥ [illegible]
घा सतरभेदसंयममांहिं पंचेंद्रीनु आणाहणवु॥ तेएक भेद संयमनउ थाइ॥ तिहां पंचेंद्री नइ अणहणतो श्रोत्रिंद्रीयनो प

त संजमे। एगिंदियाणं जीवा असमारंभमाणस्स। पंचविहि संजमे कज्जइ ति। तं पुढविकातियसंज
म जाववणस्सतिकातिन संजाम। एगिंदियाणं जीवा समारंभमाणस्स। पंचविहे असंजमे कज्ज
ति। तं पुढविकातित असंजाम जाववणस्सतिकातित असंजाम। पंचिंदियाणं जीवा असमारं
भमाणस्स। पंचविहे संयामे कज्जति। तं सोतिंदियसंजाम जावफासिंदियसंजाम। पंचिंदियाणं
जीवा समारंभमाणस्स। पंचविहे असंजामे कज्जति। सोतिंदियअसंयाम जावफासिंदियअ
संजाम। सव्वपाणभूयजीवसत्ताणं असमारंभमाणस्स पंचविहे संजामे कज्जति। एगिंदिय
संजाम जाव पंचिंदियसंजाम। सव्वपाणभूयजीवसत्ताणं समारंभमाणस्स पंचविहे असंज
म कज्जति। तं एगिंदियअसंजाम जाव पंचिंदियअसंजाम। पंचविहा तणवणस्सइकातिता पं

रंगो पाण॥ प्राणा द्वित्रिचतुः प्रोक्ता॥ भूतास्तु तरवः स्मृताः॥ जीवा पंचेंद्रीया ज्ञेया॥ [illegible] एगिंदिय
०॥ इहां सतरभेद संयममां पहिला नव तेसंयमा॥ [illegible] एकेंद्री नइ पंचेंद्रीय॥ प्रथ्व्यादिपंचे संजमना भेद श्रेणि
वाणा॥ असंयम नु सूत्र ए स्थकी विपरीत [illegible] कं॥ ० [illegible] वनस्पती॥

णिबिति
नथाइ॥
तेसं
श्रोत्रेंदिय
संयम इम
वं सुआदि
जाणवा॥
असंयम
नु सूत्र ते
संयमथी
विपरीत
[illegible] एए
केंद्री पंचें
द्रीआ
संजमासं
यम कह्या
द्विबइस
वंजीवआं
[illegible]
[illegible]

१६०

अग्रबीजात ॥ कोरंटकादि ॥ मुलबीजात उत्पलकंदादि ॥ पर्वबीजात वंसादिक ॥ खंधबीज ॥ तिसाहालरआदि ॥ बीजरुहा तव उआदि ॥ आचारना आदि कहुंछै तिवु ॥ [illegible] ॥ तिणि तिसम्यक्त [illegible] चरित्राचार तआवलेद ॥ तपं उसु भिति त्रिणि गुप्ति ॥ तपाचार [illegible] दंबार लेद ॥ वीर्याचा र [illegible] आचारनइ विषइ [illegible] विवु ॥ आचार एक ॥ आचारतपिहिलुं [illegible] ॥ आचारांगनी पांचमी चुलिका ॥ [illegible] विधिप्रायछित [illegible] ॥ [illegible]

तं अग्गबीया मुलबीया पोरबीया खंधबीया बीयरुहा ॥ पंचविहे आयारे पं तं णाणायारे दंसणायारे चरित्तायारे तवायारे वीरियायारे ॥ पंचविहे आयारपकप्पे पं तं मासिते उग्घातिए मासिए अणुग्घाइए चाउम्मासिए उग्घाईए चाउम्मासिए अणुग्घाइए आरोवणा ॥ आरोवणा पंचविहा पं तं पट्ठविया ठविया कसिणा अकसिणा हाडहडा

मासगुरुप्रत्तिक प्रायछित [illegible] ॥ तप्राय छित लई [illegible] प्रायछित [illegible] ॥ [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] ॥ २ ॥ कसीणा ॥ [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ हाडहडा ॥ लघु ॥ गुरुमासादिक प्रायछित [illegible] ॥ ए प्रायछित [illegible] ॥ [illegible]

मालवंतग ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ विचित्रकुट चित्रकुट नामा पर्वत ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ निषद्धनामादेवानइ निवास त्तद्र

ह जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीयाए महानदीए उत्तरेणं पंच वक्खारपव्वया पं तं मालवंते चित्तकूडे सुत्तिलकूडे एगसेले जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीयाए महानदीए दाहिणेणं पंच वक्खारपव्वया पं तं तिकूडे वेसमणकूडे अंजणे मायंजणे सोमणसे जंबुमंदरस्स पव्वयस्स सीओताते महानदीए दाहिणेणं पंच वक्खारपव्वया पं तं विज्जुप्पभे अंकावती पम्हावती आसीविसे सुहावहे ॥ जंबुमंदरस्स पच्छिमेणं सीतोताते उत्तरेणं पंच वक्खारपव्वया पं तं चंदपव्वते सुरपव्वते णागपव्वते देवपव्वते गंधमादणे जंबुमंदरदाहिणेणं देवकुराए पंच महाद्दहा पं तं निसदद्दहे देवकुरुद्दहे सुरद्दहे सुलसद्दहे विज्जुप्पभद्दहे जंबुमंदरउत्तरेणं

[illegible] ॥ मुलकमलघकी अर्द्ध प्रमाण [illegible] ॥ [illegible] ॥ देवनइ निवास [illegible] ॥ कमलनइ [illegible] ॥ [illegible]

ठाणांग
बालावबोध

नासरिषा नामना देवता निवासभूत जाणवा ॥ नवरं ॥ नीलवंत महाद्रह ॥ विचित्र नइ चित्रकूट कांठा ना सरीषा ॥ अधिकार नाथ मकनामा बेपर्वत छइ ॥ पोतानइ सरिषइ नामइ देवता ना आवास भूत तिके ऊर्ध्व तिवारि ॥ जे सीतोदा नदी तिमा हि जाणवो ॥ जिमक नामा पर्वत बेसीदाक्षिण दिसिइं ॥ उत्तर नइ नदी लिवो ॥ एस घला इं द्रहि प्रत्येक प्रत्येक दस दस कंचनगिरिइं करी सहित ॥ ते सोजो यतानां ऊंचा ॥ सोजोयणनामा मुलइ पोहोला ॥ पंचासजोयणनामा घइ पोहुला ॥ पोतानानामसरिषा देवता ना निवासभूत ॥ प्रत्येक एक पर्वतथकी बीजा पर्वत मांहि आंतरूं जोयणा दस नुं ॥ द्रहथकी पुर्व पश्चिम दइ रह्या ॥ एवि चित्रकूटादि पर्वतना अनइ द्रहना देवता नी राज्यधानी पोतानइ सरिषइ नामि

उत्तर कुरा एत पंच महद्दहा पं तं नीलवंतदहे उत्तरकुरुदहे चंददहे एरावणदहे मालवंतदहे सव्वे वि णं वक्खारपव्वया सीयासीओयाउ महाणईउ मंदरं वा पव्वयंतेणं पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पंच गाउयसयाइं उव्वेहेणं धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धेणं मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए उत्तरेणं पंच वक्खारपव्वता पं तं मालवंते एवं जहा जंबुद्दीवे तहा जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे वक्खारदहा य वक्खारपव्वयाणं उच्चत्तं भाणियव्वं समयक्खेत्ते णं

असंख्यात मइ दीपि ॥ बार सहस्र जोयण प्रमाण नी छइ ॥ सव्वे विणं ॥ सघलाइं जंबुद्वीपादिक संबंधीया वषार पर्वत ॥ सीतासीतोदा महानदी नी दिसिइं अथवा मेरू पर्वतनी दिसिइं ॥ तिहां मालवंत सोमनस ॥ विद्युत्प्रभ ॥ गंधमादन ॥ गजदंताकार पर्वत ॥ तिहां चुयाघा ॥ प्रमाण ॥ मेरू नी दिसिइं लिवुं ॥ सेस वषारा पर्वत नुं यथा ॥ प्रमाण ॥ त्रिविध महानदी नी दिसइं लिवुं ॥ एअनंतर जे सूत्र कह्या ॥ तिहां जंबुकी पुष्कराध ना ॥ पुर्व पश्चिमना अर्ध दिसि इं ॥ तिम जाणिवुं ॥ एजिसुं कहिउं ॥ एवं जहा जंबुइ त्यादि ॥ १६२

मादं ॥ स
दंसा लखा
जागइ ॥ फा
सल ॥ जोस्पर्शि
स मसादि
करि जागइ
मे ॥ ॥

जाव ष्व मंदरा ईसाया बमादि मां वहिम ॥ जे पेरनवं नइ त्यादि पाठ पूर्वक लवा ॥ नवरं उसुरा नाडि इषुकार छइ ते मा ... ॥ तिहां पुष्पकी पुं ॥ बावन इगाणइ तिनां घइ ॥ अनंतर मनुष्य क्षेत्रनी वस्तु कही ॥ एह अधिकार छइ ॥ आलरत क्षेत्रनी वर्तमान अवसर्पिणी नइ ॥ भरत ॥ ऋषभ जिनादिना सूत्र प्रकरइ छइ ॥ ... ॥ तिहांइ वृषभ की जाणवा ॥ ... ॥ तिहां वृषभकाजा

पंच धणुसयाइं पंचवसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था एवं जहा जाव ... पंच धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी पंच धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था बाहुबली णं अणगारे एवं चेव बंभी णामं अज्जा एवं चेव एवं सुंदरी वि पंचहिं ठाणेहिं सुत्ते विबुज्झेज्जा तं सद्देणं फासेणं भोयणपरिणामेणं णिद्दक्खएणं सुविणदंसणेणं पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे णिग्गंथिं गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा णातिक्कमति तं निग्गंथिं च णं अन्नयरे पसुजातिए वा पक्खिजातिए वा उहावेज्जा तत्थ णिग्गंथे णिग्गंथिं गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा णातिक्कमति १

जागवानुं कारण कहइ छइ ॥ लायणा पं ॥ सघला गिइं जागइ ॥ निद्रा ... यइं ते जागवा नउं कारण छइ ॥ अनइ बीजा च्यार बोल ते निद्रा क्षय नां कारण छइ ॥ जागइ ते निद्रा क्षय इं करी ॥ निद्रा क्षय ते ... ॥ एपांच विकार ता इघाइ ॥ एच्यार ते कारण ना कारण छइ ॥ इ अनइ वृषभ की जागवु कारण कहिउं ॥ अनइ साधु की जा गाउ ते अनुज्ञा करी ॥ ... करी आज्ञा ते अणाउ ... ॥ गिण्हमाणे ॥ बी ... आदि अंग नइ विषइ ग्रहितउ ॥ अनइ अवलंबतो ते पडती सा ... नइ बाह्य आदि नइ विषइ ग्रही राषतो ॥ अघ वाघ हिवु ते सर्व अंग नइ लिपइ ॥ अनइ अवलंबवु ते देस थकी हाथि इं करी ॥ नाइक्कमइ ॥ ते पोतानो आचार ॥ ... ॥ आज्ञा ... ॥ नातिक्कमति ॥ निग्रंथि ॥ साध्वी नइ अकार्य ॥ निग्रंथी नइ ॥ साधु ... तेहना कारण ॥ अनेरा पसु जाति तिमा ... ॥ पंखी जाति ... ॥ उहावेज्जा ॥ ... ते साध्वी नइ हणइ ते ... निवारिइ ...

ताम्हइ विषइ ॥ आचार्यनइं साहता ॥ ना० एकारण ॥ निकारणिं साध्वीमांता घणा दोष उडाहादिक थाइ ॥ दुग्गंसि वा० दुरकइ जिहां जवाइं । ते दुर्ग ति त्रिण्ह प्रकारदिइ ॥ एक वृक्षदुर्ग स्वापदुर्ग ॥ म्लेछादिदुर्ग ॥ एहवा मारगनइ विषइ ॥ विसमंसि० खाडा पाषाणादिकइं करी व्याप्त पर्वतनइ विषइ ॥ पक्खलमाणिं० ॥ त्राइं पडती अथवा पडी प्राणि त्रूटं ॥ त्याहोतो ॥ अथवा यज्ञायनइ हीचइ रिंइं त्रूटं पडीत पस्च पलती ॥ पवडमा० पडती तत्तइं निरिं विषइ ॥ अनइ खाड नइ विषइ ॥ तिहां निग्रंथनिइ ग्रहितो ॥ ना० ॥२॥ सये ते पाणी सहित कादव जिहां बुडीइ ॥ पंके० पंक ते कादव ॥ पनेक ते आनरा वा मनउ आव्यो पोतल उअनइं ढीलो कादव अथवा फुलि ॥ उदगं० पाणी माहि ॥ उकसमाणिं० ॥

निग्गंथे निग्गंथिं दुग्गंसि वा विसमंसि वा पक्खलमाणिं वा पवडमाणिं वा गिह्नमाणे वा अवलंबमाणे वा नाइक्कमति । णिग्गंथे निग्गंथिं सेतंसि वा पंकंसि वा पणगंसि वा उदगंसि वा उक्कसमाणिं वा उवुझमाणिं वा गिह्न अवलं णातिक्कमति । णिग्गंथे निग्गंथिं नावं आरुहमाणे वा उरुहमाणे वा णातिक्कमति । खित्तइत्तं दित्तइत्तं जक्खाइट्ठं उम्मायपत्तं उवसग्गपत्तं साहिगरणं ।

तीखिमना बइ जेहनउ ॥ दित्तचित्तं० केणाइंएकइंसन्मानी तेणइ दर्पसहित चित्त थयु जेहनुं तिम अज्ञीमाहि ईधणना लितिहां साहेषिइ दीपइ तिम ॥ अथवा लाभ दिइ करी दृप्तचित्त ॥ अथवा उज्वलस अनइ जो पइ ॥ दृप्तचित्त ॥ जक्खाइट्ठं० जक्षि अहइ हो । तपुर्वभवनो विरी देवता अथवा पूर्वभवनउ रागी मित्र देवता तेणी ईश्वरहर्षी प्रामिइ करी आवइ ॥ उम्मायपत्तं० उन्माद थाई ॥ उन्माद बहु प्रकारिं ॥ एक देवतानउ कीधो ॥ बीजउ मोहथकी ॥ देवतानउ कीधो ते पहिलुं कहिउं ॥ इतिमाह नानि ॥ तिहम ॥ कोइएक नुरूप देषी नइ उन्माद थाइ तो ॥ अथवा पितमुक्ति इंक्री सहित ॥ उवसग्गपत्तं० उपद्रव पामी तो ॥ उपसर्ग त्रिण्ह प्रकारिइ ॥ देवता मनुष्य तिर्यचनु ॥ देवतानो पूर्वि कहिउं ॥ इहां मनुष्यनो तिहम ॥ ॥ अनुलोमादिकइं करी काइएकइं कामणी जइ । तिणइ परवस्य थइ ॥ साहिगरणं० कलह करवा था वधनथा २ ॥

सपायच्छितं० ॥ प्रायश्चितसहित ॥ कलहकाधइ वलतुं खामवानइं सावधनथइ ॥ तेहनइ जे प्रायश्चित दीजइ ॥ तिहांभत्तपहितुं तेह चिंकरी भमावइ ॥ भत्तपान पडियाइक्खित० ॥ सात पाणीं येणइ जावजीव पच्चख्यां छइ तेहनइ साधु अर्थ हेतु कहितो जइ ॥ बीजी स्त्रधीपां सइन जइ ॥ अणसरानी भुकिस्त्रि विइपडीजइ ॥ तिवारिइं साधुय दिइ ॥ अट्ठजायं० ॥ सरता रइ अनइ चोरादिकिं इंसंयमथकी चोली तीजइ ॥ एहवइ ॥ अट्ठ० कार्य ॥ जाइ० उपनुं प्रसाधीमइ ते अर्थ जो तां तिवारिइं ग्रहतउ ना ॥५॥ अनंतर जेहनइ विषइ वर्त्तती ना ग्रंथ आज्ञा अतिक्रमइ नहीं ते कहिउं ॥ हिवइ आचार्यजि अतिसइ विषइ वर्त्ततउ ॥ आज्ञान अतिक्रमइ ते कहइ छइ ॥ तिहां आचार्य ते काएकनइ अर्थपणि छइ ते कहणाआवक्षा इं आचार्य काइएकनइ सूत्रपणि छइ ॥ एणइकारणि आचार्य ते लिहा उपाध्याय तेहना अथवा आचार्य मांअनइ उपाध्यायनो गणनइ विषइ अथवा गणनइ विषइ वर्त्ते छइ ॥ उ आ चा० ये उपाध्याय तेहमइ अनेरा अनेरा साधुनो आपक्षाइं पांच

सपायच्छित्तं भत्तपाणपडियाइक्खितं अट्ठजायं निग्गंथे निग्गंथिं गिह्नमाणे वा अवलंबमाणे वा णातिक्कमति ५ आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि पंच अतिसेसा पं० तं० आयरियउवज्झाए अंतो उवस्सगस्स पाए निगिज्झिय २ पप्फोडेमाणे वा पमज्जेमाणे वा णातिक्कमति १

जोइनहीं पत्ति पक्कं तइं २ जोइ पलि पोजइ नहीं ॥३॥ जोइ अनइ पक्कजइ ॥४॥ जिम तिम जोइ अनइ जिमि तिम पक्कंजइं ॥५॥ तेदुः प्रत्यवेक्षित अनइ दुःप्रमार्जित ॥ दुःप्रत्यवेक्षित ॥ अनइ सुप्रमार्जित ॥ सुप्रत्यवेक्षित ॥ अनइ दुःप्रमार्जित ६ ॥ सुप्रत्यवेक्षित अनइ सुप्रमार्जित ॥४॥ एसात मांखुह ॥ सपनइ विषइ असमाचारी ॥ अनइ गृहस्थ जोन्हार जइ तउ सात ताले मात्र अथवा सात तगला लगइ एतला कालमांहि उपाश्रयमांहि गितेतार हो ॥ सागारी गयो जेतलइ तेतलइ पग झटकावइ ॥ पग रउपाश्रयमांहि आवई ॥ पग किम पक्कंजइ ॥ जिणइ सजो हरणइ सदाइ आचार्यना पग पक्कंजाता जइ ॥ ते आवतइं ॥ जिआचार्यमइर जोहरणइ पग पक्कंजइ ॥ अथवा ऊनमिय पाद पो छनउ आन रिलोग स्तुनजइ तेणइ पक्कंजइं ॥ उपाश्रयमांहि पइसी पग ए विधि ॥ मोटउ उपाश्रय होइ तउ जिमसक्कनेतरिइं लोग स्तुनजइ । तिहां आचार्य निउसथा ताहां लदउ ॥ अनइसी कडी वसती जइ तउ त्याग परखानकिइं दालवुं ॥ तिहां आचार्य बइग पछीविली पग पजइवा ॥ अनेरा गणवछि दकादिक नइ पणि एह हवी जविधि जाणिवी ॥ पणि एतलो विसेष ॥ जिगणा पछेदको दिकबाहिर ति घणीवेला जतारहइ ॥ अन

नादिनथी करतो इम लघुताप णुं थाइ अ वर्णवाद बो लइ । जिम रुवारिवा रि डिम्भक इ तो हिंडे वारिवारि फरि आइ छइ तथा अने स्फ स्था नादि दृष्टी नि ऊतो थावा नी श्रावक नी अथा ता लइ ॥ अनेरा दो षव्यवहा

इ आचार्यबाहिरि घणो जाइ आवइ तो दोष ऊपजइ ॥ आचार्य सुकुमाल हुइ ॥ तेणइ तृषा तावड लागइ ॥ तृषा प्रचुर पा णी पीवुं थाइ ॥ सरीर ग्लानपणु पामइ ॥ बाहिरि जाता हिता कोइ कोइ काइ पुछइ तिहांसु आचार्यनी विराधना थाइ ॥ अ थवा आचार्य गिलाणपणाउं पामइ ॥ सूत्रार्थ का हानि करइ ॥ इत्यादि ॥ अनइ सेष साधु इतात्रि या वैयावच्च करइ ॥ क रवइ अमह्यो तोऊइ ॥ तेणइ कोई न थाइ ॥ आहार ॥ दस विध वैयावच्च ॥ सग्गा मिवइ नीपनिपजावा ॥ सीतल सहितरु ॥ नय साणि वायणाइया ॥१॥ एक अतिसइ ॥ आचार्य उपाध्याय ऊपाश्रा माहि ॥ उच्चार प्रस्रवण ॥ विगिंचमा णे ॥ सघलुं परठवउ ॥ विसोहमाणे वा ॥ पगादी भरडीणा होइ ॥ तउ सुद्धकरवउ ॥ अथवा सोधकरउ ॥ अथवा वि गिंचमाणे ॥ एकवार फिरिजातो ॥ विसाहिमाणे ॥ घणी वार नातिक्रामति ॥ इहां एतलावार उत्सर्ग पषिइ ॥ आचार्य बाहिर फिरइ न जाइ ॥ दोष नास्ति वली तेस्या दोष ॥ आचार्य जिवारि बाहिर नीकलइ । तिवारिं मारग नइ विष इ श्रावक पछि हिलुं इम वली तवइ एवकु आतछइ ॥ इत्यादि गुणघका बहुमान ॥ अस्फस्थानादि करतो ॥ ॥ घडइ एतरा

आयरियउवज्झाए अंतो उवस्सगस्स उच्चारपासवणं विगिंचमाणे वा विसोहेमाणे वा णातिक्कमति ॥२॥ आयरियउवज्झाए पभू इच्छा वेयावडियं करेज्जा इच्छा णो करेज्जा ॥३॥ आयरिय

रनी साधघकी जाणिवा ॥ एबीजो अतिसय ॥२॥ आचार्य उपाध्याय ॥ पभू ॥ समर्थ वैयावच्च करवा नइ विषइं ॥ इच्छा ॥ इ छा हुइ तो वेयावडियं ॥ सातपाणी गोचरी उड़ीग विषणा करी अनेरा साधुनइ दान करइ । न करवानइ विषइ अति लोभ न हुइ तउ न करइ ॥ इहां एतलावार्ध ॥ आचार्य नइ तिहां ऊमणा कल्पइ नहीं ॥ ते तोइ वाचिउ पश्चेत्रा णा जइ नीं गडति ॥ युक्ती सर्बुथा इ स्याजिलिदा ॥ एवं गणं अहगुणो व विउ ॥ मच्छावन हिं उइर दुमिंतो ॥१॥ हाडता एदोष ॥ नारिकेरी वृदनाअय ऊंड के वडनी वडइ ॥ इतासा सइ थाइ तृषा लागइ ॥ पाणी घणु पीतो विमना दिथाइ ॥ ग्लानपणुं थाइ ॥ तेणइ प्यार सिना अनुष्टानि नउ भंग थाइ इत्यादि अनेक दोष व्यवहार नी ना ब्यधकाजाणवा ॥ ए अतिसयतो सामी ऊमसाधु नइ पणि हुइ ॥ तथापि छिगबना अथवी नी घंनामहीउ भेल ग्रीयलइ करी ॥ आचार्य तेयजू करता याग घडइ ॥ तिलणी आचार्यनिउ पअतिस य जाणिवुं ॥ जिम पईसानु नुं बुंनागाइ आगम ऊजीपलसल ॥ तेसणी नुं बानुं यन्नेकरिवउ ॥ निमित परूपनइ आधारिं कर्मजाल बीबनु हुइ ॥ ते पुरुष नु एसेषिई थ नेह दिवो ॥ ए त्रीजो अतिसय ॥ ३॥

नइ अथिइं वार एक बे जिवारइ आचार्य बाहिरि जा इ ॥ तिवा रि श्रावक वांदणा नइ बारंवार अ स्फस्थानक रनो आलस थाइ ॥ परा गमुपषइरि हुइ तेदि षा अनेरा इभचीनव इ ॥ एस्युं हवडीप ड्यो छइ ऊ सक्रिअ त्फस्था

१६४

ऊपाध्याय उपाश्रा माहि रात्रि अथवा बरात्रि लगि ॥ विद्यादिक साधवा नइ काजइ ॥ एकाकी एकाति रहइ तो ॥ नाइक्कमइ ॥ ए चउथो अतिसय ४ ॥ एवं उपाश्रा बाहिर ए पांचमो अतिसय ॥ ए चउथा नइ पांचमा अतिसय नउ एलावर्थ उपाश्रामाहिरहइ तो ऊरडामाहि रहइ ॥ अनइ उपाश्रा बाहिरि रहइतातासुन्य गृहादिक नइ विषइ रहइ ॥ तिहां रहितो एतला दोष ऊपजइ ॥ पुरुषवेदनइ उपेंद्री गिंडकरी ॥ सुनइ स्थानि किहसाइ कमादिनइ करवउ । सेऊमन उलदथाइ ॥ पक्षे इम वीतव इ ॥ हामइमर्यादा उलंघी इमसरषरा करतो गलापासादि करइ इत्यादि दोष ॥ अनेरा साधु नइ ऊपजइ ॥ पणि आचार्य नइ तिहां रहितां न ऊपजइ ॥ अनेरा साधु नइ पणि मांहि बाहिरि एकांति रहिवा नी अनुज्ञा कारणइ छइ ॥ अनइ आचार्य एकां ति रहइ ॥ ते पुर्वे विद्यानुं साधन करवा नइ काजिइं ॥ ए आचार्यना गण नइ विषइ अतिसय कह्या ॥ हिवइ अतिसय थकी विपरीत आ

उवज्झाए अंतो उवस्सगस्स एगरायं वा दुरायं वा वसमाणे णातिक्कमइ ४ आयरियउवज्झाए बा हिं उवस्सगस्स एगरायं वा दुरायं वा वसमाणे णातिक्कमइ ५ पवहिं गणे हिं आयरियउवज्झाय स्स गणावक्कमणे पं तं आयरियउवज्झाए गणंसि आणं वा धारणं वा नो सम्मं पउंजित्ता भवति १ आयरियउवज्झाए गणंसि आहारायणियाए कितिकम्मं वेणइयं णो सम्मं पउंजित्ता भवति २

चार्यनइ गछमाहि थकी नीकलवा ना कारण छइ ॥ आचार्य उपाध्याय नइ ॥ गणावक्कमणे ॥ गछमाहि थी नीकलवउं ॥ आ णे ॥ ... ॥ आचार्य उपाध्याय गछ विषइ ॥ आज्ञा तेयोग्य नइ विषइ प्रवर्त्ति विधारूप ॥ धारणा ॥ ते अर्थादिनुं धरवुं ॥ नो सम्मं ॥ यथायोग्य प्रयुंजइ नहीं ॥ इहां एतलावार्थ ॥ अविनीत गछ तेहनइ आज्ञा धारणा प्रवर्त्तावि वा पातइ असमर्थ हुइ तिवारिं आचार्य इहां तेगछ छांडइ ॥ कालकाचार्यवत ॥ आचार्य उपाध्याय गछ नइ विषइ ॥ आहारायणिए ॥ प्रत्रज्याइं वडा नइ ॥ किइकम्मं ॥ वांदणा ॥ वेणइयं ॥ विनय ते सम्यग प्रयुंजइ नहीं ॥ आचार्य संपदाना अभि मान पणा थकी ॥ यथा तेणी आचार्य इंपणि पडिकमणा खामणा नइ विषइ यथा योग्य तविनय करवो ॥ २॥

आचार्य उपाध्याय गछ नइ विषइ २ य ॥ सुयपज्जवजाए० ॥ श्रुतपर्याय ना प्रकार ते उद्देसक अध्ययनादिक ॥ तेहना धारण
हार ॥ ऊदात्तनइ विषइ अणवी सरवइ करी ॥ तेह नइ कालइ यथा अवसरिइं ॥ नो सम्मं अणुपवाइत्ता० ॥ सम्यग वृह नहीं ॥ ते
गछ ना अविनीतपणा माटइं ॥ अथवा पोतानइ सुखपलंपटमाटइं ॥ अथवा पोतइ मदप्रज्ञामाटइं ॥ ३ ॥ आचार्य उपाध्याय
गछमाहि प्रवर्त्तता ॥ सगणियाए० ॥ पोताना गछनी ॥ परगणियाए० ॥ परगछनी साध्वी नइ विषइ ॥ तथाविधि कुल
कर्मनाउदयथकी ॥ सकलकल्याणतुल्य नकसंघेप भरूप घरमाहिथका ॥ बहिल्लेसे० ॥ अंतःकरणबाहिरिनीसरिइं ॥
आसक्त थाइ इं सर्व इसमछोडं स्त्रीरमसंलावना करवी ॥ त्यअधिकगुणनाधणी आचार्य नइ माहनउ उदयन थाइ ॥
यतः ॥ कम्माइं नूणं घणचिक्कणाइं गरुयाइं वज्जसाराइं ॥ नाणड्ढयं पि पुरिसं ॥ पंथाउ उप्पहे नेंति ॥ ४ ॥ मित्ते० ॥ आचार्य
ना मित्र ॥ नाइगणे० ॥ आचार्यना स्वजनवर्ग ते आचार्य नी गछ थकी किस्यइ पक्षि कारणिइं ॥ अवक्कमेज्जा० ॥ जाता ऊ

आयरियउवज्झाते गणंसि ॥ जे सुयपज्जवजाते धरिति ते काले नो सम्मम
णुपवादेत्ता भवति आयरियउवज्झाए गणंसि सगणिताते वा परगणिताते वा निग्गं
थीते बहिल्लेसे भवति मित्ते णातिगणे वा से गणातो अवक्कमेज्जा तेसिं संगहोव
ग्गहट्ठयाते गणावक्कमणे पन्नत्ते पंचविहा इड्ढीमंता मणुस्सा पं ते अरहंता चक्कवट्टी

इ ॥ ते मित्रादिकना संग्रह० ॥ अंगीकार नइ अर्थिइं ॥ उवग्गहट्टयाए० ॥ ते मित्रादिक नइ वस्त्रादि उपष्टंभ दिवा नइ अर्थिइं
॥ गछ छांडइं ॥ अनंतर आचार्य नइ गछनुं छांडिवुं कहिउं ॥ ते आचार्य मनुष्य मांहि ऋद्धिवंत हुइ । ते प्रस्ताव थकी ऋद्धिवंत
ना विसेष कहइ छइ ॥ ऋद्धि आमोसही आदि संपदा ॥ आमोसही ॥ विप्पोसही ॥ खेलोसही ॥ जल्लोसही ॥ सव्वोस
ही ॥ आसीविष ते आपदवानइ टालवानइ समर्थ ॥ आगासगामी ॥ अखीणमहानसिक ॥ विक्रिय लब्धि ॥ आहा
रक ॥ तेजोलेस्या ॥ पुलाक ॥ खीराश्रव ॥ मध्वाश्रव ॥ घृताश्रव ॥ कोष्टबुद्धी बीजबुद्धी ॥ पदानुसारिणी ॥ पुर्वधर ॥ अ
वधिज्ञान ॥ मनपर्यवज्ञान केवलज्ञान ॥ अरिहंतपदवी ॥ गणधर चक्रवर्ति बलदेव वासुदेव नी पदवी ॥ इत्यादि ॥ प्र १६५
शस्त अतिसय सहित ऋद्धि छइ जेहनइ ते ऋद्धिवंत ॥

सद्वासनाइ करी ॥ भाविय० ॥ वासी आत्मा छइ तेहना विता आत्मा ॥ अणगारा ॥ अणगार नइ ऋद्धिवंतपणुं ते आमो
सही आदि लब्धि करी जाणिवुं ॥ अरिहंतादिकच्यारनइ यथासंभव आमोसही आदि लब्धि करी जाणिवुं ऋद्धिवंतपणुं
जाणिवुं ॥ पाचमानो बीजो उद्देसो ॥ ५ ॥ २ ॥ ॥ बीजा नइ छेहलइ सूत्रइ जीव ऋद्धिवंत कह्या ॥ ईहां पहिलइ सूत्रइ अस
त्यात प्रदेस । अनइ अनंतप्रदेसइं करी ऋद्धिवंत तेस मस्ति अस्तिकाय कहीयइ छइ ॥ धर्मास्तिकाय पदार्थ
गलकी उछइ । ते सर्व पहिलुं कहिउं ॥ तेहनइ प्रतिपक्ष ते अधर्मास्तिकाय पछइ कहिउं ॥ तेहनो आधार ते आका
स्तिकाय पछइ कहिउं ॥ पछइ आकासमाहि जीव रह्या छइ । ते जीवास्तिकाय कहिउं ॥ पछइ जीव कर्म ग्रहिउ छइ ॥
ते पुद्गलास्तिकाय कहिउं ॥ ते धर्मास्तिकाय आदिनुं स्वरूप कहइ छइ ॥ अरूवी० ॥ अमूर्त ॥ अजीवे० ॥ अचेतन ॥

बलदेवा वासुदेवा भावियप्पणो अणगारा ॥ पंचमट्ठाणस्स बिइउ ॥ ७ ॥ पंच अत्थिकाया पं
तं धम्मत्थिकाते अधम्मत्थिकाते आगासत्थिकाते जीवत्थिकाते पोग्गलत्थिकाए धम्मत्थि
काए अवन्ने अगंधे अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे से समास
ओ पंचविहे पं तं दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ गुणओ दव्वओ णं धम्मत्थिकाए एगं दव्वं खेत
ओ लोगपमाणमेत्ते कालओ ण कयाति णासी न कयाइ न भवति ण कयाइ ण भविस्सइ
त्ति भुविं भवति य भविस्सति य धुवे णितिते सासते

सासए० ॥ सदा सास्वता छइ ॥ अवट्ठिए० ॥ प्रदेसइं करी नित्य रह्या ॥ लोगदव्वे० ॥ लोकमाहि लाधइ छइ एक अंस ॥ लिवइ एह
ना पांच प्रकार कहइ छइ ॥ उच्छेदकी नहिं
नुं स्वरूप कहिउं ॥ ते विस्तारवा नइ काजइ ॥ अणकरिवउं कहिवा नइ संक्षेपथकी बहु विधि कहइ छइ ॥ उत्पत्ति थकी
त्रथकी काल थकी भाव थकी ॥ गुणउ० ॥ कार्य थकी ॥ दव्वउ णं० ॥ उत्पत्ति थकी एक उद्व्य असंख्याता प्रदेस छइ ॥ पाणि सर्व
स रिखा उ ॥ न क० ॥ कदाचित् ॥ नासि० ॥ न हुतो ॥ न० ॥ इमनहीं ॥ कदाचित ॥ न भु० ॥ नथी ॥ न० ॥ इमनहीं ॥ कोई इं हस्यइ नहीं
इमनहीं ॥ भुविंच० ॥ हुतउ । छइ । हुस्यइ ॥ धुवे० ॥ त्रिणि कालगणि हुतउ ॥ नितिए० ॥ सर्वदा छइ ॥ प्रलय ना अभाव थकी

सास्वतो॥ एहज कारणथकी अक्षय॥ पर्यायनइं अणपलटावइं॥ अव्यये॥ द्रव्यपर्यायिनइ अणपलटावइं अवस्थित॥
१ ममसमुद्रयथकी नित्य॥ हिवइ षटापुद्गलपुर्वार्थ वार्यइमकहइ छइ॥ तेहकारणथकी त्रिकाललगि इम छइ॥ एहज लग्णा
धुव अवस्थतावीथकी नित्यतेसु अयदियनी परिइं॥ सास्वत तेएकरूपयणाथकी॥ हेण २ प्रतिइंबतापणाथकी॥ अ
क्षय अथवा अवयवद्रव्यनी अपक्षाइं॥ अक्षत तेपरिपुर्ण॥ अवयात वयनपलटाइं॥ अवास्थितते निश्चलस्यथला
इंसुरतात्पर्यायनित्य॥ अथवाइंद्रकाकादिग्राह्यनी परिइं॥ पर्यायसहस्रभुवादिककह्या ते नानादरज्ञानासिधिन
इं उपगार निमिते छइं॥ गुणाउ गमणगुणा॥ गतिपरिणतजीवअनइं पुद्गलनइं॥ गमन॥ जावानइ विषइ उपष्टंभथकी

अरकाते अवद्धाते अवट्ठिए णिच्चे जाव लो अवन्ने अगंधे अरसे अफासे गुणातो गमण
गुणा अधम्मत्थिकाते अवन्ने एवं चेव णवेरं गुणाउ ठाणगुणे आगासत्थिकाए अवन्ने एवं
चेव णवेरं खेत्तउ लोगालोगपमाणमेत्ते गुणातो अवगाहणागुणे सेसं तं चेव जीवत्थिका
एणं अवन्ने एवं चेव णवरं दव्वउणं जीवत्थिकाते अणंताइं दव्वाइं अरूवी जीव सासए गुण
उ उवउगगुणे सेसं तं चेव पोग्गलत्थिकाए पंचवन्ने पंचरसे दुगंधे अट्ठफासे रूवी अजी

उपगार छइ॥ तेगमयण॥ जिमम्माछलानइ पाणी॥ ठाणगुणे॥ २ हिवानो गुण कहइ छइ॥ तेस्थानकगुणास्थिररहि
तो जीवादिकनइ॥ गुणउपगार छइ कहइ छइ॥ लोकालोकप्रमाण अनंतप्रदेसमाटइ॥ गुणाउ॥ अवगाहनागुण॥
अवगाहना॥ जीवादिकना आश्रियातगुण॥ कार्य छइ कहइ छइ॥ अथवा तेहनइ विषइ॥ गुण॥ उपगार कहइ
कहइ छइ॥ अणंताइं दव्वाइं॥ ते अनंताजीवनइं प्रत्येकप्रत्येकद्रव्यपणाथकी जीवद्रव्य अनंताकहीयइ॥ अरूवी
जीव॥ जीवास्तिकाय चितनावंत अनइं अरूपी॥ गुणाउ उवउगगुण॥ साकार अनइं अनाकार ए विहुं लाद॥ १६६
ज्ञ उपयोगतेरूपाज चितनवणुं तेहीजगुण॥ स्वभाव छइ कहइ छइ॥

गुणउ गहणागुणे॥ अदारिकशरीरपणाइं जीवनइं ग्रहिवायोग्य॥ अथवा इंद्रीनइं ग्रहिवायोग्य ... अथ अर्थादिक
वंतपणाथकी॥ पुद्गलमाहोमाहिं एकठाथाइ। तेहीजगुणस्वभाव छइ कहइ छइ॥ ए अस्तिकाय कह्या। तेमांहि जी
वास्तिकायसंबंधीयावस्तु॥ अध्ययननासमाप्तिलगि इंकहइ छइ॥ जावु तेगति अथवा जाइइं प्रतिं जइइं ए तेगति तेदे
शविसेष॥ अथवा एणइं करीनइं सुस्तकर्मपुद्गलएकगा करीइ ते नामकर्मनी उत्तरप्रकृतिरूप गति कहीइ॥ अथवा
तेहनी कीधी जीवनी अवस्था॥ नरकनविषइं जेगति॥ अथवा नरग तेहीज गति॥ अथवा नरगनी प्राप्ति कारण
क्षारीगति॥ तिर्यंचनइं विषइ अथवा तिर्यंचनी। अथवा तिर्यंचयपणानो संपादनहार तेगति ते तिर्यग्गति॥ इ

व सासते अवट्ठिते जाव दव्वउणं पोग्गलत्थिकाते अणंताइं दव्वाइं खेत्ततो उ लोगप
माणमेत्ते कालतो उ केणकयाइ णासि जाव णिच्चे भावतो वन्नमंते गंधमंते रसमंते फा
समंते गुणतो गहणागुणे पंच गतीतो पं तं निरयगती तिरियगती मणुयगती देवगती
सिद्धिगती पंच इंदियत्था पं तं सोतिंदियत्थे जाव फासिंदियत्थे पंच मुंडा पं तं सोतिं

मनुष्यगति नवरं सिद्धिगतिनइं विषइ॥ अथवा आदिनामकर्मनी उत्तरप्रकृतिनो अर्थ करिउं छइ तेनकरवो॥ तेसणा सिद्धि
नइ विषइ अथवा सिद्धि तेहीजगति ते सिद्धिगति॥ अनंतरसिद्धिगति कही। ते तउ इंद्रीनइं कषायथकी मुंड थाइ
इं थायइं ऊइ। ते सणीनइं कहइ छइ॥ सुत्र ३ क्रीडा करि तेइइं तेजीवनइं कहीइं॥ सर्वविषयनी उपलब्धि नइ अ
गरूप परमऐश्वर्यइंथकी परमऐश्वर्य परमठाकुर। ते जीवनुं चिन्ह॥ अथा ते णइंयि हीजइं॥ अथवा तेणइंयि
सरजिउं॥ अथवा तेणइंयि सेवुं॥ अथवा तेणइंयि दीधुं॥ ते इंद्रिय ते श्रोत्रादि तेनामादि व्याख्यारि लिदि॥ तिहानाम
स्थापना सुगम॥ द्रव्यइंद्री ते निर्वृत्तिइंद्री अनइं उपकरणइंद्रिय॥ भावइंद्री ते लब्धि अनइं उपयोग तिहां निर्वृति॥
आकार ते बिहुं लिद॥ बाह्य अनइं अभ्यंतर॥ तिहां बाह्य नाना प्रकार ... अभ्यंतर तउ आकार ते श्री अनुक्रमइं
व पुष्पसरिषुं॥ चक्षुनुं धसम मसूरि॥ घ्राणनुं अतिमुक्तकपुष्पचंद्रका॥ जिह्वानुं क्षुरप्रसरिषउ॥ फरसइंद्रीनउ नाना

प्रकार॥ उपकरणेंद्रिय ते विषयग्रहिवानइ विषइ समर्थपणुं॥ जिमकांइ छेदवानइ षडग नी धारा। जेहणेंधारइं घकइ॥ इंद्री नइ आकार छतइं पणि विषयनय हिवा ए॥ लब्धि इंद्रियाते। इंद्री ना आवरणनउ क्षयोपसम॥ उपयोग इंद्रि ते पोताना विषयनइ विषइ व्यापार अभिलाषाइ। अथवा आरंभ इति इंद्रियार्थ सब्दादिक॥ तिहांसोतलाइ एणइ करी तेश्रोत तेहनउ अर्थ ते सब्द इम अनुक्रमइ रूप रस गंध स्पर्श चिंतवेउ आदि ना अर्थ जाणिवा॥ मुंडे॰ टालवु इम्य घकी माथानो केस॥ ला वघकी कषाय॥ इंद्रियार्थमुंटालिवु॥ एइंद्रियार्थ विषय प्रेमरहित। तमुंडरूपाय धर्म तिहना योग्य घका पुरुष पणि मुंड कहीइ॥ सोइंदियमुंडे॰ सब्दनइ विषइ॥ रागादिकनो मुंडे वालते टालवाघकी॥ इमसघलेइ॥ क्रोधमुंड ते क्रोधना छेदवाघकी॥ इम मानादि॥ इमसुंडपणुं ते बादरजीव विसेषमनइ कहइ ते सरणी तेसुत्र त्रिकइ कहइ छइ॥ अधोलोक अनइ उर्द्धलोक इं बादर अग्निमनी॥ अनइ विनयनुं कउपणुं अधोलोकमा दिइं

दियमुंडे जाव फासिंदियमुंडे अहवा पंचमुंडा पं तं कोहमुंडे माणमुंडे मायामुंडे लोभमुंडे सिरमुंडे अहोलोगेणं पंच बायरा पं तं पुढविकाइया आउ वाउ वणस्सइ उराला तसा पाणा उड्ढलोगेणं पंच बायरा पं तं एवं तिरियलोगेणं पंच बायरा पं तं एगिंदिया जाव पंचिंदिया पंचविहा बायरा तेउकाइया पं तं इंगाले जाले मुम्मुरे अच्ची अलाते

आवइ छइ। तिहां जे बादर अग्नि छइ। ते अल्प पणा माटइ विवक्षी नहीं॥ अनेरा जे ऊर्द्ध कपाट विकानइ विषइ। बादर तेउकाय ते उमादिक जावणाहार छइ। तेहजी उत्पत्तिस्थान कि अग्नि नथी॥ ते तेणीत बादर तेउ नथी कह्या॥ [illegible] षअनइ॥ बेइंद्रिया दिनइ ग्रहिवानइ॥ अनइ॥ उरालसब्दनुं ग्रहिण कीधउं॥ तदावरणानी॥ उराल॰ स्थूल एकेंद्री नी अपेक्षाइ एक फरसरूप इंद्रिय छइ॥ एकेंद्री जातिना नाम कर्मनाउदयघकी॥ अनइ ऊदार स सब्दनुं ग्रहिण कीधु॥ तदावरणाना क्षयोपसमघकी जेहनइ॥ एकेंद्रिय अप्प ब्यादि। इम बेइंद्रिया दिक जाणवा॥ पणि इंद्रीनउ विसेषकरिवो॥ बेइंद्रिया ते बेइंद्रिय जाति नाम कर्मनइ उदयघकी॥ इमतेइंद्रियादि॥ हिवइ ते एकेंद्री कह्या॥ ते विसेषघकी त्रिकसुत्रइ कहइ छइ। लीलादि ते अग्नि नी सिषा मुलइ अग्नि छेदाणी ते हीऊमुलिइं छेदाणी ते अच्ची॥ मुर्मुर ते राषमिश्र अग्निना कणरूप॥ अलातात ऊलोडीउ॥ १६९

पाइणा॥ पुर्वनो वाय॥ एघी अनेरा वाय ते विदिसि वाय॥ अकंते॰॥ पदार्थ किं इ करीतम अक्रमतां विविहइ ऊइ॥ धंते॰॥ धमणादिकनइ विषइ धमतां॥ पीलिए॰ लीलुंसुगडुं नीचोतां॥ सरीराणुगए॰ उडकार उस्सासादि॥ समुच्छिमे॰ बीजणादिकिइ ऊपजाव्या॥ एवा यपहिलुं अचित्त। पछिं सचित्त पणि थाइ॥ पुर्वि पंचेंद्री कह्या। हिवइ तेहना विसेषकहइ छइ। अघवा सचित्तपु विइं अचित्तवाऊ कह्या। तेहनो रक्षा ते निर्ग्रंथकरिइ॥ ते सणी निर्ग्रंथ कहइ छइ सुत्रइ॥ ग्रंथ ते अंतरंग मिथ्यात्वादि॥ बाह्य ते धर्मोपकरण वर्जीनइ॥ धन्यादिक ते हघकी नीकल्या॥ ते निर्ग्रंथ॥ पुलाक॰ सल्यधान्य नां कण तेहनी परि जेतपश्रुत ते हइ कुकरइ॥ अथवा ज्ञानादिकना पांच अतीचारनइ सेविवइ करी संयमना सारहित ते पुलाक॥ बुकस॰॥ सबल॰॥ काबरू॰ सरीर ऊपगरणनी विभूषा करिइ॥ सुध अनइ असुध मिश्र चारित्र ते बकुस॥ ते सरीरनु विभुषा ते करचरण वदन धुपवालिवु॥ आंषिकाननासिकादिकनुं मइला दिकनुं टालिवउं॥ दांतणकरी जिमवु॥ केस समरा विवा

पंचविहा बादरवाउकाइया पं तं पाईणवाते पडीणवाते दाहिणवाते उदीणवाते विदिसवाते पंचविहा अचित्ता वाउकाइया पं तं अक्कंते धंते पीलिए सरीराणुगते समुच्छिमे पंच नियंठा पं तं पुलाते बउसे कुसीले निग्गंठे सिणाते इत्यादिक करता सरीर बुकस॥ अनइ उपगरणबुकस ते अकालिइं चोलपट्टादिवस्त्र पखालइ॥ पात्रो डंडादिक ऊजला करिइं॥ इत्यादि ऊपगरणनी विभूषा करता ऊपगरणबुकस॥ ए बिहुं बुकस ऋधि अनइ जसनो कामी तिहां ऋधि ते प्रसस्त वस्त्र पात्रादि॥ अनइ ख्याति॰ गुणवंत रूडा साधु इत्यादि प्रवाद वांछइ॥ साताणारव नइ आश्रया॥ आहारा त्रिनी जे क्रियानइ विषइ अतिजयमां नहीं॥ परवाघणा॥ तिलादिक इं जो घघसइ॥ सरीरनइ तिलादिक इं मर्दनिकरावइ। कातरणी इं केस कपावइ॥ जेहना परिवार भोंहिं एहवा साधु छइ। ते सलोनहीं परिवार॥ जिमसबेलो लगाडतइं घणुं चारित्र छेदाइ। दस वालित्र छेदाइ॥ एहवइ अती चारइं करी ऊपजो ब्या सबला ते सहित निर्ग्रंथ बुकस कहीयइ॥ २॥ उत्तर गुणमइ दोषलगाडवइं करी॥ अथवा संज्वलनकषायनइ उदयइं करी॥ कुत्सित ते हनुं सील॰॥ अठार सहस्र सीलांग ते कुसील॥ ते हना बिलिद॥ प्रतिसेवनाकुसील॥ १ कषाय कुसील॰ तिहां इंद्रिय अवस्पइ पिंड विसुद्धि समिति भावना॥ तप प्रतिमा अभिग्रहादि॥ उत्तरगुण विराधना॥ सर्वज्ञ आज्ञा ऊलंघइ ते प्रतिसेवनाकुसील॥ जेसाधु वर्ताइ नइ पणि किसि इक वेसं क्वलनक

घायनो उदय घाइ तिकषायकुसील ३ ॥ ग्रंथि॰ मोहनीय थकी नीकल्या ते निग्रंथि ते क्षीणकषाय अथवा उपसांतमोह ॥ ४ ॥ स
कल घाती कर्मनि ३ सुमुहना पषालवाथी नांह्या नीपरि न्हाया ते स्नातक ॥ ते सयोगी अथवा अजोगी केवली ॥ ५ ॥ हि
वइ एहना लिंदक कहइ छइ ॥ पुलाकतिकुंण तेहना लिंद ५ जे कोई अदिश्रती वारइ ज्ञानना अतीअपणा नइ असार करतो ज्ञा
नपुलाकी ॥ इमकुदृष्टिपरिचयादिकइ करी दर्शनपुलाक ॥ मूलगुण नी उतरगुणनी प्रतिसेवना ते अतीचार कुं लगाडइ ते
तिणइ करी आत्मानइ असार करतो चरणपुलाक ॥ प्रमाण अधिक लिंगना ग्रहिवा थकी लिंगपुलाक ॥ अथवा निः
कारणइ वेष पालटतो लिंगपुलाक ॥ काइंएक प्रमादथकी अथवा मनस्याइं अकल्पनीय ग्रहिवाथकी ॥ यथासुक्ष्मपुला
कनाम पांचमुं ॥ ५ ॥ बकुस बिकुलिदि छइ ते बकुनाघई पांचालदक कहइ छइ ॥ जाणी नइ सरीर ऊपगरणनी विभूषा क
रतु आभोग बुकस ॥ सहसाकारिइं करइ ते अनाभोग बुकस ॥ प्रछन्न अकरितसंवृत बुकस ॥ प्रगटकरिइ ते असंवृत बु
स ॥ अथवा मूलगुण अनइ उतरगुणनइ काइंएक दोष लगाडइ ॥ बीनी अनइ प्रगटसं वृत अनइ असंवृत बुकस ॥ काक
पुलाए पंचविहे पं तं णाणपुलाए दंसणपुलाए चरित्तपुलाते लिंगपुलाते अहासुहुमपुलाते ना
पंचमे बउस पंचविहे पं तं आभोगबउसे अणाभोगबउसे संवुडबउसे असंवुडबउसे अहासु
हुमबउसनामं पंचमे कुसीले पंचविहे पं तं णाणकुसीले दंसणकुसीले चरित्तकुसीले लिंग
कुसीले अहासुहुमकुसीले नामं पंचमे प्रमादी आंखिना मलादिक टालवाथकी ॥ तेयथासुक्ष्म नाम पांचमु बु
स ॥ २ ॥ कुसील बिकुलिदि छइ तेहमालद पांचकहइ छइ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र लिंगनइ दूषण लगाडतो ऊपजीवइ ते
ज्ञानादि कुसील लिंग नइ ठामि किहां एक तपएहवउ पामइ ॥ तिहां ए तपस्वी इम अनुमोदतो हर्षित तपकुसील को
क दोषनइ लगाडवइ करी यथासुक्ष्म कुसीलनाम कुसील पांचमउ ॥ कषायकुसील पणि इम हिज ॥ नवरं क्रोधादिकइं करी
विद्यादि प्रयुंजतउ ज्ञानकुसील ॥ सम्यक्त्वना ग्रंथ प्रयुंजतो दर्शनकुसील ॥ श्राप दितो चारित्रकुसील ॥ क्रोधादिकइं क
री लिंगपालटतो लिंगकुसील ॥ मनमाहि क्रोधादिक करतो ॥ यथासुक्ष्म कुसीलनाम पांचमउ ॥ कुसीलकार इम कहइ छइ ॥ प्र
ति॰ सम्यग आराधना थकी विपरीतासेवना ते प्रतिसेवना कहीयइ ॥ तेह ज्ञानादि पांचनइ विषइ जेहनइ छइ ते प्रतिसेवना कुसी
॥ कषायिइं करी ज्ञानादि पांचनइ विषइ विराधना थाइ जेहनइ ते कषायकुसील ॥ १६५

वछता नियंठानउ अंतर्मुहूर्त कालछइ ॥ तेहमाहि लइ पहिलइ समयइ वर्तइ ते प्रथमसमय निग्रंथ हितीयादिसमयव
र्ति ते बीजो नियंठो ॥ छेहलइ समय वर्तइ ते चरम ॥ छेहिला थकी हेठलइ समयइ वर्तइ ॥ ते चोथउ अचर
म नाम इंसर्वसमयइं वर्तइ ते वारिइं पांचमउ ॥ ए विचारणाइं । ते पांचनालदकी धर्म छइ ॥ ४ ॥ छवी॰ ॥ सरीर ॥ तेहमा
श्रत्ताव थकी कषाय योगनइ रूंधइ वइ ॥ अठवा अथ वाधीडा रहित ॥ १ ॥ असबल ते निरतीचार पणा थकी अर्हत ॥ अथवा
रहस्य ॥ छानुं ते जेहनइ कोइं नथी ते अर्हत ॥ कषायना जीव प्रवाथकी जिन ॥ केवल ॥ ॥ परिपूर्ण ज्ञानादि तेहनइ छइ
ते केवली ध सकलयोगनइ रूंधवइ अथवा । क्रियारहित पणाथकी अपरिस्रावी किहांएक अरहंत जिन एपांचमइ ठाण
ए बोलछइ ॥ अनइ अपरिस्रावी ते चउथउ छइ ॥ ५ ॥ ५ ॥ हिवइ निग्रंथनाइं जिऊ पधिविसेषक हइ छइ ॥ सुत्र २ ॥ अभ
नियंठे पंचविहे पं तं पढमसमयनियंठे अपढमसमयनियंठे चरिमसमयनियंठे अच
रिमसमयनियंठे अहासुहुमनियंठे नामं पंचमे सिणाते पंचविहे पं तं असबले अक
म्मंसे संसुद्धणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली अपरिस्सावी कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गं
थीण वा पंच वत्थाइं धारित्तए वा परिहरित्तए वा तं जंगिते भंगिते साणते पोत्ते
तिरिपट्टए णामं पंचमए त्याति ते ॥ कपासनुं ॥ निरऊपदहए ॥ वनस्पतीनो छालिनुं ॥ जंगिकना वि
गलिंद्री पंचेंद्री नानीपजना पणाथकी आलिकालद ॥ पटकु॰ हीर ॥ सुवर्णवर्णी सूत्रए बेकुकोडानां नीपनो । मूल्य छादसनुं
उपनुं ॥ तथा ॥ अस्तुय॰ ॥ सुहालादीरनुं नीपनुं ॥ ची नासुक तिकोसिकार ते जीवथकी ऊपनुं ॥ अथवा चीनदेसमइं वि
षइ मुहीला हीरथी नीपनुं ॥ एतला विगलिंद्री नानीपना ॥ मृगरामनुं ॥ ससाना रामनुं ॥ मूषकना रामनुं ॥ उनुनुं॰ छालानी
रामनुं ॥ किट्टिय॰ ॥ किट्टिय॰ ॥ पूर्वलारा मकह्या तेमाहि लीघोडा रामलीनीपनुं ते किट्टिक ए पंचेंद्रीना ॥ एपांचविध
वस्त्र प्रकाश्या ॥ तेत्र सर्जघि छइ तउ साधुनइ कपासीयानुं अनइ ऊननुं लोगविवुं ॥ ते हप । णि महामूल्यनुं नहीं ॥ महा
मूल्यनुं ते पाटलीपुत्रना रूपईया ॥ आतदसघकी माडी रूपईथी लाषमुं छइ ॥

श्रीभ
वी सू॰२

तिर्जपनवा॰ ॥ ग्रहिदं ॥ प
रिहरिवा॰ ॥ लोगविवा
॥ अथवा अ
रिहरए ॥ ए
कविलाली
गविवा ॥ प
रि॰ ॥ वली
वली लोग
विवा ॥ कप्प
इ॰ ॥ सुगवुं
जंगामनुं॰ त्र
सातत्तना अ
वयव थकी
नीपनुं तं जं
गमिकं कंब
लादिक ॥ ना
गिक ॥ अ
लसीनुं ॥
साणए ॥
सनसूत्रनुं

डाक्टर भाऊदाजी इस्मारक MEMORIAL

×ठा ५ २

२ऊहराइ॥बिऊ॥तदिह॥ एककर्मरिज॥ बीजो धुलिपणि करी तरजोरहरण॥ उन्निए॰॥ घेटा नारा मनुं॥ उट्टि॰॥ ऊं
टना रोमनुं॥ साणए॰॥ सणनासुत्रनुं॥ पञ्चापिञ्चिए पञ्चो॰॥ जला श्रयनो त्रविसेष॥ पिञ्चिए॰॥ तेहनी हालि कुटी
नइनीपाधु॥ मुंज॥ पि॰॥ कुटीनीपासुं॥ २जो हरण॥ छिऊलेद॥ एकउत्सर्गिक॥ बीजुं श्रपवादिक॥ तएतुऊवली बिर्ड
प्रकारिइं॥ निर्व्याघातिक नइ व्याघातिक॥ उत्सर्गिकरजोहरण तथाटकनइ निसीथीयासाहित॥ श्रपवादिक तऊघा
डो डो डोइ॥ निर्व्याघातिक तऊं ननी दसानुं। व्याघातिक तश्रनेरीनु॰ ऊ त्सार्गिक निर्व्याघातिऊनवु॥ श्रनइ ऊत्सार्गि
पंघिइ व्याघातिइ ऊंटनुं सणनुं॥ पञ्चा॰॥ मुंजनुं। श्रनइ श्रपवादपक्षइं निर्व्याघातिइं डोडो श्रनइ ऊंननी दसी॥ श्रप
वादइं व्याघातिइं ऊंटा। सण॥ पिञ्चा॰॥ मुंजनी दसी॥ जिम श्रमणनइ वस्त्र १ जो हरणधर्म नउ श्राधार छइ ऊर
तिम श्रनेरा पणि श्राधार कहइ छइ॥ धम्मस्स॰॥ श्रुतचारित्ररूपधर्म॥ चरमाणस्स॰॥ सेवतानइ॥ पांच निश्रा

कप्पइ निग्गंथाण वा २ पंचरयहरणाइं धारत्तए वा परिहरित्तए वा तं उण्णिए उट्टिए
साणए पच्चापिच्चिए मुंजापिच्चे तिनामं पंचमए धम्मस्सं चरमाणस्स पंच निस्साठाणा
पं. तं. छक्काया गणो राया गाहावती सरीरं श्राद्दिघप्ती परिइं श्राधार॥ वाउकायश्राश्री॥ दइपाणव छि

णवायउयाला॥ ऊडवाउणामुणिले॥ गिलनं मि वऊम्मा॥ सिविन्नमास परिरहसा॥ १॥ वनस्पती श्राश्री॥ संथारपाय
दडग॥ खोमियकप्पा यपीढफलगाइं॥ उसहलेसजोणिया॥ यमाइ पऊरणतरुसु॥ १॥ त्रसकाय माहिं पंचेंद्री श्राश्री॥ चं
म्महीदंतनहरोम॥ सिंग श्रमिलागछेगणणसुत्त॥ खीरदहीमाइया पां॥ पंचिंदियतिरियपरिभोगो॥ इमसे घंयघायो
उपविगलिंद्रीघकी। मनुष्यघकी। देवताघकी पणि श्राधार जाणवउ॥ १॥ गणो॰॥ गछनो श्राधार यथा। एगस्सकउ धम्मो॰॥ १॥
तेषां गुरुपरिवारो गछो॥ तत्थ वसंताणनिज्जरा विउला॥ विणयाउ तह सारणा॥ माईहिं न दोसपडिवत्ती॥ १॥ श्रन्नो न्ना वेर
क्काए॰ जोगंमि तहिं तहिं पयटंता॥ नियमेण गछवासी॥ श्रसंगपयं साहहंमि नेउ॥ १॥ राजाघकी श्राधार तिराजानइ ऊप
रिइ उपथरा सर्वानमकडे॥ रस्रपति॰॥ उपाश्रानेदाता। तेहनउ श्राधार॥ यदुक्तं॥ घृतिस्तेदन दत्ता मतिस्तेनदत्ता॥ २
गासणविगप्पो॥ १॥ श्रनेइ सरीरनउ श्राधार तिता प्रसिद्ध छइ॥ यतावाची॥ सरीरधर्मसंयुक्तं॥ रक्षणीयं प्रयत्नतः॥
सरीरात् श्रवतिधर्मः॥ पर्वतात्सलिलं यथा॥ १॥

स्थानककहइ छइ॥ श्राधारनाहेत॥ छकायघकी संयम [illegible] नइ श्राधार ते श्रमऊइ॥ तिम प्रथवी श्राश्री स्तमिका बिसवा सुवादिघणाइ प्रयोगइं श्रावइ॥ श्रपकाय पीवा स्नानादि धेविघणाइ प्रत्यागिइं॥ श्रावइ॥ तयस्कायः॥ उद

१६५
नवंजन

श्रमणानां निश्रास्थानककह्या॥ हिवइ लौकिक निधानरूपनइ निश्रास्थानककहइ छइ॥ निः श्रतिहिं॥ जे हनइ विषइ स्थापीइ
ते निः धि तिरं उसुवर्णादि द्रव्यनुं भाजन॥ निधाननी परिइं जे निधान॥ पुत्रइत्यऊपाजेकियणइ करी श्रनइ माता पिता नइ हबिऊन
इ निर्वहिकधणाघकी तपुत्र निधान तथा निधाननी परि इमाता पितानइ श्रानंदकर॥ श्रर्थकामनइ संख्यावणहार पणाइ करी श्रा
नंदनाहेतुपणाघकी मित्र निधि॥ सल्प॰॥ चित्रादि विज्ञान। विद्या रूपरूणं निधि तेसल्प निधि जे सल्पणी विद्याइ सर्वसाध्यघा
इ॥ धननिधि तिलंडार॥ धान्य निधि तिकोठार। एनिधि कह्यिऊं॥ द्रव्यघका पुत्रादिक॥ लावघको ऊडुश्रनुष्ठान॥ हिवइ लाव
सोचश्राश्री कहइ छइ॥ श्रनइ प्रसंगइ श्रनेराय पणि सोच्यकहइ छइ॥ सोच्य॰॥ सुध्य तेद्रव्यघकी नइ लावघकी॥ ति
स्यां धुरिलाध बोले तेद्रव्यसोच्य श्रानेला [illegible] पांच मो लावसोच॥ प्रथिवीइकरीनइ सोच्य स्वसरीरनइ विषइ घसवइ

पंचणिहीपं. तं. उत्तनिही मित्तनिही सिप्पणिही धणणिही धन्नणिही पंचविहे सोते पं. तं. पु
ढविसोते श्राउसोते तेउसोते मंतसोते बंभसोते पंचठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं नयाणइ
न पासति तं. धम्मत्थिकायं श्रधम्मत्थिकायं श्रागासत्थिकायं जीवं श्रसरीरपडिबद्धं परमाणु
पोग्गलं एयाणि चेव उप्पन्ननाणदंसणधरे श्ररहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणति पासति धम्मत्थिका
यं जाव परमाणुपोग्गलं करीघरउवइ करीजुं गंधिटलइ॥ पाणी मनसोच्यकरइ॥ श्रग्निइ श्रघवाराषिइ करी
सोच्य तेतउसौच्य॥ मंत्रसौव तेसुभविद्याकरी॥ ब्रह्म॰॥ कुडुश्रनुष्ठानते पणइ करीसोच्य ते ब्रह्मसौच्य॥ एणइक
रीसत्यादिक वारिलदिइ सोच्यश्रहिऊं॥ सत्यसोच्यं तपःसौचं॥ १॥ श्रनेतत ब्रह्म सौचकहिऊं॥ ततउ जीवनो
सुद्धिरूपछइ॥ श्रनइ जीवनस्तउ छद्मस्थ नजाणइ इसकाहिस्यइ। तथा पणइसंबंधइ सुत्र २ कहइ छइ॥ इहां छद्मस्थ
श्रवधिज्ञानादिरहित लेवउ॥ जेतली परमाणुनइ रूपी पणाघकी जाणइ॥ श्रनइ इहां तउ छद्मस्थ नजाणइ इमकहस्यइ
तो सर्वघा नजाणइ॥ घटादिवऊवस्तु तणा सर्वपर्यायपणइकरीसर्वभावणं श्रागलिजवस्तु कहीस्यइ तिहनुं स्वरूप श्रनंत पर्याय पणइ करी सर्वघा नजाणइ
नइ केवली टाली श्रनेरासर्वपर्यायिं करीजाणवा श्रसक्य॥ देहमुक्त जीव एकपरमाणुउ॥ उपलक्षणघी बेश्रादि
परमाणुउ पणि जाणिवा॥

डिमा केवली नो उपराइ तिम अनेरी इं त्रिभुवनमाहिलां वस्तु जाणइ ॥ तिहां अप्पे लोकनी वस्तु पाखइ ... पा ... ६ सुत्र २ ॥ अहेलो० ॥ सातमा नरग विषइ ॥ अनुत्तर ते सर्व थकी वेदना घणा थकी अथवा तेह परां तिहेठलि नरगा वासा को नथी ॥ महा रनइ मोटा पणुं ते क्षेत्र थकी असंख्यात जोजन प्रमाण थकी अप्रतिष्ठानन इ मोटा पणुं ते आऊ षा ना दीर्घपणा थकी ॥ अत्यथा जोयणलाखनो उ ब इ ॥ इम ऊर्द्धलोकि इं पणि जाणिवा ॥ विजयादि ॥ कालादिकनइ विषइ अनइ विजयादिकनइ विषइ ॥ सद्धाधिक होइ ते जाइ ॥ एणाइ संबंधइ कहइ छइ ॥ हरीसत्ते० ॥ सुरपुरिष लाज इ ... वलतउ ॥ तिम परीसह थी नाठत उ लाजइ ॥ मि जिसनइ ॥ पणि संलादिक इं करी कोप बाघथकी सरीर विषइ नथी सत्व ॥ चलसत्ते० ॥ चलइ ॥ थिरसत्ते० ॥ अडोलि ॥ उदयणसत्ते० ॥ बाधइ सुर पणु छइ उत्कृष्ट तथा परिणाम ॥ अनंत रसइ बंत पुरुष कहिउं ॥ ते तो लि स्कुठाइ ॥ ते सरीर सि स्कु अ श्री दृष्टांत कहइ छइ ॥ दार्ष्टांतिक सहित प्रगट ॥ तिहा

अहोलोगे णं पंच अणुत्तरा महतिमहालता महानिरता पं तं काले महाकाले रोरुते महारोरुते अप्पतिट्ठाणे उड्ढलोगे णं पंच अणुत्तरा महातिमहालता महाविमाणा पं तं विजए वेजयंते जयंते अपराजिते सव्वट्ठसिद्धे पंच पुरिसजाता पं तं हरिसत्ते हरिमणसत्ते चलसत्ते थिरसत्ते उदयणसत्ते पंच मच्छा पं तं अणुसोतचारी पडिसोतचारी अंतचारी मज्झचारी सव्वचारी एवामेव पंच भिक्खागा पं तं अणुसो[illegible] ...ज्ञाव सव्वसोयचारी पंच वणी

त अनुश्रोतचारी ॥ ते उपाश्रय थी धुरि मांडी अनुक्रमइं गोचरी करी ॥ [illegible] वगलि इं थी मांडी गोचरी करतो उपाश्रयइं आवइ ॥ श्रीनीत विकृष्ट सानइ घरि इं गोचरी करइ ॥ वउघउ [illegible] प्रसिद्ध ॥ तिहा नाअधिकार थकी ते हनउ विसेष कहइ छइ ॥ परनइ पोतानु दालिद्र पणुं देषाडवइं ॥ अनुकूल बोलवा थी जेइ ... पामीइ ते वनीकहीयइ ते प्रसिद्ध ॥ जे द्रव्यनइ पोइं अथवा आस्वादइ ॥ अथवा राषइ ते वनीपक याचक ॥ इहां अतीतादिकनउ जे भक्त हइ ते हनइ प्रसंस वइ करी दान देवानइ सन्मुख करइ ते करणहारो वनीपक ॥ १३०

तिहां जोजन जिमतो जे त्रिवार ति इं आलोतिथी तकहीयइं ॥ अनइ ते भक्तनइ प्रसंसयइं करा य अतीथिका दिक पामइं ते अतीवनीपक ॥ ए हिलोक दानदाइ ॥ ते उपागारना करण हारनइ अथवा प्रीतिपरिचयइ होइ ॥ अनेराते हनइ पाणिजे कोमना थान्या अती थनइं दानइं करी इ छइं ते दान महाफल दाई होइ ॥ क्रिपण० ॥ रंकादि दरिद्री ॥ माहण० ॥ ब्राह्मण ॥ साणव० ॥ स्वाननी थारी ॥ समणव० ॥ श्रमण पांचविधि ॥ निर्ग्रंथ ॥ साक्य ॥ तापस ॥ गैरीक ॥ आजीविक ॥ पतत्रिसाधर कह्या ॥ ते माहि इं साधु जि साधर ते तउ अचेलकइ ॥ ते अचेलपणुं प्रसंसइ छइ ॥ आचेल० ॥ जिनकल्पिक । तथा स्थविरकल्पिक ॥ पणि थोडा वस्त्र राषइ ॥ स्थानुंमूली ॥ प्रमाणोपेत ॥ जीर्णप्राय इं ली ते सघली अचेलक हो यइ ॥ पसत्थे० ॥ एहवो साधु तीर्थंकरि इं प्रसंस्यो ॥ अप्प० ॥ अचेलनइं पडिलेहणा करवी थोडी तथा विधि उपधिना

मगा पं तं अतिहिवणीमाते किवणवणीमते माहणवणीमाते साणवणीमते समणवणीमते पंचहिं ठाणेहिं अचेलए पसत्थे भवति तं अप्पपडिलेहा लाघविए पसत्थे रूवे वेसासिए तवे अणुन्नाते विउले इंदियनिग्गहे पंच उक्कला पं तं दंडुक्कले रज्जुक्काले तेणुक्काले देसुक्काले सव्वुक्कले पंच समितीतो पं तं

अल्प थकी ॥ एणइ कारणि स्वाध्याया दिकनो पलिमंथ नही ॥ लाघविए० ॥ द्रव्य थकी अनइ भाव थकी पणि राग ना अभाव थकी ॥ हलुयापणुं ते प्रसस्त ॥ अनिंद्य ॥ रूवे० ॥ रूप ॥ वेसा० ॥ विश्वासनुं स्थानक । निर्लोभी पणा थकी ॥ तव ते अणुन्नाए० ॥ उपगरणसंलीनता रूप एतप तीर्थंकरइं अनुमोद्यो ॥ विपुल० ॥ मोटउ इंद्रीनउ निग्रह ते उपगरण विना सरीरनइं प्रतिकूल सीतवाततपादि सहिवा थकी ॥ एइंद्री प्रति नियम न सवइ ॥ उत्कृष्ट इं कहइ ते णइ घाइ ते तणी उत्कट कहइ छइ ॥ उक्कला० ॥ उक्कल ते बाधतो ॥ दंड० ॥ आज्ञा अथवा अपराधी मइं उत्कृष्ट ॥ अथवा कटकते हनइ उत्कृष्ट उ छइ ॥ ते णइ करी उत्कट ते दंडा कट ॥ अथवा डंडिइं करी ज अधिपणइं ते दंडा कटो ॥ मे सघलइं ॥ रज्जुकाल० ॥ राज्यभंग उत्कट ॥ तेणुकाल० ॥ चोरि इं उत्कृष्ट ॥ देसकाल० ॥ देसभिड उत्कृष्ट ॥ सव्वुकाल० ॥ उत्कृष्ट सघलइ भालि इं उत्कृष्ट

असंयतातेइंद्रादिकिइंउक्तदकुइ॥ संयत ते समिति इं उक्त रकुइ तसंला समितिक सइबइ॥ सं० पकाअपणाइं॥ इ
ति०॥ प्रवर्त्तिवुं तेसमिति॥ रुडारकार्यप रिणामनीत्वेष्टाईत्यर्थ॥ ईर्या०॥ डवुं तिहांजसे मिति ताते ईर्या समिति॥ रथस
करयान वाहीनइंकरी फरस्यामा रगनइंविषइसूर्यकिरणें करी जीवं प्रासुकरकोतमार्गमइविषइ॥ युगमा
त्रदृष्टइंकरी। जावुं आववुं तेईर्यासमिति॥ हेतुं करी यांदोइं निःसंदेह॥ बोलवुं तेभाषासमिति॥ गवे
ति॥ गोचरीगयि रुषिं सम्यग् ... धान पणाइं नवकोडिशुद्ध ग्रहिवुं॥ तेएषणासमिति॥ तेएषणासमि
वा मुंकवा नइं विषइ सुंदर चेष्टा तआदान लेउ मात्रनिक्षेपनासमिति॥ ईहां प्रतिलेख्या प्रमार्ज्यादिक

इरियासमितीजावपारिट्ठावणियासमिती पंचविहासंसारसमावन्नगाजीवा पं० तं० एगिं
दिया जाव पंचिंदिया एगिंदिया पंचगइया पंचागतिया पं० तं० एगिंदिए एगिंदिएसु उव
वज्जमाणे एगिंदिएहिंतो वा जाव पंचिंदिएहिंतो वा उववज्जेज्जा से चेव णं से एगिंदिए
एगिंदियत्तं विप्पजहमाणे एगिंदियत्ताए वा जाव पंचिंदियत्ताए वा गच्छेज्जा बेइंदिया
पंचगतिता पंचागइया एवं चेव एवं जाव पंचिंदिया पंचगतिता पंचागतिता पं० तं० पंचिं
दिए जाव गच्छेज्जा पंचविहा सव्वजीवा पं० तं० कोहकसाई जाव लोभकसाई अकसाती अ
हवा पंचविहा सव्वजीवा पं० तं० नेरइया जाव देवा सिद्धा अह संते कल मसूर तिल मुग्ग

सातलागा पुत्तविकिआणिवा॥ उच्चारादिकना परिठववानइं विषइ समिति ते उच्चारादिसमिति॥ ईहां पाणएहजसातेलागा
सामि तित्तजीव २ सानइं अर्थि इं छइ॥ तिसूणां जीवनुं स्वरूप सूत्रआदिइं कहइ छइ॥ संसारसमापन्न०॥ सवत्री॥
सव्वजीवा०॥ संसारी नइं सिद्ध॥ अकसाई०॥ तेउपसांतमोहादिक॥ जीवना अधिकारथकी वली वनस्पतीजीव आश्री
कहइ छइ॥ कल०॥ वाटलाविणा॥ म०॥ मिसुर॥ तिल॥ मग॥ १७१

निष्पाव०॥ वाल॥ आलिसिंदग०॥ चउला॥ सइयात०॥ तुरति॥ पलिमंथग०॥ कालाचणा॥ अनंतरसंवत्सरप्रमाणइंयानि
सुव्यतिक्रमकह्यो॥ हिवइसंवत्सरइंउकहइ छइ॥ ईहां चंद्रमानइं नक्षत्रमंडल॥ नाइविषइ लागनउं जेकाल तेनक्षत्रमास ते २७
दिहाडानउ अनइं ए दिवसना सतसठिया गकीजइ। तेहवा लाग २१ एहवा बारमासेनक्षत्रसंवत्सर॥ त्रिणिसइ सत्यावीस दि
हाडा अनइं सतसठीआ एकावनभाग॥ ३२७ एतलइ दिहाडइ २२ नक्षत्रसंवत्सर थाइ॥ इमसंवत्सरात्मकयुग। तेहनउ ए
कदेस जेते। अभिवर्द्धितलक्षणउ कहीसइ ते चंद्र ६ दिसुगसंवत्सर ३१ दिवसना जे प्रमाणाते सहित अभिवर्द्धितकही
स्यइ॥ जेनक्षत्रादिते संवत्सरादितप्रमाण॥ संवत्सर तेहजे अभिवर्द्धितलक्षणकहीस्यइ॥ तेह चउप्रथमनपणइ करील
क्षणसंवत्सर॥ यतलइकालइ कालइ शनैश्चर॥ एकनक्षत्रनइ अथवा बारराशिनइ भोगवइ ते सनिश्चर संवत्सर॥ यतः

माससिणिप्फाव कुलत्थ आलिसंदग सतीण पलिमिंथगाणं एतेसिणं धन्नाणं कुट्ठाउत्ताणं ज
हासालीणं जाव केवतितं कालं जोणी संचिट्ठति गोयमा जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पं
चसंवच्छराइं तेण परं जोणी पमिलायति जाव तेण परं जोणीवोच्छेदे पन्नत्ते पंच
संवच्छरा पं० तं० णक्खत्तसंवच्छरे जुगसंवच्छरे पमाणसंवच्छरे लक्खणसंवच्छरे सणिच्छरसंवच्छ
रे जुगसंवच्छरे पंचविहे पं० तं० चंदे चंदे अभिवड्ढिते चंदे अभिवड्ढिते चेव पमाणसंवच्छरे

प्रशुप्रिसुत्रं॥ सणिंर संवत्सर अट्ठावीसविहे पं०॥ अभिती सवणे जाव उत्तरासाढा॥ जेवाम सणिंचारमहग्गह॥ तीसाए॥ संवत्स
रहिं सव्वं णक्खत्तमंडलं समाणेइ ति॥ १॥ हिवइ युगसंवत्सरना लक्षण ६॥ २९ दिहाडा। वासठीया ३२ भागदिवसना एतला प्रमाणना
३० अंधमर पडिवध कउ अरेलीमइं पुणिमाइं पुरोथाइ तिचंद्रमास॥ ते एहवा बारमासि इं चंद्रसंवत्सर तेहना ३५४ वास ठीया
बार भाग कीजइ॥ ३५४ इम बीजउ चउथउ चंद्र॥ संवत्सरपाणि जाणिवो॥ ३१ दिहाडा अनइ एकदिवसना १२४ भाग कीजइ एह
वइ एकसो एकवीस भाग १२१ एतला प्रमाणनउ अभिवर्द्धितमास ३१ एहवइ बारमासि इं अभिवर्द्धितसंवत्सर। तेहना त्रिणि
स्यइ त्र्यासी दिहाडा अनइ ६३ बासठीया ४४ भाग ३८३ पांचमो १२३ अभिवर्द्धितजाणवउ॥ पणाइं चंद्रादिकइं पांचइ संवत्सरादि
एकयुग थाइ॥ पणांव मादि अभिवर्द्धितसंवत्सरनइं विषइ॥ अ ४४ धिकमास पडइ॥ प्रमाणसंवत्सरनालक्षण कह
१७३

नरकत्ते०॥ नक्षत्रसंवत्सर कहिइं॥ ताकवला तिहां नक्षत्र नामांडलमइ वे ६२ उभा नउ लागमात्र विवलो छइ॥ इहां दिनदिननां लागादिकनु प्रमाण कइ॥१॥ वउ अनइ अलि वर्तिन कह्या॥ तिहां ति पणि तिहां सुगना अवयव पणइ कह्या छइ॥ इहां तप्रमाण ए विसेष॥ त्रीसदीहाडानउ ऋतुमास॥ तिह विबार ऋतुमासिइं॥ ऋतुसंवत्सर। तत्र ऋतुमासना साधनमास कर्ममास। एपर्याय नाम तिहनु प्रमाण॥ त्रिणि स्यइं साठि दिहाडा ऋतुसंवत्सर॥ त्रीस दिहाडा अनइ अर्द्ध दिहाडो एतला प्रमाण नउ मास एहवइ बारमास्यइं आदित्यसंवत्सर॥ तिहना त्रिणि सिइं बासिठ दिहाडा॥ अनेतरो ऋनक्षत्रादि संवत्सर॥ लक्षण मइ प्रधान पणइं करी लक्षणसंवत्सर तिहां नक्षत्र छइ॥ समग०॥ सरिषापणइं करी॥ कार्त्तिकादि नक्षत्र जोगं जोएइ०॥ कार्त्तिकि पुर्णिमादि तिथि संघातिइं संबंध करइ। यिनक्षत्रये

पंचविहे पं० तं० नरकत्ते वंदे उऊ आदिचे अभिवड्ढिते लरकणसंवच्छरे पंचविहे पं० तं० समगं नरकत्ता जोगं जोएइ समं गं उउ परिणमंति णच्चुन्हं णातिसीतो बहुदगहोति नरकत्ते ससिसगल पुन्नमासी जोतेति विसमा चारणनरकत्ते कडुतो बहुदतो वा तं माऊसंवच्छरं वंदं ॥२॥ विसमं पवालिणो परिणमंति अणुऊसुदेति पुप्फफलं॥

तिथनइ विषइ॥ उत्तम घकी ऊइ॥ जिमकार्त्तिकीनइ विषइ कृत्तिका नक्षत्र तेन नक्षत्र तेहीज॥ तिथिनइ विषइ हीहीइ॥ यथोक्तं॥ जेहा व छेत्र मुलेण। सावणे धणिहादिं अद्दामुय मगासिरा॥ सेसेसु नरकत्तेनामीयामासा॥१॥ तथा जिहां॥ समंगं०॥ सरिषा पणइं॥ उउ०॥ ऋतुपरिणमइं पणि विषम पणइं नही॥ कार्त्तिकी अनंतर हेमंतऋतु यासी अनंतर सरिष ऋतु हुइ एतावं॥ नच्चुन्हं०॥ अतिहिं उन्नधर्म जिहां नथी॥ ना०॥ अतिसीत जिहां नथी॥ बहुउदक जिहां छइ॥ एणइ लक्षणइं नक्षत्र बारनइं लक्षणइं करी लक्षोणनक्षत्र संवत्सर कहइ॥ ससि०॥ चंद्रमाइं करी सघली पुर्णिमानइ जोडइ॥ यिसंवत्सर जिहां। चंद्रमा समस्त पुर्णिमा लगाणि जोडइ पत पोतानाइं घातइं संबंध करइ॥ अतिथिन हुवि षइ जिनक्षत्र आइं इ तिम जिहांनक्षत्र। ते विषम वारा नक्षत्र॥ कडुउ०॥ कडुओ अतिसीत ऊक पणा घेको॥ अनइ लक्ष उदक जिहां छइ॥ तेहनइ॥ आऊ०॥ कहीइ॥ चंद्रमानावारनइ लक्षणइं। फल षष्ठ चंद्र संवत्सर विसम॥ निषम पणइं॥

१३२
पवाल०॥ प्रवालनो अंकुरा छइ जिहां ते पवालीणो॥ इहां तेअंकुरासहित अहस्याइं करी॥ पा॥ रु॥ मति॥ ०॥ मा॥ इ॥ वा पवाल०॥ हीस्नीते॥ परि०॥ अं॥ कु॥ अवस्था॥ नइ पा॥ ऊस्याइ॥ अणु॥ ऊसुदेति०॥ ते ऋतुविनाए न लेइ अकालिइं पुप्फफल आपइ॥ जिम वि त्राइक नइ विषइ॥ फलनो हेते॥ वसंतऋतिनइ ऊपाट्ट नां मा घादिक हइ विषइ पुके हे आपइ॥
[१३२]

वासं नसम्मं वासंति०॥ जिहां मेह सम्यक् वृष्टि न वरस्यइ॥ एह बात करीणो॥ कम्म०॥ ऋतुसंवत्सर तेहनउ॥ पर्याय नाम साधनसंवत्सर॥ पुढवी॥ जिहां प्रथिवी अनइ पाणीनइ विषइ॥ रसातमधुर अनइ स्निग्ध अनइ पुप्फनइ फलनइ विषइ॥ एहवउ रस आदित्यसंवत्सर॥ दइ०॥ आपइ॥ तथा थिव नाउदक नइं अलावइ॥ पुण एताव॥ एहज कारण घकी अल्प वृष्टि पुण॥ सम्मं०॥ वांछिऊ॥ मासं०॥ धान्य साल्यादिनी पजइ॥ एणइं लक्षणइं आदित्यसंवत्सर कहीयइ॥४॥ सूर्यनइ तजिइं करीनइ॥ तविया०॥ प्रथिव्यादिकतप्या॥ खण०॥ मुहूर्त्त॥ लव०॥ उगणपंचास उसास प्रमाण॥ दिवस ते अहोरात्रि॥ उऊ०॥ बिमास प्रमाण ऋतु जिहां॥ परिणमंति०॥ जिहां तप्यां थका अतिक्रमइ॥ पुरयंति०॥ वायिं ऊणा

वासंस्स सम्मं वासेति आ माऊसंवच्छरं कम्मं ॥३॥ पुढविंदगाणं तु रसं पुप्फफलाणं तु दइ आदिच्चो अप्पेण विं वासेणं सम्मं निप्फच्छए सासं ॥४॥ आदिच्चतेयतविता खणलवदिवसा उऊ परिणमेंति पुरेंति तेन्नलताइं तमाऊ अभिवड्ढितं जाण पंचविहे जीवस्स निज्जाणमग्गे पं० तं० पातेहिं ऊरूहिं उरेणं सिरेणं सव्वंगेहिं पाएहिं निज्जाणमाणे निरयगामी भवति ऊरूहिं निज्जायमाणे तिरियगामी भवति उरेणं निज्जाणमाणे मणुयगामी भवति सिरेणं णिज्जायमाणे देवगामी भवति सगवतो सव्वंगेहिं निज्जायमाणे सिद्धिगति पज्जवसाणे पन्नत्ते

छीयत रणुं तणाइं करी॥ घलाइं०॥ त्त मिप्रदेस नइ पुरइं॥ तमाऊ०॥ तेहनइ आचार्य कहइ लक्षणथकी अभिवर्द्धित संवत्सर॥ जाण०॥ तु सिष्य तु पणि इम जाणि॥५॥ एसंवत्सर तुं वषाण। ॥ वां॥ तथा घरीकानइ अनुसारिइ प्राक्लिष्णु छइ॥ एसंवत्सरकहिऊ॥ तेतउ कालछइ॥ अनइ कालनइं छेदइ तउ जीवनइ सरीरमाहिंथीनो कलवुंकुइ॥ तिणइ नीकलवानामारग कहइ छइ॥ नियान॥ मरणकाल जिइं जीवनइ सरीरमाहिंथी नीकलवु॥ तेहना मारग पंथ छइ॥ पाएहिं०॥ पगिइं करी जे सरीरमाहिंथी नीकलइ॥ इम सघलइ॥ उरेण०॥ हीइ॥ सि०॥ माथइ॥ सर्वा गिइं॥ हिवइ अनुक्रमइ नी कलवाना मारगनुं फलकहइ छइ॥ पाए०॥ पगिइं करी सरीरमाहिंथी नीकलतो नरग गामी हुइ॥ सर्वा गिइं नीकलतो सिद्धिगति॥ पर्यवसान॥ छेहडउ जिहनइ ते सिद्धिगति पर्यवसान॥ वं०॥ पकष्पो॥

नौ कालखंडूं तो आउषा नइ छेदिइजइ ॥ तत्त्रणी छेदवुं कहइ छइ ॥ उप्पा० ॥ देवादिक गतिनइ विषिइं ऊपजवा नो छेद
विरह ॥ वियछेयणे० ॥ मनुष्यादिक विणसवा नउ छेद विरह ॥ बंधण छे० ॥ जीवनइ कर्म बंधनइ ॥ मिलइ ॥ ते बंधन
छेदन ते जीव थी कर्म अलगा थाइ ॥ पएस० ॥ तेहजनु प्रदेसा प्रकारवु थ्यादिक इ करी छेदिवुं वा दिखवुं ते प्रादेस छेदन ॥
४ ॥ दोधार छेयणा० ॥ जीवादिद्रव्यनु बिहुं भागादिक इ छेदवुं ॥ ते दुधार छेदन ॥ एणइ करीनइ देसथकी छेदन कहि
उ ॥ ५ ॥ हिवइ उत्पाद छेदन ते ऊपजवा नो विरह ॥ यथा नरगनइ विषइ बार मुहुर्त्त ऊपजवा नउ विरह ॥ व्यय छेद
न ते नीकलवा नो विरह ते पणि इमज ॥ बंधन छेदन ते बंधन नो विरह ॥ जिम ऊपसांत मोहनुं सप्तविध कर्म
बंधन नो अपेक्षाइं बंधन नो विरह ॥ प्रादेस छेदन ते प्रादेसनउ विरह ॥ जिम अलगा कीधा अछता नइ बांधिवा दिक

पंचविहे छेयणे पं० तं० उप्पाछेयणे वियछेयणे बंधणछेयणे पएसछेयणे दोधारछेयणे
पंचविहे आणंतरिए पं० तं० उप्पातयणंतरिए १ वितणंतरिते २ पतेसाणंतरिते ३ स
मताणंतरिते सामंनाणंतरिते पंचविहे अणंतए पं० तं० णामाणंतते ठवणाणंतते दव्वा
णंतते गणणाणंतते पदेसाणंतते

कर्मना प्रदेस जे णइ तेहनइ कर्मना प्रदेसनु विरह ॥ द्विधा छेदन ते उरपलो घडगादिक इं वस्तु छेदाइ ॥ बिआदि
कुटका करीइ ते प्रदेस छेदन नइ हामइ किहां एक पंचछेयणे ॥ फोडइ ते मारगनु छेदवुं ॥ तिजिम जिम वालीइ
तिम तिम पंथ घटइ ॥ हिवइ छेदनथकी विपरीत ॥ आंतरा रहित पणुं कहइ छइ ॥ अणंतरिए० ॥ अविरह० ॥ उप्पा
य अ० ॥ ऊपजवा नउ अविरह ॥ ते जिम नरगनइ विषइ उत्कष्टउ असंख्याता समा लगणि निरंतर ऊपजइ ॥ विय
णंतरिए० ॥ इमनीकलवा नो पणि अविरह ॥ असंख्याता समय इ लगणि निरंतर नीकलइ ॥ पएसाणंतरिए० ॥ जीव
नइ कर्मप्रदेस निरंतर बंधाइ छइ ॥ अथवा ॥ द्वि प्रदेसी या दिक जिहां मेल्यो तेति हां थी विचइ उअनथी ते प्रदेसन १७३
उ अविरहि ॥ समया० ॥ समा कालनउ विरहनथी ॥ सामन्ना० ॥ पूर्वल्या बोल तुं जिहां लेषवा नइ नही समुच्चय अवि
रहि ॥ अथवा सामन्न० ॥ चारित्रनउ अविरह बहु जीवनी अपेक्षाइं ॥ निरंतर चारित्र लइ ते० समा
लगणि ॥

एसमयनइ प्रादेसनउ अविरहि छि जे ते तो अणंता छइ ॥ ते सणी अनंतु कहइ छइ ॥ नामाणंतए० ॥ नाम इ करी अनंतु
जेहनुं नाम अनंतक होइ ॥ ठव० ॥ अक्षादिकनइ विषइ ॥ कल्पना इं करी अनंतु स्थापवुं ॥ दव्वाणं० ॥ अनंता नो जाणते
मुआ तनु सरीर ॥ ते व्यतिरिक्त परमाणवादि ॥ द्रव्य अनंता ॥ गणणाणं० ॥ अनंता नो संख्यानुं करवुं ॥ पएसाणं० ॥
अनंता प्रदेस ॥ एगउणं० ॥ एकइ अंसइ करी लांबपणा रूपइं करी जे ए अनंतु ॥ एकतः ॥ अनंतए० ॥ आकाश क्षेत्र
नी श्रेणि ॥ दुहउणं० ॥ लांबपणइ पुहुलपणइ करीनइं बेहुं भागमा अनंतु ते क्षेत्रनुं प्रतर ॥ देसविच्छाराणंतए० ॥ पुर्वा
दिकमा हिली अनेरी दिसिइं एकली जइ ॥ ते देस तेहनो जे विसार ॥ पुदगलिपणुं तेहना जे अनंता प्रादेस ॥ स
व्वविच्छाराणंतए० ॥ सघला आकासना प्रदेस ॥ सासयाणंतए० ॥ आदि अनेरा हित जे जीवादिद्रव्य ॥ अनइ अ
नंतसमयनी स्थितिना ॥ अनंता छइ ॥ एहवा अर्थनुं जाणपणुं ते ज्ञानथकी जुइ ॥ तेहणी ज्ञान कहइ छइ ॥ जाणवुं ते ज्ञान

अहवा पंचविहे अणंतते पं० तं० एगताणंतते दुहओणंतते देसविच्छाराणंतए सव्वविच्छा
राणंतते सासयाणंतते पंचविहे णाणे पं० तं० आभिणिबोहियणाणे सुयणाणे

अथवा ते जाणीइ एणइ करी अथवा एहथकी जाणीइ ते ज्ञान ते तदावरणानु क्षयइं अथवा क्षयोपसमना परिणाम सहि
त आत्मा ॥ अथवा जाणइ ते ज्ञान ते पोताना विषयना ग्रहिवा ना स्वरूपथकी आत्मा इंज हुइ ॥ पन्नतं० ॥ परूपिउं
अर्थथकी तीर्थंकरइं ॥ सुत्रथकी गणधरि इं ॥ उक्तं च ॥ अत्थं भासई अरहा ॥ सुत्तं गंथंति गणहरा निउणं ॥ सासण
स्स हियट्ठाए ॥ तउ सुत्तं पवत्तए० ॥ १ ॥ अथवा प्रज्ञ० ॥ तीर्थंकर थी अथवा प्राज्ञ कहीइ ॥ तीर्थंकरइ अथवा प्रज्ञा इ
करी ॥ आतव्व० ॥ पाम्यो ॥ अथवा ग्रहिउं ते प्रज्ञाप्त ॥ प्राज्ञप्त ॥ प्रज्ञाप्त ॥ प्राज्ञात्त ॥ अभि० ॥ अर्थ मइ संमुख अविपरीत
पणाथकी ॥ नि: ॥ नियत ते संसयरहित पणाथकी ॥ बोध० ॥ जाणवुं ॥ ते आभिनिबोधिक ॥ अथवा अभिन बो
धनइ विषइ ऊपनुं ते अथवा तेणइ करी नीपनुं ॥ अथवा तन्मय ॥ अथवा ते जे हनु प्रयोजन छइ ते आभिनिबो
धिक ॥ अथवा जे वस्तुनइ जाणीइ ते आभिनिबोधिक ॥ ते ॥ अवग्रहादिक रूप मतिज्ञान ते तदावरण कर्मनउ
क्षयोपसम ॥ अथवा आत्मा जे रूप उपयोग परिणामथकी हुउ ॥ अणकुं तउ जाणइ ते आभिनिबोधिक ॥ १ ॥

स्या सली इ त श्रुत ते सहइ ऊसाव ॥ श्रुतज्ञान कारण पणा थकी ॥ सहइ ते श्रुत कहीइ ॥ अथवा एणइ करी ॥ आ॰ ॥ एह
थकी ॥ अ॰ ॥ तेहनइ विषइ स्या सली ए ते श्रुत ॥ तेतदावरण कर्मनउ क्षयोपसम ॥ अ॰ ॥ आत्माईज श्रुत नाउप
ए॰ जाणी ए ते अवधि ॥ लिइ डा हद ॥ विस्तरनु जाणीइ ॥ मर्यादाइ करी अथवा अवधीत अवधि ज्ञानावरणनो क्ष
योपसम ॥ अ॰ ॥ पोताना विषयनुं जाणवुं ते अवधि ॥ परि॰ ॥ सर्वता विइ करी ॥ अय॰ ॥ जाणवुं ॥ अ॰ ॥ जाणवु
ते पर्यव ॥ अ॰ ॥ पर्यय ॥ अस॰ ॥ सर्वता वइ करानइ ॥ आय॰ ॥ पोतानुं ज वुं ॥ तपर्याय मनन इविषइ ॥ अ॰ ॥ मं
॥ मनना पर्यायिना लेइ ॥ बाह्य वस्तुना आलोचना दि प्रकार ॥ तेहनइ विषइ ॥ अ॰ ॥ तेहनुं ज ज्ञान तेम नः पर्य
व ज्ञान ॥ अ॰ ॥ मनःपर्यायज्ञान ॥ अ॰ ॥ मनःपर्याय ज्ञान ॥ केवल॰ ॥ मत्यादि ज्ञाननस साधारण रहित ॥ अ॰ ॥ सुद्ध आ
वरण कलंक रहित पणा थकी ॥ अ॰ ॥ सकल ते पहिलुं ग्रहइ ॥ सर्व आवरणना हीयथकी सघलुं ऊपजइ ॥ अथवा अ

उहिणाणे मणपज्जवणाणे केवलणाणे पंचविहे णाणावरणिज्जे कम्मे पं॰ तं॰ आभिणि

र्थवा असाधारण एसरिषुं बीजुं नहीं ॥ अ॰ ॥ अनंतो वस्तुना जाणवा थकी केवल ज्ञान ॥ ते यथावस्थित समस्त त्रि
काल सावना स्वरूपनुं प्रकासक ॥ इहां धुरि मति ॥ ज्ञाननइ श्रुत ज्ञान एतदा मा टइ ग्रहाय्यते तइ ते बीजां ज्ञान आ
वइ ॥ तेम तिज्ञानी ते ही ज ॥ श्रुत ज्ञानी ॥ अनइ श्रुत ज्ञानी तिहीं ज मति ज्ञानी ॥ अथवा जेतलो काल मतिज्ञाननी स्थि
ति तेतलो काल श्रुत ज्ञाननी ॥ स्थिति ॥ प्रवाहनी अपेक्षाइ तथा अपक्षिवाइ एक जीवनी अपेक्षाइ ॥ वासठिसागरो
पम ज्ञाझेरां मतिनी स्थिति तिम श्रुतनी पणि ॥ तथा ए बिहु ज्ञान छतइ ते ॥ जिम मति ज्ञान क्षयोपसम ॥ थी ऊप
जइ ॥ तिम श्रुत पणि ॥ जिम मति ज्ञान साहिं सर्वद्रव्यनुं जाण ॥ तिम श्रुत पणि ॥ जिम मति ज्ञान परोक्ष तिम श्रुत प
णि ॥ तथा ए बिहु ज्ञान छतइं जि अवध्यादिक ऊपजइ ते सणी पहिलां ग्रह्या ॥ तिहां वली मति होइ तो जि श्रुत जइ ॥ अ
थवा श्रुत ते तेहडी मति नउ अंस छइ ॥ ते सणी पहिलुं मति ग्रहि जे पछइ श्रुत ग्रहि जे ॥ ए बिहु अनंतर अवधि ज्ञान ऊ
पजइ ॥ ते सणी पछइ अवधि ग्रह्यो ॥ तथा जेतली एहनी स्थिति तेतली अवधिनी स्थिति ॥ तथा ए विपल टाइ नइ १७४

कुमति कुश्रुत थाइ ॥ तिम अवधि विपलटाइ विभंग थाइ ॥ तथा जेतलो कल्पहइ पलेकाइ ॥ तेहनइ अवधि कुइ ॥ तथा विभंग ज्ञा
नी देवादिकनइ ॥ सम्यग्दर्शन पामिइं ॥ समकालिइं अज्ञान टलीनइ ए त्रिणि ज्ञान थाइ ॥ ते सणी बिहु अनंतर अवधि
नुं ग्रहण ॥ जिम अवधि ज्ञान छद्मस्थनइ कुइ ॥ तिम मनःपर्याय पणि ॥ ते सणी ते अनंतर तेहनुं ग्रहण ॥ जिम अवधज्ञानी
रूपी द्रव्यनो जाण ॥ तिम ए पणि ॥ जिम अवधि ज्ञान क्षयोपसमथी ऊपजइ ॥ तिम ए पणि ॥ जिम अवधि ज्ञान प्रत्यक्ष ॥ तिम
ए पणि ॥ ते सणी ते अनंतरा ते ग्रहि जे ॥ सर्व ज्ञानमांहि उत्कृष्टपणा थकी ॥ पछइ केवलनुं ग्रहण ॥ तथा जिम मनः
पर्याय ज्ञाननुं अप्रमत्त जती कइ ॥ तिम केवल पणि ॥ यममनःपर्याय ज्ञान उत्कृष्टा यतीनइ कुइ ॥ तिम केवलीनइं पणि
तथा पहिलुं जेणइ ए ज्ञान पामीइ ॥ ते बइठइ केवल पणि पामइ ॥ तथा मनःपर्याय विपरीत नकइ ॥ तिम ए केवल पणि
ते सणी मनःपर्याय अनंतर केवलनुं ग्रहण कीधुं ॥ ए ज्ञानना आवरणहार कर्मनुं स्वरूप कहइ छइ ॥ ए ज्ञानावरण दि

खोहियणाणावरणिज्जे जाव केवलनाणावरणिज्जे पंचविहे सज्झाए पं॰ तं॰ वायणा पुच्छणा प
रियट्टणा अणुप्पेहा धम्मकहा पंचविहे पच्चक्खाणे पं॰ तं॰ पंचविहे पच्चक्खाणे पं॰ तं॰

क्षयोपसमना उपाय ते सिज्झाय छइ ते सणी ते कहइ छइ ॥ सु॰ ॥ रूडी परि ॥ आ॰ ॥ मर्यादाइं करी ॥ अध्ययन ॥ श्रुत
नइ अणुसरवुं ते स्वाध्याय ॥ वा॰ ॥ वाचना ॥ सणविवुं ॥ वाचना ग्रहिइं छतइ ॥ कदाचित संसय ऊपजइ तो पुछवुं ॥ अनइ
पूर्वइ सणुं छइ ते माहिं संदेह ऊपनइ छतइ ॥ पुछवुं ते प्रछना ॥ बोधुं कीधुं पछे सूत्र ते संभारिवा सरिइं तेह भणी सूत्रनुं
गणवुं ॥ ते परिवर्तना ॥ सूत्रना परिहार भिवा संसरिइं अर्थवी सरिइं ते सणी अर्थनुं चिंतववुं ॥ ते अनुप्रेक्षा ॥ इम अभ्य
स्यु सूत्र अभ्यास्युं कुइ ॥ ते सणी ते लइ बखाण करिवुं ॥ ते सणी श्रुत रूप धर्मनी कथा ते धर्मकथा ॥ धर्मकथाइं करी
नइ मध्या भिप्राय जेणइ एहवा स जीव ते सुद्ध पचखाण करिइं ॥ ते सणी पचखाण कहइ छइ ॥ प्रति॰ ॥ नि
षधनुं ॥ आ॰ ॥ मर्यादाइं करी ॥ ख्यान॰ ॥ कहेवुं ते ॥ प्रतिज्ञा करिवुं ॥ तिहां सदहइ बइं करी पछे सुद्ध ते निरवद्यत्य

यइ मइं जा तं अथवा । जेसलो सद्दहिवानइं भावइ ॥ असुद्ध पञ्चखाणनुं थाइ ॥ इमसघलइ ॥ इहां निर्युक्ति गाथा ॥ पञ्च
खाणं सव्वन्नुदेसियं ॥ जं जेण जया काले ॥ तं जो सद्दहइ नरो ॥ तं जाणसु सद्दहणासुद्धं ॥१॥ विनयसुद्ध यथा ॥
किइकम्मस्स विसोहिं ॥ पउंजए जो अहीणमइरित्तं ॥ मणवयणकायगुत्तो ॥ तं जाणसु विणयउ सुद्धं ॥१॥ अ
नुभाषणा सुद्ध यथा ॥ अनुभासइ गुरुवयणं ॥ अक्खर पय विंजणेहिं परिसुद्धं ॥ पंजलिउडो अभिमुहो ॥ तं जाण
सु भासणासुद्धं ॥२॥ नवरं गुरु अक्षरका ताकरावइ ॥ तिहां बोसरिइ इम पाठ कहइ ॥ तकिडइं करनारु बो
सिरामि इम पाठ कहइ ॥ अणुपालणासुद्ध यथा ॥ कंतारे दुब्भिक्खे ॥ आयंके वा महासमुप्पन्ने ॥ जं पालियं न
भग्गं ॥ तं जाणसु पालणासुद्धं ॥४॥ भावसुद्ध यथा ॥ रागेण व दोसेण व ॥ परिणामेण व न दूसियं जं तु ॥ तं ख
लु पच्चखाणं ॥ भावविसुद्धं मुणेयव्वं ॥५॥ इहां भावसुद्ध पछी आनरिइ मिइ ज्ञानसुद्ध गलदक हिकूछइ ॥ अनइ ति

सद्दहणासुद्धे विणयसुद्धे अणुभासणासुद्धे अणुपालणासुद्धे भावसुद्धे पंचविहे पडि
कमणे पं तं आसवदारए पडिकमे मिछत्रपडिकमणे कसायपडिक्कमणे जोगपडिक्कमणे

युक्ति नइ विषइ पणि कहिउ । यदाहा ॥ पच्चखाणं जाणइ ॥ कप्पे जं जम्मि होइ कायव्वं ॥ मूलगुण उत्तरगुणे ॥ तं जाणसु जा
णणासुद्धं ॥६॥ एकठो लिद एणो व माहाणामाटइ नक किजं । अथवा सदहिवुत ज्ञान नउ विसेष छइ । तिसणो छठो लि
द अज्ञान सुद्ध माहि आव्यो ॥ ५ ॥ पञ्च प्रकार नइ तउ कहा विभती चार संरुवइ । ते तो पडिकमवो । तिसणो पडिकमणा
कहइ छइ ॥ प्रतिक्रमणं ॥ सुत्र जोग थकी असुत्र जोग नइ विषइ गया हुइ ते पाछो सुत्र जोग नइ विषइ
आविवउं ॥ क्षायोपशमिक भावथकी । उदायिक भाव नुं विषइ गयो हुइ ॥ तत्र प्रति कूल नइ विषइ जावाथकी प्रतिक्र
मण ॥ प्राणातिपात । आश्रवद्वार थकी । प्रतिक्रमणं ॥ निवर्त्तिवुं तव लीम करिवुं ॥ जाणाइं अजाणाइं सहसा माफ्को
रइ । मिथ्यात्व गयो हुइ तिहां थकी निवर्तिविउं । ते मिथ्यात्व प्रतिक्रम ॥ योग प्रतिक्रमते मन वचन कायानाव्या
गनुं असुरुनुं निवर्त्ता विनउं ॥ भावप्रतिक्रमते पुर्वोक्ति आश्रवद्वार बोलथकी सघलाइं थी निवर्त्तिवुं ॥ ॥ भा १७५

भावपडिकमणं ते अक्रुतला वितमति नइ हुइ ॥ तिसणो अक्रुत वो चवुं थी थवुं । तहना हेतु देखाडवा नइ सुत्र रकहइ छइ
सुत्तं ॥ अक्रुत व्यइजा ॥ सणा विषइ ॥ संग्रहट्ठ ॥ सषि नइ अक्रुतग्रहिवा शषवा नइं अर्थइ ॥ अथवा एमइं सषिसंग्र
हथइ ॥ तिसणो अक्रुतदइ ॥ उवग्गहठ्ठ ॥ एसा सषाणो वस्त्रादिक निजादिक परुपजाविवा समर्थ थाइ ॥ तेणाइ करी
गछनइ आधार थाइ ॥ तिसणो अक्रुत थइ ॥२॥ निर्जरा ॥ कर्म नी निर्जरा नइ अर्थइ ॥३॥ सुत्तेवा मे ॥ मुझनइ सुत्र सरणा
वता ॥ पजा वजा ए ॥ माहरूं अक्रुतवा घुं निर्मल था स्यइ ॥ सुत्रस्स ॥ सुत्रनु ॥ अवोच्छित्ति ॥ अंतराय रहित पणा
इ ॥ नय ठ्ठयाए ॥ पुरुषा उवा नइं अर्थइ ॥ एतलइ परणोका लसुत्र वात्रें लुं जाइ ॥ नाण ठ्ठयाए ॥ तत्त्वजाणवा नइं अ

भावपडिकमणे पंचहिं ठाणेहिं सुत्तं वाएज्जा तं संगहट्ठयाते उवग्गहट्ठयाते निज्जरट्ठयाते
सुत्तेवा मे पज्जवयाते भविस्सति सुत्तस्सवा अवोछित्तिणयट्ठयाते पंचहिं ठाणेहिं सुत्तं सिक्खे
ज्जा तं णाणट्ठयाते दंसणट्ठयाते चरित्तट्ठयाते वुग्गहविमोयणट्ठयाते अहत्थेवा भा
वे जाणिस्सामीति कट्टु सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु विमाणा पंचवन्ना पं तं किन्हा जाव सुक्कि
ला सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु विमाणा पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता बंभलोगलं
तएसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जसरीरगा उक्कोसेणं पंचरयणीउ उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता

र्थइ ॥ दंसण ॥ भावनासदिहिवा नइं अर्थइ ॥ चरित्त ॥ रुडा अनुष्ठान नइं अर्थइ ॥ वुग्गह ॥ मिथ्यात्वि निवेन्दा तेह
की परनइं मुंकाडिवा नइ अर्थइ ॥ अहत्थे वा ॥ यथार्थ अथवा ॥ यथावस्थिति भाव जीवादि पदार्थ ॥ अथवा अ
हत्थे ॥ भाव ते पर्याय तिहूं जाणीसि ॥ ति कट्टु ॥ एणइ हेतिइं ॥ भाषिइ ॥ उर्ध्वलोक यथावस्थिति भाव सो
धर्मादि ॥ तेहनासुत्र ॥३॥ अधोलोकादिक नइ विषइ यथावस्थिति भाव ते नारकादि तहनासु
त्र २४ ॥

व

तिरिक्षालोकनइ विषइ यथावस्थित ता वाच्य जंबुद्वीपादि तिहां मइं विषइ रह्या वस्तु ते आश्री सुत्र ॥४॥ बंधिंसु
वा० ॥ सरीरादि पणाइ पुद्गल बांध्या । दाहिणाणं ०॥ सरतनइं विषइं ॥ समप्पेंति ० ॥ पुढुचइ ॥ उत्तरेणं
०॥ एरवरतनइं विषइ ॥ सरतनी वक्तव्यतानी प्रस्तावथकी । तित्थनाउ पमाती थंकिरनुं सुत्र कहइ छइ ॥ कुमारवा

नेरइयाणं पंचवन्ने पंचरसे पोग्गले बंधेसु वा बंधंति वा बंधिस्संति वा किण्ह जाव सुकिल्ल ति
त्त जाव महुरे एवं जाव वेमाणिया जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं गंगं महा
नदिं पंच महानदीउ समप्पेंति तं जउणा सरऊ आदी कोसी मही जंबुमंदरस्स दाहिणेणं
सिंधुमहानतिं पंच महानदीउ समप्पेंति तं सद्दू वितत्था विभासा एरावती चंद्रभागा जंबु
मंदर उत्तरेणं रत्तं महानइं पंच महानईउ समप्पेंति तं किन्हा महाकिन्हा नीला महानीला
महातीरा जंबुमंदर उत्तरेणं रत्तावती महानइं पंच महानतीउ समप्पेंति तं इंदा इंदासेणा
सुसेणा वारिसेणा महाभोगा पंच तित्थगरा कुमारवासमज्झावसित्ता मुंडे जाव पव्वतिता तं
वासुपुज्जे मल्ली अरिट्ठनेमी पासे वीरे चमरचंचाए रायहाणीए पंच सभाउ पं तं सभासु
धम्मा उववातसभा अभिसेयसभा अलंकारियसभा ववसायसभा एगमेगेणं इंदट्ठाणे
पंच सभाउ पं तं सभासुहम्मा जाव - ववसायसभा पंच णक्खत्ता पंच तारा पं तं धणिट्ठा

सं० ॥ राज्यपणा मइं अभिषेक ॥ वास ॥ अज्झाविसिता० ॥ वसीनइं ॥ सरतादि क्षेत्रना प्रस्तावथकी क्षेत्र ते चम
रचंचादिका आश्री सुत्र कहइ छइ ॥ चमरचंचाराजधानीते ॥ रत्न प्रभामांहि चमर असुरकुमारराजानी जाणवी ॥ सु
धर्मसभा तिहां मइं विषइ ॥ सेय्या छइ ॥ उपपातसभा ते जिहां ऊपजइ ॥ अभिषेकसभाइं राज्याभिषेक कुइ ॥
अलंकारीसभामइं विषइ अलंकार कीजइ ॥ व्यवसायसभानइं विषइं पुस्तक वांचवाथकी ॥ ववसाय० ॥ तत्त्वनो
निश्चय करइ ॥ एअनुक्रमइं ईसानकुणइं नइं विषइ जाणवी ॥ हिवइ देवतानां अधिकारथकी नक्षत्र अनुरूपके कहइ छइ १७६

नक्षत्रादिदेवनापणुं जीवनइं ॥ कर्मपुद्गलना चिणवादिकथकी होइ ते चिणवादिकनां सुत्र ६ पुद्गलनो विवि
ध परिणामनों कहइ ते तिहां पछइ सुत्र कह्या ॥ एहनां अर्थ पुर्ववत् ॥ पांचमानउ त्रीजउ उद्देसउ ॥ ५ ॥ इति श्री
मद् सयादशाचार्यविरचिते तस्थानांगविवरणे पंचस्थानकाख्यं पंचम मध्ययने समाप्तं ॥ ॥ ५ ॥ पांचमानइं छेहलइ
सुत्रइं पांचगुणालुख्या पुद्गल अनंता कह्या ॥ तेह अनउ परूपणहार अर्थथकी तीर्थंकर ॥ सुत्रथकी गणधर ते गणधर गुण

रोहिणी पुणव्वसु हत्थो विसाहा जीवा णं पंचट्ठाणे निव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताते चिणिंसु वा
चिणंति वा चिणिस्संति वा तं एगिंदियनिव्वत्तिते जाव पंचिंदियनिव्वत्तिते एवं चिण उवचिण
बंध उदीर वेद तह निज्जरा चेव पंचपदेसिया खंधा अणंता पन्नत्ता पंचपएसोगाढा पोग्गला
अणंता पन्नत्ता जाव पंचगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पन्नत्ता पंचट्ठाणं समत्तं ॥ ५ ॥ छहिं ठा
णेहिं संपन्ने अणगारे अरहति गणं धारित्तए तं सड्ढी पुरिसजाते सच्चे पुरिसजाते मेहावी
पुरिसजाते बहुस्सुते पुरिसजाते सत्तिमं अप्पाधिकरणे

इ करी अणगार गणधरवा योग्य छइ ते कहइ छइ ॥ छहिं ठाणेहिं ० ॥ छगुण विशेषइं करी ॥ संपन्न० ॥ ते युक्त ॥ अ
नगार० ॥ ते भिक्षु ॥ अरहति ० ॥ योग्य थाइ ॥ गणं धा० ॥ गच्छनइं मर्यादानइं विषइं ॥ धारित्तए वा ॥ सड्ढी पु० ॥ श्रद्धावं
त पुरुष ॥ अश्रद्धावंत छइ ते पोतइं मर्यादा वर्जी नइ कउ परनइं मर्यादानइं विषइं स्थापवा असमर्थ ते सणी गण
धरवा अजोग्य ॥ इम सघलइं ॥ सच्चे पुरिस० ॥ जीवनइं हितकारी छइ ते सत्य ॥ प्रतिज्ञा कीधी ते पालवा समर्थ ॥ एह वउ सत्यवंत
ते गच्छ पालवा योग्य ॥ मेहावी ० ॥ मर्यादाइं करी ॥ धाइ ० ॥ प्रवर्त्तइ ॥ एहवउ स्वभाव छइ जेहनइं उत मेधावी मर्यादानउ प्रवर्त्तक
अथवा मेधा ० ॥ श्रुत ग्रहिवानी सक्ति ते सहित ते मेधावी ॥ एहवउ छइ ते तेहथकी श्रुतने राके भी आ श्रुत ग्रहीनइं
साधिनइं तेणा वासम छइ ॥ बहु० ॥ घणुं ॥ श्रुत० ॥ सुत्रार्थ जेहनइं ते बहुश्रुत ॥ अनइं जे बहुश्रुत नहीं
ते गुणनइं उपगा अ धिकारी कइ

जाणिजिणनइ छिंनिनो अथि अणु जिनिंइ तिकिं मकोइ अनइ भीन किमन तोभ्रथा पसोमासकिंमा
नाइ उजभोसाधु दिं गछवासी आलहछिनी सेनालकिमक दिइ वस तिकउ सदोवतसरीर
तम त्रेतेतै त्रपरिवारादिकेनइ विषइ समर्थाइसहित एहवउसरीरप्यातानइ अनइगछनइ आपदाआवे
निस्तारइ अप्पाहिकरणे स्वपक्षीपरपक्षिनइ विषइ तेहनइ अधिकरण कलहोनथी कलहगाण
गछनां सांणिकरिइ यथांतरनइ विषइ आचार्य एहवउ कहिउं बइ सुहस्स निम्माउ पियदढधम्मो
गुवत्तणा कुसलो जाइकुलसपन्नो गंभीरा लद्धिमंताय १ संगहुवग्गहनिरउ कयकरणो पवयणा
रागीय एवं विहोसाणिउं गणसामी तिणं दिहिं वरिदहिं ४ एगणधरनागुणकह्या गणधरनीकीधीमर्यादनइ

सत्तिमं अप्पाहिकरणे ठहिं ठाणेहिं निग्गंथे निग्गंथि गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा नाइ
क्कमइ तं खित्तचित्तं दित्तचित्तं जक्खाइट्ठं उम्मायपत्तं उवसग्गपत्तं साहिकरणं ठहिं
ठाणेहिं निग्गंथा निग्गंथीउ य साहम्मियं कालगतं समायरमाणा णाइक्कमंति तं अंता
हिंतो वा बाहिं णीणमाणे बाहीहिंतो वा निव्वाहिं णीणमाणे उं

विषइ वर्त्ततो निर्ग्रंथ आज्ञा अतिक्रमइ नही तेसांभलु २ कहइ छइ गिन्हमाणे आवादिकनइ विषइ ग्रहितउ
अवलंबमा साधवस्त्रादिकना बहडानइं विषइ वलगतो आज्ञा अतिक्रमइ नही खित्तचित्तं ते रसोकइं करीव्यग्र
दित्तचित्त दर्पिकरीव्यग्र जरकाइट्ठ देवाधिष्ठित उमायपत्तं वातादिकइं करी उवसग्गप्राप्त तिर्यंच मनुष्यादिकइं बलात्कती साहिकरणं कलहकरती ठइस्थानकिइं साधुसाध्वी पासइ अनेरा साधुनइ अ
सावइ एयमंगछतां साधर्मिक शरिराद्धर्मसहित साधुनइ समाय्यरमाणे सांधर्मिक प्रतिज्ञादर करतो अथवा
वा प्रादियादिकव्यवहार करतो आज्ञा नअतिक्रमइ संथारीइं विहार सज्झाय बइसिवुइत्यादिक खिंउ एह
वीतांगइ करिणा मर्यादाजाइ रात्रइ ते माटी कारणात्या टइ उलंघइ नही अंताहिंतो मांहि थीमृतकनइ बाहिरकाढ
तो बाहिंहिंतो बाहिरथकी ~~कालिनः~~ निब्बहिं वगाल ता बाहिरि काढता ११७

उविहमाणे नीहरणक्रियानुंकरिवुं अथवा तेहनास्वजनादिकनी हरणक्रियानकरइं तिवारिइं उदासीनपणाइ रहि
वउं उवासमाणा नीहरणक्रियानउंकरिवुं अथवा तेहनास्वजनादिकं पाठांतर सयमाणे रात्रिइं जागवइकरी
मतकनइ सेवता संसेवता एविसहनेउपहउं अर्थी उवसासमाणे एत्रीजो पाठांतर तेसुद्रविंसरइं मतकअ
दृष्टीकउड तेहनइं सिद्धांत प्रसिद्ध विधिकरानइ उपसमाडतो अणुन्नवेमाणे परवानइं काउइं मतकना स्वजन
नइ साधाउपसुक्रउणावतो तुसीणीए वा संपव्वयमाणे त्यांतइं जअणबोल्या परववानइंलेइ जाइतां आज्ञानो सं
गनही ५ एवं स्वस्थनउ अव्यवहाराहिकहिउं तेअस्तावथकीआ नेरुं कहइ छइ इहो वुद्धस्थ ते विशिष्ट अवध्यादि
रहित लवो पणिकेवल रहित तेह मछद्मस्थन लेवउ यद्यपि धर्माधर्मआकासनइं अनइसरीररहितजीवनइं

उविहमाणे वा उवासमाणे वा अणुन्नवेमाणे वा तुसिणीए वा संपव्वयमाणे ठहाणाइं छ
उमत्थे सव्वभावेणं न जाणति न पासति तं धम्मत्थिकाय मधम्मत्थिकायं आगास जीवमसरीरपडि
बद्धं परमाणुपोग्गलं सद्दं एताणि चेव उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे जाव सव्वभावेणं जा
णइ पासइ तं धम्मत्थिकाय जाव सद्दं ठहिं ठाणाहिं सव्वजीवाणं णत्थि इड्ढी ति वा जुत्ती ति वा जस
ति वा बालति वा वीरिएइ वा पुरिसकारपरक्कमे ति वा तं जीवं वा अजीवं करणताते अजीवं
वा जीवं करणताए एगसमएण वा दो भासाउ भासित्तए

परमावधिनजाणइं तथापिपरमाणुनइं अनइं सद्धना पुद्गलनइं रूपीपणाथकी जाणइ तेसणीतेहनुं ज्ञानरू
पीनइ विषइ छइ धम्मत्थिकायं इत्यादि पूर्ववत् अयरुत्थ नइं धर्मास्तिकायादिक जाणवानो शक्तिनही इमकहिउं
दिवइ सर्वजीवनइं प्यिकरवानउ शक्तिनथी तेकहइ छइ ठएस्थानकि सव्वजीवाणं संसारी अनइ सिद्धनइ नथी
इड्ढी संपदा जुइं कांतितमाहात्म्यइत्यर्थ जसआदि पूर्ववत् जीवावा जीवनइ अजीवकरवा १ अजी
वनइ जीवकरवा २ एकं एकसमयइं समकालिइं सत्या सत्यादिक बेभाषा

मयं०॥ पोतानुं कीधुं कर्म क्षिं वेदवुं लागवुं॥ अथवा जं न हो लागवुं॥ इम पोतानी इछाइं कर्मनो लोग विषा अलग लोग विवान इ विषइ बल मवालइ। थियत्तीपोतानी इछाइं कर्म नुं षपवुं अणाषपवुं नथी। ते बाळबलनी परिइं॥ जिम बाळबलि इ मान मुकइ केवलपाम्या। पणि वाछिउं पाम्या नहीं॥ इछाइं नइ वसिइं कर्म मिछ्छ्य एका केवल समुत्घाति इ छइ॥ परमाणुपुद्गल षडगादिकइं करी॥ छेदवु॰॥ छेक टका करवा॥ लेदवु॰॥ सुइं इं करी वींधवा बलनही॥ जो परमाणु छे दाइ तो परमाणुपणुं जाइ॥ अग्निइं करी बाली काइ न सकइ॥ सुक्ष्मपणा थकी॥ बाहि॰॥ लोकांतक थकी बाहिरि अलोकमाहिं जावा बलनहीं॥ जो अलोकमांहो जवाइ तउ। अलोकनइ लोकपणुं थाइ॥ जीवनइ अजीवकरवा इमकहिउं॥

सयंकडं वा कम्मं वेदिंसिवा मा वा वेदोसु परमाणुंपोग्गलं वा छिंदित्तए वा भिंदित्तए वा अगणिकाए ण वा समोदहित्तए बहिता वा लोगंता गमणताए छज्जीवनिकाया पं तं पुढविकाइया जाव तसकाइया छ तारग्गहा पं तं सुक्के बुहे वहस्सति अंगारए सनिच्छरे केऊ छ व्विहा संसारसमावन्नगा जीवा पं तं पुढविकाइया जाव तसकाइया पुढविकाइया छगइया छ आगतिया पं तं पुढविकाइए सु उववज्जमाणो पुढविकाइएहिंतो वा जाव तसकातिएहिंतो वा उववज्जेज्जा से चेव णं से पुढविकातिते पुढविकाइयत्तं विप्पजहमाणे पुढविकातित्ताते वा जाव तसकातित्ताते वा गच्छेज्जा आउकातिता छगतिता छ आगतिता एवं चेव जाव तसकातिता

ते जीवना प्रकार छ थाइ छइ॥ जीवनी॥ निकाय॰॥ रासि॥ तारा मइं आकासिइं जिम रहतें तारक यह॥ लोकमाहि प्रसिद्ध छइ॥ अनइ चंद्रमा सूर्य मइं राहु एता राहु पनथी तेमा टइ न कह्या॥ इंगार॰॥ मंगल॥ पुर्विइं छ जीवनिकाय कह्या॥ अनइ इहां तेछकाय संसार समापन्न एणाइ सघइं अघा तेसणी पुनरुक्त दोष नहीं॥ १७८

असासणी॰॥ अज्ञानी ते मिथ्या थइ करी हणाणा ज्ञानमा टइ॥ अणिंदिया॰॥ अपर्याप्ता॥ केवली सिद्ध॥ तेउस सरीर अनइ कारमणसरीर॥ अंतरगत बतइ पणि वेकुर्या कुआलि अविवो॥ असरीरी॥ सिद्ध॥ तणाव॰॥ बादर वनस्पती॥ मुलबीज॰॥ उत्पलकंदादि॥ समुछिम ते थली त्समिनइं। बीजअ बतइ जेहणा दिऊपजइ॥ एजीवेकम्म॥ जीवनइ जे दोहिल्यां कुइ ते कहइ छइ॥ छ ठाणाइं॥ छ वस्तु॥ नासुलसाइं॰॥ पामतां सोहिल्यां नहीं॥ आहीच॥ नत्तुपुन रिदम तिदुर्लभं॥ मगाध संसार जल

छ व्विहा सव्व जीवा पं तं आभिणिबोहियणाणी जाव केवलणाणी अन्नाणी अहवा छव्विहा सव्वजीवा पं तं एगिंदिया जाव पंचिंदिया अणिंदिया अहवा छव्विहा सव्वजीवा पं तं उरालियसरीरा वेउव्वितसरीरी आहारगसरीरी तेयगसरीरी कम्मगसरीरी असरीरी छ व्विहा तणवणस्सइकाइया पं तं अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधबीया बीयरुहा समुच्छिमा छ ठाणाइं सव्वजीवाणं णो सुलभाइं भवंति तं माणुस्सए भवे आयरिए खेत्ते जंमं सुकुले पच्चायाती केवलिपन्नत्तस्स धम्मस्स सवणता सुतस्स वा सद्दहणता सद्दहितस्स वा पत्तितस्स वा रोतितस्स वा सम्मं कातेणं फासणा छ इंदियत्था पं तं सोइंदियत्थे जाव फासिंदियत्थे नोइंदियत्थे छव्विहे संवरे पं तं सोतिंदिय

धिवित्त्वश्रं॥ मानुष्यं चद्योत्तं गतडित्तताविलसितप्रतिमं॥१॥ आर्य क्षेत्र ते साढा पंचवीस देसनइ विषइ॥ जंमं॥ जन्म॥ कुलते इक्ष्वाका दिकनइ विषइं॥ पच्चायाइ॰॥ जन्म॥ केवलि॰॥ केवलीप्ररूपित धर्म सुंसांभलिवुं॥ यतो वाचा॥ सुलहा सुरलोह सिरी॥ रयणायर मेहला महीसुलहा॥ निव्वुई सुहजणियरुई॥ जिणवयणसुईजए॥ दुलहा॥१॥ सूत्रनु सद्दहिवुं॥ दुर्लभ॥ आस्तव सवणं॥१॥ सद्दहियस्स॰॥ सद्दह्यानइ ते समुद्धइ॥ प्रतीत्यानइ पत्तिय॰॥ पोतानइ विषइ प्रतीति रूप जाव्यानइ॥ रोइयस्स॰॥ करवावां छइ तइ॥ सम्मं॰॥ सलीपरिइं कायाइं करी पणि मनोरथिइं नहीं॥ अघातानी परिइं फर सवज्ज दोहिलु॥ यथाहो॥ धम्मं पिजु सद्दहंतया॰॥१॥ मनुष्यत्वादिक दुर्लभ ते प्रमादी जीव कुइ॥ मनुष्यपणु

सूलिसकुलसत इंद्रियार्थ मइंसंवरइ। असंवरइ जाइ तेव तेहुं जीवनइं। स्याता असाता कहइ॥ अनइं ति हुन उदीयइ तउ प्राय
श्चित्ति कहइ॥ तेसलां इंद्रियार्थ श्रेंद्रीनउ संवरे अनइं असंवर साता असाता प्रायश्चित्त नो सूत्र इ कहइ छइ॥ श्रोत्रेंद्री
आदिना अर्थ ते विषय तेसदृशा [illegible]णवा॥ नोइंद्रि० मन ते अंतरंग इंद्रिय छइ ते मनइं करीनइं जाणिवुं॥ तेनो
इंद्रियार्थ॥ इहां इंद्री ते उदारिक सरीरादिक पणइ छइ॥ अनइं उदारीक सरीरना अर्थनुं जाणणहार छइ॥ तिहां मननइं
विषइ उदारिकादि पणुं नथी॥ पणि अर्थनुं जाणवुं ते छइ॥ तेसलां अर्थना जाणवा थकी आश्री इंद्री अनइं मनस रि
बाधया॥ तेमाटइं नोसद्द ईहां देस निषेधनइं अर्थइं छइ॥ ते तेसलां इंद्रीनइं मन सहयर छइ॥ मननो ज अर्थ०॥

जाव फासिंदियत्थे णोइंदियत्थे छव्विहे संवरे पं तं सोतिंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे
णोइंदियसंवरे छव्विहे असंवरे पं तं सोतिंदियअसंवरे जाव फासिंदियअसंवरे णोइंदिय
असंवरे छव्विहे साते पं तं सोइंदियसाते जाव नोइंदियसाते छव्विहे असाते पं तं सोतिं
दियअसाए जाव नोइंदियअसाते छव्विहे पायच्छित्ते पं तं आलोयणारिहे पडिक्कमणारिहे त
दुभयारिहे विवेगारिहे विउस्सग्गारिहे तवारिहे छव्विहा मणुस्सा पं तं जंबुद्दीवगा धायइसंडदीव
पुरच्छिमद्धगा धायइसंडदीवपच्चच्छिमद्धगा पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धगा पुक्खरवरदीवड्ढपच्च
+घ२८७ च्छिमद्धगा अंतरदीवगा अहवा छव्विहा मणुस्सा पं तं संमुच्छिममणुस्सा कम्मभूमगा १ अकम्मभूम
गा २ अंतरदीवगा ३ गब्भवक्कंतियमणुस्सा कम्मभूमगा ४ अकम्मभूमगा ५ अंतरदीवगा ६ छव्विहा

विषय जीवादि पदार्थनुं जाणिवुं॥ ते नोइंद्रियार्थ कहीइ॥ श्रोत्रेंद्रियं करी मनोज्ञ सब्द मासंभलवा थकी॥ ते साता०॥
सुख छइ। ते श्रोत्रेंद्रीय साते॥ इमसेष॥ आलोय०॥ गुरुनइं कहिवा थकी जे सुध थाइ॥ पडि०॥ मिच्छामिदुक्कडं०॥
तदुभ०॥ आलोवइ मिच्छा मिदुक्कडं॥ विवेग०॥ आधाकर्मीनइं परिठविवइ॥ विउस्सग्ग०॥ काय व्युत्सर्गना करवा थकी
तवा०॥ नीवी आदि॥ प्रायश्चित तना वहिनारा ते मनुष्य छइ॥ ते सलां मनुष्यनुं सूत्र कहइ छइ॥ १७८

चारणा॥ जंघाचारण अनइं विद्याचारण॥ विद्याधर ते वैताड्यादिना वासी॥ वसहस्त्र धनुष०॥ त्रिणि काल॥ संघयणा ते ह
डनउ संचय॥ वज्र॥ खीलो॥ रिषभ०॥ वींटवानो पाटो॥ नाराच०॥ बेऊ गामी मर्कट बंध जिहां बेऊ गमी मर्कट बंध इं

इड्ढीमंता मणुस्सा पं तं अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा छव्विहा अणिड्ढी
मंता मणुस्सा पं तं हेमवतगा हेरन्नवतगा हरिवंसगा रम्मगवंसगा कुरुवासिणो अंतरदीवगा
छव्विहा उसप्पिणी पं तं सुसमसुसमा जाव दुसमदुसमा छव्विहा उस्सप्पिणी पं तं दुस्समदुस्समा
जाव सुसमसुसमा जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताते उस्सप्पिणीते सुसमसुसमाए समाए
मणुया छधणुसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पालयित्था जंबुद्दीवे दी
वे भरहेरवएसु वासेसु इमीसे उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए एवं चेव जंबु भरहेरवाते
आगमेस्साते उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए एवं चेव जाव छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पा
लइस्संति जंबुद्दीवे दीवे देवकुरुउत्तरकुरुकुरासु मणुया छधणुसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पं छच्च अद्ध
पलिओवमाइं परमाउं पालंति एवं धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे चत्तारि आलावगा जाव पुक्खरव
रदीवड्ढपच्चच्छिमद्धे चत्तारि आलावगा छव्विहे संघयणे पं तं वतिरोसभणारातसंघयणे
उसभनारायसंघयणे नारायसंघयणे अद्धनारायसंघयणे खीलितासंघयणे छेवट्टसंघयणे

करी बांध्या पाटानी परि वींट्या आकारिइं॥ ते ऊपरि हाडइ करी वींट्यो ऊपरि त्रिहुं हाडनो भेदणहार॥ ते दणहार खीला
नइं आकारिइं वज्रना मा। हाडु कहइ। ते वज्र ऋषभ नाराच॥१॥ जिहां खीला नथी ते ऋषभ नाराच॥ जिहां बेऊ गमी मर्क
ट बंध इ ऊपरि तेना राच॥ जिहां एक गमी मर्कट बंध अनइ बीजी गमा खीलो ते अर्द्ध नाराच॥ खीला सहित
बेहाडरा हो ते कीलिका॥ बेहाडना छेहडा अडा ते सेवार्त॥ सत्ति आश्री जोइइ ते काष्टादिकनी परिइ

जिहां एवु वीजकव्यार सुलक्षणकुं इ ॥ अनइ सेष सरीर हीनाधिक प्रमाणउं ते वामन ॥ जिहां एकुं ई सरीरनु अवयव सुलक्षणनु कुंइ ॥ सर्व कुलक्षण ते कुंउ ॥ अणत्तए० ॥ अकषाई आत्मा ते आत्मा कहीइ । जेना कषाय गयिइ

संघयणनुं दृढपणुं चउदुं ऊतरतुं जाणिवुं ॥ संस्थान ते सरीरना अवयवनउ आकार ॥ तिहां । समा० ॥ सरीरना लक्षणनुं
प्रमाण कहिउं । तेहनइ मिलतो च्यार ॥ अस्र० ॥ हांसि छइ जेहनइ ते समचतुरस्र ॥ च्यारि दिसि मडि विना गिड्डस
रिखां सरीरना अवयव माटइ सघलाइं सरीरना अवयवनो प्रमाण ओछे तकाइ ॥ तेहनइ पणि अधिकुं ऊछकुं प्र
माणनुं ही ते लक्षण च्यारि हांसि पणि सरीखी हुइ ॥ नग्रोध० ॥ वडनी परि परिमंडल ते ॥ नि० ॥ जिम वड उपरि
संपुर्ण अवयव विडु पणि हेठलि तेहवउ नही । तिम ए सरीरना ऊपरि विस्तार घणो । शरीरना लक्षण ते प्रमा
ण सहित । नाभि हेठउं अधिकुं ऊंछउं प्रमाण ॥ २ ॥ आदि० ॥ नाभि थकी हेठलुं सरीर यही रति सरीरना लक्षण
ते प्रमाणोपेत सहित वर्त्तइ ते सादि ॥ सर्व सरीर तउ आदि सहित उ छइ तां ॥ पणि एतलउ ईहां विसेष ॥ ज

छव्विहे संठाणे पं० तं० समचउरंसे णग्गोहपरिमंडले साती खुज्जे वामणे हुंडे छट्ठाणा अण
त्तप अहिताते असुत्ताते अखमाते अणीसेसाए अणाणुगामियत्ताते भवंति तं० परिता
ते परिताले सुते तवे लाभे पुतासक्कारे छट्ठाणाइं अत्तवतो हिताते जाव आणुगामि

आत्मा ज्ञानरूप प्रगट थाइ । अनइ जे कषाय सहित ते अनात्मवान कहीइ ॥ सकषाय इत्यर्थः ॥ तेहनइ अहिता
य० ॥ पथ्यकारी जे नही ॥ असुहाय० ॥ पाउ बाफलनी अथवा दुष्फलनी ॥ अखमाए० ॥ असुखना तेनी अथवा अ
क्षमा तेनी ॥ अनिस्सेसाय० ॥ अकल्याणतानी ॥ अणाणुगामि० ॥ असुभानुबंध तेनी कइ ॥ अतिमानना कार
ण माटइ ॥ इहलोकि परलोकि अनर्थरूप जाववणाहार पणा थकी ॥ परिताते० ॥ जन्मकाल । अथवा प्रव्रज्यानउ
काल माटो मान नउं कारण जइ । तिथी दीक्षा इह्याइ परि गृहस्थ थकी माटिमपणुं मन मांहि लवइ ॥ अनइ जन्मका
ले नुं अभिमान ते बाकु बलनो थविर जे ऊंच विवहउ प ए ७ नाईल कुडा बइ ॥ इम अनेरो बोल विषइ । यथा सं
स्वबुद्धि वकं ॥ नवरं० ॥ परियाल० ॥ सिष्यादि परिवार ॥ सुए० ॥ पूर्वगतादि श्रुत ॥ जिमर अकुश्रुत माइ ॥ जि
म जिम सिष्यनउ परिवार वाधइ ॥ अनइ जो अभिमान करइ तो तिम तिम सिद्धांत तन उमत्तनी कथाइ ॥ तवे० ॥ अनस
नादि ॥ लाभे० ॥ अनादिकनउ ॥ पुजा ते स्तुति ऊप स्तुति पुर्वक वस्त्रादिकइ ॥ पुज वुते सत्कार ॥ अथवा पुजानउ जे
आदरते पुजासत्कार ॥ ६ ॥

हेवलुं सवीर कें वप ताइ घणुं सु दर पणा सहित लक्षणा सादि ॥ ३ ॥ ईसा अभ स्त काय ते पगहाथ मस्तक अनइ ग्रीवा कही इ । जिहां ए सरीर लक्षणना प्रमाण थकी अधिकुं ऊछुं कीकुंइ ॥ अनइ सेष अवयव सवसुलक्षण कुंइ ते कुब्ज ॥ ४ ॥

१८०

जे माता नो पक्ष ते जाति ते णइ करीनइ ॥ आर्य० ॥ अपाप ते निःकलंक निर्दोष ते जात्यार्य विसुद्ध मातृकइ इत्यर्थः ॥ अं
बट्ठा इत्यादि श्लोक ॥ छव्याइ भ्रजाईउ ॥ ग छइ ते जातिक हिवाइ ॥ इत्त० ॥ अबाडी सहित हाथी सहित हाथी प्रमाण द्रव्य
जेहनइ छइ ते ईभ्य ॥ कुल ते पितृपक्ष ते णइ ॥ आर्य ते कुलार्य ॥ उग्रा आदि जि कोटवाल पणइ स्थाप्या ते हना वंसना
ते उग्र ॥ ते जि गुरुपणइ स्थाप्या ते अनइ तेहना वंसना ते भोग ॥ ये मित्र स्थाप्या ते अनइ तेहना वंसना ते राज
नीय ॥ प्रथम जिनना वंसना ते इक्ष्वाकु ॥ ज्ञाति मइं कोरव्व ते महावीरनइ सांतिनाथ माप्रवंश ॥ अथवा ए विकल्प ते दलो
करूदिथी जाणवा ॥ ए जाति अनइ कुलार्यादिक ए लोकस्थित छइ ॥ तेलगे लोकस्थिति कहइ छइ ॥ आगा० ॥ अ

यत्ताए भवति तं० परिताते परिताले जाव पूतासक्कारे छव्विहा जाइआरिया मणुस्सा पं०
तं० अंबट्ठाय कलंबा वेदेहा वेदिगातिता हरिता चंचुणा छव्विहा कुलारिया मणुस्सा पं० तं० उग्गा भोगा राइन्ना इक्खागा णाता कोरव्वा छव्विहा लोगट्ठिती पं०
तं० आगासपतिट्ठिते वाए वायपतिट्ठिता उदही उदहिपतिट्ठिया पुढवी पुढविपइट्ठिया तसा थावरा
पाणा अजीवा जीवपतिट्ठिया जीवा कम्मपइट्ठिया छद्दिसाओ पं० तं० पातीणा पडीणा दाहिणा
उदीणा उड्ढा अहो छहिं दिसाहिं जीवाणं गती पवत्तति तं० पातिणा जाव अहाते एवं आगती
वक्कंती आहारे ।

दारिकादिक ते पुद्गल जीवनइ विषइ ॥ पइट्ठिया० ॥ आश्रया छइ एतावता एकांति कनहीं । जेम सो जीव प्रमइ घणाइ अजी
वरह्या बइ । जिम पृथिवी आर हित त्रस स्थावर ॥ ठिया छइ ॥ तथा जीवकम्मप० ॥ जीनावरणी आदि नइ विषइ प्रतिष्ठा छइ
॥ तेतलणा अप्रसरीरी नइ पोतइ केभमिष्यो ॥ अनंतरे कर्म प्रतिष्टित जीव कह्या ॥ ते हेमी गति दिसिनइ विषइ छइ ॥ ते तलणा दि
सिनइ विषइ गति कहइ छइ ॥ इहां विदिसि न कही ते जीवादिकनी गति प्रतिदिसि इ जछइ ॥ अथवा लेश्या माटइ विदि
दिसिनु कही ॥ जीवनइ उत्पत्ति स्थानकि इ जावुं ते गति ॥ पवत्तइ० ॥ प्रवर्त्तइ ॥ ए जीवनी गति सम्रेणि जिछइ ॥ वक्कं
ति० ॥ उत्पत्ति स्थानकि पुहुतां नु ऊपजवउं ॥ आहार ते जीवनइ दिसिनइ विषइ ऊपजनुं थाइ ते दिसिना आदेसनइ

विषइ रह्या । पुद्गल ते जीवगइं फरसइं वाघको ॥ अनइ फरस्ये ऊरते हुउं आहारइं ॥ वुड्ढि० ॥ सरीरनी वृद्धि ॥ निवु
ड्ढी० ॥ सरीरनी हांणि ॥ विकुव्वणा० ॥ सरीरनुं विकुर्व करिवउं ॥ गतिपर्याय ते चलवुं । पणि परलोकिं गमन नहीं ॥ ते
गत्यागति माहा ग्रह्यो छइ ॥ तत्र लां ॥ समुग्घात ते वेदनादिक सात ॥ काल संयोग ते समयादिकिं ग्रहइं ॥ सूर्यना
प्रकास सरूप संबंध ॥ दर्शन ते सामान्य ज्ञान बेउ ॥ तेणइं करीनइं अवध्यादि प्रत्यक्षरूप ऊ ज्ञान तेणइं करीनइं ॥ अ
भिगम० ॥ वस्तुनुं जाणिवुं ॥ अथवा दर्शनिइं करीनइं ॥ अभिगम ॥ वस्तुनुं सम्यग् इम ज्ञानाभिगम पणि जाणिवुं ॥ जीवाभि
गम ते प्रत्यक्ष अवध्यादिकइं करीनइं जीवनुं जाणिवउं ॥ अजीवाभिगम० ॥ पुद्गलास्तिकायादिकनुं जाणवुं ॥ एसर्व यथा
संभव कइ ॥ दिसिनइं विषइ लेवो ॥ जिम बिहुं दिसि । हूं जीवाणं गइ पयाइं ॥ इत्यादि सूत्र कह्यो ॥ इम पंचेंदियति०

वुड्ढी निवुड्ढी विगुव्वणा गतिपरियाते समुग्घाते कालसंजोगे दंसणाभिगमे णाणाभिगमे
जीवाभिगमे अजीवाभिगमे एवं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण वि मणुस्साण वि ॥ छहिं ठाणे
हिं समणे निग्गंथे आहारमाहारेमाणे णातिक्कमति तं वेयण वेयावच्चे इरियट्ठाए य सं
जमट्ठाए तह पाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिंताए ॥१॥ छहिं ठाणेहिं समणे

पंचेंद्रीतिर्यंचनइं अनइं मनुष्यनइं दंडकिं कहिवुं ॥ सघ नारकादिक दंडकनइं विषइ ॥ गत्यादि सर्वा बोल छइ ॥ दिसिनइं वि
षइं । पुरइ लावु इन संभवइ ॥ नारकादिक २२ दंडकनां जीवनइं नारकनइं देवता विषइ उपजवानउ असंभव कइ ॥ तत्र लां त
गति आगति दिसि गत्यागतिनउ अभाव ॥ तथा दर्शन ज्ञान जीवाभिगम ॥ एगुणप्रत्यय अवधिरूप प्रत्यक्ष सर्व वस्तुन थी अनइ
भवप्रत्यय अवधिना ॥ पणि नारक त्या तिर्यक्नुं अवधि तिरछउं हुइ ॥ भवनपती व्यंतरनां अवधि ऊंचा हुइ ॥ विमानीकनां
अवधि हेठा होइ ॥ अने सिप अवधिरहित ॥ इत्यादि बोलनइ अनुसारिइं एसूत्र विचारवा ॥ अनंतर सूत्रइं मनुष्यनइं अजी
वनुं ज्ञानपणुं कहिउं ॥ ते मनुष्यमाहिं इ नी को एक जती हुइ । तेहनी यतीनइं आहार लेवानी अनइ अणलेवानां कारण
बेसूत्रइं कहइ छइ ॥ आहार० ॥ असनादिक ॥ आहार० ॥ आहारता ॥ पुष्ट कारण माटइं ॥ आज्ञा अतिक्रमइ नहीं ॥ रागादि
करी वधको आहारतो आज्ञा अतिक्रमइ ॥ वेयणा० ॥ क्षुधावेदनामाटइं ॥ वेयावच्चे ते आचार्यादिकनुं करिवा मइं अ
र्थिइं ॥ इर्या० ॥ आलेवानइं विसुद्धि० ॥ युगमात्र दृष्टिइं ईर्याविसुद्धि तेहनइं अर्थिइं ॥ संयम ते जीवनुं वली वली जी
वु पडउं वक तेहनइं अर्थिइं ॥ प्राणाते उस्सासादिक अथवा बल ते धारवानइं अर्थिइं ॥ बेढके दीरण धर्म चिंतानइं अर्थिइ गुण

वा अनुप्रेक्षानइं अर्थिइं ॥

१८१

याछिंदमाणो० ॥ त्यजवउ ॥ आतंक० ॥ ज्वरादिक हुइं ॥ उपसर्गे० ॥ राजा स्वजनादिकना कोप अनुकूल प्रतिकूल ॥ ति
तिरकणा० ॥ अणहरावानइं विषइं ब्रह्मचर्यनी गुप्तिनां तत्र ते ब्रह्मचर्य राखवा नइं काजइं आहारत्याग नइं ब्रह्म
व्रत राखतां प्राणादिकं ॥ प्राणीदया ते पतंगादि त्रसप्राणी राखवानइं काजइं ॥ तप ते चउथादिक छमास पर्यं
त ॥ तत्पनइं अर्थिइं ॥ सरीरनां त्यागनइं अर्थिइं ॥ आहार छेदइं ॥ अनंतर श्रमणनइं आहार ग्रहण अग्रहिवानां कार
ण कह्यां ॥ हिवइ श्रमणादिकनइं उन्माद ते अयोग्य छइ ॥ तत्र लां उन्मादनुं सूत्र कहइ छइ ॥ आया उम्मा० ॥ आत्मा
उन्मादपणं मइं ॥ उन्माद ते माहामिथ्यावलक्षण ॥ ते तीर्थंकरादिकना अवर्णवाद बोलतां नइं हुइ ॥ अथवा ॥ अ
सासनदेवता बलइ तरूप उन्माद हुइ ॥ भा० तरइ ॥ उम्मायपमाय० ॥ उन्माद ग्रहस्य हितपणुं अथवा उन्मत्तपणुं त
हीजउ प्रमाद ॥ प्रमत्तपणुं ते बली ज्ञाननुं सुन्यपणुं ॥ अथवा उन्माद ते अहितनुं प्रवर्तवुं ॥ प्रमाद ते इहितनुं अप्रवर्त

निग्गंथे आहारं वोछिंदमाणे णातिक्कमति तं आयंके उवसग्गे तितिक्खणे बंभ
चेरगुत्तीते पाणिदया तवहेउं सरीरवोच्छेयणट्ठाए ॥ छहिं ठाणेहिं आया उम्मायं पा
उणेज्जा तं अरहंताणं मवन्नं वदमाणे अरहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स अवन्नं वदमाणे आ
यरियउवज्झायाणं मवन्नं वदमाणे चाउवन्नस्स संघस्स अवन्नं वदमाणे जक्खावे
सेण चेव मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं ॥ छव्विहे पमाते पं तं मज्जपमाते विसयपमाते

णु ॥ वा० ॥ तिथामइ ॥ अवर्ण० ॥ अश्लाघा ॥ वयमाणे० ॥ बोलतो ॥ अथवा करतो ॥ धम्मस्स० ॥ श्रुत चारित्ररूप ध
र्मनउ ॥ चाउवन्न० ॥ चतुर्प्रकार ऋषि श्रमणादिक ॥ जरकादे सणं० ॥ किस्पइ कारणइं देवता कोप्यो अनइ तेह
नइं अदृश्यो ॥ मिथ्या च विदासा कादिकरूप मोहनीनइ ॥ अवर्णवाद बोलतां हुइ ॥ उन्मादनउ सहचारी प्रमाद
कहइ छइ ॥ प्रमाद० ॥ रुडा उद्यम थोगनउ अभाव ॥ मद्य ते प्रमादनुं कारण छइ ॥ तत्र लां मद्य ते ही ज प्रमाद ॥
निंद्या प्रमाद इंद्री सांजाइ ॥ विसयपमाते० ॥ विषय शब्दादिक ते विषयो कुल चित्त हीता हित न जाणइ ते विषय प्रमाद ॥

निद्दपमा ते

कषायक्रोधादि तेहो अप्रमाद॥ विस्तरतनिर्मलित्वउं अंतरंग धनकहीयइ तेहनु विस्तर त। दोस्पइंमूं स्युं तसर्व आय हापामइं॥ द्रुय॰ ऋतप्रमाद। जुयारीनुं वि सघनकामत्लाग नामिकामस्तकनाशपामइ॥ पडिलेहणाप्रम य॰॥ द्रव्यथकी क्षेत्रथकी कालथकी भावथको ए विशु लेहिइ॥ तिहांद्रव्यप्रतिलेषणाते वस्त्रपात्रादि उपगरण नु॥ असनपानादि आहारनुं आ विर्मनि २ प्रवारूप॥ क्षेत्रप्रतिलेषणा ते काउसग्ग बइसवुं। सुवुं तेहनां स्थान कनुं थंडिलनुं मारगनुं विहाराहनुं जावुं॥ प्रेति॥ कालप्रतिलेषणा ते योग्य अनुष्टानक रवा नइ अरथिइ को पुर्वापरनुं काल॥ जागरउ ना वपडिलेहो॥१॥ पडिलेहणामइ विषइ॥ प्रमाद॰॥ १ यो डिलपणु अथवा आज्ञा कांत्र थ वी तेप्रतिलेषणा प्रमाद॥ एणइ करीपजुवानइ विषइ॥ तिस्यां थरीनइ विषइ॥ इंद्रा मिथ्थाकारादि दश विधि सामाचारीरूपव्यापारनइ विषइ॥ प्रतिप्रमादजाणवउ॥ तेहनइ पणिसामाचारीरूपपणाथकी एहे हो प्रमाद नातेदमाहि आवइ॥ अनंतर पडिलेहणाप्रमादकहिउं॥ स्विइं तेहनाभेदकहइछइ॥ कह्योय प्रमादतेहाइ

कसायपमात जुतपमाते पडिलेहणापमाए छव्विहा पमायपडिलेहणा पं.तं. आरभडा सम्मद्दा वज्जेयव्वीयमोसलीतत्तितापप्फोडणावउत्थी विक्खित्तावतियाछट्ठी॥१॥

सम्मद्दा॰ जिहां वस्त्र मर्द्दवुं णावालीइ अथवा जे वस्त्र पडिलेहवावांछइ तेऊपरि बइसीनइ पडिलेहणाकरइ॥ मोसली॰ पडिलेहणा करतां वस्त्र नइ लागिइ करीनइ॥ उर्द्ध अधो तिरिय कंसघट्टिवउं॥ एत्रीजो प्रमाद पडिलेहणा॥ केहो एक अ होता ठवणाय एह वउथा बेछइ तेगुरुना अवग्रह मांहि ऊपधिनुं पडिलेहवुं॥ प्रस्फोटना॰॥ रजइं परडानो परिइ प्रकर्षइ वस्तुनुं झाटिकवुं॥ एचोथो॥ विक्षिप्ता॰॥ वस्त्र पडिलेहीनइ अणपडिलेह्या वस्त्र ऊपरि मुंकइ॥ तथा आघा पाछा नाषइ॥ अथवा वस्त्रना छेहडा ऊंचा नीचा नाषइ॥ वेइया॰॥ वेदिकापांचप्रकारनी छइ॥ तिहां ऊर्द्ध वेदिका॥ ति हां बेऊ ढींचण ऊपरि बेऊ कोपर धरी पडिलेहइ॥ अधोवेदिका ते बेऊ ढींचणथकी हेठाहाथ करीनइ॥ तिर्य ग्वेदिका ते बेऊ ढींचणनइ पासइ हाथ करी॥ द्विधावेदिका ते बेऊ हाथ वचिइ बेऊ ढींचण आणीनइ॥ एकतो वेदिका ते बेऊ हाथ वचिइ एक ढींचण करी पडिलेहिइ॥ एछठो प्रमाद पडिलेहणा॥ ॥ कह्यो॥ पडिलेहणा ते हथकी विपरीत पडिलेहणा कहइ छइ॥

अप्रमाद प्रतिलेषणा॥ अणच्चा॰॥ वस्त्रमइ अथवा आत्मानइ॥ नचावइ नहीं॥ एहनामां गाथ उत्तवस्त्र ननचावइ॥ अनइ स रीर नचावइ॥ एवंवक्त्रमां प्रथम॥ अवलियं॰॥ वस्त्रनइ सरीरनइ मोडइ नहीं॥ एहां पणिचउभंगा॥ प्रथमनुं सा राउ ते बउथं॥ अणाणुबंधि॰॥ निरंतर आषोडानकरइ॥ तथा यकत्रां वस्त्र अणकरतां॥ आमोसली॰॥ ऊंचुं नीचुं तिरि ऊ वस्त्र अणलगाडतउं॥ छपुरिमा॰॥ वस्त्रपसारी आंखि जोइ वस्त्र ने उआगलि उलाग फेरवीनइ॥ वस्त्र ने रखीनइ त्रिणि॥ पुरिमा॰॥ पफोडा करिवा॥ तथा वली फेरवी आंखि जोई घलो त्रिणि पफोडा करवा॥ नवखोडा॰॥ त्रिणि २ वार पजुवानइं वचिं नव अषोडा थाइ॥ तेनव बार वस्त्रादिक झाटकवुं तेनव अखोडा॥ अनइ नव वारपजुजवुं तेनवप्र

छव्विहा अप्पमायपडिलेहणा पं.तं. अणच्चावियं अवलियं अणाणुबंधि आमोसलिचेव छप्पुरिमा नवखोडा पाणीपाणविसोहणी॥२॥ छलेसाउ पं.तं. कण्हलेसाउ जावसुक्कलेसा। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं छलेसाउ पं.तं. कण्हलेसा जावसुक्कलेसा। एवं मणुस्साण देवाण वि। सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो छ अग्गमहिसीउ पं.तं. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो जमस्स महारन्नो छ अग्गमहिसीउ पं.। ईसाणस्सणं देविंदस्स मज्झिमपरिसाए देवाणं छ पलिउवमाइं ठिती पं.। छ दिसिकुमारिमहत्तरियाउ पं.तं. रूवा रूवंसा सुरूवा रूववती रूयकंता रूयप्पभा। छ विज्जुकुमारिमहत्तरियाउ पं.तं. अला सक्का सतेरा सोतामणी इंदा घण विज्जुया। धरणस्सणं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो छ अग्गमहिसीउ पं.तं. आला सक्का।

मा। क्रिना एवं २४ एक ह त्रिणी २५ पुरिमा नइ॥ प्राणिकाना सरीरपापणाथकी एविऊमलीनइ पोतमो अप्रमाद पडिले हणा॥ पाणी॰॥ ऊधुआदिकनु॥ विसो॰॥ पजुजवु॥ तेपडिलेही तेवस्त्रइं करीनइ करवुं॥ तेनवषोडा विचालइ त्रि णि २ वार पजुंजोइ छइ तेरूपए छहो अप्रमादप्रतिलेषणा॥ एप्रमाद अनइ अप्रमाद तत्पफे ज्ञालेस्या लेस्या विसे षथी थाइ॥ तेसणी लेस्या अधिकार कहइ छइ॥ देवतानइ ऊलेस्या छ कही तेसमुच्चयपइ देवगतिमाहि छइ॥ दिन गतिना अधिकारथकी देवतानी अग्रमहिषी कहइ छइ॥

[illegible] तेप्रतिलेहणाथकी प्रमादनी तेपडिलेहणा [illegible] डा करवा रू प अथवा प्रतावलु [illegible] अथवा अपडिलेहिइ [illegible] वस्त्र [illegible] इ॥ पडापवर्त वो॥ इमस पलेहसव धजोभइवो १८२

अनंतरादेववक्तव्यताकही। देवतानउमतिवंतहुइ। तेसणी मति ६ सुत्रकहइछइ। तिहां मति० अ ति वि
बोधिकातेहना। अवग्रहादिभेद ४ अवग्रह० पहिलुंसमुच्चयइअर्थनुंग्रहिवउं तेरूपमति ते अवग्रहमति
तेअवग्रहमति बेप्रकारिइ। व्यंजनावग्रहमति अनइअर्थावग्रहमति। तिहां अर्थावग्रहमति बिप्रकारिइ।
निश्चयथकी अनइव्यवहारथकी। तिहां व्यंजनावग्रहनउअंतरकालतेहना एकपहिलासमयलगिइं निश्चइ
अवग्रहमति। अनइअंतर्मुहूर्त्तलगइ व्यवहारअवग्रहमति। ईहानइअवायनाकारणपणाथकी अवग्रहम

सातरा सोदामणी इंदा घणविज्जुया भूताणंदस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो
छअग्गिमहिसीउ पं तं रूता रूतंसा सुरूया रूववती रूवकंता रूवप्पभा जहा धरणस्स त
हा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव घोसस्स जहा भूताणंदस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव म
हाघोसस्स धरणस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो छस्सामाणियसाहस्सीउ पन्नत्ताउ
एवं भूताणंदस्स वि जाव महाघोसस्स छव्विहा उग्गहमती पं तं खिप्पमोगिण्हति ब
हुमोगिण्हति बहुविहमोगिण्हति धुवमोगिण्हति अणिस्सिमोगिण्हति

तिकही। तेईहामइअवायनुंकारण अवग्रहमतिछइ। तेपहिलुंअवग्रहमतिहुइतोपछइईहाअवायमतिहुइ। अवग्र
हथीईहातेविसेषछइ। ईहाथीअवायतेविसेषछइ। अवायथीधारणातेविसेष। परस्परिइं सामान्यवि
सेषजाणिवा। वउथीथीउत्तरतीलीउइ तिवारिइं सामान्यपहिलीथीवडतीजाणिवी। छिवइव्यवहारअवग्रह
मतिआश्रीबालेछइ कहइछइ। खिप्पमोगिन्हति० तत्कालईआदिकनाफरसमइ। क्षयोपसमनीपटुताइइ
करीघोडइकालिइ जाणइ। तेजाणणाहारमति। अथवामतिवंतपुरुष। बहुसोगिन्हति०। सप्रमाइं विइंगी
नउंपुरुषनउं वस्त्रनउ चंदनादिकनउ बहुप्रकारिइं जस्पर्शइं हुं हुउ हुहुउ जाणइ। बहुविहं० एकोको सष्ट जे
स्निग्धमधुरइंइत्यादिकिप्रकारिइं जाणइ। बहुविधिंजाणइ। धुवं० निश्चलग्रहइ तिएकवार जस्त्रीयादिकनउस्प
र्शिहुउहुइ। वलीकालांतरिइं। स्पर्शतिवारिइंजाणइ। जातहनउस्पर्श। अनिस्सियं० अनेरांआधारहितजाण
इ तेअनिश्रित। १८३

असंदिद्धं० सर्वसंदेहरहितजाणइ। एयआस्पर्शआंहीनउउ। इमईहाअवायधारणानाछभेदकरवा। न
वरंधारणामांहिं इछिहंअनइधुवपदकाढीनइ। पुराणइधरिपदआणवा तिहां। पुराणउ० घणाकालनु उ
धरि० गहिनचित्रामादिकनुंधरिवउं। अवाबीसभेदमतिज्ञाननाछइ। एअवग्रहादिकनाछभेदकह्या।
जिमहिनग्रहिउकहिउं। तिमाहिंप्रनग्रहइइत्यादि ६ भेद। तेग्रहिवानाग्रहिवानाथईनइ १२ बोल। २८सेन
१२गुणाकीजइ तिवारिइं ३३६ भेदमतिज्ञाननाथाइं। एबोलविपरीतकहीइछइ। आदिप्रतिघणाइकालइ
जाणइ। निश्चितचिन्हथकीजाणइं। संदिग्धतेनिश्चइनजाणइ। अध्रुवतेकदाचिकिवारिइंजाणइ कदाचि
तनजाणइ। अथवागवादिकनइअनेरीवस्तुनावलीदिकइंकरीजाणइं तेनिश्रित। अनइंगायनइ जिखलाव

असंदिद्धमोगिण्हति छव्विहा ईहामती पं तं खिप्पमीहती बहुमीहती जाव असंदिद्धमीहती
छव्विहा अवायमती पं तं खिप्पमावेति जाव असंदिद्धं आवेति धारणा छव्विहा पं तं बहुधरे
इ बहुविहं धारेइ पोराणं धारेइ दुद्धरं धारेति अणिस्सितं धारेति असंदिद्धं धारेति छव्विहे बा
हिरए तवे पं तं अणसणं ऊणोदरिता सिरकातरिता

इकरीजाणइ तेअनिश्रित। अनंतरमतिकही। मतिवंतहुइ तेतेतपकरिइ। जेकाउतोआनरिइलोकिइंपणि
जाणइ। अथवाबाहि० बाहि० सरीरनइतपावणहारपणाथकीबाह्य। तप० सरीरनइअनइकर्मनइतापव
इतेतप। अनसन। असमनहीतआहारत्याग। तेईत्वरयावत्कथिकत्तदिकाथिक। इत्वरतेचउथादिछ
मासांतः। वीरतीर्थआश्री। यावत्कथिकतेमरणलगिइ। तेहनाभेद ३ पादोपगमन। इंगितमरण भक्त
परिज्ञा एहनाअर्थ पूर्विइंवखाण्याछइ। ऊणुंजेऊदरतेअवमोदरतेहनुंकरिवउं। तेअवमोदरिका। त
दुव्यथकीउपगरणतातपाणी। भावथकीक्रोधादित्याग। भिक्षानइअर्थिइं चरण० अटवुं। ते तेभिक्षाच
र्यातेनिर्जरानाअर्थिमाटइ। तेअणसननीपरिइंतपइजिकहीइ। अथवासमुच्चयइंभिक्षाचर्याकहीइछइ। प
तेविसेषथकीविचित्रअतिग्रहिकरीनइवृत्तिसंक्षेपरूपजाणवी। जेसणीइहीउकहिस्यइं। छप्रकारिइंगोचरी

तेहनइ तिहां चर्याकाईं अत्यंत नहुं। छुधा नहीं। भिक्षाचर्यानइ विषइ अभिग्रहना धरतद। उत्पधकी अलेपद्रव्य ग्रहिस। हि त्रधकी परभ्रामनइ विषइ। अथवा घरादिनइ विषइ। का० लघुकी पहिलापुहोरा दिनइ विषइलेसुं। लांवधकी गीतगातो होसीतक कईंथी लेसुं। रस परित्याग ते उधदिक नउ त्याग। काय क्लेस ते काया सरीरनुं क्लेस तु तेवी रासण दिक अनेकासदे। प्रतीसंलीनता। गुप्त पणुं। ते इंद्री कषाय योगनुं पापविवु। विवक्त सय नासननुं सेववुं। लोकि इंजाणइ नहीं। परमार्थधकी मांहिनुं धामिवुं तेज अंतरंग ईछइ। अनइ प्रगट ताव इही सइ अंहीम अतिर। प्रायश्चित ताहा थकह्यो पछी गुरुनो पडुत्तर ते आलोचनादिदसल दि। अह विधिकर्मनिइ टालां करइ ते विनय। ते विनय नाज्ञानादि ७ कहिस्यइ स्यात मइ गालइ। वियावच्च। तेथ र्म साधवानइ अधिइ अनादिक चुद्दिवु तेहना १० दिसेद। आयरिय उवज्झाय। थेर तवस्सी गिलाण सेहाण। साहंमिय कुल गण संघ। संगयं तमिहकी

रस परिच्चाए। ताा काय किलेसो पडिसंलीणता ३ बिहे अभिंतरए तवे पं० ते पायछित्तं विणऊ वेयावच्चं तहेव सज्झाउ झाणं विउस्सग्गो ३ छव्विहे विवादे पं० ते उक्कसतित्ता उस्सकइत्ता

 अणुलोमइत्ता पडिलोमइत्ता सइत्ता तेलतित्ता ३ छव्विहा खुड्डा पाणा पं० ते बेंदिता तेंदिता

यव्वं। १। सुद्धच्छेली पति। आमर्या सइंकरा सणवुं तेस्वाध्याय तपो वलिदिइं। वाचनादि। ध्यान ते एक ग्रपणुं ते चिंतानो निरोध ते धलिदिइ पुर्विइं कहिउं। तिहां धर्म नइ सुक्ल ते निर्जराधं पणाधकी। तपमाहि जाणवो। आर्त्तरौद्र बंधहेतु धकी न लेवा। वुस्सर्ग ते। परित्याग ते खद्रव्य धकी। गण सरीर उपधि आहारनउ त्याग भावधकी क्रोधनउ त्याग। एतपनो तकल्लो एक विवाद करइ। ते सणी विवादकरइ छइ। विवादते पाक्षिकनुं घचमन मानइ। उक्कसइत्ता। एकवार ऊसरी। अवसर जोईनइं वाद करइ। उ छे वस्साईत्ता एपागोतर तिहा विरानइ कइ पटइकरी एकवार जु कसरावइ। पछइ अवसर लही वाद करइ। उस्सकाइत्ता। आपणपु अतिहिआ उबरिइं इत्ता०। वेरीनइ समताइं अनुकूल करी तेहनउ पक्ष ग्रहइ। पछइ वादकरइ। पडिलोम०। पोतानी समर्थाई जाणावी नइ प्रतिकूलपणुं करी ताजो पइ। सइत्ता०। वेरीनइ स्व वीनइ वादकरइ। तेलइत्ता। एक ठेवली नइ वादकरइ

किहां एक पाठ। तेयइत्ता। कि स्परकइं उपाइं वेरीना परिवारनइ तेद उपजावीनइ अथवा पोतानाकरीनइ वादकरिइं। दिवइ विवादकरणा पनीको एक मरीनइ खुड्ड जीव मोरडइ ऊपजइ ते तेराणुं सु अजीव कहइ। खुड्ड०। अधम। अहम अहमपणुं ते अनंतर सविमुक्ति अणजावाधको। थोडानइ खुड्डक होइ। अहमनइ सी०। विस्पानइ। क्रुरनइ। मधुनीमाग्री नइ। नाटिकणीनइ एव तइ। खुड्डक होइ। मुक्ति जावा आश्री। त्तेदग पंक पसवा। चउताद रियाउ उच्चे सीजउ। वि गलालते उविरइ। नउ किं चिल तेउज्जुसु क्रमत सा। १। एहनइ विषइदेवतानउ ऊपजइ। यत उक्तं। पुढवी आउ वणस्सइ गब्भे पज्जत्त संख जीवीसु। सग्गा चुयाण वासो। सेसा पडिसेहिया ठाणा। १। समुच्छिम पं चिंद्रीनइ अधम पणुं ते दवताना अणउपजवा मांटइ। अनइ पं चिंद्री पणाइ छतइ पणि मन विना विवेकनइ अभावइ निगुणपणाधकी। बाव नांतरनइ विषइ सिंघव्याघ्र वरगडा दीपडाशी छै ते रुद्ध हो चउमद एखुड्डक थ्याछइ। तिहां खुड्डनउ अधिक्रि रईमकरिवो

चउरिंदिता संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया तेउकातिता वाउकातिता ३ छव्विहा गोयरचरिता पं० ते पेडा अद्धपेडा गोमुत्तिता पतंगविहिता संबुक्कवट्टा गंतुंपच्चागता ३ जंबुद्दीवे २ मंदर

अनंतर तीव विकल्प कह्या। तेहनइ अणपाउ तो सो साधिइ गोचरी करवी ते सणी गोचरीना भेद कहइ छइ। गो०। बलद तेहनुं त्यचरवुं ते गोचर तेहना परिइं ज चर्या। विचरवुं ते गोचर चर्या। जिम बलद ऊंचनीच तरणानइ विषइ विसेष रहित चरतो प्रवर्त्तइ। तिम साधुनइ पणगाद्ध पर रहित पणाइं ऊंच नीच मध्यम कुलनइ विषइ धर्म साधवा नइ दररपाल बानइ कारइ तिहानइ अरथिइं वालेवु ते गोचर चर्या। ते एक ज स्वरूप छइ। प णि अतिग्रह विसेष धकी ६ भेद। ते हां। पेडा०। वंसना दलमय। वस्त्रादि मेयं क हुस्थानक लोक प्रसिद्ध ते वउ रैसकं होइ। साधु अभिग्रह विसेष धकी ग्रामादि क क्षेत्रनइ पेटी नी परिइं च उरंस वहिंचीनइ गोचरी करइ ते पणि पेटी जिकहोइ। एणइ अनुसारिइं अर्द्धपेटी पणि जाणिवी। बलदनुं मूत्रवुं ते गोमुत्रिका तेहनी परिइं गोचरी तेमां हां मसोहामी घरनी बिहुं लिहाइ। तिहां पहिली ऊलिहाइ मूली बीजी ऊलिंहाइ वली पहिली ऊलि आवइ इम अनुक्रमइ जाणवी। पतंगी आनाइ। मारग ते पतंगवीथिका तेहनी परिइं गोचरी ते अनुक्रम रहित करइ। संबुक्क०। संख तेहनी परि आवर्त्त तेहनी परिइं। हत्र०। वीटली ते संबुक्की इति ते विलिदइं। पहेले त्रनइ विषइ क्षेत्रना बाहिरला भागधकी संखना आवर्त्त सरिखा निइकरी अटता। क्षेत्र मध्य भागइ आवइ ते। अभ्य तर संबुक्की। इमइ जि मध्यभागमां हिथकी बाहिरिनी कलइ ते बहिसबुक्क। गंतुंपच्चागया। उपाश्रय थकी नाकल्पो छइ तो कोइ

एकघर नो कलिसामंतो ७ लिमद्रुछेद् छइ जई नइ धाओवलतो बीजा घर नी कलि नइ वि ष्ठइ जो वरीक रिइ । अनंतर साधुच
र्या कही । तिचर्या ना प्रस्ताव थकी असाधुचर्या ना फल ना लोगव ण हार नारका नक कहइ छइ ॥ अ बंह्कं त ० ॥ सर्व सुस
नावमां रूप । आनरा नरगा वासा थकी रूडा ई त्यर्थः ॥ अथवा आवकेत ॥ असुहामणा ॥ नरगस घला इ एहवा ति छइ ॥ पति
एवि सप्रथकी असुहामणा एहवु कोद मा डवा नइ अपक्रांत एवि सप्रण सलावी इ छइ ॥ एहनो प्रमपरूपणा ॥ ते र का रस
नेवसत्त । पंच तिन्नि वकुं तिएको य ॥ पघडसेरवाप्सा ॥ सत्तेसु विढमेणा ॥ पुढवीसु ॥ १३ ११ ९ ७ ५ ३ १ ए पाघडा नइ विषइ
उ गणपंचास इ । जेसीमंतकादि वाटलाइ इ कनरगज्ञेणवा ॥ सीमंतक नो पुर्व दिसि नइ विषइ ॥ उगणपंचास ने
रगावासा नी श्रेणि छइ ॥ विदिसि मइ विषइ ४८ संख्या नी श्रेणि छइ ॥ पहइ पाघडा २ प्रतिइं बिहु श्रेणि मांहि मां एक
घटइ ॥ सातमी नइ विषइ दिसिइं एकेकु विदिसिइं एकेकु नही ॥ सीमंतकनो पुर्व दिसि नइ विषइ । सीमंतक प्रस्तनरका
वासो ॥ उतरनइ विषइ । सीमंतकमध्यमं ॥ पश्चिम मइ विषइ सीमंतावर्त्त ॥ दक्षिणइ सीमंतकाविसिष्ट ॥ तिवार पछी पु

रस्स पच्चत्थस्स दाहिणेणं मिमीसरयणप्पताए पुढवीए छ अवक्कंत महानिरता पं तं लोल
लोलुत उद्दढे निद्दढे जरत पजरति चउत्थी एणं पंकप्पताए पुढवीए छ अवक्कंत महानिरता
पं तं आरेवार मारे तारे रोरुत खाडखडे

वा दिक्ष्या दिदिसि नइ विषिइ । प्रत्येक आवलिका नइ विषइ ॥ त्रीजा आदि वलयादिक नरगावासा कहइ ॥ इमलीला दिक छ एन
रगावासा आविलिकागत मा लिकह्या ॥ जसणां कहिउं छइ । विमान ते नरक इग्रंथ निइ विषइ ॥ लोलनइ लोलुप ए बेहु आव
लिका ना बेहला ॥ अनइ उद्दढ नइ निद्दढ ते सीमंतक प्रस्तर थकी बीसमी नइ एकवीसमो ॥ जर एप जरति ॥ ते पात्रीस
मो नइ छत्रीसमो ॥ पुर्विलो आवलिका नइ विषइ ए नाम ॥ एक पदी यां सर्वनरगनी जोणवा ॥ अनइ उतर नइ विषइ ला
ल मध्य । अनइ लोलुपमध्य इत्यादि पश्चिम नइ विषइ ॥ लोलावर्त दक्षिण नइ विषइ लोलो विशिष्ट ॥ चउथा नरग नुं
विषइ सातपाघडा । मातइंद्रक नरक नामध्य पयो क्रम आर वार मार तत पव मरय । कह्या बाधवा ॥ खाडखडे
यखडखडे ॥ इंद्रय नरया चउत्थीए ॥ १ ॥ सुत्रमादि छ कह्या छइ । तेमांहि इं आर मार नइ खाडखडए त्रि सिइड
कजोणिवा ॥ वार नइं तार नइ रोरुक ए ते पुष्फावकर्ण जाणवा ॥ अथवा एइंद्रकइ पणि नामांतरिकरी कह्या सं
भावीइ छइ ॥ अतिमा वा कह्या ते पण जाणवा अनंतर असाधुचर्या ना फल लोग विवा नारका नक कह्या ॥ इवइ सा

धुचर्या ना फल ना लोग व ण हार नारका नक कहइ छइ ॥ अनंतर विमानीक ना वक्तव्यता कही । तेह ना प्रस्ताव थकी नक्षत्र ना
विमान नी वक्तव्यता कहइ छइ ॥ पुब्बे सागा ० ॥ आगलि ॥ साग ० ॥ सउ इ । ते अपुकुलता चंद्रमा संघातिइं संग करइ ॥ अथ
वा जोगजोडइ ॥ एतलइं चंद्रमा थकी आगलि थ्या गना जाडणहार अनइ चंद्रमा एहमइ पेणपुर्कु उ तोग वइ ॥ समाख
त्ता ॥ स्थुलपत्र तत आकासादस रूप ॥ तीसइमुहुत्ता ॥ त्रीसमुहुर्त लगइ ॥ नंतसाग ॥ चंद्रमा बरोबरि त्या गजोडइ
अवढ्ढ ॥ समदो त्रनी आपहोइ ॥ अर्द्धक्षेत्र पनरमुहुर्त लगि इ ॥ उभय साग ॥ पुर्विइ अनइ पाछलि लागे योग जोडइ
॥ दिवड्ढ खेत्त ॥ सम क्षेत्रनी आप साइ ॥ डउढा क्षेत्र ४५ मुहुर्त लगि इं ॥ अनेरा दस नक्षत्र ते पाछिला लागनइ

बे सालाणं कप्पे छ विमाणपत्थडा पं तं अरात विरात णीरत निम्मल वितिमिर वि
सुद्धे चंदस्सणं जोतिसिंदस्स जोतिसरन्नो छ णक्खत्ता पुब्बे सागा समक्खेत्ता तीसतिमुहु
त्ता पं तं पुब्बाभद्दवया कत्तिता महा पुब्बाफग्गुणी मुलो पुब्बासाढा चंदस्सणं जोतिसिंदस्स
जोतिसरन्नो छ णक्खत्ता नतं सागा अवड्ढखेत्ता पन्नरसमुहुत्ता पं तं सततिसता सरणी
अद्दा अस्सेसा साती जेट्ठा चंदस्सणं जोतिसिंदस्स जोतिसरन्नो छ नक्खत्ता उभय सागा
दिवड्ढखेत्ता पणयालीसमुहुत्ता पं तं पुणव्वसू उत्तराफग्गुणी विसाहा उ ... त्तरासाढा रोहिणी ३-६
उत्तराभद्दवया अभिचंदेणं कुलकरे छधणुसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं होत्था भरहेणं राया चा
उरंतचक्कवट्टी छपुब्बसतसहस्साइं महाराया होत्था पासस्सणं अरहउ पुरिसादाणियस्स

वि षइ योगपणो इइ ॥ एवं चंद्रमा ना याग जिम अनुक्रमइं कह्या तिम कहइ तो सुगाल कहइ ॥ अन्यथा कहइ तो दुकाल कहइ
॥ अनंतर चंद्र नो अधिकार कहि ॥ ते चंद्र इत्या संख्या आतिथा पणा थकी अथवा वर्ष नाम रिमा पणा थकी ॥ अति
चंद्र कुलगुरु नु सुत्र कहइ छइ ॥ एओ अवसर्पिणी नउ चउथउ कुलगुरु ॥ तेह नावेसनउ रूपनउ सरख तेहनुं सुत्र ॥ त्रि
णि गामा समुद्र एकगमां हिमवंत ए ४ बेह डा कजहनो तेवा उरंतः ॥ भरत वीतेहनो ठाकुर ॥ ते या चुरंग ॥ तेहज चक्किइ
त्रि ॥ ८४ लाख वरस तत्फुणकीजइ ते पुर्व ॥ वली अभिचंद्र ना रूपना पा र्श्व मा थ नुं सुत्र ॥ आदाणियस्स ॥ पुरुषमा

१८५

हिंसा नामयत्तणज्योग्य॥ तीर्थंकरना सरिषा पणाछ कुं तास उपमनुं सुत्र॥ अनइ चंद्रप्रभनुं कुम॥ ईहां चंद्रप्रभ सनइ छमसुवा
डावस्थपणानां कह्या छइ॥ ते आवस्यकनइ विषइ ५ पमास नइ छमसवाडा कह्या छइ॥ अनइ चंद्रप्रभ सनइ त्रिणि
मासवाडा कह्या छइ॥ छद्मस्थतो इहिंना उपयोगवंतकाइ। ते सणों इंदी आश्री संयमासंयमकइइ छइ॥ सुत्र॥२॥ अ
सामारंस०॥ आणहणातो॥ घाणमयाउसो०॥ गंध अहिवारूप॥ अवि०॥ सुष थकी रह्यनकरइ॥ घाणमयणो ६०॥ गंध अ
हिवाना अस्वावरूप॥ ५ धतसंघातिइं जीउ डुगनही॥ इहीं आणहणवुं अनइ दुषसुं आणजोडवुं ते अना अवे पणाथकी

छ सया वादीणं सदेवमणुयासुराते परिसाते अपराजिताणं वासपुव्वी लोए अरहा छहिं पुरि
ससएहिं सद्धिं मुंडे जाव पव्वइए चंदप्पभेणं अरहा छम्मासा छउमत्थे होत्था। तेइंदियाणं
जीवा असमारभमाणस्स छव्विहे संजमे कज्जइ तं घाणामातो सोक्खातो अववरोवे
त्ता भवति घाणामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवति जिब्भामातो सोक्खातो अववरोत्ता एवं
चेव एवं फासामतो वि। तेइंदियाणं जीवा समारभमाणस्स छव्विहे असंजमे कज्जति तं घा
णामातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति घाणामएणं दुक्खेणं संजोएत्ता भवति जाव फासा
मतेणं दुक्खेणं संजोएत्ता भवति जंबुद्दीवे २ छ अकम्मभूमीओ पं तं हेमवते हेरन्नवते हरि
वासे रम्मगवासे देवकुरा उत्तरकुरा जंबुद्दीवे २ छव्वासा पं तं भरहे एरवते हेमवते हे
रन्नवते हरिवासे रम्मगवासे जंबुद्दीवे २ छ वासहरपव्वया पं तं चुल्लहिमवंते महाहिम
वंते निसढे नीलवंते रुप्पि सीहरी जंबुमंदरदाहिणेणं छ कूडा पं तं चुल्लहिमवंतकूडे

संयम॥ अनेकं तं असंयम॥ ए संयम तो मनुष्यक्षेत्रमाहि जकइ॥ ते सणों मनुष्यक्षेत्रनुं वस्तु छवाणमाहि अवता
२ इछइ॥ सुत्र॥ ५॥ हिमवंतादिवर्षधर पर्वत नइ विषइ॥ बीजा ठाणा नइ विषइ कह्या छइ॥ ते णाइ अनुक्रम
इ विबकूटजाणिवा॥ १८६

तमाहिं लोकालकूट॥ ते सणों कालनुं सुत्र कइइ छइ॥ कूड०॥ कुतु वमास प्रमाण॥ अमादक्षावणते पाउस्स इम अनुक्रमइं सु
सुत्र पक्ष॥ अनइ लोकमवर्हा २ आबणभाद्रवो ए चर्षा एम अनुक्रमइं सरेद हेमंत॥ सिसिर॥ वसंत ग्रीष्म इम जाणवो

वेसमणकूडे महाहिमवंतकूडे वेरुलितकूडे निसढकूडे रुयगकूडे जंबु...
मंदरउत्तरेणं छ कुडा पं तं नीलवंतकूडे उवदंसणकूडे रुप्पिकूडे मणिकंचणकूडे सिहरिकूडे ति
गिंछकूडे जंबुद्दीवे २ छ महद्दहा पं तं पउमद्दहे महापउमद्दहे तिगिंछद्दहे केसरिद्दहे पुंडरी
यद्दहे महापुंडरीयद्दहे तत्थणं छ देवयाओ महिड्डियाओ जाव पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसं
ति तं सिरि हिरि धिति कित्ति बुद्धि लच्छी जंबुमंदरदाहिणेणं छ महानईओ पं तं गंगा सिंधु
रोहिता रोहितंसा हरी हरीकंता जंबुमंदरउत्तरेणं छ महानतीतो पं तं नरकंता नारिकंता
सुवन्नकूला रुप्पकूला रत्ता रत्तवती जंबुमंदरपुरच्छिमेणं सीताते महानतीते उभयकूले छ
अंतरनईओ पं तं गाहावती दहवती पंकवती तत्तजला मत्तजला उम्मत्तजला जंबुमंदरपच्चत्थिमे
णं सीतोदाते महानतीते उभयकूले छ अंतरनदीओ पं तं खीरोदा सीहसोता अंतोवाहिणी उ
म्मिमालिणी फेणमालिणी गंभीरमालिणी धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धेणं छ अकम्मभूमीओ पं तं
हेमवए एवं जहा जंबुद्दीवे तहा जाव अंतरनदीतो जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे भाणियव्वं छ
उडू पं तं पाउसे वरिसारत्ते सरए हेमंते वसंते गिम्हे छ ओमरत्ता पं तं ततिते पव्वे सत्तमे
पव्वे एक्कारसमे पव्वे पन्नरसमे पव्वे एगूणवीसइमे पव्वे तेवीसइमे पव्वे छ अतिरत्ता पं तं

उमरत्ता०॥ हाणी रात्रि तदिन तो क्षय॥ पर्वे०॥ अमावास्या॥ अथवा पुर्णिमारूप जे पक्ष तिथि पर्व॥ लौकीक॥ आषाढ चतुर्मास
नी अ३ पर्वत आषाढ नत्र लक्ष्मप को॥ अनइ इहां तम पर्व ते भाद्रवा नउ ... प्रबो॥ ५ मक्क मासनै ... अ तरिइं आगल्या
... ॥ अतिरत्ता॥ अधिकदिन ते दिनमा वृद्धि रतचउ घउ प्रवर्तित

आसाढसुक्लपक्षे। इम एकमासनइं अंतरइं आगल्या मासनासुक्लपक्ष जाणिवा॥ एह आधिक अर्थ ज्ञानि डुकरीजा णीइ॥ तिसत्ती तेहनासूत्र रकहइं छइ॥ सामान्यपणइं श्रोत्रेंद्रियादिकइं करी अर्थनुं पहिलुं विकल्परहितपण्ड ॥ इत्यादिरूप॥ आगल्या विशेषनी अपेक्षाइं॥ समुं व्ययइ अहिवुं ते अर्थावग्रह॥ ते निश्चइं थकी एकसम यनउ॥ अवहार थकी अंतर्मुहूर्त्तनउ॥ इम चक्षुइंद्रियादि॥ आणुगा॰॥ एक ठइ जो बाननुं सेवतो ते॥ ज्ञानी ते दिसांतरिइं जाइ तिवारिइं लोचनपणि बरोबरि जोइ थकी जाइ॥ तिमतेही मन कि छइं जाइ॥ ए क्षेत्रिज्ञानी क्षेत्रादसमइ विषइ ऊपनुं ते क्षेत्रादसनाकारणना सेल्या पशम थकी ऊपना मारइ। देसांतरिइं ज्ञानी जाइ तिवारिइं किडइ ज्ञाननजाइ स्थानस्थित दीवानी परिइं ते अनानुगामिक॥ क्षेत्र थकी अंगुलनउ असंख्याती

चउत्थे पक्खे अट्ठमे पक्खे दुवालसमे पक्खे सोलसमे पक्खे वीसइमे पक्खे चउवीसइमे पक्खे आलि णिबोहियस्स णं छव्विहे अत्थोग्गहे पं० तं० सोइंदियत्थोग्गहे जाव नोइंदियत्थोग्गहे छव्विहे ओहिनाणे पं० तं० आणुगामिए अणाणुगामिए वद्धमाणए हायमाणए पडिवाती

भाग जाणइ॥ कालथकी आवलिकानउ असंख्यातमो भाग॥ द्रव्य थकी तेजसशरीरनो द्रव्य अनइं भाषानां द्रव्य वि ऊ भाय अंतरालवरतीद्रव्य जाणइ॥ भावथकी तेहाहिलां संख्याता पर्याय जाणइ॥ उघन्य थकी ए तलुं ऊपजइ ॥ पछइं वृद्धि पामतुं तेविस्तरतुं॥ उत्कृष्टउ अलोकमइं विषइं लोकप्रमाण असंख्याता खंड जाणइं॥ कालथ की असंख्याती अवसर्पिणी उत्सर्पिणीना भाव जाणइं॥ द्रव्यथकी सर्वरूपीद्रव्य॥ भावथकी द्रव्य प्रत्येकइं असंख्या ता पर्याय जाणइं॥ ते वर्द्धमान॥ प्रतिसमइं कोइं संख्यातइं भागइं अधिकुं कोइं असंख्यातइं भागइं अधिकुं॥ कोइं संख्यातगुणुं अधिकुं॥ कोइं असंख्यातगुणुं अधिकुं॥ क्षेत्रवधतुं देखइ ते वर्द्धमान॥ अनइं हायमान ते इम ऊक सरतुं जाइ॥ ते जघन्य अंगुलनउ असंख्यातमो भाग॥ उत्कृष्टउ तउ सर्व लोक देखइ। एहवुं ऊपनी नइं वली संक्लेसपरिणामइं नावसि थकी अनुक्रमइं घटतुं जाइ॥ जां लगइं अंगुलनउ असंख्यातमो भाग॥ पहायमान॥ उत्कृष्ट आखा लोकनउ जाण थईनइं ज्ञान पाछुं ऊपडइ ते प्रतिपाती॥ १८७

जाणइ अलोकनो एक प्रदेस दीठउ ते पूर्वल्याथी विपरीत अप्रतिपाती॥ एहवा ज्ञानवंतनइं ए वचन बोलवा न कल्प इ ते कहइ छइ॥ अवयणाइं॰॥ कुत्सित वचन॥ अलियं॰॥ अचलयामि प्रश्नेन प्रचलायई इत्यादि॥ हीलियं॰॥ गणिवाचक ॥ इत्यादिक हीलना दिवुचवन बोलइ॥ इत्यादि निंदीलइ॥ जन्म कर्मना कथा इवाथी खिंसइ ते खिंसत॥ फरुस वयणे॰॥ दुष्ट मूर्ख इत्यादि॥ परुष वचन॥ गार॰॥ घरनिहनइं विषइ स्थिर हइ॥ ते अगारस्थ ते गृहस्थ तेहनुं वच न ते पुत्र मामा बहिन इत्यादि॥ विऊसवियं॰॥ उपसम्यु॥ पुणो॰॥ उदीरितवली उदीरवा न कल्पइ॥ उप सम्यानुं उदीरवुं ते छठ्ठं वचन। ए अवचन बोलवानइं विषइ॥ प्रायश्चित्तनउ प्रस्तार ऊपइ ते कहइ छइ॥ कल्प॰॥

अपडिवाती। नो कप्पइ निग्गंथाण वा २ इमाइं छ अवतणाइं वदित्तए तं० अलियवयणे ही लितवयणे खिंसितवयणे फरुसवयणे गारत्थितवयणे विउसवितं वा पुणो उदीरित्तए छ कप्पस्स पत्थारा पं० तं० पाणातिवायस्स वायं वयमाणे मुसावायस्स वायं वयमाणे।

साधुनउ आचार ते हनी विशुद्धनइं अर्थइ॥ पत्थारा॰॥ प्रायश्चित्तनी रचना विशेष॥ तिहां प्राणातिपातनउ दोष॥ वादीत वचन बोलतो साधुनइं विषइ प्रायश्चित्तनउ प्रस्तार ऊपइ॥ जिम अनेरिइं लोकिइं विराध्यो डडको। ते उपरि साधुइं पगामुं क्यो। ते देषी वली बोल्यो हे गुरु तुम्हइ डडको वांप्यो। गुरु कहइ मिं नथी॥ वली कहितुं बीजुं व्रत न धारहिंतु॥ वली लिं झ चरी थी निवर्त्तीनइं गुरु कन्हइं आवइ ते एक प्रायश्चित्तनुं स्थानक॥ आचार्यइं कह्युं ते डडको वांप्यो। तेहइ ना। इहां चलनइं प्रायश्चित्त आवइ। वली बोल्यो वली जुं तइं कां बोलो। गोचरीकारक कहइ गृहस्थनइं पुछो॥ आचार्ये पु छिउं॥ इम जो आलदीइ ते प्रायश्चित पामइ॥ इहां आलना देनार निइं मृषावादनउ दोष। अनइं मारिउ ऊइ अ नइं ऊलवइं तेहनइं बिदोष दिसामृषा॥ मृषावादनी वादनी वारता बोलतां साधुनइं विषइ प्रायश्चित प्रस्तार ऊइ॥ जिम कोइ एक बिसाधुसंघडीनइं विषइ अकालिइं गया। तेहमइं निषध्यो। ते साधु अन्य त्र गया॥ मुकलीतिणिइं ब पुड गुरुइं कहिउं। आपणि संघडी ऊइ ए आहार नो वला थइ। तिवारिइं लघु बोल्यो मुझनइं तिहां ना कही छइ। वली कहीउंइं॥ तिसो आचार्य निवर्त्ती। लेऊइउ आचार्यनइं कहइ॥ ए साधु गोचरी करनो दीन वचन कहणाव वनइं ऊरी आ वइ छइ॥ अनइं निषध्यो पणि मांहि पइसइ॥ एम णाक डीलकरइ। तिवारिइं आचार्य पुछिइ ते साधुनइं पुछि उं॥ मक रिइ छइ। ते कहइ ना। इत्यादि पूर्ववत॥ प्रस्तार॥२॥

आणोग॰बा॰ द्विवइ अदत्तादाननो वात वदतां नइ॥ प्रायश्चित्तनो प्रस्तार तिहां भावना॥ एक घरि तिणइ लाधी ते खेलइ लाधी॥ जे तलइ साधु
१८८ जोयुं करइ ते तलइ वडइ दीडइ॥ सा घडी इ मोदक लाधा॥ ते देखी खेलइ आचार्य नइ कहिउं जे एणइ अदत्त मोदक लीधा॥ इत्यादि प्रस्तार॥ प्राग्वत॥३॥ अविरई॰ अब्रह्मनो वाद अथवा वार्त्ता। अथवा नथी विरति जे माहि ते अविरति स्त्री तेहनउ वाद अथवा वार्त्ता॥ तेह स्त्रीना रस वा रूप बोलता साधुनइ विषइ प्रायश्चित्त प्रस्तार जाणिवउ॥ जिम वेलइ विचारिउं एक डामा मोटइ तिहां कुंवरी काउसग्ग तिहां मुख मांहे प्रेरइ छइ। पछइ वेलइ आलदीधुं। एणइ आज अमुकीनइ घरि अकार्य कीधुं इम गुरुनइ कहिउं इत्यादि॥ प्रस्तार॥ प्राग्वत॥ अपुरिस॰ ए नपुंसक एहवो वाद अथवा बोलता साधुनइ विषइ प्रायश्चित्त प्रस्तार। इहां भावना। आचार्य मइं एकइं साधुइ कहिउं। ए नपुंसक छइ। गुरु कहइ स्युं किम जाणइ॥ तेणइ कहिउं। एहनां चालि चेष्टा देखी मइं गुरुनइ कहिउं। स्युं नपुंसकनइ चारित्र देवुं गुरुनइ कल्पइ॥ गुरुनइ पणि कांइएक तेहनुं चिह्न जोवानी इच्छा छइ॰ अनइ नपुंसकना चिह्न प्रगट करतां दीठा नो बालवाना सरीरनो भाषा दिकनो दोस इछइ॥ घणा चिह्न इत्यादि प्रस्तार॥

अदिन्नादाणस्स वायं वयमाणे। अविरतिवायं वयमाणे। अपुरिसवायं वयमाणे। दासवायं वदमाणे इच्चेते छ कप्पस्स पत्थारे पत्थरेत्ता सम्मं अपडिपूरमाणे तट्ठाणपत्ते॥ छ कप्पस्स पलिमंथु पं० तं०

ली परिइ॥ ५॥ दासनो वाद वदतां भावना॥ केणइं कइं आचार्यनइं कहिउं ए दास छइ। आचार्य कहइ किम जाणो छो। ते कहइ ना चिह्न थकी अलराक हस छइ साध कोप। उसडनो वचनइ आछइ॥ जेह बुतेह बुझाइ। कठिन स्वभाव दीलिइं कारावेली जु डो॥ हैयानुं साउ वधिकइ वाधिकी॥ प्रगट आकारथी दास एहनइं कहइ छइ॥ आचार्य कहइ कोइएक सुरूप ऊरूप कुवेलनां घणां आधीयां छइ। ते साधु तेहनइ परिसाविवुं नहीं। पति सांविवानुं वचन बोलवुं ते अनाचार्य॥ इत्यादि प्रस्तार प्राग्वत॥ इच्चेते॥ ए अनंतर कह्या॥ छ साधुनउ कल्प॥ आचार प्रस्तार प्रायश्चित्तरचना तेमां सगुरु आदिकनइं पारं विकल्प रचीनइ॥ प्रथम स्थानं थापतां नइ विषइ अंगीकरीनइ॥ आलतांनइ माथिइं जे दोष चडावतो वलतुं आलनउ देनार साधु॥ सम्मं अपडि॰ सम्यग् अप्रतिपुरतो तेहनइं मांहइ दोस सही अणकरतो॥ तट्ठाणपत्ते॰ प्राणातिपातादिकना नउ तेह करणहार तेह ठाणतुं अस्थानक तेहनइ ठाणादोतउ छइ ते प्राणातिपातादिकनइ करणहारनी परिइं॥ साबतिअ णकरतां निइं प्रायश्चित्त देवुं॥ अन्यवली अस्तोर॥ प्रायश्चित्तरचनार बोलनइ आचार्य इ। आलाप्या मनादेनारनइं॥ अप्पडिपुरमाणो॥ साहीइ करी नइ साबतिअणकरतानइ तेह प्रायश्चित्त तेहनइं देवुं॥ भलो कल्पनो अधिकार थकी कहइ छइ॥ १८८

कप्पस्स॰ कल्पो साधुना आचारनइं मथइ ते कल्पपरिमंथु। वाचनांतरि इमंथा आचार्यना व्याघातना करणहार इत्यर्थः॥ इ हां खिलि दिमंथ। उव्यथकी अनइ भावथकी। जिम दहीमंथा णइ मथीइ। तेउव्यथकी॥ भावथकी दहीतुल्य ते आचार
॰रि॰ तेज चाकूप मंथाणइ मंथीइ ते उव्यथी॥ कुत्कुच॰ चपलपणुं तेत्रिजुत्तिइं॥ स्थानसरीर। भाषाइ करी॥ तिहां स्थानक थी तदेहनी परिइं अथवा नाटकणीनी परिइं उछलइ भमइं॥ सरीर थी ते हस्त गोफणि धनुषादिकइं करी पाषाणादिना खइ॥ तथा समुद्गादी। कहि मउआ गल्यो विलगाय ऊघणा। आसणइ इत्यादि हलावइ नाटकीयानी परिइ॥ भाषा थकी ते सीतादिकिइं मुखइं जवाजि त्रवींजाडइ। तथा तिम बोलइ जिम आगल्यो हसइ। तथा बहुविधि रूप करी हसावइ॥ अन्य देसनी भाषाइ करी हसावइ। एत्रिजालद॥ उत्कुच एथि व्यादिरक्षणआदिकायगुप्तपर्यंत। संयमनउ यथासंस्तवपरिमंथ

कोक्कुतिते संजमस्स पलिमंथु। मोहरिते सच्चवयणस्स पलिमंथु। चक्खुलोलुते इरियावहियाते पलिमंथु। तिंतिणिए एसणागोयरस्स पलिमंथु। इच्छालोभिते मुत्तिमग्गस्स पलिमंथु। भिज्झानिदाणकरणे मोक्खमग्गस्स पलिमंथु। सव्वत्थ भगवता अनिदाणता पसत्था॥ छव्विहा कप्पट्ठिती पं० तं०

जइ॥१॥ मुहरिए॰ घणुं बोलवुं लवाडी करवी तो मा चरीय खेजणा आ॰ अथवा मुखिइ करी नइं वैरीनइं पणुं त्यहतुं थाइ ते मोघरी
का तेस त्य वचन मृषावाद मोहइ ते तेउ पलिमंथ छइ॥ जेतलो मुखरपणइ कहतइं मृषावाद संसवइ॥२॥ चक्खुइं करीनइ चपलपणुं ति वस्तुलोल॥ वाटिइं जातो रूपादिक मइ अवलोकइं॥ उपलक्षणथी होउ तो धर्मकथा परिवर्जता॥ अनुप्रेहादि न करवी॥ ऊ
तरणी अणउपयोगइं पंथनसोधइं॥ ईर्या॰ चालवुं तेहनउ जे पंथमारग तिहां समिति जपनो ते ईर्यासमिति तेरूपाते ई
र्यापथिकी तेहनउ पलिमंथ॥ तिंतिणिक॰ गोचराइ कांइ न मिलइं ति वारिइं रवदाइ॥ यथा तथा बोलइ तेथी दाणपणाथ
की॥ एषणा॰ उद्गमादि दोषरहित स्त्र कृपानादिकनुं ग्रहण। ग्रहणरूप तेणइ करीनइं जे प्रधान गोचर॥ गोचर॰ ब
स्तेदनी परिइ मध्यस्थपणइ तिहां थिइ चालवुं तेएषणागोचर नउ पलिमंथ॥ जे नणी मदा ता असुरुं तुं पणि स्यइ॥४॥ इच्छा॰
अतिलाभ ते इच्छलोभ। एविकु सद्दइ एकार्थ महालोभ सइत्यर्थः। जिमसुक्कात अतिसुक्का। ते थइ नइ छइ तेई छालो लिका ते मो
टाइ तानउ धर्णी॥ अधिकउपधिनउ धर्णी॥ ते मुक्तिमार्ग॥ मुक्तिनिःपरिग्रहीपणुं॰ अलोभीपणुं॥ तेहीज जे मुक्ति पुरीनो मारग
तेहनउ पलिमंथ॥५॥ भिज्झा॰ लोभातणाई करी जइ आयनियाणुं करिवुं ते चक्रवर्ती इंद्रादिक ऋद्धिनुं प्रार्थवुं॥ ते आहिज्ञ न पणा थकी

मार्ग सम्यग्दर्शनादिक तेहनउ पलिमंथ । इहलोलोपिइं करी मइं नियाणुं करिवुं । निषेधियं ॥ लोअलोपि
इ करी मोक्षमारगना अनुसारी नुं प्रार्थवुं ते नियाणु न कहीइं इम कोई आणइं । जे तीर्थंकरपणादिकनुं नियाणुं तेरा
जादिकनानी यानानी पति इहुइं नहीं तेसुणी ते नियाणुं मोक्षनउ अपरि मंथ निराकरवा नइं कहइ छइ । सव्वत्थ०
सघलइं तराज्यादिकना नियाणा रहो परहो । तीर्थंकर चरमदेहादिकमइं विषइं । वणित गवेतिइं । अनियाणिया०
अप्रार्थवुं । पसत्थो० प्रसंस्यु तथा च । इहपरलोगनिमित्तं । अविति अगार त्रसथावर मदइं तं ॥ सव्वत्थेसुय सगवया । अ
नियाणत्तेप्पसत्थे उ ॥१॥ इम जे सामायक नो सुद्धि थाइ ॥ छिय उपादेय वस्तु मइं विषइं । घो डासयोइं प्रशागद्वेष तेतलुं
सामायक श्रुद्धि । बिक्रुनइ समताइं करी मइं ॥ सामायिक इं छै इं सुद्ध । ५ छहल्लाव परिमंथ नउ एविस्रुष । जे आहा
रक्रपध्यादिकनइं विषइं लोलोपइं आइ ते नियाणुकरिइं इहलोक परलोक संबंधीज । वलीकल्पना जे अधिकार कहइ छै
॥ कप्पट्ठिई० कल्पनी ते कल्पादिकमइं साधुनउ आचार सामायक । छेदोपस्थापनीयादि तेहनी य स्थिति० मर्यादा
तिहां सामायककल्पनी स्थिति । मिथ्यांतर पिंड १ चतुर्याम २ पुरुषज्येष्ठ ३ तेसाधवीवांदइं ते सुणी ३ कृतिकर्मवडानइं

सामाति तकप्पट्ठिती छेतोवट्ठावणितकप्पट्ठिती निव्विसमाणकप्पट्ठिती निव्विट्ठकप्पट्ठिती जिणकप्पट्ठिती थेरकप्पट्ठिती

वांदणांदिवां ४ ए च्यार अवस्थित कल्प । सामायक साधुनइं अवत्रपकइ । अचेल० प्रमाणोपेत वस्त्रनी मर्यादा १ उद्देसक र
स पडिक्रमणा ३ राजपिंड ४ मासकल्प ५ पर्युषणा ६ एछ अनिवस्थित कल्प ते अ यस्कइ जे इमनहीं ॥१॥ छेदोपस्थापनी
य केल्पनी स्थिति । अचेल० १ उद्देसक २ सय्यातर २ ३ राजपिंड ४ कृतिकर्म ५ व्रत ६ पुरुषज्येष्ठ ७ प्रतिक्रमण ८
मासकल्प ९ पर्युषणा १० इसर्व वाल ते आ अध्ययननी परिहारविशुद्धि वा ॥२॥ परिहारविसुद्धिक नउ ये आचारवे तउ कइ । तिनि
व्विस मानकइ ॥३॥ व्यवस्थिस्था ते निर्विष्टते हनी जे स्थिति मर्यादा । परिहारियछमासने अणुपरिहारिया विछमास ॥ क
ल्प आगलिक एही इम इ । तेहनइं विषइ को इएक पिंड भणानइं ते देइं आहार मल्पइं अनइं त्यागपिंड भणोनाग्र लिगुरु
करइ । त्यमिइंए तेजाइं जिलवु एहवा परमार्थ क्रोनाइं आराधा ॥५॥ स्थिवरकल्पस्थिति ते संयमनइं विषइ जइ घमा । ज्ञानदर्शन
चारित्रनामी पात्रावणाहार ॥ दीर्घकाल लगणि गुरुकुलवासो सवइ । उपाश्रयानादोषरहित । इत्यादि ॥६ १८५

कल्पस्थिति महावीरइं कही । ते सुणी महावीरना सुत्र २ वली आनराकल्प स्थिति कही ॥ तेहना सुत्र २ एवं सुत्र ५ ॥ ए
देवनादिक कह्या ॥ तेहनास्सरीरनइं विषइं तउ आहार नउ परिणाम कहइ ॥ ते सुणी तेहु सुत्र ॥ तो जे न परिणाम ॥ आहो
॥ वीसमनउ स्वभाव । मणुन्ने० मनो ज्ञातअस्तिल वा जीपय । रसीक० ते मधुर पणासहित ॥ पीणणीय ते रसादिक धातु
नइं सरिषा करइ । वेहणीय० ते धातु पुष्टा करइ । दीपनीय० ते अल जगाडइ । माणंतरे मदनीय० कामउदय करइ । दप्प
नीय० बल करिइं । आनराआवार्थ इमकइइ छइ । ज आहार ब्रिधि करइ । अथवा ते जेननो परिणाम० विपाक ते मानाइं

समणेनगवं महावीरे छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं मुंडे जाव पव्वइए समणस्स णं सगवउ महावीर
★ सत्तेणं २ स्स छट्ठेणं अपाणएणं अणाति अणुत्तरे जाव समुप्पन्ने समणे सगवं महावीरे छट्ठेणं भत्तेणं
अपाणएणं सिद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे सणं कुमारमाहिंदेसु णं कप्पेसु विमाणेसु जोयसयाइं
उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता सणंकुमारमाहिंदेसु णं कप्पेसु देवाणं नवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं
छरतणीउ उड्ढं उच्चत्तेणं छव्विहे भोयणपरिणामे पं तं मणुन्ने रसिए पीणणिज्जे वीहणिज्जे मय
णिज्जे दप्पणिज्जे छव्विहे विसपरिणामे पन्नत्ते तं जहा डक्के भुत्ते निवतिते मंसाणुसारी
सोणिताणुसारी अट्ठिमिंजाणुसारी छव्विहे पट्ठे पं तं संसयपट्ठे वुग्गहपट्ठे

तेसुसपणाथकी । अथवा मनोज्ञ जेमनना संबंध पणाथकी इम आनरा पणि । परिणामना अधिकार थकी विषनाक परिणाम
नुं सुत्र कहइ छइ ॥ कइ० डस्या जीवनइं डाटइ विषादिकइं जे पीडा करइ । तद्दष्ट जंगम विष । जे लोग खुं थकुं पीडा करइ तेस
स्थावरविष जे उपरिइं पडिकुं कुंतुं पीडइ । ते निपतित त्वचादिक अनइ दृष्टिविष । पस्वरूपथकी त्रिकालदिइ विष । कोई
एविष मांस अनुल गणि व्यापिइं । ते मांसानुसारी ॥ कोइएक विष धातुला हीलगणि व्यापिइ ते सोणिताणुसारी ॥ कोइएक
विषहाडमीमीजलगिइं व्यापिइ । ते अस्थिमिंजानुसारी ॥ पहिलाल दत्रि डसवादिकना कह्या ॥ तहीं जे मांसा दिव्यापइ
॥ इम छ थया । एहवा अर्थनउ निर्णय तु ते संसयपरिनायप्रश्नथकी थाइ तेसणी प्रश्न विभागकहइ छइ ॥ छविहे० प्रश्न । संस

यपहे० ॥ का पक अर्थ नइं संसयसहितकी जइ तमस्न ॥ यथा ॥ जइ तवंसा वाहाणं ॥ संथपमणा सवोति तिकहुणं ॥ दवत्रं तं
तिजइ ॥ गुरु२ हि सुराग सजमो ॥१॥ चुग्गहपह० ॥ मिथ्या ति नि वेसेइं करी ॥ परपखेउ पवानइं का जइ ॥ ज प्रस्न कीजइ
ते तेहनो मन विघटाउवानइ ॥ अणुलोग ॥ अनुयोग० ॥ अर्थ तुं करवुं ॥ त पक्रमणात जिहां छइ तेहनइं अर्थइ एम
तइ वालणा कीजइ ॥ तथा अनतरोप्रस्नकरिह ॥ जिम च्यार समय लोकपूरवानो पक्रपणानइं कांजिइं ग्रंथ करिइं ॥ जप्र
स्नकरइ ॥ एक तलइ समयइं केवली लोकपूरइ इत्यादि ॥ अणुलोम० ॥ आगल्यानइं अनुकूल करवानइं पूछीइं ॥ य
था ॥ तमे कूइं खेमकुसल छइ ॥ तहनाण० ॥ जे वस्तु जेहनइं पूछीइं छइ ॥ तेहनइं तेहवुं ज्ञान छइ ॥ ते तवु ज्ञान पूछवा
हारनइ छइ ॥ तजाणतां पुछवुं इत्यर्थ ॥ तप्रस्नादिक गीतमनां यथा ॥ केवईकालणं अंते चमरचंचा रायहाणी विर
हिया उववाएणं इत्यादि ॥ अतहनाण० ॥ तपूर्वल्याथी विपरीत ॥ अजाणतो पूछवुं इत्यर्थः ॥ किहां एक छे थिति अछे० ॥ ति

अणुओगं अणुलोमं तहणाणे अतहणाणे चमरचंचा णं रायहाणी उक्कोसेणं छम्मासा वि
रहिया उववातेणं एगमेगं णं इंदट्ठाणे उक्कोसेणं छम्मास विरहिते उववातेणं आहेसत्तमा
णं पुढवि उक्कोसेणं छम्मासा विरहिया उववातेणं १५८

हां अर्थ ॥ छ प्रकारिइं अर्थ ॥ संसय अर्थ ॥ छे० ॥ ए अर्थ पूछीइं ते संसयार्थ इम आगलि ॥ इहां पूर्वइं तथा ज्ञानतुं प्रस्न कहिउं ॥ चमर
चंचा ना प्रस्न गीतमिइं जाणतो कीधउ ॥ ते सूत्र लिखइ छइ ॥ चमर० ॥ चमर तिहां दक्षिणना पासीलउ असुर ॥ निकायनउ नाय
क ॥ तेहनी चंचाई सरइनां मिइं नगरी ॥ तेहनउ नाम कहीइ छइ ॥ जंबुदीपना मेरुथकी दक्षिण दिसिइं ॥ तीरछो असंख्या
ता द्वीप समुद्र मुंकीइ ॥ अरुणवर द्वीपनी बाहिली वेदिकाथी ॥ अरुणोद समुद्र माहि बेतालीस हजार जोयण थी जिन
ता द्वीप समुद्र मुंकीइ ॥ अरुणवर द्वीपनी बाहिली वेदिकाथी ॥ सतरसइं एकवीस योजन ऊंचउ छइ ॥ तेहनी दक्षण दि
जाइए ॥ तिहां चमरनउ तिगिछकूट नाम उत्पातपर्वत छइ ॥ अरुणोद समुद्र माहिं तिरिछो जाइए ॥ तिहां थी छ कोडी पंचावनलाख पंचत्रीसहजार पचास जोयण जाइए ॥
तिहां वसइं कोडि जोयण जाइए ॥ अरुणोद समुद्र माहिं तिरिछो जाइए ॥ तिहां थी चालीस हजार जोयण जाइए ॥
तिहां जंबुद्वीप प्रमाण चमरचंचा राजधानी छइ ॥ तिहां उत्कृष्ट उपजवानउ छमासनउ विरह ॥ विरहनां अधिकार थकी
आगलि सूत्र कहइ छइ ॥ एगमेगं णं इंदट्ठाणे ॥ चमरादिकनां बधी आवासनगर विमानरूप ॥ तिहां उत्कृष्टो छ
मासनउ विरह ॥ ते तिहां नाइंद्र ना अपवाद ॥ आहेसत्तमा० ॥ छठीलीघकी नरक पृथिवी ते तमस्तमा प्रभा ॥ ते
मासनउ विरह ॥ ते तिहां नाइंद्रना अपवाद ॥

निषेधवानइं अधोअधिका तमतमा इत्यर्थ ॥ ६ ॥ तिहां छमासनो उपजवानउ विरह ॥ यदाहा ॥ चउसट्ठिं तुकोसा ॥ सत्त
अहोरत्ते२ महपबरसमउमासो पखवारे छ छमासा ७ विरहकालो ॥१॥ सिद्धगतिइं ॥ उपजवुं ॥ पणि
उपजवुं जन्म एअर्थमिकरवी जसरणं जन्मानो हेतुकर्म तेहनउ सिद्धनइं अभाव छइ ॥ इहां कं ॥ एगसमउ जहन्नं
उक्कोसेणं होति छमासा ॥ विरहो सिद्धगईउव्वट्टणा विवज्जिया नियमा ॥१॥ अनंतर उपजवानउ विरह कहिउं उपज
वु तउ आउखानइं संबंध छइ ॥ तआउबंधतुं सूत्र ॥ जाति० ॥ एकेंद्रीयजाति आदि पांच ते दिइं तेही जायनाम० ॥ नामक
र्मनी उत्तरप्रकृति नउ विसेष ॥ अथवा जीवनउ परिणाम ॥ ते संघाति इं जे आउखुं निधत्तवुं ते जातिनामे ॥ निधत्त० ॥ नि

सिद्धिगतीणं उक्कोसेणं छम्मास विरहिता उववातेणं छव्विहे आउयबंधे पं० तं० जातिणाम
निहत्ताउते गतिणाम निहत्ताउते ठितिणाम निहत्ताउते उगाहणाणाम निहत्ताउते पए
सणाम निहत्ताउते अणुभावणाम निहत्ताउते णेरइयाणं छव्विहे आउयबंधे पं० तं०

एक० ॥ प्रतिसमय कर्मपुद्गलना अनुभववा नीरचना ॥ गतिनारकादि चउलिदिइं ॥ नामनिहत्ताउनो अर्थ तिमइज ॥ स्थि
ति ते जणाइ एकिंदिवहानसा वइ रहिवुं अथवा जीव आउखाकर्म इं करीर हिवुं ते दाउ ए नाम ॥ परिणाम० ॥ स्वभाव ते स्थि
ति नाम ॥ तणइं निधाति० ॥ विसेषित जे आउखुं ते डिरूप ते स्थितिनाम निहत्ताउ ॥ इहां सुत्रनइ विषइ जातिनाम गति
नाम अवगाहनानाम नायहिवा थकीगति अवगाहनानुं प्रकृतिमात्र पर्युं कहिउं ॥ स्थिति प्रदेस अनुभाग नाग्रहिवा थकी ते
ह अप्रकृति मा ॥ स्थित्यादिक कह्या अनइं ते स्थित्यादिक जात्यादिक नां म संबंधीया माटइं नामकर्मरूप इउ जांणवा ॥ नामसइं
सघलइं कर्मनउ अर्थ घटइं तेसणां ॥ स्थितिरूप जे नामकर्म ते स्थितिनाम कर्म तेसहित जे निरूपुं आउखुं ते स्थितिनाम निधत्ता
युः ॥ अवगाहनाजेहनइं विषइं जीव ते अवगाहना ते सरीर ॥ अदारिकादि ॥ तेहनुं जे नाम ॥ अदारीकादि सरीर नाम इं इस्युं ते अवगा
हनानाम तेसहितायनिधत्तुं आउखुं ते अवगाहनानाम निधत्तायुः ॥ प्रदेस० ॥ आउखाकर्मना दल्य तेहनुं जे नाम० ॥ तथाविधि
प्रणाम ते प्रदेसनाम अथवा प्रादेसरूप जे नामकर्मनउ विसेष ते प्रदेसनाम ते सहित जे निधत्तुं आउखुं ते प्रदेसनाम निध
त्तायुः ॥ अनुभाग० ॥ आउखा दल्यनउ जे विपाक तद्रूप जे नाम० ॥ परिणाम ते अनुभागनाम ॥ अथवा अनुभागरूप जे नाम ते
अनुभाग नाम ते सहित जे निधत्तुं आउखुं ते अनुभागनामनिधत्तायुः ॥

हिवइ जात्यादि नामकर्मइं करी विसेष्युं आउखुं तेसु । ते आऊखानुं प्रधानपणुं देखाडवानइं काजइ ॥ जेमाटो नारकादि
क आउखानइ उदयइं छतइं ॥ जात्यादिक नामकर्म नउ उदय हुइ ॥ अथवा नारकादिक नवा छेहडा लगणि तो आऊ
षु उरइ छिइ ॥ नियमं ॥ अवस्य ॥ छम्मासावि ॥ आऊखानी छमास वाकी रह्य तिइं करइ ॥ परभवनुं आऊखुं ॥ पक
॥ बांधइ ॥ संज्ञि पंचेंद्रिय ॥ असंख्याता वरसना आऊखानां ते संज्ञि हुइ एहवो ॥ नियम देखाडवानइं संज्ञी नुं ग्र
हण कीधुं ॥ इहां वा गाथा ॥ नरयसुर । असंखाऊ तिरियमणुया सेसा उ छम्मासे ॥ इग तिलेगल विरुवक्कमं ॥ तिरि
मणु आऊ तिभागा ॥ १ ॥ अवसेसा सोवक्कमा ॥ तिभाग नवभाग सतावीसइमे ॥ बंधंति परभवा ऊ ॥ नियअसव
स खजीवाउ ॥ अनेरा आचार्य इम कहइ ॥ तिर्यंच मनुष्य तेना आऊखा जो त्रीजो भाग विषइ परभवना आऊखा
बांधइ नाबंध योग्य थाइ ॥ देवता नारकी छमास ॥ सषथाक तइ आऊखानउ बंध करइ ॥ अनइ तिर्यंच मनुष्य

जोतिणाम निद्धत्ताउ ते । एवं जाव वेमाणियाणं । नेरइया नियमं छम्मासावसेसाउया पर
भवियाउयं पगरेंति । एवं असुरकुमारा वि जाव थणियकुमारा । असंखेज्जवासाउया सन्नि
पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया णियमं छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पगरेंति । असंखे
ज्जवासाउया सन्निमणुस्सा णियमं जाव पगरेंति । वाणमंतरा जोतिसिता वेमाणिया
जहा णेरतिया । ते आऊखानइ त्रीजइ भागइ बंध न करिइ तो । त्रीजा भागनइं त्रीजइ भागइं बंध करिइ ॥ इम संक्षे
पइ जों आऊखा नां बंधकाल नुं छेहडुं अंतर्मुहूर्त रहइ । इहां तिर्यंच मनुष्य आऊखानउ बंध करिइ ॥ ए असंक्षेपकाल
कहियइ ॥ अनइ देवनारकीइ जउ छमास थाकतइ आऊ न बांधि कतइ पोताना आऊखाना छमास मांहि लगइ । काल
नां संक्षेप थाइ ॥ जों सर्व जघन्य आयुबंधकालनउ । अंतरकाल संघर दिइ । इहां परभव आऊखानउ । देवताना
रकी बंध करिइ ॥ असंक्षेपकाल कहीयइ ॥ अनंतर आऊखानउ । कर्मनिउं बंध कहिउं ॥ आऊखु तउ उदयि
क भावनुं हुइ छइ ॥ ते तणी उदयिक भाव ॥ अनइ उपजना सरिखा परिणाम वकी अनेरा ईत्तावु कहि छइ १[illegible]

परिहवइ
ते पडिक
मइ ॥ इत्त
रिए ॥ इ
त्वरकाल
स्वल्पका
लिक ते
देवसियं
राइयं ॥
आवकहि
ए ॥ याव
त्कथिक
ते महा
व्रत नउ
परित्ती रू
प ॥ इहां ई
रियावही
पडिकम
वी आपणि
इहां तेनि
वर्त्तिरूप
पडिकमणु

भाव ॥ ते तत्वस्वरूपनुं होवुं ॥ ते भाव ॥ पर्यायार्थः ॥ उदयिक विगति दिइ । उदय नइं उदय निष्पन्न ॥ उदये ते आठ कर्मप्रकृतिनउ उद
य । ते उपसमश्रेणि वर्त्तमानइं । परिस्या गिइं करी । स्वामी आवलिकानइं प्रति कर्मानइ उदय नी आवलिकानइ विषकाभी तानइं रू
पइ विपाक ईसूर्थः ॥ उवसमिए ॥ एहज कर्मप्रकृतिनउ उपसम ॥ खतिए ॥ एहज कर्मप्रकृतिनउ क्षय ॥ खउवसमिए ॥ का
ईक्षयिइं कांई उपसमिइं ॥ उदयनउ क्षयोपशम तिइ मातइं छइ ॥ तेहनउ रूपसम ॥ परिणामिए ॥ स्वादि सधृता दि अने आदि
धर्मास्तिकायादि ॥ सन्निवाईए ॥ बे त्रिणि च्यारि पांच नइं संयोगिइं नीपजइ ते सन्निपातिक ॥ अनंतर भाव कह्या । त
मांहि इं अप्रसस्त भावइं प्रवर्त्तणुं हुइ । प्रसस्तिइं न प्रवर्त्तणुं हुइ । विपरीत भाव सद्दहणा प्ररूपणा हुइ । ते पडिक्कमवा ते
नणां प्रतिक्रमण कहइ छइ ॥ पडिक्कमणे ॥ बीजउ प्रायश्चित्तनउ भेद ॥ मिछा मि दुकडं करिवउं इति भावः ॥ एकरइ कई नइ छ
छव्विहे भावे पं० तं० उदइते उवसमिते खतिते खतोवसमिते पारिणामिते सन्निवातीए ।
छव्विहे पडिक्कमणे पं० तं० उच्चारपडिक्कमणे पासवणपडिक्कमणे इत्तिरिते आवकहिते जंकिंचि
मिच्छा सोमणंतिते । कत्तियाणक्खत्ते छतारे पं० असिलेसाणक्खत्ते छतारे पं० जीवा णं छ
ट्ठाणनिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताते चिणिंसु वा ३ पुढविकाइयनिव्वत्तिते जाव तसकायणिव्वत्ति
ते एवं चिण उवचिण उदीरण वेय तह निज्जरा चेव छप्पएसियाणं खंधा अणंता पन्नत्ता छप्पदेसो
गाढा पोग्गला अणंता पं० छसमयट्ठितीया पोग्गला अणंता छग्गुणकालगा पोग्गला जाव छग्गुणलुक्खा पोग्गला अणंता छट्ठाणं समत्तं
ते अशुभ योग थकी अनइं अभयो निवर्त्तीनि पडिक्कमणुं ॥ ४ ॥ जंकिंचि मिच्छा ॥ जे कांई विपरीत आचरिउं ते मिच्छा मि दुकडं करइ ॥ सोम
णंतिते ॥ सूता ऊठा पछी साधु ईरियावही पडिकमइ ॥ सो ही णं मांहि आश्रव स्यानउ कांइ आलोगस्स ४ नउ करइ ॥ गमण
गमण विहार ॥ सुतवी सुमिणदंसणरात्रे ॥ नावा नइं संतार ॥ इरियावहीया पडिकमइं ॥ १ ॥ गाथा ॥ अनंतर प्रतिक्रमणुं कहिउं ॥
ते तु आवस्य छइ ॥ आवस्यक तु नक्षत्रना उदयनइं विषइ करइ ॥ ते नक्षत्रनउ सूत्र ॥ छ ट्ठाणसम्मत्ते ॥ ६ ॥ पूर्वलइ अध्य

इरिया
ही पहिले
मांइ ते उ
च्चार प्रति
क्रमण ॥ ए
मज प्रश्रवण
पडिक्कम
णुं ॥ ण ॥
३ ॥ ४ ॥
उच्चार पा
सवणं ॥ खे
लो य वासि
रि तु उवत्त
त्ता ॥ उस
रिऊण त
त्ता ॥ इरि
या वहियं
पडिकमई
॥ १ ॥

सव्वधम्मं० तेण बिंड कहिउं अतं ... हं नइं विषइ वितिगिछा मि० संदेह करुं छुं तेसंदेहटा लेवा नइं काजइं गच्छडुंडुं ॥३॥ एगतिया वितिगिछामि० एगतिया० कोइ एक अनुष्ठान नइं विषइं संदेह करुं छुं एकअनुष्ठान नइं विषइं संदेह नथी ॥ तिहांन थुडइ तेटाल वा नइं काजिं गच्छ छांडउं ॥४॥

य नइं ६ मंष्पानो वस्तु करी ॥ इहां मा ... इह लइ सूत्र पुद्गल नापर्याय कहाा ॥ इहां पुद्गल ना जिस्या उपसमथी जीवनइं उपघात ... धुरलि इस सूत्र ... ॥

सर्व धर्म निर्जरा ना हेतु सूत्र ... र वु ॥ पूर्व ना अनुगुणवुं सुश्वारि त्रादिनुं पालिवुं ॥ समयणा नी वाथाव बादिक ... रिवुं इत्यादि धर्म विषइ ॥ रोएमि० रुचि करवा वांछउं छुं ॥ ... इमगुरु नइं पुछवा पूर्वक गच्छनुं छांडवुं कहिउं ॥ इहां सर्वधर्म ... इम कहिउं गुरु नइं ... नी कलिइं इम नथी कहिउं ॥ ते आगलि इम कहइ स्यइ ॥ इच्छामि णं भंते एगल्लविहार पडिमं इत्यादि ...

... तिहां नथी कहिउं तिहां पणि गुरु नइं पूछीनी कलइं इम जाणवुं ॥ किहां एक सव्वधम्मं ॥ जाणामि एवं पण गअवक्कम० ... गच्छ मांहि रहिउं करवुं छइ ॥ इम मदस्सकी गच्छ छांडइ ॥२॥ एगइया० एकेक श्रुत धर्म अथवा चारित्र धर्म रोएमि०

सत्तविहे गणावक्कमणे पं तं सव्वधम्मं रोएमि एगतिआ रोएमि एगइया णो रोएमि सव्वधम्मा वितिगिछामि एगतिआ वितिगिछामि एगतिआ णो वितिगिछामि सव्वधम्मा जुहुणामि एगतिया जुहुणामि एगतिया णो जुहुणामि इच्छामि णं भंते एगल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विह

रित्तए ... जुहुणामि० आतरानइं दानादिकं ते ... विषइं ... गच्छ छांडुं ॥५॥ एगतिया० एकेक ... जुहुणामि ... एकेक नी गुण नइं ... गच्छ छांडुं ॥ इच्छामि० वांछउं छुं ... एकाकी ... कल्पना उ जिनकल्प ... ॥ विहार० विचरवुं ... प्रतिमा ॥ ते एकल्ल विहार प्रतिमा ॥ उवसं० पडिवज्जी नइं विहरवा वांछउं ॥७॥ अथवा सर्व धर्म रोचवुं ... गच्छ छांडुं ... एकेक रोएमि० ...

... सव्वधम्मा वितिगिछामि ... सर्व धर्म आचरिवा ... गच्छ छांडुं ... एगतिया जु० एकेक धर्म ... विहारं ... गच्छ छांडउं ... ॥

स्वगच्छमां हि एक अनुष्ठान मुनइं ... गच्छ तिया ... सव्वधम्मं ... सां मंग्री ना ... कहिउं तेणइं ... काउस्सग्ग करवा ...

॥ १५२ ॥

सच्च नइं गच्छांतरि इं मा कलह ॥ इहां सघलइं गुरु नइं पूछी नइं ... गुरु मा कल ह तो गच्छ छांडे ... इम जाणवुं ... णकथ्या तेहना ... पछी ... गुरु नो ... गच्छ छांडइ ... कारण मा टइं ॥ निःकारणि तो गच्छ छांडवो नथी ॥ ... प्रायश्चित ... ॥ विभंग ज्ञान ... विषइ सूत्र ... एक लानइं ... वस्तु ... चोरादिक ... यथा ... गच्छ छांडुं तो ... ॥ विभंग ज्ञान ... विकल्प ... विषइ ... ॥ ... कारण पणइ की विभंग ज्ञान नु मिथ्यात्वं ... अवधि ... ॥ एग दिसिं० पूर्वादि एक दिसि नइं विषइ देषइ ॥ बाकी दिसि नु जाणवुं निषेध ॥ पंचदिसिं० पांच दिसि इं देषइ परबाकी निषेध ॥ किरियावरणे० प्राणतया तादिक करतो देषइ

रित्ते तं सत्तविहे विभंगनाणे पं तं एगदिसिं लोगाभिगमे १ पंचदिसिं लोगाभिगमे २ किरियावरणे जीवे ३ मुदग्गे जीवे ४ अमुदग्गे जीवे ५ रूवी जीवे ६ सव्वमिणं जीवा ७ तत्थ खलु इमे पढमे विभंगणाणे जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जति से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं पासति ।

तेहनइं कर्मबंधनकेरइं देषइं ते तणो इम कहइ ते जीव नइं कर्म बंधन थी ॥३॥ मुदग्गे जीवे० देवादिक बाहिरि अभिंतर ना पुद्गल लई सरीर रचइ ते देषइ ॥ पणिजीव ना प्रदेस ... तेणइ कारणि इं मुदग्ग जीव कहइ ॥४॥ अमुदग्ग० बाहिरि अभिंतर ना पुद्गल लेता न देषइ ॥ अनइं इम जाणइ ... बाहिर अभिंतर ना पुद्गल ... सरीर विकुर्वइ ॥५॥ रूवी जीवे० ... पुद्गल ... रूप विकुर्वइ ... ॥ ते इम जाणइ जीव रूपी छइ ॥६॥ सव्वमिणं० सर्व जीव कहइ ... वायरादिक ... ॥ ... इम जाणइ ... ॥७॥ ... ते जीव ... तत्थ० ... तेसां ... पासइ० देषइ ... जाणवु ... नथी कहिउं ...

अलघा ज्ञानपणुं जिनकुइ॰ सो इमे॰ ॥ सुद्धम्मंलगिई देषइ॥ एतलइकहइ वइ सधर्मी अपरां तिबालतप स्वीनदेषइइमदे
ल्लाडिकं ॥ तथा अवधिज्ञानन इंपणि अधेलोकनां ण। तां दाहिलु ता विभंगज्ञानीनुं मुख कहिवु॥ एतलइ अतिदोहिल
ते अधोक नाणतां हदा हिलो ॥ जोइइ आणइक सीकं छइ । तमा टइई हो अधदिसनउं आहिणानकीधुं ॥ एवंसंघइ॰ ॥ तेइ
नइएह बोबिकल्पकुइ ॥ अच्छिलो॰ मम॰ ॥ मुक्तमइ ॥ अतिसेस॰ अतिसेष॰ से ष इलमनइअतिक्रम्युं एह बुज्ञानदर्श
नमुरुनइं उपनुं ॥ तिवारपछी एकदिसिनइ देषवइकरी तिहां तिणाई ईडा तेणाई लोकदीठो ॥ तेसलो एग दिसिंलोगाति
गमे॰ एगदिसिमात्र ऊलोक छइ ॥ तिमऊलहिवाधको ॥ संतगईया॰ ॥ केतलाक श्रमणमाहण तिइमकहइछइ ॥ अनेराधा
वदिसनइं विषइ लोकनुं जाणवुं छइ ॥ तदिसिमइ विषइ छता पणा घकी तेइमकहइछइ ति मिथ्या ज कहइछइ ॥ १ ॥ आद्य

पातीणं वा पडिणं वा दाहिणं वा उदीणं वा उड्ढं वा जाव सोहम्मे कप्पे तस्स णमेवं भवति अ
त्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने एगदिसिं लोगाभिगमे संतेगतिया समणा वा
माहणा वा एवमाहंसु पंचदिसिं लोगाभिगमे जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु पढमे वि
भंगणाणे १ अहावरे दोच्चे विभंगनाणे जयाणं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा वि
भंगणाणे समुप्पज्जति से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं पासति पातीणं वा पडिणं वा दाहि
णं वा उदीणं वा उड्ढं जाव सोहम्मे कप्पे तस्स णमेवं भवति अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे
समुप्पन्ने पंचदिसिं लोगाभिगमे संतेगतिया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु एगदिसिं लो
गाभिगमे जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु दोच्चे विभंगनाणे २ अहावरे तच्चे विभंगणा
णे जयाणं तहारूवस्स समणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जति से णं तेणं विभंगणाणेणं समु

वरदोच्चे॰ द्वितीय अनेरुं बीजुं ॥ पाईणवाईत्यादिक मइ विषइ ॥ वा सद्दइ स्वकारनउ अर्थ करीवो ॥ अनइ उत्र विकल्पनउ अर्थ करीइ तो पांचदिसिं देषवापणुं नकुइ ॥ एकऊ दिसिं कुइ ॥ इमनउ पिछिलुं । अनइ बीजुं विभंग एकज थई जाइ तेतलो [illegible] १९३
किहां एकवा मइ [illegible] ॥ २ ॥

आणातिपातादिकरतां जीवनइ देषइ ॥ नोकरियावरणे जीवे॰ किरिया॰ कर्म॰ आवर्ण॰ ॥ तेहनउ जीवनइ बंध नथी ॥ नो॰ किवारिइं॰ ॥
एहवउ नही एतलइ कर्मबंध सहित एहइमनो निति मिथ्या च विभंगज्ञानी इमकहइ ॥ ३ देवामेव॰ देवनइ प्रादिदेव बाहिरि नाएक ॥
तसरीर अवगाह्या रह्या छइ तेथकी बाहिरिला ॥ अतिर अवगाह्या ते आमाहिला ॥ पोगले॰ पुद्गल वैक्रियवर्गणा पगले॰
रूप ॥ परियाईत्ता॰ वउकें पाचर घकी वेक्रियसमुतपातइ लेईनइ ॥ पुढेगत्तं॰ प्रथक् तेकालादेसनालादेइ करी गारूपपणुं
। नाणत्तं॰
प्पन्नेणं पासति पाणे अतिवातेमाणे मुसं वयमाणे अदिन्नमादियमाणे मेहुणं पडिसे नानारूप
वमाणे परिग्गहं परिगिण्हमाणे राईभोयणं भुंजमाणे वा पावं च णं कम्मं कीरमाणं णो पासति पणुं ॥ फुसि
तस्स णमेवं भवति अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने किरियावरणे जीवे संतेगति या॰ ॥ तेह
या समणा वा माहणा वा एवमाहंसु नो किरियावरणे जीवे जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु इ गलनइ
तच्चे विभंगणाणे ३ अहावरे चउत्थे विभंगणाणे जयाणं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा फरसीनइ ॥
जाव समुप्पज्जति से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं देवामेव पासति बाहिरब्भंतरए फुरेत्ता॰
पोग्गले परियाइत्ता पुढेगत्तं णाणत्तं फुसिया फुरेत्ता फुट्टित्ता विकुव्वित्ता णं चिट्ठित्तए वा अथवा फोर
तस्स णमेवं भवति अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने मुदग्गजीवे संतेगति वीनइ अथ
ता समणा वा माहणा वा एवमाहंसु अमुदग्गजीवे जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु चउत्थे वि वा पुद्गल
फोरवीन
ई ॥ फुट्टित्ता
॰ ॥ प्रगट
थईनइ अथ
वा पुफलसे
दीनइ ॥ वा
वनातरनइ

विषइ विषइ बीजा हीसइ छइ ॥ संवत्ती॰ ॥ फार पुद्गलए कठो करी ॥ निवर्त्य॰ ॥ अफार पुद्गल जुआ करी अथवा पुरइंक
री अंतर विक्रियसरीरनुं एकपणुं अमइ ना नापणुं ॥ फुसिता॰ फारेनी नइ ॥ फुरिता॰ फोरविवुं करीनइ ॥ फुट्टिआ॰
एका लावपणाई नापणाबीनइ ॥ संवट्टिआ॰ सामान्यनी पणुं करीनइ ॥ निवट्टिआ॰ सर्वथा समा प्रकरीनइ ॥ विकुव्विआ
॰ विकुवीनइ ॥ विचिइ ए॰ ॥ रहिता देषइ ॥ तेविभंगज्ञानीनइं ॥ बाह्य अभिंतर पुद्गलना ग्रहिवानइ विषइ ॥ प्रवर्त्तादि
बनइ देषइ ॥ एवं लवई॰ एहवउ विकल्प थाइ ॥ मुदग्गजीव॰ बाह्याभिंतर पुद्गल लेईनइ विकुंसरीर ते जीव ॥ ४ ॥

बाह्यास्पंतरपुद्गल ॥ अपरियाइत्ता० ॥ अणलीधइ ॥ विक्रूयसमुद्घातइं करीउपजवाना कालनइ विषइ ॥ ऊपजवानो छित्र नइ वि
षइ रह्या पुद्गल तिग्रहीनइ संवधारणा सरीरनुं एकप्रमुख वैक्रिय सरीर नीउपजाइ ॥ अथवा कडादिक अवयवनी आपजाइ ॥
नाना प्रमुख अनेक देवनी आपजाइ ॥ अथवा हस्त अंगुलीयादिकना अवयवनी आपजाइ विकुर्वतादेव ॥ अथवा देह
बाह्यास्पंतर पुद्गल ग्रह्या विना ॥ उदार विक्रिय नुं एक प्रमुखनामापणुं नथाइ ॥ अनइ इहां बाह्यास्पंतर पुद्गल ग्रहिया विना ॥
देवतानुं सरीर नीपनुं । विभंगज्ञानी देखइ ॥ तलानां इहां संवधारणा लखुं तइम ॥ अबाह्यस्पंतर पुद्गलइं वितसरीर ॥ एह
भंगनाणे ४ अहावरे पंचमे विभंगनाणे जयाणं तहारूवस्स समणस्स जाव समुप्पज्जति सेणं
तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं देवामेव पासति बाहिरब्भंतरए पोग्गलए अपरियादितित्ता
पुढेगत्तं णाणत्तं फुसित्ता जाव विकुव्वित्ताणं चिट्ठित्तए तस्सणं एवं भवति अत्थि णं मम अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने अ
मुयंगे दग्गजीवा संतेगतिया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु मुदग्गजीवा जे ते एवमाहं
सु मिच्छं ते एवमाहंसु पंचमे विभंगणाणे ५ अहावरे छट्ठे विभंगणाणे जयाणं तहारूवस्स स
मणस्स वा माहणस्स वा जाव समुप्पज्जति सेणं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं देवामेव पास
ति बाहिरब्भंतरए पोग्गलए परियाइत्ता वा अपरियाइत्ता वा पुढेगत्तं णाणत्तं फुसित्ता जा
व विकुव्वित्ताणं चिट्ठित्तए तस्सणं एवं भवति अत्थि णं मम अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने रू
वीजीवा संतेगतिया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु अरूवीजीवा जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एव
माहंसु छट्ठे विभंगणाणे ६ अहावरे सत्तमे विभंगणाणे जयाणं तहारूवस्स समणस्स वा माहण
स्स वा विभंगनाणे समुप्पज्जति सेणं तेणं विभंगनाणेणं समुप्पन्नेणं पासति
वादेवतानइ देषीनइ एम जाणइ ॥ मुदग्गे० ॥ अबाह्यास्पंतर पुद्गलइं वित ॥ अवयव सरीर ते जीव ॥ ५ ॥ रूवीजीव० ॥ पुद्गल
नइ ग्रहिवइ अनइ अणग्रहिवइ वैक्रिय रूप नुं एकप्रमुख अनेकप्रमुख ॥ देवनइ विषइ देषीइ एम जाणइ । जीव तेरूपी छइ ॥
अरूपी कहइ ते दीसइ नही ॥ ६ ॥ १५४

सुहुम ॥ सूक्ष्मइ ॥ मेघवायरहितकर ॥ इहां सूक्ष्मनामकर्मनइ उदयइं करी जे सूक्ष्म नाम ते नइ सूक्ष्मइ वली पुद्गल ते सूक्ष्म
सूक्ष्मइ मंदबादरवायलवो ॥ फूडं० ॥ फरस्यो ॥ पोग्गलकायं० ॥ पुद्गलनी राशि ॥ एयंतं० ॥ कंपमान पुद्गल ॥ वेयंतं० ॥ विस
ष कांपतो ॥ चलंतं० ॥ पोतानां ठामथी अनेरइ ठामइ जाउ ॥ खुब्भंतं० ॥ क्षोभपडतो ॥ फंदंतं० ॥ थोडो सो एकदेशवस्त्र प्रेरतो ॥ घट्टंतं० ॥
अनेरी वस्तुनइ फरसतो ॥ उदीरीतं० ॥ अनेरी वस्तुनइ प्रेरतो ॥ तं तं भावं० ॥ अनेक विषय पर्यायनइ ॥ परिणमंतं० ॥ परिणाव
ता ॥ ए सर्व चलवु सहित पुद्गलनुं समूह ते जीव चलवा रूपजीवना लक्षणनुं परणाम थकी जे चलनुं वस्तु छइ ॥ पणि अमणमाह
णा ते हनंतर जीव अजीव कहइ छइ ५ ॥ ते मिथ्यात्वे ते विभंगज्ञानी नइ ॥ इम ॥ आगल कहीजता ॥ तासमुप्पन्न ॥ अचलवानी अवस्थानइ
विषइ ॥ एजीव सम्यग एहवुं जाणवा नथी ॥ पृथिवी अप्पतेऊ वायु ते हनइ जीवनइ जाणइ ॥ चलनादिसं भावसहित त्रसनइ जी
वजाणइ ॥ अनइ त्रसमांस आंवसरिषा थकी वनस्पतिनइ जीव जाणइ ॥ पृथिव्यादिक या थिवलइ तो ॥ अथवा पोतइ थकी चलतो
सुहुमेणं वाउकाएणं फुडं पोग्गलकायं एयंतं वेयंतं चलंतं खुब्भंतं फंदंतं उदीरंतं तं तं भावं प
रिणमंतं तस्सणं एवं भवति अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने सव्वमिणं जाव संतेग
तिया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु जीवा चेव अजीवा चेव जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमा
हंसु तस्सणं इमे चत्तारि जीवनिकाया णो सम्ममुवगता भवंति पुढविकाइया आउ तेउ वाउकाइया
इच्चेतेहिं चउहिं जीवनिकाएहिं मिच्छादंडं पवत्तेइ सत्तमे विभंगणाणे ७ सत्तविहा जोणिसंगहे
अंडया पोतया जराउया रसया।
१ मजाणइ एत्रसछइ ॥ पणि थावरप्रमुखनुं ज्ञान तेहनइ नही ॥ एणाथइ तेह थवा दिच्यार जीवनिकानइ विषइ ॥ मिच्छादंडं० ॥ मिथ्या
दंड पूर्वक हिंसा प्रवर्त्तावइ ॥ तेहनुं स्वरूप अणजाणता तेउ तेह ना जीवनी नास्तिपाडइं ॥ ७ ॥ मिथ्याचेदंड अवेरविषइ इमकहिकं
ते डंड तेजीवनइ विषइ जाइ ॥ तिसणा त्यानिसंग्रह थी जीवकहइ छइ ॥ त्यानि० ॥ उत्पत्तिस्थानकेत णाइ करीनइ संग्रह जीवनउ सं
ग्रह । ते त्यानिना भेद थकी सात भेद ॥ अंडस० ॥ पंखी मच्छ सर्पादिक ॥ पोत० ॥ वस्त्र ते हनी परिइं जरापातीया ते जे ॥ वागुलि हस्ती
+ उदिइं या दिश्वी ग्राहिते ईरव्यचे ॥ जरा० ॥ जे ते जेरोई वींट्या ऊपना ते मनुष्य गवादि ॥ रसज० ॥ तीमनवातीकादिक मद्य विषइ उपना ॥

१८५

संखदत्ता तत्तुआदि॰ समुछिम ते ऊमिआदि॰ उन्हिआ ते रूइ फोडी नी कल्पातत्तजनादि॥ अंडजादिकनी गताग तिकहइ छइ॥ मुथा मइसात ग ति अंडजादियानिरूपकइ॥ त्यहनइ तेस मग तिक॰ सात अंडजादियानिथकी आगति॰ उत्पत्ति छइ तेहनी तेस माग तिक॰ पुर्विइ यानिइ संग्रहक लिंछु॰ संग्रहमा प्रस्तावथकी संग्रहस्था नकतुं स्वरूपक हइछइ॥ संग्रहतिनी नादिकनउ अथवा॥ संघ्रमनउ संग्रहघाइ॥ तत्र सिद्ध॥ ऊहिम छि स्पर्शणावारणाय॥ पडिस्वायरणा गछेमि॥ साऊ अगछो गछो॥ माल ब्रोसं यम छीहि॥१॥ एवं उक्षात पांचमा कारणा नउ पाठ॥ आय रिय उवज्झाए गणंसि आसारा याणि याए कि ति कम्मं पउंजित्ता भवति॥ आय॰ जसुयपज्जव जात धारइ ते कालकाले सम्मं॥ अणुप्पवाइत्ता भवति॥ ऊ आ

संसारतया समुछिमा उब्भिया अंडयासत्तगतिता सत्तागतिता पं० तं अंडग अंडागसु उववज्जमाणे अंडातेहिंतो वा पोतएहिंतो वा जाव उब्भिएहिंतो वा उववज्जेज्जा स चेव णं से अंडए अंडगत्तं विप्पजहमाणे अंडगत्ताए वा पोतगत्ताए वा जाव उब्भियत्ताए वा गच्छेज्जा पोयया सत्तगतिया सत्तागतिया एवं चेव सत्तह्नवि गतिरागती भाणियव्वा जाव उब्भियत्ति। आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि सत्त संगहठाणा पं० तं आयरियउवज्झाए गणंसि आणं वा धारणं वा सम्मं पउंजित्ता भवति एवं जहा पंचट्ठाणे जाव आयरियउवज्झाए गणंसि आपुच्छियचारिया भवति नो अणापुच्छियचारिया विभवति आयरियउवज्झाए गणंसि अणुप्पन्नाइं उवकरणाइं सम्मं उप्पाइत्ता भवति आयरियउवज्झाए गणंसि पन्नुप्पन्नाइं उवकरणाइं सम्मं सारक्खित्ता संगोवित्ता भवति णो असम्मं सारक्खित्ता संगोवित्ता भवति

य॰॥ गाल्ला णाम हरवीया वर्द्धं सम्मं अस्लाहि श्रा सवई॥४॥ आय रि॰ आपुछिवा रिया भवति ना अणापुछियचारिया भवति॥५॥ आपुछिय॰ पुछवु तेग छनइ॥ अणुपन्ना इं॰ अणलाधस उपगर्ण तेव स्त्र पात्रादि॥ सम्मं॰ एषणा सुध्धे करी॥ उप्पाएत्ता॰ संपजावइ॥६॥ सारख॰॥ चौरादिकथकी अपाय करीराषइ॥ संगोवित्ता॰ गुहस्थनजाणइ तिम करइ अनइ मइलापावानदइ॥७॥ १८५

संग्रहस्थानक थकी विपरीत। असंग्रह नुं सूत्र आणवु॥ अनंतर आज्ञानअमुंजइं इमकहिउं॥ आज्ञा ता पंडिपणानइं विषइ छइ॥ तेस णां पंडिपणा कहइ छइ सुत्रइ॥ पिंडतेसिध्धन तसा॥ पाइलक कहाइ॥ तेहनी जएषणा॰॥ अहिया मापकार ते ए॥ संसट्ठ १ असंसट्ठ २ उद्धड ३ तह अप्पलेसिया चेव ४ उग्गहिया ५ पग्गहिया ६ उज्झियधम्मा य सत्तमिया॥७॥ संसृष्ट हात हाथ लाजन अणपरडइ॥ असंसट्ठ त्ये। असंसट्ठ हमात्र। अरवरडिय तिवुस्सं भवइ। इमलितां पहिली १ गाथानइ विषइ आर सो छिलो करमाटइ संसृष्ट हातपहिलउ कहो छइ॥ संसृष्ट हात हाथ लाजन परडइ॥ संसट्ठ हत्थे संसट्ठ मत्ते॥ अरडिय तिवुसं भवति। इमलितां बीजी॥२॥ उद्धृते॰ थालीआदिकनइ विषइ थातानइ कांइ छइ हाडलीमां हिथकी घालुं असंसट्ठ हत्थे संसट्ठ मत्ते। असंसट्ठिवा मत्ते संसट्ठे हत्थे॥ इमलतां ३ त्रीजी ३ अल्पलेप्पने॥ अल्पस ब्दइइहां अभाववाचक॥ निर्लेप पुंऊकआदि इमलतां चउथी॥४॥ अवग्रहीत ते लाजनकालइ सिरावलादिकनइ विषइ ता उन घालुं ऊइ ते लेतां पांचमी ५॥ पग्गहिय॰ प्रग्रहित ते लाजन वली। दातारइं देवानइं कांजिइं ग्रहिउं अथवा लोग वि वानइ

आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि सत्त असंगहट्ठाणा पं० तं आयरियउवज्झाए गणंसि आणं वा धारणं वा नो सम्मं पउंजित्ता भवति एवं जाव पत्तुप्पन्नाणं उवगरणाणं नो सम्मं सारक्खित्ता संगोवित्ता भवति सत्त पिंडेसणाउ पन्नत्ताउ सत्त पाणेसणाउ पन्नत्ताउ सत्त उग्गहपडिमाउ पन्नत्ता

अवग्रह संअवग्रह प्रतिमा॥ तिहां पहिलुं इम वीतवइं ए। एहवउ उपाश्रो मइं ग्रहि वु॥ अन्यथा नहीं॥ ते ऊपाश्रो या वीनइं ग्रहितां पहिली॥१॥ जे तिरवु मइं एहवउ अवग्रह ऊइ॥ ऊ एसाधुनइं का जइं ऊपाश्रो ग्रहीश॥ अनइं अनेरा साधुनइं ऊपाश्रइं या वइं छतइं। ऊपाणि तिहां वसीस ए बीजी॥२॥ पहिलीत साधुइं कहीं। अनइं बीजी तगछवासी संलागी मइं अन्य उद्यत विहारी असंलागीनइं॥ त्यस णांत य ऊ कनइं अधिइयावइ॥२॥ अमइं परानइं अर्थइं अवग्रह लिया वीजी पणि अनेरानइं या चइं ऊपाश्रइं रहीवानहीं॥ एअलिय हो अहालंदिक नउ॥ त्यस णां आचार्य थकी सूत्र बोछतउ॥ आचार्य नइ अर्थइं या चइं॥३॥ ऊ अनेराकेहइं मइंका जइं ऊपाश्रो न हीं याचुं॥ अनेरानां या या मो हि वसीसि पगछ वासी उद्यत विहारी जिनकल्प मइं अर्थिइं उलग्गा करता मइं॥४॥ पाता नइं काजइं अवग्रहस्या चीचि अनेरा।१।२।३।४।५। मइं काजइं नहीं याचुं ए जिनकल्पी मइं॥ तेह मइं ऊपाश्रो ग्रहीसि तेह नइं पटि लाकेडादिक संस्तारक हस्य इतो ग्रहीस॥ अनइं नहीं ऊइ तउ ऊकटा सनइं छ इछो रातिनी गमीसि॥ एजिनकल्पिकादिकनइं॥६॥ सातमी तेइं मऊ। नवरं। यथा संस्कृत इत शिलादिक ग्रहीस॥७॥ एत्रणि सूत्राकायकयु लिकनइं विषइ दीसइ छइ॥

का जइ वस्ता दिकइ ग्रहि ऊ लतां॥६॥ उज्झित॰ ते नाषवा ज्योग आहार अनेरा द्विपदादि नवां छइ॥ अथवा नां षिउ निले तां सातमी॥७॥ पाना एषणा पणि इमज जाणत॥ नवरं वउधीतिआं चाम स्लावीरकादिक निर्लेप जाणवा॥ उग्गह॰ अवग्रह इ उपाश्रइं॥ तेहनी प्रति मा॰॥

सतसत्तिकया० उद्देसार हित के बल एकसरो अध्ययविसेष तिआचारंगना बीजा श्रुतस्कंधनइ विषइ बीजी चुलिकारूप तेसमुदायथकी सात छइ तेह णी सत्तिकका कहीयइं । तेमां हिलउ एक अध्ययन पणि स त्तैकक्रिकहीइ तिहां पहिलुंस्था नसत्तैकक बीजुंनिषेधिकीसत्तिकक त्रीजुं उच्चार प्रस्रव विधिसत्तैकक चउथुं सद्दसत्तिकक पांचमुं रूपसत्तैकक छठुं परक्रियासत्तैकक सातमुं अन्योन्यक्रियासत्तिकक सत्तमहज्झयणा० सातमहाध्ययन तेसुयडांगना बीजा श्रुतस्कंधनइ विषइ पहिला श्रुतस्कंध ना अध्ययन थकी मोटा ते अध्ययन तेमहाध्ययन ते । पुंडरीक १ क्रियास्थानक २ आहारपरिज्ञा ३ प्रत्याख्यानक्रिया ४ अनाचारश्रुत ५ आर्द्रकुमारीयं ६ नालंदीयं ७ सातसातमा दिहाडा छइ जेहनइ विषइ तेसत्तसत्तमिका तेसातसातइ यथोत्तरदाति वधतइ पुरीथाइ पहिलासातनइ विषइ दिनप्रतिइं एककालनइ एक पाणीनी दाति जावसातमइ सातइ । अन्नपाणीनी दाति सात पाणीनी दाति तिसुप्रतिमा तेसाधुनी अभिग्रहविसेष । ते ऊगणपंचास दिहाडइ पूरी थाइ ऊगणो सातसातो ऊगणपंचास एकसो नइ छन्नु भिक्षाइंकरी पुरीथाइ जेहणी पहिलइसा

उ सत्तसत्तिकया पन्नत्ता सत्तमहज्झयणा पन्नत्ता सत्तसत्तमियाणं भिक्खुपडिमा एकुणाप न्नाते राइंदिएहिं एगेणाय छन्नउएणं भिक्खासतेणं अहासुत्ता जाव आराहिया विभवति

तेसात दाति बीजइ तेथी बिमणी जावसातमइ ऊगणपंचास दाति सर्वसंकलनाइ एकसो छन्नु भात नीभिक्षा अनइपानकनी भिक्षा पणि एतलीज । पणि तेईहां संख्या मागणानथी अथवा पहिलासातनइ पहिलइ दिहाडइ एकदाति । बीजइ दिहाडइ २ जावसातमइ दिहाडइ सात बीजइसातानइ पहिलइ दिहाडइ २ जावसातमइ दिहाडइ सात इमजावसातमासातानइ पहिलइ दिहाडइ ७ जावसातमि दिहाडइ सातदाति एमगणतां १५६ दाति थाइ आहासुत्तं० जिमसूत्रमाहि कहिउ छइ तिम पालइ जावमाहि अहाअत्थं० तिनियुक्तादि व्याख्यानइ अतिक्रमवइ अहातच्चं० यथातथ्य तेतसप्रमुख प्रतिमावत्स्यएदेवीगुणनिष्पन्नी मनो अनइ अतिक्रमवइ अनइ यथाविमरसंवज्ञाविवइ यथामार्ग ज्ञानदर्शनचारित्ररूप मार्गनइ अतिक्रमवइ अथवा प्रतिमाना आचारनइ अनतिक्रमवइ सम्मंकाएणं० सम्यगरूपइं करी प्रतिमानोधर्म आदरइ तिनही फासिया० उचितकालनइ विषइ विधिइंकरी फरसी पालिया० वेलीवेली उपयोगइ करवइ सोहिया० समाप्तिनइ विषइ गुरुनुं शेषु आहारतेहवइ करी शोभावी अथवा अतिचारनइ वर्जवइ करी तीरिया० पारिपाम्या वीडी० ते अवधिपुरइ थयइं पणि कांइ एककाल लगइ ते सामग्रइ किट्टइ करी कीटीय० पारणानइ दिहाडइ कहइ एतलि ग्रहमइं कीधी ईसर आराधु आराहिया० पुर्वोक्तसपुर्ण प्रकारइं सिधि चडावी १५६

सप्तसप्तमिकादि प्रतिमा तउ पृथ्वीनइ विषइ कहइ तणी तेतलो अघिकी कहइ अहोलोगे णं० इहां अधोलोक तिर्यंग्लोकथी हेठलो लोक ऊर्ध्वलोकथी एतलो माटइ कहइ अधोलोक गते पृथ्वी अघि विचइ पहिली प्रथ्वी नव सइ जोयणलोक तिर्यंग्लोकमाहि आवइ । तेमाटइ देसिं ऊणा थइ तथापि तेम प्रथ्वी पुरी कहि तो दोषनही एसातकमइ कमइ नीचि जाडपणइ पहिली एकलाख असीसहस्र जोयणजाडी बीजी १ लाख ३२ सहस्र त्रीजी १ लाख २८ सहस्र चउथी १ लाख २० सहस्र पांचमी १ लाख १८ सहस्र छठी १ लाख १६ सहस्र सातमी १ लाख ८ सहस्र आधेलोकना अधिकारथकी तिहां जे वस्तु छइ ते कहइ सुत्रसुगम नवरं घनोदधी तेजाडपणइ वीससहस्र जोयण अनइ घनवातथी तणवात आकासांतर असंख्याता जोजनजाणिवा आहावे साविंवाससहस्सा। बाहल्लेणं घणोदही नेया ससा तणुअसखा अहो आदाजावसत्तमीया १ तथा जेहनइ आति

अहेलोगेणं सत्त पुढवीउ पं० सत्त घणोदधीओ पं० सत्त घणवाता पं० सत्त तणुवाया पं० सत्त उवासंत रा पं० एतेसु णं सत्तसु उवासंतरेसु सत्त तणुवाया पइट्ठिया एतेसु णं सत्तसु तणुवाएसु सत्त घणवाता पतिट्ठिया एतेसु णं सत्तसु घणवाएसु सत्त घणोदधी पतिट्ठिता एतेसु णं सत्तसु घणोद हीसु पिंडलग पिहुलसंठाणसंठियाउ सत्त पुढवीउ पं० तं० पढमा जाव सत्तमा एतासि णं सत्तण्हं पु ढवीणं सत्त णामधेज्जा पं० तं० घम्मा वंसा सेला अंजणा रिट्ठा माघा माघवती एतासि णं सत्तण्हं पुढवीणं सत्त गोत्ता पं० तं० रयणप्पभा सक्करप्पभा वालुयप्पभा पंकप्पभा धूमप्पभा तमा तमतमा सत्तविहा बायरवाउकाइया पं० तं० पातीणवाते पडीणवाते दाहिणवाते उदीणवाते उड्ढवाते अहेवाते

तेणइ आकारि त्रि आकार एतलइ हेठल्यो छत्र मोटुं उपल्युं छत्र नान्हुं तेणाइ आकारि कीमनइ थिछत्रातछत्रा निव्हेतेहनुं छइ संस्थान किसो एक पिंडलग इसातप्रथवीछइ एतलइ आनमी सातराजनो पुहलो छेडी आदिरकि करा छइ हीणी थातीगइ किहां एक पिंडलग एपा रा संठाण संठियाए पाठ तिहां पइलक० फुलनुं नाऊन तेहनी परिइं पोहोलइं संभलाइ २ ही किहां एक पडुलग एपा तो संठाण संठियाए पाठ तिहां नामगोत्रपणि नो मऊ केवल गुण निष्पन्न ओम सात अवकासांतर पुर्विकहा व अर्थतिमइ छि नामावली० नामतना त्रा ततपणि नो मऊ केवलगुण निष्पन्न इहां बादरनु ग्रहण एतला माटइ सुक्ष्म नउ तेहनथी तेसणी वायतउलीसइनही तथा तेहनइ विषइ बादरवायु छइ पिसंस्थान अनइ सयम्हत छइ तेसणी संस्थान सयकहइ छइ

नथात मोहनो कर्मघी ऊपनो जीव नो परिणाम ते हेतु उस्थानक ७ आस्रय ते उयस्थान ॥ तिहां मनुष्यादिनइ स्वजातिना घकी ते आनरां मनुष्यादिकघकी ऊपजे भय ते इहलोकभय ॥ नारकीनइ नारकी घी भय ते इहलोकभय ॥ इम तिर्यंच तिर्यंचघी ॥ तिमा देवनइ ॥ १ ॥ अन्यजाति घकी ते तिर्यंच देवतां घकी मनुष्यादिकनइ ऊपजे भय ते परलोकभय ॥ २ ॥ ग्रहीइ ते आदान ॥ धन ते हनइ अर्थइ चोरादिकघकी ऊपजे भय ते आदानभय ॥ अकस्मात ॥ बाह्य कारण विना घरादिकनइ विषइ रह्यानइ रात्र्यादिकनइ विषइ ऊपजे भय ते अकस्मातभय ॥ ४ ॥ पीडा घकी ऊपजे भय ते वेदनाभय ५ मरणभय ते प्रसिद्ध ॥ असिलोगभय ते इम करतां मा हारो अपजस रखे थाइ ॥ इम अकीर्त्तिनो भय घकी बीहतो न प्रवर्त्ते ७ ॥ भय तो बन्ध

विदिसि वा ते सत्तसंठाणा पं. तं. दीहे रहस्से वट्टे तंसे चउरंसे पिहुले परिमंडले सत्तभयट्ठाणा पं. तं. इहलोगभए परलोगभए आदाणभए अकम्हाभए वेयणाभए मरणभए असिलोगभए सत्तहिं ठाणेहिं छउमत्थं जाणेज्जा तं. पाणे अइवाइत्ता भवति मुसं वइत्ता भवति अदिन्नमादित्ता भवति सद्दफरिसरसरूवगंधे आसादेत्ता भवति पूयासक्कारमणुवूहेत्ता भवति इमं सावज्जं ति पन्नवेत्ता पडिसेवेत्ता भवति णो जहा वादी तहा कारी यावि भवति सत्तहिं ठाणेहिं केवली जाणेज्जा णो पाणे अइवाइत्ता भवति जाव जहा वादी तहा कारी यावि भवति

स्थनइ ऊर ॥ तेणे छद्मस्थना ज्ञानकारणइ ॥ सात ठिकाणे छद्मस्थ जाणीइ ॥ पाणे अई ॥ किहीं एक जीव हणवानउ स्वभाव ते हिंस्या नाकरवाघकी इम जाणीइ ए छद्मस्थ छइ ॥ केवली होए चारित्र कर्मण पणा घकी ॥ निरतीचार संयम पालवा घकी ॥ अथवा वृ अणा सेवीय णा घकी कदाचि हिंसा न करइ । इम सघलइ जाणवु ॥ पूजा ॥ पुष्पार्चना ॥ सत्कार ते वस्त्रादि अर्चन । ते पर करिइ ति वारि ॥ अणु ह्रहे त्ता ॥ अनुमोदइ हर्ष करइ ईस ॥ इम ॥ एआ धकम्म दि सावज्जा ॥ सपाप ॥ पन्नवेत्ता ॥ इम जीवनइ ॥ पडिसे ॥ सेवइ ॥ नो जहा वाई ॥ सामान्य घकी ॥ जिम आलइ तिम न करइ ॥ अन्यथा बोलइ अन्यथा करइ ॥ आलोआ ॥ आलोइ DR. BHAU DAJI १८७

केवली तउ आ हिंसो त्रवि ऐसा एवं तऊइ ॥ मन्नुस्था [illegible] स्थवणा घकी ॥ सत्तादिकनो परि इ ॥ ते मणां गात्र थिवोगाक इछइ ॥ तिहां तां अकहतां तथाविधि ॥ एकपुरुष घकी उपना मनुष्यना विस्तार ॥ आगल्या गोत्रनी आपणीइ ॥ मुलं ॥ आदिकम्मु त ययगोत्र तेमुलगोत्र ॥ कासप पनइ विषइ ऊपनउ अथवा कास्यप पनउ रसपा घाधो । ते तस्यो कास्यपा त इनो जे संतान ते काश्यपा ते मु निसुव्रत निमि वर्जीनइ ॥ २२ तीर्थंकर अनइ चक्रवर्त्त्यादि क्षत्रिय । सातमा गणधरादिक ब्राह्मण ॥ जंबुस्वामि आदिक गाथा पति एस ऊकानू पम गोत्री आणवा ॥ गोत्रना जे संतान ते तिनामा ते क्षत्रिया दि क्षि मसुव्रत न मिजिन ॥

सत्त मूलगोत्ता पं. तं. कासवा गोतमा वच्छा कोच्छा कोसिता मंडवा वासिट्ठा जे कासवा ते सत्तविहा पं. तं. ते कासवा ते संडिल्ला ते गोला ते वाला ते मुंजइणो ते पव्वतिणो ते वरिसकण्हा जे गोयमा ते सत्तविहा पं. तं. ते गोयमा ते गग्गा ते भारद्दा ते अंगिरसा ते सक्कराभा ते भक्खराभा ते उदत्ताभा जे वच्छा ते सत्तविहा पं. तं. ते वच्छा ते अग्गेया ते मित्तेया ते सामलिणो ते सेलयया ते अट्ठिसेणा ते वीयकण्हा जे कोच्छा ते सत्तविहा पं. तं. ते कोच्छा ते मोग्गलायणा ते पिंगायणा ते कोडीणो ते मंडलिणो ते हारिता ते सोमती जे कोसिता ते सत्तविहा पं. तं. ते कोसिता ते कच्चायणा ते सालंकायणा ते गोलिकायणा ते पक्खिकायणा ते अग्गिच्चा ते लोहिच्चा जे मंडवा ते सत्तविहा पं. तं. ते मंडवा ते आरिट्ठा ते संमुता ते तेला ते एलावच्चा ते कंडिल्ला ते खारायणा जे वासिट्ठा ते सत्तविहा पं. तं. ते वासिट्ठा ते उंजायणा ते जारुकण्हा ते वग्घावच्चा ते कोडिन्ना ते सन्नी ते पारासरा

नारायण पद्मवरजीनइ वासुदेव बलदेव ॥ अनइ इंद्रभूत आदि त्रिणि गणधर ॥ जंबुस्वामि प्रमुख गोत्री ॥ २ ॥ वच्छना जे संतान ते वच्छ ते शिष्य सवादिक वाच्छगोत्री इम उत्तरा गोत्री शिवभूत्यादिक ॥ कोश्यिवृत्त यं पिय इति वचनात ॥ इम कोसि कगोत्री षडुलूकादिक ॥ मंडूनायस्ये तानो मंडव ॥ विशिष्टनाजे संतान ते वासिष्ठ बहु गणधर अनइ आर्य सुहस्ती आदि वासिष्ठगोत्री ॥ एक काश्यप पान मे प्रविधा ॥ धुरिलुं एक कुं काश्यप गोत्र ॥ अनइ अनि तानां मे तेका श्यपनो ज्ञानां ॥ संत मंडलादिपुरुषनां सतान रूप मांडल्यादिज्ञा णिवी ॥ ए मुलगोत्रनइ उत्तरगोत्रनो विभाग । हुनय विसय घकी थाइ ॥ तेसि ॥ नय

विभागकहइछइ॥ मूलसूत्र नय। ते मूलनय। ते सात। जे सात्तें न्याय सात्त सात कहइं छइ॥ एकेक नयना सातसत प्रकारि करि
तो सातसय थाइ॥ अनेरइ प्रकारि पांच सइ नय छइ। वस्तु वस्तुनि वस्तुनइ मानइ पणि एक लेइ नहीं॥ जेमा नइ ते नैगम
अथवा॥ निगम॥ अर्थनुं ज्ञान तेह नइ विषइ॥ कुसल कुशल ते अथवा ते नैगम॥ अथवा नथी जेहनो एक॥ गमो॥ मार्ग ते
नैगम॥ ए नैगमनय सम्यग्दृष्टीनी परिइं सामान्य विसेष करीनइ वस्तुनइ मानइ॥ साधु नी परि ते लक्षणे एनय सम्यक्
दृष्टी नइ ऊजइ॥१॥ तेवस्तु संग्रहिवुं॥ अथवा जेणइ करीनइ लेइनइ संग्रहीइ ते संग्रह। तेसमुदइ वस्तुनइ मानइ। पणि विसे
षनइ न मानइ॥ तेहइ कहइ विसेष ते सामान्यमाहि छइ। जुआ नथी॥२॥ ववहरवुं॥ अथवा ववहरइ॥ अथवा जेणइ करी
ववहरीइ ते ववहार। ते विसेष वस्तु मानइ छइ। ते कहइ सामान्य ते विसेष थकी जुआ नथी॥ ते ते सर्व विसेष मां नतां सा
मान्य मांहि आवइ॥ लोकनइ विषइ। घटादिक वस्तु बतावणइ प्रवर्तइ छइ॥ लोकव्यवहारिइं प्रवर्तइ छइ॥ ते सर्व विसेष
पणइ जि प्रवर्तइ छइ॥ सामान्यपणइं लोकव्यवहारिइं न प्रवर्तइ॥ एव्यवहार नय लोकव्यवहारइं प्रवर्तइ॥ तथा एनय भ्रम
रादिकनइं पांच वर्णवंत इ पणि कालावर्ण माहुतर पणा थकी कालो वर्ण जि मान्यइ॥३॥ ऋजु॥ वांकापणा थकी विपरीत सरल

सत्त मूलनया पं० तं० णेगमे संगहे ववहारे उज्जुसुते सद्दे

श्रुत॥ ज्ञान छांडइ हवुं ते ऋजुश्रुत॥ अथवा वर्तमान अतीत अनागत ए त्रिणि कालनुं मान बुंत वक्रपणुं तेहमइं छोडइ करी
ऋजुं॥ सरल वर्तमानकाल॥ सूत्रइं॥ मानइ ते ऋजुसूत्र॥ ए नय वर्तमान कालनु पोतानुं वस्तु लिंग वचन। नामो नइ नामा
दिक करी भिन्न पणि। एक वस्तु बहु मानइ। सघव वस्तु न मानइ। तिहां अतीतकालनुं वस्तु विणठुं॥ अनागत कालनुं ऊप
नुं नथी। अनइ ते सतु पणि नथी। तेहणी आकास पुष्प सरिखुं अछइ इम त्रिकालं न मानइ॥ अनइ पारकुं वस्तु निःफल पणा थ
की आकास कुसुमवत॥ तेहणी वर्तमान वर्तमानकालनुं वस्तु अनइ पोतानुं लिंगादि ते दूर हित॥ लिंग भिद ते॥ तट॥ तटी॥
तटं। वचन भेद ते। आपो जलं मा मात्रादि भिन्न ते॥ नामस्थापनाद्रव्य भावि भिन्न॥ ए सर्व परिइं करी वस्तु पणि एकइ जि मान
इ॥४॥ बोलवुं बोलइ। अथवा बोलीइ एणइ करीनइ वस्तु ते सब्द। ते शब्दइ करी मइ जि विचार बोलीइ॥ ते सब्दनय पणि ऋजुसूत्र कहीइ॥
पणि इम कहइ॥ नामस्थापनाद्रव्य कुंभ नथी॥ ए तेणइ ते घट थकी कोई घडानउ अर्थ न सरिइ॥ ते तेणइ खपुष्पवत॥ लिंग ते द पणि एहइ जमा
नइ॥ स्त्री पुरुषवत॥ अनइ बहु वचन एक वचन ऊ ऊजुआ न मानइ॥ जटा। वृक्ष॥ इत्यादिवत॥ तेहणी घटक्षट कुंभ ए घडानां पर्याय
नाम छइ॥ ए एकइ जे नाम मानइ॥५॥

नानार्थनइ विषइ नाना संज्ञा आरोहवा थकी समभिरूढ। एनय घट कुट कुंभ यार मानइ॥ घटपटादि सब्दनी परिइं॥ तथा घडवा
थकी घडउ कहीयइ॥ ते विभिन्न विसेष सहित॥ अर्थ घट कहीइ॥ कुटल पणा माथा थकी कुट कहीइ॥६॥ तेहणी ए त्रिन नाम
घडाना छइ॥ एनय ते घडउ ते अनेरा मानइ। अनइ कुट ते अनेरा मानइ॥६॥ तथा एवं॥ यत्पदार्थनउ अर्थ छइ ते अ
र्थ करतो सतउ ता ते पदार्थ मां छइ ते एवंभूत ते पदार्थनउ अर्थ अत्ता करवा नो वेलां ते पदार्थ सिद्ध ता मानइ॥ एनय
स्त्रीनइ माथइ चडिउ। त्विष्टा सहित हवा अर्थ करवा ना वेलां घडो न मानइ। पणि जिवारि॥ इ॥ स्त्रानकिइं बइठउ छइ
पाणी नरी तुं छइ॥ अथवा पाणी वितरक अनरु कार्य करतो छइ। तिवारिइं घडो न मानइ॥७॥ धुरिला ३ नय ते द्रव्य नइ मानइ
तिहां निगम व्यवहार असुद्ध द्रव्यनइ मानइ॥ अनइ संग्रह ते सुद्ध द्रव्य नइ मानइ॥ तेहणी ए त्रिणि द्रव्य नय कहीइ॥ उपल्या
४ नय ते पर्याय नइं मानइ॥ निगमनय ते सामान्य विसेष बहु जुआ मानइ॥ ... इगमादि लुं सर्व वस्तु समुदाय ए कतारूप
पकहीइ उपला ४ ते पर्याय नइं मानइं॥ निगम ते सामान्य विसेष बहु जुआ ... करी जिहां नइ मिलइ ते एकजे स्वरूप

समभिरूढे एवंभूते सत्त सरा पं० तं० सज्जे रिसभे गंधारे मज्झिमे पंचमे सरे

कहीयइ॥ माटइ ते संग्रहनय २ व्यवहार ते लोकव्यवहारनइ मानइ। तेहणी एनय विसेषनइं मानइं॥ इहां सातसइं नय
अथवा असंख्याता नय ए सात नय माहि किम आवइ। ते नय जेतला॥ जिम बोलना री असंख्याता छइ तेहना ते द थका
स्वर पणि असंख्याता छइ। ते असंख्याता पणि सात स्वर माहिं आवइ। ते नय जाणवा॥ हवइ एणइ संबंधइ स्वरनुं सूत्र
कहीइ छइ॥ स्वर॥ स्वद विसेष॥ सज्ज॥ छ थकी उपनउ ते षड्ज॥ उक्तं च॥ नासा कंठमुरस्तालु जिह्वा दंता श्च संस्पृशतः॥ ष
ट्भिः संजायते यस्मात्। तस्मात्षड्ज इति स्मृतः॥१॥ छ थकी ऊपनउ ए स्वर ते षड्ज स्वर॥१॥ रिसभ॥ ऋषभ वृषभ ते द
नी परिइं गाजइ ते ऋषभ नाभि थकी ऊठ्यो नाना प्रकारनो गंभीर परिपूर्ण कंठ मस्तक माहिं आव्यो॥ ऋषभ नी परिइं नाद करइ
ते ऋषभ॥२॥ गंधवइ जेहनइ ते गंधार॥ नाभि थकी ऊठिउ वायु ते कंठ मस्तकिं आव्यो॥ नाना प्रकारनो गंध इं सर्व तेणइ
ते गंधार स्वर॥३॥ कायानइ मध्य ऊपनउ ते मध्यम॥ नाभि थकी ऊठिउ वायु। पेट हीया विषइ आव्यो। नाभिपो हीतो म
ही नाद करइ ते मध्यम॥४॥ षड्ज ऋषभादिक स्वरनइ अनुक्रमइ पांचमी संख्या नो पूरणहार ते पंचम। अथवा नाभादिक
पंच स्थानकनइ विषइ॥ ऊपनो माटइ पंचम॥ नाभिथी वायु ऊपनउ अनइ ऊदर हृद कंठ मस्तकि। आव्यो ए पांच
स्थानक ... स्थानकनइ विषइ ... ऊपनउ ते पंचम॥५॥

१५८

सषस्वरनइं अतिसांधइ ॥ एह वा मह्यार्थनावस्यषकी ॥ धईवत पाठांतरई ईवत ॥ ६ ॥ णेसाते ॥ त्यहृषकी स्वर वइसइ ते निषाद ॥
बीजास्वरनइ परिसवइ ॥ ७ ॥ इम सातस्वर ॥ वियाः ॥ कह्या ॥ ईहां जिका तेस्वर अपउवालुकारणा छइ ॥ अनइ स्वरताकाथ
वइ । अन्नइकारणनइ ॥ दिइतउ कार्यभउ तदचाई ॥ तउ जिका तउ असंख्याती छइ तउ स्वर संख्याता का कह्या ॥ उत्तर विसे
षषकी असंख्याताई स्वर ॥ ते सर्वसमुच्चइ षकी आ तस्वर मांहि जिआ वइ ते रूणा ॥ अथवा बादरस्वर आश्री ॥ अथवा ग्री
तमइं व्यवहारइ एसा तई जिप्रवर्त्तइ ॥ तेतलांसात कह्या ॥ स्वरनाम षकी कह्या ॥ हिवइ कारणषकी कहइ छइ ॥ तिहां ता
लिपकी जाविनस्वर । विकारसहित आणइ ॥ अथवा अण आणइ जिप्रादेसनइ पामइ ॥ स्वर विसेषप्रमुखामइं । तेतलां
तस्थानक स्वरनइ । उपगारी छइ ॥ एणइकारणि तेस्वरस्थानक कहीइ ॥ अग्रजिह्वाए ॥ जीभनइ अग्रइ ॥ सज्जं ॥ षड्ज
स्वर बोलीइ ईहां । यद्यपि अनेराई स्थानकनइ विषइ ॥ षड्ज स्वर व्यापइ वइ तउ ॥ षड्ज किमकहीइ ॥ त्यतेणा बहुलीन
धेवते चेव णेसाते सरा सत्त विहादिता १ एएसिणं सत्तण्हं सराणं सत्तसरहाणा पं तं सज्जं
तु अग्गजिह्वाते उरेण रिसभं सरं कंठुग्गतेण गंधारं मज्झजिह्वाते मज्झिमं २ णासाए पं
चमं बुया दंतोठ्ठेणाय धेवतं मुद्धाणेणय णेसातं सरठाणा वियाहिता ३ सत्तसरा जीव णि
स्सिया पं तं सज्जं रवति मऊरो कुक्कुडो रिसभं सरं हंसो णदति गंधारं मज्झिमं तु गवेलगा ॥ ४ ॥
हनउ व्यापार तिषणो थइ ते तलां षड्ज कह्यितां दोषनही ॥ अनइ जिकानइ अग्रइ एस्वर बोलतो कह्यो ॥ तउ जी
आस्वरनइ विषइ जिह्वा आवइ उछइ तो ॥ पणि पिहलो स्वरमाहिं जीभ प्रमुख व्यापरइ छइ ॥ ते तलां जो लिहइ बोल तो कह्यो
उरेणं ॥ हईएकरी रिसभ तस्वर बोलाइ ॥ २ ॥ कंठगएणं ॥ उत्कट कंठइं करी अथवा कंठनुं उजुअ प्रमुं कंठनइ यत्नइं कं
ठइ गंधारस्वर बोलइ ॥ अथवा कंठ षकी उत्कंठ जुत ॥ स्वरप्रगट वा रूपक्रियातकं तोरू तिलणइ करी गंधारस्वर बोलाइ ॥ ३ ॥
मज्झजिह्वाए ॥ जिह्वानइ मध्यतागइ मध्यमस्वर ॥ ४ ॥ नासिका पंचम ॥ बुइया ॥ बोलइ ॥ ५ दांतनइ होठइ धईवत ॥ ६ मुद्धाणे
ण ॥ मस्तकइं करी निषाद स्वर बोलइ ॥ ७ ॥ जीवनिस्सिया ॥ जीवनइं आश्र्या ॥ अथवा जीवषकी नीकल्या ॥ नदति ॥ बो
लइ ॥ गवि ॥ गाइ ॥ एलगा ॥ गाडरा ॥ १एए

ओह ॥ अघाते विसेषनइ अर्थिहि । तेहम ॥ थिम गाइ एलगा समुच्चइ । मध्यमस्वर बोलइ । तिम काइल न बोलइ ॥ कोइल
ते वसंतमासिइ बोलइ । ए विसेषनउ अर्थ ॥ कुसुमसं ॥ बकुलप्रमुखइ करी फुल्यउ वनस्पतीमइ विषइ संभवइ छइ ॥ त्यनउ
वसंति विषइ ते कुसुम ॥ संभवकालविसा षमासनइ विषइ ईसर्थः ॥ सारसनइ । कोचक्रोंचस्वर बोलइ ॥ निषाद
स्वरसातमो ॥ गउ ॥ गज हस्ती बोलइ ॥ अजीव ॥ अजीवनइ आश्र्या अथवा अजीवषकी नीसर्या ॥ ते जीवनइ प्रयोग
इंकरी अजीवषकी नीकल्या ॥ मरंदंग ॥ मादल ॥ गोमुही ॥ काहली त्य रूणो तेहनइ मुहइ गाय सरीसी गउ अथवा अनेक
की जइ छइ ॥ व्यारवरणा करी तेहनइ विषइ ॥ [illegible] ॥ जिहनुं प्रतिहि क्रू छइ ते वा [illegible] विसेष ॥ गोहिया ॥
गोनइ चोमडइ करी मढी तेगोधिका तेह दरदडी वाजित्र ए आक पंचमस्वर बोलइ ॥ आडंबरो ॥ पटह ढोल रेवत स्वर बोलइ ॥
अह कुसुमसंभवे काले कोइला पंचमं सरं छठं च सारसा कोंचा णेसायं सत्तमं गताप
सत्तसरा अजीव णिस्सिता पं तं सज्जं रवति मुइंगो गोमुही रिसभं सरं संखो णदति गंधारं
मज्झिमं पुण झल्लरी ६ चउचलणपतिठाणा गोहिया पंचमं सरं आडंबरो रेवइयं महाभेरीय
सत्तमं ७ एतेसिणं सत्तण्हं सराणं सत्त सरलक्खणा पं तं सज्जेणलहति वित्तिं कयं च ण विणस्सति
गावो मित्ताय पुत्ताय नारीणं चेव वल्लहो रिसभेण उ एसज्जं सेणावच्चं धणाणि य वत्थगंधमलंकारं
इत्थिउ सयणाणि य ९ गंधारे गीतजुत्तिणा वज्जवित्तिं कलाहिता हवंति कतिणो पन्ना जे अन्ने
सत्थपारगा १० मज्झिमसरसंपन्ना हवंति सुहजीविणो खायती पियती देती मज्झिमसरमस्सितो ॥
माहा नेगी निषाद स्वर बीमानामाबोलइ ॥ ईवइ एस्वर जहवा फल आपइ तेक हइ छइ ॥ षडजेई प्रति लहइ ॥ एतलइ षड्जस्वरि इच्छ
ी आजीविका पामइ ॥ एणइ लक्षणइ करी षड्ज स्वर नउ धणी जाणवो ॥ कयंच ॥ तेहनुं कीधुं ते प्रारंभीउं विणसइ नही ॥ तेहनिः फलन
थाइ कार्य ॥ गाय मित्र पुत्र तेहनइ हुइ ॥ स्त्रीनइ वाल्हो हुइ ॥ १ ॥ रिसहेणं ॥ ऋषभस्वरइ करी नइ ॥ एसज्जं ॥ ते ठकुराई ते सेना
पतिपणुं धनादिक पामइ ॥ २ ॥ गीतजुत्तिन्ना ॥ गंधार स्वरि इंकरी गीतनी युक्तिनउ जाण हुइ ॥ वज्जवत्ती ॥ प्रधान आजीविका थाइ ॥ क
लाहिया ॥ कलाइं अधिक हुइ ॥ कइणो ॥ कवि हुइ ॥ पन्ना ॥ डाहा ॥ जे अन्ने ॥ जी तयुक्तिषकी बीजी अनेरा पसा स्त्र ना वेदादि
किना पारगामी थाइ ॥ मज्झिम ॥ आश्र्या ॥ ४ ॥

रूपपंक्ती तेणइं करी आहडउ करिइ॥ अथवा पंचानइ॥ संग्रहक॥ संग्रह नउ करणहार पत्रिय हुइ॥ ५॥ रेवतइन॥ सा वाणा
रूप पंक्ती तेणइं करी नइ आहडउ करिइ। अथवा पंचीनइ मारइ ते साउणिक॥ वागुरी ते मृगनु जाल ते णइं करीनइ बिच
रइ ते वागुरी॥ सोयरिय॥ सुयर इं करीनइ सुयर ना वधनइ अर्जइ प्रवर्तइ ते सौकरिक॥ ६॥ मुट्ठिया॥ माले॥ मेया॥
ले ट॥ ७॥ ग्राम॥ मुर्छना नउ समूह॥ सात स्वर ना त्रिणि ग्राम॥ अनइ एकेका ग्राम नी सात मुर्छना॥ इम त्रिणि नी एकवीस
मुर्छना॥ अथवा करनारू मुर्छता करइ ते मुर्छना॥ अन्योन्य स्वर नो विशेष ऊपजावता नइ मुर्छना कबेन्नायइ॥ अथवा
करनारो मुर्छता नी परिइं ते मुर्छना। अथवा करनारू मुर्छता करइ ते मुर्छना॥ इहां इंगियादि एकवीस मुर्छना ना स्वर विसे॥

पंचमसरसंपन्ना हवंति पुहवीपती। सूरा संगहकत्तारो। अणेगगणणायगा ११ रेवतसरसंप
न्ना हवंति कलहप्पिया। साउणिया वग्गुरिया सोयरिया मच्छबंधा य १२ चंडाला मुट्ठिया मेया जे
अन्ने पावकम्मिणो। गोघायगा य जे चोरा। नेसायं सरमस्सिया १३ एतेसिं सत्तण्हं सराणं तउ
गामा पं. तं. सज्जगामे मज्झिमगामे गंधारगामे सज्जगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पं. तं. मंगी कोरवी
या हरी ता रयणी य सारकंता य छट्ठी य सारसी णाम सुद्धसज्जा य सत्तमा १४ मज्झिमगामस्स णं सत्त
मुच्छणाओ पं. तं. उत्तरमंदा रयणी उत्तरा उत्तरासमा। आसोकंता य सोवीरा अभीरू हवति सत्तमा १५ गंधा
रगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पं. तं. णंदी य खुड्डिमा पूरिमा य चउत्थी य सुद्धगंधारा उत्तरगंधारा वि य
पंचमिया हवति मुच्छाउ १६ सुहुत्तरमायामा सा छट्ठी नियमसा उ णायव्वा अह उत्तरायता कोडिमा
तसा सत्तमी मुच्छा १७ सत्त सरा कउ संभवंति गेयस्स का भवति जोणी कति समया ऊसासा कति वा गे
पूर्व मांहि स्वररूप कहइ छइं तिहां एक याद ते। ते तां विशिष्ट गीतेइं अम कहीइ वडां ते मांहि पांउनी कल्पना ब स र त वि सा रि वि लादि सा स्त्र मांहि
रच्या छइ तिहां थी एसा वजाणिवा॥ कउ संभवं॥ सात स्वर कउ एणस्थान कथा ऊपजइ॥ गेयस्स॥ गीतनी॥ कासवंति जोणी॥ पजोणि॥ २००
जाति ते सी॥ कतिसमा॥ केतला समानउ ऊसास॥ ते केतलो परिमाण कालई स्पर्श॥ गीत ना केतला आकार॥ स्वरूप॥ एव्यारि

× न्ना सवृत्ति॥
बिना पा संह
त अनइ आ ह
त × उ. रू. जो.
जे आलसइ ते
ग्रहि सइ स्ते जो
सा ध्य उ रंग म
मध्य नइ विषइ
उ. रू.

प्रश्न नो उत्तर कहइ छइ॥ सात स्वर ना भि थी ऊपजइ॥ २ ठवा अंग थाति इंसरी पा पगा य की रोदन ते गीत नी जोनि॥
जाति॥ पायसमया। ऊसास॥ जेतला ऋचा मइं छंद नु चरण एक पूरु कीजइ ते तला समान उ ऊसास गीत नइं विषइ ऊ
इ॥ त्रिवइ आकार कहइ छइ॥ आइम ऊ॥ धुरि आरंभतो मृदु कोमल॥ समुव्वहंताय॥ गीत नइ मध्य लागइ मोटी ध्वनि क
रइ॥ अवसाणे॥ छेहडइ गीत नी ध्वनि ऊसारता मंद करिइ तिन्नि गीत॥ त्रिणि गीत ना आकार॥ धुरि सुकोमल॥ मध्य
मोटा। छेहडइं मंद॥ गीत नइ ध्वनि करइ॥ वली गीत ना क कहइ छइ॥ छ दोस॥ छ दोष वर्जवा ते कहइ छइ॥ गी॥ बीहतइ मनइ

गेयस्स आगारा १८ सत्त सरा णाभीउ हवंति गीतं च रुन्नजोणीतं। पायसमता ऊसासा। तिन्नि य गी
यस्स आगारा १९ आइमिउ आरंभंता समुव्वहंता य मज्झयारंमि अवसाणे तज्झवेंता। तिन्नि य गे
यस्स आगारा २० छद्दोसे अट्ठगुणे। तिन्नि य वित्ताइं दोन्नि य भणितीउ जो णाहिति सो गाहिइ सुसि
क्खिउ रंगमज्झंमि २१ भीतं दुतं रहस्सं गायंतो। मा य गाहि उत्तालं काकसरमणुनासं च होति गेयस्स छद्दो
सा २२ पुन्नं रत्तं च अलंकियं च वत्तं तहा अविघुट्ठं महुरं समं सुकुमालं अट्ठ गुणा होति गेयस्स २३
ई॥ दुत॥ उतावलु॥ रहस्स॥ नान्हो नो स्वर॥ पाठांतर इं॥ उप्पिच्छ॥ सास सरीणो॥ उत्ताले॥ ता
ल॥ कांसिकादिक नउ संघ। ते सनइ ऊलंघइ॥ अथवा स्वर सु ताल मेलइ नहीं॥ ४॥ काकस्वर ते कौआनो स्वर करिइं। ते कौआ स्व
र काक नी परिइं घर घर तउ॥ अनुनासिक ते नाक मांहि स्वर करइ॥ ६॥ गानारा नइ काइ एक इम कहइ छइ॥ छ गान कहि
छइ पाणि गामो॥ ए छ दोष॥ होति गीयस्स॥ ए गीत ना छ दोष छइ॥ अट्ठगुणे॥ आठ गुण कहइ छइ॥ पुन्नं॥ स्वर कला
इं पूर्ण॥ १॥ रत्तं॥ रागसहित॥ २॥ अलंकितं॥ अन्योन्य स्वर विशेष ना प्रगट अनइं सुस्वर ना करवा घणा॥ ३॥ वत्तं॥ अ
क्षर नइ स्वर प्रगट॥ ४॥ अविघुट्ठं॥ विस्वर ते पाडुआ स्वर रहित॥ ५॥ मधुर ते कोकिला नां बोल्या नी परिइं मधुर स्वर॥ ६॥
समं॥ सम ताल ते वंस स्वरादिक सुं मलवुं॥ ७॥ सुकुमाल ते ललित॥ स्वर घोलना प्रकारइं करी ललकस हित अथवा
सद्द नइ फरसवइ करी आतिजी मइ सुखनो ऊपजावण कोमललित एआठ गुणसहित ते गान कहइ। अन्यथा विटंबना॥

वली आनकै कहइ छइ ॥ हीयानइ विषइ कंठनइ विषइ मस्तकनइ विषइ ॥ पसत्थं ॥ विसुद्ध इतलइ हीयानइ विषइ ॥ ते स्वर विस्तीर्ण ते उरा विसुद्ध ॥ कंठनइ विषइ वाटलउ अनइ अणफाटउ हुइ स्वर ते कंठ विसुद्ध ॥ अनइ मस्तकनइ विषइ पुहुतउ जो नासिका मांहि ननी सरिइ ते स्वर सिरा विसुद्ध ॥ अथवा श्लेष्मा रहित ॥ उरकंठ मस्तक रिविसुद्ध तेहनइ विषइ गान ते ऊरकंठ सिर प्रसस्त गान कहीइ ॥ जिज्जइ ॥ गाईइ ॥ ते चरीइ ते गेय ॥ ते केहवउ ते कहइ छइ ॥ मउयं ॥ मधुर स्वर रिभितं ॥ रिभितं ॥ जिहां अक्षरनइ विषइ घोलनाइ करीनइ स्वरसंचरइ ॥ ते घोलना बहुलई सर्व ॥ पदबद्धं ॥ गीतनइ पदइ करीनइ बांध्युं ॥ समताले ॥ हस्तताल नउ सब्द तेस्यमा छइ जिहां ॥ पडुक्खेवं ॥ मुरज कंसिकादिक वाजित्र मुद्रित नि अथवा नाचनार ना गानो ठमको ते समा छइ जिहां ॥ सत्तस्सरसीहरं ॥ सात स्वर ॥ सीभरं ॥ अक्षरादिकइ करी समाव इ जिहां ते सप्त स्वर सीभर ॥ ते सात स्वर ए ॥ अक्षरसमं १ ॥ पदसमं २ ॥ तालसमं ३ लयसमं ४ ग्रहसमं ५ नीससी ऊससियं

उरकंठसिरपसत्थंच गिज्जएमउयरिभियं पदबद्धसमतालपडुक्खेवं सत्तस्सरसीभरं गेयं २४ निद्दोसंसारवंतंच हेउजुत्तमलंकियं उवणीयंसोवयारंच मियंमहुरमेवय २५

समं ६ संचार समं ७ ॥ सरासत्त ॥ ए गाथा अनइ ते ती समंइ त्यादि गाथा सुत्र मांहि आगलि कहीस्यइ ॥ तेइ ह्रस्वाक्षर मांहि दीर्घ छइ ॥ ए जाणी अक्षरो गाइयाइ नीहीका मांहि घणि इमउ ब थाणी छइ ॥ जिहां दीर्घ अक्षर नइ विषइ दीर्घ स्वर करीइ ॥ ह्रस्वनइ विषइ ह्रस्व ॥ प्लुतनइ प्लुत विषइ प्लुते ॥ सानुनासिकानइ सानुनासिक स्वर कीजइ ॥ ते अक्षर सम ॥ १ ॥ ए गायनु पद नी भिकादिक मांहि लइ ॥ अनेरइ बंधइ करी बांधि कंअनइ जिहां स्वरसंघा तिइं मिलतु होइ ॥ ते पद ते हसु गीतनइ विषइ ॥ गाय इ ते पद पदना मिलकादिक ॥ समं ॥ जपरस्परिइं आहणतां हस्तताल अनइ स्वरसंघा तिइं मिलतो ते ताल सम ॥ शृंगकादि मांहिली आंगली सली इते ति बजाडीइ ते तंतिमा स्वर मेउ अवसरते लयस्यमं कहीइ ॥ ते लयनइ अनुसारिइं जे गाना हरा गीत गाइ ते लयसमं ॥ धुरि बंसीवंस तंतिआदिकिं करी ए स्वर ग्रहिउ ॥ तेणइं जि गाइ ते ग्रहसमं ॥ प्राणि स्वर हुउ अनइ तंति डइ इम नहीं ॥ उच्छास निस्वास जि हो पुगथाइ तिहां लइ मुंकइ प्रणि सासमन सराइं तेनि: स्वास उच्छास समं ॥ ए वंस तंत्र्यादिक संघातिइं आंगुली नउ संचार ति मिलता गाइइ ते संचारसमं ॥ सप्तस्वरा एसातस्वर भइ गीत ॥ ए गायनइ विषइ सुत्र बंध ते आठगुण सहित कहइ छइ ॥ निद्दोसं ॥ निर्दोष ॥ अलियं ॥ उवघायं ॥ इत्यादि बत्रीस सुत्र दोष रहित ॥ १ ॥ सारवंतं ॥ अर्थ सहित ॥ २ ॥ हेउजुत्तं ॥ अर्थसमरथ वानी कारणा सहित ॥ ३ ॥ अलंकृतं ॥ काव्यना अलंकार सहित ॥ ४ ॥ उपनीतं ते समाप्ति सहित ॥ ५ ॥ सोपचारं तेनि

उरनिरुद्ध लज्जना यथा लेवार हितअ थवा स्नाम राग रहित ॥ प्रमित ते पद अनइ पदने अक्षरेरिइं करी मर्यादा सहित ॥ ७ ॥ मधुर ते सूत्रार्थ जनथनाक हिवाथकी ॥ ८ ॥ एवंति गायकइ ॥ गाथा २५

२०१

तिन्निय वित्ताइं ॥ त्रिणि प्रकारिइं काव्यनउ बंध ॥ समं ॥ पाद अक्षर करी सरखुं जिहां ॥ अक्षर ते सम ॥ तेगुरु लघु सरिखुं पादसमं ॥ तेच्यार चरण सरिषा ॥ अद्धसमं ॥ ते बि पद सरिखा बे असरीखा ॥ सव्वत्थ विसमं ॥ पदेइं अक्षरतिं करानइ सघलइ च्यार चरणा सरिखा नहीं ॥ अ तेहइम कहइ छइ ॥ सम ते च्यार चरणना ते तलो तिअक्षर ॥ अर्द्धसम ते पहिलु त्रीजु चरण सरीखु ॥ अनइ बीजु चउथु सरिखा ॥ अनइ विषम ते सर्वत्र पदनइ विषइ ॥ अक्षर अधिका ॥ ऊणा ॥ जव ॥ ऊणा एहवा काव्य कइ ॥ तेमणा त्रिणि ॥ वित्तप्पयाराइं ॥ छंदना प्रकार छइ ॥ एहउ लक्षण चउथउ लेदन लाभइं ॥ दोयतणीइउ

समंअद्धसमंचेव सव्वत्थविसमंचजं तिन्निवित्तप्पयाराइं चउत्थंनोवलब्भती २६ सक्कयापा गताचेव दुविहाभणिईओआहिया सरमंडलंमिगिज्जंते पसत्थाइसिभासिया केसीगायतिमहुरं केसीगायतिखरंचरुक्खंच केसी केसीगायतिचउरं केसिविलंबंदुतंकेसी विस्सरंपुण केरिसी सामागायइमहुरं कालीगायइखरंचरुक्खंच गोरीगायइचउरं काणाविलंबंदुतंअंधा विस्सरंपुणपिंगला तंतिसमं तालसमं पादसमं लयसमं गहसमंच नीससिऊससियसमं

चलाया ते कहइ छइ ॥ सक्कया ॥ संस्कृत ॥ पागया ॥ प्राकृत ए बि कालदिइं भणिउय ॥ भाषा ॥ आ ॥ कही ॥ स्वरमंडलंमि गिज्जंते ॥ षड्जादि सप्तस्वरसमुहनइ विषइं ॥ गाईतइ छतइ बेतां भाषा भणिवी ॥ पसत्थाइ सित्ता ॥ ति हो ब्राह्मणी बोली लाघात प्रसस्त ॥ एहेवउं ए गायत ॥ तहीनि: ॥ जाणरी ते सु शिखित छतउ परं गमभमि ॥ रंगमं पनइ विषइ ॥ गाहिति ॥ गास्यइ केहवी स्त्री केहवु गाइ एहवुं पुछइ छइ ॥ केसी ॥ केहवी स्त्री मधुरुं गाइ ॥ खरं ॥ खर स्थान ते काठर ॥ रूक्ख ॥ लुषउ ॥ चउरं ॥ दक्ष ॥ विलंब ॥ सांसउ गाइं ॥ दुतं ॥ द्रुत ते सीघ्र ॥ विस्वरं ॥ पाडुउ स्वर ॥ ए गाथा वी अधिक पद ॥ सामा ॥ नीनइ यानि ॥ चतुर ॥ दक्ष पनाइ ॥ काणी रहीर हो गाइ ॥ आंधली ऊतावलु गाइ ॥ विस्वर भांजरी गाइ ॥ तंतिसमं ॥ वीणादिकनी तांतिनास संघा तिइ मिलतु गाइ ॥ तालसमु ॥ तालइ करा समंउ ॥ पदसमु ते छंदना वर्णसंघा तिइं समु ॥ लयसमु ॥ ते तांतिसम मिलवु ॥ गहसमं ॥ धुरिथी तांति जे स्वर कीधो तेणइं स्वरिइ गाइ निससिय ससि ससमं ॥ सास ऊसासिइ सराइ नहीं ॥

२०२

संवारसमंति॰ श्रीगुरुनी लीइं तो तिवक्षाडीइं। तस्वर सिद्ध गाइ॰ ए स्वर मंडलनउ संक्षेपार्थ कहइ छइ॰ तां तो॰ तेनी नउ तां न निश्चय छइ गदि सात स्वर ॥ ... तिक सी गाई ... ॥ स्वरसमुद्दनउ समाप्त॰ ॥ अनंतरगा नथकी लौकिक कायक्लेश कहिउ॰ ... तिकासन तिप्र सिद्ध॰ पडिमठाई॰ ...

संचारसमासरासत्त। सत्तसरा ततोगा मा। मुच्छणा एकविसती। ताणा एगुणपन्नासा। समत्तंसरमंडलं॥ सत्तविहेकायकिलेसे पं। तं ठाणातिात। उक्कुडुयासणिते पडिमट्ठाती वीरासणिते णेसज्जिते दंडा तिए लगंडसाती जंबुद्दीवे २ सत्तवासा पं। तं भरहे एरवाते हेमवाते हेरन्नवाते हरिवासे रम्मगवासे महाविदेहे जंबुदीवे २ सत्तवासहरपव्वता पं। तं चुल्लहिमवाते महाहिमवाते निसढे नीलवंते रुप्पी सिहरी मंदरे। जंबुसत्तनदीउ पुरच्छाभिमुहीउ लवणसमुद्दं समुप्पेंति। तं गंगा रोहिता हरी सीता णरकंता सुवण्णकूला रत्ता। जंबुदीवे २ सत्तमहानदीउ पच्चच्छाभिमुहीउ लवणसमुद्दं समुप्पेंति। तं सिंधु रोहितंसा हरिकंता सीतोदा नारिकंता रूप्पकूला रत्तवती। धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे णं सत्तवासा पं। तं भरहे जाव महाविदेहे। धायइसंडदीवपुर॰ सत्तवासहरपव्वता पं। तं चुल्लहिमवंते जाव मंदरे। धायइसंडदीवपुर सत्तमहानतीउ पुरच्छाभिमुहीउ कालोयसमुद्दं समुप्पेंति। तं गंगा जाव रत्ता। धायइसंडदीवपुर सत्तमहानतीउ पच्चच्छाभिमुहीउ लवणसमुद्दं समुप्पेंति। तं सिंधु जाव रत्तावई। धायइ

तिमानउकरणहार॰ वीरासनिकतिं॰ सिंहासन ... नेषधिक ... तिकय दिकय ... दंडायतिकं॰ दिइमसाति३॥ लगडासाई॰ ... एकाथकलेसकहपतप मनुष्यलोकमांहीं ... श्रुतुंलाकनुस्वरूपकहइ छइ तिसुगम॥ २०२

वतीमनुष्य ... नाम अधिकारकहइ छइ ... काल ... कल्पवृक्ष ... स प्रजा विघइकरी ... तिकालेनामनु ... अग॰॥ कारणस्तत॰ ... अवयव ... तिमत्तांगकातिसुखदायीवाइ पद्देवामदेना दे ताहार॥

संडदीवपच्छिमद्धे णं सत्तवासा एवं चेव णवरं पुरच्छाभिमुहीउ लवणसमुद्दं समु। पच्चच्छाभिमुहीउ कालोदं सेसं तं चेव। पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धे णं सत्तवासा। तहेव णवरं पुरच्छा पुक्खरोदसमुद्दं समुप्पेंति। पच्चच्छाभिमुहीउ कालोदसमुद्दं समु सेसं तं चेव। एवं पच्चच्छिमद्धे वि णवरं पुरच्छाभिमुहीउ कालोदं समुद्दं समु पच्चच्छाभिमुहीउ पुक्खरोदं समुप्पेंति सव्वत्थ वासा वासहरपव्वता णतीतो त भाणितव्वाणि। जंबुद्दीवे २ भारहे वासे तीताते उस्सप्पिणीते सत्त कुलकरा होत्था। तं मित्तदा

× सुघोस

मे सुदामे य सुपासे य सयंपभे। विमलघोसे य माहाघोसे य सत्तमे। जंबुदीवे २ भारहे वासे इमी से उसप्पिणीते सत्तकुलगरा होत्था। पढमित्थ विमलवाहणे चक्खुमं जसमं चउत्थमभिचंदे। ततो य पसेणइ पुण मरुदेवे चेव नाभी य॥१॥ एएसि णं सत्तन्हं कुलगराणं सत्त भारियाउ होत्था। तं चंदजस चंदकंता सुरूव पडिरूव चक्खुकंता य सिरिकंता मरुदेवी कुलकर इत्थीणं णामइं। जंबुदीवे २ भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए सत्त कुलकरा भविस्संति। तं मित्तवाहणे सुभोमे य सुप्पभे य सयंपभे दत्ते सुहुमे सुबंधु य आगमिस्सेण होक्खती। विमलवाहणे णं कुलकरे सत्तविहा रुक्खा उवभोगत्ताते हव्वमागच्छिंसु। तं मत्तंगता तसिंगा चित्तंगा चेव होति चित्तरसा मणियंगा तं अणियणा सत्तमगा कप्परुक्खा य॥ २णहार। वस्त्रनादेणहार ... कल्पनादे ... कल्पवृक्ष॥ तेसातमो कल्पवृक्ष सो तस घली कालि ते वस्त्रनो देणहार॥

५

... दिसि ... जा विधि ... मधुरादि ... विचित्र ... मणि ... ना ...

दंड॰॥ अपराधी नइं सीख्या मणी तहनी ऊ॰ नीति ॥ नय ॥ तेहं दंडनी निह॰ परिभाषा आवारिइं अपराधीनइं हकारनो दंडात
गाइ करी नइं अस्मारुं सर्वगायक तेइं मानतो ॥ वली अपराधनकरइ ॥ मां निमेधनो अर्थ तेहनुं करवुं ते माकार ॥ आचार्यमा
कुलगारनइ देवारिइं ते मो टिइं अपराधि इं पणि माकारदंड ॥ अमइं नाहानइं अपराधइं हकारदंड ॥ धिक ते निर्भ्रंछवानो
अर्थ तेहनुं करवुं ते माकारिअकार॰॥ करवुं ते धिकार ॥ पो चमा छठा सातमा कुलकरनइं कालइं ॥ उत्कृष्ट अपराधिइं
धिकार ॥ जघन्य हकार ॥ मध्यम अपराधिइं माकार ॥ परिभाषा ॥ अपराधी प्रतिइं कोपइं करी म जाइ सिइं इम कहिवुं ॥ मंडल॰

सत्तविहा दंडनीति पं॰ तं॰ हक्कारे मक्कारे धिक्कारे परिभासे मंडलबंधे चारए छविच्छेदे एगमेगस्स
णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स सत्त एगिंदियरयणा पं॰ तं॰ चक्करयणे छत्तरयणे चम्मरयणे दंडरयणे असि
रयणे मणिरयणे काकणिरयणे ७ एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स सत्त पंचिंदि
यरयणा पं॰ तं॰ सेणावतीरयणे गाहावतीरयणे वड्ढतिरयणे पुरोहितरयणे इत्थिरयणे आ
सरयणे हत्थिरयणे ७ सत्तहिं ठाणेहिं उगाढं दुस्समं जाणेज्जा तं॰ अकाले वरिसइ काले न वरि
सइ असाहू पुज्जंति साहू न पुज्जंति गुरुहिं जणो मिच्छं पडिवन्नो मणोदुहता वइदुहता सत्तहिं ठा
णेहिं ओगाढं सुसमं जाणेज्जा तं॰ अकाले न वरिसइ काले वरिसइ असाहू ण पुज्जंति साहू पुज्जंति
गुरुहिं जणो सम्मं पडिवन्नो मणोसुहता वइसुहया सत्तविहा संसारसमावन्नगा जीवा पं॰ तं॰
तेण बंधन ॥ अमइं सरतनइं वारिइं ते चोथो आदि ज्यारि आदच ॥ परिभासणा ३ पदमा ॥ मंडलेबोधं मिलोइवीबाउ ॥ चारग छवि
छेदाइं ॥ सरदस्स चऊविहा निइं ॥१॥ २ त्ने॰ जातिजाति मांहिं उत्कृष्ट ते रत्न ॥ चक्रादिक जातिनइं विषइं ते बलप्रकीर्ण उत्कृष्ट
ते चक्रादिकें रत्न जाणवुं ॥ पाकंडी रत्न ते पृथिवीरूप ॥ तेहनुं प्रमाण ॥ चक्र छत्र दंड ॥ तिन्नि विहत्थाइं वामतुल्लाइं ॥ चंमदुरु
छदीहं ॥ बत्तीसअंगुलाइं असीइं ॥ चउरंगुलो मणी पुण ॥ तस्सइ हं चाराइं विच्छिन्नो ॥ चउरंगुलप्पमाणो ॥ सुवन्नवरकागणी नेया ॥ र
त्ननां पति ते सेन्यनायक ॥ गाहावतीर ते कोठारी ॥ वर्द्धइ ॥ ते सूत्रधार ॥ पुरोहित ते सांतिकर्मकारी ॥ एवं दशन्नरत्न ते कसहस्र
जीवेअ छि विशिन्न हइ ॥ कुगाढं ॥ अवतरयो अवसर अवगाढं ॥ असुसंताव थाइ एषा होनु ॥ अकालं ॥ अवर्षतिइं ॥ असाधु ते
असंयत ॥ गुरु॥ मातापिता धर्माचार्यनइं विषइं ॥ मिच्छं ॥ विनयरहित ॥ पडिवन्नो ॥ आश्रा ॥ मनोदुहया ॥ मनइं करी दुःखीपणुं अ
थवा द्रोहकारी मन ॥ इम वचइ दुहया पणि जाणिवा ॥ सम्मं ॥ विनयइं रम्मः ॥ एदुः पमसुषम आ तो संसारी जीवनइं दुःप सुख संसारीपाइं

तेमाणं संसारी जीव कहइ छइ ते सुगम ॥ संसारी जीवनइं सर्व तो आऊ मानइ लेइ छइ ॥ ते स णां आऊ वानेपल दक इइ छइ ॥ ल
द॰ ॥ उपक्रम ॥ सातकारणापकावाइ ॥ ते सणां सात ल द ॥ अध्यवसाण ॥ रागस्नेह ॥ भयरूप अध्यवसाय ॥ निमित्त ते दंड
चाबका सस्त्रादिक तेहनइं पातिइं आऊखुं लेइ ॥ आहार ॥ अधिक हीनो जनइं ॥ वेदनो ॥ नयनो दिषाडा ॥ पराघात ते खाडमां
पडवादिक थकी उपनुं ते दाइकरी आऊखुं लेदाइ तथा गालोपासादिकइं आऊखुं लेदाइ ॥ फास ॥ सर्पादिकनइं फरसिइं आऊ
ल दाइ ॥ आणपाणु ॥ सासोसास रूंधणइं ॥ इम ७ सात विधि ॥ भिद्यए ॥ आऊखुं लेदाइ ॥ ए सात बोल आऊखुं लेदवानो तेम
मरवानुं हेतु ते सापक्रमनइं पणि अनेरानइं नहीं ॥ जउ इम आऊखुं लेदाइ तउ कोधमनउं नाम ॥ अनइं अणकोधमनो आगमघया

णेरइया तिरिक्खजोणीया तिरिक्खजोणिणीओ मणुस्सा मणुस्सीओ देवा देवीओ सत्तविहे आउभे
दे पं॰ तं॰ अज्झवसाणनिमित्ते आहारवेयणा पराघाते फासे आणापाणू सत्तविहं भिज्जए आऊ स
त्तविहा सव्वजीवा पं॰ तं॰ पुढविकाइया आउ तेउ वाउ वणस्सति तसकाइया अकाइया अहवा स
त्तविहा सव्वजीवा पं॰ तं॰ कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा अलेस्सा बंभदत्ते णं राया चाउरंतचक्कवट्टी सत्तध
णूइं उड्ढं उच्चत्तेणं सत्तयवाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए
अप्पतिट्ठाणे णरए णेरतितत्ताए उववन्ने मल्ली णं अरहा अप्पसत्तमे मुंडे भवित्ता आगाराओ

अग्निक नामा व्याधिनउ धणी अल्पकालइं ते तेणे पाना गवइ ॥ जिम तेहनइं कोधमनउ नाम ॥ अनइं अणकोधमनो आगम नहीं ॥ ति
म आऊखानइं विषइं पणि जाणिवउं ॥ जे तस्तु आऊखुं दइ ते तलुं सघलो सघलो कर्म नादल प्रदेस पणइं करी ते गवइउ ॥ अ
नुभागथकी विकल्प ॥ जिम दीर्घ रासडी बलती वारलागइ ॥ अनइं तेहइ जिम्नु कली वालिइं सी घ्र बलइ ॥ बिजिम कारिइं रा
सडी पुरा बबलीजि ॥ तिम कोइ शीतकली मरइ ते हि पणि पुरुं लागवा जुं जि ॥ एआऊखानाभेद कोइ एप्रकारिइं सर्व
जीवनइं छइ ॥ ते सणां सर्वजीव कहइ छइ ॥ सूत्र २ ॥ सर्वजीव ते संसारी अनइं सिद्ध ॥ अका॰ ॥ सिद्ध ॥ अलेशा॰
सिद्ध अनइं अयोगी ॥ अनंतर संलेस्या सहित जीव कह्या ॥ अनइं संस्लेस्यानो धणी तो । ब्रह्मदत्तनी परिइं नारक थाइ ते
ने णां ब्रह्मदत्तनुं सूत्र ते सुगम ॥ ब्रह्मदत्त ते उत्कृष्टि मधु रूपात ते णां मल्लितीर्थंकरनुं तेहनुं सूत्र ॥ मल्लि सघ तउ स्त्री लिंगइं
वर्त्तइ पणि अरिहंतमइं तेणुल्लिनां छइ ते णां अपदाइं पुल्लिंगइं बोलावीइ ॥

यणा णां कोइ एक इसो
वरसनुं आऊखुं बांधुं
इ ॥ अनइं ए
र हो मरइ
तउ तेहनइं
ना कोधमनो
नाम ॥ अनइं
अण कोधम
नो आगम
घया ॥ इम
करता तेवा
ति । व्यादिक
नी प्रवृत्ति ते
सर्व निष्फ
ल थाइ
इत्या
दि दोष
पजाइ ऊत्तर
कहीयइ छइ
जिम कोई
रस बीधणा
रपकूइ ते

विदेह देसना राजा नो वर कन्या ते विदेह राजवर कंन्या ॥ इरकाग राया ॥ ईक्ष्वाकु देसनउ राजा ॥ साकेत नगरी नउ निवासी ॥ चंदच्छ
यावंगराई ॥ रूपी ते सावत्थी ॥ संख वणारसी ई ॥ अदीणसत्तु हस्तिनागपुरि ॥ जियसत्तु कंपिल्लपुरि ॥ ईहां मल्ली नाथ २ हि ला
ली धम्म पछी छ राजा ई दीक्षा लीधी छइ ॥ पछि तेह वेत सर्व्व नारा वरि । सा तसं रम्या म्यां हिंडी द्वालो आकिहो । ते ही द्वा ना
सन्मुख पण माटइ ॥ इम आनर्दी इं कामि जिहां कांई संबंध विकट तो दीसइ । तिहां नि पुणइ विचारी गमि याडिवो ॥ ॥ एराजानो
सम्यग्दर्शन छतइं प्रश्रइ व्याख्या ॥ ते सर्व्व सामान्य कहइ छइ ॥ सम्यग्दर्शन ते सम्यक्त्व ॥ मिथ्या अमिश्र ॥ ए त्रिणि दर्शन मोहनीना
ते दना क्षायोपसमनइ उदय थकी ऊपजइ ॥ चक्षुदर्शनादि ॥ दर्शनावरणीना च्यार ते दना यथा संभव क्षयोपसम अनइ क्ष
य करी ऊपजइ ॥ अन्यइ आभाम्य ग्रहण स्वताव ऊपजइ ॥ सम्यक्त्व दिक तुं सद्दहिवुं अनइ चक्षुदर्शनादिक सामान्य दर्शन

अणगारियं पव्वतितात तं मल्ली विदेहरायवरकन्नगा पडिबुद्धी इरकागराया चंदच्छाए अंग
राया रूप्पी कुणालाहिवती संखे कासीराया अदीणसत्तु कुरुराया जियसत्तु पंचालराया
सत्तविहे दंसणे पं ते सम्मदंसणे मिच्छदंसणे सम्मामिच्छदंसणे चक्खुदंसणे अचक्खुदंसणे ओहि
दंसणे केवलदंसणे छउमत्थवीयरागाणं मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ वेदंति तं णा
णावरणिज्जं दंसणावरणिज्जं वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं अंतराइतं सत्तट्ठाणाइं छउमत्थे स
व्वभावेणं न याणति न पासति तं धम्मत्थिकायं आगासत्थिकायं जीवं असरीरपडिबद्धं परमाणु
पोग्गलं सद्दं गंधं एयाणि चेव उप्पन्ननाणदंसणधरे जाव जाणति पासति धम्मत्थिकायं जाव गंधं
समणे भगवं महावीरे वइरोसभनारायसंघयणे समचउरंससंठाणसंठिते सत्तरयणी उद्धं उच्च

अनंतर केवलदर्शन कहिउं ॥ तउ छद्मस्थ अवस्था अनंतर छइ ॥ तउ हवइ छद्मस्थनुं सूत्र कहइ छइ ॥ ६ ॥ सूत्र ३३ ॥ छद्मस्थ आवरणाते
ज्ञानदर्शननी आवरण अनइ अंतराय नइ विषइ तिष्ठइ ते छद्मस्थ ते हइ ऊपसांत मोहपणा थकी ॥ अथवा क्षीणमोहपणा थकी
वीतराग ते रागोदय रहित ॥ सात वेदइ ते मोहनी टाळी अथवा ऊपसम माटइ ॥ क्षीण नही ॥ एतला वाना जिन जाणइ इम कहिउं
॥ तजि नवर्धमान तीर्थंकर विषइ आहारादीक ते हतुं स्वरूप अनइ विकथा निषेधी तेहनुं विकथाओ कहइ ॥

*धम्म
त्थिकायं

२०४

मित्तकालुणिता ॥ माता ना रुदन करुणा रसइं सहित विलाप ॥ तथा हा
पुत्र [illegible] पुत्र हा वच्छ ॥ मुंकामि कहइ मरण हाऊं ॥ एवं करुणा विलाप ॥ जे तत्र वर्णन सो मरडिया ॥ ७ ॥ दर्सनी भेद नी तिहां
दर्शना लीना दिकनी प्रसंसना री। तेसो तेलनार नइ ते ऊपरि राग ऊपजइ । सम्यक्त्व ते दपामइ ॥ चारित्र भेदनी ते हवणां वा
ति त्र छेनहीं साधु नइ ॥ प्रमादना बहुल पणा थकी ॥ अतीचार घणा लागवा थकी । अतीवा शनासुद्धि ना करणहार अनइ जे
आचार्य अमइ प्रायश्चित्तना लेनार साधु तेनथी ॥ तीर्थनइ ज्ञानदर्शनइं प्रवर्त्तइ छइ । ते सर्व्व ज्ञानदर्शनमइं जियन्ति क
रवउ । इत्यादि सांभलतां चारित्र अथवा गइ ॥ विगथा करतां तो आचार्य वारिइ । अतिसयवंत माटइ तेहना आचा

इत्थिकहा भत्तकहा देसकहा रायकहा मिउकालु
णिता दंसणभेयणी चरित्तभेयणी आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि सत्त अतिसेसा
पं तं आयरियउवज्झाए अंतो उवस्सगस्स पाते णिगिज्झिय २ पप्फोडेमाणे वा प
मज्जेमाणे वा णातिक्कमति एवं जहा पंचट्ठाणे जाव बाहिं उवस्सगस्स एगरायं वा दुरायं वा
वसमाणे नातिक्कमति उवकरणातिसेसे भत्तपाणातिसेसे सत्तविहे संजमे पं तं पु
ढवीकायसंजमे

यना अतिसय कहइ छइ ॥ आचार्य उपाध्याय उपाश्रमादि ॥ निगज्झिय २ ॥ प्रसरती पगनी धुलि नउ निग्रह करावी
नइ ॥ पप्फोडि ॥ विवाकचं करा पालिं २ जो हरणइं पउंछावतउ आज्ञानं अतिक्रमइ ॥ तस साधु तेऊपायाअवो हिरि
प्रगपऊंउइ ॥ आचार्य ते मा हि अतिसयइ १ ॥ एवं जहा ॥ तिहुम ॥ आयरियउवज्झाए अंतो उवसगस्स उच्चार पासवण
विगिंचियमाणे वा ॥ विसाहे माणे वा नाइक्कमइ ॥ २ ॥ आयरियउवज्झाय पहुइं ओ विया वडिय करइ ॥ इच्छा नाकरइ
॥ ३ ॥ आयरियअंतो उवसगस्स एगरायं वा दोराइयं वा ॥ संवसमाणे नाइक्कमइ ॥ ४ ॥ आयरिय उवज्झाए बाहिं उवस
यस्स एगराइयं वा । दोराइयं वा । संवसमाणे नाइक्कमइ ॥ ५ ॥ अधं पुवुवित ॥ उपगरण अतिसय ते । ते अवरसाधुथी प्र
धाननइ ऊजला वस्त्र ऊढइ । अधिक वस्त्र राखइ ॥ ६ ॥ आचार्यना ताग गो यावस्त्र वली धोवइ ।। नथोइ तो आचार्यनि लोक
माहिं हीलणा पामइ ॥ रोगी आनइ रागवा थई ॥ सरूपा ने अतिसय ते आहार पाणी सारा । आचार्यनिइं कलम सालि
अइ दुध क्रिमगा ॥ अनइ चित्र कालनइ योगइ क्ष्चा दोरानुं अन्न परिणमइ ॥ सुंदर आहार दिइ सुत्रार्थ स्थिर रहइ ॥ सचिनइ
विनेय गुरुनी पूजा अनइ बहुमान थाइ दीननो दीनारनी अप्रीबाधइ ॥ आचार्यनइ बल बुद्धि वाधइ ॥ ए आचार्यमा अतिसय

तउसंयमनाउपगारतलोकोऊइ। पलिराणादिकइनइंकोऊइ॥ ततसंलीसंयमालहनउविपक्षणाअसंयमातहनाल
दआरंत्ता दिसुभ फ़करइबइ॥ संजम॥ पृथ्वादिकसंघटपरितापउपद्रवयवकी निवात्रींबु॥ अजीवकायसंयमे॥ त
पुस्तकादिकनाग्रहियालागविवाधकीनिवर्त्तिबु॥ असंजमतअनिवर्त्तिबु॥ आरंभादितअसंयमनउरलेदुए रुल
दोरा॥ आरंलाउद्दवउ॥ परितापकारतवसमारंलो॥ संकप्पोसंरंलो॥ सुधनयारांतुमाबिसिं॥१॥ आरंभादिकना
पलन्ति णाकह्या॥ तउअजीवकायनइंविषइ पाबालुनप्लोइतउ तेहमइं। आरंलाद्दि किमसंलवइ॥ उत्तर॥ पुस्तकादि
कनइ विषइतिजीवआश्राछइ। तेहनउआरंलादिकरता अजीवकायनउआरंलादि। इमकहिता विरुद्धनही॥ अनंत

पुढविकातियसंजमे जाव तसकातियसंजमे अजीवकायसंजमे सत्तविहे असंजमे पं
ते पुढविकातियअसंजमे जाव तसकातियअसंजमे अजीवकायअसंजमे सत्तविहे
आरंभे पं ते पुढविकातिअआरंभे जाव अजीवकायआरंभे एवं मणारंभेवि एवंसारंभेवि
एवमसारंभेवि एवंसमारंभेवि एवं असमारंभेवि जाव अजीवकायअसमारंभे अहनंते अ
दसि कुसुंभ कोद्दव कंगु रालग [illegible] वरी कोद्दुसग सण सरिसव मुलगबीयाणं एतेसिं णं ध
न्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं जाव पिहियाणं केवतितंकालं जोणी संचिट्ठति जहन्नेणं अंतो
मुहुत्तं उक्कोसेणं सत्तसंवच्छराइं तेण परं जोणी पमिलायति जाव जोणी वोच्छेदे पन्नत्ते

१ संजमादिकह्यां ततलाऊीवनाकइ॥ ततसंलीजीवविशेषनी स्थितिकहइछइ॥ अह॰॥ अथ॥ तप्रश्ननइअरथइं
लदंतातगुरुनइआमंत्रण॥ अयसि॰॥ अलस्ली॥ रालतकांगनउविशेष॥ सेणाधन्यविशेष॥ सण
॰॥ फ़ाधितयमाहितधन्यहोइछइ॥ मुलो॰॥ सागविशेष॥ जेधन्यनाअर्घनिघ्रांकह्या तेलाकु
रुटिनाजालिवा॥ जावमाहिइं॥ पविद्धसइं॰॥ विद्धसइ॥ मघी उझाणं॰॥ मालाउझाणं॥ उल्लाणं॥ उलित्ता
णं॥ लंछियाणं॥ मुद्दियाणं॥ अर्घपित्रवित॥ बीजाउजावमाहिं॥ पविद्धसइं॰॥ विद्धसइ॥ सबीएअबीएसवइ २०५
॥ तणपरं अर्घपुर्वयत॥

बादरआउकायनुंसातसहस्रवरसनुंआयुषुं कहितेउसंलीसुरुस्नउअंतर्मुहूर्त्तइछइ॥ इमआगलिपणिबालनाकरवीयघासंलवइ
बीयरआउकाइयाणं उक्कोसेणं सत्तवाससहस्साइं ठिती पं तच्चाएणं वालुयप्पभाए पुढवीए उक्को
सेणं नेरईयाणं सत्तसागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढवीए जहन्नेणं नेरइया
णं सत्तसागरोवमाइं ठिई पं सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो वरुणस्स महारन्नो सत्त अग्गमहि
सीउ पं ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो सत्त अग्गमहिसीउ पं ईसाणस्स णं दे
देविंदस्स देवरन्नो जमस्स महारन्नो सत्त अग्गमहिसीउ पं ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो अब्भितर
परिसाए देवाणं सत्तपलिउवमाइं ठिती पं सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो अग्गमहिसीणं देवीणं सत्त
पलिउवमाइं ठिती पं सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाणं देवीणं उक्कोसेणं सत्त पलिउवमाइं ठिती पं
सारस्सयमाइच्चाणं सत्त देवा सत्त देवसता पं गद्दतोयतुसियाणं देवाणं सत्त देवा सत्त देवसहस्सा
पं ते सणंकुमारे उक्कोसेणं देवाणं सत्त सागरोवमाइं ठिती पं माहिंदे कप्पे उक्कोसेणं देवाणं सातिरेगा
इं सत्त सागरोवमाइं ठिती पं बंभलोगकप्पे जहन्नेणं देवाणं सत्त सागरोवमाइं ठिती पं बंभलो
यलंतएसु णं कप्पेसु विमाणा सत्त जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पं भवणवासीणं देवाणं भवधार
णिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं सत्त रयणीउ उड्ढं उच्चत्तेणं एवं वाणमंतराणं एवं जोइसियाणं सोहि
म्मीसाणेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जा सरीरगा सत्त रयणीउ उड्ढं उच्चत्तेणं पं णंदिस्सरव
रस्स णं दीवस्स अंतो सत्त दीवा पं तं जंबुद्दीवे धायइसंडे दीवे पोक्खरवरे वरुणवरे
खीरवरे घयवरे खोयवरे णंदीसरवरस्स णं अंतो सत्त समुद्दा पं तं लवणे कालोते पुक्खरोते
वरुणोते खीरोदे घओदे खोतोदे॥७॥ एहीपादिकातअतिछइ॥ ततसंलीअतिकहइछइ॥

ग.८

*सारस्वत
के॰लोकां
तकदेवता
नइसातरे
बनातेहनइ
एकेकानइ
सातसात
सइनोपर
वारकह्यो
X गर्दतोय
तुसियांगवे
ऊदेवपनो
कातिकऊा
णना॥ पवे
देवनइएके
कोनेसातर
सहस्र
बताने

घासंलवइ
अनंतरना
२क कह्या॥
तेहनइस्थि
तिसरीरादि
कइकही॥ द
वमुसरीया
पणुंछइ॥ त
सलीदवना
सूत्र॥ वरु
णातिपविल
मनउलोग
पालें॥ सो
मउवर्त्तउ॥
यमदत्तिणा
नउ॥ अनंत
रदेवतीना
अधिकार
कह्या॥ ते
अवासत
उदधिमस
मुद्रछइते
सलीद्वीप
समुद्रना
सूत्र॥

अणि० ॥ पंक्ति ॥ उडु० ॥ सरल ॥ तिहांऊ ॥ आयता० ॥ लांबी तिहांऊंस्थापना ॥ एकगमावांकी तेहनीस्थापना ॥ बेऊगमावां
कीस्थापना ॥ एगोखुहा० ॥ एकदिसिनइविषइ ॥ अंडासाकारस्थापना ॥ बेऊगमाअंडसाकारस्थापना ॥ चक्कवाला ते वल
याकारिइं ॥ अर्द्धचक्कवालात अर्द्धवलयाकारिइं ॥ एएकगमावांकीआदिश्रेणि लोकनापर्यंते प्रदेशनी अपेक्षाइं संभवी
इछइ ॥ चक्रवाल अर्द्धचक्रवाला दिकगतिइं करीनइं द्विप्रदेशिकनां दवतानां सिन्यसमइ तेहणां देवसेन्यकहइछइ पीढा

सत्तासदीउ पं तं उड्ढु आयाता एगतोवंका दुहतोवंका एकतोखुहा दुहतोखुहा चक्कवाला
अद्धचक्कवाला चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सत्त अणिया सत्त अणियाहिवती पं
तं पायत्ताणिए पीढाणिए कुंजराणिए महिसाणिए रहाणिए नट्टाणिए गंधव्वाणिए दुमपायत्ता
णियाहिवई एवं जहा पंचट्ठाणे जाव किन्नरे रहाणियाहिवती रिट्ठे णट्टाणियाहिवई गीतरती
गंधव्वाणियाहिवती बलिस्सणं वइरोयणिंदस्स वति सत्त अणिया सत्त अणियाहिवती पं ते
पायत्ताणिते जाव गंधव्वाणिते महद्दुमे पायत्ताणियाहिवई जाव किंपुरिसे रहाणियाहिवती
महारिट्ठे णट्टाणियाहिवई गीतजसे गंधव्वाणिताहिवती धरणस्सणं नागकुमारिंदस्स सत्त अणि
या सत्त अणियाहिवती पं तं पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिते रुद्दसेणे पायत्ताणियाहिवती जाव आ
णंदे रहाणियाहिवती नंदणे णट्टाणियाहिवई तेतली गंधव्वाणिताहिवती भूताणंदस्स सत्त अणि
या सत्त अणियाहिवती पं तं पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिते दक्खे पायत्ताणियाहिवती जाव णंदु
त्तरे रहाणियाहिवई रती णट्टाणियाहिवती माणसे गंधव्वाणियाहिवती एवं जाव घोसमहाघोसा

णिय० ॥ अश्वसैन्य ॥ नट्टाणिए० ॥ नाचनहारनउसमूह ॥ गंधवा० ॥ गायननउसमूह ॥ एवं जहा पंचठाणे तिइम ॥ सामंआसराया
पीढाणियाहिवई ॥ कुंथु रथाराया कुंजराणियाहिवई ॥ लोहितक्ख महिसाणियाहिवई ॥ इमआगलि पंणि धरणांद्रिनोपुतरिइ
सवदेवनानासानां सवनपतीनाइंद्रनी सेन्या अनइं सेन्याधिपतिजाणवा ॥ उत्तरस्त्रेणादेनी पतिइ ॥ ...मुहेण निम
धरस्सेइंद्रनइं तिमसर्वस्सवनपतीनाइंद्र महाघोसपर्यंत नइं केवलपायकनाअधिपति अनेसातरुनो नामपुविरुउ...

कच्छा० ॥ समूह ॥ जिमधरणेंद्रनइं तिमसर्ववनपतिनाइंद्र महाघोसपर्यंत नइं केवलपायकनाअधिपति अनेरा तेहनां
नामपुर्वइं सूत्रइं कह्यांछइ ॥ नाणत्तं० ॥ पायत्ताणियाहिवईणं० ॥ सक्रआदिप्रांणतिउपर्यंतनां पायकनाअधिपति
ते एकेकनइं आंतरइं हरिणेगम वीउणावउ ॥ अच्युतइं पांचमाआदिहरिणेगमषी ॥ इसानइं दूनइं ॥ ...

णं नियव्वं सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो सत्त अणिया सत्त अणियाहिवती पं तं पायत्ताणि
ते जाव गंधव्वाणिए हरिणेगमेसी पायत्ताणियाहिवई जाव माढरे रहाणिताहिवई सेते
णट्टाणियाहिवती तंबुरू गंधव्वाणियाहिवती ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरन्नो सत्त अणियास
त्त अणियाहिवती पं तं पायत्ताणिते जाव गंधव्वाणिते लहुपरक्कमे पायत्ताणियाहिवई जा
व महासेते णट्टाणियाहिवई रते गंधव्वाणियाहिवई सेसं जहा पंचट्ठाणे एवं जाव अच्चुतस्स
ति नियव्वं चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो दुमस्स पायत्ताणियाहिवईस्स सत्त कच्छाउ
पं तं पढमा कच्छा जाव सत्तमा कच्छा चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो दुमस्स पायत्ताणिया
हिवतिस्स पढमाए कच्छाए चउसट्ठिं देवसहस्सा पं जावतिता पढमा कच्छा तब्बिगुणा दोच्चा कच्छा
जावइया दोच्चा कच्छा तिगुणा तच्चा कच्छा एवं जाव जावतिता छट्ठा कच्छा तब्बिगुणा सत्तमा एवं बलिस्स
वि णवरं महद्दुमे सट्ठिदेवसाहस्सितो सेसं तं चेव धरणस्सवि एवं चेव णवरं अट्ठावीसं देव
सहस्सा सेसं तं चेव जहा धरणस्स एवं जाव महाघोसस्स नवरं पायत्ताणियाहिवती अन्ने ते पु
व्वभणिया सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो हरिणेगमेसिस्स सत्त कच्छाउ पं तं पढमा कच्छा
एवं जहा चमरस्स तहा जाव अच्चुतस्स णाणत्तं पायत्ताणियाहिवतीणं ते पुव्वभणिया देवपरिमाणं
इमं सक्कस्स चउरासीति देवसहस्सा ईसाणस्स असीति देवसहस्सा देवा इमाते गाहाते अणु
गंतव्वा चउरासीति असीति बावत्तरि सत्तरी य सट्ठीय पन्ना चत्तालीसा तीसा वीसा दससहस्सा जाव

अनं तरोक्तसर्वववनइकरीबोलीइ॥ तेसणो ववन नु विकल्पातात दक्त कहइछइ॥ बोलवानउ वेविकल्पाततेदातवचन विवक्त ॥आ०॥ थोडुसंबुं लायं०॥ बोलवुं तेआलाप॥ कुक्सितबोलवुं तेअनालाप॥ उल्लाप०॥ तेल्लाघानुंकरवुं॥ अनुल्लापतेअ वगुणानुं बोलिवुं॥ किहांएकअनुल्लापक०॥ वली२ बोलवुंत॥ संलापतेमाहोमाहिबोलिवुं॥ प्रलापते निरर्थकिबोलि वुं॥ एवचनमांहिं विकल्पमाहिंकोइएकविनयसहितपलिइ॥ तेसणो विनयमाहेदकहइछइ॥ अष्टप्रकारिकर्मएलिइक रीयपाबीइतेविनय॥ ज्ञानेंमितआदिपांचतेह॥ तेहीजयेविनय॥ अथवाज्ञाननउविनय०॥ भक्तिआदिनुंकरिवुं तेज्ञानविन यते ज्ञानी नहि॥ ज्ञाननइबहुमान। तेमांहइंकह्याअर्थ तुस्याचुं लाविवुं॥ विधिइंग्रहिइ॥ ज्ञाननउअभ्यास तेज्ञानविन ॥१॥ दर्शन०॥ सम्यक्तवतेहीजविनयतेदर्शनविनय॥ अथवा सम्यग्दृष्टिगुणाधिकसु सुश्रुषा अनासातनारूपजविषइ। ते

वुत्तस्स लहुपरक्कमस्स रसदेवसहस्सा जावा जावतिता बहुकडा तव्विगुणासत्तमाकडासत्त विहवतण विकप्पे पं तं आलावे अणालावे उल्लावे अणुल्लावे संलावे पलावे विप्पला वे सत्तविहे विणए पं तं णाणविणए दंसणविणए चरित्तविणए मणविणए वतिविणए का

द्दर्शनविनयातेहिंसुश्रुषा। विनयते। सत्कार१ अभ्युत्थाण२ सम्मानणो३ आसनाभिग्रहो तहय४ आसणमणुप्पयाणं॥५॥ किंइकम्म६ अंजलीग्गहोय।७॥ १॥ इंतस्सणुगछणया८ ठियस्स पज्जुवासणा सणिया ९। गछंतस्सणुवेयणं १०। एसो सुस्सुसणाविणउ॥१॥ सत्कारतेस्तवनवंदनादि॥ अभ्युत्थानतेविनययोग्यनइंदेषीनइं आसनछांडिवउं॥ सन्मानतेवस्त्रपात्रादिपुजवुं॥ आस नाभिग्रहतेऊभारह्याबइसवाआदरिइंकरीआसणआणवी बेइसउइमकहिवउं॥ आसनप्रदानतेबइसणानुंस्थानकतेथीस्था नांतरिमुंकावरिवउं॥ कितिकर्मतेद्वादसवर्त्तवंदनक॥ योग्यक्रियाकरवारूपसम्यक्तवनइंविषइएसुश्रुषाविनय अनासा तनाविनयतेवातुबोक्रियानिबलेवारूप॥ १५भेद॥ अरिहंत१ धर्म२ आचारिय३ वाचग४ थेर५ कुल६ गण७ संघ८ संभोगिय९ किरियाए१० मईनाणाईणयतहेव॥१५॥१॥ संभोगिकतेएकसामाचारीना क्रियातेअस्तिवादिकनउतघातीघं करवा॥ तघातीछेकरवाप्ररूप्याधर्मनी॥ अनासातनाईवर्त्तविउं इमए पंचलक्षणकरिवुं॥ कायबपुनतरजो॥ बहुमानतेहृयव ल्लभाजय॥ अरिहंतमाईगांपा णं॥ केवलनाणावसाणाणं॥१॥ एदर्शनविनयकहिउं॥ चारित्रविनयकहइछइ॥ चारित्रइंजअथ वा चारित्रनुंसदृहिवादिरूपतेविनयतेचारित्रविनय॥ आसेव॥ सामाइयादिचरणास्स॥ सद्दहणं तहेवकायणं॥ संफा सणं उपरूवणा॥ मदपरउसवेस आणं॥१॥ मनवचनकायानउविनयतेविनयकरवायोग्यनइंविषइ॥ सुसमनादिकनुं प्रवर्त्तविवउं॥ कउंच॥ मणवइकाइयविणउं॥ आयरियाईणसयकालंपि॥ अकुसलाणनिरोहा॥ कुसलाणमुदीरणंतहय॥ २०९

लोकनउउपचारव्यवहारतेणइकरीनइंअथवातेहीजविनय॥ तेलोकोपचारविनय॥ मनवचनकाया। लोक विनय प्रसस्ताप्रसस्तातेदिखाडिवाभेदप्रकारकहइछइ॥ सुत्र७ प्रसस्तातेसुमननोविनयप्रवर्त्तिविवुं॥ तेपसस्तमनविनय तिहांअपावकतेसुभचिंतारूप॥ सावद्यतेचोरीआदिनीचकर्मरहित॥ अक्रियतेकायिकाधिकरणक्यादिक्रि या रहित॥ निरुपक्लेशतेशोकादिबाधारहित॥ अणाहनकर॥ कर्मग्रहिवारूपआश्रवनउनिषेधतेहुनउकरणहार॥ प्राणातिपातादिआश्रवरहितइत्यर्थः॥ अछविकार॥ प्राणीनीपीडानउकरणहार। मननथी। व्यथकोजीवबीहइनही॥ तेअ भूताभिसंकनअभयंकरइत्यर्थः॥ एएकार्थइजसद्धछइ॥ नुणेसघनइंअतिप्रायइं लदज्ञाणवो॥ अथवाअनेरीपरिइंसेदजाण

यचिएण लोगावयारविणए पसत्थमणविणएसत्तविहे पं तं अपावते असावज्जे अकिरि ते निरुवक्केसे अणण्हकारे अछविकारे अभूताभिसंकणे अपसत्थमणविणएसत्तविहे पं तं पावते सावज्जे सकिरिते। सउवक्केसे अन्हकारे छविकारे भूताभिसंकणे पसत्थवइविणए सत्तविहे पं तं अपावते असावज्जे जाव अभूताभिसंकणे अपसत्थवतिविणइंएसत्तविहे पं तं पावते जाव भूताभिसंकणे पसत्थकायविणए सत्तविहे पं तं आउत्तंगमणं आउत्तंठाणं आउत्तं निसीयणं आउत्तं तुयट्टणं आउत्तं उल्लंघणं आउत्तं पल्लंघणं आउत्तं सव्विंदितजोगजुंज णता अपसत्थकायविणए सत्तविहे पं तं अणाउत्तंगमणं जावअणाउत्तंसव्विंदितजोगजुंजणता लोगोवयारविणए सत्तविहे पं तं अब्भासवतितं परछंदाणुवत्तितं कज्जहेउं कतपडिकतिता

वा॥ आउत्तं॥ सावधानपणइंहीडवुं॥ इमसर्वस्थानकई॥ ठाणं॥ तेऊभारहिवुं तेकाउस्सग्गादि॥ निसीयणं॥ बिसवुं॥ तुयट्टणं॥ सुवउं॥ उल्लंघनतेउंबरादिकनुं॥ प्रलंघवुंतेअर्गलादिकनुं॥ सर्वइंद्रीनाउपयोग॥ व्यापारतेहनुं॥ जुंजणया॥ करि वुं॥ अभ्यासवतियं॥ समीपिवइसिवउं॥ तेश्रुतादिकनइंअर्थइंआचार्यादिकेगुरुसमीपिंबइसिवुं॥ परछंदाणुवत्तियं॥ परनइंछांद इंवर्त्तवउं॥ कज्जहेउं॥ श्रुतपामवानइंअर्थइंहेतइं॥ अथवाएणइंश्रुतपमाडिउं। एणइंहेतइंतेहनउविनयकरवा॥ तेतत हेमानीनकरवो॥ कयपडिकतिता॥ सत्रुआदिकइप्रीणपछिता॥ गुरुप्रसन्नथास्यइ॥ तिवारिइ॥ प्रतिकृते॥ सुत्रार्थदेस्यइ॥ भक्तीदुः नइंउपगारकरस्यइ। एणइंहेतइंगुरुनेंनीसर्त्ताहिकइंसेकिरिइ॥

अत्र गवेसणाय० उपइयो ज्ञानइं प्रथमदिकनुं गवेषवनुं॥ तेथी ज्ञानइं कपगारकरिवो॥ अथवा थोतइं दाहिलासाहिलानोसा
रसंगालकरवी तेथी तानी॥ दसकालेनया० अवसरनइंजाणा॥ सद्यधे० सर्वअर्थनइंविषइ॥ अनुकूलमरणइंवरतेइं॥ विन
यथकीकर्मनउघातथाइ॥ अनइंसमुग्घातनइंविषइंविसेषथकीथकीकर्मनउघातछइ॥ तेननासमुद्घातकहइछइ॥ सं० एक
इभावइकरी॥ उत्त० प्रबलपणइकरी॥ घात० हणावुं ते निर्ज्जरा ते समुद्घात॥ जेहनइं जेणस्येघातिइएकीभावजइ॥ तेकहइछइ
आत्मा मइं वेदनाकषायादि अनुभवबी नाघेरिणामसंघातेइएकीभाव॥ किंवार आत्मा वेदनादिकना अनुभववानाउपयोगसंघांत
इपरिणम्याजइ तिवारिइं बीजउपयोगनजइ॥ वेदनानउतिमउपयोगजइ तेहणीएकीभाव॥ प्रबलपणइंघात ते किमजे
तेतांवेदनादिसमुद्घातइपरिणम्यो। घणावेदनीयादिकर्मनाप्रदेसकालांतरइंअनुभविवायोग्य हतातेहनीउदीरणा
नइकरवइ॥ आकर्षीउदयमइंविषइं॥ घातीनागवीनिर्ज्जरइ॥ जीवनाप्रदेससुंलागाछइ। तिहांथीझाटकइइत्यर्थः॥ इम
प्रबलघातावेदनासमुद्घातेतेअसुखवेदनीकर्मनोघात॥ कषायसमुद्घातितकषायनामोचारित्रमोहनीकर्मनइंविषइ
।तेकषायकर्मनापुद्गलउदयआव्याते निर्ज्जरइ॥ मारणांतिकसमुद्घातितेअंतर्मुहूर्त्तसेष आऊषुछतइहुइ॥ वैक्रिय

**अत्तगवेसए णाया दसकालेणाता सव्वत्थिसुअपडिलोमता सत्तसमुग्घाया पं तं वेयणासमु
ग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए विउव्वियसमुग्घाए तेयगसमु० आहारगसमुग्घाए के
वलिसमुग्घाए मणुस्साणं सत्तसमुग्घाया एं वेवव समणस्सणं भगवउमहावीरस्स तित्थं**

तेजस आहारकसमुद्घात तेसरीरनामकर्मनइंविषइं॥ केवलीसमुद्घात तेहजिवारुइं वेदनासुभासुभनामउच्चेनीचैगो
त्रकर्मनइंविषइ॥ तिहांवेदनासमुद्घातेआत्मावेदनीयकर्मनापुद्गलनइंझावकइ॥ कषायसमुद्घातइंसमुद्घात्योआ
त्माकषायनापुद्गलनइंझाटकइ॥ मारणांतिकसमुद्घातइंसमुद्घात्योआत्माआऊषाकर्मनापुद्गलनइंझाटकइ॥
वैक्रियसमुद्घातकरतासरीरथकीबाहिरजीवनाप्रदेसकाढीसरीरनापुद्गलपणात्यजतेलउ। जाडासंख्याताजोजननेउ
लोबोउटकरइकरीनइंयथास्थूलवैक्रियसरीरनामकर्मनापुद्गलझाटकइ॥ यथोक्तं॥ विउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ समोह
णित्ता संखिज्जाइं जोयणाइं दंडं निस्सिरइ २ ता॥ अहाबायरे पोग्गले परिसाडेइ॥ इमतेजसआहारकसमुद्घातपणिजा २०८
णिवो॥ केवलिसमुद्घातइंकरीकेवलीवेदनाआदिकर्मनापुद्गलझाटकइ॥ एसमुद्घातआवस्सानेउ॥ सेषअसंख्याता
ऽस्थाना॥ एसातइंपुरासमुद्घातमनुष्यमाहिंजाणवा॥ तेसणीकहइछइ मणुस्साणंसुगम॥ सत्तसमुग्घाया पत्ता॥ एवं
चेव॥ एकह्यातेसातइं॥

एसमुद्घातादिवस्तुतीर्थंकरिइंकह्या। तेअन्यथापरूपइंतेप्रवचनबाहिरिथाइ॥ जिमनिह्नवातेसणीनिह्नवकहइछइ॥ सूत्र
उ॥ प्रवचन० आगम० तेनिह्नवइं॥ उत्थापइते अन्यथापरूपइ॥ तेप्रवचननिह्नव॥ बहुरया० एकइसमइंवस्तुनीनिष्पत्ति
अणमानतो। प्रसतसमइंमानतो। घणासमानइंविषइरक्त तेबहुरत॥ दीर्घकाललैइंद्रव्यनीउत्पत्तिपरूपइं। इत्यर्थः १
एकप्रदेसतेहजजेहनइंजीवछइ॥ छेहलोप्रदेसतेजीवपरूपइंइत्यर्थः॥ २॥ अव्यक्त० अप्रगटवस्तुअंगीकरवाथकी
वइयइनइ तेअव्यक्तकासंयमादिकनइंविषइसंदेहबुद्धिइत्यर्थ॥ उत्पत्तिअनंतर। सर्वप्रणाइंकरीअतिहींयछेद०
विनासतेसमुच्छेदते॥ एकपरूपइतेसामुच्छेदक॥ द्विरार द्वौयैइकिलावनाप्ररूपकइत्यर्थ॥ ५॥ द्वेक्रियावोलइअघ
वाजाणाइतेद्विक्रिया॥ एकइसमइंबिक्रियानउअनुभवपरूपइइत्यर्थः॥ २॥ जीवअजीवनोजीवरूप॥ त्रिणिरासिप्ररूप
इंतेत्रैरासिक॥ ६॥ स्पृष्ट० जीवेइकर्मफरस्योपणिप्रदेससंघातिइस्कंधनीपरिइंबांध्योनही फरस्योथकोजिजीव

**मिसत्तपवयणनिह्नगा पं तं बहुरता जीवपातेसिया अवत्तिता सामुच्छेइता दोकिरि
ता तेरासिता अबद्धिता एतेसिणं सत्तण्हं पवयणनिह्नगाणं सत्तधम्मायरिया होत्था**

विषाकत्ते गवइइमपरूपइतेअबद्धिक॥ ७॥ धम्मायरिया० एकपरूपणारूपधर्मतेहनाजनायकतेधर्माचार्य॥ तेतेमतनाप्र
दसणासर॥ रसउरि॥ आर्यरक्षितस्वामी। स्वर्गपुहुतइ॥ दुर्बलिकापुष्पमित्रगच्छपालेछइ॥ तेहनइसिष्यविंध्यनामी। एणइं
गुरुकह्नइं आठमाकर्मप्रवादपूर्वनाअर्थसांभल्या तेमाहिलो आलजो उत्तरघोछइ। तिहांजईतेआगलिकह्यो जेकोइएकजीव
कर्मजीवनाप्रदेससंघातिइंफरस्यामात्रछइ॥ कालांतरइंनीकलीनइंअणम्यामवेइइंविघटइ॥ जिमसूकीभीतिनइंविषइंधूलिनीमूठी
फरसीनइंपाछीपडइ॥ काइएककर्मजीवप्रदेससुंफरस्यांतेबांध्याछइ॥ कालांतरइंविघटइते नोतीतिविषइ॥ सस्नेहबुर्लभमुंठिनो
परिइं॥ कोइएककर्मजीवसंघातिइंफरस्युबांधिउंनइंनिकाचितछइ॥ तेघणाइकालइदोहिलुंविघटइ॥ इमसांभलीगोष्ठामाहिलउ
तोबोल्यो॥ इमकर्मकृतउमोक्षनउअभावथाइ। जिमजीवनाप्रदेसउयानपडइ। तिमकर्मनिइंजीवउजानापडइ॥ जीवतेकर्मइफर
स्योछइ॥ कंचुकनीपरिइं॥ पणिबांध्योनथी॥ इमविधिमांमलीआवीनइंगुरुनइंकहिउं। मरताजीवनइंप्रसदेदीसइछइ। तातोआउ
षाकर्मनइंविच्छेदथाइछइ॥ जिमअउखाकर्मजीवथीअलगाथया। तिमबीजाइंकर्मजीवथीजूयाथया॥ तथाच्छीरनीरपरिइंजुदापाडीइंतुंआबाइ
छइ॥ तिमकर्मजीवप्रदेसेतउअनीदिनाछइएकठां॥ अनइंसुरिघाछइ जेसणीतेजूआंनपडइपणिकर्मतउफलदाइ॥ केतलेदिय
थाइ। केतलानवालागइ। तेसणीतेजूआंपडइ। तेघातेइमकहिछे। जीवकर्मइंफरस्योछइ। पणिबांधिओनथी॥ बधुकर्मपरिइंतउ

कंचुकनी परिइं फरस्यइ। तउ प्रदेस प्रतिइं फरसतो कहइ तो तेअसमुच्चउ। जणो कंचुक तो सर्वप्रदेसनइ फरसतो नथी।
तेनणो तेषो टकं। जउ इम कहइ कंचुकनी परिइं जीवमात्र इंफरसइ छइ कर्म तेपणि असमुच्चउं। प्रसत्तणो इम कर्म फर
स्यातो कुइ तो माहि जीवना प्रदेस कर्मरहित होइ। तिम तउ छइ नहीं॥ जिम मेलसरीरनो जीवा परइ पणि अंतरं गि
नथइ। तिम कंचुक वादिरि दिवाउ फरसइ पणि मांहि न फरस्यइं। इम कर्मनु फरसवुं नथी॥ इमइत्यादि कहिकं
गोष्टामाहिल इन मांस्तु तेनिह्नव थया एसा तमो॥ एसातमाहि जेकथा थिया छावल्या तस नइ निह्नव पणुं तेपुर्वि
लौ अवस्थाअश्राजाणिवु॥ उसमपूरं॥ राजग्रह॥ उत्वृकान दीनइ कांठइ जेनगरा त उलुकातीरं नगर॥ जे एहवइं ना
मिइं नगरी॥ ए निह्नव तउ संसार माहिं समत्ता मातात्रसाता तेलागवइ॥ साता पत्ता घकी अनुभावइं कहोइ॥
अनुभावे॥ विपाक न उदयरसइंसर्थः॥ मनोज्ञसप्तादिक तस्मातमा उदेनाकारण पणाधकी अनुभावइं कहीय॥ मननुसुत
तं तंमालि तीसयुरो आसादे आसमितायं ग उल्लुए गोहामाहिल ए ते निण्हा सत्तए पव
यणनिन्हगाणं सत्तउप्पत्ति नगरारिणं सावत्थी उसभपुरं सेतविया महिला उल्लुगतीरं पु
रिमंतरं जि दसपुरि निन्हग उपति नगराइं सातावेदणिज्जस्स कम्मस्स सत्तविहे पं तं अणु
ण्णा सद्दा मणुन्ना रुवा जाव मणुण्णा फासा मणोसुहता वतिसुहता असाय वे
यणिज्जस्सणं कम्मस्स सत्तविहे अणुभावे पं तं अमणुन्ना सद्दा जाव वतिदुहता माहाणक्ख
त्ते सत्त तारे पं अभितीयादिता सत्तणक्खता पुव्वदारिता पं तं अभीती सवणे धनिट्ठा सत्त
पणुतसातानां कारणपणा घकीसातानो अनुभाव॥ इमवचननु सुखपणुपणि॥ अथवा मनन्ने अथवो तुंसुखपणुं तेसातानो अ
नुभावतिसणोंसाता तेमनन इसुखइंछि छइ॥ इम वचनसुखपणि॥ एहथी विपरीत असातानउअनुभावजाणिवा॥ साता असा
तानाघणो देवता घणाइं छि॥ तिहणो देवनुंस्वरूपक हइ छइ पुव्वदारिया॥ अएनक्षत्र छइ तइ पुर्वदिसिइं चालीइं जीमेतइ॥ तेपुर्व
दारिकानक्षत्रकहीइ॥ इम आगलिपणि दक्षिणादिसिइं आदिजाणिवुं ईहीयां घमत छइ॥ तं॥ यतुआह॥ चंद्रप्रज्ञप्ती॥ तं तत्थ
तु इमाउ एवं पडिवत्तीउ पन्नत्ताउ॥ तंजहा एवमाउंसु कतियाइया सत्तनक्खत्ता पुव्वदारिया। पं। अन्नेपुण इम कहइ छइ
मघादिक॥ अन्नेरा॥ धनिष्ठादिक॥ अन्नेरा॥ अश्विन्यादिक॥ अन्नेरा॥ भरणीआदि॥ हिवइ एअनेकर मत नइ अनुसारिइं २०५

दक्षिणपश्चिमउत्तरद्वारिका सात २ पाठ अनुक्रमइं। न वृं त्रजाणिवां॥ वयंपुण एवं वयामो॥ अभितियाइयाणं सत्तनक्खत्ता
पुव्वदारिया पन्नत्ता॥ इम अनुक्रमइं लीठ तामत्तआश्री नक्षत्रनातुत्र प्रवत्त्यादी सहु छइ॥ अनइ लौकिकनइं विषइं॥
प्रथम मतआश्री प्रवर्तइ छइ॥ एनक्षत्र ए दिसि द्वारिक कह्या छइ तिणे दिसिइं तेनक्षेत्रइं जातां सुखकारी हुइ॥ एपुर्वदिसि
नइ विषइ सातनक्षत्र कह्या। ते उत्तरनइ विषइ मध्यम जाणवा॥ वनक्षत्र जिम कह्या छइ तेउलंघी विपरीत जाइं ते
महा कष्ट इ पडइ निःफलारंभ थाइं॥ देवताना अधिकार थकी। देवतानानिवासना कुडानासुत्र॥ सोमनसस्स मिगल
सिसता पुव्वसद्दव्वया उत्तरसद्दवया रेवती अस्सणिया दिताणं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिता
पं तं अस्सिणी भरणी कत्तिया रोहिणी मिगसिर अद्दा पुनव्वसु पुस्सा दिया णं सत्तणक्खत्ता अ
वदारिता पं तं पुस्सो आसिलेस्सा मघा पुव्वा फग्गुणी उत्तरा फग्गुणी हत्थो चित्ता सातिताति
ताणं सत्तणक्खत्ता उत्तरदारिया पं तं साति विसाहा अणुराहा जेट्ठा मुला पुव्वा आसाढा उ
त्तरा आसाढा जंबुद्दीवे २ सोमणसे वक्खारपव्वते सत्तकुडा पं तं सिद्धे सोमणसे नाम बोध
व्वे मंगलावतीकुडे देवकुडे विमलकंचणविसिट्ठकुडे तबोधव्वे॥ जंबुद्दीवे २ गंधमायणवं
क्खारपव्वति सत्तकुडा पं तं सिद्धे तगंधमायणे बोधव्वे गंधिलावतीकुडे उत्तरकुरुफलिहे लोहि
तारक आणंदणे चेव
देता देवकुरुनो पुर्वदिसिइं॥ कुट॥ सिखर॥ सिद्धायतन सिद्धकुट॥ तेसिद्धकुटमेरुनइ पासइं॥ इमसर्वगजदंतानइ वि
षइ। सिद्धायतनकुटजाणिवां॥ सिद्धकुट ते तिवारपछी परंपराइं॥ सोमनसकवपर्वतसरिषुं नाम तेपर्वतनाअधिष्टाता नासेव
नसहित॥ मंगलावती विजयइ निसरीपइ ना मइं देवता तेमंगलावतीकुटनउ धणी॥ इम देवकुरु देवनउ आवेस ते देवकु
रुकुट॥ अनइ विमलकुट अनइ कंचनकुट। एगुणनिःष्पन्न नामइं कुट तेवछी अनइ वत्स मित्रा नामा अधोलोकवासिनी
विदिसाकुमारी ना आवास छइ॥ विसिष्ट कुट ते ते विसिष्ट देवतानउ आवास॥ इम आगलि वर्णि॥ जंधमादनगजदंतकुत
हित कत्तरकुरुनो पश्चिमइ छइ॥ तेऊपरि स्फटिककुट लोहिताक्षकुट॥ ते लोगंकरानइ लोगवती नाम्ना अधोलोक निवासि
नीविदिसाकुमारीना आवास छइ॥ कुटनइ विषइ तउ पुष्करिणी छइ॥ तिमाहि ताविंइड़ी छइ॥ तेकणो सिइंहादुस्तु त्रे॥

[illegible]

खतिं वियाणं सत्त जाती कुलकोडिजोणीपमुहसयसहस्सा पं। जीवाणं सत्तहिं ठाणनिव्वत्तिते पो
ग्गले पावकम्मत्ताते चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा तं नेरतिय निव्वत्तिते जाव देव
निव्वत्तिते एवं चिण जाव निज्जरा चेव सत्तपतेसिता खंधा अणंता पन्नत्ता सत्तपतेसोगाढा पो
ग्गला जाव सत्तगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पं। सत्तमं ठाणं समत्तं॥ ७ ॥ ७ ॥ ८॥
अट्ठहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहति एगल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए
तं सड्ढीपुरिसजाते सच्चेपुरिसजाते मेहावीपुरिसजाते बहुस्सुयपुरिसजाते सत्तिमं अप्पाहिकर
णे धितिमं। सतमठाणंसमत्तं॥ ७॥ ॥ ॥ ७ ॥

[illegible]

२१०

[illegible]

यविरियसंपन्ने अट्ठविधे जोणिसंगहे पं तं अंडया पोतगा जाव उब्भिया उववातिता अंडगा अट्ठ
गतिता अट्ठागतिता पं तं अंडए अंडएसु उववज्जमाणे अंडएहिंतो वा पोतएहिंतो वा जाव उ
ववातितेहिंतो वा उववज्जेज्जा से चेव णं से अंडए अंडगत्तं विप्पजहमाणे अंडगत्ताते वा पोतगत्ता
ते वा जाव उववातितत्ताते वा गच्छेज्जा एवं पोतगा वि जराउया वि सेसाणं गतीरागती णत्थि जीवाणं
अट्ठकम्मपगडीओ चिणिंसु वा चिणिंति वा चिणिस्संति वा तं णाणावरणिज्जं दरिसणावरणिज्जं वेयणि
ज्जं मोहणिज्जं आउयं नामं गोत्तं अंतराइयं नेरइयाणं अट्ठकम्मपगडीओ चिणिंसु वा ३ एवं चेव

[illegible]

नाणं वा दंसणं वा अप्पणो वा परस्स वा ...

(left margin gloss) नाश्रद्धा रिहं ॥ यथा पापकर्म तत्प्रायश्चित्त पडिवजइ नही कारसुवा है ॥ मिडं अतीचार कीधा तउ किमानहनी निंदादिक सुगती कारामवा है ॥ स्वर्ण पणि अतीचार करूं छउं तउ अणानिवर्त्तीनइ आलोवना किसी ॥२॥

दाणि परतिछे । जाव कम्मं तराइयं त्तरस्याणं अट्ठकम्मं पउडीउ उष विणिसुवा ॥ तं ॥ जाणावरणिज्जं । जावकम्मं तराइयं ॥ एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं ॥ एवी ऊउडंडक ॥ दसअीउबंधमोडंडककरिजो ॥ तिमउदीरणा । वेद । निर्जरा । एकेको चउवीसडंडक ॥ अष्टविधि कर्मनु स्थितिवा दिक नुं हेतु मिसबोनई । तेहनउ विपाक आणतउ पणि मारा कर्मबंधादिकरी कोइकआलोइनही । तादृषादिक तउ । माई ॥ मायावंत ॥ माया ॥ ढांका पणइकरी माया सहित उ अतीचार तमायाई ऊकहीइ ते ॥ कडु ॥ करीनइ आलोइनही ॥ तेगुरुनइ निवेदइनही ॥ पडिक्कमइनही ते निंदाइ ... जाव माहिनो

एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं २४ जीवाणं अट्ठकम्मपगडीउ चिणिंसुवा ३ एवं उवचिण एवं चिण उवचिण बंध उदीर वेद तह णिज्जरा चेव एए चउवीसा २४ दंडगा ॥ तिहिं ठाणेहिं माई मायं कट्टु नो आलोएज्जा नो पडिक्कमेज्जा जाव नो पडिवज्जेज्जा तं करिंसु वाहं करेमि वाहं करिस्सामि वाहं अकित्ती वा मे सिता अवन्ने वा मे सिता अविणए वा मे सिता कित्ती वा मे परिहाइस्सति जसे वा मे परिहाइस्सति अट्ठहिं ठाणेहिं माई मायं कट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा माइस्सणं अस्सिं लोए गरहिए भवति उववाए गरहिए भवति आयाती गरहिया भवति एगमवि माई

कारस्या मिथ्याइ ॥ दुःकृतकेरा यावतउ । आलोचना किम नकरइ ते ॥ अकीर्ति एकदिसि गामि नो अप्रसिद्धि ॥ अवर्ण तिअर्द्ध सातस्वदिसिगामि नो अप्रसिद्धि ॥ पमादइनथी तेथास्यइ ॥ अवर्णता ॥ अपनय ॥ पुजास्कारादिक नुं टलवुं गुरुनइ थास्यइ ॥ तथा कीर्ति जस माहारो छे ते उदात ॥ परि ॥ हीणो थास्यइ ॥ पद ऊर्ध्व विपरीत कहइ छइ ॥ इहां माया वंत अनाचार सेववामइ अवसारइ । पणि आलोवादिकनइ अवसरि कहीनहीं ॥ मायावंत ॥ आलोवादिकमइ विकइ अणमावेसे ॥ माय ॥ अपराध ॥ कडु ॥ करीमइ आलोइ ॥ मायाई तमइ अणआलोइ एअनर्थ छइ । तकहइ छइ ॥ अस्सिं लोए ॥ एह भवमांहि गरहिउ छइ ॥ अतीचार पणइकरी निंदित थाथकी ॥ उववाए ॥ लोक किम निंदे छ ॥ पाथउ परलोक आदास्सम पकारा ॥ अम्ह वयउ जाता ॥ जातकवी जो विथ विथइ ॥१॥ उववा ॥ देवतानउ जन्म दितवाइ ॥ किल्विषादिक पणइ करी ॥ कालेव ॥ तेहीं विनिमिते इह नहीं ॥ तजातणइ वय तपाइ इत्यादि ॥१॥ आयाई ॥ तिहां थकी च्यवी मनुष्य उत्पन्नई अविनइ तिरे अहीतक जाइ आईई स्थव क्यादिक पणइकरी ॥ उत्कीचव ॥ ता बाविसेवइ हालं ॥ तमइ एल मूप गो ॥ नरिन्ने तिरस्व जोणीवा ॥ वाहीं दृष्टतु दुलहा ॥५॥३॥

(right margin gloss) नानिंदकु ॥ तिस्व समद्दो ॥ नो गर ॥ तगुरु समहे ॥ नाविऊहे छा ॥ अतीचार निवर्त्तीवइनही ॥ नाविसाहिछा ॥ सुनसावरूप पाणीइ अतीचार कंलक धपावइनही ॥ नो अकरणयाए ॥ वली अणकरवा पणाइ ऊठइनही

२११

एकमवि माइ मायं ॥ माया तअतीचाररूपमाया वंतकरी आलोइनही ॥ निंदइनही इत्यादि ॥ तस्सनइ ज्ञानादिमोक्षमार्गनी आराधना नहीं ॥ ऊकव ॥ लज्जाए ॥ विणय ॥ अऊसुएमएणविविकिछवे रियि ॥ १ ॥ जनक देति गुरुणं ॥ नकुति आराहगा ऊति ॥१॥ तविंतं नही ॥ ऊकव ॥ सवोवपमाइ उऊ छो ॥२॥ जेऊणइ सावे सल्ले ॥ अणुद्धियं उत्तम सद्धेव विसंव ॥ दुण उझेवा ऊणाई विचाला ॥ जंतं वडुप्पऊतं ॥ सव्वो वपमाइउऊ छो ॥२॥ ४ ॥ एगमवि ॥ माया वेतीय अतीचार रूप माया करीनइ आलोए । निंदकालंपि ॥ उल्लइ द्धोदायतं ॥ अणंतसंसारियं तं वा ॥३॥ ४ ॥ एगमवि ॥ तरोयरि ॥ माएध लियमाउलो ॥ मरणराहऊ जोसा ॥ ऊवं दुइ इत्यादि तेह नइ आराहनाछइ ॥ मदाइ ॥ उछरियमशृंसल्लो ॥ संशोयरिमाएधलियमाउलो ॥ घणी माया रूप अतीचार रूप सेवीनइ आलोइनहीं ॥६ घणी माया अतीचाररूप सेवी देगविष्णुम्माणाइ ॥१॥ ५ ॥ बेऊ उवि ॥ घणी माया रूप अतीचार रूप सेवीनइ आलोइनहीं ॥ आयरिय ॥ से ॥ माहारा आचार्य कथाभायनइ अतिसइज्ञान दर्शने जिको दिइ कपऊस्यइ तिवारि मुऊनइ नइ आलोइ ॥ ७ ॥ आयरिय ॥

एगमवि माती मातं कट्टु नो आलोएज्जा जाव नो पडिवज्जेज्जा णत्थि तस्स आराहणा एगमवि माती मायं कट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा अत्थि तस्स आराहणा ५ बहुओ वि माती मायं कट्टु नो आलोएज्जा जाव नो पडिवज्जेज्जा नत्थि तस्स आराहणा ६ बहुओ वि माती मायं कट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा अत्थि तस्स आराहणा ७ आयरिय उवज्झायस्स वा मे अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जेज्जा से य मममालोएज्जा ८ माती णं एस माती णं मायं कट्टु से जहा नामए अयागरेति वा तंबागरेति वा तउआगरेति वा सीसागरेति वा रुप्पागरेति वा सुवन्नागरेति वा तिलागणीति वा तुसागणीति वा भुसागणीति वा नलागणीति वा दलागणीति वा सोंडियालिंछाणि वा

अवुलोकई । तिवारि मुऊनइ जाणस्यइ । जमइमायावी उ आलोइ ८ ॥ त्यकदिकं । इहलोक परलोक अमइ देवतामांहि अवलोकई । तिवारि मुऊनइ जाणस्यइ । जमइ मायावी उ आलोइ ॥ तिविस्तारी कहइ छइ ॥ मायानउ करणहार मायावंत इहलोकइ किसुबोछइ हकी तिसउ पजरइ तिहां मायावीउ गरहित छइ ॥ ते विस्तारी कहइ छइ ॥ जामए ॥ सत्ता वनाविषइ ॥ अधवी अलेकार नइ अपिइ ॥ जिहां लोहउं तकहइ छइ ॥ सम ॥ ते ॥ जहा ॥ जहा दृष्टांतनइ अर्थइ ॥ नामए ॥ तुसा ॥ कोद्रवादिक नोछ्का तिरानी अग्नि ॥ तुसा ॥ जवादिकनाउ धमोपलत आगर ॥ तिलागणी ॥ तिलमाकरलानी अग्नि ॥ तुसा ॥ कोद्रवादिक ... अग्नि ॥ भुसा ॥ जवादिकनाउ ... पर्वतनासिधसातहना अग्निनो परिइ ॥ नलागणी ॥ नालातीरनइ आकारइ तेबघाडातस्नी अग्नि नो परि ॥ अथवानलो ॥ पर्वतनासिध ... दलागणी ॥ पानडांनी अग्निना परिइ ॥ सोंडीया ॥ पटीनइ आकारइ मद्यनाघाडा ... अग्नि ॥ लिंछाणि ॥ चुरुलानासस्थानक संता वीइ छइ । तमदिरापचिवानी अग्नि ॥ आनय आचार्य ... जावीइ छइ ॥ तिरुनाय ॥ लिंछाणि ॥ चुरुलानासस्थानक संता वीइ छइ ॥

एसोंडीयादिकना अर्थ दिसचिसाद्दइं प्रसिद्ध छइ तिम जाणवा ईमकहइ छइ अनइ असइ देवसुरि इमकहइ छइ मिइंघा गनापचवानउ अग्नि तद्धनइ लदइं अर्थ कोधलइ तेडीया० सोंडलीयादिकनी लिं० चुल्हलीनउ अग्नि गोलिया० तेमाटीहांडलो तेगोली प्रसिद्ध कुंभकारनउ नीडपचवानउ स्थानक तेनीहमातद्धनउ कवेलुता आवाय० नीभा द्धनउ यंत्रवाड चुल्हलीत० नलडीनावाडनी चुल्हलीनउ लोहार बरिसाणि० लोहारनी अंबरीष० साठी तेआगर तद्धनउ तत्ताणि० उन्हा समजोईभू० जातिसपणा थकां सम० तुल्य जोई० अग्निसरीषा थया किंसुय० केसुयाना फुल० विकस्या समाणाणि० तेसरीषा रातां पणइ करी उक्का० उल्कापातसरीषी अग्निनां पिंडउ देवा तद्धनासिद्ध एतलइ सहस्रसषइं प्रचुरपणउं जाणवुं विणमुंच० मूंकतो बेवार कह्या ते अत्यंतपणउं जणावानइ

संडितालिंछाणि वा गोलितालिंछाणि वा कुंभारावाततिवा कावेल्लुयावाततिवा इट्टा
वाततिवा जंतवाडचुल्लि त्तिवा लोहारंबरिसाणिवा तत्ताणि समजोतिभूताणि किंसुकफु
ल्लसमाणाणि उक्कासहस्साइं विणिमुंचमाणाइं २ जालासहस्साइं पमुंचमाणाइं २ इंगा
लसहस्साइं पविक्खिरेमाणाइं २ अंतो २ झियायंति एवामेव मायीमायं कट्टु अंतो २ झि
यायति जति वियणं अन्नेकेति वदंति तावियणं मायी जाणति अहमेसे अभिसंकि
ज्जामि २ मायी णं मायं कट्टु अणालोतितपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु दे

इंगार० नाकणकडा अनेअग्निना कणो तेहनासहस्र वीषरतो अंतो २० मांहिमांहि बलइ अग्नि एदृष्टांत कहि कें हिवइ दार्ष्टांतिक कहइ छइ एवामेव० इमभायावंत अतीचारकरीप्रछा तापकरीपणो अग्निमांहि प्रज्वलइ यद्यपि कोई आनकोई बोलइ तिवारिं इं मायावंत जाणइ अहमेस० अभि० शंका दोषपणइं करीनइं सहित छउं ते नरा रथमा करीवातकोईकरताछइ ॥ ऊं एहनइं संकाकरवासरीखो छुं तेसणी ॥ तउं हि ॥ निद्धंस ॥ कियतोअ अपुण्यासवइ छुं केरुव लियस्वा तिन्ना ॥ मा कुडेराग अवाण ॥ मउवि बुराण ताइ जाई ॥ ते पाइ करी नइं अणालो अहु काला केइ गई हिं तकहिउ ॥ असे ते नइ पालोकइ गई हिं तेकुरनी गाते पिमाडणमा थुकइ इत्यादि एक करी पस्तावि सुदि तेकरवी ॥ कालमासे० मरणनइं मास ॥ मरणनइं दिवसइ ॥ मरण करीनइ काल किच्चा ॥ मरणकरीनइ ॥ २१२

अ० एउ० विंतरादिकमांहिलोअनेरा देवलोक माहिं देवपणइ ॥ उववत्ता० उपजइ ॥ तं नो महिड्डि० ॥ महद्धिक देवा दिकनीरू ऋद्धि करीमहर्द्धिकनही ॥ महाद्युति विशरीरआभरण ॥ महानुभाग तेवैक्रियादिकनी शक्तिसहित ॥ नो दूरंगति ॥ महासौख्य तमोहासौधर्मनउ धणी अघवा माटी तेकुणाईनउ धणी ॥ एतला सहित आलेमाहिं संभिष्या नइ ॥ नो दूरं० ॥ धर्मादिक गति नइ विषइ नही ॥ नो चिर० ॥ एवेक्रआदि सागरोपमनी स्थितिनइ विषइ नही ॥ जाविय० ॥ सं० ॥ तमह ॥ ते देवलोकनइं विषइ ॥ बाहिरिबी० वेगली परिषदा दासादिकनी परिइं ॥ अभितरिया० ढुकडी परिषदा पुत्रकलत्रादिकनी परि इतपणि ॥ नो आढाइ० ॥ आदरमकरइं ॥ नो परि० ॥ स्वामी पणइं नमानइ ॥ महारिहेण० ॥ महायोग्य आसणइं निमंत्रइं नही

वलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति तं नो महिड्डिएसु जाव नो दूरंगतिएसु नो चिरट्ठितीएसु
से णं तत्थ देवे भवति णो महिड्डिए जाव णो चिरट्ठितीए जाविय से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भ
वति सावि य णं णो आढाति णो परिजाणाति णो महारिहेणं आसणेणं उवनिमंतेति भासं
पिय से भासमाणस्स जाव चत्तारि पंच देवा अणुत्ता चेव अब्भुट्ठेंति मा बहुं देवे भासउ २ से णं त
तो देवलोगाउ आउक्खएणं भवक्खएणं ठितीक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव माणुस्सए भवे जाइं
इमाइं कुलाइं भवंति तं अंतकुलाणि वा पंतकुलाणि वा तुच्छकुलाणि वा दरिद्दकुलाणि वा भिक्खागकु

किंबहुना ॥ अतिदासागीयामारइ भासंपिय० ॥ सा बापणि बोलतां तेहनइं च्यार पांच देवतानुं बोलवुं वारवानइं काजइं अवुत्ता चेव० अणकह्या ऊठइं ॥ मा बहुं दे० ॥ घणुं म बोलि । एराकरीनइं अपमानगर्हा करी ॥ २ ॥ हिवइं आजातिकगर्हा कहइ छइ ॥ सेणं० ॥ ते अणालोचकनइं ॥ तउ देवलोगाउ० ॥ तिहां नरकप देवलोकथकी ॥ आउ० ॥ आउखा कर्मना पुद्गल निर्जरिवइं ॥ भवक्ख० ॥ आउखा कर्मना कारण देवताना पर्यायनइं नासवइ ॥ ठिइ ख० ॥ आउखानी स्थितिबंधनइं अथवा देवतवनो कारण । तेहास थकमनइं हाइं ॥ अणंतरं० ॥ आउखानाहमादि अनंतर ॥ चयं ॥ च्यवउ ॥ चइत्ता० ॥ करीनइं ॥ इहेव० ॥ एअसत्य समनुष्यलवनइं विषइं ॥ पुमत्ताए० ॥ पुरुषपणइ ॥ पच्चायाइ० ॥ उपजइ ॥ कहवा कुलनइं विषइ ॥ अघवा कुल० ॥ कहवा कुटंबनइं विषइं ॥ जाइं० ॥ जे० इमाइं० ॥ आगलि कहीस्यइ तेतलं प्रसिद्ध ॥ अंतकुल ते वरूड कुली ॥ पंतकुल ते चांडालादिकनां ॥ तुच्छकुल ते अल्पम नेरअथवा गंभीरपणारहित तो छडो ॥ दरिद्दकुल ते निर्धन ॥ भिक्षाचरतमागइ ॥

ऊपणकुलतयावकलाटवारणादिकनां॥ अथवा लिंगीना॥ तद्दृष्वा॥ ओमकुला ि॥ ...ई॥ पुरुषपणइ ऊपजइ॥ ण॥ तिहांपुरुषघाइ॥ पणि केहवउ छइ तेकहइ छइ॥ अनिष्ट ति अयोग्य नइ हस्पष्ट की बोलीइ तेइष्टि तिमनइ ही तेअनिष्ट॥ अकंत॥ तेकांति त्यागरहित॥ अप्रिय॥ प्रीतिभ्रमरहित॥ अमनोज्ञ तेसुस्वरस्वभावरहित॥ अमणाम॥ एसास्वरूप पणाघकी मन इंकरीनिरंतरस्मराइ एहवारहित॥ हीणस्वरतहकडोस्वर॥ दीनस्वर॥ दीनपणासहित तायस्वरूपतइन कस्वर पणि सीनस्व कहीयइ॥ अनादियवचनसहितछइ॥ पच्चायाइ॥ उपजउ॥ तेमणुगामजावलासउ॥ पणाइकरीनइआजातिगं हकही॥ सिंव विमरी तसुत्रकहइ छइ॥ हारविरा॥ हारइंकरीनइसोलीकं कइइकइयालसनुं॥ कटक॥ कोकण॥ तुडिय॥ बहिरमा

लंयाणीवा छिन्नणकुलाणीवा। तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायांति। सेणं तत्थ पुमे भवति दुरूवे दु वन्ने दुगंधे दुरसे दुफासे अणिट्ठे अकंते अप्पिए अमणुन्ने अमणामे हीणस्सरे दीणस्सरे अणिट्ठस्सरे अकंतस्सरे अप्पियस्सरे अमणुन्नस्सरे अमणामस्सरे अणाएज्जवयणपच्चाया ते जाविताए तत्थ बाहिरपरियाणिया परियाणवति सावियणं णो आसाति णो परियाणंति णो मरिदि णं आसणेणं उवणिमंतंति। सेणं तेसि एयारूवेणं आउसंतो समणाणं जाव चत्तारि पंच जणा अवुत्ता चेव अब्भुट्ठेन्ति मा बहु अज्जउत्ते भासउ २। मातीणं मातं कट्टु आलोइयपडिक्कंते कालमासे कालंकिच्चा अन्नयरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति। ते णं तत्थ देवे भवति महिड्ढिए जाव चिरट्ठितीए... सेणं तत्थ देवे भवति महिड्ढीए जाव चिरट्ठितीए हारविराइतवच्छे कडगतुडियथंभियभुए अंगदकुंडलमट्ठगंडतलकन्नपीढधा

लणा करी घसी छइ तेजा जिहनी॥ कन्नपीढधारी॥ आसन॥ ईहांकुंडलनाआधारमाटइं॥ कांनतिणांथकहीइ तेकर्णपीठ॥ मठ॥ घा टा॥ गंडतलं॥ गोलनातलाजेणइंकुंडलिंकरीतमहष्टगंडतलकर्णपीठतेहजे कुंडल॥ अंगद॥ अंगदबांहुआ सरणा ते ... धरणाहा॥ अथवा अंगद कुंडलअनइकुंडलिइंकर्णघा तगगालातम महगंडतलो॥ समइकर्णपीठतिकामनउआसरणातेइ रज धरी॥ धरणहार॥

Dr. BHAU DAJI
डाक्टर भाऊदाजी इत्यास्यस्मारकम्

२१३

विचित्त॥ विविध॥ हत्थाभरणे॥ मुंदडीआदिकछे जेहनइं॥ विचित्रवस्त्र नइंआ उरणछे जेहमइ॥ अथवा विचित्रवस्त्र रूपआभ रणछे जेहनइं॥ अविवः॥ विचित्रवत्थाभरणे॥ विविधप्रकारिइं अवस्था योग्यआभरणछइ यस मइ॥ विचि त्रप्रकारनां फुलनी माला॥ मउलि॥ सिषरमुगटविशेष॥ अथवा विचित्रमालानउ॥ मउलि॥ सिषर छे जेहनइ॥ कल्लाण॥ मो गलिकीयां॥ प्रवर॥ मुल्यादिकइंकरीप्रधान॥ एहवोवस्त्रछेजेणइ॥ परिहिए॥ परिहिस्यां पहिरया छइ॥ कल्लाण॥ मागलकीक॥ पवरप्रधान पा गोतरिइं मदरगंध॥ मल्ल॥ फुलअनुलेपन॥ सुकडिआदिनुं विलेपन॥ तेहनउ॥ धर॥ धरणहार॥ लासर बोंदी॥ झलझलतुंस रीर॥ प्रलंबायवनमाला आ तर्लविसिष॥ धरि॥ तेहनउ धरणहार॥ दिव्वेणं॥ प्रधानवर्णइंकरीनइंसहित॥ संघातं॥ वज्ररि

री विचित्तहत्थाभरणे विचित्तवत्थाभरणे विचित्तमालामउली कल्लाणगपवरवत्थपरिहिते कल्लाणगपवरगंधमल्लाणुलेवणधरे भासरबोंदी पलंबवणमालधरे दिव्वेणं वन्नेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं रसेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघातेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुत्तीए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दसदि साओ उज्जोवेमाणे पभासेमाणे महया हतनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंग पडुप्पवाइतरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ जाव ततो बाहिरपरियाण परिसा

पलनाराचसंघयणरूप॥ संस्थानात समचउरंसरूपइंकरी॥ रूधि तविमानादिकनीइंकरी॥ जुताए॥ अन्योन्यतनिकरी॥ पभा ए॥ तथाविधिद्रव्य जोडवानइ तिप्रभावइं तिमाहात्म्यइंकरी॥ छायाए॥ प्रतिबिंबरूपइं॥ अच्चिए॥ सरीरथीनीकलीतेजनीझाला इंकरी॥ तेएण॥ तसरीरमांहिरहीथकांतिकरी॥ लेस्साए॥ माहिलापरिणामरूपसुलेश्यादिकइंकरी॥ उज्जोवेमाणे॥ स्थूलवस्तुनादे खाडवाथकी॥ पभासेमाणे॥ सूक्ष्मवस्तुनादेखाडवाथकी॥ एसघलाइंएका र्थजछइ॥ पणिप्रबलपणुजणाववानइ कारइं॥ आहया॥ महया॥ प्रधाननइं अथवामोटइं॥ अहय॥ निरंतराय॥ नट्ट॥ नाटिक तेहसहितगीत वाइय॥ वजाडीइ॥ तंती॥ वीणा॥ तल॥ हाथ॥ ताल॥ कंसाला॥ तुडिय॥ पडहादिकवाजित्र॥ घनमृदंगतेमहनासरी जेध्वनि॥ पडुप्पवाइए॥ डाहपुरुषिइं वजाडयां॥ रवेण॥ तेहनइरसइंकरी॥ अथवा॥ आहतनट्टगीय॥ आख्यानकनाप्रतिबंधसहितजेनाटिक तेसहितजेगीतते॥ संघतिमहइजे

समुद्धइ॥ वाजित्र मादिउ मदंगआवइजा॥ पणि ज्ञाऊथ दिक तेअवगापमुंजाणवानइ॥ सतउव्यते॥ महिलसारइंदुराइ॥ लिग॥ लोगावलाउ॥ लोगाइ॥ लोगादिलोग लोगवतक॥ विहरइ॥ कीडाकरइअनइं तिसिइ॥ तासंपिय॥ ते प्राणीत हनइबो लतानइं॥ एक बोला वच्चार पांच दिवतां॥ अतिशायइं॥ स्वामिपणाथकी॥ अबुल्या॥ कणइअ लोकस्यो॥ बोलवानइ विषइ॥ प्रवर्त्ता विवानइं काजइ॥ अथवा बोलइ छइ तेवा भलुं लागइ छइ तेउणावानइं काजइ॥ अ अणु॥ ऊठइ॥ बहु देव॥ घणु बोलतउ॥ तहसां के बोलुं घणुं भाव ऊं लागइ छइ रणइ करीनइं आलोचनारनइं॥ उपपातअगादीतक द्विके॥ पहइक्क हिवाथकी॥ इहलोकिपति अगहितजाणवु॥ तेइमआलोचनउकमहिलनाकरइ॥ कुलादऊपजइ तेसणा॥ आलोच

भवति सा विय णं माढाइ परियाणाइं महारिहेणं मासणेणं उव निमंतति तासंपिय णं तास माणस्स जाव चत्तारि पंच देवा अवुत्ता स्वव अब्भुट्ठेति बहुदेव तासे उ २ सणो ता हादे वालाणाता आउरकयणं ३ जाव वइत्ता इहव माणुस्स एस विकाइं एमाइं कुलाइं भवंति अड्डाइं जाव बहुजणस्स अपरित्तयाइं तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाति सेणं तत्थ पुमे भवति सुरूवे सुवन्ने सुगंधे सुफासे इट्ठे कंते जाव मणामे अहीणस्सरे जाव मणामस्सरे

विउल॥ घणा॥ भवन॥ घर॥ सयण॥ पल्यंकादिक॥ आसन॥ सिंहासनादिक॥ जाण॥ रथादिक॥ वाहण॥ विसरादि कऊकुलनइ विषइ छइ॥ किसांएक॥ वाहणाइं आपात॥ तिहां पूर्वोक्त बोलइ करीनइ आकीर्ण॥ सहित ते कोल॥ बहुधण॥ घणुधन गणिम धरिमादिक छइ। यहनइ विषइ॥ बहुजायरूव॥ घणुं सोनुं॥ रूपुं तेवो छइ तेनइ विषइ॥ आउग॥ विमणादिकलाइ करीनइ॥ पउग॥ द्रव्य तु अनेरानइं दिउं तेणइ करीनइ संप॥ सहित॥ विछ॥ घणा जननइं लोगवदइकरीत नष्टाणा अथवा॥ विविध प्रकारनि भिन्न वाधवास रिष्ठी वस्तु॥ वाटवासरी थी वस्तु॥ पाना पानप्रकृइ॥ इत्यादिय आहारनालदंनी तुरछइ एहवे कुलनइ विषइ छइ॥ घणा दासी दास अनइंगाइ सथितिगाय॥ बलद॥ पलगा॥ फेटा॥ ए अपरा भवनीय अथवा घणा लोक पणि सरासवीइनदी॥ अकउ अ॥ आर्यपापकर्म रहित त्यमातापिता तिहनउ पुत्र तेआर्य पुत्र यतलइ अनिलोजकथकी इस्याजा ति विपरीतक्कही॥ आलोचनानउ दारराग ते तउ संवरवंत कइ ते तेणा संवर

ना नागुणानां गाथा॥ लाघअ लोयऊ णिणं॥ अप्प पर निय त्रि अइवेसो हो॥ दुकरक रणो आनि मल ते वेसो हि गुणा १॥ हिवइ तेहन इ आमाणा ति अगहि तकहइ छइ॥ अदाइ॥ धनवंत॥ जा वमाहि दि प्राइ॥ प्रसिद्ध अथवाद वंत॥ विछ न॥ विस्ता

२१४

रवंत॥

अनइ संवरथकी विपरीत ते असंवर कहइ छइ॥ सुगम॥ अनंतर काय नउ असंवर कहिउं॥ अनइ काय उ फरस छइ॥ ते फरस कहइ छइ॥ सुगम॥ फ आव फरसतो लोकस्थिति छइ॥ ते लोकस्थितिके हइ छइ॥ एकउ आवगां लोगते॥ उदहीपइ ठिया॥ पुढवीए॥ घणोदधि क परिआवियारही॥ पुढवीपइठिया तथा थावरा पाणा॥ तेमनुष्यादिक॥ अजीवाजीवपइठिया॥ ते सरीरादिकना पुद्गल॥ जीवकम्मपइठिया॥ ते कर्मनइ विसव हि॥ अजीवा॥ पुद्गल आकासादिक॥ जीवसंगहिया॥ ते जीवनइं ग्रह्या छइ जिसतणे अजीव विना जीवनउ सर्वव्यवहारनव्रवर्तइ॥ जीव ते ज्ञानावरणी आदिकक

आदि छवयणं पच्चायाति आवियास तच्चा दिर झंतरिया परिसा भवति सा विय णं आढाति जाव बहुमहत्तरा तासउ २ अट्ठविहे संवरे पं तं सोतिंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे मण संवरे वतिसंवरे कायसंवरे अट्ठविहे असंवरे सोतिंदियअसंवरे जाव कायअसंवरे अट्ठ फासा पं तं कक्खडे मउते गरुते लहुते सीते उसिणे निद्धे लुक्खे अट्ठविहा लोगट्ठिती पं तं आगासपतिट्ठिते वाते वातपतिट्ठिते उदही एवं जहा छट्ठाणे जाव जीवा कम्मपइट्ठिया अजीवा जीवसंगहिया जीवा कम्मसंगहीया अट्ठविहा गणिसंपया पं तं आचारसंपया सुयसंपया स रीरसंपया ३

सइ संगृहिया॥ बांध्या॥ छ गोबोल तेहनइं विषइ जीवनइ कर्मनिउ आधार विषसो छइ॥ अन इ हांत जीवनइ अनइ कर्मतिइ संबंध मवसो छइ ए विसेष॥ एलोकस्थित्यादिक संपदावंत आचार्यथकी जाणीइ॥ ते सणो गणसंपदा कहइ छइ॥ गणी॥ समुदाय॥ अथवा गुण अनइ अतिसयवंत साधुनउ समुदाय तेहनउ धणी ते गणी आ चार्य॥ तेहनी संपदा तेतावंतपणु॥ तिहां आचार ते अनुष्ठान तेहनी संपदा अथवा संपदा॥ तेहना आ प्रति विकल्प दिइ॥ संय मनइ विषइ ध्रुवयोगयुक्तपणुं ते वारित्रनइ विषइ नित्य समाधि सहित इत्यर्थ॥१॥ असंपग्रहित पोतानी जाति आदिनी अभि मानरहित॥२॥ अनियतवृत्ति॥ अनियतविहारइ इत्यर्थः॥३॥ वृद्धसीलपणुं ते सरीरनुं मननुं निर्विकारपणुं॥४॥ श्रुतसंपदा ज्यार प्रकार॥ बहुश्रुतपणुं ते सिद्धांतनउ पारगामी॥१॥ परिचितसूत्र॥२॥ स्वसमय परसमयासिद्धि करी विचित्र सूत्र॥३॥ उ दात्तादि स्वर इंकरी घोषविसुद्ध करइ॥४॥ सरीरसंपदा चिकल दिइ- प्रमाणोपेत अनइ ऊंचपणुं अनइ विस्तारपणुं॥१॥ अलजनीय अंग॥२॥ परिपुर्ण इंद्रिय ३॥ स्थिरसंघयण ४॥ ५॥

वचनसंपदा विज्ञातिदिइ ॥ आदेयवचन १ ॥ मधुरवचन २ ॥ अनिश्रित तमध्यस्थवचन ३ ॥ असंदिग्धवचन ४ ॥ वाच
ना संपदा विज्ञातिदिइ ॥ उद्देसन समुद्देसना योग्य सिष्यादिना मिकाबुद्धि जाणी इ ॥ १ ॥ परिणति जाणी वाचना तु परिणमावि
दिइ ॥ अवग्रह ॥ १ ॥ ईहा २ अपाय ३ ॥ धारणा ॥ ४ ॥ प्रयोगसंपदा विज्ञातिदिइ ॥ प्रयोगवाद ॥ तिहां आत्मापरिज्ञान तेवाद
मइ विषइ पाताना सामर्थ्य ईं जोइ ॥ १ ॥ पुरुषपरिज्ञान तिहां गल्योसु कहइस्यइ ॥ २ ॥ क्षेत्रपरिज्ञान ३ वस्तुपरिज्ञान
तवादि असुंमा रिइं राजा प्रमुख ॥ ४ ॥ संग्रह ॥ ४ ॥ अंगीकरिवु तिहां परिज्ञा ॥ ५ ॥ ज्ञानत आठमी विज्ञातिदिइ ॥ कालादि
वयणसंपया वायणासंपया मतिसंपता पातोगसंपता संगहपरिणा नाम अट्ठमा एगमे
गणं महानिही अट्ठ चक्कवाल पतिट्ठाणा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते अट्ठ समितीतो पं
तं इरियासमिती भासासमिती एसणासमिती आयाणभंडमत्त उच्चारपासवणसमिती मणस
मिती वइसमिती कायसमिती अट्ठहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहति आलोयणा पडिछि
त्याग करे ॥ १ ॥ पादफलगादिकनइ विषइ ॥ २ ॥ अथवा सरिसस्वाध्याय शिक्षादिकनइ विषइ ३ ॥ यथोचित विनयनइ विषइ ॥ ४
आचार्यादिकनउ गुणरत्नता मिथ्या नकरइ ॥ तिननी मिथ्यानुकरइ करइ ॥ ५ ॥ एककहानि चिकवर्त्तिन्नइ ... ॥ पइइ
६ ॥ प्रतिरूप ॥ प्रतिसमस्त ... ... समिति ॥ ईर्या ॥ बालबालनइ विषइ ॥ ... समिति ॥ ...
२ ... ... तिहां ... ... ॥ ... ॥ ... ॥
... ... वस्त्रादिक पगरण ॥ मा
का ॥ ... ॥ ... ... समिति ॥ ... ... ॥ २९५
... ... ॥ समिति ... ... प्रायश्चित्त ... ॥ २९५
कहइ ॥ आयारवं ॥ ज्ञानादि पांच आचारवंत ॥ आहारवं ॥ ज्ञान ... आलोयणा ... आचारवंत ... ॥
... ॥ ववहारवं ॥ आगम १ श्रुत २ आज्ञा ३ धारणा ४ जीत ५ ... ॥ उव्वीलए ॥ ...
... ॥ ... ॥ आलोचना ... ॥ पकुव्वए ॥ आलोचिउ तइ ... ॥ अपरिस्साई ॥
आलोचना ... ॥ निज्जवए ॥ ... प्रायश्चित्त ...
... ॥ अवायदंसी ॥ अपाय ॥ अनर्थ ... प्रायश्चित्त ...
... ॥ ... ॥ अनर्थ ॥ २ ... ॥ विवेगा
त्तात तं आयारवं आहारवं ववहारवं उव्वीलए पकुव्वए अपरिस्साती निज्जवए अवायदं रिहे ॥ अ
सी अट्ठहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहति अत्तदोसमालोतेत्तए तं जातिसंपन्ने कुल सुद्ध आहा
संपन्ने विणयसंपन्ने णाणसंपन्ने दंसणसंपन्ने चरित्तसंपन्ने खंते दंते अट्ठविहे पा रनइ ... उव
यछित्ते पं तं आलोयणारिहे पडिक्कमणारिहे तदुभयारिहे विवेगारिहे विउस्सग्गारिहे सुद्ध थाइ ॥
तवारिहे छेयारिहे मूलारिहे अट्ठ मयट्ठाणा पं तं जातिमते कुलमते बलमते रूवमते सुते विउसग्गा
... ॥ ... अनर्थ ॥ ... ॥ रिहे ॥ काउ
... ॥ ... ॥ सग्गादिकनइ
... ॥ ... ॥ करवइ सु
... ॥ ... ॥ द्ध थाइ ॥
... ॥ ... ॥
... ॥ ... ॥
... ॥ ... ॥
... ॥ ... ॥

मदनादोष॥ जात्यादिमदोन्मत्त॥ पिसाचवज्झवति ॥ रविनश्चेष्ट॥ आत्मा दिठ्ठी एमत्थी परमात्मा ॥ निःसंशयं असातवादी जेह एतदनइ आदि अतमदझ्झ तेतणा वादी विसम देखाडइ छइ॥ क्रिया ते आस्तिकरूप सकल पदार्थनी आ अनास्तिकता वस्तुनी आणानहारी तेथी विपरीत ते अक्रिया ते बोलइ। ते अक्रियावादी॥ यथावस्थित वस्तु छइ ते अनेकांतरूप छइ॥ अनइ अक्रियावादी ते अनेकांत वस्तु नथी इम कहइ॥ एकांतरूप हुइ वस्तु मानइ॥ एतलइ अक्रियावादी ते नास्तिक इति भाव॥ ते अक्रियावादी परमार्थ थकी परलोकनी साधनारी क्रिया न मानइ॥ तिहां एकवादी आत्मा समस्त सकल व्यापक छइ इम कहइ ते एकवादी॥ आन रावली इम कहइ आत्मा इज छइ। अनेरूं कांइ नथी इत्यादि॥ अनेक आत्मा प्रति परलोक नथी॥२॥ मितवादी॥ मात्रा इम प्रवृत्ती पावत्तो प्रथवी ३॥ निमितवादी॥ अस्माद् सृष्टिना वाइ ४॥ सातावाई॥ आत्मा नइ सुख तिहां सुख पामीइ॥ जिम सालि थकी सालि पामीइ नो पइइ॥ उत्पत्ति छइ॥५॥ समुच्छेद॥ क्षणिकवादी ६॥ नियावा

(तां) इ समरितमात अट्ठ किरियावाती पं० तं० एगावाती अणेगावाती मितवाती निम्मितवाती सायवाती समुच्छेदवाती णितावादी णसंतिपरलोगवाती अट्ठविहे महानिमित्ते पं० तं० भोमे उप्पाते सुविणे अंतलिक्खे अंगे सरे लक्खणे वंजणे अट्ठविहा वयणविभत्ती पं०

दी॥ ते जइ एवं तो तेह वउ॥७॥ णसंति॥ परलोकि॥ अथवा मोक्ष जावुं नथी॥८ एवादीतु उसास्त्र कंइकरी संसरत बुद्धी छइ ते तणा मार्ग कहइ छइ॥ अतीत अनागत वर्त्तमानना॥ अप्रत्यक्ष भावना जाणवना विषय॥ निमित्त॥ हेतु अनइ ते निमित्तना कहेनारा शास्त्र पणि निमित्त कहीयइ॥ ते हनां सूत्र अनुप्रमाण लक्ष अनइ लाख प्रमाण वृत्ति॥ कोडि प्रमाण वार्त्तिक॥ ते हइ कारणइ महानिमित्त कहीइ॥ भोम॥ भूमि संबंध करइ ते थी आकंपइ तेहनो शुभाशुभ विचार॥ उत्पात राजा नइ प्रजानइ प्रधान नइ पीडा छइ इत्यादि॥१॥ उत्पात ते सहज रुधिर वृष्टादिक॥२॥ स्वप्न सा स्वप्नानु विचार वु॥३॥ अंतरिक्ष॥ आकाशनइ विषइ गंधर्वनगरादिकना विचार मेलइ वर्त्ति तउ धान्य नव विनास॥ रातइ गंवादिक नउ अव्यक्त हतउ॥ कटकनउ नाश थाइ॥ ते गंधर्व नगर जो स्निग्ध दीसइ आणंद छइ॥ अंग॥ नेत्रमस्तकादिक फरकवानां विचार॥५॥ स्वर षड्ज ऋषभादिक॥६॥ लक्षण॥ स्त्रीपुरुषना लक्षण॥७॥ व्यंजन॥ मसितिलकादि॥८॥ २१६
वसा प्रत्यक्ष वचन विभक्ति नइ थाइ जिइं अर्थ कीजइ॥ ते सत्तावचन विभक्ति कहइ छइ॥ एकवचनरूप अर्थ जे करी व्या

तेहनइ वचन॥ कर्त्ताकर्मादिरूप अर्थ जिणइ करी व्यक्त थाइ ते विभक्ति॥ वचनविभक्ति॥ दिवनार्थ उत्ते॥ ते भिन्न अज तेणइ ते वचन॥ ... उपदेस॥ ... इत्यादि॥ ... निद्देस॥ नामलिंग मात्र॥ उपदेस॥ ... करइ इत्यादि॥ ... आदिशन विसर्ई त्यादि॥ निदान॥ ... राजग्रह मांहि विषइ॥ अथवा राजग्रहि थी लोक ल्यो॥ सामवाधी॥ असमांन संबंधनउ जिम॥ सन्निहाण॥ ... विषय॥ आमंतणा॥ हा रेवदत्त॥ तथ पढमा वि॥ तिसी प हिली विभक्ति निर्देसनइ विषइ यथा॥ स॥ ति॥ इमा॥ ए॥ अहं॥ छ आमंतणा॥ ... विषइ यथा॥ तां॥ कां॥ कुण॥ करि॥ इमं॥ एतं॥ ते॥ ते तीजा करण नइ विषइ कीधी॥ यथा॥ किती या पदसनइ विषइ यथा॥ ... तेण॥ तेणइ॥ मए॥ मइ॥ हं दि॥ निपात उपदर्सनइ अर्थइ॥ चउथी यथा णीयं॥ पुष्फवाडिउ॥ कयवं॥ कीधउ॥ तेणव॥ तेण छ॥ ... यथा॥ नमो साहाए॥ सा धा न इ नमस्कार पणि केहवी आशा विरादि॥ ... ण मि॥ संप्रदाननइ विषइ॥ यथा॥ नमो साहाए॥

णमि॥ संप्रदाननइ विषइ॥ यथा॥ नमो साहाए॥ सा धानइ नमस्कार पणि कहवी आशा विरादि ... तेनइ

तं निद्देसे पढमा होति बितीया उवएसणे ततिता करणंमि कता चउत्थी संपदावणे ॥१॥ पंचमी त अवादाणे छट्ठी सस्सामिवायणे सत्तमी सन्निहाणत्थे अट्ठमी आमंतणी भवे ॥२॥ तत्थ पढमा विभत्ती निद्देसे सो इमो अहं व त्ति बितीया पुण उवदेसे भण कुण व इमं व तं व त्ति ततिया करणंमि कता णीतं च कतं व तेण व मते वा हंदि णमो साहाते हवति चउत्थी पदाणंमि अवणे गिण्ह ततो इतो त्ति वा पंचमी अवादाणे छट्ठी तस्स इमस्स व गतस्स वा सामिसंबंधे हवति पुण सत्तमी तमिमंमि आहारकालभावे आमंतणी स वि अट्ठमी यजेह हे जुवाणत्ती

॥ यथा॥ तत्तो॥ तिहाथी॥ ईहांथी॥ इतो॥ इहांथी॥ गिण्ह॥ लइ॥ अवणे॥ टालि वेगलो॥ अथवा अपादाननइ विषइ॥ यथा॥ ... अनइ स्तवकनइ विषइ तो॥ अपणे॥ ... तिलोकना नइ अर्थ अनुयोगद्वारनइ अनुसारि की धे छइ॥ अनइ स्तवक नइ विषइ तो॥ ... छट्ठी॥ तस्स॥ तेहनुं॥ इमस्स॥ एहनुं॥ गयस्स॥ गयानुं॥ सामिसंबंध॥ ए आठ नाम॥ ... हवइ॥ तस्स॥ ... सत्तमी ... विषइ हुई॥ आधार काल भाव विषइ सप्तमी छइ॥ यथा॥ तं॥ तिवस्तु॥ मांमि॥ ए ... स्वामिसंबंधि नइ विषइ ... आमंत्रणा छइ॥ यथा॥ हे जुवाण॥ हे तरुण॥ ... आमंत्रण नइ विषइ॥ अट्ठमी आमंत्रण छइ॥ यथा॥ हे जुवाण॥ ...
नइ विषइ॥ अट्ठमी आमंत्रण छइ

प्रसस्रपदार्थ आणता ह्मस् । ते आसंकाद्दालवानइ कहइछइ सुगम ॥ चिमध मीतिका या दि जिन आणइ । तिम आयुर्वेदि पछिजा णाद्द तए ॥ आयु ॥ आउषुं ॥ वेद ॥ जाणइ ॥ अथवा अ कोपामइ उपाकालवइ । तेणइ सास्त्र ॥ अष्टया तेसास्त्रवेदको अथवा तेसा अनइ वेदइ । ते आयुर्वेद वेदकसास्त्र ते अष्टविध ॥ कुमार ॥ बालतुं पडी गणुं ॥ कायतिगिछा ॥ ज्वरादिकरोगनुं पडी गणुं ॥ सालाई ॥ कान आंषिनासिकामुखादिकनारोगनइ सलाइ करी पडीगणुं करइ । तेहनुं सास्त्र ॥ ३ ॥ सल्लहत्था ॥ ... पाषाण लोहादली या अस्थि नषादिकनइ विषइ । षु ताकाइ ते तथामादि सोडवइ ते साल ऊधरवानुं सास्त्र ॥ ४ ॥ जंगोल ॥ साप ॥ काकीडा ॥ कीडी ॥ कोलीड ॥ एहनाडंसना विषना विणसाडवानुं सास्त्र ॥ ५ ॥ भूयविज्जा ॥ भूत असुर गंधर्वयक्ष

अट्ठ ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं न याणति न पासति तं धम्मत्थिकाय जाव गंधं वायं एताणि चेव उप्पन्ननाणदंसणधरे जाव गंधं वायं अट्ठविहे आउवेदे पं० तं० कुमारभिच्चे कायतिगिच्छा सालाती सल्लहत्ता जंगोली भूतविज्जा खारतंते रसायणे । सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो अट्ठ अग्गमहिसीउ पं० तं० पउमा सिवा सुती अंजू अमला अच्छरा णवमिया रोहिणी ईसाणस्सणं देविंदस्स अट्ठ अग्गमहिसीउ पं० तं० कण्हा कण्हराती रामा रामरक्खिया वसु वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुंधरा सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो अट्ठ अग्गमहिसीउ ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरन्नो वेसमणस्स महारन्नो अट्ठ अग्गमहिसीउ । अट्ठ महग्गहा पं० तं० चंदे सूरे सुक्के बुधे बहस्सती अंगारे सणिंचारे केऊ अट्ठविहा तणवणस्सतिकाता पं०

... विद्यादिक विघ्नविकलकीधइ कइ तेहनुं सास्त्र ॥ ६ ॥ खारतंते ॥ परमेहनुं टालिवुं ॥ तथा सरीरइ बलवीर्यनुं वधारिवुं ॥ ७ ॥ रस ॥ अमृतरस ॥ अयन ॥ तेहनी प्राप्ति ते रसायन ॥ ८ ॥ वयनइ थरस्यापवुं करइ ॥ देवतानी परि ... एकआयुं करइ ॥ ... देवतानुं स्वरूप कहइछइ ॥ महाग्रह ते मोटा ग्रह नइ अनर्थना साधणहार मोटा ॥ तेमा ... तिर्यंच ना उपघात अनइ उत्पादना करनार ते लाणे तिर्यंचि मा हि बादर वनस्पतीनाघातक पणाइ करी बादर वनस्पती आश्री कहइछइ ॥ तण वणस्सइ ॥ बादर वनस्पती ॥ ॥ २१९

कंद ॥ खंधप्रसिद्ध ॥ तया ॥ छालि ॥ साले ॥ साषा ॥ पवाल ॥ अंकुरा ॥ एहनइ अग्नि तोचउरिंदियादिजीवनकइ तेनारंभ ... रिजीवनुं सुत्र सुगम ॥ सुक्ष्म आश्री पाणि संयमा संयम कइ ते कहइछइ ॥ सुक्ष्म ते ... कडा पणइ करानइ ॥ थोडा दिसनाई ... ववाम की ॥ प्राण सुक्ष्म ॥ ते अनुधर कुंथु तिसुक्ष्म पणा थकी हालतादीसइ पछि रहा नदीसइ ॥ पनक सुक्ष्म ते वरसालि ... निका दिकइं पंचवर्ण फुलि ॥ २ ॥ बीज सुक्ष्म ते साल्यादिना ॥ मुष मुलमइ विषइ य कणीकुइ । ते लोकमइ निषइ तु प्रमुख कहिवाइछइ

तं० मूले कंदे खंधे तया साले पवाले पत्ते पुप्फे चउरिंदियाणं जीवा असमारंभमाणस्स अट्ठविहे संजमे कज्जति तं० चक्खुमातो सोक्खाउ अववरोवित्ता भवति चक्खुमएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ एवं जाव फासामातो सोक्खातो अववरोवित्ता भवति फासामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवति चउरिंदियाणं जीवा जाव समारंभमाणस्स अट्ठविहे असंजमे कज्जति तं० चक्खुमातो सोक्खातो ववरोवित्ता भवति चक्खुमतेणं दुक्खेणं संजोएत्ता भवति एवं जाव फासामाउ सोक्खाउ । अट्ठसुहुमा पं० तं० पाणसुहुमे १ पणगसुहुमे २ बीयसुहुमे ३ हरितसुहुमे पुप्फसुहुमे अंडसुहुमे लेणसुहुमे सिणेहसुहुमे भरहस्सणं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठ पुरिसजुगाइं अणुबद्धं सिद्धाइं जाव सव्वदुक्खप्पहीणाइं तं० आदिच्चजसे महाजसे अ

३ ॥ हरितसुक्ष्म ते तत्कालनाउपना पृथवीसमानि वर्ण हरीकाय ॥ ४ ॥ पुष्पसुक्ष्म ते वडउंबरनां पुष्प ... ते सरीषा वर्ण माटइं अनइं ना ... माटइं ॥ अलषाइ नही ॥ ५ ॥ अंडसुक्ष्म ते माषी का कीडी गिरोली ... काकीडा दिकना ईडा ॥ ६ ॥ लयनसुक्षम ॥ ... था ना घर ॥ स्नेहसुक्ष्म ते वार हिम धुंअरि करहा ऊसा ग्रजलबिंदु ॥ ८ ॥ एसुक्षमनुं संयम करी नइ ... पुरिस जुगाइं ॥ जुग ॥ काल विसष ... अनुक्रम ... पुरुष ... अनुबंध ... निरंतर ॥ जाव मा हि ... थइ मुंकाइ । परिनिवुडाई ॥ एआदिक ... अनुक्रम । बाधनांत ... सिधा ... महाजस अ ... बालयबालसइ ॥ बल विरिय ... ऊल विरिय दंडविरिय ॥ ... एकमइ अंतर नाम ते ...

मई पणि बोलावाइ तिमाटइ॥ अनइ गाथानाऊ मकमाटइं नाम आघा पाछा मेलावी इछइ॥ संजम ना अधिकार थका संयम वंत कहइ छइ॥ पुरिसादाणीयस्स॥ पुरुषमाहिं अंगीकरवा योग्य॥ गण॥ एक क्रियाना एक वाचनाना साधुनो समुदाय॥ गण नइ गणधर दस कह्या छइ। तेहि बि गणधरनुं आऊखुं थोडुं हुतुं॥ एणइं कारणि बि विवक्षा नहीं॥ इमस लावीइ छइ॥ पणि इमन होइं कहीइ जे आववाणा माटइं आवकहा॥ थिरता पर्युषणाकल्पमाहिं पणि आवइ ऊकह्या छइ। गणधर तउ दर्शनिवंत छइ तिलणे दर्शनिक कहइ छइ॥ स्व भ्रदर्शनि तो अवचुदर्शनमाहिं जि आवइ॥

तिबाल महाबाल तति वीरित कत्त वीरित देड वीरित ऊलवीरित पासस्स णं अरहऊ पुरिसादाणियस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा होत्था तं सुभे अज्जघोस वसिट्ठे बंभचारी सोमे सिरिधर वीरित सहज्जस अट्ठ विहदंसणे पं तं सम्महंसणे मिछदंसणे सम्मामिछदंसणे चक्खुदंसणे जाव केवलदंसणे सुविणदंसणे अट्ठ विहे अद्धोवमिते पलितोवमे सागरोवमे उसप्पिणी उस्सप्पिणी पोग्गल परियट्टे तीतद्धा अणागतद्धा सव्वद्धा अरिट्ठनेमिस्स जाव अट्ठमातो पुरिसजुगातो जुगंतकर भूमी दुवासपरियातअंतमकासी समणे भगवया महावीरे णं अट्ठ रायाणो मुंडत्तविता आगाराती अणगारितं पव्वाविता

पणिसु तानी अवस्था माटइं जिउं विवक्षीउं॥ सम्यक् दर्शनादिकनी स्थितिनुं प्रमाण॥ उपमकालिइं करी ऊपातसलो उपमाकालकहइ छइ। ऊपम्म ति पल्यभाग रूप ति लाइं प्रथम न कोलु ति ऊपम्य काल॥ पल्यइं करी नइ जि कालनइ विषइं। उपमा छइ परिमाणो सकी ति पल्यो पम॥ इम सागरोपम छइ॥ अवसप्पिणी आदिकनइ विषइं उपम्यकालि नी प्रमाणपणाथकी उपम्यकाल परयुधालावु॥ समय आदि सीघ प्रहिलिका पर्यंत काल तिअतीत काल। कालना अधिकार थकी वली कहइ छइ॥ जाव अट्ठमाउ॥ आठमा पुरुष ना कालल गइं जांग॥ पुरुषरूप युगनो अपेक्षाइं॥ अंतकर॥ तेवना सुखनाके राएहारनी॥ नेमि॥ कालान मिनाथ नासिथिनइ प्रतिइं अनुक्रमइं आठपाटलगि इमाचे गया आगलिन ही॥ प्रक्रम गिइं पर्यायपरंतकहे नेमिकहइ छइ॥ नेमिनाथनइं केवलज्ञान उपना पछी ॥ त्रिकुं वरसि इं साधु सवनउ अंतकरतो हुउ॥ २१८

तीर्थकर अधिकार थकी वली कहइ छइ॥ मुंडे सं॥ इहां पर्यावर्थ करि ऊं मुंडा थावरा वीनइं॥ इहां वन्द्य वरणा॥ तत्र संसारचक्रवालि हणाय॥ इम क्रइती गाथा जाइ॥ तिमतो कोई पुस्तकमाहिं दीसइ नथी॥ वीरंगक १ वीरयस २ संजय ३ एणिज्जक ४ रायरिसि ५ सिव ६ उदायण ७ संख ८ ए आठ नाम॥ एक तवन्ध्य दास॥ स्वेताबी नगरी नउ॥ प्रदेसी नामा राजा श्रावक तेह नउ सामरा राजर्षि तेणीयक राजर्षि॥ सए आस य नाम इराजा आमलकप्पा नगरी नउ राजा तेहि अमुर्याति दिवताइं सगवंत आगलि नाटिक पाडिउं॥ तगवति इं प्रादसी तेह चरित्र कहिउं॥ सवति हस्तिनागपुर नो राजा ति एकदा वीतव ताकुउ॥ तेहउ निरंतर दिशणादिकइं करी प्रछिपामुं छउं॥ तेपुणा ते धुन्यनुफल तउ लिबडीपणि ऊद्यमकरे॥ पुत्रराज्य स्थापी॥ दिग्प्राक्षित

तं वीरगात वीरजसा संजए एयो पोद्य त्य राय रिसी सेव सिव उदायणे संखकासिवद्धणे अट्ठ खेद आहारा पं तं मणुन्ने असणे पाणे खाइमे साइमे अमणुन्ने असणे पाणे खाइमे साइमे उप्पिं सणं कुमारमाहिंदाणं कप्पाणं हिट्ठिं बंभलोए कप्पे रिट्ठविमाणपत्थडे एत्थ णं अक्खाडग समचउरंस संठाण संठिओ अट्ठ कन्हराती ता पं तं पुरच्छिमेणं दो कन्हरातीतो दाहिणेणं दो कन्ह पच्छिमेणं दो कन्ह उत्तरेणं दो कन्हराई उ पुरच्छिमा अब्भंतरा कन्हराती दाहिणं बाहिरं कन्हराई पुट्ठा दाहिण अब्भंतरा क

तापसपणइं प्रव्रज्या॥ छट्ठ छट्ठ करि इं आतमा तपनालइ। सद्भ्रांपंनडां आहरइ॥ विभंगज्ञान ऊपनउं॥ सात द्वीपसात समुद्रदीठा॥ कहि वा लागो॥ गौतमइं सोल लोपुछिउं॥ भगवंतइं असंख्यात द्वीपसमुद्र कह्या॥ लोकइं सांसलिउं॥ शिवइं सांभलिउं॥ सकाणो॥ विभंग गयो॥ भगवंत नइ पछिउं॥ प्रव्रज्या॥ एकादसांगी हुउ॥ सिद्धो॥ उदायन तेमि भुसावीर आदि सातलक्ष समनउ धणी॥ वीतभय विभंगनाथो॥ भगवंत नइ पछिउं॥ प्रव्रज्या॥ दस्सनगढ भसराजा उदायन श्रावक। पत्नाइं ऊ छती ठई रोग कर्मनि इंदुतु मल इं वेउ प्रद्योतनइं हाथीथकी प्रमुख त्रिसिसइं स्या विनगर॥ दस्सनगढ भसराजा उदायन श्रावक। पछताइं॥ मपाडीनइं बांध्यो॥ ललाटे॥ इं। पर्युषति इं करी आविया॥ अरिकृत दीकरानइं मरगवार यामइ। एकसी लाणा तनइं॥ राजसंदीधु॥ मसाबा॥ स गपिइं प्रव्रज्यो विली तणडनगरि इं आव्यो राग ऊपनो। विषइंदहीकराव्यु॥ राज्यमाहाराणीकाइ। विषमि श्रद्दही दीधुं मासांग त्यातेह नागुरानीपहिमा तिनी ऊपितदेवांगनाइं ऊनकार सिर्ध्यां नरवरनी धूमालास्फिं इं सर्व नगर संघारिउं॥ संप्रति बाणारसी नगरी समीपी याद स्मर्ती रहि इ सुपनउ करणहार॥ तेसणं अप तिनाम। कासी वर्द्धन तगुणइं घयु। एप्रसिद्ध नथी॥ वाणारसी नगरीनु

१ विषइ अलक्ष ना भइ राज. सगवंतइ अवबुझाव्यो । अंतगडदसांगमाहि छइ ॥ ताकदा चिन्नाम तरिंइसे पनइ अलद्धसं लयो हुइ छइ पर. जा तउ मनो ज्ञा मनो आहार नइ विषइ समता विउ आ तेलणो आहार करइ छइ सुगम ॥ जो आहार नाइ अन तउ सवि सेष पणिं असम हितं छइ तिकर्ष्यो ॥ ई वृहस्ति नानि विस अघकी पुजल ७ तेला बपपिरिणाम विसंमइ मानो । ऊयन्कस्नराजी करइ छइ ॥ सुत्र ५ ब्रह्मलोक नउ रिष्ट नामिइ जवि मानमनो पाघडो तेहनी हुवलि ॥ कृष्ण ॥ कालपुदगलनी ॥ राजी ॥ पंक्ति तेकृस्नराजी ॥ बले मीउ ॥ तेसाउ ॥ त्रिनि हां सि ॥ सव्वाउ ॥ च्यार ॥ वकं ॥ च्यारि हां सि ॥ नाम धेज्ञा ॥ नाम ॥ कृस्नराजी ति

न्हराती पच्छिमं बाहिरं कन्हराइं पुट्ठा पच्छिमा अब्भंतरा कन्हराती उत्तरं बाहिरं कन्हराइं पुट्ठा उत्तरा अब्भंतरा कन्हराती पुरच्छिमं बाहिरं कन्हराइं पुट्ठा पुरच्छिमपच्चत्थिमाउ बाहिराउ दोन्न कन्हराती छलंसीओ उत्तरदाहिणाउ बाहिराउ दोन कन्हराती तो तंसाउ सव्वाउ विणं अब्भंतरकन्हराती चउरंसाउ एतासिणं अट्ठन्हं कन्हरातीणं अट्ठ नामधेज्जा पं ते कन्हराती तिवा मेहराती तिवा मघा तिवा माघवती तिवा वात फलिहेतिवा वायपलिक्खोभेतिवा देवफलिहेतिवा देवपलिक्खोभेतिवा एतासिणं अट्ठन्हं कन्हरातीणं अट्ठसु उवासंतरेसु अट्ठ लोगंतियविमाणा पं तं अच्ची अच्चिमाली वतिरोयणे पभंकरे चंदाभे सूराभे सुपइट्ठाभे अग्गिच्चाभे एतेसुणं अट्ठलोगंतियविमाणेसु अट्ठविहा लोगंतिया देवा पं तं सारस्समाइच्चा वन्हि वरुणाय गद्दतोयाए

कालापुदगलनी पंक्ति ॥ रूपणा पकी ॥ मेघराजी ति कालापणा पकी ॥ मेहनी रषा सरिषी ॥ मघा ति छठी नरगनी परिकाली ॥ माघवती ति सातमी नरगना परिइं अतितकाली ॥ वायफलहइ त्या दिनामनो अर्थ तमसकायनी परिजाणिवा ॥ पच्चा वक्रस्नराजीना ॥ उवासंतरेसु ॥ आंतरा आकास अंतरनइ विषइ ॥ एतलइ बिबे पंक्ति विचिइं आठ लोकांतिक विमानछइ ॥ ते भगवतीमाहि इंम कहिउ छइ ॥ पुर्वनी माहिली आगलि अच्चि ॥ विमान ॥ तिहां सारस्वत देव ॥ पुर्वना बिऊ विचालइ अच्चीमाली विमान ॥ आदि ॥ त्य देवो दक्षिणनी माहिली आगलि विरोचन विमानइ वन्ही देव ॥ दक्षिणनी बिऊं विचइ सुभंकर विमानइ वरुण देव ॥ . २१८

पश्चिमनी माहिली आगलि चंद्राभ विमान ॥ गर्दतोय देव ॥ पश्चिमनी बिऊ वचिं सुराभ विमानतुषित देव ॥ उत्तरनी माहिली आगलि अंका सविमान अव्याबाध देव ॥ उत्तरनी बिऊ वचिइं सुप्रतिष्ठा सविमान अग्निच्च देव ॥ बिऊ मध्य सांगिइ रिष्टाभ विमानइ रिष्ट देव ॥ अजहन्न ॥ जघन्य उत्कृष्ट नइ अभाव इंति ॥ ब्रह्मलोकिइ जघन्य ७ सागर उत्कृष्ट १० सागरोपम छइ ॥ पणि लोकांतिक नइ आठ सागरनी स्थिति छइ ॥ एक कृस्नराजी तउ ब्रह्मलोकनइ मध्य सांग छइ ॥ ते सर्णो धर्मास्तिकायादिकनाम प्रवर्त्ती ॥ आठप्रदेस रुचक कहइ छइ ॥ सुत्र ४ धर्म अधर्म आकासना आठ मध्य प्रदेस ते रुचक रूप जीवना पणि केवली समुद्घातनइ विषइ ॥ रुचक नइ ठि

तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव बोधव्वा ॥ १ एतेसिणं अट्ठन्हं लोगंतितादेवाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता अट्ठ धम्मत्थिगातमज्झपएसा पं अट्ठ अधम्मत्थिगात एवं चेव अट्ठ आगासत्थिगात एवं चेव अट्ठ जीवमज्झपएसा पं अरहंताणं महापउमे अट्ठ रायाणो मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वाविस्सति तं पउमं पउमगुम्मं नलिणं नलिणगुम्मं पउमद्धयं धणुद्धयं कणगरहं भरहं कन्हस्सणं वासुदेवस्स अट्ठ अग्गमहिसीओ अरहंताणं अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडा भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वतिता सिद्धाउ जाव सव्वदुक्खप्पहीणाउ तं पउमावती गोरी गंधारी लक्खणा सुसीमा जंबुवती सच्चभामा रुप्पिणी कन्हस्स अग्गमहिसीउ वीरियपुव्वस्सणं अट्ठ वत्थु अट्ठ चुलवत्थु पं अट्ठ

विषइ ॥ रह्या आठ मध्य प्रदेस जाणिवा केवल समुद्घात विना चलइ नहीं ते आठ मध्य प्रदेस कहीयइ ॥ समता ते आवर्त्त नि करता ढलनी परिइं निरंतर हृदवा ऊपहरा घाघा धिका अस्थिर ते अमध्य प्रदेस ॥ जीव मध्य प्रदेसना कहिनार तउ तीर्थंकर ते तेणा तीर्थंकरनो वक्तव्यता कहइ छइ ॥ सुत्र २ ॥ त विन्ना ॥ त्ता वरावसिइ ॥ एसि हो ति वीर्यघकी ते सर्णो ति वीरथनु कहिना संसर्व कहइ छइ ॥ वी रे पुर्व नामा आउ ॥ वीर्यप्रवादनामइ ग्रीतो पुर्व नि उ ॥ आठवस्तु ते महल वस्तु ग्रंथ्यन विसिष आचारागना अध्ययनी परिइं ॥ चुलवस्तु ते आचारांगनी चुलिकानी परिइं

वस्तुवीर्यधी गति करइ॥ तिनरलोगतिकहइछइ॥ गुरुगतितिनारीपणाइकरी॥ परमाणुआदिस्वभावइ॥ उर्द्ध अधो तिरिछीगतिकरि॥ ॥ पणोलगति॥ परनाप्रेरघाघकोगतिकरइ॥ जिमवायादिकनइप्रेरकं बीहोणगतिकरइ॥ आस्वारगतिइ आंतरनइनारिइंवीप्रीनावादिकीगतिकरइ॥ अनंतरगतिकही॥ दिघइणेगाद्रिकदीबापणिगतिमादिखिछइ॥ तिसणां तदनादीपकइछइ॥ गंगादिदेवीतसरघइरिवरतनीनदीनोअधिष्टायकातदनां निवासस्थलतदीपातगंगादिप्रपातकुंडमादिछेइ॥ ॥

गताति पं तं णिरतगती जाव सिद्धगती गुरुगती पणोल्लणागती पब्भारगती गंगासिंधुरत्तारत्तवती देवीणं दीवा अट्ठ अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं पं उक्कामुह मेहमुह विज्जुमुह विज्जुदंतदीवाणं दीवा अट्ठ २ जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पं कालोएणं समुद्दे अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पन्नत्ते अब्भंतरपुक्खरद्धेणं अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पं एवं बाहिरपुक्खरद्धे वि एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठसोवन्निते काकणिरयणे छत्तले दुवालसंसिते अट्ठकण्णिते अधिकरणिसंठिते पं मागहस्स णं जोयणस्स अट्ठ धणुसहस्साइं निधत्ते पं जंबुणं सुदंसणा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं बहुमज्झदेसभाते अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं साति

द्वीपना अधिकारथकी अनंतरद्वीपानु सूत्र॥ उक्कामुहादिन इहांपसस्थप्रत्येक रजोदिबउ॥ तिणइं उल्कामुखद्वीप॥ पद्धीपहिमवंतसिखरीनो पुर्वपश्चिमनो बाबदाढा मइ विषइ॥ सातमा हइ एव छड्डा द्वीपजाणवा॥ द्वीपना अधिकारथकी द्वीपवंतकालोदधिनुं सूत्र॥ तदनंतर पुष्करार्द्धनुं सूत्र॥ पुष्करार्द्धमाहि चक्रवर्ति हइ॥ तिणइ चक्रवर्तिनासूत्र॥ इहां अन्य अन्यकालनाऊपमा चक्रवर्तिनुं कागणीरत्न तुल्यइ जछइ॥ तिणइ एकनुं ग्रहण॥ राज्यसे पदाकहितछइ॥ तिणेरन्नो॥ राजा कह्यइ॥ सरतादि षट्खंड नउ ताग वणहार चहवुं जेणाबानइंतो चउरंतचक्रवर्ति॥ अट्ठसोवण्णिकि कागणीरत्न॥ च्यार मधुर त्रिणि फलिइ एक श्वेत सर्षप॥ सोल सर्षप एक धान्यमाषफल॥ बिधान्यमाषफलिइ एक गुंज॥ तथा एककर्ममाषक॥ अनइ सोलकर्ममाषकइ एक सोवर्ण॥ एमधुरतृणफलादिक तत्कालना रानीजइ॥ जिसणि सर्वचक्रवर्तिना कागणीरत्न तुल्य जिछइ॥ एहवइ आवसामेइ एककागणीरत्न॥ छतलांबीरहासि॥ अठ कोणि॥ आवकुणा॥ अहि॥ स्मानीनो अहिरणि नइसंगतिणे॥ च्यार आंगुल प्रमाणनी कागणी छइ॥ जितणे आंगुं २२०

MEMORIA

लो प्रमाण निष्पन्ना जिनतुं मान कहइछइ॥ मागह॥ मध्यदेसना एक जोजननो आठसहस्र धनुष॥ निहत्ते॥ एप्रमाणनिकावीउं॥ निश्चयकीधुं॥ निहार॥ प्रमाण॥ जाजिननु प्रमाणकहीयइ॥ जाजिमइ करी जंबु आदिनु प्रमाण॥ जंबुवृक्षनाम॥ सुदंसनि पणि तदनुं नाम॥ उत्तरकुरुना पुर्वार्द्धमइ विषइ॥ सीतामहानदीमइ पुर्विइं पावसइ जोजननां बापुकुलउ॥ बार जोजनविजाजो॥ उतरातिछहडइ बगाजनउ जाडउ॥ सानानुं पावछइ॥ बगाऊं वीनोचीपासेवसइधनुषनो पुकुलो॥ पचवरविदिकाइ वींटउ छइ॥ तिहमइ बगाऊं चाठत्रातारणसहित च्यारबारणा छइ॥ तिणि वनइम

रेगाई अट्ठ जोयणाइं सव्वग्गेणं पं कूडसामलीणं अट्ठ जोयणाइं एवं चेव तिमिसगुहाणं अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पं खंडगप्पवायगुहाणं अट्ठ एवं चेव जंबुमंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीताते महानदीते उभओ कूले अट्ठ वक्खारपव्वता पं तं चित्तकूडे पम्हकूडे णलिणकूडे एगसेले तिकूडे वेसमणकूडे अंजणे मायंजणे जंबुमंदरपच्चत्थिमेणं सीतोदाते महानदीते उभतो कूले अट्ठ वक्खारपव्वता पं तं अंकावती पम्हावती आसीविसे सुहावहे चंदपव्वते सूरपव्वते णागपव्वते देवपव्वते जंबुमंदरपुरच्छिमेणं सीताते महानतीते उत्तरेणं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पं तं कच्छे सुकच्छे महाकच्छे आवत्ते जाव पुक्खलावती जंबुमंदरपच्चत्थिमेणं सीताते महानदीते दाहिणेणं अट्ठ चक्कवट्टि × सुकछा

८ पसाग इच्यारजोयणनोउंचो॥ आवजोजननोपाहोलो॥ मणिपीठिकाछइ॥ तिहां जंबुछइ॥ बारवेदिकाइ जंबुवृक्षवींटिउछइ॥ ति जंबु वृक्षआजोयणनउं उचउछइ॥ मज्झमइ॥ वविइ आठजोयणनुं पाहोलउ॥ स्याइं सगाइं॥ बगाऊ कुकराअधिक आठजोयण॥ सव्वग्गेणं॥ सर्वप्रमाणइकरी॥ तदनीच्यारिदिसिमइ विषइ॥ च्यारिस्या पां छइ इत्यादिवर्णदक हिवउ॥ एजंबुआदिकवस्तु तउ जंबुद्वीपनइ विषइ छइ॥ तिणइ जंबुद्वीपगतवस्तु अनइ पत्रनास रिषापणा मइ की वस्तुका पुष्करार्द्धगतवस्तुनासूत्र कहइछइ॥ तिघुरिल्याविस्तुतावबारपर्वतनाकइ २छ्या २२सूत्र विजयनगरीतीर्थंकर आदि दीर्घ तिताआदिनां एकचुलिकानुं थय १८ बिअराप सूत्रजाणवो॥ मेरूपर्वतकीइस्माणकुंणाइमालवत

गजदंत ... सरूपवर्णन ... ॥

प्रउस्थाधुर ॥ जावपुष्कलावईसासिदि मंगलावती ॥ उक्कूले ॥ जावमंगलावईपाहिं महावच्छे ॥ वच्छावईशाम ॥ रम्मण ॥ रम्मग ...
वरुमलिलावईमाहिं । सपम्हे महापम्हे पम्हावई ॥ संखे ॥ नलिनकुमुए ॥ जावगंधिलावईमाहिं ॥ महाकच्छे ॥ वप्पा ॥ ...
सुवग्गु ॥ ... जावपुंडरगिणी माहिं ॥ ओरठारिहावई रवणी ॥ मेरुस्सा ॥ उससहो ॥ धुरा ॥ जावरयणसंचयामाहिं ॥

विजया। पं तं वच्छे सुवच्छे जाव मंगलावती जंबुमंदरपव्व सीताताए महानदीतदाहिणेणं अट्ठ चक्कव
ट्टि विजया। पं तं पम्हे जाव सलिलावती जंबुमंदरपव्व सीताताए महानदीते उत्तरेणं अट्ठ चक्कवट्टि
विजया। पं तं वप्पे सुवप्पे गंधिलावती मंगलावती जंबुमंदरपव्व सीताते महानतीते उत्तरेणं अट्ठ रा
हाणीत्ता पं तं खेमा खेमपुरा चेव जाव पुंडरिगिणी जंबुमंदरपव्व सीताते महानईदाहिणेणं अट्ठ
रायहाणीता पं तं सुसीमा कुंडला चेव जाव रयणसंचया जंबुमंदरपव्व सीताताए महानदीए
दाहिणेणं अट्ठ रायहाणीउ पं तं आसपुरा जाव वीतसोगा जंबुमंदरपव्व सीताताए महानदीते उत्त
रेणं अट्ठ रायहाणीउ पं तं विजया वेजयंति जाव अउज्झा जंबुमंदरपुरच्छि सीताते महानदीए उत्त
रेणं उक्कोसपदे अट्ठ अरहंता अट्ठ चक्कवट्टी अट्ठ बलदेवा अट्ठ वासुदेवा उपज्जिंसु वा उपज्जंति वा
उपज्जिस्संति वा जंबुमंदरपुरच्छि सीयाते महानईते दाहिणेणं उक्कोसपए एवं चेव जंबुमंदरपव्व
च्छिम सीउयाते महानदीए दाहिणेणं उक्कोसपए एवं चेव जंबुमंदरउत्तरेणं वि जंबुमंदरपुरच्छि

पश्चिम ... उत्कृष्टपदे ... काल ... ॥ ... जंबु ... घकी पश्चिम वासुदेव ... विरहनदी ...
दक्षिण ... त्तरदिशाई ... चक्रवर्त्ति ... वासुदेव ... मेरु घ ... की पश्चिम ... विरहनदी ...
... वासुदेव ... ॥

आवगुहानइ विसरअनु ... आठ दिघताङ्गणवा ॥ गंगा ... सिंधु ... पर्वत ... दक्षिण ... वैताढ्य ...
इरह्या ॥ सा विप्याजिनलाब पुकुलीमाहि गंगा देवी ... द्वीप सहित ॥ त्रिणि दिसिमइ ... तोरण ...
छेड़ । ... प्रत्येक ... गंगानीकली मइ विजयनइ ... सरघनीगंगानी ... ॥ सीता ... महानदी ...
सरछइ ॥ इम सिंधु कुंड ... ॥ अवकसतं ॥ आठ ... कूट पर्वत । आठ विजयनइ विषइ ... कूट ... वर्ष

सीताते उत्तरेणं अट्ठ दीहवेयड्ढा अट्ठ तिमिसगुहाउ अट्ठ खंडगप्पवातगुहाउ अट्ठ कयमालगा
देवा अट्ठ णट्टमालगा देवा अट्ठ गंगाकुंडा अट्ठ सिंधुकुंडा अट्ठ गंगाता अट्ठ सिंधुउ अट्ठ उसभकूडा
पव्वया। पं तं अट्ठ उसभकूडा देवा। पं १७ जंबुमंदरपुरच्छिमेणं सीताते महानदीते दाहिणेणं अट्ठ दी
हवेयड्ढा एवं चेव जाव उसभकूडा देवा पं नवरं मत्थरत्तरत्तावईउ तासिं चेव कुंडा जंबुमंदरपच्चत्थि
मेणं सीताताए महानदीतदाहिणेणं अट्ठ दीहवेयड्ढा जाव अट्ठ नट्टमालगा देवा अट्ठ गंगाकुंडा
अट्ठ सिंधुकुंडा अट्ठ गंगाउ अट्ठ सिंधुउ अट्ठ उसभकूडा पव्वता अट्ठ उसभकूडा देवा पन्नत्ता जंबुमं
दरपच्चत्थि सीउयाते महानतीते उत्तरेणं अट्ठ दीहवेयड्ढा एवं जाव अट्ठ नट्टमालगा देवा अट्ठ रत्ता
कुंडा अट्ठ रत्तावतिकुंडा अट्ठ रत्ताउ जाव उसभकूडा देवा। पं मंदरचूलियाणं बहुमज्झदेसभाते अट्ठ

धर पर्वतनइ टुकडा छइ ॥ माल ... त्रिणि खंड ... मध्यलइ खंड ... पर्वत ... ॥ ते सर्व ... रत्त ... विजयनइ विषइ छइ ॥ स
घवि ऋषभकूडा उच्चपणइ आठ योजन छइ ॥ बारसे ... ॥ मूल ... ॥ तिहाना ... देवता ...
नवरं ए ... रत्तावईउ ॥ तासिं चेव कुंडा ॥ सीता दक्षिणनी ... आठ दीर्घ वैताढ्य ... विसर्व ... ॥ केवल गंगा
सिंधु मइ ... रत्तवती ... ॥ अनइ गंगादिक ... गंगासिंधु ... कुंड ... ॥ अट्ठरत्ता ... कुंडा ... ॥ ... रत्त ...
कुंडा ... ॥ अट्ठ ... ॥ ... धर पर्वतना ... योजन ... प्रमाण ... ॥
नीकुंड ॥ ... नीकली ... नामा ... ॥

तवा धतकी पद्म महापद्म वृक्षनी धीतकी ॥ अनइ पुष्करार्द्धइं पद्म महा पद्म ॥ क्षेत्रनो अधिकार थकी वली कहइ छइ ॥ जंबु
नामरिषी व कल्पता ॥ जिम जंबुद्वीपना देवकुरु उत्तरकुरु माहिं शाल्मली तिम जंबु तिम धातकी । महाधातकी ॥ अनइ पु
ष्करार्द्धइं पद्म महापद्म ॥ क्षेत्रनाअधिकार थकी वली कहइ छइ ॥ सुत्र ५ ॥ दिसा हत्थी ॥ मेरुनइ विषइ पाखरि भद्रसाल विषइ
भद्रसालवन छइ ॥ तिमाहिं आसीता सीता दान दीना कुलय कुल वरती ॥ पुर्वादि दिसिनइं विषइं दसीनइआ का दिकूट
तदिसा हस्तीकुट कहीइ ॥ ५ ॥ उगइ ॥ उगती तिपद्मवेदिका मइ आधवरसैतु पालि ॥ सिद्धायतनसहित लिकुटात सिद्धकूट
उज्जोयणाइं विरकं त्तेणं । पं धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे णं धायतिरुरुके अट्ठ जोयणाइं उद्धं उच्च
त्तेणं बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं विरकं त्तेणं साइरेगाइं अट्ठ जोयणाइं सव्वग्गेणं । पं
एवं धायतिरुरुकाओ आढवेत्ता सच्चेव जंबुदीववत्तव्वता भाणियव्वा जाव मंदरचुलितत्ति ए
वं पच्चत्थिमद्धे वि महाधातितिरुरुकातो आढवेत्ता जाव मंदरचुलियत्ति एवं पुरकरवरदीवड्ढपुर
च्छिमद्धे वि पउमरुरुकाउ आढवेत्ता जाव मंदरचुलियत्ति एवं पुरकरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे वि महा
पउमरुरुकाउ आढवेत्ता जाव मंदरचुलियत्ति एवं पुरकरवरदीवड्ढपच्चत्थि महापउमरुरुकातो जाव
मंदरचुलितत्ति जंबुदीवे २ मंदरपव्वते भद्दसालवणे अट्ठ दिसाहत्थिकूडा पं तं पउमुत्तर नीलवं
त्ते सुहत्थि अंजणा गिरी कुमुते त पलासे त वडेंसे रोयणागिरी जंबुदीवस्स णं दीवस्स जगती अ
ट्ठ जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं बहुमज्झदेसभाते अट्ठ जोयणाइं विरकं त्तेणं जंबुदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स
दाहिणेणं महाहिमवंते वासहरपव्वते अट्ठ कूडा पं तं सिद्धे महाहिमवाते हेमवाते रोहिता हरीकूडे
त्ते पुर्वदिसिइ तिवार पछी अनुक्रमइं आगलि सघ कुट जाणवा ॥ महाहिमवंतकूट ते तिणइं नामायक देवतानां वनस
हित छइ ॥ हिमवंतकुट तिहां वसइ क्षेत्रनानायक देवतानां आवास सहित छइ ॥ रोहितकूट ते रोहीतनामा नदीना देवता
नउ ॥ हरीकूट ते महापद्मद्रहनी हिरनामा देवी नउ ॥ २२२

हरिकंत कूट ते तिहाइं नामइं नदीना देवतानो ॥ हरिवर्षकूट ते हरिवास क्षेत्र नानायक देवतानउ ॥ वेडुर्यकुट ते वेडुर्यरत्नम
य ॥ एणइ अनुक्रमइ रूप्या पर्वतनां कूट जाणवा ॥ रुचकनां अधिकार थकी रूचक पर्वतनां आश्री सुत्र ८ पुरछिमेणं ॥ जंबु
द्वीपनाम रूचो आपकाई ॥ सर्वदिसिइं रूचक द्वीप माहिं रूचक पर्वत चक्रवाला कारिं ॥ तिउपरि आठ कुट छइ ॥ तिआठकुटन
इ विषइ उत्तरा दिक ॥ आठ कुमारी वसइ छइ ॥ जिनभगवंतनां जन्म नइं विषइं आरीस उसाही गीतगान गावंतनइ सबइ ॥ ॥ इम दक्षि णेभी तिगा रसा हीगाइ इम पश्चिम नाबी ढलो साही गाइ ॥
हरिकंता हरिवासे वेरुलीते खलु कूडाउ जंबुमंदरउत्तरेणं रुप्पिंमि वासहरपव्वते अट्ठ कूडा प
पं सिद्धेय रुप्पि रम्मग नरकंता सुबुद्धि रुप्पकूडेय हिरन्नवाते मणिकंचणे त रुप्पिंमि कूडा जं
बुमंदरपुरच्छिमेणं रुयगवारपव्वते अट्ठ कूडा पं तं रिट्ठे तवणिज्ज कंचण रयत दिसासोत्थिते प
लंबेय अंजणे अंजणपुलते रुयगस्स पुरच्छिमकूडे तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारि महत्तरिताओ म
महिड्ढियाउ जाव पलिउवमट्ठितीओ परिवसंति तं णंदुत्तरा य णंदा आणंदा णंदिवद्धणा विज
याय वेजयंती जयंती अपराजिया जंबुमंदरदाहिणेणं रुयगवारपव्वते अट्ठ कूडा पं तं कणते
कंचणे पउमे नलिणे ससि दिवागरे वेसमणे वेरुलिए रुयगस्स उ दाहिणकूडा तत्थ णं अ
ट्ठ दिसाकुमारि महत्तरियाउ महिड्ढियाउ जाव पलिउवमट्ठियाउ परिवसंति तं समाहारा सु
पतिण्णा सुपबुद्धा जसोहरा लच्छिवती सेसवती चित्तगुत्ता वसुंधरा ॥ १ ॥ जंबुमंदरपव्व रुयग
वारपव्वते अट्ठ कूडा प तं सोत्थिते त अमोहे य हिमवं मंदरे तहा रुयगे रुयगुत्तमे चंदे अट्ठ
मे य सुदंसणे तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारि महत्तरियाउ महिड्ढियाउ जाव पलिउवमट्ठितीओ परि
वसंति तं इलादेवी सुरादेवी पुढवी पउमावती तिय एगनासा णवमिता सीता तहा य अट्ठमा ॥ १ ॥

ऊतरनी व्यार स्या ही गाइ॥ दिवांगना मांग्र छिकार घकी सुत्र ५॥ अभी लोकवत्रु॥ सो मनसगंभ माहन॥ विउी तु प्रत॥
मालवंतनी वसनारि श्राठ दिसाकुमारी ति श्र धोलाक वासिनी तिश्रारिहंत मइऊ न्ना वनइ संवत्तकियाय विउ विहि

अंबुमदरउड्ढरुयगवार पव्वात श्रट्ठकूडा पं तं रयण रयणुच्चे तत्त सव्वात्तेरयणसंचातवेव वि
जए विजयंति जयंति अपराजिया १॥ तच्छणं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाउ महिड्ढियाउ जा
व पलिउवमट्ठितीताउ परिवसंति तें अलंबुसा मिस्सकेसीय पांडरीगा तवारुणी आसा सव्वगा
चेव सिरी हिरी चेव उत्तरातो ॥ श्रट्ठ श्रहालोगवत्थव्वाउ दिसाकुमारिमहत्तरियाउ पं तं लोगंक
रा लोगवती सुत्तागा लोगमालिणी सुवच्छा वच्छमित्ता य वारिसेणा बलाहगा अट्ठ उड्ढलोग
वत्थव्वाउ दिसाकुमारिमहत्तरिताउ पं तं मेहंकरा मेघवई सुमेघा मेघमालिणी तोयधारा विचि
त्ता य पुप्फमाला अणिंदिया १ अट्ठ कप्पा तिरियमिसोववन्नगा पं तं सोहम्मे जाव सहस्सारे एतेसु
णं अट्ठसु कप्पेसु अट्ठ इंदा पं तं सक्के जाव सहस्सारे एतेसि णं अट्ठन्हं इंदाणं अट्ठ परियाणिया वि — या ८
माणा पं तं पालए पुप्फए सोमणसे सिरिवच्छे णंदियावत्ते कामकमे पीतिमणे विमले अट्ठ
ट्ठमियाणं भिक्खुपडिमा चउसट्ठीए राइंदिएहिं दोहि त अट्ठासीतेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्ता

न दनवननां कूटमांहि वसइ वसमारी ति उर्द्ध लोकवासिनी ते श्रारिहंतनइ माहिमा ना वादला विकुर्वी नइ रस्पइ॥ तिरिय मस्स॥
श्राठ देवलोकलगिइ तिर्यच जपजइ॥ तेपुर्विला तिर्यचिनी सबनी जोपि लोइ तिर्यच मिश्रा देवलोक कहीइ॥ परियाणि
या विमाणा॥ जइप जिलाइं करी नइं तिपरियानी क विमान॥ मालकादिक श्रातिउगिक देवना कांध्म। श्रनु क्रमइं। सक्कादि
क श्राठइं इजाणिवा॥ देवता परंपरा तप श्ररणाघ कोजइ॥ ते ते णी तपनउ विसष कहइ छइ॥ श्राठ श्राठमा दिहाडा छ
इ जेहनइ विषइ॥ ते श्रष्ट श्रष्टमिका॥ ते श्राठ श्रष्ट दिवराइ दिन ६४॥ पिहिलइ श्राठ कि एक श्राहारनी दाति एकपाणीनी
दाति॥ वीजइ बाबे। इम श्राठमइ॥ श्राठ श्राठ। इम २८८ दाति॥ — २२३

जावना हिं॥ श्रहाकप्पा॥ श्रहामग्गा॥ अहातच्चा॥ सम्मं कारणफासिया॥ पालिया॥ सोहिया॥ तीरिया॥ किट्टिया॥ श्राराहिया॥ श्र
णुपालिया॥ श्रात्मानइ संयमनइ श्रनुकूल पणाइं पाली॥ तेप तउ तसंसारी जीव कहइ छइ॥ तेसणी संसारी जीव कहइ छइ॥ प्रथ
मसमयना नारकी ते नारकी ना श्राऊखाना उदयनउ पहिलो समय॥ द्वितीयादिक समयना ते श्रप्रथमसमय इम सर्व॥ श्रनेरइ श्रा

जाव अणुपालिया वि भवति अट्ठविहा संसारसमावन्नगा जीवा पं तं पढमसमयनेरतिता अप
ढमसमयनेरतिया एवं जाव अपढमसमयदेवा अट्ठविहा सव्वजीवा पं तं नेरतिता तिरिक्खजो
णिता तिरिक्खजोणिणीउ मणुस्सा मणुस्सीउ देवा देवीउ सिद्धा अहवा अट्ठविहा सव्वजीवा पं तं
आभिणिबोहियनाणी जाव केवलनाणी मतिअन्नाणी सुतअन्नाणी विभंगणाणी अट्ठविहे संज
मे पढमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे अपढमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे पढमसमयबा
दरसं ३ अपढमसमयबादरसं ४ पढमसमयउवसंतकसायवीतरागसंजमे अपढमसमयउवसंतकसा
यवीतरागसंजमे ६ पढमसमयखीणकसायवीतरागसंजमे अपढमसमयखीणकसायवीतरागसंजमे ८
अट्ठ पुढवीउ पं तं रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा ईसिपब्भारा ईसिपब्भाराते णं पुढवीते बहुमज्झदेसभागे अ

नो कह्यो॥ तातासंयमी जइ॥ ते सणी संयमना भेद कहइ छइ॥ संजमे॥ चारित्रना ते विज्ञ भेद छइ॥ सराग॥ वीतराग॥ तिहां सराग द्वि
विध॥ सूक्ष्म बादर कषायना भेद थकी॥ वली सूक्ष्म विभाग करिइं॥ प्रथमसमयनुं सूक्ष्म संपराय॥ अप्रथमसमयनुं सूक्ष्म संपराय प
णि भेद करिइं। इम बादरसंपरायना भेद करिइं॥ प्रथम अप्रथमसमयनुं॥ तिहां पहिलो समय प्राप्त्यो छइ॥ जेहनइं ते प्रथम
समय॥ तथा सूक्ष्म किटीकीधा॥ संपराय॥ संज्वलन लोभ रूप कषाय वेदी छइ जेहनइ विषइ॥ ते सूक्ष्मसंपराय॥ रागसहि
त वर्त्तइ ते सराग॥ ते हजसरागसंजम॥ बादर॥ अकिटीकीधा॥ संपराय॥ संज्वलन कषाय॥ क्रोधादिक ते हनइं छइ॥ ते
बादरसंपरायसरागसंजम॥ वीतरागसंयम बिउ श्रेणिनी श्रपेक्षाइं बिजु भेद करिइं॥ एक एक वली बिउ भेद करिइं॥ प्रथमसमय न
उ उपशांतकषाय॥ श्रप्रथमसमयनउ उपशांतकषाय॥ इम खीणकषाय भेद करिइं। एवं चिआ भेद करिइं॥ वीतरागसंयम॥ एवं
सर्व भेद॥ संयमी तउ पृथ्वी विकनउ जइ॥ तिहांथी प्रथवीना सुत्र ३॥ इसीपब्भारानउ वर्णन सोगलीका पुरुलउ॥ श्रनइ आउ उ

पणिआव्हजोयणा॥ इय तेः॥२ अप्रसतानी आपसाइ ना हा नकडी तसलणों ईसीकहीइ॥१॥ ईसी प लारा॰॥२ अप्रसानी आपक्षाइ ईषत्
प्रोडउ भार॥ प्राग्॰॥ पहिलुं ताटा चिकु पहिलुं आवइ तेनाग्र॥ ते ट्यवकी नउ त ते लणों ईसीप्राग्नार॥ तसेथी इजाकार णात
णी तणुए पातली॥३॥ तणुतणु॰॥ नबडक पातली॥४॥ सघलाई अर्थ साऊइं त्यहनइं विषइ तसिद्धि॥५॥ सिद्धनउ स्थान
क त्यहनइं विषइ। तसिद्धालय॥६॥ सकलकर्मथकी मुंकाइ त्यहनइ विषइ तमुक्ति॥ मुंकाणा तुं रहा नकं तमुक्तालय॥८॥
मुक्ति तउ अप्रमत पणाइं सुत अनुष्टान करतां थामाइं॥ तसणं अप्रमादकहइ छइ॥ अट्ठहिं॰॥ आवसनुनइं विषइ तसम्म

हं जोयणाए रवल्ल। अट्ठजोयणाइं बाहल्लेणं पन्नत्ते। ईसिपब्भाराए णं पुढवीए अट्ठ नामधेज्जा पं
तं ईसितिवा ईसिपब्भाराति वा तणुति वा तणुतणुति वा सिद्धी ति वा सिद्धालए ति वा मुत्ती ति वा मु
त्तालए ति वा। अट्ठहिं ठाणेहिं सम्मं घडियव्वं जतियव्वं परक्कमियव्वं अस्सिं च णं अट्ठे नो पमाएतव्वं भवति (तं)
असुयाणं धम्माणं सम्मं सुणणयाते अब्भुट्ठेतव्वं भवति। सुयाणं धम्माणं उगिन्हणताते उवधारणया
ते अब्भुट्ठेतव्वं भवति। नवाणं कम्माणं संजमेणमकरणताते अब्भुट्ठेतव्वं भवति। पोराणाणं कम्माणं
तवसा विगिंचणताते विसोहणताते अब्भुट्ठेतव्वं भवति। असंगिहीतपरिणट्ठ तस्स संगिन्हता

ए॥ घडियव्वं॰॥ अप्राप्त योगनइ विषइ योग करिवउ॥ जईयव्वं॰॥ प्राप्त नइं विषइ यत्न करिवउ॥ परिक्कमियव्वं॰॥ सक्तिनउ
इतो हि पणि॥ पराक्रम॰॥ अधिकउ उछाह करवउ॥ किं बहुना तेहनइ विषइ॥ नोपमायव्वं॰॥ प्रमाद न करिवउ॥ असुयाणं॰॥
अणसांभल्यउ॥ धम्माणं॰॥ श्रुतना लहइ तहनइं॥ सवणयाए॰॥ सांभलवानइं विषइ॥ अब्भुट्ठेयव्वं॰॥ उद्यम करिवो॥ सुयाणं॰॥
मं॰॥ सांभल्या [illegible] तेहनइं॥ उगिन्ह॰॥ अवधारनइं अरथिइं॥ उवधारणयाए॰॥ अवीसरवानइं अरथिइं उद्यम करिवउ॥
२॥ नवाणं॰॥ नवा कर्म संयमइं करी अणाकरवानइं विषइ उद्यम करिवउ॥३॥ पुराणाणं॰॥ पुर्वल्या कर्म तप इं करी॥ विगिं
चणाए॰॥ निर्जरवानइं अरथिइं॥ विसोहणाए॰॥ आत्मा निष्कलंक करवानइं उद्यम करिवउ॥ असंगिहीय॰॥ निराधार॥ परि
यणस्स॰॥ सिष्यवर्गनइं संगिन्ह॰॥ आधार देवा नइं विषइ उद्यम करिवउ॥ २२७

सहे॰॥ नवदीक्षितनइं॥ आयार॰॥ साधुनी सामाचारी लहइ॥ गोचर॰॥ विषयतउ [illegible] रूप अथवा आचार ते ज्ञानादिक पांच
॥ जोइउ तेहनी कोचर्या ते सीखवानइं॥ गाहणयाए॰॥ अंगीकार करावानइं विषइ॥ उद्यम करवउ॥६॥ अगिलाए॰॥ अग्लानपणइं
तखेदरहित। गिलाणनी वेयावच्च करवानइ विषइ॥ उद्यम॥७॥ साहम्मि[illegible]॰॥ विरोध ऊठतइं साधर्मिकानइ विषइ तेहां॥ अणिस्सि
उ॰॥ रागमेदितउ अथवा रागादिकनी इच्छारहित॥ वस्सितं॰॥ द्वेषरहित॥ अथवा सचित्ती कुलादिकनी उपकार रहित॥ अपरक्क
ग्गाही॰॥ सास्त्रविरुद्ध पक्ष न ग्रहइ॥ एहवुं छइ जेहणो मध्यस्थतावानइं॥ स्वय॰॥ पुकउं॥ कहे॥ किम॰॥ साहम्मिया॰॥ अ

ते अब्भुट्ठेतव्वं। सेहं आयारगोयरं गाहणयाते अब्भुट्ठेयव्वं भवति। गिलाणस्स अगिलाते वेया
वच्चकरणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवति। साहम्मिताण मधिकरणंसि उप्पन्नंसि तत्थ अनिस्सितो × अ × वस्सि
परकग्गाही मज्झत्थताव भूते कहणुसाहम्मिता अप्पसद्दा अप्पझंझा अप्पतुमंतुमा उवसामणता ता × २
ते अब्भुट्ठेयव्वं भवति। महासुक्कसहस्सारेसु णं कप्पेसु विमाणा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं
पसत्ता। अरहतोणं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठसया वादीणं सदेवमणुयासुराते परिसाते वादे अ
पराजिताणं उक्कोसिया वादी संपया होत्था। अट्ठ समतिते केवलसमुग्घाते पं तं पढमे समए दंडं करे

धर्मिकसाधु॥ अप्पसद्दा॰॥ राडि ना मोटा शब्दरहित॥ अप्पझंझा॰॥ तथा विविधी वचन रहित॥ अप्पतुमं॰॥ क्रोध सतमनो
विकाररहित॥ वाखई॥ इम विचारतइं॥ अधिकरण उपसमाविवा उद्यम करिवउ॥ अप्रमादीनइ दवलोक कहइ॥ तसणं॥ द
वलोकनउ अष्टक कहइ छइ॥ महासुक्क॰॥ अनंतराक्त विमानवासी देवतानइं पणि कोई एक वादी न जीपइ॥ तसणं वा
दी सूत्र॥ सुगम॥ एनेमिनाथना सिष्य केतलाएक केवली थइनइ वेदनी आदिक कर्मनी स्थिति आउखानी स्थिति सं[illegible]ति
इ साम्य करवानइं केवली समुद्घात करइ॥ ते तसणं समुद्घातनुं सूत्र॥ तिहां समुद्घात आरंभतां प्रथम आवज्जीकर्ण॥ अंतर्मु
हूर्त लगइ उदीरणानी आवलिकामइं विषइं॥ कर्मघातिवानउ व्यापाररूप इं [illegible]॥ तिवार पछी समुद्घात करइ॥ तिहां प
हिलइ समइ पुद्गल [illegible]। पोतानां शरीर जेतलुं [illegible] अधो लोकांत लगइ [illegible] जीव प्रदेसनउ समुदाय लेव
लोज्ञानना जाण पण [illegible] दंडनी परिइं दंड करइ॥१॥

बीजइ समइं ते ऊर्ध्व दंड । पुर्वपश्चिम विस्तार वाचक करी ही जे वांसाना प्रदेसलोकांत गामी कपाट नीपजावीइ कपाट करइं ॥२॥
त्रीजइं समइं दक्षिणउत्तर बिहुं बाजूना पासानां प्रदेशा विस्तार वाचक लोकांत गामी मथाणुं करइं ॥ इम प्रांतिं घणो लोक
पुरीणो ॥ चउथइ समइं रहित कुणिनां आंतरां पुरइं ॥ अलिगत जीव प्रदेसना कोट वाचक लोक पर्यंत नाके डुमलास
हित सर्वलोकपुरइं ॥ इम सर्वलोक पूर्यो अनंतर ॥ पांचमइ समइं कह्या वाचक कूपरा टीपरि सकर्म जीवना प्रदेस मथानरसं
हरइ ॥५॥ छठइ समइं मंथाणुं संहरइ ॥ अंतिनि बिउस लोकवाचकी ॥ सातमइ समइं कपाट संहरइं ॥ पोतानइं विषइ जीव प्रदेस

ति । बितीए समए कवाडं करति । ततिए समए मंथं करति । चउत्थे समए लोगं पूरति । पंचमे समए
लोगं पडिसाहरति । छट्ठे समए मंथं पडिसाहरति । सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरति । अट्ठमे सम
ए दंडं पडिसाहरति । समणस्स णं भगवतो महावीरस्स अट्ठ सया अणुत्तरोववातियाणं गतिकल्ला
णाणं जाव आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववातियसंपया होत्था । अट्ठविहा वाणमंतरा दे
वा पं० तं० पिसाया भूया जक्खा रक्खसा किंनरा किंपुरिसा महोरगा गंधव्वा । एतेसि णं अट्ठविहाणं वा
णमंतरदेवाणं अट्ठ चेइयरुक्खा पं० तं० कलंबो उ पिसायाणं वडो जक्खाण चेतितं । तुलसी भूयाण
भवे रक्खसाणं च कंडउ । असोउ किंनराणं च किंपुरिसाण य चंपतो । नागरुक्खो भुयगाणं गंधव्वा

नां संलोकवाचक ॥ आठमइ दंड संहरी मइं सरीरस्थाहि थिइं ॥ तिहां पहिलइ आठमइ समइं औदारिक तनु व्यापार प्रयुंजइ ॥ सा
तमइ छठइ बीजइ समइ औदारिक मिश्र शरीर तनु व्यापार प्रयुंजइ ॥ चउथइ पांचमइ अनइं त्रीजइ समइं कार्मण सरीर त
नु व्यापार प्रयुंजइ ॥ तेणइं त्रिणि समय अनाहारक होइ ॥ मन व्यापार न प्रयुंजइं ॥ पछत्तणं इम कहिउं ॥ अट्ठ ॥ आठ समय न
उ केवलीसमुद्घात ॥ सर्वसमुद्घात नही ॥ अनंतर केवलीसमुद्घात नी वक्तव्यता केही ॥ हिवइ आ केवली छता पणि गुणवंता ते २२५
गइं ॥ देवगतिरूप कल्याण कारणी छइ ते कहइ नइं ॥ इम स्थिति पणि ॥ आगमेसिं ॥ आगमीइ कालइ पणि भद्ररूप सदुकल्याण छइ
जेहनइं ॥ तेइं यकरका ॥ मणिपीठिका ऊपरि छइ ते सर्व रत्नमय ॥ उपरि छत्र अधु दिक्ष्ये ध्वज ते ॥ ते धर्म दिसना आंगलिसा तवा

नां मादि लुं ते संलवीइ छइ ॥ तेईं होन लिवां । पछत्तणं आषिक रूप छइ मुगट नइ विषइ ॥ भूयगा ॥ महोरग देवतानइं ॥ दासरइं ॥
वारका ॥ पमइं ॥ चंद्रमानइं करसबुं ॥ तेरूप जोग जोडइ ॥ पोतानइं चंद्रमा संघाति ॥ सदाए देव कं जोड जोडइ ॥ पणि
दा विनहो ॥ जिदक्षणउत्तर ना जोडणहार ते प्रमर्द जोगा ॥ एजिम कहिउं छइ तिम जोग जोडइ तउ सुदो सदाकाइ ॥ अनइं विप
रीतिइं विपरीत कइ ॥ देवताना अधिकार थकी वली देवताना निवासरूप तउ बुद्धीपादिनों सुत्र ॥ ॥ ७ ॥ देव पणइं ॥ उपजा
वणहार कर्म छइ ते सणं कर्मना सुत्र २ ॥ कर्मना अधिकार थकी कर्मनी कारणकुलकोडिनुं सूत्र ॥ तेइंद्रियादिक विविध परणुता कर्म

णायनेउउ इमीसे रयणप्पभाते पुढवीते बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठजोयणसत
उड्ढं अबाहाते सूरविमाणे चारं चरति । अट्ठ नक्खत्ता चंदेण सद्धिं पमद्दं जोगं जोतंति । तं कत्तिता
रोहिणी पुणव्वसु महा चित्ता विसाहा अणुराहा जेट्ठा । जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स दारा अट्ठजोयणाइं
उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता । सव्वेसिं पि णं दीवसमुद्दाणं दारा अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता । पुरिसवे
दणिज्जस्स णं कम्मस्स जहन्नेणं अट्ठसंवच्छराइं बंधठिती पन्नत्ता । जसोकित्तीनामाए णं कम्मस्स जह
न्नेणं अट्ठ मुहुत्ताइं बंधठिती पं० । उच्चागोयस्स णं कम्मस्स एवं चेव । तेइंदियाणं अट्ठ जातीकुलको
डीजोणीपमुहसतसहस्सा पं० । जीवा णं अट्ठठाणनिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताते चिणिंसु वा चिणंति
वा चिणिस्संति वा पढमसमयनेरतितनिव्वत्तिते जाव अपढमसमयदेवनिव्वत्तिते । एवं चिण
उवचिण जाव निज्जरा चेव । अट्ठपतेसिता खंधा अणंता पन्नत्ता । अट्ठपतेसोगाढा पोग्गला अणंता
पन्नत्ता जाव अट्ठगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पन्नत्ता । अट्ठट्ठाणं सम्मत्तं ॥ ८ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ६ ॥ ७ ॥

थका छुं ॥ ते सणं कर्मपुद्गलना सुत्र सर्व सुगम ॥ जातिनइ विषइ कुलकोडिनी ॥ जोणि पमुहा ॥ योनि द्वार नी पस
तसहस्सा ॥ अट्ठट्ठाणं समत्तं ॥ ७ ॥ ८ ॥ ७ ॥ ६ ॥ ७ ॥ पुर्वसुत्र निं पुद्गल कह्या ते पुद्गलरूप कर्मना अइ थघ

कीकोइकउतीपकउपणि आचार्यादिकनी आसातना करइ। ततहनइ विसंवादीकरिवउ। एहवो संबंध थुरिकहइ छइ घोतइं ब्रह्मचर्यइं स्थिरो कुइ। तेपरनइ कादीसकइं तेतलं ब्रह्मचर्यनाकहिनार अध्ययनकहइ छइ॥ बुं सं०॥ ब्रह्म
तकुसलानुष्टानतनइउल त्यिर०॥ चर्यतासवधुअचेयर्य॥ संयमइ स्थिर॥ तेहनो कहिनारो अध्ययन ते आचारनो प्रथम श्रु
तस्कंधना नव॥ तिहांसस्त्र इव्यतावधेकोल दधकोअत्नकविविध तेजीव विनासिवा तेहनु॥ परिज्ञा०॥ ज्ञानइवकिनुपच्चखवुं जिहां छइ
तेसस्त्रपरिज्ञा॥१॥ सावालोकतरागद्वेषरूप॥ तेहनुं जे विजय०॥ निराकरिवउं जिहां कहीइ ते लोकविजय॥२॥ सीत०॥ अनुकूल
परिसह॥ उस्न०॥ तेप्रतिकूलपरिसह तेआश्रीय अध्ययन कीधुं तेसीतोस्णीय॥ सम्यक्त्व॥ निश्चल करिवुं परिणाम पसादिकनी कहात

नवहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे संलाइये विसंत्ताइयं कारमाणेणातिक्कमति। तं। आयरियपडिणीयं उवझायपडिणीयं थेरपडिणीयं कुलगण संघ नाण दंसण चरित्तपडिणीयं। नव बंभचेरा पं। तं। सत्थपरिन्ना लोगविजउ जाव उवहाणसुयं महापरिन्नं। नव बंभचेरगुत्तीओ पं। तं। विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता भवति णो इत्थिसंसत्ताइं नो पसुसंसत्ताइं नो पंडगसंसत्ताइं। नो इत्थीणं कहं क

तपगुण ऐश्वर्यादिकना मइं हाक्षिमोसन करिवउ। तेहनुं कहिनारु जे अध्ययन ते सम्यक्त्व॥४॥ धुति लइ पदिइ आवंती एहवउ अलापक छइ तेसणी
आवंती नाम्मा तेहिं लोकसार ते असार ज्ञानादिक नइ छांडइ। सार ज्ञानादि त्रिण्हिनइं विषइं उद्यम परधावुं॥ एहवउ अर्थ जिहां छइ
ते लोकसार॥५॥ धुत०॥ संगनुं छांडिवउं। तेहनुं कहिनार जे अध्ययन। ते धुत॥६॥ मोहथकी ऊपनाय परिसह ऊपसर्ग तेप्र
गाघ थिइं मुंझावुं नहीं। सम्यग् ते सहिवा जिहां कहीइ॥ ते विमोह॥ ७॥ महावीर नां सविताय ऊपधनत पातेहनुं कहिनारु श्रुत०॥
गोघा तेऊपधानश्रुत॥८॥ मोटी प्रज्ञा०॥ अंतक्रियारूप। ते सम्यग् करवी तेहनुं कहिनारु ते महाप्रज्ञा॥९॥ ब्रह्म चर्यना गुप्ति
कहइ छइ॥ नव ब्रह्म०॥ मैथुनव्रत तेहनी गुप्ति०॥ रक्षीना प्रकार॥ विवित्त० स्त्री पसु पंडगथी जुयां॥ सयण० संस्ता रक॥
आसण०॥ पीठादि॥ पं०॥ ऊपलक्षण थानस्थानादिक तेहनउ॥ सेविता०॥ सेवनार ऊइ ब्रह्मचारी॥ एहवउ अर्थ वितीमु जइ प्रोक्त विवा २२६
नइं कहइ छइ॥ नोइस्त्रीसं०॥ देवीनारीतिर्यंचिणी इत्यादि तेहनो संसक्त स्थानक न सेवइ॥ नोपसु०॥ गवादिकइं व्याप्त न सेवइ॥ नो पंडगं
०॥ नपुंसक व्याप्त स्थानकन सेवइ॥ तेहो स्त्री सरीषो प्रसिद्ध॥ नोइत्थीणं०॥ एकली स्त्रीमाहि धर्मदेसना अथवा स्त्रीनी कथा न करइ॥

नोइस्त्रीगणनइं एहवउ केसु न इहां दीसइ छइ॥ पणिनोइत्थी ठाणाइं एह घउं सुनउं ईय इमस्स लावीइ छइ॥ उत्तराध्ययन नइ विषइं पणि
तिमकह्या पत्ताघको। तथावाचनांतर ना अनुसारथको॥ स्त्री केहनइ विषइं तिहइं॥ स्त्री नो स्थानक॥ निषिद्धाइसाण
दिकतेब्रह्मचारी न सेवइ॥ एतलइं स्त्री संघातिइं एकइं आसणिइं न बइस्यइं॥ स्त्री ऊविइं पणि मुहूर्त लकन बइसइं॥ पुविल्या
पा वनउ एअर्थ स्त्रीना॥ गणं॥ समुहनउ से वणहार न कुइ॥ ३॥ नोइत्थी आलोइत्ता०॥ तेहनो जोणहार॥ निज्झाइत्ता०॥ देषवा
अनंतर अतिहिं मनमी हिंचितवइं समन करइ॥४॥ नो पणी ये०॥ गलता घीगटना बिंदुया नउलु गवणहार न कुइ॥५॥ नो पाणभो०
लवइं आहार पाणी पणि अधिक मात्राइं न लागुवइं॥ तेसु धनउ अर्थ आहार करइ॥ इ पाय की ऊणोदरी करइं
पाणीनी॥ इमऊणोरहइ॥ रवादिमस्वादिम इहांन कह्या ते ऊसर्गं पंचवइं॥ पतीनइ आयो पछइ तेसणी पानला जनुं उयछिण॥२

हित्ता २ नो इत्थिठाणाइं सेवित्ता भवति ३ नो इत्थीणमिंदियाइं मणोहराइं मनोरमाइं आलोइत्ता निझाइत्ता भवति ४ णो पणीतरसभोती ५ णो पाणभोयणस्स अतिमातमाहारते सता भवति ६ णो पुव्वरतं पुव्वकीलितं समरेत्ता भवति ७ णो सद्दाणुवाती णो रूवाणुवाती णो सिलोगाणुवाती ८ णो सातसारकपडिबद्धे यावि भवति। नव बंभचेर अगुत्तीउ पं। तं। णो विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता भवति इत्थिसंसत्ताइं पसुसंसत्ताइं पंडगसंसत्ताइं इत्थीणं कहं कहेत्ता भवति इत्थिठाणाइं सेवित्ता भवइ इत्थीणमिंदियाइं मणोहराइं जाव निझातित्ता भवति पणीयरसभोती। पाणभोयणस्स अतिमायमाहारए सया भवति पुव्वरत्तं पुव्वकीलितं सरित्ता भवति सद्दाणुवाती रूवाणुवाती सिलोगाणुवाती सायासोक्खपडिब

द्धे यावि भवति॥ अद्दस्स वस्थाइं स्त्रीसंघातइं॥ संलाग अनुं सवो कुइ॥ पुर्व कीडित०॥ स्त्री संघातिइं सो गगादिक इंरम्या कुइ॥ तेसंभारइं
नहीं॥७॥ नोसद्दाणु०॥ सद्दानुमुणा लापवादिक रागना हेतु तेहनउ अर्थीनथाइ॥ अनइ रूपनइ अणुसरइ नहीं॥ तिम०॥ सिलोगा
रव्यातिनइ॥ एह त्रिहुपदि इ एक बोडि॥८॥ नोसाय सोक्ख०॥ सातापुन्यप्रकृतिथकी जे सुष गंध रस स्पर्शनइ विषइं प्रतिबं
ध०॥ तत्परन कुइ॥ ब्रह्मचारी सातानासहिवा थकी ऊपसमसुषन कुइ॥९॥ नव ब्रह्मचर्यनी अगुप्ति तेकह्या थकी विपरीत॥

ब्रह्मचर्य ता जिनइं कहिउं ॥ ते सांभलिनइ सुत्र ॥ श्रतिनंदनइं सुमति जिनइं तउ नवपदार्थ प्ररूप्या ते कहइ छइ ॥ नवसद्भाव ० ॥ सद्भाव ० ॥ परमार्थ पणिं परमार्थिक नहीं ॥ पदार्थ ० ॥ वस्तु तिहां सुख दुःख ज्ञान उपयोग लक्षण जीव तेहथकी विपरीत ते अजीव ॥ सुभ प्रकृति ते पुन्य ॥ तेह विपरीत कर्म ते पाप ॥ सुभासुभ कर्म ग्रहइं एणइं करी ते आस्रव ॥ आस्रवनउ निरोध ते संवर तेगुप्त्यादिक इं करीनइं ॥ निर्जरा ते विपाकथकी अथवा तपइं करी नइं कर्मनिं देसथकी क्षेपविवउ ॥ आश्रवइं ग्रह्या कर्मनउ आत्मासंघाति इंसे लोलीभाव ते बंध ॥ सकलकर्मना क्षयथकी जीवनइं पोतानां स्वरूपमइं विश्राम रहिवु ते मोक्ष ॥ जीवाजीव व्यतिरिक्त पुन्य पापादिक कुंणनहीं ॥ पुन्य पाप पुद्गल कर्म छइ ॥ अनइं बंध ते तद्रूप्य छइ ॥ अनइं कर्म ते पुद्गल नो परिणाम छइ ॥ पुद्गल ते अजीव छइ ॥ आश्रव ते मिथ्या दर्शनादिक जीवनउ परिणाम छइं ॥ ते आत्मामइं विरहनउ करणहार आश्रव निरोध रूप ते संवर ॥ देस थकी ते सर्वथकी आत्मा नउ परिणाम निवृत्ति रूप ॥ निर्जरा ते जीव कर्मनुं जूदा करिवउं पोतानी सक्ति ॥ मोक्ष ते समस्त कर्म रहित ॥ आत्मा ते लक्षण जीवाजीव पदार्थ ते सद्भाव कहीइ

धया विलवति ए ॥ अतिनंदणाउ णं अरहउ सुमती अरहा नव हिं सागरोवमकोडीसयसहस्सेहिं वीतिक्कंतेहिं समुप्पन्ने ॥ नव सब्भावपयत्था पं तं जीवा अजीवा पुन्नं पावं आसवो संवरो निज्जरा बंधो मोक्खो ८ ॥ णवविहा संसारसमावन्नगा जीवा पं तं पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया बेइंदिया जाव पंचिंदिया ॥ पुढविकाइया नवगतिया नवआगतिया पं तं पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो वा जाव पंचिंदिएहिंतो वा उववज्जेज्जा से चेव

एहूज सणेइ हांपुर्वि कहिउं ॥ जे लोकमांहि छइ ते सर्व बिहुं प्रकारिइ ॥ ते कहा ॥ जीव अजीव ॥ इहां समुच्चय बे पदार्थ कह्या ॥ ते ॥ इहां विसेषथकी नव प्रकारिइं करी लेषाड्या ॥ वस्तु नां समुच्चयइं विसेष प्रपंचार्थक ॥ तथा मार्गनि विषइ ॥ सं विप्रवर्त्तिविउं तिहां संक्षेप वचनकहिवउं तिहां आश्रव ते बंधना द्वार छइ ॥ पुन्यपाप ते संसार नां सुखकारण छइ ॥ संवर निर्जरा ते मोक्षनु कारण छइ ॥ संसारकारण नइ त्यागिइं मोक्षमार्ग जिह प्रवर्तीइं ॥ ते तणां मोक्षनुं स्वरूप सुखनइंजणावानइं अर्थिइं नवपदार्थ विसेषथकी कह्या ॥ इहां नवपदार्थ मांहि प्रथम जीवपदार्थ ते हना लिद गतिआगतिः ॥

डाक्टर भाऊदाजी इस्मारक
D. BHAU DAJI
MEMORIAL

अवगाहना ॥ संसार निवर्त्तन ते गात्यपि कारणकहेवानइ काजइं सुत्र १५ कहइ छइ ॥ अवगाही छेइ जेहनइं विषइ ते अवगाहना सरीर नउ स्थानक ॥ विवित्तिसु वा ० ५ प्रवर्शतिउ स्वउ ॥ अंधीसलाए ॥ निरंतर अत्यंत बद्धी सरीर हिवइ ॥ हेरस वि

णं से पुढविकाइए पुढविकायत्तं विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए वा जाव पंचिंदियत्ताए वा गच्छेज्जा एवमाउकाइयावि जाव पंचिंदियत्ति णवविहा सव्वजीवा पं तं एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया नेरतिया पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा देवा सिद्धा अहवा नवविहा सव्वजीवा पं तं पढमसमयनेरतिता अपढमसमयनेरतिता जाव अपढमसमय देवा सिद्धा अहवा नवविहा सव्वजीवोगाहणा पं तं पुढविकाइओगाहणा आउकाइओगाहणा जाव वणस्सइकाइओगाहणा बेइंदिओगाहणा तेइंदियओगाहणा चउरिंदिओगाहणा पंचिंदिओगाहणा जीवाणं णवहिं ठाणेहिं संसारं वत्तिंसु वा वत्तिंति वा वत्तिस्संति वा तं पुढविकाइयत्ताए जाव पंचिंदियत्ताए ॥ णवहिं ठाणेहिं रोगुप्पत्ती सिया तं अच्चासणयाते अहितासणाते अतिणिद्दाते अतिजागरितेणं उच्चारनिरोहेणं पासवणनिरोहेणं अद्धाणगमणेणं भोयणपडिकूलयाते इंदियत्थविकोवणयाए ॥ अध्वागमनेणं ० ॥ ऊबइनो वइंग मननइं करवइं ॥ भोयणपडिकूल ० ॥ खलाविइं अजीर्णपलानइं करी ॥ ९ ॥ इंदिय ० ॥ सब्दादिइंद्रीना विषयनइं ॥ विकोवणयाए ० ॥ विकोपइं करी काम विकारइं स्पर्श ॥ तेहथकी स्त्रीयादिकना अभिलाषथाइः तेअभिलाषथकी उन्मादि कपजइ ॥ यदुक्तं ॥ प्रथम अभिलाषथाइ ॥ पछइ चिंताथाइ ॥ पछइ सो स्मृतिकरइ ॥ पछइ तेहना गुणकीर्त्तन करइ ॥ पछइ उद्वेग ऊपजइ ॥ पछइ प्रलापथाइ ॥ पछइ उन्मादथाइ ॥ पछइ मरण ॥ विषयनी अप्राप्तिइं रोग ऊपजइ ॥ अत्यंत आसक्तपणइं करी धातुक्षयादिक पणि रोग ऊपजइ ॥ ९ ॥ सरीर आधीरो रोगोत्पत्तिनां कारण कह्या ॥ हिवइ रोगनां कारण कर्म कहइ छइ ॥

विकारादि रोग ऊपजइ अथवा अतिमात्राइं आहार वइं करी अजीर्णना कारणपणाथकी रोग ऊपजइ ॥ १ ॥ अहित ॥ अनवकूल बइसवु टोलेपापाणादिकनुं तेणइं करी हरसादिक ऊपजइ अथवा अजीर्णनइं विषइ खाइ विवु ते णइं करी अथवा अहित विषसनादि करइ करी ॥ २ ॥

नवविहे०॥ सम्मुखेयय द्रव्यारूप ज्ञान ते दर्शन ते हनई आवरवावारवा स्वभावनु कर्म ते दंसणावर्ण ते नव भेदे कहिइं॥ निद्रा निद्रा पंच
क॥ अवेतन करइ परिसुषइ जागइं ते निद्रा॥ ते निंद्रा जेणइं करी आवइ छइ ते कर्म प्रकृतिपणि निद्रा कहीइ॥ १॥ विहिलइ
जागइं दुःलाविबद्ध जागइ ते निद्र निद्रा। ते कर्मप्रकृतिपणि निद्रा निद्रा कहीइ॥ बेठो ऊभा नइं ऊंघ आवइ ते प्रचला ते हनो कर्म
प्रकृतिपणि प्रचलक कहीइ ३॥ हीडतो आवइ ते प्रचलाप्रचला। ते हनो कर्मप्रकृतिपणि प्रचलाप्रचला कहीयइ॥ ४॥ घणा
पणाइं करी। निवडइ पणइं प्रकृती॥ स्त्यद्धि०॥ बोल्या जागतां जे कार्य चींतव्युं करइ ते निद्रा मांहि करइ॥ ते थीणगिद्धी॥ अथ
अथवा॥ पिंडीभूत॥ ऋद्धि॥ आत्मानी सक्ति ते हनइं विषइ छइ। ते थीणद्धी५ ते हमांहि अर्धवासुदेवनासरिखी सक्ति छइ

णवविहे दरिसणावरणिज्जे कम्मे पं० तं० निद्दा निद्दा२ पयला पयला२ थीणगिद्धी चक्खुदंसणावरणे
अचक्खुदंसणावरणे ओहिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे। अभिई णं साइरेगे णव मुहुत्ते
चंदेणं सद्धिं जोगं जोएति। अभीतिआतिआ णं णव नक्खत्ता णं चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति तं० अभि
ति सवण धनिट्ठा जाव भरणी इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए

अथवा थीण०॥ ऋद्धि ते स्त्यान ते थीणद्धी॥ ते हनी कर्मप्रकृति पणि थीणद्धी कहीइ॥५॥ इम निद्रा पंचक॥ दर्शनावरणना
थाया पसम थकी लब्ध ते आत्मानां सामान्य दर्शन लब्धिरूप ते हनुं आवरणहारुं कहिइं॥ हिवइ मूलथकी दर्शन लब्धि कहिउं
सआवरइ ते कहइ छइ॥ ते दर्शनावरण च्यार॥ सम्मुख यइ वस्तुनइं ग्रहिवा रूप॥ ज्ञान ते चक्षुदर्शन ते हनुं आवरण। ते चक्षु
दर्शनावरण॥ आंखि वर्जित च्यारि इंद्री अनइ मनि करी जाणिवउं ते अचक्षु दर्शन ते हनुं आवरणहारुं ते अचक्षुदर्शना
वरण॥ २॥ अवधि०॥ रूपी द्रव्य नी मर्यादाइं अथवा इंद्री नी अपेक्षाइं दीसइ ते। सामान्य अर्थनुं ग्रहिवुं ते अवधिदर्शन। ते ह
नुं आवरिवुं ते अवधिआवरणदर्शन॥ ३॥ केवल पूर्वे वर्णित स्वरूप ते हे ऊ दर्शन ते केवलदर्शन। ते हनुं आवरण ते
केवलदंसणावरण ४ इम नवविध दर्शनावरण कहिउं॥ जीवनइं कर्मथकी नरकआदि देवपणुं। तिर्यंचपणुं मनुष्यपणुं
करइ॥ ते सत्तो ते हना सूत्र नो संपूर्ण ते कहइ छइ॥ साति रेग०॥ नव मुहूर्त नव ६२ भाग कीजइ ते हवा २४ भाग अनइं वासठि
या १ भाग ना ६७ भाग कीजइ। ते हवा ६६ भाग एतलइ अधिक नव मुहूर्त॥ ए हवउ जोग०॥ ए हणाद सिरइं च इमा २ दि को अभि
आ पणि पिइ ऊतर दसिइं रहया जोगा जोडइ॥ २२८

वकुसम०॥ अत्यंत समा ए हवा इ पर्वत शिखरि कुसुम ते कुसुम॥ ए हवउ ऊंचउं भनो कपडो वा स्त्रमिल्ला थकी एतलइ॥ आबाधाए०
आंतरइं॥ उपरिल्ले॰ उपलो ताराउ च॰॥ ताराची जाति नो॥ चैत्रि॥ वारे॥ भ्रमण॥ चरइ॥ आचार छइ॥ नव जोयणिया॥ न
द जोयणना लांबा॥ पविसिंसु॥ पइट्ठा पइट्ठि पिल पल माहि पांच स्पर्श जोयणना छइ। ते प्रवेसनीसइ मुखि जगती ना रंध्र नइं वि
लइ॥ एतली अवगाहना ना प्रवेसी जिसकइ॥ अथवा लोकानुभाव एहवउ प्रथा वइ॥ ईशिधु दिनोयद ते लोकनुधुरिनु अर्थ॥ अन
इ लेइ ह्या विपद ते गाथानुं प्रविलुं अर्थ॥ एतो आदेश॥ ईहां वी आ रेसी नइं समवायांग थकी अन्य सूत्र माणि बउं॥ एम अर्थ धियतिए॥

वकुसमरमणिज्जाउ भूमिभागाउ णव जोयणसताइं उड्ढं अबाहते उवरिल्ले तारारूवे चारं चरति जंबु
द्दीवेणं दीवे णवजोयणिया मच्छा पविसिंसु वा पविसंति वा पविसिस्संति वा जंबुद्दीवे २ भर हे
वासे इमीसे ओसप्पिणीते णव बलदेव वासुदेवपियरा होत्था तं० पयावती य बंभे राउद्दे सोमे सि
वितित महसीह अग्गिसीहे दसरहे नवमे य वसुदेवे एत्तो आढत्तं जहा समवाते निरवसेसं जाव
एगा से गब्भवसही सिज्झिहिती आगमेसाएणं जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे आगमेसाते उस्सप्पिणीते णं
व बलदेव वासुदेव पियरो भविस्संति एवं जहा समवाते निरवसेसं जाव महाभीमसेणे सुग्गीवे त अ
पच्छिमे एए खलु पडिसत्तू कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं सव्वे वि चक्कजोही हम्मिहंती सचक्केहिं॥ १॥ एग
मेगे णं महा निही णव णव जोयणाइं विक्कंभेणं पन्नत्ते एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स णव महा
निहीउ पं० तं० णेसप्पे १ पंडुयए २ पिंगलए ३ सव्वरयणे ४ महापउमे ५ काले ६ महाकाले ७ माणवगे ८ महानिही संखे ९

= पयावती राया १ बंभे राया २ राउद्द राया ३ सोम राया ४ सिव राया ५ महसीह राया ६ अग्गिसीह राया ७ दसरह राया ८ वसुदेव राया॥ ९॥

नव वासुदेव बलदेवना मातापितानां नाम॥ पुर्वभवनां नाम। पुर्वाचार्यनां नाम॥ नियाणांनी भूमि। नीयाणानां कारण॥ प्रतिवा
सुदेवना तिईत्यादि जाणवुं। ए गाह लगइं॥ अवशेषतु गइ दाहामा॥ एग पुरा बरु लीय क पंचमि॥ एगा रगब्भवसही०॥ एक वार
गर्भवासि रहइ सम्पइ॥ सिज्झस्सती॥ आगमीइ कालि इसाऊ सइ॥ किंडी पुरिसाण॥ ए अनंतर कह्या त्य प्रतिवासुदेव ते॥ की
र्त्तिइं करी प्रधान ऊपुरुष वासुदेव तेसं घाति इ॥ चक्कजोहि॥ चक्रइ करी जुद्ध णाहार॥ हम्मिहंति॥ ध्याता नइं चक्रइं करी हणास्यइ

ठाणांग बी

महापुरुषना अधिकारनइं विषइ ॥ चक्रवर्त्ति महापुरुषना निधांनक कहइछइ ॥ ईहा नेसप्पे ॥ इत्यादि निधानना नायक देवतानां
मनइं सरीषिं नामिं निधाननां नाम ॥ निवेसा ॥ नवा ग्रामादिकनी स्थापना ॥ अथवा चक्रवर्त्तिना राज्यनइं रूप सर्वद्रव्य नव
निधाननइं विषइ अधत्तरइं ॥ राजा त्यां रपइ द्रव्य सर्व नव निधानमां हिंला सइं ॥ देसमा हिंला लोक वसइ ते ग्राम ॥ जिहां लवण
दिक ऊपजइ ते आगर ॥ पत्तन जिहां सर्व वस्तु लाभइं ॥ द्रोणमुख ते जलपंथ थलपंथ सहित ॥ मंडप ते जेहनइं विषइं दुकडो ग्राम नहीं
नहीं ॥ खंधावार ते कटक नां स्थानक ॥ गिहा ॥ घर ग्रामादिकनवो तुमानी वासवानी विधि सर्व नेसप्प निधानमांहिं वर्त्तइ ॥१॥

॥१॥ णेसप्पंमि निवेसा। गामागरनगरपट्टणाणं च। दोणमुहमडंबाणं। खंधावारगिहाणं च ॥२॥
गणियस्स य बीयाणं। माणुम्माणस्स जं पमाणं च। धन्नस्स य बीयाणं। उप्पत्ती पंडुए भणिया ॥३॥ स
व्वा आभरणविही। पुरिसाणं जा य होइ महिलाणं। आसाण य हत्थीण य पिंगलगनिहिंमि सा भणिया ॥४॥
रयणाइं सव्वरयणे। चउदस पवराइं चक्कवट्टिस्स। उप्पज्जंति एगिंदियाइं पंचिंदियाइं च ॥५॥ वत्थाण य
उप्पत्ती। निप्फत्ती चेव सव्वभत्तीणं। रंगाण य धोव्वाण। सव्वा एसा महापउमे ॥६॥ कालेकालण्णाणं स
व्वपुराणं च तीसु वासेसु। गणियस्स ॥ दीनार पुगीफलादिनी गणवानी विधि ॥ तथा बीज ॥ दीनारादि रूपजानादि
कनो कारण ॥ माण ॥ माणांसइं आदि मववानो माप लो अनइं तेणइं माप लइ जे वस्तु मवाइ तेहनी विधि ॥ अनइ उनमान ते
त्राजवो कारसी आदि तेणइं करी तोलीइ जे षांड गोलादिक वस्तु तेहनो विधि ॥ तेमान उन्मान नुं ते प्रमाण ॥ त
था धन्य ते व्रीहीआदि तेहनो ॥ बीज ॥ तेहनी ऊपजवानी विधि ते पांडुक निधान माहिं तीर्थंकरिं कह्या ॥३॥ ॥
रयण ॥ चक्रादिक एकेंद्री रत्न सात ॥ सेनापति आदि पंचेंद्री रत्न सात ॥ ते चक्रवर्त्तिनइं ऊपजइ छइ ॥ ते सर्व सर्व
रत्न मा मानिधाननइं विषइं जाणिवो तेहनी विधि ॥ वत्थाणय ॥ वस्त्रनो समुच्चय घोकत्ति ॥ विस भषकी ते निष्फत्ति
सघलत्तीणं ॥ सर्ववस्त्रना प्रकार अथवा सात ॥ रंगाणय ॥ वस्त्रनु रंगवु ॥ धन्याना ॥ धन्य नी पखालवानी विधि महाप
द्म निधान मांहिं छइ ॥ ६॥ काले ॥ काल नामा निधाननइं विषइं ॥ कालंनाण ॥ शुभाशुभ कालनु ज्ञान वर्त्तइ छइ ते निधानथ
की रूपजइ ॥ सव्व ॥ आगमी आकालनी वस्तुनु ज्ञान ॥ पुराणं ॥ अतीतकालनी वस्तु नु ज्ञान ॥ चकारथकी वर्त्तमान २२५
कालथकी वस्तुनु ज्ञाण ॥ तीसुवासेसु ॥ अतीतानागतनइं विषइं त्रिणि त्रिणि वर्षनु जाणपणुं ॥

सिप्पसय ॥ सा विज्ञान तिहां घटलोहचित्र वस्त्र नावी एणाकरूं मातेकि वांसव सालदि । इममो विज्ञानकर्म ॥ कृषि ॥ वाणिज्या
दि ॥ तिन्नि ॥ त्रिणिकाल ज्ञान १ सल्प २ नक्रंक मरूप ३ पथाइ ॥ लोकनाइं निर्वाहिना हेतु थकी छे ते कारीया छइ ॥ ६॥ लोहस्सय ॥
लोहडानी ऊत्पत्ति ॥ आगर ॥ जिहां लोहडा दिक थमाइ ॥ रूपानी सोनानी मणि चेर कांतादिक मोतीनो ॥ सिल ॥ स्फटिकादिकनी
पवालेवं ॥ प्रवालानी उत्पत्ति महाकाल निधानमाहिं ॥ ७॥ जोहाण ॥ योध ॥ सुरपुरुषनी उत्पत्ति ॥ आवरण ॥ सनाह ॥ पहरण ॥
खडगादिक सघलीजयुद्धनी नीति ॥ कटकना स्थेनो ॥ मां णवक निधाननइं विषइ छइ ॥ अथवा माणवक निधानना नायक नइं वि
षइ छइ ॥ तेहथकी प्रवर्त्तइ ॥ इति भाव ॥ डंडनीति ॥ स्यामादिकव्यापित दि ॥ ते पणि ए छइ निधानमाहिं ॥८॥ नट्टविहि ॥ नाटि

सिप्पसत कम्माणं। तिन्निपयाएहियकराइं ॥७॥ लोहस्स य उप्पत्ती होइ महाकाल आगराणं च। रुप्पस्स
सुवन्नस्स य। मणिमोत्तिसिलपवालाइं ॥८॥ जोहाण य उप्पत्ती। आवरणाणं च पहरणाणं च। सव्वा य जु
द्धनीती। माणवए दंडनीती य ॥९॥ नट्टविही नाडगविही। कव्वस्स चउव्विहस्स उप्पत्ती। संखमहानिहिम्मी॥
तुडियंगाणं च सव्वेसिं ॥१०॥ चक्कट्ठपइट्ठाणा। अट्ठुस्सेहा य नव य विक्खंभे। बारस्स दीह मंजूस संठिया ज
न्हवीइ मुहे ॥११॥ वेरुलियमणिकवाडा। कणगमया विविहरयणपडिपुन्ना। ससिसूरचक्कलक्खण। अणु
समजुगबाहुवयणे ॥१२॥ नाटिकना २ बा नाप्रकार ॥ नाडगविहि ॥ नाटिका ते चरितानुसारि नाटक लक्षणसहित तेहनी वि
धि ॥ कव्वस्सचउ ॥ चउविहि काव्य ते धर्मार्थ काम मोक्षरूप पुरुषनो अधिकार सहित ग्रंथनी अथवा संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश संकीर्ण
नी लावाइ षी भासा अथवा ॥ सम ॥ विषम ॥ अर्धं सम ॥ छंदिइ बांध्यो पद अनइं गद्य अथवा गद्य पद्य गेय स्वार्थ पदा मुदि
इं बांध्या ॥ सास्त्रनी उत्पत्ति ॥ तुडियं ॥ सर्व वाजित्रनी उत्पत्ति ॥ संख महानिधान माहिं छइ ॥ ९॥ चक्कट्ठप ॥ आठ पइडा नइं विष
इं ॥ पइट्ठाण ॥ रहिवु छइ जेहनुं ॥ अट्ठुस्सेहा ॥ आठ जोजिन नां ऊंचा ॥ नव जोजिनना पुहुला ॥ बार जोजिनना लांबा ॥ मंजूसानइं संठा
नइ ॥ जाह्नवी ॥ गंगानइं मुखिं ॥ विडूर्य रत्नना कमाड ॥ कणगमया ॥ सोनाना मयइ ॥ विविध रत्नइं भरया ॥ चंद्रमा सूर्य चक्र
नां ... नइं ॥ अणुसम ॥ समा वांका मनइं ... ॥ अगनइं आकारिं वाटला पणिइं । अनइं लांबपणइं करी ॥ बाहु ॥ बे
२ सा षि ॥ वयणे ॥ जेहनामुख बारन

निधननास्सरिषुंनामछइ॥ तदवतानुं॥ उसिं०॥ ।आवासछइ॥ अकिंछा०॥ ते निधननमुलइं न पामीइ। देवताओनुं
आभाटइ॥ आहिवछा०॥ अधिपतिपणुं करता थिवरइ॥ अनंतर थिवरनइं विकारनो हेतु निधन नकल्या॥ हिवइ मन विकार नउ हेतु बिग
इकरइछइ॥ विकारकारीपणाथकी विगय॥ अमइ पकवान तेकहा विगय विगयमाहि मिलइ तेतली ५ नव अन्यथा दसपुणथाइ॥ दुधपा
यप्रकारिइ॥ गाईनुं १ भैंसीनुं २ गायमुं ३ सिंसनुं ४ ऊंटडीनुं॥५॥ माखण ४ प्रकारि॥ अनइ घृत ४ प्रकारि। एक ऊंटडीनुं नहीं॥ तेल
विजप्रकारिइं॥ तिल १ अलसीनुं २ कुसुंभनुं ३ सरिसवनुं ४॥ गोलाविऊ प्रकारिइं॥ दोलो १ पातलो॥२॥ मधुत्रिणि प्रकारिइं॥ माखीनुं १॥
कोतनुं॥२॥ भमरानुं॥३॥ मद्यविऊ जातिइं॥ काठनुं पीठानुं॥ मांसविऊ जातिइं॥ जलचरनुं॥१॥ थलचरनुं॥२॥ विगय तउ सरीरनुं पुष्टनुं हे

पलितवमहितीया। एसहिसरिणामाया तेसु खलु देवा। उसिं तत्र आवासा। अकिछा आहिवच्चावा॥१३॥
णएतनवनिहीराउ। पभूयधणरयणसंचयसमिद्धा। जवसमुवगछंति। सव्वेसिं चक्कवट्टीणं॥१४॥ णव
विगईउ पं तं खीरं दहिं णवणीयं सप्पिं तिल्लं गुलो महुं मज्जं मंसं। सवंसाणं परिस्सवा बोंदी पं तं
दोसोत्ता दोणेत्ता दोघाणा मुहं पोसए पाऊ। णव विहे पुन्ने पं तं अन्नपुन्ने पाणपुन्ने वत्थपुन्ने
लेणपुन्ने सयणपुन्ने मणपुन्ने वतिपुन्ने कायंपुन्ने नमोक्कारपुन्ने। णव पावस्सायतणा पं तं पाणा
तिवाए मुसावाए जाव परिग्गहे कोहे माणे माया लोभे। नवविहे पावसुयपसंगे पं तं उप्पाते

उछइ॥ तेहनां सरीरनुं स्वरूप कहइछइ॥ नवसोया०॥ नवछिद्रइं॥ परिस्सवा०॥ मलझरइ॥ बोंदि०॥ उदारीक सरीर॥ पोसए०॥ मात्रानुं
ठाम॥ पाऊ०॥ वडीनुं ठाम। एहवइ सरीरिइं पुन्य उपार्जीइ तेहनां पुन्यनां हेतु कहइछइ। पात्रनइं विषइ॥ उअन्नादिकदेइ॥ तेह
थकी तीर्थंकर नामादि पुन्यप्रकृति निउबंध॥ तेह थकी अन्नरनइं देवुं तेह अन्नरी पुन्यप्रकृति निउबंध॥ लेण०॥ घर॥ सयण०॥ संथा
रा॥ मण०॥ गुणवंतउपरि हर्ष॥ वय०॥ वचननी प्रसंस्या॥ कायपुं०॥ पर्युपास॥ नमोकार०॥ नमस्कार। उक्तं च॥ अन्नं पानं च वस्त्रं
च आलयं सयनासनं॥ सुश्रुषा वंदनं तुष्टि पुन्यं नवविधं स्मृतं॥१॥ पुन्यथकी विपरीत पापनां कारण कहइछइ॥ पाप०॥ असुभरूप
प्रकृति तेहनां॥ आयतन०॥ बंधनां हेतु॥ पापनां हेतुनां अधिकारथकी पापश्रुतनउ अधिकार॥ प्राणातिपातादिकनां हेतु जेसास्त्र
ते पापश्रुत तेहनां प्रसंग॥ सेवा अथवा सूत्र तथा वार्त्तिक रूप तेहनउ विस्तार॥ उत्पात०॥ सहज उत्पात रुधिरवृष्टि प्रमुख तेहनुं कहिनार
सास्त्र पलितत्यात जितरायप्रात्यादि॥१॥

अछिद्रा ०तनि धननाक ताइका धन नथी।

निमित्त०॥ तेअतीतादिक ज्ञाननां उपायनुं सास्त्र तेकुर पर्वतादि॥ मंत्रसास्त्र जी बोद्धरतागरडी आदि॥ आइख्कए०॥ मातंग वि
द्या जेहनां उपदेसथकी कहइ लोक प्रसिद्ध डांवग्धादिक॥ तिगिछिए०॥ वैद्यं॥ पुस्तकोतर नइं धिषइं चिकित्सि एअर्थ तेहउ॥
कला०॥ लेखगणितादि पंखीनां सघ पर्यंत ७२ तेहनां सास्त्र प्रतिकला जिकहीइ॥ आकासए०॥ करीटोकीइ। तेआवरण तेभ
वनप्रसादनगरनां सास्त्र तथा वास्तुक सास्त्र॥ अज्ञान तेलौकीक सास्त्र सार थकाव्य नाटिकादि॥ मिछापवयण०॥ साक्या दिक
तीर्थीनउ सासननुं सास्त्र एसर्वपापश्रुत॥ साधुपुरुष कारणइं सेवइं तो अपापश्रुत॥ एउत्पाता दिसास्त्रवंत हुइ तेनउ निपुण हुइ
तेहणीं निपुण कहइछइ॥ निउणा०॥ वस्तुविद॥ निपुण०॥ सुक्ष्म ज्ञानइंकरी विचरइ॥ निपुणक आचार्य दिक पुरुष वस्तु॥ संख्याण
०॥ गणित तस्सास्त्र अनइं तेहनउ जाण पुरुष पणि सं पाछिलां जिकहीइ॥ इम आगलि पणि॥ निमत्ततचुडामणि आदि॥ कातिय०॥ इ

निमित्तमंते आतिरिकित्ते तिगिछित कला आवरणे अन्नाणे मिछापावयणेइ वा णवणि
उणियावछु पं तं संखाणे निमित्ते काति ते पोराणे पारिहछिते परपंडिते वाती भूति
कम्मे तिगिछिन्ने समणस्स णं भगवतो महावीरस्स णवगणा होत्था तं गोदासगणे उत्तरबलि
स्सहगणे उद्देहगणे चारणगणे उद्दवातितगणे विस्सवाइतगणे कामिढितगणे माणवगणे
कोडियागणे समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णवकोडिपरिसुद्धे भिक्खे

इंडां पिंगला दिसहित सिद्ध सास्त्रना डिनाजाण॥ पुराणे०॥ गरढो तेणइं घणा तावद्दी ठाउहु॥ अनइं विंजी बी पणा थ
की ते निपुण हुइ॥ अथवा पुराण०॥ मारकंडादि पुराणनउ जाण तेहपुरुष निपुणक हीइ॥ पारिहछि०॥ स्वमति विंदइ सर्व
कार्य सीघ्रनउ करणहार हुइ॥ परपंडिए०॥ अतिहिं पंडित बहुसास्त्रनउ जाण॥ अथवा पर०॥ मित्रादि पंडित छइ जेहनउ
ते पंडित मित्रनां संसर्ग थकी ते पुरुष निपुण थाइ॥ वाही०॥ वादलब्धि सहित परिइंजी पाइ नहीं॥ अथवा धन नुं वादी॥ अथ
वा मंत्रवादी॥ भूईकम्म०॥ ज्वरादिकनि मित्त इंर छानुं अपवुं तिहां निपुण॥ तिगिछाए०॥ वैद्यनइं विषइ निपुण॥ अथवा
नव०॥ नउभुज अनुप्रवादनामइं पूर्व तेहनां नव निपुण वस्तु॥ अधि अध्ययन विसषछइ॥ एनिपुणक साधु तेउ गछमा हिलां होइ
तेहनी गणनी स्तुन॥ गण०॥ एक क्रियावाचनानां साधुनउ समुदाय॥ गोदासका दि ते॥ तेहनां०॥ पहवा साधुनइ कोडिइ ते स्त
गावेतिपुरुष उतकहइछइ॥ नवकोडि०॥ विलागिइ करी॥ परिसुद्ध०॥ निर्दोष॥ भिक्ख०॥ तिसीन उसमुदक हिउं॥

नहरो॰॥ साधुस्थामव गोधुमादिकदलवइ फराघात नकरइं॰ परअहस्त्रयपणइं हरणावइं नही॰ ऋं॰ हणतां तानइं अनुमादइं नही॥
अनुमादवइं करी॰ अथवा अस्तुउ तो दतानइं निमधइं नही। तिअनुंमादतो जिकहोइ॥ ए तसणी अणनिमधवु तद्दणवोमा
प्रसंगतुं ऊपजाबणहार छइ॰ नपयइं॰ पातइ पचवइ नही॰ सपरसुगम॰ ईहो धुरिलीछकोडिआधाकर्मादि दोषपणा
की आविसुद्ध कोटिमांहि आवइं॰ अनइं छेहलीत्रिणि कोडि विसुद्ध कोडि मांहि आवइं॥ तिमुलइ लवानो त्रिकसार
दायनही॥ तेहलणी विसुद्ध प्रणिपतली लीइ नही॰ एतलइं एनव कोडि सुद्धआहारनउग्रहिनार कदाचित तेहनइं पामइ
नऊइ॥ ताली प्रणि देवगतिऊइ तेहलणी देवगतिनो वधुनउ समुहक हइ छइ॥ सूत्र ९॥ नवपलि॰॥ ईहां नवपल्योपम
तेह परिग्रहीत देवी आस्री॥ उक्कोसं॰ सपरिग्रहीत रातां॥ सोहम्मीसाणेपलियं १ साहियं २ उकोसा सत्तवेन्ना॥ नवपण॥ प

णं ते णाढुणाइ णादुरण विइ हणं तं णारणुजाणाइ॥ णपयइ णापयावेति॥ पयंतं णाणुजाणति॥
ण किणति णकिणावेति॥ किणंतं णाणुजाणाति॥ ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो वरु
णस्स महारन्नो णाव अग्गमहिसीओ॥ पं॥ ईसाणस्स णं देविंदस्स अग्गमहिसीणं णव पलि
उवमाइं ठिती॥ पं॥ ईसाणे कप्पे उक्कोसेणं देवीणं णव पलिउवमाइं ठिती॥ पं॥ नव देवनि
काया॥ पं॥ तं॥ सारस्समाइच्चा वन्ही वरुणा य गद्दतोया य तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा
चेव रिट्ठा य॥ अव्वाबाहाणं देवाणं णव देवा णव देवसया॥ पं॥ एवं अग्गिच्चा वि एवं रिट्ठा वि
णव गेवेज्ज विमाण पत्थडा॥ पं॥ तं॥ हेट्ठिमहेट्ठिमगेविज्ज विमाण पत्थडे ॥१॥ हेट्ठिममज्झिमगेवेज्ज
विमाण पत्थडे २ हेट्ठिमउवरिमगेवेज्ज विमाण पत्थडे ३ मज्झिमहेट्ठिमगेवेज्ज विमाण पत्थडे ४॥ मज्झिमम

आयदेवीणं॥ ९॥ सारस्स॥ सारस्वत १॥ आदित्य २॥ वन्हि ३॥ वरुण ४॥ गर्दतोय ५॥ तुषित ६॥ अव्याबाध ७॥ आग्नेय ८॥ रिष्ट ९॥ कृष्ण २३१
राजीनां आठ अंतरामांहि वसइ छइ॥ ... लोकांतिक देवनां नव विमान पाथडा वसइ छइ॥

अनंतरथी एव यथक नां विमानकह्यां। तिहां नावास नउ आउ ... आउखानउ परिणाम कहइ छइ॥ नवविहे॥ आउखा
कर्म प्रकृति विसेष॥ तिहां ... गतिपरिणाम॥ स्वभाव॥ सक्ति धर्म तेआउखपरिणाम॥ ति हो गति ... आउखानइं स्वभावइं
गतिनुं जीवितव्य पामीइ॥ ते गतिपरिणाम॥ तथा जेणइं आउखानइं स्वभावइं ... ते ... करइ॥ ... नारकीना
आउखानइ स्वभावइ मनुष्य तिर्यंचनी गतिनां कर्म बांधइ॥ पणि देव नारकीगतिनां कर्म न बांधइ॥ ते गतिबंधनपरिणाम॥ तथा
जे आउखानो अंतर्मुहूर्तादि तेत्रीससागरोपम। अंतिस्थिति करइ ते स्थितिपरिणाम॥ तथा जेणइं पूर्व सवायुखानां परिणामइं
परभवनां आउखानी उत्कृष्टि स्थितिपरिणामइं बांधइ॥ ते स्थितिबंधपरिणाम॥ जिम तिर्यंचनां आउखानइं। परिणामइं दे
वतानउ आउखुं बांधइ तउ उत्कृष्ट १८ सागरप्रमाण बांधइ॥ तथा जेणइं आउखानइं स्वभावइं जीवनइं ऊर्ध्व दिसि जावानो

ज्झिमगेवेज्जविमाणपत्थडे २ मज्झिमउवरिमगेवेज्जविमाणपत्थडे ३ उवरिमहेट्ठिमगेवेज्ज ७॥ उवरि
ममज्झिम ॥८॥ उवरिमउवरिमगेवेज्जविमाणपत्थडे ९ एतेसिणं नवण्हं गेवेज्ज विमाणपत्थडाणं नव
नामधेज्जा॥ पं॥ तं॥ भद्दे सुभद्दे सुजाते सोमणसे पियदरिसणे सुदंसणे आमोहे सुप्पबुद्धे जसोधर
णव विहे आउपरिणामे॥ पं॥ तं॥ गतिपरिणामे गतिबंधणपरिणामे ठितिपरिणामे ठितिबंधणपरिणामे
उड्ढंगारवपरिणामे अहेगारवपरिणामे तिरियंगारवपरिणामे दीहंगारवपरिणामे रहस्सगारवपरिणा
मे॥ णव णवमियाणं भिक्खुपडिमा एगासीताते राइंदिएहिं चउहि य पंचुत्तरेहिं भिक्खासतेहिं अहा

सत्ति रूपपरिणाम कहइ॥ ते ऊर्ध्वगारव परिणाम॥ ईसुं गारव स्वभाव ... अर्धबोलइ॥ इम आगलि पणि बोलवा। तथा जे
आउखानइ स्वभावइ जीवनइं दीर्घ गमनपणइं लोकांत लगइं जावानी सक्ति ऊइ। ते दीर्घगारवपरिणाम॥ इम जे आउखानी
ह्रस्वगति नी सक्ति ऊइ॥ ते ह्रस्वगारवपरिणाम॥ एहना अर्थ आनरीपरि पणि जाणवा तेकर्त्ता॥ अनंतर आउखापरि
णाम कहिउं॥ आउखानइ परिणामइ छतइं तपनी ... तेहनां तप नउ विसेष कहइ छइ॥ एतपातत्तउ अनं
तरनुं कांइ पापकर्म तेहनुं प्रायश्चित्त छइ॥ ते तेहनो प्रायश्चित्त कहइ छइ॥

प्रायश्चित्ततउ भरतद्वीपादि तिप्रकारइ सात माहि लोकश्रुतमहाकूट॥ सिद्धायतनयुक्त ते सिद्धकूट ते सर्वा वलोयरकोश ऊंचो। एत
लो जि मूलिइं पुहुलो। वलिनउ अर्द्ध ऊपरि पोहोलो। एक गाउ ऊंचो। अर्द्ध गाउ पोहोलो॥ पूर्वादि त्रिणि दिसिइं बारणां॥ प
श्चिम नही॥ एवा १ द सिइं ऊंचो गाउ ऊंचौ॥ पांचसइं धनुष पहोलो॥ तेहनुं अर्द्ध पोहोलो॥ एकसो आठ जिनप्रतिमा स
हित। एहवइ सिद्धायतनइं विरूषित कूटनउ रूपलो साग॥ एकूटा वैताढ्यनी पूर्वदिशिइं सिद्धायतनइं आगलि अनुक्र
मइं जाणवा॥ भरतादेवतानापासाद वितंसक सहित ते भरतकूट॥ खंडप्रपात नामा वैताढ्यनी गुफा इजाणीइ करी
कबडि अनार्य छत्रपकी आणाइं॥ छत्र नइं आधइं तेहना अधिष्ठाता देवतानउ खंडप्रपातकूट॥ माणिभद्रनामा दे
वतानउ माणिभद्रकूट॥ वैताढ्य नामा अधिष्ठाता वैताढ्यनी मइं देवतानाआवास सहित वैताढ्यकूट॥ पूर्णभद्रनामा दे

सुत्ता जाव आराहिंता ता वि सव्वत्ति। णव विद्ध पायछित्ते पं तं आलोयणा रिहे जाव मूला रिहे
अणवट्ठप्पा रिहे। जंबुमंदरदाहिणेणं भरहे दीहवेयड्ढे नवकूडा पं तं सिद्धे भरहे खंडग
पाए माणि वेयड्ढ पुन्न तिमिसगुहा भरहे वेसमणे य भरहे कूडाण णामाइं। जंबुमंदरदाहिणेणं नि
सढे वासहरपव्वते णवकूडा पं तं सिद्धे निसढे हरिवस्से विदेहे हरि धिती य सीतोदा अ
वरविदेहे रुयगे निसढे कूडाण नामाइं॥१॥ जंबुमंदरपव्वते णंदणवणे णवकूडा पं तं नंदणे

ता नउ आवास ते पूर्णभद्रकूट॥ तिमिसगुहां ते जे रिचक्रवर्त्ति पतानांचि त्र घकी म्लेच्छ खंडिइं जाइ तेहना अधिष्ठा
ता। देवतानउ कूट ते तिमिसगुहाकूट॥ भरत देवतानउ आवास ते भरतकूट॥ वैश्रमणलोकपाल देवतानुं कूट ते वै
श्रमणकूट॥ निसढे॥ सिद्धायतन ते सिद्धकूट निषध पर्वतना अधिष्ठाता देवतानउ आवास ते निषधकूट॥ हरिवर्ष॥ हरि
वर्ष क्षेत्रना अधिष्ठाता देवतानउ आवास ते हरिवर्षकूट॥ इम विदेहकूट पणि॥ ह्री देवी नउ आवास ते ह्रीकूट॥
इम धृतिकूट॥ सीतोदा नदीनउ आवास ते सीतोदाकूट॥ अपर विदेहकूट ते विदेहकूटनी परिइं॥ रुचक रुचकवा
ल पर्वतना अधिष्ठाता देवतानउ कूट ते रुचककूट॥ नंदणे॥ नंदनवन ते मेरुनी प्रथम मेखलाइं विषइं दिशि विदि २३२

DR. B… MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी …

ख्याः। सिद्धायतन विदिसि विदिसइं प्रासादि प्रासाद पुष्करणीइ परिवर्या। प्रासादावतंसक। तिहां पूर्वना सिद्धायतनथकी उ
तरइं। ईशानकूणि ना प्रसादथकी दक्षिणइं नंदनकूट। तिहां मेघंकरा देवी॥ पूर्वना सिद्धायतनथकी दक्षिणइं। अग्निकू
णि ना प्रसादथकी उत्तरइं। मेदरकू। तिहां देवी मेघवती॥ एणइं अनुक्रमइं आवश्यभ॥ त्रीजइ कूटइं निषधनामइं। तिहां
सुमेघा देवी॥ हिमवंतकूटइं मेघमालिनी देवी॥ रजतकूटइं सुवत्सा॥ रुचककूटइं वत्समित्रा देवी॥ सागरचित्रकूटइं विचि
त्रसेना॥ वइरकूटइं बलाहका देवी॥ नंदनवन विषइं ईशानकूणथकी ईशानकूणइं बलकूट। तिहां बलदेवता॥ मालवंतगजदंतइं॥

मंदर चेव निसहे हिमवंते रयत रुयते त सागर चित्ते वइरे बलकूडे चेव बोधव्वे॥१॥ जं
बु मालवंते वक्खारपव्वते णवकूडा पं तं सिद्धे य मालवंते उत्तरकुरु कच्छ सागरे रयते सीता
य पुन्न णाम हरिस्सहकूडे य बोधव्वे॥१॥ जंबु कच्छे दीहवेयड्ढे नवकूडा पं तं सिद्धे कच्छे खंड
गमाणी वेयड्ढ पुन्न तिमिसगुहा कच्छे वेसमणे वकूडाण णामाइं॥ जंबु सुकच्छे दीह
वेयड्ढे णवकूडा पं तं सिद्धे सुकच्छे खंडगमाणी वेयड्ढ पुन्न तिमिसगुहा सुकच्छे वेसमणे
सुकच्छे कूडाण णामाइं॥ एवं जाव पोक्खलावतिंमि दीहवेयड्ढे एवं वच्छे दीहवेयड्ढे एवं जाव
मंगलावइंमि दीहवेयड्ढे जंबु विज्जुप्पभे वक्खारपव्वते नवकूडा सिद्धे य विज्जुणामे देवकुरु

सिद्धायतन ते सिद्धकूट॥ मेरुथकी ईशानकूणिइं सिद्धायतन देवना॥ हरिस्सहासिइ कूट ते नीलवंत पर्वतना नीलवंतकूटथ
की। विद्युत्प्रभ गजदंतानइं हरिकूट॥ अनइं नंदनवननउ बलकूट॥ ए सहस्र जोयणना सर्वप्राहिं पंचसइं जोयणना इसकला दिवि
जयना कूट भरतना वैताढ्यनइं अनुसारिइं जाणवो॥ नवरं। एवं आवपुष्कलावई जावमांहि कच्छादि … वंती॥ आवर्त मंगलावई पुष्कल
इत्यादि आवैताढ्यनइं विषइं॥ सिद्धायतन कूटादि नवकूट जाणवा॥ बीजी अनइं आठमउ कूट ते विजयनइं सरिषइं नामइं॥ वेतवि
जय ते सीतोदानदीनइं दक्षिणइं मुंडनइं कूट॥ जाव मांहि सुवत्सनइं सुवत्सावती। … विषइं पूर्वजो … कु
ट जाणवा॥ ७॥ विद्युत्प्रभ ते देवकुरु पश्चिमनउ गजदंता॥ तिहां नवकूट पूर्वनी परिइं॥

नवरं कनककूटइं ॥ वारिसेणा ॥ स्वस्तिककुटनइ विषइ बलाहका नामा दिसाकुमारी छइं २ इहइं छइ ॥ पम्हे ॥ सीतोदाकूलई हस्ताद्दि
सइं विद्युत्प्रभ नामा वषार पर्वत नइ दक्ष ड्री ॥ जावमाहिसुपम्हे ॥ महापम्हे ॥ पम्हावई ॥ श्री ॥ पं ॥ प नलिन कुमुद नइ विषइ ॥ पुर्वली
परिइं नवकूट ॥ सीतोदा नाउतरकूलई मेरु इंद्र कडी वप्पविजय ॥ जावमाहिसुवप्प वप्प महावप्प वप्पावई ॥ वग्गु सुवग्गु ॥ गंधि
लानइ विषइ ॥ पुर्वलीपरि नवकूट जाणिवां ॥ इम सर्व वैताढ्यनइ विषइ ॥ समुच्चय इ कुं च कह्यो ॥ विसपद्मकोइं बुद्धी पम्हे
म्रीबको जाणवी ॥ इम नीलवंतादिक नां कुट पणि जाणिवां ॥ एकुंट तीर्थंकरइं कह्या ॥ ते सर्वे तीर्थंकरनाम्बु ॥ २ ॥ तीर्थंकरना

पम्हकणगारसोवत्थी सीतोदा तसज्जलहरिकूड खवबाहइ ॥१॥ जंबुमंदरे पम्हदीहवेयड्ढे णव
कूडा पं. तं. सिद्धे पम्हे खंडगप्पवाए वेयड्ढे एवं जाव सलिलावतिंमि दीहवेयड्ढे एवं वप्पे दी
हवेयड्ढे एवं जाव गंधिलावईमि दीहवेयड्ढे णव कूडा पं. तं. सिद्धे गंधिले खंडगप्पवाए वेयड्ढे पुण्ण
तिमिसगुहा गंधिलावति वेसमणे य कुडा णं होति णवमाइं सव्वेसु दीहवेयड्ढेसु दोकूडसरिस
णामगा ॥ जंबुद्दीवे दीवे उत्तर णं नीलवंत वासहरपव्वते णवकूडा पं. तं. सिद्धे नीलवं
त विदेहे सीता कित्ती नारि णारी य अवरविदेहे रम्मगकूडे उवदंसणे चेव ॥ जंबु मंदरउत्त
रे णं एरवते दीहवेयड्ढे नवकूडा पं. तं. सिद्धे एरवते खंडगप्पवाए वेयड्ढे पुण्ण तिमिसगुहा एरवत
वेसमणे एरवते कूडाण णवमाइं ॥१॥ पासे णं अरहा पुरिसादाणीते वज्जरिसहनारायसंघयणे सम
चउरंससंठाणसंठिते नव रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तित्थंसि णव
हिं जीवेहिं तित्थगरणामगोत्ते कम्मे निव्वत्तिते तं. सेणिएणं सुपासेणं उदाइणा पोट्टिलेणं
सुपार्श्व तिस्वामीना उपातरी ॥ उदाई ते कोणिक राजानउ टीकरो ॥ कोणीक मुंए पाडली पुरि उदई वस्यो ॥ ते तानाघर नइ एकौ तिदि
सिइं पर्व नइ दिहाडइ पुसवि गोतोधी गुरुनइ तिहा निषधा पासनाइ तेतार पर मकांचगर मंत्री तिदि श्रमु सरतो सो भोगवका पोषधसादि
सुश्रावक नइ ते पौषधि उसहा नकरइं छइं ॥ टकदारा बि नइ समइ ते प्रथमाहिइ ॥ सत्तुराजा नइ मोकलिइ आविर वस्यइ ॥ केंकाला सेनीकाती गल
इ वीही वनाय्यु ॥

पोट्टिल अणगार अनुत्तरा ववाई माहिं कहिउ छइ ॥ बत्रीस कन्या मुंकी सर्वार्थसिद्धि उपनउ ॥ महाविदेहि सीझसइं ॥ तत्र णं आउसं
तावाइ छइ ॥ ढढा सुउत प्रसिद्ध ॥ संगावंतीमाहिं संप्रयणइं पुष्कली ते श्रावक ते दत्तनुं वाजु नामे सतक ते सुयमखु पर वो नइं पातइ
पासछली भ ॥ तबिक ताबिकसं ॥ १ सतक इ ॥ तीर्थंकर गोत्र उपाय्यु ॥ राजग्रह नगरइं ॥ प्रसेनजित राजानउ ॥ नाग नामा सार्थवाह
तेहनी भार्या सुलसा ते ना इतीर्थंकर गोत्र ऊपा ज्युं ॥ रेवती इपाक विहरा वी तीर्थंकर गोत्र ऊपा ज्युं ॥ आगली उत्सर्पिणीइ तीर्थंक
र थास्यइ ते कह्या ॥ हिवइ ते हो इ सिझी जीव सीझस्यइ तेक हइ छइ ॥ एस ॥ एनवमाहि लो ठहलु ॥ अछो ॥ श्री माहावीरनैइ साधुन

अणगारेणं दढाउणा संखेणं सततेणं सुलसाए साविताते रेवतीते एस णं अज्जो कण्हे वासु
देवे रामे बलदेवे उदये पेढालपुत्ते पोट्टिले सतते गाहावती दारुते णियंठे सच्चती णितंही
पुत्ते सावितबुद्धे अंबडे परिव्वायते अज्जावि णं सुपासा पासावच्चेज्जा आगमेस्साते उस्सप्पिणी ते
चाउज्जामं धम्मं पण्णवइत्ता सिज्झिहिंति जाव अंतं काहिंति ॥२॥ एस णं अज्जो सेणिए राया भिंभिसारे का
लमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीते सीमंतते नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठितीयं
सि णिरयंसि णेरइयत्ताए उववज्जिहिति से णं तत्थ णेरइए भविस्सति काले कालोभासे जाव परमकिण्हे वण्णेणं
वे तुर्थी महुबी पवयोम अछो ॥ पोटलनइ सतक कथा तेहइ ॥ सेरुक अणगार ते वासुदेवनउ पुत्र ॥ सत्यकी ते श्री थमित दीक
रा ॥ सा विद्य सुधेन ॥ सुलसा नामा श्राविका नइ ॥ बुद्ध ॥ जाणिऊ जीय समक्षि नाथ धर्म नइ विषइ निश्चल अघवा श्राविका ना चुसि
जाणी ते एहइस वात्तिकइ ॥ उवाईमाहिं कहि देवते अंबड उत्तसं तावी इछइ ॥ सुपार्श्व नामा आर्या पार्श्वनाथनी संसिणीनी संप्रिणी
व्यार जाम धर्म परुपी नइ सीझस्यइ ॥ एमाहि केतला एक विचला तीर्थंकर थास्यइ ॥ केतला एक केवली थास्यइ ॥ अनंतर सु
त्राइ कह्या श्रेणिक तेहनइं तीर्थंकर पणुं कहइ वा नइ कहइ छइ ॥ एसणं ॥ एअनंतरोक्त ॥ अछो ते ॥ श्रमणनइं आमंत्रण
संसी ॥ तेसो ते तेसी ए इह नइ सार छइ ते घरवते रीको टो ते माटइ पिताइं ते संसार नाम दीधु ॥ सीमंतक इंद्रक नरगावा
सो पहिलो पाथडा नउ ॥ तिहा उत्तरांसी सहिस वर्ष नी स्थिति ना रकी माहिं ऊपजस्यइ ॥ कालो ते स्वरूप थी ॥ कालो भासी ॥
प्रकासपणि कालोइ ते ॥ जाव माहि गंभीर लोमहरिस ॥ भीम ॥ उत्तास ॥ परम किण्ह ॥ से णं तउ विकार छइ जेह ते ॥ सीमं ॥

(right margin, upper folio:) से ॥ तीर्थंकरपणं तु कारण नाम कर्म ते तीर्थं कर नाम गत हउ णा त्रकर्म वि स बधा ते तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म ॥ अथवा तीर्थंकर पहवउ नाम गोत्र ॥ नाम कर्म वि हुऊ तीर्थं करनाम गोत्र श्रेणिक तेना जा प सिद्ध ॥ २३२

(right margin, lower folio:) इ आमे जिइ छइ ॥ हिवआर्य रूदक ते नामा पेढाल नउ पुत्र ते उदय ग डो गनां बी जा स्क्रत त स्कंध माहिं त्रे वी समा अध्य यन इ ॥ उदक ते पार्श्व जिन न उ सिष्य कोणइ राजग्रह नरइ नालेंदा पाडा नो इसान कुणि हस्ती द्वीप वनखं डइ रहो ते तमन इंस हइ पुछो नइ नि:सं देह थया

विकरालं॥ उत्रासणो॥ उद्वेगमउक पजावणहार॥ परम कृष्णवर्णइं तेतिहां नरग वेदना वेदइं॥ उजलं॥ सुखनइं लवइ अकलंकित॥ जावमाहिं॥ तिउलं॥ त्रिणि मन वचन काया नां बल अथवा त्रिणि कायानुं रूप रिमध्य माहे विलउ वि लाग॥
त्यहमइं पडइं त्यां वेदनो त्रिशुलो॥ पागाढं॥ विउलं॥ तिसरीर व्यापी॥ पगाढं॥ अतिदिं॥ कडुवं॥ कडुवा रसनी रू पजावी अथवा कडुवा द्रव्यनी परिइं कडवी अनिष्ट॥ कर्कशा फरस नां रूप जावी॥ अथवा कर्कश द्रव्यनी परिइं कर्कशा॥ चंड॥
वेगवती तेत्रकारइं ल॥ मुर्छा रूप जावइं॥ तिहां वेदना विरुलते दि॥ सुखती दुखती तिहां सुखनो निखे दिवानइ काढइं क
दुःखछइ॥ दुरकं॥ दुःखरूप॥ दुग्गं॥ पर्वतादिकना दुर्गनी परिइं उलघवा असक्य॥ दिव्वं॥ देवतानो कीधो॥ किं बहु

से णं तत्थ वेदणं वेदिहिती उज्जलं जाव दुरहियासं से णं ताता नरगाता उव्वट्टित्ता आगमेसाते उसप्पिणीए इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमुले पुंडेसु जणवृतेसु सतदुवारे णगरे संमुइस्स कुलकरस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुमत्ताए पच्चायाहिती तए णं सा भद्दा भारिया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीतिक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीण पडिपुन्न पंचिंदियसरीरं लक्खण वंजण जाव सुरूवं दारगं

अहीण॥ अंगरूपांगना प्रमानां प्रमाणथकी हीण नहीं॥ पडिपुन्न॥ प्याताना प्रमाणथकी प्रतिपुर्ण अथवा पवित्र या वइंजी
छइ जिहां एहवुं सरीर छइ जेहनइं॥ लक्खण॥ उपुरुषनां लक्षण सास्त्रइ कह्यां छइ ते। अथवा मान उन्मानादिक॥ विंजन
ते मसतिलकादिक॥ गुण तासो स्वादिक॥ अथवा पलक्षण व्यंजनना गुण तेणइं करी सहित॥ अथवा लक्षण तेस्यते
नावकीरूइं॥ व्यंजन ते पछइ नाउपना॥ मान ते पाणीइं भरी कुंडी मांहि पुरुष बइसइ डोल पानपाणीनी कलइ ते माना
प्यते॥ उन्मान ते त्राजुइं तोलतां अर्ध भार थाइ॥ प्रमाण ते आत्मा गुलइं एक सो आठ आंगुलनो चो॥ इडबटी घी निला डलनइं बार अ
गुल मुख ते घी बार गुल सरीर ते प्रमाणो प्यते तेणइं करी प्रतिपुर्ण॥ सुजाय॥ कडांनी पना सर्वां ग मस्तकादिक एहवुं सुंदर अं
ग छइ जेहनुं॥ चंद्रमानी परिइं सौम्याकार छइ॥ कांत॥ मनोहर॥ पियं॥ प्रमनउ गम एहवुं दर्शन जेहनुं॥ एहवो दारक जनइ
जणस्यइ॥

ना॥ दुरहि
यासं॥ स
हिता दो
हिलो॥ इ
हेव॥ आ
जंबुद्वीप
मइं विष
इ॥ पुम॥
पुरुषप
णइं॥ पच्चा
॥ उपज
स्यइ॥ ब
हुप॥ अ
तिहिं प्र
तिपुरण
पनेलइ
साढी सा
त अहोरा
त्रि॥ सुहा
लाहाथप
ग॥

तीर्थंकरनी उत्पत्ति राज्यइ करीइं ते रत्नादिकनी वृष्टि॥ सर्वितरबा॥ मध्य नगरइं॥ बीस पइ पल्लिइं भार॥ अथवा पुं॥ छिइं जेतलुं रूप
उपातनार॥ आम्रें॥ तेतलइ प्रमाणइं कुंभग्गसोय॥ कुंभ प्रमाणइं॥ कुंरतिका ठिआढा आदिनउ॥ जो कमाहिं निवास॥ असुई
जातकर्म॥ करणसपाहि॥ निवत्ते॥ नीपजाव्या अथवा निवृत्तं असुचिनां जातिकर्म॥ प्रसवनां कार्य करवइ॥ संपत्ते॥ आवि। बारम
इ दिहाडइ॥ बारमि दिवसे॥ अयं॥ आपनस्य कृ॥ एयारूवं॥ एहवइ स्वरूप। विइं गोणं॥ सलु॥ गुणनिप्फन्नं॥ गुण आश्री तेणइं थवु
ं नामादेइ॥ महापद्मना मकरस्यइ॥ तएणं॥ एहवउ आलोच्या नेतर॥ आठवरस ऊपरि रानउ कुमार थयिं॥ महया॥ मोटइ सुणन इस

पयाहिती जं रयणिं च णं से दारए पयाहिती तं रयणिं च णं सतदुवारे णगरे सब्भंतरबाहिरए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पोमवासे य रयणवासे य वासे वासिहिति तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते जाव बारसाहे दिवसे अयमेयारूवं गोणं गुणनिप्फन्नं नामधिज्जं काहिंति जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि जायंसि समाणंसि सयदुवारे नगरे सब्भंतरबाहिरए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वुट्ठे तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं महापउमे महापउमे तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं काहिंति महापउमे त्ती त। तए णं महापउमं दारगं अम्मापियरो सातिरेगं अट्ठवासजातगं जाणित्ता महता महता रायाभिसेगेणं अभिसिंचिहिंति से णं तत्थ राया भविस्सति महता हिमवंत मलय मंदर।

मुहइ॥ करानइं सहित॥ हिमवंत इ रखधर पर्वत मोटउ थये मलय पर्वत॥ चुर्णिकार कहइ छइ॥ मलय॥ विंजाचल॥ मंदर॥ मेरु॥

रयवन्नत्ता जाव रहं पसादमाणे विहरिस्संति। तएणं तस्स महापउमस्स रन्नो अन्नया कयाइं दो
देवा महिड्डिया जाव महेसक्खा सेणाकम्मं काहिंति पुन्नभद्दे त माणिभद्दे त। तएणं सतदुवारे न

गरे बहवे राईसर तलवर माडंबिय कोडुंबिय इब्भ सेट्ठि सेणावति सत्थवाह प्पभितयो। अन्नमन्नं
सद्दावेहिंति एवं वतिस्संति जम्हा णं देवाणुप्पिया अम्हं महापउमस्स रन्नो दो देवा महिड्डिया जाव म
हेसक्खा सेणाकम्मं करेंति तं पुन्नभद्दे य माणिभद्दे य तं होउ णं अम्हं देवाणुप्पिया महापउमस्स रन्नो
दोच्चे वि नामधेज्जे देवसेणे। तते णं तस्स महापउमस्स रन्नो दोच्चे वि नामधेज्जे भविस्सइ देवसेणे
ति देवसेणे ति २। तते णं तस्स देवसेणस्स रन्नो अन्नया कयाती सेते संखतलविमलसन्निकासे
चउदंते हत्थिरयणे समुप्पज्जिहीति। तएणं से देवसेणे राया तं सेयं संखतलविमलसन्निकासं
चउदंतं हत्थिरयणं दुरूढे समाणे सतदुवारं नगरं मज्झंमज्झेणं अभिक्खणं २ अतिज्जाहिति णिज्जा
हिति। तते णं सतदुवारे नगरे बहवे राईसर तलवर जाव अन्नमन्नं सद्दावेहिंति एवं वइस्संति ज
म्हा णं देवाणुप्पिया अम्हं देवसेणस्स रन्नो सेते संखतलविमलसन्निकासे चउदंते हत्थिरयणे
समुप्पन्ने तं होउ णं अम्हं देवाणुप्पिया देवसेणस्स रन्नो तच्चे वि नामधेज्जे विमलवाहणे २।
तएणं तस्स देवसेणस्स रन्नो तच्चे वि नामधेज्जे भविस्सति विमलवाहणे २। तते णं से विमलवाह
णे राया तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता अम्मापियाहिं देवत्तं गतेहिं गुरुमहत्तरतेहिं अब्भ
णुन्नाते समाणे उउम्मि सरए संबुद्धे अणुत्तरे मोक्खमग्गे पुणरवि लोगंतिएहिं जीयकप्पितेहिं
देवेहिं ताहिं।

वग्गुहिं॥ वचनइं करी जेणइं आणंद ऊपजावीइ॥ इट्ठा०॥ इष्टतत्त्वांछनीय॥ कम निततमनोहर॥ प्रियातप्रेमनंकर माय व गुं हारे॥ मनोज्ञातसुंदरकीगमती॥ मणामा०॥ मनमाहिं गमती॥ उदारातउदात्तस्वरसहित॥ अथवा उदार अर्थसहित॥ कल्याणातआरोग्यपणानां करनारि॥ सिवातनिरूपद्रव्यनी करनारि॥ धन्यातधननी लाभनी करनारि॥ मंगलतिपापनो

कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं स
स्सिरीयाहिं वग्गुहिं अभिनंदिज्जमाणा अभिथुव्वमाणा य संबोहणाहिं संबोहितसुसुमिसा
णउज्जाणे एगं देवदूसमुवादाय मुंडे भवित्ता आगाराउ अणगारियं पव्वयाहो समणे भगवं
ऊ चेव दिवसं मुंडे भवित्ता जाव पव्वयाहो तं चेव दिवसं अयमेयारूव अभिग्गहं गिण्हित्ति
ऊ के इ उवसग्गा उप्पज्जंति तं दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा ते सव्वे सम्मं सहिस्सा
खामिस्सा तितिक्खिस्सा अहियासिस्सा ततेणं समणे भगवं अणगारे जाव विस्समितिइरियासमि
ते भासासमिते एउं हाव माणसामी तं चेव निरवासं जाव अव्वावारं विउस्सं जोग
जुत्ते तस्स णं भगवंतस्स एतेणं विहारेणं विहरमाणस्स दुवालसहिं संवच्छरेहिं वीतिक्कंत
हिं तेरसमस्स णं संवच्छरस्स अंतरावट्टमाणस्स यकारी॥ ससिरी०॥ वचनसोभासहित॥ अभिनं०॥ ऊ
ल्लासऊपाईतो॥ व०॥ मगरभाहिर॥ इहांथकी वाचनांतर आश्रीक हीइछइ॥ साईरेगाई०॥ सादाबारवरस पषवाडइं आगा
ला॥ वासट्ठकाए०॥ सरीरनी संभालअणकरवइ॥ त्यक्तदेहातपरीसहादिकनइं सहवइं सहइ॥ ऊपसर्गक्षपउसइंत
सचनइं अखाविइं॥ खमसइं तक्रोधनइं अखाविइं॥ तितिक्खइंतदैन्यनइं अखाविइं॥ अहियासइंतअविचलपणइं॥ भाव
माहिंएससमितिइए॥ आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिइए॥ ऊच्चार पासवणखेलजल्लसंघाणपारिठावणियासमिइ॥
मणगुत्ति॥ वइगुत्ति॥ कायगुत्ति॥ गुत्ते०॥ तिगुप्ता त्मा॥ गुत्तिंदिय॥ इंद्रीनां विषयनइं विषइं रागादिकनइं अणप्रवर्त्तवि
इ॥ गुत्तबं०॥ नवब्रह्मचर्यगुप्तिइंकरी॥ अममे॥ माहरु २ करवारहित॥ अकिंच०॥ द्रव्यनघातिजेनइं

ग्रंथ०॥ धनधान्यादिकवित्तजेणइं अथवा तइंन॥ अप्रतिबंध छेदिऊ॥ पावंमरइ॥ किंनगेछ०॥ परिग्रहवीषरुयो॥ निरुवलेव०॥
द्रव्यथकी निर्मलादिहि॥ भावथकी बंधनाहेतुं नवअभाव॥ एहनइं हुंतंक नइं इ॥ कंसपत्त॥ कोंस्यपात्री॥ कांसानुं भाजन ते
हनी परिइं॥ मुक्कतोयं बंधनाहेतु थकी॥ तोय०॥ स्नेह जेणइं॥ जहा भावणाइं॥ आचारांगना बीजा श्रुतस्कंधना १५ माअध्ययन
नइं विषइ॥ जावुंमादिं सऊ०॥ रूडी परिइं हुताशिखामुतनइं विषइं॥ पत्तबुड ऊ०॥ कुंतासनतेहनी परिज्ञान॥ अथवातपरूपतेजि
इंकरी॥ जलेतिं०॥ दीपतउ॥ संखइव॥ संखनी परिइं॥ रागमा रंगवइसवारहित॥ जीवनी परिइं संयमनइं विषइं प्रवर्त्ततो गतिरुणाइ
नहीं॥ गगणे०॥ आकासनी परिइं निरालंबनकुलग्रामादिकनी निश्रारहित॥ वायु॥ वायनी परिइं अप्रतिबद्धतेग्रामादिकनइं विषइं
एकरात्र्यादिक नावसवाथकी॥ सारद॥ सारदी तितिना पाणीनी परिइं सुद्धहीअ अकलुषमनपणाथकी॥ पुरकरपत्त०॥ कमलनापत्रनी
परिइं निरुपलेप॥ ऊम्मोव्व॥ कच्छपनी परिइं गुप्तिंद्रियजिमकच्छप किवार २ कइं पाय इंद्रियइं गुप्त ऊइ॥ तिमभगवंतइं इंद्रिइंसदा गुप्त॥ विहगइं
विप्पमुक्क०॥ परियहरहितपणाथकी अथवा अनियतवासपणाथकी॥ खग्गे०॥ खड्गतेअटवीनउ जीवतेहनइं॥ वसणा०॥ एकसींगऊत्ते

अणुत्तरेणं नाणेणं जहा भावणाते

हनी परिइं॥ एकजाए॥ एकलुंतरागादिसखायरहित॥ भारंडवेखनइं एकसरीरजुउजीव॥ त्रिणि पगा तेअत्यंत अप्रमत्तरहइतोजीवीसि
कइ तिमअप्रमत्त॥ कुंजर॥ हस्तीनीपरिइं कषायसत्रुप्रतिइंसुर॥ वसभे॥ बलदनी परिइं॥ जायथाम०॥ बलरूपनुं पडिवज्यावस्तु नासमुहन
उनिर्वाहक॥ सिंघनीपरिइं परीसहादिकइं परिसवीनसकाइ॥ मंदरा०॥ मेरुनी परिइं अनुकूलादि उपसर्ग अविचलसत्त्व॥ सागराइ
व०॥ समुद्रनीपरिइं हर्षसोकादिकइं द्वीपरहित गंभीर॥ चंदो०॥ चंद्रमानीपरिइं सोम्यलेस्या उपतापकारीनहीं॥ सुर०॥ सूर्यनी
परिदीप्रतेऊ तेद्रव्यथकी सरीरनी कांति भावथकी ज्ञानइं॥ जच्चकणगं॥ इव आयरूव०॥ जाम०॥ पाम्युंरूप॥ पीतानुंस्वरूप क्रोध्यादिककु
द्रव्यरूपमइलविरहइंकरी जातीसोनु ते जिम॥ वसुधारा०॥ पृथ्वीनी परिइं सर्वपरसनसहनार॥ सीतल्यादि अनुकूलप्रतिकूल॥ नत्थि॥ न
थीतेभगवंतमहावीरनइं किहांइं प्रतिबंधस्नेहरहित॥ तेप्रति बंधस्याहो॥ नउ तेकहइ छइ॥ अंडए०॥ अंडइसादिंयं पमाहरू एस्वामि
तिबंधरहित॥ अथवा अंडके तेमयुरादिकं बुंइङ्कं पमोहरइं रमवानुं कारणमाटइं तेप्रतिबंधरहित॥ अथवा अंडउ त पटसुत्रनउ वस्त्र तेहना
प्रतिबंधरहित॥ पोयए॥ पोतउ तेहस्ती आदिकएमाहरूप प्रतिबंध अथवा पोतक०॥ कोंबालकौ अथवा वस्त्र तेहनां प्रतिबंधरहित॥ विग्गु
इ आहारनइं विषइं पणि सरागसेवी भगवंतनइं प्रतिबंधधाइ ते अवग्रहीकहइ छइ॥ उग्गहिए०॥ पीठफलकादिनइं ग्रहवानइ कांतिइं अणाविइ॥ पग
हीए०॥ अग्रहीक तेअ ठेकताभाजनादि उपगरण॥ जं०॥ जजे दिसिनइं विषइं विचरवानी छइं तेतेदिसिनइं विषइं विचरस्यइ॥

सुदि स्तत ति सा व सुद्धि घको । लघुस्तत ति इष्टव को उपद्रिनइ अस्रवइं । सावघको गार वह स्तागिडं । अनुंपगंध । अनुत्तर ग्याइंकरी पतलइ । पुन्यना उदयघको पामी नइ सुंक्यो ति ससं । प० नघी । गोबे० परिग्रह रूप लिपाप माउदय घको । पाम्पाडि नघी इमन्हो ।
अघवा । अणुं० । च्छाडोइ । गौचे० परि ग्रह । प०२ द्वितनघी । अघवा अणुप० अ दो । कि मी घ० आगिलामइ ति टिकराइनदो ।
अप्रपत्य घत घकातिअंत रंगपणा घको । गोवे० । शीनाजहसुं । सीवेमाणे० आतमा भइयामतो । अणुत्तर० । जसहकोअन
रूपभ्रमणघो । एवं अणुत्तरेण घु आगिलइ सद्दइं जाडवुं । आलए० उपाश्रय । विहारे० । पकरात्रादिकइ । अर्जवादिक
ति अनुक्रमइं माया मान क्रोध लोभ निग्रह । गुप्ति तिमनादिकनी । सत्यति वीर्यं महाव्रत । संयम ति पिहि तुं । तवगुण ति
अणसण दिक । सुचरिअ ति रुडां रोवा । खेति विमिय० । सोष्यति श्रीबुमहाव्रत । एतजानु जफल । परिनिर्वाणमग्ग० मुक्तिनउ
पंघ । झाणंतरियाए० । धमनात अूलो धमनो बीजो । सदध्याईनइ । त्रीजा तिदनइ अणलग्या हुता । अंतरिया० एहविचालइ
पुकणतिअणंतं ति । अनंता अर्थ नउ जाण । अणुत्तर० सर्वोत्तम । निर्व्याघाति ति पर्वतइ दृण्णाइन हो । निरावरणति सर्व आ
वरणरहित । कसिणति सर्व अर्थ नु ग्रहिनार । प्रतिपुन्नं ति स्वरूप घकी पुर्णिमा नाचेड मानी परिडं । केवलति सहायार हि त । एह

केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिंति । जिणे भविस्सति केवली सव्वन्नु सव्वदरिसी । से णं अरहा जाव पंचम
हव्वयाइं सभावणाइं छच्चजीवनिकाय धम्मं देसमाणे विहरिस्सति ।

जिनइनर प्रधान हुनद्वति । अरहा० । अष्टविधि महा प्राति हार्य पूजा जोग्य । जिनति रागदिक जीपवा घको । केवली
ति परिपुर्णज्ञानादि त्रिणि सहित पणाघको । सर्वज्ञ ति सर्व विशेषार्थ जाणवा घको । सर्वदर्शी ति सकल सामान्य अ
र्थना जाणवा घको । सदेवमणुया० दिवा ति विमानिक ज्योतिष्क ति सहित जे मनुष्य । असुर ति भवनपति व्यंतर । लोक
ते पंचास्तिकायमय । जेहना पर्याय० विचित्र परिणाम जाणस्यइं देषस्यइं । एदेवादिक अत्युत्तम प्रधान पणामाटइं ।
अ०पधी सर्व जीवना पर्याय जाणस्यइ जि तो । एह जणे कहइ छइ । सर्व लोक नइ विषइ । वयति वैमानिक ज्योतिष्कनुं मरण ।
उपपात ति नारकीदेवतानउ जन्म । तर्क ति विचार । मणोमाणसियं० मनमां चिंतव्यो ति वस्तु । खाग बीजं तिकुरादिक । का
धाति घटादि । प्रतिसेवितं ति प्राणवधादि । आवीकर्म ति प्रगट क्रिया । रहकर्म० ति छानउ कस्यो पार जाणस्यइ । अरहे० नघी का
इ एको तिर्छन इ । सर्वज्ञ पणा घको । एहजणे अरहस्स भागी० । अणीकीनाना तेहनार तेहनइं । जे हनइ अनुंति काइ नघी । तं तंकाल० ।
ति ति काल नइ विषइ

मनवचन कायाना व्यापार । वट्टमाणाणं० वर्त्तता । सर्वलाव सर्व परिणाम । जाणमाणे देखतो विचरस्यइ । अ । स समणाणं० आर्यो नइ ।
भावणाइं । अत व्रतप्रति ईर्यादि पांच भावना सहित । छज्जीव निकायन हुं राषइ करी । धर्म० श्रुत निमइ चिल्लज्ञावि नइ धमर वाम
की धर्म श्रुत चारित्र रूप । देसिमाणे० प्ररूपता । हिवइ महापद्म नइं अनइं पातानइं वस्तु नइं अग्गलत्त दिषइंकरी सर्वज्ञ पणुं देषाडवइ
करी । त्रिकु नीषरूपणाइं सरिषापणुं देषाडइ छइ । से० हवइ । जहा० जिम । नामए० वाक्यालंकारि । अज्जो० हे आर्यो साध्यामंत्र
ण । एगआरं मट्ठाणे० एक आरंभनुं स्थानक । प्रमादे योगपणा घको । यदाहो० सव्वो पमत्त जोगो । समणाणमइं हार्दिंग आरंभो

से जहानामते अज्जो मते समणाणं निग्गंथाणं एगे आरंभट्ठाणे पन्नत्ते एवामेव महापउमे वि
अरहा समणाणं निग्गंथाणं एगं आरंभट्ठाणं पन्नवेहिति । से जहानामते अज्जो मए समणाणं
निग्गंथाणं दुविहे बंधणे पं तं पेज्जबंधणे य दोसबंधणे य एवामेव महापउमे वि अरहा समणा
णं निग्गंथाणं दुविहं बंधणं पन्नवेहिति तं । पेज्जबंधणं च दोसबंधणं च । से जहानामते अज्जो मते स
मणाणं निग्गंथाणं तउ दंडा पं तं मणदंडे ३ एवामेव महा समणाणं निग्गंथाणं ततो दंडे पन्नवे
हिति तं मणोडंडं ३ । से जहानामए एवामेतेणं अभिलावेणं चत्तारि कसाया पं तं कोहकसाए
४ पंच कामगुणा पं तं सद्दा ५ छज्जीवनिकाए पं तं पुढविकाइया जाव तसकाइया एवामेव जाव त
सकाईया । से जहानामए सत्त भयट्ठाणा पं तं । एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं निग्गंथाणं सत्त भ
यट्ठाणा पन्नवेहिति । एवमट्ठ मयट्ठाणे णव बंभचेरगुत्तीओ दसविहे समणधम्मे एवं जाव तेत्तीस
मासायणाउ त्ति । से जहानामए अज्जो मते समणाणं निग्गंथाणं नग्गभावे मुंडभावे अन्हाणते अ
दंतवणते अछत्तए अणुवाहणते भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे
परघरपवेसे लद्धावलद्धवित्तीउ पन्नत्ताउ एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं निग्गंथाणं नग्गभावे

फलकति
पाटलु नइं
नोविकाष्ठ
ना धु तिस
नमांनादि
कई । अप
लब्धि ति अ
पमान पुर्व
क ज्ञन आ
दिक तिर्ण
इ करी नइं
इ ति निर्वा
ह छइ जेह
नउ ।

आहाकम्मिए० साधु आश्री सचित्तनुं अचित्तनुं करवुं ॥ अथवा अचित्तनुं रांधवुं ते ज तस्या दिक ते आधाकर्मी ॥ उद्देसिय० आपणपाषंडी श्रमण निग्रंथ नई उद्देसीनइ दुर्भिक्षादिकनइ विषइ जे दिइ ते उद्देसिक ॥ अथवा ते माहिं नीजे अ[illegible] जगाकुं तेहही ज आदि कइ मिश्र करी दीजीइ ॥ अथवा ते पाडीही जीइ । ते उद्देसिक ॥ मिस्सजाए० गृहस्थ मुइ अनइ संयत नइ अर्थइ ॥ जात० नीपनुं ॥ अज्झोयरए० पोतानइ अरथि इ आधरणा हुंधुं तेहमाहिं साधुदिकनइ अर्थइ कण प्रक्षेप

जाव लद्धावलद्धवित्तीउ पासावहित्ती । से जहा णामए अज्जो मात समणाणं अहाकम्मिए वा उद्देसिततिवा मीसज्जाए तिवा अज्झोयरए तिवा पूतिए कीते पामिच्चे अच्छेज्जे अणिसट्ठे अभिहडे तिवा कंतारभत्ते तिवा दुभिक्खभत्ते तिवा गिलाणभत्ते वद्दलियाभत्ते पाहुणगभत्ते मूलभोयणे तिवा कंदभोयणे फलभोयणे बीयभोयणे हरियभोयणे तिवा पडिसिद्धे एवामेव महापउमे अरहा समणाणं अहाकम्मितं वा जाव हरितभोयणं वा पडिसेहिस्सति । से जहानामए अज्जो मए समणाणं पंचमहव्वतिते सपडिक्कमणे अचेलते धम्मे पण्णत्ते एवामेव महा

आणिसट्ठं० घणाजणानउ स्वामी । ते माहिं एकनी आज्ञा लेइ ॥ अभिहडं० पोतानां गामादिकथकी आणीनइ आपइ ॥ कंतारभत्त आदि आधाकर्मना भेद । तिहां कंतार० अटवीनइ विषइ साधादिकनइ अर्थइ ॥ तस्स० [illegible] जन तिकंतार [illegible] मास [illegible] ॥ गिलाण भत्ते० रोगनी उपसा तिमिइ अर्थि दीइ । अथवा गिलानइ अर्थिइ जे दीइ ॥ वद्दलि० मेघाडंबरनइ विषइ अशनादिकइं करी भिक्षाचरी समिवा असमर्थ छइ ॥ तेहनइ अर्थि गृहस्थनी पाइये ॥ पाहुणा० परहुणा [illegible] ते हनइ अर्थि [illegible] अथवा पारहणुं । जइ गृहस्थ ते साधुनइ अर्थि नीपानिइ दिवराविइ ॥ मूलतस टाढा [illegible] आदिकनी तेह ते भाजन ॥ कंद० सुरणादिक ॥ फल० [illegible] आदिक ॥ बीज० ते दाडिमादि ॥ हरित मधुर [illegible] दि विशेष जीववधपणा थकी एहनउ निषेध ॥ पंचमह० प्रथम पश्चिमनी इंकिरनइं वक्रजडा ऋजुजडा छइ ते ॥ मध्य जिननइ अनइ महाविदेहमाहिं धर्म [illegible] सपडिकमणे० उभय कालना आवश्यक [illegible] ॥ अनइं [illegible] पडिकमणुं ॥ अचेलए० अविद्यमान ॥ ना

[illegible] आपणाइं ॥ वस्त्र अछतापणाथकी ॥ जिवर कल्पिनी आपणाइं । जूनां मइलां खंडित धुला । वली ते थोडां एहवां जे [illegible] वस्त्र एह वो धर्म तिहां छि ॥ साधुनइ जूनां वस्त्र पुराणां । मइलां थोडां सदाकाल ॥ नहीं आनेरा नाना [illegible] वस्त्र ॥ मुछ रहित भोगवइ ते लणुं अचेलक होइ ॥ वस्त्रात । आसक्त रागादिकनो कारण छइ । पणि मन मनसा सुधथकां वारित्रनउ व्यापार ॥ व्याघात न थाइ ॥ जिम सरीर आहारादिक रागना कारण छइ । पणि ममतानइ अभावि रागादिकनां कारण न हुइ ॥ जिम सरीर थाकुं ऊपडइ ॥ पणि तेह परिग्रह न हुइ ॥ तिम सरीर वस्त्रादि विधि परिग्रह न हुइ ॥ उत्तं वस्त्रादिक मुल्या ऐ [illegible] तेहनो जउ मुर्छ करी चितउ । सरीरनी विलसा [illegible] मूर्छा करी रसि । जिन सरीर तो मुल्य इंन पामीइ । ऊगम मन मुर्छ नइ करतउ । अचिलपणाइं चारि फलदाइ न हुइ ॥ जे तसलीं वस्त्र रहित छे तो ॥ मुर्छा कषायनइ दोषइं करी । अण निग्रहो अपना अनंत कर्म मल ऊपार्जिइ ॥

पउमेवि समणाणं णिग्गंथाणं पंचमहव्वतितं जाव अचेलगं धम्मं पन्नवेहिती । से जहा णामए सम पंचाणुव्वतिते सत्तसिक्खाव[illegible]तिते दुवालसविहे सावगधम्मे पन्ने एवामेव महापउमेवि अ पंचाणुव्वतितं जाव सावगधम्मं पण्णवेस्सति । से जहानामए अज्जो मए समणाणं सेज्जातरपिंडे तिवा रायपिंडे तिवा पडिसिद्धे एवामेव महा समणाणं सेज्जातरपिंडं तिवा रायपिंडं तिवा पडिसेहिस्सति । से जहा णामते अज्जो ममं णव गणा एकारस गणा

[illegible] वस्त्र राखइ पणि संयमना आधार मा टइ ॥ चारित्र धर्म छइ ॥ जिम सरीर आहार ना रीत्या दिना आधार छइ । तिम वस्त्रा[illegible] सीतादि त्राण । संजीव रक्षणादि नउ परिहार थाइ ॥ अग्निनो आरंभ टलइ ॥ धर्म सुक्ल ध्याननु वधइ ॥ साधुनउ लिंग अ नइ ग्लानन इं सरण छइ ॥ तथा सुइ साधु जेहनइ विषइ ते सिज्या । ते णाइं संसारसागर तरइ ते सेज्या तर । तेह नउ आय [illegible] दिते सेज्यातर पिंड० ते असनादि ४ वस्त्र पडिग्रह । कंबल० पायपुछणं ॥ सुई आदि ४ ते अर्थि [illegible] ते दोष ॥ ता [illegible] करनउ भिक्ष थ्यो तिहां अणआणइं उदकमादि दोष नी निरतिमपडइ ॥ निर्लोभता न छइ ॥ अनइं हलवाय णु छइ ॥ दुर्ल भ ऊपाश्रो वली पामतां छइ ॥ राजपिंड ते चक्रवर्ति वासुदेवादिकनउ पिंड ॥

हिवइ विकुं जिम तास रीषा मला नी समाचारि कहइ छइ। जंसील० जेहवउ स्वभाव अनइ अनुष्ठान श्री महावीरनुं। तंसील० त
हवु स्वभाव अनइ अनुष्ठान महापद्मनुं॥ महापद्म जिन वीरनी परि इकतरा का ल्युं नी मन्दइ अइ छइ म्मादिक पामस्यइ॥ एणाइ

धरा एवामेव महापउमस्स वि अरहतो णव गणा एगारस गणधरा भविस्संति। से जहा णामए
अज्जो अरहं तीसं वासाइं आगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वतिते दुवालस संवछ
राइं तेरस पक्खा छउमत्थपरियागं पाउणित्ता तेरसहिं पक्खेहिं ऊणगाइं तीसं वासाइं केव
लिपरियागं पाउणित्ता बायालीसं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता बावत्तरि वासाइं सव्वाउयं
पालइत्ता सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति। एवामेव महापउमे वि अरहा तीसं वासाइं
आगार जाव पव्वयाहिती दुवालस संवछर जाव बावत्तरि वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिज्झिहिती
जाव सव्वदुक्खाणमंतं काहिति। जंसील समायारो अरहा तित्थकरो महावीरो तंसील समायारो
होति अरहा उ महापउमे। नव नक्खत्ता पछेभागा पं० तं० अभिती सवणो धनिट्ठा रेवति अस्स
णि मिगसिर पुंसो हत्थो चित्ता य तहा। पछंभागा णव हवंति॥१॥ आणत पाणत आरणचुत सु
कप्पेसु विमाणा णव जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पं०। विमलवाहणेणं कुलकरे णव धणुसयाइं उ
ड्ढं उच्चत्तेणं होत्था। उसभेणं अरहा कोसलिएणं इमीसे उस्सप्पिणीए णवहिं सागरोवमकोडा

संबंधइ नक्षत्रनुं सुत्र कहइ छइ॥ पछंभागा० चंद्रमानी पाछलि एतला चंद्रमा जिम नक्षत्रनइ ऊरुघीनइ पुंठि दिइ नइ लागइ
॥ अभिजाइ० अभिजिनी मतो तरिइ छइ॥ अश्विनी तरणी समणी॥ अनुराध धनिष्ठा रेवइ पुस्सो॥ मिगसिर हत्थो चित्ता॥ पछिम जोगा
मुणियव्वा॥ नक्षत्र पछि विमाननउं संबंध कहिइ छइ॥ हिवइ विमान विस्तरनुं सुत्र कहइ छइ॥ अनंतर विमाननुं ऊचपणुं कहिउं॥ हिवइ
कुलगरनुं ऊचपणुं कहइ छइ॥ कुलगरानां॥ कुलगरना सुत्र पछी ऋषभ कुलगरनुं सुत्र॥ २३९

ऋषभतणउ सुत्र॥ घणदंत अंतरद्वीपाना प्रमाणनुं सुत्र॥ घनदंतादिक सात अंतरद्वीपा जाणवा॥ सुक्र ग्रहनी जिम पुर्व्वइ कह्यो
एइ वास्तु नास रीषा पुणा घको तेलघकी ऊप विनवस्यइ जिम मध्यवारी ग्रह विस्तरनुं सुत्र॥ सुक्र महाग्रहनी॥ वीही०॥ नव विधि तिहां
त्र नो पिला ग॥ आ हिति भिति मिन ही आइ एक लागइ॥ तिहां घोडा नइनी मइं बीमी तिहयवीथीइ मस्स घलइ एह वीथी छइ॥ तेअ व विम
इ अरघिइ॥ ईहांन हय वीथीक ही छइ तेअ नरीग मिइं नाग वा घीरू दिइ छइ॥ एवीथीना लक्षण। नइ बाऊ प्र सिद्ध आचार्यइं करी अ
नुक्रमइं लखी छइ॥ नरणां स्वात्या हिय ३ आहिय०॥ रोहिणी॰॥ नक्षत्र वा वीथी मध्यारणा मार्गि। रोहिणी आदि ३ वा साध्या ६ वादिभ्रा
दि ३ आदित। पुनर्वसु॥ खरगआरव्या॥ ९॥ हस्ता आधृ चित्रा दि ३ श्रवणादि ३ मध्यम॥ जरदगवार ख्या॥ प्रा उपदादि अथ सुक्र

कोडाकोडीए वीतिक्कंताहिं तित्थे पवत्तिते। घणदंत लट्ठदंत गूढदंत सुद्धदंत दीवाणं दीवा णवणव
जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता। सुक्कस्स णं महागहस्स णव वीहीओ पं० तं० हयवि
ही गयविही णागविही वसहविही गावीही नरग्गविही अयवीही मित्तवीही वेसाणर
वीही। नवविहे नोकसायवेयणिज्जे कम्मे पं० तं० इत्थिवेते पुरिसवेते णपुंसगवेदे हासे

एवीथी मांहि नागवीथी इ सुक्र विचरइ॥ तिवारइं मघ घणो वरसइं॥ अपथी सुलक्षणइ॥ अर्घ हलि छइ॥ अनइ पसुनइ नां
मइं वाघी मांहि सुक्र वालइ॥ तिवारिइं मध्यम मध्यान्य फल छइ॥ अजमृष विश्वा नरवीथीनइं मइं विचरइ। सुक्र चालइं तिवा
रिइं धन सयादिक करी लौ लाकथ पीडिइ छइ॥ वीथी विस्त घनइ वार इकरी सुत्रा दिक ग्रह मनुष्य मइं। इच्छादिक साम ग्राइं
करी। मनुष्यनइं रूडो पांडु आकरइ कर्मना उदय घकी। तेहतणुं कर्मनुं स्वरूप कहइ छइ॥ नोकसाय० ईहां नोसब्द तेसंघा
तनउ अर्थ बोलइ तिकषायनइं संघातइ विचरइ। तेनो कषाय॥ नोकषाय ते अनंतानुबंधि प्रमुख संघाति बोलवा थकी कषाय
नाभरी पांड्रि फल आपइ। तेणइं करी एकर्म वेदीइ॥ तेनो कषाय वेदनी॥ तिहां एअनइं उदयिं स्त्रीनिं पुरुषनउ अभिलाष
थाइ॥ जिम पित्तनुं उदयइ॥ मधुरनउ अभिलाष थाइ॥ फुंफकसाग्नि ताका ऊश्वरीख स्त्रीवेद॥ एअनइं उदयिं पुरुषनइं स्त्रीनो
अभिलाष थाइ॥ जिम श्लेष्मा नइं उदइ खाटानउ अभिलाष थाइ॥ दवाग्नि ज्वालश्वरीख पुरुषवेद॥ एअनइं उदयिं नपुंसक
नइं स्त्री पुरुषनउ अभिलाष थाइ॥ जिम पित्त श्लेष्मा नइं उदइं मधुर खाटा बिहुनउ अभिलाष थाइ॥ नगरदाह सरीखो नपुंसक
वेद॥ एअनइं उदयिं कारणाइं निःकारणाइं हसइ ते हास्य कर्म॥

गो वीथी इ ९,
६॥ नरदुम
ध्यफलं॥ पी
त्र॥ मघा॥
मध्यम मृ
गसिरि॥ प्रो
ष्टपदा॥ पु
र्वसु उपदा॥
अजवीथी
॥७॥ हस्तादि
४ मृग वी
थी ८ चित्र
दवती दि
२ स्याति॥
दुर्गमा
र्ग विख्या
नर्या ९॥
रवाद छ यं
प्रोष्ठ॥ इ द
देवनात
ज्येष्ठा॥
भ्रात्पतअ
जी चे ३॥

यहनइ ३ दय सचित्ता चित्त बाईइच्छनइं विषइ जीवनइं रतिरूपजइ ते रति कर्म॥ जे हनइं उदय चित्तनइं विषइं॥ अरति कर्म॥ यहनइं उदयि सयर हित प्राणि जीवनइं इहलोकादि सप्त विधि भय ऊपजइ ते भयकर्म॥ यहनइं उदयि सोकरहित जीवनइं प्राणि आक्रंदादि सोक ऊपजइ ते सोककर्म॥ यहनइं उदयि विरूपा दिसुगमरणी वस्तुनइं प्राणि दुगंछइ तद्दुगंछाकर्म॥ अनंतर कर्म कहिउं॥ तेहनां बंधक तेरुपा कुलकोडि मांहि समइं। तेहनां कुलकोडिसूत्र॥ कुलकोडि माहिला ते ते कर्म चिणाई। तेहनां चिणवादिसूत्र॥ कर्म पुद्गलना प्रस्तावथकी॥ पुद्गलनां सूत्र॥ नवरं॥ नवजाई॥ च

२ ती अरइं सातासा गंडुगं वा चउरिंदियाणं णव जाइकुलकोडिजोणिपमुहसयसहस्सा

पन्नत्ता। भेयगपरिसप्पथलयरपंचिंदितिरिक्खजोणिताणं णवजातिकुलकोडिजोणिपमु

हसयसहस्सा पन्नत्ता। जीवाणं णवट्ठाणनिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताते चिणिंसु वा ३ पु

ढविकाइयनिव्वत्तिते जाव पंचिंदियनिव्वत्तिते एवं चिण उवचिण जाव निज्जरा चेव। णवप

एसिता खंधा अणंता पं। जाव णवगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पन्नत्ता। नवमं ठाणं सम्मत्तं॥

दसविहा लोगट्ठिती पं। तं। जण्णं जीवा उद्दाइत्ता २ तत्थेव २ भुज्जो २ पच्चायंति एवं पेगा लोगट्ठिती

पन्नत्ता १ जण्णं जीवाणं सतासमितं पावे कम्मे कज्जति एवंप्पेगा लोगट्ठिती पन्नत्ता॥ २॥ जण्णं जी

चउरिंद्रीनी जातिनइं विषइं॥ जे कुलकोडि ते योनि प्रमुख॥ योनि नाहार नाज जात सहस्र॥ भुजो इंकरी चालइं ते भुजगधादिक॥ नवट्ठाण सम्मत्तं॥ पुविरुन वगुण लुक्खा पुद्गल अनंता कह्या॥ ते असंख्यात प्रदेसरूप लोक मांहि समाणा छइ। ते लोकस्थिति कहीइ छइ॥ लोक॥ पंचास्तिकायमय लोक तेहनी स्थिति॥ मर्यादि॥ उदाइत्ता॥ मरी मरीनइं॥ तत्थेव॥ लोकनादेसनइं विषइ॥ अथवा जातिनइं विषइ। अथवा योनिनइं विषइ अथवा कुलनइं विषइ अंतर निरंतर वली २ ऊपजइ॥ इसी एक लोकस्थिति॥ १॥ सदा प्रवाहथकी अनादि॥ अपर्यवसित काल॥ समियं॥ निरंतर पापकर्म ज्ञानावरणादि॥ सघलुं कर्म पाप केतु अंतरायकर बाधक पापवली कहीइ॥ कज्जति॥ बांधीइ इस्यपणि ए लोकस्थिति॥ २॥ २४०

मोहनीयं॥ मोहनी प्रधानपणा माटइ॥ अलग इं ग्रहिउं। तेहनुं निरंतर बांधवुं इमपणि॥ ३॥ जीव अजीव थास्यइं नहीं तिम अजीव पणि जीव नहीं थाइ इम॥ ४॥ त्रस थावर नइं व्यवच्छेद नहीं थाइ इम॥ ५॥ लोक आकाल अनइं अलोक लोक नहीं थाइ इम॥ ६॥ अनइं अलोक लोक मांहि पइसे नहीं॥ ७॥ जां लगइ पणि लोक तां लगइ जीव जां लगइ जीव तां लगइ लोक॥

वाणं सतासमितं मोहणिज्जे पावकम्मे कज्जति एवंप्पेगा लोगट्ठिती पन्नत्ता॥ ३॥ ण एतं भूतं

वा भव्वं वा भविस्सति वा जं जीवा अजीवा भविस्संति अजीवा वा जीवा भविस्संति एवंप्पेगा

लोगट्ठिती पन्नत्ता॥ ४॥ ण एयं भूयं वा ३ जं तसा पाणा वोच्छिज्जिस्संति थावरा पाणा भविस्संति

थावरा पाणा वा वोच्छिज्जिस्संति तसा पाणा भविस्संति एवंप्पेगा लोगट्ठिती पन्नत्ता॥ ५॥

ण एवं भूतं वा ३ जं लोगे अलोगे भविस्सति अलोगे वा लोगे भविस्सति एवंप्पेगा लोग

ट्ठिती पन्नत्ता॥ ६॥ ण एयं भूतं वा ३ जं लोए अलोए पविस्सति अलोए वा लोए पविस्सति एवंप्पे

गा लोगट्ठिती पं ७ जाव ताव लोगे ताव ताव जीवा जाव ताव जीवा ताव ताव लोए एवंप्पेगा

लोगट्ठिती पं ८ जाव ताव जीवाण य पोग्गलाण य गतिपरियाते ताव ताव लोए जाव ताव

लोगे ताव ताव जीवाण य पोग्गलाण य गतिपरियाए एवंप्पेगा लोगट्ठिती पं ९ सव्वे

सु वि णं लोगंतेसु अबद्धपासपुट्ठा पोग्गला लुक्खत्ताते कज्जंति जेणं जीवा य पोग्गला य नो

संचायंति बहिता लोगंता गमणयाए एवंप्पेगा लोगट्ठिती पन्नत्ता॥ १०॥ दसविहे सद्दे पं तं

लोकांतना सघलाई पुद्गल लुखापणाइ परिणमइ। तेणइं करी॥ अबद्धपासपुट्ठ॥ पुद्गल माहोमांहि संबंध रहित थाइ तेणइं करी जीव अनइं पुद्गल परमाणु आदिक॥ नो संचायंति॥ न सकइं लोकांतबाहिर जाइ इम परिण लोकस्थिति॥ १०॥

कहइ॥ ८॥ जां लगइ पणि जीवादिकनी गति पर्याय तां लगइ लोक॥ इम ए॥ सर्व लोकनइं विषइ॥ अबद्धपासपुट्ठ॥ अबद्ध तेगाढा माहोमांहि संबंध रहित ते माहोमांहि फरस नहीं तिम अबद्धपासपुट्ठ॥

नाकस्थितिघकीत्कालणहारनानुषमादिलापुद्गलानाकांतिलगइजाइ॥ तिमस्तावघकीसद्दनालदकहइछइ॥ नीहारी॥ घोष
वजइघंटानीपरिइं॥ पिंडिम॥ घोषरहितशाद्दसिरीयादिकनीपरिइं॥ लुखोतिकमाडनीपरिइंसद्द॥ तिन्नसद्द॥ कोढादिकइं
पीड्यानीपरिइंशाद्द॥ जर्जरित॥ तोतिकुरी॥ इका दिवादित्रनासद्दनीपरिइं॥ पाछोतरइं॥ जर्जरितअर्थतिमइजि॥ दीर्घअ
अर्थअक्षरसहितअथवाविगलालगिइंसलाइं॥ मेघादिकसद्दनीपरिइं॥ ह्रस्वातह्रस्वअक्षरटुंकडोवीणादिकसद्द
नीपरिइं॥ पुहत्ति॥ एबकु॥ घणापणाइंनानावाजित्रनइंशोअवइं। एकवइंबाजवइंसद्दघाइं॥ संघनोजाडलादिकनीपरिइं॥
कांकणातसुद्दमकंठनागीतनउसुद्द॥ कोकुलाय्यरूढिछइ॥ खिखिणी॥ तघुघरीनउस्वर॥ अनंतरसद्दकह्यिइ॥ तइंद्रिया

नीहारिए पिंडिमे लुक्खे भिन्ने जज्जरिए दीहे रहस्से पुहत्ते य काकिणी खिंखिणीस्सरे॥१०॥
दसइंदियत्था तीता पन्नत्ता तं। देसेणवि एगे सद्दाइं सुणिंसु सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणिं
सु देसेणवि एगे रूवाइं पासिंसु सव्वेणवि एगे रूवाइं पासिंसु एवं गंधाइं रसाइं फासाइं जाव
सव्वेणवि एगे फासाइं पडिसंवेदेंसु दसइंदियत्था पडुप्पन्ना पं तं देसेणवि एगे सद्दाइं सुणे
ति सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणेंति एवं जाव फासाइं दसइंदियत्था अणागया पं तं देसेण
वि एगे सद्दाइं सुणिस्संति सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणिस्संति एवं जाव सव्वेणवि एगे फासाइं पडि
संवेदेस्संति दसहिं ठाणेहिं अच्छिन्ने पोग्गले चलेज्जा तं आहारिज्जमाणे वा चलेज्जा

र्थछइ॥ तितणोइंद्रियार्थकालनइ तिदिइकरीकहइछइ॥ सूत्र॥३॥ देसेणवि॥ अवक्षतसद्दनासमूहनीश्रापणाइं। दसव
घकीतिकतरुएक॥ एगेसद्दाइंसुणिंसु॥ कोइएक पुरुषसद्दसांभलतोहुउ॥ सव्वेणवि॥ जितलुंकदिजातलुंसर्व। अथवा
इंद्रीनीअपेक्षाइं। कोनिइंसांभलइ ते देसथकी॥ संभिन्नश्रोतलब्धिनउधणीसर्वइंद्रीइंसांभलइ। ते सर्वथकी॥ अथवा कर्णमांहि
लोएकअक्षरइंसांभलइ ते देसथकी॥ बेसांभलइ ते सर्वथकीइमसघलइ॥ पडुपन्न॥ वर्तमान। इंद्रियार्थ ते पुद्गलधर्मछइ॥
तेणे पुद्गलस्वरूपकहइछइ॥ अच्छिन्न॥ सरीरनइविषइअथवा विवक्षित॥ स्कंधथकीजुउनथीपाल्यावत्रइछइते॥ चलेज्जा॥

२४१

स्तानीतरिहिजाइ॥ आहारिज्जमा॥४ षातोथकोसुखादीआदिकअथवाऊभतोथकापुद्गलचलइ॥ परण॥५ पेटनी
अग्निकरीस्वलनोपरिइंकोजिननउरसपरिणामावतइं पु०॥२॥ ऊश्वासनीश्वासकरतां तिवायन पु०॥४॥ विदिज्जम
णे॥ कर्मलागवतइं पु०॥५॥ पाछोतरछेजमा॥ छेदीतइंपु०॥ निजरिज्ज॥ कर्मनिर्जरितइं पु०॥६॥ विउविज्ज॥ विकि
यसरीरकरतां पु०॥७॥ परियारिज्ज॥ मिथुनसेवतासुक्रादिकनापुद्गलचलइ॥८॥ जरकाइडे॥ स्तनविलगइतेहना
सरीरनापु०॥९॥ वायपरिगए॥ कोठामांहिवायुव्यापइं। तिवारपु०॥ अथवासरीरिइंवायुव्यापइंउ। तिवारिबाहिरि

ऊससिज्जमाणे वा चलेज्जा निस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा वेदिज्जमाणे वा चलेज्जा णिज्जरिज्ज
माणे वा चलेज्जा विउव्विज्जमाणे वा चलेज्जा परितारिज्जमाणे वा चलेज्जा जक्खाइट्ठे वा चलेज्जा
वातपरिग्गए वा चलेज्जा दसहिं ठाणेहिं कोहुप्पत्ती सिया तं मणुन्नाइं मे सद्दफरिसरस
- सद्देष रूवगंधाइं अवहरिंसु १ अमणुन्नाइं मे फरिसरसरूवगंधाइं उवहरिंसु २ मणुन्नाइं मे सद्दफ
रिसरसरूवगंधाइं अवहरइ ३ अमणुन्नाइं मे सद्दफरिस जाव गंधाइं उवहरति ४ मणुन्नाइं मे सद्द
जाव अवहरिस्सइ ५॥ अमणुन्नाइं मे सद्द जाव उवहरिस्सति ६ मणुन्नाइं मे सद्द जाव गंधाइं अ
वहरिंसु अवहरइ अवहरिस्सति ७ अमणुन्नाइं मे सद्द जाव उवहरिंसु उवहरति उवहरिस्सति ८
मणुन्नाइं मे सद्द जाव अवहरिंसु अवहरति अवहरिस्सति उवहरिंसु उवहरति उवह
रिस्सति ९ अहं च णं आयरियउवज्झायाणं सम्मं वट्टामि ममं च णं आयरियउवज्झाया मिच्छं विपडिवन्ना

एअतीतकालइंसर्व ॥ इमवर्त्तमानइंवि अनागतिइंपि। मनोज्ञसद्दादिअपहरस्या॥ अपहरइछइ॥ अमनइं
अपहरस्यइ॥ अमनोज्ञमिल्या॥३॥८॥ मनोज्ञामनोज्ञअपहरस्या उ मिल्या॥३॥९॥ आयरि॥ आचार्यउपा
ध्यायनउसम्यग्प्रकारिविनयवियावच्चकरतांतोहि। अनइंआचार्यउपाध्यायमिथ्यारूपरिमिछंसपडिवन्ना॥ त्या
टोलावपडिवज्जइश्मकोधऊपजइ॥ कोधनीउत्पत्तिसंयमनइंजाइ॥ ते लणीसंयमनुंसूत्र॥

लुवायुसरी
रपुद्गलचला
वइ॥ पुद्गल
नाअधिका
रथकापुद्
लधर्मइंद्रि
यार्थनुंस्व
रूपकहइ
छइ॥ माहा
रा मनोज्ञ
सद्दादिक॥
अवहरिंसु
॥ एणइंअ
पहरुया त
नीधमइम
विचारतो
क्रोधऊप
जइ॥१॥
उवहरिंसु
॥ मुझनइं
तिणइंउसं
योगमिल्यो
इमा॥२॥

संयमाना विपक्ष असंयम ॥ असंयमनो विपक्ष संवर नें सुत्र ॥ संवर विपरीत असंवर नें सुत्र ॥ उपगरणसंवर ते धरणा अनइं अक
ल्पनीय वस्त्र आदिनुं अग्रहण छिवुं ॥ अथवा वीखर्या वस्त्रादिक उपगरणनुं संवरवुं ॥ एह छिउ उपगरणी आपेक्षाइ ॥ सुचि
कुसाग्र संवर ते सोई अनइ दर्भनी अणी ते शरीरनइं उपघात करणी तेहनुं संवरवुं ॥ औधिक उपगरण ग्रहिवुं
उपलक्षण पणाथकी समस्त अउपग्रहिक उपगरणनुं जाणवुं ॥ छेहलइ द्विरूपदिइ करीनइं द्रव्यसंवर कहिउं ॥

दसविहे संजमे पं० तं० पुढविकातितसंजमे आउ० तेउ० वाउ० वणस्सति० बेइंदियसं
जमे तेइंदियसंजमे चउरिंदितसंजमे पंचिंदियसंजमे अजीवकायसंजमे दसविहे
असंजमे पं० तं० पुढविकातितअसंजमे जाव अजीवकायअसंजमे दसविहे संवरे
पं० तं० सोतिंदितसंवरे जाव फासिंदितसंवरे मणसंवरे कायसंवरे उवकरणसंवरे सुचीकु
सग्गसंवरे दसविहे असंवरे पं० तं० सोतिंदितअसंवरे जाव सुचीकुसग्गअसं
वरे दसहिं ठाणेहिं अहमंतीति थंभिज्जा तं० जातिमएण वा कुलमएण वा जाव इस्सरिय
मएण वा णागसुवन्ना वा मे अंतियं हव्वमागच्छंति पुरिसधम्मातो वा मे उत्तरिते आहो
हिते णाणदंसणे समुप्पन्ने दसविहा समाही पं० तं० पाणातिवायवेरमणे मुसा अदिन्ना

एहवइ असंवर नउ विसेष कहइ छइ ॥ अहमंतीति ॥ जात्यादिकइं करी । अति उत्तम पणाथकी हुं सर्वनइं माहइं छे एह तल
इ । सघली जाति माहरी जाति भली छइ ॥ अथवा हुं अतिसयवंत तेहणी ॥ थंभिज्जा ॥ मद इं करी ॥ जाव मांहि बलमएणं ॥ सुयम
एणं रूवमएणं ॥ तवमएणं ॥ लाभमएणं ॥ नागकुमार सुवन्नकुमार माहरि सेवा नइं पासइ ॥ हव्वमागच्छंति ॥ सीघ्र आवइ छइ ॥
पुरिसधम्माउ ॥ सामान्य पुरुषनउ धर्म ज्ञानपर्याय ते हथी माहरइ ॥ उत्तराति ॥ प्रधान ॥ आहो हिए ॥ मर्यादावरती ॥ ज्ञा २४२
ननइं विषइ अवधि ज्ञानदर्शन उपनुं छइ ॥ इम दर्पसिं करी अहंकार पणुं आवइ ॥ मद थकी विपरीत समाहिनें सुत्र ॥

समाधि विपरीत असमाधिनुं सुत्र ॥ समाधि असमाधि सुं सामान्य करी प्रव्रज्या उपजइ ॥ तेहणी प्रव्रज्यानुं सुत्र ॥ पछइ प्रव्रज्यावंत
श्रमणनु धर्मनुं सुत्र ॥ पछइ श्रमणधर्मनइं करी विसेष वेयावच्चनुं सुत्र ॥ एतो जीवना धर्म छइ ॥ तेहणी जीवना परिणा
मनुं सुत्र ॥ तेहथी विपरीत अजीवना परिणामनुं सुत्र ॥ समाहि ॥ समता समुत्व थकी रागादिकनो अभाव इ त्यां ॥ छंदा
॥ पोतानां अभिप्राय थकी प्रव्रज्या लियइ गोविंद वाचकनी परिइ ॥ अथवा सुंदर नंदनी परिइ ॥ अथवा परनइं छांदइ जिम साई
नइं विषि सवसवदत्तनी परइ ॥ रोसा ॥ रोस थकी दीक्षा लियइ ॥ सिवभूतनी परिइ ॥ परिजुन्ना ॥ दरिद्र थकी दीक्षा लियइ ॥

मेहुण परिग्गहवेरमणे इरियासमिती भासासमिती एसणासमिती आयाणभंडपास
वणखेलसिंघाणगपारिट्ठावणियासमिती दसविहा असमाही पं० तं० पाणातिवाते जा
व परिग्गहे इरियाअसमिती जाव उच्चारपासवणखेलसिंघाणगपारिट्ठावणितासमिती द
सविहा पव्वज्जा पं० तं० छंदा रोसा परिजुन्ना सुविणा पडिस्सुया चेव सारणिता रोगि
णिया अणाढिया देवसंपन्नता वच्छाणुबंधिता दसविहे समणधम्मे पं० तं० खंती मोत्ती
अज्जवे मद्दवे लाघवे सच्चे संजमे तवे चियाते बंभचेरवासे दसविहे वेयावच्चे पं० तं०
आयरियवेयावच्चे उवज्झायवेयावच्चे थेरवेयावच्चे तवस्सिवे० गिलाणवे० सेहवे० कुलवे० ग
णवे० संघवेयावच्चे साहम्मितवेयावच्चे काष्ठहारकनी परिइं ॥ सुविणा ॥ सोहणुं देषवा थकी दीक्षा ल्यइ ॥
पुष्पचूलानी परिइं ॥ पडिस्सुया ॥ सांभलवा थकी दीक्षा लइ ॥ जिम सालिभद्रनी प्रतिज्ञा सांभलीनइं लीधी ॥ सारणिया ॥ सं
भारवा थकी दीक्षा लीइ ॥ जिम मल्लिनाथिइं प्रतिबुद्धि आदिनइं पूर्वभव संभारी दीक्षा दीधी ॥ रोगणीया ॥ रोगथकी दीक्षा ल्य
इ सनतकुमारनी परिइं ॥ अणाढीया ॥ अणादर थकी दीक्षा लीइ ॥ नंदिषेणनी परिइं वसुदेवना भवथी ॥ अथवा अनादर ॥ धृति व
कीकणामरण तउ दीक्षा लीइ ॥ देवसन्नती ॥ देवतानइं प्रतिबोधइं दीक्षा लीइ मेतार्यनी परिइ ॥ वच्छाणुबंधिया ॥ पुत्रना
स्नेहथकी ल्यइ ॥ वैरस्वामीनी मातानी परिइं ॥ विषाए ॥ दानधर्म ॥ वेयावच्च ॥ अनुकंपा आदिक नउ उपकार ॥ साहम्मिय वे ॥ समान धर्म विवरइ तिन्ह साधर्मिक साधु ॥

परिणामवुं तपरिणाम अर्थांतरनइं विषइपुहुचइ सर्वथावस्तुनो विणासनहीं ॥ जिमकसकालगन्ह लीधेलाधाइ ॥ त
द्रव्यनयनइं मतिइं तपरिणामकहीइ तथा पर्यायनयनइ मकहइ । पछितातावदातातत्ज्जाइ ॥ तत्सावुनउदो तउ तिआ
वइ । तपरिणाम कहाइ ॥ गतिपरिणाम० गतिनामकर्मनाउदयथकी । नारकादिकनी गतिनाचयलगिइ गतिपरिणाम
कहीइ ॥ गतिपरिणामछतिइं इंद्रियपरिणाम हुइ ॥ तिसलो इंद्रीयपरिणामकहइछइ ॥ श्रवणादि पांचलि रिइं ॥ इंद्रिय
परिणाम छतिइं इष्टानिष्ट विषयनाराग द्वेषथकी कषाय हुइ ॥ तिसलो कषाय परिणामुख्यारितदिइं ॥ कषायपरि
णामछतिइं लेस्यापरिणामहुइ ॥ पणिलेस्यापरिणामछतइं कषायपरिणाम हुइ इम नहीं ॥ यत्लीणोपस्वीणक
षाइनइं सुक्लू लेसानउपरिणाम । देसऊणपुर्वीकोडिहुइ ॥ मुहूर्तवं उहला ॥ उक्कोसा ॥ तसलो कषायपछइ ल
परिणाम कहिउ ॥ तहस्सादि यालस्यातायोगपरिणामछतइं हुइ ॥ यसलो निरूद्ध परिणाम नइं लेस्या न हुइ ॥ म

दसविहे जीवपरिणामे पं० तं० गतिपरिणामे इंदिपरिणामे कसायपरिणामे लेसा
जोग उवउ णाण दंसण चरित्त वेतपरिणामे दसविहे अजीवपरिणामे पं० बं
धपरिणामे ॥ग॥

मुक्तिन्ना क्रियाध्यानातस्यारहितछइ । तसलो लेस्या पछी योगमनादित्रिणि लिदिइं ॥ संसारीनइं योगपरिणामछ
तिइं उपयोगपरिणाम हुइ । तसलो योगपछी उपयोग । तेसाकार अणाकार बिहुं लिदिइं ॥ उपयोग परिणाम
छतइं ज्ञानपरिणाम हुइ तसलो ज्ञानपरिणाम कहिउं ॥ तिमत्यादि ५ लिदिइं ॥ मध्यादृष्टीनीजिम तिअज्ञानआ
दि ३ अज्ञानात समुच्चयइ ज्ञाननइ अविवइ माहिं उआस्या ॥ ज्ञान अज्ञानछतइं जि दर्शनपरिणाम हुइ । तसलोप
छइ दर्शनपरिणाम । तेसम्यक्त मिथ्या वमिश्र त्रिहुलिदिइं । सम्यक्तछतइ चारित्रपरिणाम हुइ । तसलो पछइं चा
रित्रपरिणाम ॥ स्त्री आदि वेदछतइं चारित्रपरिणाम हुइ ॥ पणिचारित्रछतइं वेदपरिणाम माहोइ इमनह । जेतलोप
यथाख्यातचारित्री उअवेदी हुइ ॥ तसलो चारित्रपछी वेदपरिणाम ॥ तस्त्री आदि त्रिणि लिदिइ ॥ अजीवपुजलनो
परिणाम ॥ बंधनउपरिणाम तपुजलनुमाहोमाहिं मिलवु तेसमीधस्वी गटइ गुणाइ ॥ बिपरमाणुयादिनइ बंधन हुइ ॥
एगुणचोपडपणइ सरीषा ॥ इम बिबिगुणोआदिनइ बंधन नहीं ॥ इमलुखागुणसरीषइ पणि बंध नही ॥ २४३

विषमपणाइ बंध हुइ ॥ एकपरमाणुएकगुणचीगटो ॥ बीजो त्रिणिगुणचीगटो तबेहुनइ बंध हुइ ॥ इम बिहुगुणोत्व
डतइ मिलइ । पणिएकगुणवडतइं पणि न मिलइं ॥ इम लुखा लुखासंघातइ बिगुणवडतइ मिलइ । एकगुणचोपडो
अनइ एकगुणलुखो न मिलइ । तएकउघन्स गोचा टलइं । बीजा लुखा चोपडा सम विषमसर्व मिलइ ॥ गतिपरिणाम
बिहुलिदिइं ॥ फरसतीगति । अणफरसतीगति ॥ जिहां पक्षेत्रनाप्रदेसनइ फरसतोजाइ तिफरसतीगति ॥ अण
फरसतोजाइ ते अणफरसतीगति । जिमप्रासादउपरिथी पाडीलोहनो गोल्यो ते समय मात्रइ दिवाना
आंतरा विना हेठो पडइ ३ । तस्पर्शतीगति ॥ अनइं जिदेसांतरिया ल्या तवचि २ २ हि तव २ तिहां कालांतरइ पहु
ता तेअणफरसतीगति । अथवागतिपरिणाम बिहुलिदिइं दीहबीटकी ॥ संस्थानपरिणाम तपरिमंडल ॥
वाटलु । त्रंस । चउरंस ॥ लांबु । एपंचविधिइं ॥ भेदपरिणाम पंचविध ॥ खंडभेदतस्माटीनउ थोदो ॥ प्रतरभेद तेअ
तपडलतेआसलो प्रथवीकायातहुनी परिइं ॥ अनुतटभेद तेवंसनी परिइं ॥ चुर्णभेद तेवस्तुनुं चुर्णकरवुं ते

गतिसंठाणे भेद वन्न रस गंध फास अगुरुलहु सद्दपरिणामे दसविहे अंत
लिक्खिते असज्झाइए पं० तं०

कोतरनी परिइं ॥ उक्करिकाभेद तेवस्तुनुं ऊकेरवुं तमापलादिकनुं कोरवुं । पाडआदिनुं काकरिवुं ॥ वर्णपरिणाम
ते पांचविधि कृस्नादि ॥ गंधपरिणाम द्विविध ॥ रसपरिणाम पांचविधि ॥ स्पर्शपरिणाम अष्टविधि ॥ गुरु ते अ
धोगमनस्वभाव ॥ लघु ते ऊर्द्ध गमनस्वभाव । एहबुं पछइ जनही तेअगुरुलघु ॥ असं तसुक्ष्म ॥ भाषामनःकर्मनि
द्रव्य आदि तेअगुरुलघुपरिणाम एहनइं पछिवइं एहनउ विपक्ष ॥ गुरुलघुद्रव्य पणिजाणिवुं ॥ तेऔदारिकादि अ
निस्थुल ॥ २ ॥ एनिश्चयनयनइं मतिइं बिहु लिद ॥ अगुरुलघु ॥ १ गुरुलघु ॥ २ ॥ व्यवहारनय मइं मतिइं ४ लिद ॥ गुरु ते अ
धोगति ॥ स्वभाववज्रादि ॥ लघु ते ऊर्द्धगति स्वभावधुमादि ॥ २ ॥ गुरुघे लघु ते तिर्यग्गामी वायुअ मइं यातिझ विमा
न आदि १ अगुरुलघु ते आकाश आदि ४ ॥ निश्चयनयनइं मतइं सर्वगुरु नइ सर्वलघुद्रव्य नथी ॥ बालिदकइ ॥ बादरल
घु । समपइ मातेअगुरुलघुं ॥ व्यवहारनयनइं मतिइं च्यारलिद गुरु ते टलीकं ॥ लघु ते दीवो ॥ २ ॥ गुरुलघु ते [illegible]
वाय ॥ ३ ॥

MEMORIAL

अगुरुलघुतआकाश ॥३॥४॥ सद्दपरिणामतसुसाससुसबिकुलादि ॥ अजीवपरिणामना अधिकार थकी पुद्गल लक्षण अजीवपरिणाम हइकरी असझाई तुस्वरूप कहइछइ ॥ अंतलिखि ए० आकासनी रूपनी, पंचविध ॥ वाचना दि सझाय न उ अनावाच्य हइ नइं विषइ ॥ असझाइ ॥ उल्कापात तेआकासथी रूपनउ ॥ रेखा सहित अनइ प्रकाससहित तउ हतुं पडवुं ॥ एकदिसिनइं विषइ महानगरनाप लेवणा सरीषउ उद्योत ते सिं अग्नि लागो, आकासतलइ लागइ ते दिसिदाह ॥ गाजितम घनउ सब्द ॥ वीजु ॥ वीजली ॥ निर्घात ते आसलौ गुलतइ अथवा अंबतइ, आकास नइं विषइ व्यंतरनउ कीधो ॥ महा गाजरव सब्द कांटिको ॥ जूवए० संध्यानी प्रभा अनइ चंद्रमानी प्रभासमकालि हुइ ॥ तिहां चंद्र मानी प्रभाइं ढांकी संध्या जाणी न जाणीइ ॥ अथवा सुक्लपक्षना पडवादि त्रिणि दिन लगइं संध्यानउछेद अणजांणी तइं काल वेला न जाणीइ, ते सलो त्रिणि दिन पाउसी कालमय हइ ॥ जिहां कालकसुत्रनो असझाय जिणकालि ते ॥ आकासिं अग्न्यादि थालउ ॥ धुंमिया ॥ तेधुयरि काली ॥ महिता ॥ धुयरि ऊजली ॥ रजोघाती ॥ असझाईमा अधिकार थकी वली कहइछइ ॥ ऊरा

उक्कावाते दिसिदाहे गज्जिते विज्जुते निग्घाते जूवाते जक्खालित्ते धूमिता महिता रजुग्घाते दसविहे उरालिते असज्झातिते पं ते अट्ठिमंसे सोणिते असुति सामंते सुसाणसामंते

लित ॥ उदारिक मनुष्य तिर्यंचना सरीरनी असझाई ॥ हाड मांस नइं लोही ॥ ग्रंथांतरइं वांमडानी असझाई कही छइ ॥ तिहां पंचेंद्री तिर्यंचनी असझाई ते हाड मांस लोही नइं वांबडु ॥ क्षेत्र थकी साठि हाथमांहिं ॥ काल थकी मांसाहि पड्यानी वेला थकी त्रिणि पुहुर लगिइं असझाई ॥ मार्जारादिकइ मुषिकादि मारिइं अहोरात्रि असझाई ॥ भावथकी नंदी आदि सर्व सुत्र न भणाइं ॥ मनुष्यनी असझाई पणि इमज नवरं क्षेत्र थकी सोहाथमांहिं ॥ कालथकी अहोरात्रि लगिइं ॥ स्त्री धर्मिणी त्रिणि दिन लगिइं ॥ स्त्रीजन्मनी आठ दिन लगिइं ॥ पुरुषजन्मनो सात दिन लगिइं ॥ हाड जीवथकी अलगा थया नउदिन पछी बार वरस लगिइं असझाई ॥ सोहाथमांहि ॥ चिहिमांहि बल्यो हुइ तउ ॥ पाणीइं ताणी आण्यो हुइ तो असझाई नहीं ॥ अनइ भुमिमांहि दाटानी असझाई ॥ असुचि ते मुत्र विष्टादि तेह जां दीसइ तां सगली असझाई ॥ कालग्रहणवेला लगि ही ॥ विष्टा मुत्र नी नाकिं गंधि आवइ तां लगिइं दृष्टिइं दीसइ तिहां कालग्रहण न सुझइ ॥ सुसानसामंत ॥ सोहाथानकनी असझाई ॥

चंद्रोपराग० चंद्रमाग्रहणनी सुर्योपरागग्रहणनी ॥ इहां उदारिकपणुं तेहनी विमानना पृथवीकायनी अपेक्षाइं जाणवुं ॥ पुर्वइं आकास विषइनी असझाई कही ॥ तिहां ग्रहणनी असझाई आवइ ॥ पणि ते मांहि एन कही ॥ इहां उदारिकनी असझाई मांहिं कही ॥ पडणे० अधिकारी नुं मरण तइं सझाय न कीजइ ॥ मुया पछी निर्भय थयुं तउ दिने अहोरात्रिइं लगि सझाय वर्जइ ॥ ग्राममांहिं वाडाना अथवा कुटुंबनो धणी ॥ अथवा सेज्यातर सामान्य घरमांहि मुइं आहो लोगी रात्रि लगि सझाय वर्जइ ॥ अ थवा मांहि उइ मो उइ भणइ तो लोकनिंदा टालवा सणगा टइ न भणइं ॥ रायवुग्गह० राजानउ विग्रह हवतइ ॥ उप लक्षणथी अनेरा गाम रदेरानांगडा ॥ स्त्री पुरुषनां कलह ॥ मलजोड एइं असझाई ॥ होलीइं ऊडाडइ तो डाबोलइ तो लगणी असझाई ॥ इहां व्यंतर घणा हुइ ॥ प्रमादीनइं छलइं ॥ तथा उपाश्रयमांहिं उदारिके सरीर मनुष्यादिकनुं पडि उं हुइ ते जां विणवर्जइ तउ हाथ १०० मांहिं असझाई ॥ न विणाणी वर्जइ हुइ तो ही उझित पणमांटइ हाथ मावर्जवी

चंदोवराते सूरोवराते पडणे रायवुग्गहे उवसयस्स अंतो उरालिते सरीरगे पंचिंदिया णं जीवा णं असमारभमाणस्स दसविहे संजमे कज्जति तं सोतामतातो सोक्खाउ अववरोवित्ता भवति सोतामतेणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति एवं जाव फासामतेणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवति एवं असंजमेवि भाणितव्वो दससुहुमा पं तं पाणसुहुमे पणगसुहुमे जाव सिणेहसुहुमे गणियसुहुमे भंगसुहुमे ते० परिहवइ थकइ, ध्यान सुधि थाइ ॥ अ नंतर पंचेंद्रीना सरीरनी असझाई कही ॥ हिवइ पंचेंद्री आश्री संयम असंयम कहइछइ ॥ संयम असंयम जीवनइं हुइ ते सुक्षम जीवनुं सुत्र ॥ प्राणसुक्षम ते अनुधरी कुंथु ॥ पणगसुक्षम ते फुलि ॥ जावमांहि बीजसुक्षम ते सालादिकनां नहा ॥ हरी सुक्षम ते तुइ सरीषइं वर्णिइं हरणा ॥ फुलसुक्षम ते वडनां फुल ॥ अंडसुक्षम ते कीडी आदिक ॥ लयनसुक्षम ते कीडीनगरा दिक ॥ स्नेहसुक्षम ते वारादिक ॥ एआठ मइं गणाइं कह्यां छइं ॥ गणितसुक्षम ते संकलितादि ते सुक्षमबुद्धिइं जाणीइ ॥ तेस णी सुक्षम कहीइ ॥ भंगसुक्षम ते वस्तुना विकल्प ते विकल्पादिइं ॥ स्थानांगक अनइ क्रमभंगक ॥ तिहां क्रमभंगक ते यथा ॥ एक द्रव्य थकी पणि भावनहीं ॥ एक भावथकी हिंसा पणि द्रव्यथी नहीं ॥२॥ एक भावथकी अनइं द्रव्य थकी ॥३॥ एक नाव

घीइनही॥ अनइ इअघको इनही॥४॥ ऊम नगयवा॰ इअघको हिंसा नइ नावघको हिंसा॥१॥ इघको हिंसा अनइ नावघ
कोनही॥२॥ एक इअघको नही मइ नावघको॥३॥ अनेरीइ अघघोनही नइ नाइ वघको नही॥४॥ एहवुं सुख्मपणुं पदफे
रवतो गहिं नमाटइ॰ सुक्ष्मबुद्धि जाणाइ॥ पुर्वे गणि तसुक्ष्मकहि ऊं॥ तिगणितत उज्वात्र नोकुं इ॥ तेनरणीहो अमउअधि
कारकहइ छइ॥ समप्पेंति॰॥ धुरिलीयं वातगंगा माहिंजाइ५ ऊपलीयां वात सिंधुमाहिंजाइ॥ इमरत्ता नुंसुत्रपणि जाणवुं॥
जंबु मंदर दाहिणेणं गंगा सिंधु महा नदीउ दस महानईउ समप्पेंति तं' जउणा १ सरऊ २ आ
सी ३ कोसी ४ मही ५ सतद्रु ६ वितच्छा विभासा ८ एरावती ९ चंदभागा १० जंबु मंदर उत्तरेणं र
त्तारत्तवती महानईउ दस महानईउ समप्पेंति तं किन्हा महाकिन्हा नीला महानीला तीरा महा
तीरा इंदा जाव महाभोगा जंबुद्दीवे २ भारहेवासे दस रायहाणीउ चंपा महुरा वाणारसी य
सावच्छी तह य साकेतं हत्थिणाउरं कंपिल्लं मिहिला कोसंबिय रायगिहं ११ एयासु णं दस सुराय
हाणीसु दस रायाणो मुंडा भवित्ता जाव पव्वतिता भरहे सगर मघवं सणंकुमारो संती कुंथु अर महा
पउमे हरिसेणे जयनामे मसवाडामाहि विचार २१३ आ वइतो हिआणिनोलेगाथाइ॥ एदसनगरी दस थाणामाटे
इकही॥ अन्यथा साढा पंचवीसदेसनी बावीसनगरी थाइ॥ एसं बहुप्राय छितग्रंथना विचारनइ विषइ प्रसिद्ध छइ। तिसोण
दस राजअनोग्रहितो॥ अनेरीप णिग्रहीजा णावी॥ तिसोघ ताप्पमाहिं धणाइ मकहि ऊछइ॥ नगरमाहि जातां दोष॥ तेकणी
स्त्री विवाह राजादिकादेषी पुर्वला सांभरइ॥ वाजित्र गीतना सबद सांभली मन विकार पामइ॥ एपु विछिनगरीनइ विषइ॥ द
माहिली अनेरी नगरीइ चक्रवर्त्ति राजाइं दीक्षा लीधी॥ भरत १ सगर २ साकेत नगरि तेहनुं नाम विनीता अयोध्या पणि
कहीइ॥ तिहां प्रव्रज्या॥ मघवा सावत्थीइ॥ सनत्कुमारादि ४ हस्तिनागपुरि॥ महापद्म वाणारसीइ॥ हरिषेण कंपिल्लइ॥
जयराजगृहीइ॥ सुत्रमाहि नगरीनां नाम चक्रीनाम अनुक्रमिइं न जोडवां॥ यथासंभवइ जोडवां॥ तिहीघना प्पनइ अलि
प्राइंतेउ॥ एदसनगरीमाहिं नवनगरीइ एकक चक्री ऊपनउ॥ अनेइ एकीइ त्रिणि ऊपना शांति कुंथु॥ अर ए त्रिणि एकइ नगरीइ ऊपना॥

छीणा पुरंतिनागपुर कुरुदेसइ॥ कंपिल्लपंचालि इ मिथला विदेहि इ कोसंबी वछि इ॥ राजग्रह मगधि इ॥ नगरी नइ विषइ जे असरपे णिइं साधु नपइसइ तिनरुणा स्त्री २ मलाकावधणानारूप देषी मन चलइ॥

जावमांहिं इद्धासणावीसिणाला णावी॥ राजा तहनइ विषइ अतिघइ कीइ ताराजधानी दसमाहि प्रथम नगरी॥ चंपा अंगदेसि इ॥ मथुरा सुरासेनइ॥ वाणारसी कासीदसमाहि॥ सावच्छी कुणालाइ॥ साकेत नतआयोध्या कासलादेसिइ

मकपर्वति॥ उवेहणं॥ भुंइमाहिं ऊंडो॥ विरकंभं॰ पुहुलपणइ ऊपरि॥ पंडकवनिइं दस सहस्र॥ एक सहस्र॰ दसदसाइं॥
घ॥ पणीपरिदसक इंग्रहणकीधुं॥ तिदस थाणामा वइ॥ सव्वग्गेणं॰॥ सर्व प्रमाणाइं॥ उवरिमाह ठिल्लेसु॰ उपल्लउ॥
हेठल्लउ॰ खुड॰ सर्वमाहिं नाहाना॥ अंग॰॥ आठ प्रदेसनउ च्यार प्रदेस॥ तिगाइना आचलनइ आकारिइं॥ हेठिला
४ पणि तिमज॥ ईमा अत्र आगलिक होइ छइ॥ च्यारि दिशि ति बि प्रादेस। तिधुरि थी मंडाइ अनइ बिकुर प्रदेसिइं वा
धता जाइ॥ गाडला नी ऊधीनइ आकारिइं॥ विदिसि थी इंइ एकइ प्रदेस थी। धुर मंडाइ। आगा लि वधई को ईनहीं॥ मुक्तावली
जंबुद्दीवे २ मंदरे पव्वए दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं धरणितले दस जोयणसहस्साइं वि
क्खंभेणं उवरिं दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं दस दसाइं जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पं
जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागे इमीसे रयणप्पभाते पुढवीते उवरिमहे
ट्ठिल्लेसु खुड्डगपतरेसु एत्थ णं अट्ठपाते सिति रुयगे पं जउणिमाउ दस दिसाउ प
वहंति तं पुरच्छिमा १ पुरच्छिमदाहिणा २ दाहिणा ३ दाहिणपच्चच्छिमा ४ पच्चच्छिमा ५ पच्चच्छि
म उत्तरा ६ उत्तरा उत्तरपुरच्छिमा ८ उड्ढा ९ अहा १० एतासि णं दसण्हं दिसाणं दस णामधेज्जा
पं तं इंदा अग्गेयी जम्मा नेरती वारुणी य वायव्वा सोमा ईसाणा विया विमला य तमा य
बोधव्वा ११ लवणस्स णं समुद्दस्स दस जोयणसहस्साइं गोतित्थविरहिते खेत्ते पं लवणस्स णं स
मुद्दस्स दस जोयणसहस्साइं उदगमाले पं ला त्त सरांघा॥ उर्द्ध अधो दिसि च्यार प्रादेस थी मंडाइ वधइ कोई न
ही॥ प वहंति॰ ऊपजइ॥ इंदा॥ इंद्रदेवता जेहनउ धणी तेइंद्रा पुर्व॥ इम आग्नि॰ आग्नेयादि॥ विमला॰ अंधकार र
हिता तपुर्व दिसि॥ तमा तिअंधकार सहित अधोदिसिं॰ गायनुं यतीर्थ॥ तेला आमां हिं ऊतरी इ॥ उतरतीर स्तंभित गा
तीर्थ॥ विरहीयं॥ तेह वारहित। तिसमतल खेत्र तिपं वारु उजोयण सहस्र नुं गोतीर्थ विकुगमानुं मुंकीनइ विचालुं
त्र॥ उदगमालो॰ पाणीनी सिषा वेलिइं स्पर्ध॥ दस सहस्र जोयण नी पोहोली १६०० जोयणनी ऊंवी॥ समुद्रवंचि इ थी ऊंची

माहापाय। ला०॥ कलसा॥ वलला मुख॥ १॥ केउ २ सुपक ३ ईश्वर ४ नामइं वडवाणाइं कह्या॥ ते महासमुद्रनी तिनां नाल
सांनिध धवानइं॥ दसदसाइं०॥ लाष जोयण॥ उव्वेह०॥ ऊंडा॥ मुलइ दससहस्र जोयणना पाहोला॥ मुलना पुहुलप
णा थकी एकेक प्रदेसि वाधती एक प्रदेसनी श्रेणि तेणाइं करी पुहुलाइं लाष जोयणनो पोहोलो॥ हणाइं करी प्रदेस वृद्धि
दृष्टाडी अथवा एकप्रदेसनी श्रेणिइं॥ लाष जोयणना पुहुलाव चे॥ ते ऊपरो नि उपरि हे विला प्रदेसनो प्रतर। एकेके
सव्वेवि णं महापायाला दस दसाइं जोयणसहस्साइं उव्वेहेणं पन्नत्ता मुले दस जोयण
सहस्साइं विखंभेणं पन्नत्ता बहुमज्झदेसभागे एगपएसियाए सेढीए दस दसाइं जोयण
सहस्साइं विखंभेणं पन्नत्ता उवरिं मुहमूले दस जोयणसहस्साइं विखंभेणं पन्नत्ता तेसि
णं महापायालाणं कुड्डा सव्ववइरामया सव्वत्थ समा दस जोयणसयाइं बाहल्लेणं पन्न
त्ता सव्वेवि णं खुड्डापायाला दस जोयणसताइं उव्वेहेणं पं। मुले दस दसाइं जोयणाइं
विखंभेणं पन्नत्ता बहुमज्झदेसभागे एगपएसियाए सेढीए दस जोयणसताइं विखंभेणं
पं। उवरिं मुहमूले दस दसाइं जोयणाइं विखंभेणं पं। तेसि णं खुड्डापायालाणं कुड्डा
सव्ववइरामता सव्वत्थ समा दस जोयणाइं बाहल्लेणं पन्नत्ता धायइसंडगा णं मंदरा दस
जोयणसयाइं उव्वेहेणं धरणितले देसुणाइं दस जोयणसहस्साइं विखंभेणं उवरि
दस जोयणसयाइं विखंभेणं पं। पुक्खरवरदीवड्ढगा णं मंदरा दस जोयण एवं चेव।
उप्रदेसघटइ॥ उवरिं०॥ उपरि॥ मुहमुले०॥ मुषप्रदेसिइं॥ कुडु०॥ भीति सर्ववज्रमइ॥ सव्वेवि०॥ सघलाइं॥ अवसर्पिसइं वो
नानी॥ खुड्डा०॥ मोटा नींचि पाताल॥ उव्वेह०॥ ऊंडपणाइं॥ मध्यपुहुलपणाइ॥ एकसहस्र मुषमुलइं॥ एक सो जोयण
नो ऊंचा॥ ते करी दस जोयणनी जाडी॥ धातुकीषंडना मेरु २ ते सरीषी सहस्र जोयण ऊंचा॥ २४६

रुचकि॥ हिमवंत मइं विषइ प्रमत्ताव तो। ऐरवर्षे तेनइ विषइ ५ दिकवायती॥ हरिवर्ष ५ गंधमवता॥ रंमक ५ मालवंत वृत्तवैताढ्य
मं० ला० विताढ्य॥ वाटलावैताढ्य हरणकी धुत दीर्घनिषध वानइं॥ अंजनगिरी ते ४॥ तेनेदीश्वरना॥ दधिमुख तेअंजनगि
रिना विकुमासा नी पुष्करणी १६ मां हिली १६ रतिकर नंदीश्वरना॥ वड वाणाइं कह्या ते रुचकपर्वत ते रमाही पर्व॥ कुंडलपर्व
सव्वेवि णं वट्टवेयड्ढपव्वया दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं सव्वत्थ स
मा पल्लगसंठिया दस जोयणसयाइं विखंभेणं पन्नत्ता जंबुद्दीवे २ दस खेत्ता पं। तं भरहे एर
वए हेमवए हेरन्नवए हरिवासे रम्मगवासे पुव्वविदेहे अवरविदेहे देवकुरा उत्तरकुरा
माणुसुत्तरे णं पव्वते मुले दस बावीसे जोयणसते विखंभेणं पं। सव्वेवि णं अंजणगपव्वया दस
दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं मुले दस जोयणसहस्साइं विखंभेणं उवरिं दस जोयणसताइं विखंभेण
णं सव्वेवि णं दहिमुहपव्वता दस जोयणसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं दस गाउयसताइं उव्वेहेणं सव्वत्थ समा
पल्लगसंठिता दस जोयणसहस्साइं विखंभेणं पं। सव्वेवि णं रतिकरगपव्वता दस जोयणसयाइं
उड्ढं उच्चत्तेणं दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं सव्वत्थ समा झल्लरिसंठिया दस जोयणसहस्साइं विखं
भेणं पं। रुयगवरे णं पव्वते दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं मुले दस जोयणसहस्साइं विखंभेणं
उवरिं दस जोयणसयाइं विखंभेणं पं। एवं कुंडलवरेवि दस विहे दवियाणुओगे पं। तं
रुचकवालात कुंडलनामइं इग्यारमा द्वीपनउ॥ इहां कुंडलपर्वतनउ ऊंडउ॥ मुलइं॥ पुहुलो ऊपरि पुहुलो॥ रुचकसरीषो कह्यो॥
द्वीपसागर प्रज्ञप्तीमांहि इम कहिउं छइ। ए दससहस्र बावीस जोयणनो पोहोलो॥ अनइ ४ च्यारसइ २४ ... ऊपरि पुहुलो
॥ रुचकानइ दससहस्र नइं बावीस जोयण॥ मुलि०॥ पुहुलो॥ च्यार सहस्र च्यालीस जोयण ऊपरि पुहुलु॥ अनंतर गणितानुयो
गकहिउं॥ द्रवियाणुयोग॥ सूत्रनुं अर्थ संघातनुं मलवु॥ ते सूत्र मिलता अर्थनुं करवुं पणि विरुद्ध पहिलो॥ अनुयोग ते अर्थ

नुं करवुं ते विकुर्वित दिइं॥ करणानुयोग॥ द्रव्यानुयोग॥ गणितानुयोग॥ तिहां द्रव्य। जीवादि नउ॥ अनुयोग॥ विचार
तद्व्यानुयोग दस लहइ॥ जीवद्रव्य विचारइ॥ तद्रव्यानुयोग॥१॥ मातृ॰॥ जिम मातानइ माहिं सिद्धांतनी उत्पत्ति करणा त
त्रिणि बोल॥ उत्पन्न पदवा। विगत्वा २ ध्रुव ३ एहवा बोलनुं विचारवुं॥३॥ एगट्ठियाणु॰॥ एक अर्थनुं विचारवुं॥ जिम एक जी
व ना घणा नाम॥ प्राणभूत सत्त्व जीव नइ कहीइ॥४॥ करणाणु॰॥ जिम इकरी नइं कार्य कीजइं काल। स्वभाव नियति। पूर्वकर्म पुरुषा
कार॥ ए विना एकलो जीव कांइ करवा समर्थ नहीं॥ जिम कुंभार चक्र चीवर दंड आदि विना घडो करवा समर्थ नहीं॥ तिम काला
दि तणी वनइं कार्य करतां सहाय्यकारी छइ॥ अप्पि॰॥ अर्पित विशेष द्रव्य जीव द्रव्य॥ तवली संसारी तवली त्रस॥ त
वली पंचेंद्री॥ तवली मनुष्य॥ अनर्पित तत सामान्य जिम जीवद्रव्य ५॥ भाविता भावित॰॥ संसर्ग विकाइद्रव्य वास्यो॥
अनइ अनभावास्यत्॥ जिम जीव समकित विराग इं वास्यो तत्र सस्तवो सित॥ अनइ अप्रसस्त तिसं भासरं गइ वासिउ॥

द्वियाणुओगे। माउयाणुओगे। एगट्ठियाणुओगे। करणाणुओगे। अप्पियाणप्पिते। भाविताभावि
ते। बाहिराबाहिरे। सासयासासते। तहणाणे। अतहणाणे। चमरस्स णं असुरिंदस्स अ
सुरकुमाररन्नो तिगिछिकूडे उप्पातपव्वते मूले दसबावीसे जोयणसते विक्खंभेणं। पं

तुं डीसंगति इं तुं अस लागुण न वसरइं॥ अणवासिउ तिकिह्रा संगति मलीनथी॥ अघवा संगति मलीप णि वज्रनावा भानी
परि इं तह नइ वासाना सकाइ॥ इम घडादिक द्रव्य पणि जाणिवउ॥६॥ बाहिराबाहिर॰॥ जीवद्रव्य नइ बाहिर ते अप्रगट न
घी आकाशनी परिं॥ अभितर ते कषाय॥ अरूपी स्वरूपनुं विचारवुं॥७॥ सासयासासए॰॥ जीवद्रव्य अनादि अनंत पणा
थकी शाश्वत तनुस्वरूप अनेरा अनेरा पर्याय नइ पलटावइ॥ अशाश्वत॥८॥ तहनाण॰॥ यमकइ तिम वस्तुनइ जाणवुं तथा ज्ञान
सम्यक्त्वी नुं जाणवइ॥९॥ मिथ्यात्वीनुं ज्ञान विकल्प तइनुं विचारवुं॥१०॥ ए दस अनुयोग कहइं छइं॥
तिगिछिकूड॰॥ ॥ चमरेंद्र वली तिर्छा लोक आवइ ते उत्पात पर्वत नाम॥ तिगिछिकूड नाम॥ तिहां थी अरुणवर द्वीप अरुणवर समुद्र
तथा वीस सहस्र द्वीप समुद्र थकी दक्षिण॥ असंख्याता द्वीपसमुद्र उल्लंघीनइ जातां अरुणवर द्वीप अरुणवर समुद्र आवइ॥
तिहां बि ४२००० जोयण गया पछी छइ। तिहनुं प्रमाण १७२१ जोयण ऊंचो॥ १०२२ जोयण मूलि पोहलो॥ ४२४ जोयण उपरि
लउ ४२४ जोयण शिखरि पोहलो छइ॥ ...

दावेंद्र सं॰॥ चमरेंद्र ना सोम नामा लोकपाल नो॥ सोमप्रभ नामा उत्पात पर्वत। अरुणोद समुद्र मांहि छइ॥ इम चमरेंद्र ना यम वरु
ण। वैश्रमण नुं सूत्र जाणिवो॥ अनइं बलेंद्र नउ रुचकेंद्र उत्पात पर्वत॥ अरुणोद समुद्र मांहि छइ॥ बलेंद्र ना उत्पात पर्वत नुं प्रमाण चमरेंद्र नउ उत्पात पर्वत नी परि जाणवुं॥ विशेष उत्तर दिसि छइ॥ जिम चमरेंद्र लोकपाल ना उत्पात पर्वत
ना सूत्र कह्या॥ तिम बलेंद्र ना लोकपाल ना पर्वत तिम कहिवा॥ अनइं धरणेंद्र नउ उत्पात पर्वत पणि अरुण
द समुद्र इं जि विषइ छइ॥ धरणेंद्र ना प्रथम लोकपाल ना सूत्र नइ विषइ। एवं तेव कही नइ लोकवुं छइ॥ ते दस गाउ सयाइं ओवेह

चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सोमस्स महारन्नो सोमप्पभे उप्पातपव्वते दसजोयणस
याइं उड्ढं उच्चत्तेणं दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं मूले दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं। पं चमरस्स णं
असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो जमस्स महारन्नो जमप्पभे उप्पातपव्वते एवं चेव एवं वरुणस्स वि एवं
वेसमणस्स वि। बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो रुयगिंदे उप्पायपव्वते मूले दस
बावीसे जोयणसते विक्खंभेणं पं। बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स सोमस्स एवं चेव जहा चमरस्स लोग
पालाणं तं चेव बलिस्स वि। धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्नो धरणप्पभे उप्पायपव्वते दसजो
यणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं दसगाउयसयाइं उव्वेहेणं मूले दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पं। धरणस्स णं
णागकुमाररन्नो कालवालस्स णं महारन्नो महाकालप्पभे उप्पायपव्वते दसजोयणसयाइं उड्ढं एवं चेव एवं जाव संख
वालस्स एवं भूताणंदस्स वि एवं लोगपालाणं पि से जहा धरणस्स एवं जाव थणितकुमाराणं सलोगपा
लाणं भाणियव्वं सव्वेसिं उप्पायपव्वया भाणियव्वा सरिसनामगा। सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सक्कप्प

॥ रस॰॥ भूतानंद ना लोकपाल ना॥ उत्पात पर्वत॰ तथ धरणेंद्र ना लोकपाल नी परि जाणवा॥ अनइं नाम तेह तउ ताणइं अनुसारिइं
जाणवा॥ विद्युत्कुमार ना इंद्र आदि जाव माहिं घणिय कुमार नां इंद्र लगि इं॥ सलोकपाल॥ लोकपाल सहित तेह ना
उत्पात पर्वत पोताना इंद्र सरीषइ नामइं कहिवा॥ यम धरणा नउ धरण प्रभ जाति इहना पहिला लोकपाल नुं नाम कालवाल नउ
कालवाल प्रभ इम सघलइं॥ असुराणां॥ नागाणां॥ नदहीकुमाराणां॥ इति आवास॥ अरुणवरदीवा नउ॥ तिगिछि ते उत्पात पर
वा॥२॥

२७१

कुंडलवरद्वीपनइ विषइ ॥ कुंडलपर्वत नामा द्विल्ला गम्भा दृढ थांइ तास्तल राजधानी छइं ॥ तिहां च्यार २ राजधानी मध्यस्थ्य म ॥ लोचन प्रमाण वरुण प्रमुख विश्रम प्रमना मइं ॥ उत्पाद पर्वत साकं इनास्तो मादिक लोकपालना छइ ॥ एकेका लोकपालनइ च्यार २ राजधानी ॥ ६ भुईस्या नेंद नालाकपा लनी प्रमिण ॥ नवूरं ॥ उत्तरि इं ॥ जिमसक नातिम अस्तु तिहुना ॥ अनइं तिहनी लोकपालनी उत्पाद पर्वतिक ढवा ॥ च सूणी शरीरिषा जि प्रमाण छइ ॥ तप्रवृत्त ॥ नो गामग्रंथो त दिवाजा णिवो ॥ ॥ त्याज मसहस्र नाग्र धिकार थी की सहस्रजा जिननी अवगाहना नो सूत्र ॥ ३ ॥ बायराणं ॥ बादरनी

त्त उप्पातपव्वता दसजोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं दसगाउयसहस्सा उव्वेहेणं मुले दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पं सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो जहा सक्कस्स तहा सव्वेसिं लोगपालाणं परमाणुं इंदाणं जाव अच्चुयस्स ति सव्वेसिं पमाणमे णं बायरवणस्सतिकातिताणं उक्कोसेणं दसजोयणसयाइं सरीरोगाहणा पन्नत्ता जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिताणं उक्कोसेणं दसजोयणसताइं सरीरोगाहणा पं उरपरिसप्पथलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणिताणं उक्कोसेणं एवं चेव संभवाओ णं अरहाओ अभिनंदणे अरहा दससागरोवमकोडिसतसहस्सेहिं वीतिक्कंतेहिं समुप्पन्ने दसविहे अणंतते पं तं णामाणंतते ठवणाणंतते दव्वाणंतते गण

परिइं पणिसुक्ष्म नीनहीं ॥ उक्कोसेणं ॥ उत्कृष्टि पणि जघन्य नहीं ॥ सहस्रजोयण अवगाहना ते उत्सेधांगुलिइं पणि प्रमाणांगुलि नहीं ॥ अवगाहना ऊर्ध्वदेस नइ विषइ शरीर अवगाहीनइ छइ तेनहीं आदिकनइ विषइ पद्मनी नाल जाणवा ॥ जलचरा मच्छा ॥ गर्भजनइ समुर्छिम ॥ विकुर्वी सहस्र ॥ जो ॥ नी ॥ एसयंभुरमणनइ विषइ छइ ॥ उरपरिसर्प्प तिग र्भज साप जाणवा । एवाढीद्वीपन इ विषइ । जलमिश्रत जाणवा ॥ एवं चेव ॥ दससय इं जोयणनी अवगाहना ॥ ॥ एअर्थ जिनइ दीठा तेतलुं जिननुं सुत्र ॥ एअवगाहनाकहीतेह । अनइ अनेराई पदार्थ जिनइ अनंता दीठा ॥ तेसर्वं अनंतानुं स्वरूप कहीइ छइ ॥ नामाणं ॥ नामा अनंतक इति सविशेष अविरवस्तु अनंता एहवुं नाम दीजइ ते ॥ स्थापना अनंता ते अक्षादिकनइ ॥ एअनंतुं इम स्थापीइ ॥ द्रव्यानंतक जीवनइ पुद्गल

प्रदेसानंतक तआकासना अनंता प्रदेस ॥ एगाउणंतए ॥ एक अनीत काल अथवा अनागत काल ॥ दुहओणंतए ॥ ते सर्वकालीदेश विस्ताराणंतक ॥ एकआकास प्रतरउत्तर ॥ सर्वविस्तारानंतक ते सर्वआकास्तिकाय ॥ सास्वतानंतक ते अक्षयजीवादिद्रव्य ॥ एहवा अर्थ ते पूर्व माहि छइ ॥ ते सणं पूर्वनां सूत्र २ ॥ उत्पाद पूर्व ते पहिलुं ॥ तेहनी दसवस्तु ते अध्ययनविसेष ॥ अस्तिनास्तिपूर्व चउथुं ॥ तेहनी चूलावस्तु ॥ मुलवस्तु ऊपरि चूलिकारूप वस्तु ॥ पूर्वमाहि जिवस्तुनिर्यधी ते वस्तु साधु सवइ तिम दखाडइ छइ ॥ पडिस

णाणंतते पएसाणंतते एगओणंतते दुहताणंतते देसवित्थाराणंतए सव्ववित्थाराणंतए सासयाणंतते उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थु पं अत्थिणत्थिप्पवातपुव्वस्स णं दसचूलवत्थु पं दसविहा पडिसेवणा पं तं दप्पप्पमादऽणाभोगे आउरे आवतीसु य संकिते सहसक्कारे भयप्पओसा त वीमंसा ॥ १ ॥ दस आलोयणादोसा पं तं आकंपइत्ता अणुमाणइत्ता जं दिट्ठं बायरं च सुहुमं वा छन्नं सद्दाउलगं बहुजण

वणाण ॥ प्राणातिपातादिनुं सेववुं ॥ दर्प्प ते वल्गनादि ते चिन्हनउ उन्मादि विकलतां तेणइं करी सिद्धांतमाहिं निषेध्या प्राणातिपातादिकनुं सेववुं ॥ एम आगलि पणि जाणवुं ॥ प्रमाद ते मद विकथादि ॥ अनाभोग ते अयतन अजाणपणइं ॥ आतुर ते रोगइ पीड्या नइ अथवा क्षुधा तृषा व्याधइ पीड्या ते प्रतिसेवना करइ ॥ ४ ॥ आपदा आरात दिइं ॥ द्रव्यापदा ते प्रासुक द्रव्यनइं अलीस वइं ॥ क्षेत्र आपदा ते । अटव्यादि मार गिइं ॥ काल आपदा ते दुर्भिक्ष ॥ भाव आपदा ते ग्लानपणुं ॥ संकित ते सुद्धतानइ विषइ असुद्धतानी संका ॥ सहसाकार ते अकस्मात करिवुं । ते पहिलां कोई नदीठउं ॥ अनइं पगमुकतां दीठउं ॥ आवदीठो पणि पग मुकाइ गयो ते ॥ भय ते राजा चोरादिकनउ भय ॥ तेणइं करी दोष लगाडइ ॥ अथवा बीहता असत्य ती नइ मार गा देखाडइ । अथवा सिंहादिकथकी बीहतो वृक्ष ऊपरि चडइ ॥ पउसाय ॥ प्रद्वेष ते क्रोध थकी दोष लगाडइ ॥ वीमंसा ॥ सिष्यादिकनी परिक्षा निमित्ति ॥ १० ॥ दोष लगाडतां आलोवुं ॥ तेसणी आलोवाना दोष पतिदस वा कहइ छइ ॥ आकंपइत्ता ॥ आचार्यनइ कंपाव्या करइं आणाई मुंझनइ घोडुं प्रायश्चित आपइ एतलइ थोडुं तो आलोइ ॥ अणुमाणइत्ता ॥ अनुमान करइ । एहनइ उडुं दाति ते सीलो आवस्यइ ॥ थोडुं नइ उडुं आवनइ जाणइ तउ आलोइ ॥ जं दिट्ठं ॥ २ जदीठउं अगुरइ तेहज आलोइ ॥ ३ ॥ बादरं मोटा दोषकहइ ॥ सो सम सुखिदोषनइ कहइ ५ छन्नं ॥ कोई गुरुरबा सलइन हीतिम आलोइ ॥ ६ ॥ सद्दाउल ॥ ज्यादि संसदउं कहइ जिम अगीतार्थसांभलइ ॥

> वहुजण ॥ एकअगीतार्थनइं आलोई नइ पछइ घणाजणा आगलिइं आलोवइ नउ दोष हइ ॥ ८ ॥

अथवा ॥ अगीतार्थ आगलि आलोइं ॥ ९ ॥ तस्सेव ॥ पोतइजे दोष । ते दोष नो सबल सार गुरु आगलि आलोइ जाणइ सरी मासणो मो दुप्रायश्चित आवइ ॥ १० ॥ ए दोष परिहरी आलोइते गुणावंत ना गुणा कहइछइ ॥ जाव माहि आगमि जाणइ कहिउं ति म ॥ विणय संपन्न । नाणसंपन्न । दंसणसंपन्न । चरित्तसंपन्न ॥ अमाई अपछाणुतावी ॥ एहवउ गुणवंत गुरु आगलि आलोइ । ते गुणवंत ना गुण कहइछइ ॥ आयारवं ॥ ज्ञानादि आचारवंत ॥ आहारवं ॥ कहिउं तिम धारणइ ॥ जाव माहि ववहारवे ॥ आगमादि पांच ववहार सहित ॥ उव्वीलए ॥ लाज मुंकावी आलोवरावइ ॥ पकुव्वे ॥ आलोयणा नइ सुद्ध करवा समर्थ ॥ निज्जवए ॥ प्रायश्चित

अथवा ॥ तस्सेव ॥ दसहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरहति अत्तदोसमालोएत्तते तं जाइसंपन्ने कुलसंपन्ने एवं जहा अट्ठट्ठाणे जाव खंते दंते अमाती अपच्छाणुतावी दसहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरहति आलोयणं पडिच्छित्तते तं आयारवं आहारवं जाव अवायदंसी पियधम्मे दढधम्मे दसविहे पायच्छित्ते पं० तं० आलोयणारिहे जाव अणवट्ठप्पारिहे पारंचितारिहे दसविहे मिच्छत्ते पं० तं० अधम्मे धम्मसंन्ना धम्मे अधम्मसंन्ना अमग्गे मग्गसंन्ना मग्गे अमग्ग

तरवंग्रहइ ॥ जिहवुं निर्वही सकइ ॥ अपरिस्सावि ॥ दोष आलोया ते अनेरा आगलि न कहइ ॥ अवायदंसी ॥ अण आलोयान इ परलोक नउ ॥ अपाय देखाडइछइ ॥ पियधम्मे ॥ धर्म वाहालो ॥ दढधम्मे ॥ आपदाइं धर्म थकी न चलइ ॥ आलोयि छतइ प्रायश्चित आवइ ॥ ते सगला प्रायश्चित नुं सूत्र ॥ आलो ॥ गुरु नइं निवेदवइं अतीचार सुद्ध थाइ ॥ पडिक्क ॥ मिच्छामिदुक्कडं देसइ ते अतीचार सुद्ध ॥ तदु ॥ आलोवइ नाहिं अनइ मिच्छामिदुक्कडं ॥ विवेगारिह ॥ असुद्ध आहारादिक नइं परिहरवइ ॥ विउस्स ॥ काउस्सग्ग ॥ तवा ॥ नीवी आदिक व्याज ॥ छेदा ॥ वारि [illegible] ॥ मूलारिह ॥ फुरि दीक्षा ॥ अणवट्ठप्पारिह ॥ जे दोष लोगिइं केतला काल लगइं वा तिर राखी तपकरावी ते दोष थी निवर्त्तइ दीक्षा दीइ ॥ पारंचियारिह ॥ जे दोष लोगइ लिंग दि लिइ ॥ एताविना वाहिरिका दइ एतलइ सुद्ध ॥ पारंचिकान्त मिथ्यात्वे अनुसरइ ॥ तेस णी मिथ्यात्वनुं सूत्र ॥ अधम्म ॥ सिद्धांत लक्षणा रहित नइ विषइ । सिद्धांतनी बुद्धि ते विपरीत पणा माटइ मिथ्यात्व ॥ धम्म ॥ सिद्धांत नइ विषइ असिद्धांतनी बुद्धि ॥ जिम नुं पक्ष ताते सर्वज्ञ कहिउं थी तेह ना कह्यां सिद्धांत किहां थी इत्यादि ॥ उविकल्प ॥ उमग्गे ॥ जीमादि नइं अपथ । विपरीत मइं दर्शनादिक नुं स्थानक पइं करानइ तिहां ॥ मग्गं ॥ उवासनादिकी मारग नी बुद्धि ॥ मग्ग ॥ प्रसिद्ध ॥

२४९

दीर्घायु ॥ चिरंजीवी ॥ २ ॥ अड्ढे ॥ धनवंत पणुं तेसुख नुं कारण ॥ अथवा मोटो मनुष्य पुजा करि ते सुख ॥ ३ ॥ कामते शब्द रूप ॥ ४ ॥ भोगाति गंध रस स्पर्श ॥ ५ ॥ संतोष अल्प इच्छा ते आनंद रूप वणकी सुषधुं छइ ॥ ६ ॥ अत्थि ॥ जे वस्तु जिवारिइं जोईइ । ते वस्तु तिवारिइं हुइ ॥ सुहभोग ॥ अनिंदनीय विषय सेवा तेसु

अजीवे ॥ आकाश परमाणुआ विषइ ॥ जीवनी संज्ञा ॥ जाव ॥ पस्त्रद्धादिक जीव नइ विषइ अजीव नी संज्ञा ॥ मुंकाणा नइं विषइ अणमुंकाणानी संज्ञा ॥ अनंतर मिथ्यात्व कहिउं ॥ हवइं जिनि त्रिनि तीर्थंकिरे मुंकाणा पणुं कहइछइ ॥ जीवमा छिद्मस्थ मुंक्ति ॥ अनंतर इं सवे ॥ उवपहीणे ॥ तीर्थंकर नउ महापुरुष । ते सर्वे महापुरुषनां सूत्र ३ ॥ नारकी पणइ उपनाइ म कहिउं ॥ तिहां नारिका दुक्कड

सन्ना अजीवेसु जीवसन्ना जीवेसु अजीवसन्ना साऊसु असाऊसन्ना असाऊसु साऊसन्ना अमुत्तेसु मुत्तसन्ना मुत्तेसु अमुत्तसन्ना चंदप्पभेणं अरहा दसपुव्वसतसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव प्पहीणे धम्मेणं अरहा दसवाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता जाव पहीणे णमीणं अरहा दसवाससहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव पहीणे पुरुस्ससीहेणं वासुदेवे दसवाससहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरतियत्ताते उववन्ने नेमीणं अरहा दसधणुइं उड्ढं उच्चत्तेणं दसवाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव प्पहीणे कण्हेणं वासुदेवे दसधणुइं उड्ढं उच्चत्तेणं दसवाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता तच्चाते वालुयप्पभाते पुढवीते नेरतियत्ताते उववन्ने दसविहा भवणवासी देवा पं० तं० असुरकुमारा जाव थणियकुमारा एतेसिणं दसविहाणं भवणवासीणं देवाणं दस चेतिरुक्खा पं० तं० अस्सत्थ सत्तिवन्ने सामलि उंबर सिरीस दहिवन्ने वंजुल पलास वप्पा ततते कणियाररुक्खे ॥ १ ॥ दसविहे सोक्खे पं० तं० आरोग्ग दीहमाउं अड्ढेज्जं काम भोग संतोसे अत्थि सुह भोग निक्खम्ममेव तत्तो अणाबाहे ॥ १ ॥

पहइ ॥ चित्सलाति ते माता नइ उदय पामी इं निक्खम ॥ प्रव्रज्या ते सुख छइ ॥ निराबाध सुख वली आणंद रूप परमानंद ॥ अणा ॥ उवोल्लट मास पदि याप ॥ इम ते निर्वाण ॥ असुरादि देवाणं तेउ लक्ष विइं वय इ ॥ अच्छा ॥ नैवास्ति राजराजस्य ॥ तत्सुखं नैव देवराजस्य ॥ यत्सुख मिहैव साधु र्लोक व्यापाररहितस्य ॥ १ ॥ सिक्कड पवकष्टा ते लोक अनाते उपजावी नइं कारड । पक्षि ते नाम मात्रं कहि वाकुप सुख छइ ॥ पलि गुरु ते चैत्य

भवनपति छइ ॥ तेसु ते । असुरादि दस नइ अस्वत्थादि ॥ चिन्ह रुक्ष जे सिद्धायतन ना बारणा आगलि छइ ॥ ते अनुक्रमइ जोइवा ॥ तेहम । असुरनइ अस्वत्थो ॥ जाव थणियकुमारनइ कणीयार पुष्फ ॥ भवनवासी देव कह्या ॥ ते तउ सुखी छइ ते सर्वे सुख कहइ छइ ॥ आरोग्ग ॥ नीरोगपणो ॥ १ ॥

सुषनही॥ जन्ममरणसुधनइपानी जिहांआबाधानथी। तनिराबाध तत्मात्सुष सर्वोत्तम॥ यत उक्तं॥ नवि अस्ति माणु
साणु॥ तं सुषन वियसव्वदेवाणं॥ जं सिद्धाणं सारकअव्वाबाहं उवगयाणं॥१॥ चारित्र सुष करिउं तत्थ्यो पुरुइतउ आदेशक
षआपइ॥ तसणं चारित्र नइं उपघात नोकरण आहारनादोषकहइ छइ॥ उग्गमोवघाए॰॥ आधाकर्मादि सोलदोषिदकरी
चारित्रनुं विराधवुं इमहु आदि सोल। उत्पादनदोषथा रित्रनुं विराधवु॥ जावमादि एसणोवघाइ॰॥ संकितादिदस एसणा
षकरी चारित्रनुं विराधवुं॥ परिकम्मोवग्घाए॰॥ वस्त्रपात्रादिकनइ समारवइ करी स जायअनइ संयमनुं हणवुं अनइ अनेरी
श्रम॥ परिहरणोवघाए॰॥ श्रुतकपउपगरणअवनाअकल्पनी पकणकरणानी सेवा॥ ज्ञानोपघाततिहां॰॥ प्रमादथकी श्रुत
ज्ञाननो॥ दर्शनोपघाततिसंकादिकइ॥ चारित्रोपघाततत्समितिसंगाइ॥ अवियत्तोवघाए॰॥ अप्रतीतिइकरी वि
दसविहे उवघाते पं तं उग्गमोवघाते उप्पायणोवघाते जहा पंचट्ठाणे जाव परिहरणोवघाते णाणोवघाते दंसणोवघाते चरित्तोवघाते अवियत्तोवघाते सारक्खणोवघाए दसविहा विसोही पं तं उग्गमविसोही उप्पायणविसोही जाव सारक्खणविसोही दसविहे संकिलेसे पं तं उवहिसंकिलेसे उवस्सयसंकिलेसे कसायसंकिलेसे भत्तपाणसंकिलेसे मणसंकिलेसे वतिसंकिलेसे कायसंकिलेसे णाणसंकिलेसे दंसणसंकिलेसे चरित्तसंकिलेसे
नयादिकनुं उपघात॥ सारक्ख॰॥ सरीरादिकनी मुर्छाइं करी परिग्रह अतनउ उपघात॥ उपघातनो विपक्षि विसुद्धकहइ छइ॥ उग्गम
विसोही॰॥ उगमादिकदोषनइ टालवइ करी सज्झादिक निर्दोष॥ परिकम्म॰॥ पात्रादि परिकर्म वइ करी संयमनी निर्मलाई॥ परिह
रण॰॥ सात्रो कल्पविधिइं वस्त्रादिकनइ सेववइ करी॥ ज्ञानादिकनी विसुद्धतज्ञानादिक आचारनइ पालनइ करी॥ ति अवियत्तोव
॰॥ तिअप्रतीतनुस्थानकवर्जवा थकी॥ सारक्ख॰॥ संयमादिकनइ अर्थिइं उपधिनइ राखवइ करी॥ चारित्रनी निर्मलाई॥ ए विशुद्धि विसु
नइ विसुद्धथकी विपक्ष ते संक्लेस कहइ छइ॥ संक्लेस तत असमाधि॥ ज्ञानइ करी संयमनइ सरीरनइं आधार दीजइं तिउपधि॥ त
हनइ विषइ॥ सक्लिस॥ उवस्सय॰॥ उपाश्रानइं विषइं संक्लिस॥ कषायसंक्लिस तिकषाय करवा थकी॥ तपाणं आश्रीसंक्लिस॥ म
ननउ संक्लिस॥ वचननो संक्लिस॥ कायाश्री संक्लिसनिर्मलइ॥ ज्ञानसंक्लिस तज्ञानरा शुद्धाइ॥ इमदर्शनचारित्र पणि॥ २५०

द्विविद एहनउ विपक्ष असंक्लिस कहइछइ॥ असंक्लिसतउ बलछइ तइजीवनइ हुइ। तसणं बलनुं सुत्र॥ श्रोत्रेद्रियादि
पांचनांबलतश्रोत्रादिपांचनउ विषय अद्विवा असमर्थ॥ ज्ञानबल तअतीतादिवस्तु जाणवा समर्थ॥ अथवा तणइ करी
चारित्रमाहि॥ साधवा समर्थ॥ दर्शनबल तवीतराग ना वचनना प्रमाणथकी असमक्षपदार्थ सद्दहइ॥
चारित्रबल तसर्वसंगत्यागनउ। विषयागकरतां दुःकर तकरइ जथकी अनंतनिराबाधएकांतसुखवसिअनइं पां
मइ॥ तपबल तअनेकसवनां उपार्ज्यानिकाचितकर्मनोगां विषपइ॥ वीर्यबल तगमनागमनादिकविचित्र
क्रियानइं विषइ प्रवर्त्तिवुं॥ पथकी सर्वउत्तालयणं छांडी निरंतर आनंदनुं लाजनथाइ॥ चारित्रबल हितसत्य
बोलाइ। तसणी सत्यकहइ छइ॥ तिहां॥ सन्त॰॥ जीव अथवा पदार्थ साधुनइं तहनइ तिहितुं जतसत्य॥ जणवय॰॥
दसविहे असंकिलेसे पं तं उवहिअसंकिलेसे जाव चरित्तअसंकिलेसे दसविहे बाले पं तं सोतिंदियबाले जाव फासिंदियबाले णाणबाले दंसणबाले चरित्तबाले तवबाले वीरियबाले दसविहे सच्चे पं तं जणवयसम्मतठवणा णामेरूवप
इत्यादि दस बोलिइं प्रत्येकसत्यसह्कहीइउवउ॥ जनपदसत्य तजादेसनइ विषइ अर्थजेणइं सधइं ख्याति छइत
अनेरादेसनइ विषइ तअर्थ तसघइं बोलतां जुवकनही॥ जिमकुंकणादिकनइ विषइं पाणीनइ पयकहीयइ॥
तथा पीवनीरउदक पणिकहइ॥ मनमाहि जिनिपल वणीकरी बोलइ तअर्थ तसघइं बोलइ बीजइ॥ लोकप्रवर्त्तिइं मिछइ
तसणी इमा बोलतां दोषनहीं॥ इमसघलइ॥ सम्मतसत्य तजिमकुवलय। उत्पल। तामरस। कादवमांहि उपनी अनइ
अरविंदपणि कादवमांहि उपनुं। पणि पंकजसघ तअरविंदनुं कहतां साधु॥ कुवलयादिकनइं कहितां कउं॥ बीजासघल
इं अर्थ उपजइ। पणि जेहनइं युक्तअर्थ तिसघइनउ करतां जेह तसघनउ तअर्थकीजइ। तहवअसघ पणि अर्थयु
क्तनहीं तातनकीजइ तिसाधुं॥ सम्मतसघइ मिलतुं बोलवुं॥ स्थापनासत्य लेपादिकर्मनो॥ जिनमइं अतिमा अ
जिनअति मास्थापाइ तस्थापनासत्य॥ नो अविरनइ बिरहइ तीर्थंकर। इमआचार्यनइं विरहइ आचार्यनीस्थापना॥ नाम
सत्यातकुलादि अणवधार तउ पणि कुलवर्द्धनकहीइ। इमधनवर्द्धन॥ रूपसत्यातयुणहीनपणि वेषधरतउ यतीकहीयइ
तजुवकनही।

MEMORIAL

ठाणा॰
बाला॰

पडुच्चसत्यात अनेरी वस्तुआश्री सत्य जिम अनामिका आंगुली रवीनी अपेक्षाइं लांबी। अनइं वचिलीनी अपेक्षाइं टूंकी
अनंतपुजलइं ब उन्नआंगुली नो पनी छइ पणि ऊणीलि छइ आंगी इं लंबाई इतसा चुं॥ ववहारसत्य ते इणि बलइ छइ। अनइं
पाणी गलइ छइ॥ पणि दुं गर गलइ छइ। नइं साजनगलइ छइ॥ इम कहतां कुवुकुं नहीं॥ सोवसत्यात जि दृश्मादिकं त्यवस्तु घणां
तेणां वस्तुइं करी ते बोलइ तां सा चुं॥ यम बगला मां पांच वर्ण छइ॥ पणि धुलो घणो छइ॥ तमाटइं ऊजलो कहइतां कुं
वकुं नहीं॥ त्यागसत्यात संबंधनकी साखीय कइं डांडो छइ ते हनइं दंडकी कहीइ॥ छत्रकइ तेहनइं छत्रक होइ॥ उप
मां रूपमा सत्यात जि रूपमाइं साचुं जि॥ समुद्रनी परितलाव। पाद वो सपुरुष छइ॥ सिंघ छइ॥ दृष्टि वइ अस्मनो विपसंतुम
पा कहइ छइ॥ क्रोधइ जे बोलइ ते मृषा॥ जिक्रोधी ऊ अ दास नइं पणि दास कहइ॥ मानइं मृषा ते जिम मानि इं आफस्या

उब्बसच्चेय ववहारसावजोगे दसमे उवमसच्चेय॥१॥ दसविहे मोसे पं॰ तं॰ कोहे माणे
माया लोभ पिज्जे तहेव दोसेय हासभये अक्खाइय उवघातनिस्सिते दसमे॥१॥ दसवि
हे सच्चामोसे पं॰ तं॰ उप्पन्नमीसते विगतमीसते उप्पन्नविगतमीसते जीवमीसए अजीवमीसए

अल्प धनवंत छतो ई महाधनवंतपणुं मानइ॥ माया मृषा ते मायाइं बोलइ॥ लोभमृषा ते वांणीया दिक जिम अनेरी परि वस्तु ली
धी कइ अनइं अनेरी परि कहइ॥ प्रेममृषा ते रागि इं कहइ ऊं तुम्हारउ दास छऊं॥ द्वेषमृषा ते गुणवंतनइं पणि मत्सरनी लीधे
निर्गुण कहइ॥ हास्यइं मृषा ते भांडादिकनुं बोलवुं॥ भयमृषा ते चोरादिकथी असंबद्ध बोलइ॥ आख्यायिकमृषा ते था
टी कथा कहइ॥ उपघात ते मिश्र ते मृषा ते हिंसाकारी ऊं वचन बोलवुं। जिम अचोरनइं चोरनुं आल देवुं॥ सत्यामृषा नइं त्या
गिइं मिश्र वचन कहइ छइ॥ सत्यामृषा॰ साचुं निइं कुंवकुं ते सत्यामृषा॥ उप्पन्नमिस्सए॰॥ उपनां अपना श्री मिश्र भाषा
यथा आ नगर नइं विषइ दस बालक ऊपनां इम कहतां मिश्र थाइ यसलो ओछि अधिकाई ऊपनइं ऊठाइ॥१॥ विगतमिश्र ते यथा ए
नगर नइं विषइ दस गरढा मुआ। अधिका ओछा कोई बोलइ ते तेणां मिश्र॥ उप्पन्नविगयमिस्सए॰॥ ते एनगर मांहि दस
बालक ऊपनां दस गरढा मुआ। कदाचित ओछा अधिका ते सबाइ त॥ जीवमिस्सए॰॥ यथा कीडानो ढगलो छइ ते मांहि कोई
जीवइ छइ कोई मुआ छइ॥ तेहनइं ए जीवनउ ढगलउ छइ त॥ अजीवमिस्सए॰॥ तेह ऊ कीडानां ढगला मांहि विषइ घणा
२५२

मुआ छइ॥ तेहनइं कहइ ए अजीवनो ढगलो छइ॥ जीवाजीवमिश्र ते तेहज कीडानां ढगला मांहि कोडा मुआ छइ पाण छइ॥ अनइं जीव
ता पणि छइ तिहां प्रमाणे बाधइ। एतला मुआ नइं एतला जीवइ छइ॥ अनंतमिश्र ते। यथा मूलकंद नइं विषइ अनंता अनइं विषइ परि
त॥ तेहनइं कहइ ए अनंतकाय॥ परित मिश्र ते॥ कोएक अवयव ते अनंतकाय मउछइ बाकी परित॥ तेहनइं कहइ ए परित छइ
॥ अद्धामिस्सए॥ कालआश्री मिश्र ते जिम कोइ एक कार्य छतइ॥ दिवस छतइ पणि मित्रनइं कहइ ऊठ रात्रि पडी॥ अद्धद्धामिस्सए॥ रा
त्रिनो अथवा दिवसनो एक पहरादिकआश्री मिश्र॥ जिम कोई एक कार्य हुकहइ॥ पुहुर चढ्या नइं मध्यान्ह थयुं॥ सामान्य अधिकार सर्व
बोलवा योग्य वस्तुनो व्यापक सत्य भाषा मय दृष्टिवाद नामक इइ छइ॥ ढ़ इए॥ दृष्टवुं ते हनुं॥ वाद॥ बोलवुं॥ अथवा तेहनुं पात॥ दिठिवु॥
य हनइं विषइं छइ॥ तेह दृष्टिवादनइं दृष्टिपात॥ सर्वदीठी वस्तु प्ररूपवुं इंसर्व॥ दिठिवाए॥ दृष्टिवाद॥ हेऊवाए॥ जीवाजीवाइं अर्थ

जीवाजीवमीसए अणंतमीसए परित्तमीसए अद्धामीसए अद्धद्धामीसए। दिट्ठिवायस्स णं द
स नामधेज्जा पं॰ तं॰ दिट्ठिवाएति वा हेउवाएति वा भूयवाएति वा तच्चावाएति वा सम्मावाएति
वा धम्मावाएति वा भासाविजएति वा पुव्वगएति वा अणुजोगगएति वा सव्वपाणभूतजीवसत्तसुहा
वाएति वा दसविहे सच्छे पं॰ तं॰

नइं ऊणा वइं तेहनुं तेहनुं बोलवुं॥ भूयवाए॰॥ भूतपदार्थनुं बोलवुं॥ तच्चावाए॰॥ तत्त्व तेहनुं बोलवुं॥ अथवा तथ्य॥ साचानुं बोलवुं॥ सम्मा
वाए॰॥ अविपरीतनुं बोलवुं॥ धम्म॰॥ वस्तुनो पर्याय अथवा चारित्रधर्म तेहनुं बोलवुं॥ भासा सत्यादिक तेहनउ॥ विजत्या॰॥ निर्णय अथ
वा भाषाना विजइ॰॥ सम्रुध छइ ति हनइं विषइ॥ सर्व सिद्धांत मांहि पहिलो करइ। तेहनां पुर्व ऊत्पाता दिक ऊदे॥ गति॥ ते आमांहि छइ॥ पु
र्वमयई त्यर्थ॥ अनुयोगात ते बिऊ लेदि॥ प्रथमानुयोग॥ तिर्थंकरादिकना पुर्वभवादिकनां संबंध गंडिकानुयोग ते भरतेना
ऊपना भावेनइं अनुत्तर विमानइं ऊपनानां संबंध ते अनुयोग॥ अणु॰॥ जे हमांहि छइ॥ एपुर्व अनइं अनुयोग। ए बेऊ दृष्टिवादना
अंस छइ ते सर्व दृष्टिवाद ऊकहीइ॥ अवयव नइं आ चोलपनवाघकी॥ प्राण बेइंद्रियादिक॥ भूत वनस्पती॥ जीव ते पंचेंद्री॥ सत्व ते
पृथ्वीआदि ते सर्वनइं सुख अथवा सुखनो देणहार ते संयमना कहणहार पणा थकी। अनइं दृष्टिवाद ते भा शत्रु नुं दृष्टु छइ तेहत्ता॥ दृष्टि
वाद ते जीवनुं सुखवादे छइ। अत्रास्त्र पणा थकी॥ सस्त्र ते उरवादे छइ॥ ते सर्व सस्त्र कहइ छइ॥ ते जाइ करी हणाइ ते सस्त्र॥ तेह सकव

स्तु। तव्वज्जातदि ॥ उप्पाद्यी नइं सावद्य ॥ तिहां द्रव्यथी कहइ छइ ॥ अग्नि ॥ अग्निथा आनरी अग्नि छइ। तस्वकाय सरस अन्य व्यादिकनी अप काइं परकाय शस्त्र विषात घावर जंगम ॥ लवण ते मीठउं ॥ स्नेह ते तिल घृत्या दि ॥ खार ते स्म्यादि ॥ अंबिलं ॥ आछि ण दि ॥ सावाय ॥ सावस्मक्र करइ छइ ॥ दुः प्रयुक्त पाउयो मनवचनकाय ॥ इहां काया हिंसानइं विषइं प्रवर्त्तइ ॥ तरुणां घडगादिक ॥ सस्त्र पणि काया ना सद्द भ्या हिंसा भावइ ॥ अविरति ॥ तेअ पच्चखाणी ॥ अथवा अविरतरूपसाव ॥ तसरूअ अविरता दिाष तस स्त्र कहिउं ॥ तस तो दोषना अस्तावमा दइ। दोषना विसेषक कहइ छइ। ते गुरुनइं अनइं सिषनइ। अथवा वादीप्रतिवादी आश्री जाणवा ॥ तज्जायदोसे ॥ गुर्वादिक थकी ऊपनो ॥ अथवा तत ॥ ते गुर्वादिकनो ॥ जात ॥ ऊपनउ ॥ ते गुरुनउ दोष सिष्यकाढइ ॥ अथवा गुरुनो कुलादिकनइं। जन्मनो गुरुनामर्म ॥ तथा गुरु ना कर्म ॥ कार्यनउ ॥ जात ॥ प्रकार तेहनां। दुषण काढइ सिष्य तेणइं गुरुनइं दुष विघु ॥ अथवा प्रतिवादी थकी जात ॥ ऊपनु ॥ जाता वाधकी मुषकरमावारूप दोष ॥ मति ॥ पोतानी बुद्धिनउ भंग ते वीसरवारूप दोष ॥ पसत्थार ॥ सीषामणनउ देनार ॥ अथवा मर्या

सेज्जं मेगा विसं लोणं सिणेहो खार मंबिलं दुप्पउत्तो मणो वाया काया भावो तह अविरती ॥१॥ दसविहे दोसे पं० तं० तज्जातदोसे मतिभंगदोसे पसत्थारदोसे परिहरणदोसे सलक्खण कारण हेउदोसे संकामणं निग्गह वत्थुदोसे ॥ दसविहे विसेसे पं० तं० वत्थु तज्जातदोसे य

दाकारी सभानायक ते णइं निस्त्रे थ्यो ते दोष ॥ अथवा वचीकरतो प्रतिवादीनइं काइं चुकउ वीसरतउ हतउ। तेअनेरइं तेहनइं संभारावीनइं जीपा ते तेणइं ऊपनो ते दोष ॥ परिहरणदोष ऊपाध्यादिक नुं लोग विरुद्ध तेहनइं विमइ दोष काढइ। अथवा वादीइं हेतुक हिउं तेहनइं निराकरी नसकइ ते ॥ ४ ॥ सलक्खण ॥ तेलक्षण आश्री दुषता काढइ ॥ कारणिइं कोई कीधुं हुइ। कारणइं हेतुदतीमा हितु मरणकाढइ ॥ संकामण ॥ यवस्तु प्रारंभो छइ कहिवानइं ते अनेरी मांहि घलइ कथादि ॥ तथा तेकथा मांहि अनेरी कथा आणी मेलइ तिसंक्रामणदोष ॥ अथवा प्रतिवादी मांहि घलावइ नइं। तेहना ते वादीनो दोष काढइ ॥ ते संक्रामणदोष ॥ निग्गह ॥ छलकरीय्यहइ ॥ वत्थुदोसे ॥ अनेरानो कीधुं श्लोक गाथा काव्य आदि मांहि दोष काढइ ॥ ए दसदोष समुच्चय इकथा ॥ तेहनउ अनइं अनेराई अर्थनो विसेष कहइ छइ ॥ विसेसे ॥ ते दसवस्तुनो विसेष ॥ वत्थु ॥ वस्तु ते पाछिला दसकानइं छेहलइ सूत्रइं कही ते ॥ तज्जाय ॥ तेहज दसकानइं धुरि लइं सूत्रइं कहिउं ॥ ते ऊप्रतिवादी आदिकी ऊतिना दोष ॥ तिहां वस्तुदोष ते ॥ आ जिला नो पदनो पाडिका हवी ॥ ति जात दोष तेजी स्यादि कहिउं छइ लउं। एवकु समुच्चयइ दोष ॥ तेहनो अन्य कोइ विशेष दोष ते जन्म तिहां तज्जात दोष ते जन्ममर्मकर्मादिक कइ करी दोष काढइ ॥ जन्मादोषथया

२५२

॥ थोडाऊंसित यथो डाअनइं उटकसीय गर्दभ ॥ तेह नो पुत्र ईम कहइ तो घणा लोकमांहि तेहनी जातिकु घाडीइ त्यादि अनेक विध तज्जातदोष ॥ दोसे ॥ पाछिलइं दसकइं मतिभंगादि आठ सद्द कहा छइ। ते आणइं दसकइं दोष सद्दइं करीय द्यो ॥ ते आठ बोल दोषनाति विसेष जाणवा ॥ अथवा कोएकनउ दोष दोष मांहि दोष काढीइ। ते अनेक विध दोषना भेद छइ ॥ एगट्ठिए ॥ सद्द घणानइं एक अर्थ। तिहां समुच्चयइ सद्द ते नामएकवउं सद्द। विसेष ते जिम घडा आदि नुं नाम ॥ तथा अनेकार्थिक ते ॥ यथादि सिं ॥ आदि ॥ वाणी पाणी पृथ्वी ॥ स्वर्ग ॥ वज्र ॥ किरण ॥ बलद ॥ अथवा एतला एकार्थ ॥ अर्थ एक ॥ गो सद्दइं करी बोलीइ ॥ इहां एकार्थ भेदइ अहि वइ ॥ अणकहिउं पणि अनेकार्थ अहीं जाणवो। पणि दसठाणमाहिं तेन गण्यो। जलणो वायु वा धर ॥ अथवा एकार्थिक सद्दनइं विध ॥ निदकीइ ॥ जिम वस्तुकरवानी समर्थाइं मोटइ सक्र ॥ असुइं रनापुर विदार वाथकी पुरंदर ए एवंभूत। नयनउ मत ॥ अथवा ईसो दोष सद्दजोडीइ तेणइं करी। एक वस्तुनो बहु आदिकनो मकूइं ॥ ते अनेरा मइं अनेरूं कहइ ॥ यथा जिम सक्रनइं पुरंदर जो अर्थ करइ पुरंदरनइं सक्रनउ अर्थ करइ। ए पणि समुच्चयइं दोषनो आपवाइं विसेष दोष ॥ एएगट्ठी यादोसे य ॥ कारणे ॥ कारणनो विसेष

त दोसे एगट्ठिते तियत कारणे तउ पडुप्पन्नदोसे निच्चे अहिय अत्तकए

॥ नवी कहिउं। दसठाणमाहइं पणि अणकहिउं ईपणि लेवो ॥ इहां सूत्र ते कारण कहीइ। अनइं वस्तु ते कार्य कहीइ ॥ अमअ अनेरूं उंधो ऊपजइ ते कार्य कारणकार्य कहिवुं ॥ अथवा कारणनो भेद ॥ जिम माटी नो पिंड ते घडानो पणा वस्तु कारण छइ ॥ तिम दस काल आकास पुरुष चाक आदि घडानइं नो पणउं तांसा हव्यनो कारण हुइ ॥ अथवा माटी आदि ते अहिवा रूप कारण। अनइं कुं भारादि तेनो पणा वा नाकारण रूप ॥ ए कथा थी धडादि ते सहकारी कारण ॥ इम अनेक विध कारण ॥ अथवा ईहां पणि दोष सद्द जोडीइ ॥ ते अनेरा हेतु कारण अनेरूं कहइ ते दोष ॥ जिम वस्तु कारणमा टीइत्यादि ॥ पडुप्पन्न ॥ वर्त्तमान ते समुच्चयइ काल नो आपवाइं। विसेष ते हनउ दोष ति समुच्चयइ कालनउ दोषनो आपवाइं वर्त्तमानकालनो। दोष निर्वेस दोष। अथवा सर्व वस्तुनुं एकोतिमानवुं। अथवा तीनो ऊपति उत्तानो विमासि ॥ एहवुं वर्त्तमानकालनइं दिषइ मानवुं ॥ तिम अतीतकाल इं अनागत कालि ए सामान्य दोषथी विसेष दोष ॥ निच्चे ॥ नित्य दोष ते असत्यनुं मिथ्या व अनादि अनंत। ए विसेष दोष ॥ अथवा सर्व वस्तु नित्य मानीइ पल टाइ नहीं। इम मानतो बालकुंमारादि वस्तुनो अनावथाइ ॥ तस्मा मासमी विसेष दोष ॥ हीय अहिय ॥ वर्णनइं अवसरि इं ते वादी प्रतिइं अधिकाउ दाहरणादिक हीइ ते दोष ॥ यसेण प्रायाउनय पइट्ठणं कहिउं ते अनर्थ बोलवुं ॥ सिद्धांत ते अर्थ सिद्ध छइ। पणि आ तानकंतो कुप्ती। उदाहरणेहेतुअरी समर्था विचउ ॥ तिहां पाचलिय अथवा दसहिद ॥ अथवा सर्व थार हेतुकहिता दोष नहीं ॥ अथवा देणा ना दिकइं करी वादीनइं दुषविवइ। ए अहिय दोष ॥ सामान्य दोष

हि विसेष। एवआदिमादोष

अतलत॰॥ पो तईकांधें॥ उवरंगीए॰॥ अनेरइं पुरुसेवा द्विवुं॥ समुंचयइं॥ समुंचे कांधुं तिहनी आपदाइ पोतिं कांधें तिविसष॥ स
मुंच्चयइं पुरुषो इंज तरुनी अम दाइ पोरिंपा कुवा डिंज तिविसष पाकुंचा डिंजा तप्प तइं जि। परपाडिं पुरुषवा द्विवुं तकांई वस्तु
माकली अथवा पोतइं ज दापकी धे॥ उव॰॥ परपाहि दापकरा विउ॥ सामा न्यादा षनी आप दाइं एविसष दाष॥ हिंसी श्री असप
देवसुरि कहइ छइ इय प्रति रूप रिद्ध लिकर वामाडी छइ। तमादि निधे स्थित हाम। एहवुं उपाउदी कउ। तिहनो जउ एके वउ अर्थकि
रीइ तो॥ आठ मो बाल नवाइ। तिहणी निश्चे मोक्ष अर्थ उतकी धे। एपुर्वी कू विसषादि लाव तेअर्थ ति अर्थ अनुंयोग पीउलाइं।
ते अनुंयोग बिकु लिइं। अर्थ षकी अनइं वचन षकी। तिहां अर्थ षकी। यथा। अहिंसा संजमा मा तावा॥ इहां अहिंसा दिक लिदे नाउ
रूपनु कहिवुं। ते अर्थानुंयोग॥ अनइं एहनउ ईजि जमद आश्री विचार ते वचनानुंयोग॥ यथा अहिंसा॰ जीवदया एहवउस
द्दार्थ। इहां वचनानुंयोग षकी कहइ छइ॥ सुद्धा॰ वाक्यना अर्थना लिख विचार दिता तसुत्रइं तिसर्थः॥ तिहनुं॥ अनुंयोग॰॥ विचार
तिम्रु विवा कनुंयोग॥ तिहां वकारादि जसुद्ध वचनो अनुंयोग ते वकारादिक उ॥ इहां माषइं मोडां तिमाऊ तमाटइं आव्यो छइ॥

अत्तणा उतराः तत विसमपतियावदम दसविहसुद्धावायाणुओग। पं तं वकार मकार पिंकार सितकार

यथा सुक्कसलिवरइस्यादिक विषइ विंध प्राकृतमाटइं तेतरणी॥ केवला वकारादि लिवा॥ तिहां वकारे नो अनुयोग॥ यथा। वसइस
माहारइ तरतरयोग॰ समुंच्चयइ॥ अन्वय॥ अवधारण॥ पादपुरण। एकवचनादिक एतलानइं अर्थि आवइ॥ तिहां इत्थीऊस
णा लिय॥ इहां वकार समुच्चयइ नइ अर्थिइं॥ तिहां स्त्रीनुं अनइं सयननुं अरा लाग वयाप्रणुसरि पक्ष वहइवा नइ अर्थिइं सरि
पात वकुमा हिं सकुं ल्लाग विवुं नषी॥१॥ मकार॰॥ मकारनो॥ अनुंयोग॥ यथा॥ समणा वा समणा माहणो वा॥ मा सद्द निष
धनइं अर्थिइं॥ अथवा। यणा मिवसमणोत्तगवंमहावीर॥ तिणामव॥ इहां सुत्रनइं विषइ। मकारतो सिद्ध तमा टिइं आव्यो॥
बीजो पदिई षपकाईमिहां॥२॥ पिंकार॰॥ इहां अकारनो लोप थइ॥ अनइ बिंदु अणाकुं उतिलुणो॥ अपितिहनो॥ अनुयोग॥ यथासे
नावना॥ अभिवर्नवुं। अपदोइ॥ समुच्चय नागर्दा॥ मिथ्या। सहवुं॥ तुपरा प्रश्न एतला। अर्थनइं विषइ॥ अपि आवइ। तिहां एवं पि
एग अासा स॥ इहां इमपणि एकवसिउ्पमनउ गंम॰ इहां अपि संद्द प्रकारांतर समुच्चयइ अर्थिइं। अपि सद्द आव्यो॥३॥ सयु
कार॰॥ इहां अकार ते। प्राकृत माटइं आव्यो॥ सकारनउ अनुंयोग॥ यथा॥ सतिसकूवा। इहां सेसद्द। अनइं अथसद्द ते प्र
क्रिया प्रस्तु॥ अनंतर॥ मंगल॥ उपन्यास॥ पहुतर॥ समुच्चय इनइं अर्थिइं आवइ॥ इहां अनंतर नइ अर्थिइं। आव्यो॥ किहां एकास॰
पदवा अर्थनइं काउइं आवइ॥ किहां एकास॰॥ तिहनुं एहाइ अर्थइं आवइ॥ अथवा सयकार॰॥ अप॰॥ कल्याण तिहनु यकारणाक 253

रवुं ते श्रेयस्कार श्रेय॥ अथवा नइं अर्थइं॥ ईसर्थ॥ तिहनो अनुयोग॥ यथा। सयंता॥ अहिंजिउं अप्रयतो॥ इहां सुत्रनइं विषइं
कल्याणनइं अर्थि आवि तुं॥ अथवा सयकाल अक्कमया विसतइं॥ इहां सय सद्द अनागमनइं अर्थिइं आविउं॥४॥ साथंका
र॰॥ सायं एहवउ निपात छइ॥ कारते स तनउ अर्थ बोलइ॥ जितलइं अर्थिइं सत्य साध्य आवइ॥ तितलइं अर्थिइं सा
यं पणि आवइ॥ इहां वकारादिकनइं ग्रहवइं। उपलक्षणाथी अनेराइं पणि निपातनो अनुंयोग जाणवा।५॥ एगत्ति॰
एकवचनातिहनो अनुंयोग॥ यथा सम्मगदर्शन। ज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग छइ इहां मार्ग सद्दनइं। एकवचनातएत
लो समम्म दर्शनादिकनइं समुदाइ एकोमाक्षमार्ग थामाइ॥ एहवउ कहेवानइं अर्थिइं॥ तिहनो समुदाय विना मोक्ष
मारग न छइ॥६॥ पुहुत्ति॰॥ तद्विवचन। बहुवचन। तिहनउ अनुंयोग। यथा॥ धम्मत्थिकाए॥ धम्मत्थिकायदेस॥ ध
म्मत्थिकायपएसा॥ इहां प्रादेससद्दनइं॥ बहुवचनात तिहनुं असंख्यातपणुं जणावानइं अर्थिइं॥७॥ संजूहे॰॥ सं॰ मिलतां अर्थन
उ॰ सूथ॰॥ पदनउ समुत्तत समास ईसर्थः॥ तिहनउ। अनुयोग॥ यथा॥ सम्यक्त्वनिर्मलि अथवा सम्यक्त्वइं करी निर्मलि॥ अथवा

सातंकारे एगात्ति पुहुत्ति संजूहे संकामित भिन्न

सम्यक्दर्शननइं को जिहिं निर्मलि॥ इत्यादिश्र नकविधि॥८॥ संकामिते॰॥ विसक्ति वचनांतरइं करी परणमाविऊं तिहनउ अनुंय्या
ग॥ यथा॥ साकुवंदणोणंनासइयावे अमकियाला वा। इहां साधु सद्दनइं षष्ठी छइ। ते प्रथमा परणइ परणमावीनइं अर्थ करी
इ। त्य साधु षकी नत्संकित ताव थाइ॥ तथा॥ अच्छे दाजेनत्तंजंति॥ नसेवाइ त्ति वुच्चइ॥ इहां सत्यागी ए एकवचननइं बहुवचन
पणइ परणमावी इम कहीइ॥ नैसी॥ नत॥ त्यागिनउच्यांत॥ इमपदरचना करवी॥९॥ भिन्नि॰॥ अनुंक्रमइ काल॥ तिहां दिकइक
री अनरिपुं तिहनो अनुंयोग॥ यथा॥ तिविहंतिविहेण॥ इहां पहिलउ संग्रह सूत्र कहीनइं नली॥ मणेणं॥ इत्यादि किहइं करी
। तिविहेणं पाठ विवराजाइइ। एहनो अनुंक्रम एतला भाटइं साजो। जउ अनुंक्रमइं कहइ तो। अनुंक्रमइं पाठ जोडतो नउ दोष
रूपजइ॥ यथा॥ न करेमि॥ इत्यादि जउ पहिलुं कहइ तउ। इम थाइ। नकार मिमाणेम॥ नकार वि मि। वो अनुंक्रमइं कहीं॥ वा
या ए॥ करतं पि नसमणुजाणामि काएणं॰ ए दोषपविहरवानइं काऊइ अनुक्रम तिहां॥ तिलि दातो पाट नउ दोष टल्यो।
तिम। मणेणं। वायाए काएणं। नकरमि ३ नकारवेमि मणेणं ३ करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। एहवा अर्थमा सिद्ध थई॥ काल
या। लेनउ लिद तिअतीतनो विसक्ति नइवा मिवहमानवि सकित इ। यथा। जंबुद्दीवपन्नत्तादिकनइं विषइ॥ सम सुस्थो मिश्रा श्री

ए सहप छइ विवे स्पो। तेस णाइ इहां अनुंक्रमा लिहा णो॥ अनुक्र मइ इम कहि नउत्ताइइ॥ तिविहं एणं ठकहीनइ न करेमि॰ इत्यादि कइ करी विवरी नइ पछइ तिविहेणं ऊ॰६ दिव लीपासीना

कहिउं॥ संघाद्विविदवराया। वंदइ। नमसइ। इहां वर्द्धमान वि॰ सं॰ एतला सप्तादीर्घ। उं त्रिणपइ काल ना तीर्थंकर नइ इनक
२६॥ पदनउं अरथ वानइ॥१०॥ अ॰ दवरवचनना अनुंयोग घनौ अधिनियोग प्रवर्त्तइं॥ ते संगदानरूप जे अर्थना लेवनउं अ
नुग्यार करइ छइ॥ अनुकंपा दानात कृपाइं करी। दीन अनाथ नइं दीजइं ते दान पणि अनुकंपा लिक हीइ॥ तेराक अनाथ
दरिद्री कष्टइं पड्यो। व्यागइंसो गहणा लेनइं रूपाइं दीजइं ते अनुकंपा॥१॥ संग्रह संसानतक सादिक मइं बिपइ। साहा
य्य नइं अर्थइं दान देइ॥ अथवा गरघआपीनइं मुंकावइ॥२॥ भय॥ भयइं करी दान देइ॥३॥ कालुणि॥ रसाक। तपुत्र
वियागादिकइ त्येदान। एमाह राआ गलिसु पोषाइ॥ तेमावई त्राख्या दिदान आपइं॥४॥ लज्जा ए॥ लज्जाइं तथ
णा जण नी लो जइंदांन दीजइं तेलज्जादान५॥ गारविइं परचइ ते गौरवदान। तेना टकीया महत्ती आदिनइं। तथा विवा
ही आदिनइ यत्रा नइं अर्थिइं द्यइ॥६॥ अधर्मनइं पाय पणाहा रूदान ते अधर्मदान गणिकादिकनुं॥७॥ धर्मनुं कारण त
दसविहे दाणे पं॰ तं॰ अणुकंपा संगहे चेव भये कालुणि तिति य लज्जाए गारवे
णं च अहम्मे पुण सत्तमे धम्मे य अट्ठमे वुत्ते काहीति ति कतंति ति दसविहा गती पं॰
तं॰ निरयगती निरयविग्गहगती तिरियगती एवं जाव सिद्धिगई सिद्धिविग्गहगई
रयगति॥ अथवा गति नामकर्म नइं उदइ। नोपजा यो नारकी पणारूप पर्याय नइ विसेष॥ निरय विग्रहगई॥ नारकी ना जे वि
ग्रह॥ क्षेत्रना विभाग नइं अतिक्रमी नी कलवुं ते निरय विग्रह गति ते स्थिति नी निषेधिरूप॥ अथवा विहायगति कर्म नी नी
पजावी॥ रजुनइं वक्ररूप॥ एमतिर्यं च मनुष्य देवतानइं कहिवउं॥ जेहनइं विषइ सघलां अर्थ सिद्ध थाइ ते सिद्ध॥ सिद्धवि
ग्रहगई॥ आठांघाकर्म थकी मुंकाणानइं आकास ना विभाग अतिक्रमीनइं॥ लोक ति प्राप्ति॥ विग्गहग ति तवां
की गति पणि कहीइ पणि ईहां सिद्धनइं न लेवी॥ तेहना सवारी पणा माटइं नारकादिक नइं न कहीइ॥ अथवा बीजइं
पदइं नारकादिकनइं विग्रहगति कही॥ अनइं पहिलइं पदइं विसमइ हित ऋजुगति कही॥ अनइं सिद्धनइं वि
षइ आवी। ते निर्विसिष पणाइं समुच्चइ गति कही॥ सिद्धविग्रहगई॥ सिद्धनइं विषइ जावुं ते अविग्रह पणाइं जावुं ते
मारइ॥ सिद्ध अविग्रहगति॥ सिद्धगति तउ मुंडनइं कहइ। ते ना णी मुंडक कहइ छइ

गारकी धम॥ ऊं पालिऊ ग्रीकल मावान इदांन काई॥ कआपुं इमाथद्य इ॥१०॥ दानधकी तत्सुना सुनग जिऊण तिमणं मुत्तिनुंमु त॥ सुत्त अर्थथकी नीकल्यान निरयत नारक॥ तदनोग तितिनि

धर्मदान॥ अधवा तदानउधर्म कहीइ॥ ते सुपात्रेदांन॥८॥ ए मऊनइं काईथक ऊपगार करस्यइ एहवी बु धिय द्य इते॥ का ही॥ करी सीतीदान॥९॥ पं थाइ मुरु नइ घणा वारऊपा

मुंडइ॥ या लइ तेसुंड आनेंद्रियादि दसा लद॥ दसनी संख्या मुंडक हाँ॥ ते तणी संख्या स्वरूप कहइ छइ। परिक्रम॥ त
म कलिता दिअतेक विधि गणितना जाणनइं प्रसिद्ध। तेतणी संख्याइं करी नइं। व्यवस्तु नी संख्याको जइ ते॥ वस्तु पणि परिक्रम
कहीइ। इम संघलइंर व्यवहार ते। श्रेणी व्यवहारादि पाटी गणि। ते प्रसिद्ध आनक विधि रज्जु॥ रासइ नी इंकरी नइं जे संख्या की
कहीइ। इमसंघलइं व्यवहार त। श्रेणी व्यवहारादि पाटी गणि॥ रासि व्यवहार प्रसिद्ध॥ कला॥ जं॰ ते हनउ। सवर्ण॥
जउन्नतनी त्रराशी॥ धान्य नाढ गलानी संख्यानूं करवुं ते पाटी॥ रासि व्यवहार प्रसिद्ध॥ कला॥ ॥ त्रिणि त्राष्ट एक अजइ॥ ते नणी गुणाकार
त्रारकुं करवुं। त्यसंख्या नइं विषइ५। जावता वइ६। जावंता वगुणाकारी। ए त्रिणि त्राष्ट एका अजइ। ते तणी गुणाकार
करीनइं संख्यानुं करवुं। ते प्रत्यक्ष प्रसिद्ध। अथवा॥ जाव॰। कतला एक थकी। जाव॰। गुणाकार थकी। यहां व्यवह्रि
दसविहा दसमुंडा य पं॰ तं॰ सोतिंदियमुंडे जाव फासिंदियमुंडे कोहमुंडे जाव लोभमुंडे सिरमुंडे दसवि
हे संखाणे पं॰ तं॰ परिकम्मं ववहारो रज्जु रासी कलासवन्ने य जावंतावति वग्गो घणो त तह व
ग्गवग्गो विकप्पोत
तसंकलनादि कहीआ तीइं। तेहनु उदाहरण। जेणाकिरिद मातणा एक हीइ॥ ते वाढा स्पष्ट कीजइ। एवोतानो बांधि
तगुणाकार स्पष्ट गणीइ॥ तउ जोतो करिआ वगुणपूं करीइ॥ तउ अनी थया। ते माहि आठ घाती इतवा बायुत की अक
तगुणाकार स्पष्ट गणीइ॥ तउ जोतो करिआ वगुणपूं करीइ॥ तउ असी थया॥ ते कीध इं आठ सेंनइं असी थया॥ ते वलि बि
हीइ॥ एतलइ ८८ थया॥ ते ८८ नउ गुणाकीजइ। तद सगुणाकीजइ॥ तदसनी संकिलित ५५ एपा हीगणि तसंकला
मणकीजइ ते छेमण इं कीधइ त्याले जाणहरीइं। तेहर तेह जेलासइ। तदसनी संकिलित ५५ एपा हीगणि तसंकला
इछइ॥६॥ वर्गते अरिथी विराम नउघात। जिमा बनउवर्ग ४ च्यार घनते कहीइ। जिमा बनो घन आठ॥ ते च्यारिथी
त्रिसिरासिनउघात। यथा॥ त्रिसि वर्ग ते मुलकहीइ॥ ते तउ गुणो की जइ॥ तेनव ते वर्ग ते वर्गमुल गुणो की जइ॥ ते
नव त्रिसि गुणा कीजइ २७ थया॥ ते घन कहीइ॥८॥ वर्ग वर्ग ते कहीइ॥ त्याबनउ वर्ग च्यार। ते हनउ वर्ग सोल॥
ते बिनी अपेक्षाइं सोल ते। वर्गनउ वर्ग कहीइ॥९॥ कप्पो॥ करवता दिकइं करी काष्टनुं छेदवुं। तेहनी संख्यानुं करवुं॥
त्यपाटीनइ विषइ करवत व्यवहार प्रसिद्ध छइ॥१०॥ इहों श्री अनत्य दिवसु रिकहइ छइ॥ परिक्रमादिक ए तला एक ना भेदा
हरणा छइ ते मइं नथी देखाड्या। ते दिषाडता मंदबुद्धि मइं काजइ इ शिस्म कुतां दाहिलो थाइ॥ मुंडक ह्या ते नो पक्षपा
णाधकीजइ॥ ते तणी पक्षपाणा कहइ छइ

अति०॥अति कुल प एाइ आ मर्यादाइ ॥ रव्या न० ॥ कहिवुं तत्र त्याख्यान निवर्त्तवुं ॥ ई त्यर्थः ॥ आगत तपकरवो णादिकनइ वि षइ ॥ आचार्यादिकनी वियावच्चनाकारणमाटइ ॥ अनागततपकरीनइ लीइ ॥ १ ॥ अतिक्रांत तपइ जकारणमाटइ ॥ पर्युषणादिकइ करइ ॥ २ ॥ कोडि० ॥ आरंभतांनइ मुकतांचतुर्थादिकनिकोटि ते बे छेहडा मल्या हुइ ते कोडिसहित ॥ ३ ॥ नियटितं० ॥ नियंत्रितात ॥ अतिग्रहकीधो हुइ ॥ जिस्यानादिकनउ वियावच्चअसक्तिपणिमइं मुकवउनही ॥ ४ ॥ सागार० ॥ अन्नत्थणाभोगणाइत्यादि ॥ आगारसहित ज पच्चरकाण ॥ ५ ॥ आगार तेहथी तरागारादिक आगाररहित ॥ तिहांपणि अन्नत्थणाभोगणेणं सहसागारेणं ए बे तो कहइ ॥ ६ ॥ मुष्ठनइ विषइ आंगुलीयादिके घालवा प्रमुख ॥ ६ ॥ परिमाणकडात दातिकवल तिस्याघरादिकनी संख्या ॥ निरवसेसं० ॥ चउविहाहार असनादिकनहीं तेसं

दसविहे पच्चरकाणे पं तं अणागयमतिक्कंतं कोडीसहितं नियंटितं चेव सागारमणागारं परिमाणकडे निरवसेसं १ संकेयकं चेव अद्धाए पच्चरकाणे दसविहे दसविहा सामायारी पं तं इच्छा मिच्छा तहाकारो आवसीता य निसीहिती आपुच्छणा य पडिपुच्छा छंदणा य निमंतणा १ उवसंपया य काले सामायारी भवे दसविहा तु ॥ १० ॥

घार ॥ संकेतात कहीइ जं अंगुष्ठमुष्टिग्रंथिघरादिक चिह्नसहित अभिग्रह ॥ अद्धा पच्चरकाण तेनउंकारसी आदि ॥ कालअ पच्चरकाण दस घलेइ कोडिबउ ॥ एदसविहपच्चखाण ॥ पच्चखाणतउ साधुनी सामाचारी छइ ॥ तेसणी सामाचारीकहइ छइ ॥ सामाचारी कहेतां व्यवहार ॥ इच्छाकार ते त्यतानोई छाइ करवुं । तम्हारी इच्छा हुइ तो माहोकं आकरो पणि बलात कारइ नहीं ॥ खोटा नुं करवुं ते मिच्छाकार ते साधि कांइ असमाचारी विपरीत आचरिइ । अनाचार खमावुं करइ एचुकउ न कीधुं ॥ मिच्छामिदुक्कडं दइ ॥ २ ॥ तहाकार ते सुत्रअर्थ आदिकनइ विषइ ॥ तिम्हइ कहिउ ते तिमहुउ ॥ इमाचार्यदिवेकते ते दहि मुकरवुं ॥ ३ ॥ ऊपाश्रयथकी नीकलतां आवस्सही ॥ ते एकार्यआवस्यक कहि ॥ तिसणी ॥ ४ ॥ बाहिर थकी आवता ॥ पइसतां निसिहीन लीइ ॥ ५ ॥ आपृछना ते गुरुनइ पुछवुं ॥ प्रतिपृछना ते पुर्वइं गुरुइ कार्य कहिउ छइ तिकरवानइ अवसरिइं वली पुछइ ॥ अथवा पुर्वइं निषेध्युं हुइ ते करवानइ अवसरि इं वली पुछइ ॥ ७ ॥ छंदणा ते पुर्वइं ग्रह्यां असनादिकइ ग्रह्यां हुइ ते साधुकरी आमंत्रवुं ॥ ८ ॥ निमंत्रणा ते असनादिकइ हुंमकहइ तुम्हनइ आणी आपीस ॥ ९ ॥ उपसंपदा ते कुंहस्यां रोबकं छइ ॥ अकहि वकं ॥ ज्ञानदर्शनचारित्रनइ अर्थि ॥ बीजा गछनो आचार्यनइ पुर्वलासुत्र छइ ॥ तेहनइ थिरकरवानइ अनइ त्रुटासो ध्रुवीनइ ॥ धुरथी भणवा ग्रहिवानइ ॥ दर्शन उपसंपदा पणि इमज ॥ नवर० दर्शनप्रभावकसुमत्यादि ॥ शास्त्रनइ अर्थि ॥ चारित्रउपसंपदा तवैयावच्चकरवानइ काजइ ॥ १० ॥ २५५

इसाभाचारीमहाबीरइंकही ॥ तेसणीमहावीरजो सेवउ ॥ छउमत्थ० ॥ छद्मस्थकालइ सवा ॥ अवस्था बद्धमानकालिकी तस्यां ॥ अतिमराइयंसि ॥ अंतिमा अंतिमभागरूपा वयाव ॥ समुदाया प्रचार सा चासौ रात्रिका चांतिम रात्रिका तस्यां रात्रिइं वरात इत्यर्थः ॥ दसस्वप्नातनिद्रानइ विकारइं जणाव्या ॥ अध्विसेष ॥ एकअंति रौद्ररूपअआकार ॥ दित्त० ॥ उल्लतं अथवा दर्पसहित धर० ॥ एहवा आकारनउधरणहार ॥ लोकप्रसाइं तालसरिषउ ॥ पिसाच तेराक्षस ॥ सुमिणे० ॥ स्वप्ननइ विषइं ॥ पराजिए० ॥ जीत्यो ॥ १ ॥ पुंसकोइ० ॥ पुरुषकोकिला तकाला ऊ ॥ पणि एसु लं पांष नउ ॥ २ ॥ चित्र० ॥ चीत्रामइंकरी विचित्र ते विविधवर्णसहित

समणे णं भगवं महावीरे छउमत्थकालियाए अंतिमराइयंसि इमे दस महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे तं एगं च णं महाघोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुमिणे पराजितं पासित्ता णं पडिबुद्धे ॥ १ ॥ एगं च णं महं सुक्किलपरकगं पुंसकोइलगं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ॥ २ ॥ एगं च णं महं चित्तविचित्तपरकगं पुंसकोइलं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ॥ ३ ॥ एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ॥ ४ ॥ एगं च णं महं सेतं गोवग्गं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ॥ ५ ॥ एगं च णं महं पउमसरं सव्वतो समंता कुसुमितं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ॥ ६ ॥ एगं च णं महं सागरं उम्मीवीचीसहस्सकलितं भुयाहिं तिन्नं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ॥ ७ ॥ एगं च णं महं दिणयरं तेयसा जलंतं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ॥ ८ ॥

पांष ॥ ३ ॥ दामदुगं० ॥ बे माला ॥ ४ ॥ गोवग्गं० ॥ गोरूप ॥ ५ ॥ जिहमाहिं पद्म कमल हुइ ते पद्मसर ॥ सव्वत० ॥ अपिता दिसिनइ विषइ ॥ समंता० ॥ विदिसिनइ विषइं सघली ॥ कुसुमियं० ॥ पद्मरूपकुसुमकंपनाथमाहिं ॥ ६ ॥ ऊर्मि त्यकल्लोलतरूपाज ॥ वीचो ॥ अथवा ऊर्मि ते मोटा लिहिर ॥ वीची ते लघुलहिर ॥ किहांएकवीचीमहानवीतेहनइ सहस्रइं करी तरंगरूपसहित तेहनइ भुजाइं करी तार्यु ॥ ७ ॥ दिनकर ते आदित्य ॥ ८ ॥

आणंगवा
लोयंसि

एगंचणंमहं॥ एमो वउमानुयो तरयवति॥ हरि वेरु०॥ नीला वैडुर्यनावर्णसरीषो वरणिया तानइं आंतरडइं करी॥ आ० एक वार वीटउं॥ परिव०॥ अनेक वार वींटिउ॥ ए॥ सिह॥ ओ हो समणमाहिं जिवरप्रधान तिहां गत॥ स्थितो॥ १० दिवसइ दससुपन नाफलकहइ छइ॥ मुलउ०॥ धुरिथीसर्वथी॥ उग्घा॥ विणसुं आगलि विणसस्यइ॥ तिसइणी विणासुं जिकहोइ॥ स्वसिद्धांत परसिद्धांतगणि०॥ आचार्यनी पटीनी परिइं पटी वीणी आनो परिइं स्तवधं नन्नउ वीम॥ आघवति॥ सामान्यअनइं वि

एगं च णं महं हरि वेरुलितवन्नाभतेणं नियएणं अंतेणं माणुसुत्तरं पव्वतं सव्वतो समंता आवेढिय परिवेढितं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे ९ एगं च णं महं मंदरपव्वात मंदरचुलियात उवरिं सीहासणवरगयमत्ताणं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे १० जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसातं सुमिणे पराजितं पासित्ताणं पडिबुद्धे॥१॥ तं णं समणेणं भगवया महावीरेणं मोहणिज्जे कम्मे मूलउ उग्घाइते॥१॥ जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सुक्किलपक्खगं जाव पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं महावीरे सुक्कज्झाणोवगाते विहरइ॥२॥ जं णं समणे भ० एगं महं चित्तविचित्तपक्खगं जाव पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं महावीरे ससमयपरसमयइयं चित्तविचित्तं दुवालसंगं गणिपिडगं आघवेति पन्नवेति परूवेति दंसेति निदंसेति उवदंसेति तं आयारं जाव दिट्ठिवातं॥३॥ जं णं समणे भगवं एगं महं दामदुगं सव्वरयणामयं जाव पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं महावीरे दुविहं धम्मं पन्नवेति तं। आगारधम्मं च अणगारधम्मं च॥ जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं दास

सध॥ पन्नवइ०॥ सामान्य कहिउं॥ प्ररूपइं तेसुत्रनइं अर्थविकुमइं कहिवइं॥ दंसेइ०॥ प्रतिलेखनादिक॥ क्रियानइं देषाडवइं जे एक्रियाइमकीजइं॥ निदंसइ०॥ अशासमकतानइं अनुकंपाइं करी वली वली देषाडइ॥ उवदं०॥ सकलनयमुक्तकरी कहइ॥ २५६

वज्रवंसि ते अमणा दिवच्यार॥ तेणइं करीनइं आकीर्ण व्याप्ताजे संघ अथवा व्यारिप्रकारिं जे संघ तेहना तिकमुणीकरी व्याप्त॥ च उव्विहदे०॥ च्यार प्रकारना देवता॥ वंदनकातादिकनइं प्रयोजनइं आव्यात प्रतिइं॥ पन्न०॥ जीवाजीवपदार्थ जणावइं॥ सभामांहीं आपइं सविक तिइं॥ अथवालोकप्रतिइं देवतानइं प्रकासइं॥ जं प देवताच्यार प्रकारना॥ अरंगत॥ जानमा हिं निवा घाए०॥ निरावरणे॥ कसिणे॥ पडिपुन्ने॥ केवलवरनाणदंसणे॥ देवता विमानीक ज्योतिकी॥ मनुज ते मनुष्य॥ सुरा ते

त्तं गोवग्गं सुमिणे जाव पडिबुद्धे तं णं समणस्स भगवओ महावीरस्स चाउवण्णाइन्ने संघे तं समणा समणीओ सावगा साविगाओ॥५॥ जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं पउमसरं जाव पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं महावीरे चउव्विहे देवे पन्नवेति तं भवणवासी वाणमंतरे जोइसिए वेमाणिए॥६॥ जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं उम्मीवीची जाव पडिबुद्धे तं णं समणेणं भगवया महावीरेणं अणादीते अणवदग्गे दीहमद्धे चाउरंतसंसारकंतारे तिन्ने॥७॥ जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं दिणकरं जाव पडिबुद्धे तं णं समणस्स भगवतो महावीरस्स अणंते अणुत्तरे जाव समुप्पन्ने॥८॥ जं णं समणे भगवं एगं महं हरि वेरुलित जाव पडिबुद्धे तं णं समणस्स भगवातो महावीरस्स सदेवमणुयासुरे लोगे उराला कित्तिवन्नसद्दसिलोगा परिभुवंति इति खलु समणे भगवं महावीरे इति २॥ ९॥ जं णं समणे भगवं महावीरे मंदरपव्वात मंदरचुलियाए उवरिं जाव पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं महावीरे सदेवमणुयासुराते परिसाते मज्झगाते केवलिपन्नत्तं धम्मं आघवेति पन्नवेति

तथा इ निरंतर समइ इ अर्थः॥ अथवा अनादि आबालिकाइं अद्धा॥ मार्गांत विषसिसंतिछइ॥ तम्म॥ भगवान सर्वज्ञानी॥ सर्वदर्शी॥ सर्वसंसयविछेदीस र्वसमरइ। तेसाधानी नाघा॥ सर्वजगजीव वच्छल॥ सर्वगुणवंतना समुद्रमां हि चक्रवर्ति॥ सर्वमनुष्यादिकइं नइं समुहइं। स चितवरता सुगलामहावीर यदवकनाम। इसीउ विचारकहि॥ तेथसना बालनारनइं असतआदरजाणवानइं। अन इथ नाम बालनार घणा छइ॥ सत्राद पवानइ अनसरि इ भगवंत। सहागसम्यसम्य दृष्टी कुला॥ ते नाणी सहागसम्य॥ ञ्छ करइ छइ॥ १०॥

भवनपति
विंतर। त
राइ केवीन
इ सहित॥
तिलोय॥
त्रिभुवन
रूप॥ आ०
प्रथमका
र्तितस्सर्व
दिसिथ्या
पीतसाधु
वादि तरु
इत्र बोल
इ॥ वर्णति
एक दिसि
व्यापी॥ स
व्रतअर्द्ध
दिसिव्यापी
॥ श्लोकनेते
णइ॥ श्लो
नइ श्लाघा॥
परिभुवेति
॥ व्याकु

DR. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी इत्यस्य स्मारकम्

सरागसम्यक्त्वतेहउपसांत क्षीणमोहनुं दर्शन ते तत्वनुं सद्दहिवुं ॥ सरागीनुं। सम्यक्त्व। रुचिसद्दहा सरागीना लिजीइ ॥ निसर्ग० ॥ स्वभावतेणइं करीनइं ॥ रुचि ॥ तत्वनइं अभिलाष ॥ जातीस्मरणादिकं करी सहु तजीवादिकपदार्थ सद्दहइ ॥ ते निसर्गरुचि इति भाव ॥ यदाह ॥ जो जिणदिट्ठे० ॥ १ ॥ उपदेस ते गुरादिकनुं कहवुं ॥ तेणइं करीनइ रुचि ॥ जो जिनोक्त ॥ जीवादिकपदार्थ तीर्थंकरे अनइं तीर्थंकरना सब्यादिकनाउपदेस थी सद्दहइ ते उपदेसरुचि ॥ यदाह ॥ एए चेव उ भावे ॥ २ ॥ आज्ञा ते सर्वज्ञनी तेणइं करीनइं रुचि ॥ जे हनइं मातलो रागद्वेष मिथ्या अज्ञान जाइ ते आचार्यादिकनी आज्ञाइं करी कदाग्रहनइं अभावइं जीवादिपदार्थ रोचवइ ॥ माषतुसादिनी परिइं ॥ ते पिण तं च ॥ रागो दोसो मोहो० ॥ १ ॥ ३ ॥ सूत्र रुचि ते सिद्धांतइं करी रुचि ते सूत्र सुणतो ॥ अंगप्रविष्टादिक तेणइं करी सम्यक्त्व पामइं गोविंदवाचक वत ॥ अहितं च ॥ जो सुत्तम हिज्जीतो ॥ १ ॥ ४ ॥ बीजनी परिइं बीज। जे एक बाल अनेक अर्थ जाणवइं। तेणइं करी रुचि ॥ जे णइं करी एक जीवादिपदार्थ जो

जाव उवदंसेति १० दसविहे सराग सम्म दंसणे पन्नत्ते तं निसग्गुवातसरुती आणारु ती सुत्तबीतरुति मेव अभिगम विछाररुती किरियासंखेव धम्मरुती ॥१॥ दससन्नाओ पं० तं०

णाइं ॥ अनेक पदार्थनइं विषइं ॥ रुचि ते बीजरुचि ॥ एगपदा अणेगाइं० ॥ १ ॥ ५ ॥ अभिगमरुचि ते ज्ञानी कहुं करीनइं रुचि जेहनइं ते आचारादिक अनइं अर्थ विकल्प जाणि जाइ ते जाणवा ॥ पुर्वक अभिगमरुचि कहीइ ॥ सो होइ अभिगमरुई ॥ ॥ ६ ॥ विस्तारथकी रुचि ते विस्ताररुचि ॥ ते धर्मास्तिकायादिकना पर्याय ॥ सर्व नयंइं करी जाणपा कहइं ॥ ते ज्ञानानुसारी रुचि ॥ दव्वाणसव्वभावा० ॥ १ ॥ ८ ॥ क्रिया ते अनुष्ठान तिहां रुचि जेहनइं ते क्रियारुचि ॥ ते दर्शनाचारादि अनुष्ठाननइं विषइ ॥ जेहनइं भावथकी रुचि कहइं ॥ नाणेण दंसणेण य० ॥ १ ॥ ८ ॥ संक्षेपरुचि ते संक्षिप्त वइं रुचि ॥ ते णाइं कपिलादिक पांच दर्शन पडिवज्युं नथी ॥ अनइ जिनप्रवचननइं विषइ अप्रवीण ते संक्षेप पदइं करी चिलातीपुत्रनी परइं ॥ उपशमादिपद त्रिणिं करीत त्वरुचि पामइ ॥ इति भावः ॥ अणभिग्गहियकुदिट्ठी० ॥ १ ॥ ९ ॥ श्रुतादिकनइं विषइं रुचि कहइं ते जेहनइं ते धर्मरुचि ॥ ते धर्मास्तिकाय सद्दहइं ॥ श्रुत धर्मनइं चारित्र धर्म जिनोक्त सद्दहइ ॥ जो अत्थिकायधम्मं० ॥ १ ॥ १० ॥ सम्यक्दृष्टि जइं ते द २५७
स संज्ञा न ३ छइ करइं ॥ तेमणां संज्ञा नुं सूत्र ॥ संज्ञा० ॥ जाणवु ॥ अ लोइ मकहइं छइं। मन नुं विज्ञान ॥ ते त्याग आहारादिक नउ अ

र्थी पणाइ करीनइं जाणी इं जीवा ते संज्ञा ॥ क्षुधा वेदनी उदयइं थकी उपजइं आहार संज्ञा ॥ ते र वेदनी नाउद इ थकी भयते त्रासना चित्त नी संज्ञा ॥ स्त्रीयादिकना अंगादिकनउ अभिलाष ते मैथुन संज्ञा लोभना उदयथकी रागइं धर्मोपगरण ता दिकवस्तु ग्रहवानी इच्छा ॥ ते परिग्रह संज्ञा ॥ क्रोधनइं परिणामइं क्रोधसंज्ञा ॥ इम मान माया लोभ ॥ मतिज्ञाना वरणादिकनइं क्षयोपसम थी सद्दादि विषयनां सामान्य जाणवुं ते ओघ संज्ञा ॥ तेहज विसेष पणइं जाणवा रूप ते लो कसंज्ञा ॥ ओघ संज्ञा ते दर्शन उपयोग ॥ लोकसंज्ञा ते ज्ञान उपयोग ॥ अनेराइम कहइ छइ ॥ वली अन राइ मकहइ ॥ सामान्य प्रवृत्ति ते ओघसंज्ञा ॥ अनइ लोकदृष्टि ते लोकसंज्ञा ॥ ए संज्ञा प्रगटपणइं पंचेंद्री आश्री कही इ छइ ॥ अनइं एकेंद्री यादिकनइं संज्ञा नाल क्षण नो ए कारण ए कर्म छइ ते हनाउदइ थकी परिणाम कहइ छइ ॥ एसं

आहारसंन्ना जाव परिग्गहसन्ना ४ कोधसन्ना जाव लोभसन्ना ८ लोगसन्ना ९ ओहसन्ना १० ॥ नेरतिताणं दससन्नाओ पं० चैव एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं २४ नेरईयाणं दसवि हा वेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति तं सीतं १ उसिणं २ खुहं ३ पिवासं ४ कंडुं ५ परज्झं ६ भयं ७ सोगं ८ जरं ९ वाहिं १० दस ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं न जाणति न पासति तं धम्मत्थिगातं जाव वातं अयं जिणे भविस्सति वा णं वा भविस्सति अयं सव्वदुक्खाणमंतं करेस्सति
×वा६ वा णं करेस्सति एताणि चेव उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेस्सति वा
वेदना ते सीतादिक वेदना ते बोधना नरगनइ विषइ ॥ उष्ण ते पिहली आदिकनइ विषइ ॥ परझं ॥ परवस्यपणु ॥ सो कते दीनपणुं ॥ जीरा ते बुढपणु ॥ व्याधि ते ज्वर कुष्ठादि ॥ ए वेदनादिकनइ अरूपी अर्थ जिन जाणइ। छद्मस्थ न जाणइ। ते मणां इं कहइ छइ ॥ छद्मस्थ ते ईहां अतिसय ज्ञान रहित लेवो ॥ ए मणां अवधि ज्ञानी परमावधि जाणइ ॥ ते मणां इं कहइ छइ ॥ सवि भाव ते सर्व प्रकारिइं करी फरस रूप रसगंध नइं। जाणवइं करी घडानी परिइं ॥ जीवमां हि धर्मास्तिको जाणइ छइ ॥ सव्व भाव ते सर्व प्रकारिइं करी फरस रूप रस गंध नइं। जाणवइं करी घडानी परिइं ॥ लेइ नहीं घाइ ते छद्मस्थ य। आकास्तिकाय। जीवअसरीरप्रतिबद्ध ॥ गंध ॥ अयं ॥ प्रत्यक्ष जिन केवली थास्यइ। लेइ नहीं थाइ ते छद्मस्थ

ज्ञा सर्वज्ञो वे नइ विषइ ॥ युग्वा सि इं हुं किंइं करी कहइ छइ ॥ निरं तर २० ॥ जिम नार क सूत्र इ ॥ संज्ञा ति म एम य वि मानीकादि नइं विषइं त्यर्थ ॥ अ नंतर सूत्रइं विमानीक कह्या ॥ ते त उ सुपालाग वइ छइ। ते दृष्टी विपरी ते दुषा वेदना अनुभवताना र कीहा इड छइ ॥

नज्जाणइं॥ तत्र अतिसयपणाघकी जिम जाणइं॥ जावमाहिंजिणो अरहा केवली सव्वन्नु सव्वभाव जाणइ पासइ॥ तं जहा धम्मत्थिकाय इत्यादि संबंध॥ सर्वज्ञपणाघकी उ डिनइ अरूपी पदार्थना उदाहरण॥ सुत्रपरूप्यां तदसवाण इकस्यइ छइ। सुत्र ११ दसाउ॥ दसविहअधिकारनां कहिणार॥ अशुभकर्मनउ विपाक॥ फल तेहनां कहिणारी॥ दसअध्ययनरूप तत्कर्म विपाकदसा॥ तत विपाक श्रुत॥ अग्यारमुं अंग तेहनउ प्रथम श्रुतस्कंध। बीजइ श्रुतस्कंधइ दसअध्ययन छइ पणि ते इहां नथी लेखव्या। तत्र आगलिकदेखाडइ॥ साधुनइ सेवइ ते उपासक॥ श्रावक॥ तेहनी क्रियाकलाप बांध्या अध्ययन दस तद्रूपा दसा॥ उवासगदसा सप्तमं अंग॥ अंत॥ कर्मनउ विनास अथवा तेहनुं फल संसार। तेहनउ अंत कीधो जेणइं। ते तीर्थंकरादिक तेहनी वक्तव्यदसा अंतकृतदसा॥ इहां अष्टमा अंगनइ पहिलइ वर्ग

णवा करस्सति दसदसाउ पं तं कम्मविवागदसाउ उवासगदसाउ अंतगडदसाउ अणुत्तरोववाईतदसाउ आयारदसाउ पन्हावागरणदसाउ बंधदसाउ दोगिद्धिदसाउ दीहदसाउ संखेवितदसाउ॥१०॥ कम्मविवागदसाणं दसअज्झयणा पं तं मियापुत्ते त गोत्तासे अंडसगडे तिया वारमाहणे णंदिसेण त सुरित तत उंबरे॥१॥ सहस्सुदाहे आमलते कुमारे लच्छती तित उवासगदसाणं दसअज्झयणा पं तं आणंदे १ काम

अनुत्तर प्रधानतिक सर्वार्थसिद्धादि विमान पांचमांहिं नउ उपजण हार ईत्यर्थः॥ तेहनइं संबंधइ प्रतिबद्धदसा॥ अध्ययनरूप अनुत्तरोपपातिकदसा। नवमुं अंग॥ आचारतिज्ञानादि पांच तदि॥ तेहनी उत्कृष्टि णहारीदसा दस अध्ययनरूप तिआचारदसा॥ दसाश्रुतस्कंध प्रसिद्ध॥ प्रश्न॥ पृछा॥ व्याकरण॥ पडुत्तर तेहनी कहनारी उदकअध्ययनरूप ते प्रश्नव्याकरणदसा दसमुं अंग॥ तथा बंधदसा॥ द्विगृद्धदसा॥ दीर्घदसा॥ संक्षेपिकदसा॥ ए श्री अव्याद्यत सुरिकहइ छइ। अप्रसिद्ध छइ॥ कर्मविपाकदसा नउ हवइ विभागकहइ छइ॥ दसदुःखविपाकीयां हिवडां छइ॥ तेन वृंदे लोहीए लीए तिके नामा अध्ययन सात मुं छइ। तविपाकमांहि गुंथमु छइ॥ सहस्सुदाहे॥ अकस्मात कूता उहादाहात॥ अ ... सत्यवालो कमन दाह॥ आमलो ए॥ ... कारे पंचमु अध्ययन॥ कुमार॥ राजयोग॥ अथवा॥ प्रथम लच्छ ... लिछइं॥ राउ कुमार अपवाद णी आनापुत्र आदित बारणा ... कुमार श्री दसमुं अध्ययन॥ उव सदारा विवरइ छइ॥

गिद्धिदसअध्ययनछइ॥ तसैाणंअपघाइ॥ अंतकृत दसाएहघ कीप्रधान नथी आनुकूं ते अनुत्तर॥ उपपात॥ जन्म॥ प्रधान उपपात ते अणुत्तरोपपात॥ एहवो अनुत्तर जेहनइं जन्म छइ॥

२५८

दुःखसनक॥ महासतकनी आपेक्षाइ थ ॥ लघुसतद॥ हवइ अंतगड इत्या विवरइ छइ॥ इहां जैनमी आदि दस अध्ययनकह्यां छइ तेअंतगडनइं पहिलइ वर्गि नथी लाभतां। तिहांइम छइ॥ गोयमसमुद्दसागरे॥ गंगीर थेवकूदृ स्विमिए य॥ अयले कंपिल खलु॥ अखोभपसेणइं विण्हू॥१॥ तसंणी नमीआदि नांमतवाचनांतर संस्था वीइ छइ॥ पणि इमन कहि वुहउ एनां मजन्मांतर नादेस्यइ॥ सलंतिहां पुर्वसर्वेनउ संबंध छैनहीं॥ अणुत्तरोववाईदसा विवरइ छइ॥ इमनकिं पुणनहि वुद्धयनां मजन्मांतर नो सम्यइ॥ ए गलोग माहिंलां नाम अनइ अणुत्तरोववाईनां नोउ जावर्गनां नाम। वृतलो एकमिलइ छइ। विंतलां एक मिलतां नथी॥ जिहां इमकहिउं छइ॥ धन्नसुनक्खत्त॥ अइहा स्सय आदिए॥ एसपरा मणमत्थय॥ वेदिमाहि

दिवे॥१॥ गाहावति चुलणीपिताई सुरादेवे चुल्लसतते॥ गाहावति कुंडकोलिते सद्दालपुत्ते महासतते णंदिणीपिता सालतिता पिता अंतगडदसाणं दसअज्झयणा पं तं णमि मातंग सोमिल रामगुत्ते सुदंसणे चेव जमाली त भगाली त किंकम्मे चिल्लत तिय फाले अंमडपुत्ते त एमतेदसआहिया अणुत्तरोववातियदसाणं दसअज्झयणा पं तं ईसिदास य धन्ने त सुणक्खत्ते कत्तिते संठाणे सालिभद्दे त आणंदे तेतली तित्ते दसन्नभद्दे अतिमुत्ते एमतेदसआहिया आयारदसाणं दसअज्झयणा पं तं वीसं असमाहिठाणा एगवीसं स

बला॥ ... एपदालपुत्ते अणगार॥ अणगार पोट्टिलेइय॥ विहल्लेदसमे वुत्ते। एमतेदसआहिए॥२॥ तेतलीनी तां णइमांहिलां नांम ते वाचनांतर नो जाणवा॥ भगवतीमांहिं कार्तिक सेठ हसकंड नउ जीवकह्यो छइ तेज उ अनइ आकार्तिक उ पजनणी आ अणुत्तर सुरथयो॥ संगमामां दानथकी सालिभद्र थयो॥ त्रिणकाइ वरा गे दीक्षा सर्वार्थ मुकी वीरसमी पि ... ते अनुत्तर विमानइ गउ॥ इहां अउ तेतली एनहीं। ते तो मुक्ति पुहुतउ॥ प्रसिद्धदसार्णभद्र ते सत्तावतउ मथी॥ जिल एण ते तउ कि प्रसंन छोइ छइ॥ अंतगड माहिं अइमुत्तउ कहिउ। तिहां वरसनउ दीक्षो लई सीझो॥ अनइ आ अइमुत्तउ अनेरउ विमानइं उपनउ वइ॥ तसणी इउ दस आहिया॥ अनुत्तरोववाईनो दसं अध्ययन कह्यां॥ हिवइ आचारदसानउ विभाग कहइ छइ॥

असमाहि०॥ द्रुतत्वादिक तावनउ विधि अप्रशस्त स्थानक स्पर्शि॥ तेहनो त्यस्थानक कहतो पद॥ त्यस्थानक आसेवइ परनइं पोतानइं विकृतनइं॥ इहलोकं परलोकं असमाधि ऊपजइ तेउ तावलां चालवादिकनुं कहण हो रूं त्य अध्ययन ते असमाधिस्थानक॥१॥ सबल०॥ क्राबरूं तेउ अवस्थावस्त्रादिक॥ सावद्यक्रीआ ती चार बारित्र॥ तेकरकर्मप्राकारो तेरमैथुनादिक एकवीसपद तेहनुं कहण हार्क सबल अध्ययन॥२॥ आ०॥ समस्त प्रकारिं ज्ञानादिक गुणे॥ सातना०॥ अपध्वंसाइं जेणं इं करीनइं॥ तेआसातना। गुर्वादिकनो अविनय॥ आगलि चालवादिक॥३॥ आचारश्रुतश्रीर वाचनादि॥ अष्टविध आचार्यनी संपदा जिहांकहइ॥४॥ त्यश्रुतइं चित्त प्रसस्त थाइ ते चित्तसमाधि॥ अणुपन्नी पुर्वइं धर्मचिंतादिक जिहां कहीइ॥५॥

बला। तेत्तीसं आसायणाओ। अट्ठविहा गणिसंपया। दस चित्तसमाहिठाणा। एगारस उवासगपडिमाओ। बारस भिक्खूपडिमाओ। पज्जोसवणाकप्पो। तीसं मोहणिठ्ठाणा। आजाइट्ठाणं। पण्हावागरणदसाणं दस अज्झयणा पं० तं०। उवमा। संखा। इसिभासियाइं। आयरियभासियाइं। महावीरभासियाइं। खोमगपसिणाइं। कोमलपसिणाइं। अद्दागपसिणाइं। अंगुट्ठपसिणाइं। बाहुपसिणाइं। बंधदसाणं दस अज्झयणा पं० तं०। बंधे य मोक्खे य देविड्ढि दसारमंड

इग्यार श्रावकनी प्रतिमा जिहां कहीइ॥ बार साधुनी प्रतिमा जिहां कहीइ॥ पज्जोसवणा०॥ ऋतुबद्ध आठ मास तेहनी पर्यायि। उत्कृष्ट त्रकाल स्थावरं बेधोआं छांडीइं॥ त्य हनइ विषइं ते पर्युषणा॥ अथवा परिसर्वथाप्रकारि क्रोधादिक जेहनइं विषइ उपसमीइ जिहां ते। पर्युसमना॥ अथवा॥ परि०॥ सर्वथा एकक्षेत्रमइं विषइ उत्कृष्ट ७० दिन॥ उत्कृष्ट चउमास लगइ रहीइ ते पर्युषणा तेहनुं त्यकल्प०॥ आचार ते पर्युषणाकल्प॥ अथवा पर्युपसमनाकल्प॥ अथवा पर्यासवना कल्प ते॥ साधुसंबंधी बिगइ नवचर्ड्यादिकनु कहण हार अध्ययन आठमुं॥ त्रीस मोहनीकर्मबांधवानां स्थानकनुं कहण हारुं अध्ययन ९॥ आजाइट्ठाण०॥ आजाति०॥ उपजवुं तेहनुं त्यस्थानक ते संसार ते नियाण सहित नइं होइ एहवा अधिनुं कहनारुं अध्ययन १०॥ प्रश्नव्याकरणदसा ... तेतो लाभतो नथी॥ ... तेमांहि तो ए अधिक

नइं संवरना अधिकार छइ॥ पसिणाइं०॥ प्रश्नविद्या खोमाइं ... वस्त्रादिकनइ विषइ देवता आवीइ॥ अद्दाग०॥ आरीसो॥ अंगुठो। बाहु ते स्पष्ट॥ ए उपमादि अध्ययन ते अक्षरार्थ प्रसिद्ध॥ बंधदसाना प्रणि बंधादिक दस अध्ययन गुरु परंपराइं कहिवां॥ द्विगृद्धदसा ते उलाभती जनथी॥ दीर्घदसा तो स्वरूप घकी जाणो नथी॥ तेहना अध्ययन केतलां एक निरावलिका श्रुतस्कंधमांहिं लाभइ छइ॥ ते चंद्रमानुं सूर्यनुं शुक्रनुं॥ श्रीदेवीनुं प्रभावतीअध्ययन तेउ। निरावलिकामांहिं छइ॥ संभूतिविजय स्थविर ते। सउबाहुस्वामी तेउ गुरुभाई॥ सगडाल पुत्र स्थूलभद्रनउ दीक्षादाता ते

लितित्ति। आयरियविप्पडिवत्ती। उवज्झायविप्पडिवत्ती। भावणा। विमुत्ती। सासतकम्मे। दोगिद्धिदसाणं दस अज्झयणा पं० तं०। वाते विवाते उववाते सुक्खेत्ते कसिणे बायालीसं सुमिणा तीसं महासुमिणा बावत्तरिं सव्वसुमिणा हारे रामगुत्ते य एमेते दसआहिया। दीहदसाणं दस अज्झयणा पं० तं०। चंदे सूरे सुक्के त सिरिदेवी पभावती दीवसमुद्दोववत्ती बहूपुत्ती मंदरे ति थेरसंभूतविजए थेरपम्ह ऊसासनीसासे। संखेवितदसाणं दस अज्झयणा पं० तं०। खुड्डिया विमाणपविभत्ती महल्लिया विमाणपविभत्ती अंगचूलिया वग्गचूलिया विवाहचूलिया अरुणोववाते गरु

डनुं अध्ययन नउमुं॥ एस त्रिणि अप्रसिद्ध॥ संक्षेपकदसा तेउ स्वरूपथकी जाणी नथी॥ तेहना अध्ययन नउ अर्थप॥ खुड्डिया०॥ आवलिकाप्रविष्ट ते पंक्तिबद्ध अनइं पुष्पावकीर्ण विमान तेउ॥ प्रविभक्ति०॥ विचार जिहां कहीइ॥ थोडो ग्रंथार्थ छइ जेहनउ॥ ते खुल्लिका विमानप्रविभक्ति॥ अनइं महाग्रंथार्थ छइ जेहनउ॥ ते महती विमानप्रविभक्ति॥ अंगते आचारांगादि॥ तेहनी चूलिका ते अंगमांहि जे अर्थ कह्या अनइं नकह्या तेहनो संग्रह ते हारी चूलिका॥ जिम आचारांगनी चूलिका अनेकविध तिमअनेरा अंगनी॥ वर्ग ते अध्ययनादिकनो समूह॥ जिम अंतगडमांहिं आठ वर्ग ते हनी चूलिका॥ विवाह०॥ भगवतीनी चूलिका॥ ते व्याख्याचूलिका॥ अरुणो० ... देव। नइं आविवानो हेतु॥ एहवां संबद्ध ते संग्रहमांहिं छइ॥ जिवारइं

साधु उपयोगी छतउ ते अध्ययन वारंवार सताई तिवारिइं अरुणदेवता अधिकार लगता मादइं तहनुं आसण चलइं॥ अवधिइं जाणीं चलवपलकुंडल नउधरणहार॥ दिव्यसंपदाआवी साधु नइं वोदइं॥ ऊसुमत छकरइ। हाथजोडी ऊत्तोरु लोसोनलइ पुरइंघपिंक हइं॥ सुसऊझ्यं सुसऊझ्यं॥ वरमागो॥ साधु मुक्ति। लोलालीनपणुं कोकोई मागइं नहीं॥ पछइं ते अत्यंतसत्वीवा दीपाछोवलइ॥ इमवरुणोपपा। दिकपाणि कहिवा॥ एहवा अकृततो कालविसेष विहजइ। ते लगी कालनुं सुत्र ३॥ कालतो दुष्मउत्कृदक्षइं॥ तेसणां नारकादिक जीव उव्यकहइंछइं॥ सुत्र २४॥ अतांत०॥ अांतरारहितवर्ग

णावबाति वरुणोववाति वेलंधरोववाति वेसमणोववाए दससागरोवम कोडाकोडीउ कालो उसप्पिणीति दससागरोवमकोडाकोडीउ कालो उस्सप्पिणीउ दसविहा नेरइया पं० तं० अणंतरोववन्ना परंपरोववन्ना अणंतरावगाढा परंपरावगाढा अणंतराहारगा परंपराहारगा अणंतरपज्जत्ता परंपरपज्जत्ता चरिमा अचरिमा एवं निरंतरं जाव वेमाणिया णं २४ चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढवीए दस निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता २ रयणप्पभाए पुढवी

मान समयना॥ उपपन्ना०॥ ऊपनां छहमइं जेहनइं एकसमय अतिक्रम्यो नेथीइं सर्वः॥ जेहनइं ऊपनां बिआदि समय थया छइ। ते परंपरा ऊपन्नक॥ अनइं एव क्षेत्रप्रदेसमी आपणाइं अांतरारहित प्रदेसइं अवगाह्या ते अमंतरावगाढ॥ अथवा जेहनइं अवगाहइं। एकज्यसमय थया छइ। ते अनंतरावगाढ॥ तेहथी विपरीत ते परंपरावगाढ एहिज अधिकार तेदि॥ जीवना प्रदेसथकी अांतरारहित। पुजलालइ नइं आहरइ। ते अणंतराहारक॥ अथवा जेहनइं आहारनी धइं एकज समय थया छइ ते। अनंतराहारको॥ जीवप्रदेसथकी जेअांतरइं॥ पुजल हत ते त्यातानादिक मांहिं आणीनइं॥ आहारइं ते परंपराहारक॥ अथवा बिआदि समय जेहनइं आहारलीधां थया छइ॥ ते परंपराहारक उव्यथकी तेह॥ जेहनइं पर्याप्ति बांधया अांतरुं नथी पयुं॥ एतलइ प्रथमै समइं पर्याप्ति पूरी करी ते णाइं समइं छइ। ते अनंतरपर्या प्तक॥ अनेरा ते परंपरपर्याप्तक एताउपकी तेह पर्याप्त तावछइ॥ तेसणा॥ नारकी नउ छेहलो भव छइ। बेली नारकी था

इंइक नइं धुरि नारककह्या॥ तेहनां आभव जे छद्दि तनइं किस्योतिक हइंछइं॥ सुत्र १८॥ अभंतर लीतकादवर्कथा। तेणाइं तेउसहइ करणा राधनारु णाकनो धर्मछइ। तेसणां सेटुनो कारणा कर्मकि हइंछइ॥ आगामिस्साप०॥ आगमिस्तवीतरि॥ रुडुं देवपणुं अनइं अनंतर रुडुं मनुष्यप णुपामइं॥ अनइं मोक्षनइं पामवइं सउ०॥ अनियाणठिइं०॥ छे दीइाय णाइं करी आनंदरमसहितामां सेवती॥ इेणादिकनी आ

तजहन्नेणं नेरतियाणं दसवाससहस्साइं ठिती पं० चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढवीए उक्कोसे णं नेरतिताणं दससागारोवमाइं ठिती पन्नत्ता पंचमाए णं धुमप्पभाए पुढवीए जहन्नेणं नेरइयाणं दससागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता असुरकुमाराणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ठिती पन्नत्ता एवं जाव थणियकुमाराणं बायरवणस्सतिकातियाणं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं ठिती पन्नत्ता वाणमंतराणं देवाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ठिती पन्नत्ता बंभलोए कप्पे उक्कोसेणं देवाणं दससागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता लंतए कप्पे देवाणं जहन्नेणं दससागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता दसहिं ठाणेहिं जीवा आगमिस्सिभद्दत्ताए कम्मं पगरेंति तं० अनिदाणताते दिट्ठिसंपन्नयाते जोगवाहियत्ताते खंतिखमणताए जितिंदितताते अमाइल्लताते अपासत्थताते सुसामन्नताते पवयणवच्छल्लयाते पवयणउब्भावणताए दसविहे आसंसपउगे पं० तं० इ

ए०॥ इंद्रीनइं निग्रहवइ करी॥ अमाइल्लयाए॥ मायावीपणा रहित॥ अपासत्थयाए०॥ ज्ञानादिकनइं देसथकी सर्वथकी जो हिरतिष्ठइ ते पासत्थो॥ देसथी। सिद्धांतरपिंड॥ अतिहड। नित्यपिंड॥ अग्रपिंड निःकारणाइं लागवइ॥ ७॥ सुसामन्नया ए०॥ पासत्थादिक दोषनइं वर्जवइं करी साधुतन श्रमणपणुं तेणाइं करी सउ०॥ प्रकृष्ट अथवा प्रसस्त॥ वेयन०॥ आगम॥ ते प्रवचन ह्यादसांगी अथवा तेहनउ आधार संघ तेहनुं॥ वात्सितादृतकारी पणउ प्रत्यनीकपणुं टालवुं तेणाइं करी सउ०॥ पवयणह्यादसांगी नुं प्रत्ता विवुं॥ तदर्मकथा वादी नीलगि करी यसनुं ऊपजाविवु तेणाइं करी सउ कर्म करइं॥ १०॥

स्पइस हीतस्य रस॥ तेह कोविपरी ततेअव रस॥ एह पणिनाव आश्रीतद दजाणवी॥ वरमाव रसप्रसुते जोविनी प र्यायइंइ तेसणा॥ इमविमा नीकलगि इ२४उउ कोबाल सापिवा॥

नाथ्याग मइंचिं छुइवइ॥ अथवाम घलाइंउ बरगम णारहित॥ जेसमा धित्याग तेहनइं करवइ॥ ३॥ घतीक्षम णाया ए०॥ क्षमाइंक रीघमवइं कोक्षमा नउग्रहि णाकहिउ ते अस्यर्म ईयणाइंच मवानिग्र धाजेताणा अस्यमर्थ० णाझमइ॥ ७॥ जिर्दिट

राधनारु पत्नेता॥ द वेजादिक नोकोकिनुं प्रायश्चार पञधस्व सायातरु पऊहाइइ करीतेनि याणुत्तन बीजेहनइं तेअनिदा नतेणाइं करी॥ १॥ दि ट्ठिसंपन्न याए०॥ ते णाइंकरीस म्यक् दृष्ट पणाइं करी॥ २॥ जोग वाहीयाए ०॥ सिद्धांत

९॰ तइनाकारणवअनिइकरणहारि। आसंसाप्रयोगनकरवउ॥ तेकहइछइ॥ आसंसा॰ इछाते तेहनउप्रयोग॰॥ तव्यापार तेकहवुं॥ इह॰ इहलोकितमनुष्यलोक॥ तेथकीविपरीत तेपरलोक॥ इहलोकनीआसंसाप्रयो
गतेएतपथकीहुंचक्रवर्तिप्रमुखथाउं॥ परलोक॰ एतपथकीहुंइंद्रथाउं॥ इहउलो॰ दु
इहइछइ तेहथकीइहलोकअनइपरलोकनीआसंसाएकवीछइ॥ परलोकनी॰॥ परलोकिकांइ
कहवाइ॥ इहउ॥ बिहुलोकिकांईएकवोछइ॥ ३॥ जीविया॰ तेहुंघणुंजीवीइइं॥ ४॥ मरण॰ सीघ्रमुझनेमरणहओ॥
कामासं॰ मनोज्ञसब्दादिकमाहरिहइउ॥ ६॥ भोगासं॰ गंधरसादिमाहरिहउ॥ ७॥ लाभासंस॰ तेकीर्तिश्रुतादिकनोलाभ

इहलोगासंसप्पओगे परलोगासंसप्पओगे दुहओलोयासंसप्पओगे जीवियासंसप्पओगे
मरणासंसप्पओगे कामासंसप्पओगे भोगासंसप्पओगे लाभासंसप्पओगे पूयासंसप्पओगे
सक्कारासंसप्पओगे दसविहे धम्मे पं० तं० गामधम्मे नगरधम्मे रट्ठधम्मे पासंडधम्मे कु
लधम्मे गणधम्मे संघधम्मे सुयधम्मे चरित्तधम्मे अत्थिकायधम्मे १० दस थेरा पं० तं०

मुझनइहओ॥ ८॥ पूयासंस॰॥ तेपुष्पादिकनीपूजामुझनइहओ॥ ९॥ सत्कारासंस तेप्रधानवस्त्रादिकें
करीमुझनइहओ॥ १०॥ एआसंसाथकीकोइएकधर्मआचरिइं तेतेहनोधर्मनुंसूत्रकहइछइ॥ ग्राम
लोकनोस्थानकतेहनउ धर्म॰॥ आचार तेस्थिति तेग्रामग्रामप्रतिजुईजुईछइ अथवाग्राम इंद्रियग्रामतेहनउधर्म॰ वि
षयाभिलाष॥ १॥ नगरधर्म तेनगरनोआचार तेनगरनगरप्रतिजुजुउ॥ २॥ राष्ट्रधर्मतिदेसाचार॥ ३॥ पासंडधर्मति
पाखंडीनउआचार॥ कुलधर्मतेउग्रादिककुलनउआचार॥ ५॥ अथवाकुलतेचांद्रादिकसाधुनागछनउस
मोहरूपतेहनउ॥ धर्मतेसामाचारी॥ गणधर्मतेमल्लादिकनीस्थिति॥ अथवागणतेसाधुनाकुलनउ
समुदायतेगणकोटिकादितेहनउधर्म॥ सामाचारी॥ संघधर्म॰ तेगणनिनउआचार॥ अथवासंघ॰ साधु
नासंघनउसमुदाय अथवाचतुर्विधसंघतेहनउधर्म॥ आचार॥ १॥ श्रुततेआचारांगादितेदुर्गतिपडतांप्राणी
नइधरइ तेश्रुतधर्म॥ चारित्रधर्म ... ॥ तेहीजअस्तिकायधर्म ... चारित्रधर्म॥ ...

दुर्भिक्षमांनइसमयारलिइंस्थितिकरइ ... ग्रामनाथेर॥ १॥ नगर॥ २॥ देस॥ ३॥ नइविषइबुद्धिवंत॥ औदेववन्तादिपाल्यामर्यादाना
करणहार॥ तेग्रामादिकस्थविर॥ ३॥ पसत्थार॰ धर्मनाउपदेसकसम्यग्ज्ञानादशासनहार तेहजोस्थविरकरवाथकीस्थविर॥ ६॥ त्यलौकिक
लौकिकोत्तरकुलगणसंघनीमर्यादानाकरणहार॥ गणदृशतेकुलादिकस्थविर॥ ७॥ जातिस्थविर॰॥ साठिवर्षनीवयनउ॥ ८॥
श्रुतस्थविरते॰ समवायांगादिनउधरणहार॥ ९॥ पर्यायस्थविरते॰ वीसवर्षनोव्रतिस्थिति॥ १०॥ स्थविरतेपोतानइआप्यान
ईपुत्रनीपरिइंपालइ। तिहांसूत्रकहइछइ॥ पुत्र॰ पितानइंपवित्रकरइ॥ अथवापितानीकीर्तिमर्यादापालइतेपुत्र॥ आत्मज॰ पो
तानाशरीरथकीऊपनोजिमरसउनइंआदित्ययशा॥ क्षेत्र॰ भार्यातेहथीऊपनउ॥ जिमपंडुराजानइंपांडवलोकरूढिइंतेहदंडो

गामथेरा नगरथेरा रट्ठथेरा पसत्थारथेरा कुलथेरा गणथेरा संघथेरा जातिथेरा सुयथेरा परिया
गथेरा १० दस पुत्ता पं० तं० अत्तए खेत्तए दिन्नए विन्नए उरसे मोहरे सोंडीरे संवुड्ढे उववाति
ते धम्मंतेवासी १० केवलिस्स णं दस अणुत्तरा पं० तं० अणुत्तरे णाणे अणुत्तरे दंसणे अणुत्त

सार्थकुंतेना॥ तेपुत्रपरिपालनानहीयसलोसुयीदिकं। सणाव्या॥ ३॥ दिन्नए॰ पुत्रपणइंदीधोजिमबाहुबलिनइंअनिलवेग
नंसलाइछइ तेपुत्रनोपरिइंपुत्र॥ ३॥ रमसथलइं॥ विन्नए॰ कलासीखव्यो॥ ४॥ उरसे॰॥ पुत्रनास्नेहरूपरसतेहनइवि
षइऊपनउ अथवापितानास्नेहरूपरसजेहनइविषइऊपनउ॥ अथवास्नेहथकीहृदयनइविषइवर्तइ॥ तेउरस॥
मोहरे॰ घणुंवचनबोलवइकरीपोतानइपुत्रपणइलेखवाइ॥ ६॥ सोंडीर॰ सूरपुरुषिइंसूरपुरुषनइंर
णकरवइवस्यकीधो। तेहनइंपुत्रपणइप्रतिबोधइं॥ जिमकुवलयमालानाकथानइंविषइं॰ महिंदुसिंघा। ति
धर्मनराजसुतसंभलाइछइ। अथवासर्वथातानाजिपुत्रपणइं॥ गुणनइंविसेषइंकरीकुसुमातेदष्टांत। तिहां
॥ विअए॰ पंडितअसत्यकुमारवत॥ उरसे॰॥ बलवंतबाहुबलनीपरिइं॥ सोंडीर॰॥ सूरवासुदेववत॥ अथवागर्वसहि
ततासोंडीर॥ संवुड्ढे॰॥ सोउनदिवादिकइंकरीवध्यारूपोअनाथपाल्यउतेपुत्र॥ ८॥ उववाइए॰ देवतावाऊंसेमागीलीधो
अथवासेवक॥ ९॥ धम्मंतेवासी॰॥ धर्मनइअर्थिइंसमीपिइंवसइईस्यो॥ १०॥ धर्मितेवासीपणितेहशिष्यनइपणिछइ॥
केवलीननही॥ अनुत्तरज्ञानादिपण्णथकीतेअणुत्तरकहइछइ॥ नथी अणुत्तर॰॥ नथीयेहथीअनेरुंप्रधान॥ तिज्ञानाव
रणीनाक्षयथकोज्ञानअणुत्तर॥ इमदर्शनावरणनाक्षयथकोदर्शन अथवामोहनीनाक्षयथकोदर्शन॥

= अस्तिका
यधर्म॰॥ प्र
देसनोउका
य॰॥ समुद
तेअस्तिका
य॥ तेहजइ
मीतिनइविषइ
इ॥ जीवपुद्ग
लादिकनइ
धरवाथकी
अस्तिकाय
धर्म॥ ...
गामधर्मादि
कनउस्थिविका
... उका
...
... स्थविर
कहइछइ॥
२६१ =

चारित्रमोहनीना क्षयथकी चारित्र ॥ ३ तो चारित्रमोहनीना क्षयथकी अनइ अनंतवीर्य पण थकी तप अनुंतर ॥ ४ उत्कृष्ट धर्मादि
रूपवीर्यांतराय ना क्षयथकी वीर्य अनुतर ॥ ५ इहां तपमुक्ति क्षमामुक्ति आर्जव मार्दव लाघव चारित्रना भेद छइ ॥ तचारि
त्रमोहनीना क्षयथकी हुइ ॥ तिसामान्यथी भेद इम दिहुं जुआ कह्या ॥ १ केवली तउ मनुष्य हुइ नइ कुरु तितरणा मनुष्य हो

त्त्वरित्ते अणुत्तरतवे अणुत्तरवीरिए अणुत्तरा खंती अणुत्तरा मोत्ती अणुत्तरे अज्जवे
अणुत्तरे मद्दवे अणुत्तरे लाघवे समत्तरसेस्रणं दस कुराउ पं तं पंच देवकुराउ पंच उत्त
रकुराउ तत्थणं दस महति महालया महादुमा पं तं जंबुसुदंसणा धातति रुक्खे महाधा
तति रुक्खे पउमरुक्खे महापउमरुक्खे पंच कूडसामलीउ १० तत्थणं दस देवा महिड्ढिया जाव
परिवसति तं अणाढित जंबुदीवाहिवती सुदंसणे पियदंसणे पोंडरीते महापोंडरीते पं
च गरुला वेणुदेवा १० दसहिं ठाणेहिं ओगाढं दुस्समं जाणेज्जा तं अकाले वरिसइ काले ण व
रिसई असाहू पूइज्जंति साहू न पूइज्जंति गुरूसु जणो मिच्छं पडिवन्नो अमणुन्ना सद्दा जाव फासा
१० दसहिं ठाणेहिं ओगाढं सुसमं जाणेज्जा तं अकाले न वरिसति तं चेव विवरीतं जाव मणुन्ना फासा
१० सुसमसुसमाएणं समाए दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्वमागच्छंति तं मत्तंगया य भिंगा तुडि
तंगा दीवा जोति चित्तंगा चित्तरसा मणियंगा गेहागारा अणियणा त ॥ १ ॥ जंबुद्दीवे २ भरहे वासे ती
अनउ सर्व मत्तंगया य ॥ मद्य ना कारण ॥ तुत तम मद्य आपइ १ भिंगा ॥ भाजनना कारण हे छी ॥ २ तुडितंगा ॥ वाजित्रना देनार ॥
३ दीव ॥ दीवाना कारण तेप्रकास हे छे ॥ ४ जोति ॥ अग्नि ॥ सुषमसुषम आरानइ विषइ अग्निनउ अभाव छइ तत्तगोणा अग्नि
परि प्रकासना कारण ॥ ५ चित्तंगा ॥ अनेक विध प्रधान फूलनी मालाना कारण ॥ ६ चित्तरसा ॥ विविध प्रकारना मधुरादि ॥
तहना कारण ॥ नाटक ॥ ७ मणिंयंगा ॥ ८ आभरण ना दाता ॥ ८ गेहागारा ॥ घरनइ आकारि ॥ अनियणा ॥ २६२
वस्त्र दाता ॥

कालना अधिकारथकी कालनि लक्षण ते कुलगरनी वक्तव्यता कहइ छइ कुलगर ॥ विसिष्ट बुद्धिना धणी लोकमर्यादाना
करणहार पुरुषविसेष ॥ इहां वर्तमान अवसर्पिणीनउ वर्णन लोपी दइ । स्युं तिहां सात कुलगर छइ किहां पंनर थकि
दीसइ छइ ते अनागत अधिकारथकी ॥ दस दसविदि कहइ छइ ॥ इहां हि ट्ठिया ॥ इहंडा वास छइ ॥ नउंमुं अनइ
तीताते उस्सप्पिणीते दस कुलगरा होत्था तं सयंजले सतायु अणंतसेणे य अजितसेणे
य कक्कसेणे भीमसेणे महाभीमसेणे य सत्तमे ॥ १ ॥ दढरहे दसरहे सयरहे जंबुद्दीवे २ भरहे
वासे आगमिस्साते उस्सप्पिणीते दस कुलगरा भविस्संति तं सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमं
धरे विमलवाहणे संमुत्ती पडिसुते दढधणू दसधणू सतधणू जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पु
रत्थिमेणं सीताते महानदीते उभतो कूले दस वक्खारपव्वता पं तं मालवंते चित्तकूडे वेसकूडे
जाव सोमणसे जंबुमंदरपच्चत्थिमेणं सीतोदाते महानदीते उभतो कूले दस वक्खारपव्वता पं तं
विज्जुप्पभे जाव गंधमादणे एवं धायइसंडपुरत्थिमद्धे वि वक्खारा भाणियव्वा जाव पुक्खरवरदीव
ड्ढपच्चत्थिमद्धे दस कप्पा इंदाहिट्ठिया पं तं सोहम्मे जाव सहस्सारे पाणते अच्चुए एतेसुणं दससु
कप्पेसु दस इंदा पं तं सक्के ईसाणे जाव अच्चुते एतेसिणं दसन्हं इंदाणं दस परिजाणिया विमाणा
पं तं पालए पुप्फे जाव विमलवरे सव्वतोभद्दे दस दसमिताणं भिक्खुपडिमा

इग्यारमुं एबादेवलोकि । इंद्र अधिष्ठ्या नथी ॥ जे स्वामी तिहां वसता नथी ॥ पणि धणी चपदेवता आश्री अधिष्ठ्या छइ ॥ तेह
नी अधिष्ठांततणी तिहां दस इंद्र छइ ते कहइ छइ ॥ सक्रात सोधर्मेंद्र इसाण देवलोकनइ इस विषइ मां मइं इंद्र ॥
इंद्र नाथ अधिकारथकी विमान कहइ छइ ॥ पारियाणिया ॥ देसांतर जाता मां आत्या जे नस दिसत विमान ॥ ॥ भेविका
तिहां नइ सो कारि । विमान ते लिखताना आसय ॥ परितिसा च्युतानो ॥ अनइनगर नइ आकार इनही ॥ पुस्तकाक्षर

विग्गइयानसुहनघीदोसरउ ॥ पालकादिविमानश्रनुक्रमइं ॥ सक्रादिकनइंजाणवां ॥ जावमाहिं सोमणस ॥ सिरिवच्छे ॥ नंदियावत्त
कामगाम ॥ पियगामे ॥ मणोरमे ॥ एहवा विमाननावीसीइं इंतउ प्रतिमादिकघकी घइए ॥ तेहरणं प्रतिमाकहइछइ ॥ पडिमाप्रति
ज्ञा ॥ दसदसदिहाडाहइ जेहनइ विषइ ॥ तेदसदसमिका ॥ दसदस कइंभोपनाईत्यर्थ ॥ पिहिलइ दस्तकइंदसदात्ति ॥ बीजइ वीसदा
ति ॥ इमजाव १०० दात्तिदमइदसकइं ॥ सर्वग्रसाढापो ॥ व स्यइं दात्ति ॥ पाणी आहारघई एकउ ॥ यथासुत्रनइं अनतिक्रमवइ ॥
जावमाहिं ॥ अहाअच्चं ॥ निर्युक्त्यादिकमां हिंकहिउं ते हनइं अनतिक्रमवइ ॥ अहातच्चं ॥ सत्यार्थनइं अनतिक्रमवइं ॥ अ

एगणं राति दिएसा तेणं अघछहेहिं तिरका यातहिं अहासुत्ता जाव आराहिता या विसवति दस
विहासंसार समावन्नगा जीवा पं ते पढमसमय एगिंदिता अपढमसमय एगिंदिया एवं जाव अ
पढमसमय पंचिंदिया दसविहा सव्वे जीवा पं तं पुढविकाइया जाव वणस्सइकाया बेइंदिया जा
व पंचिंदिया अणिंदिया अहवा दसविहा सव्व जीवा पं तं पढमसमयानेरतिया अपढमसमयने
रतिया जाव अपढमसमया देवा पढमसमया सिद्धा अपढमसमय सिद्धा वाससयाउयस्सणं पुरि
सस्स दस दसाउ पं तं

हामग्रं ॥ फोयोपसोमिकिलावनइं अनतिक्रमवइं ॥ अहाकप्पं ॥ आचारनइं अनतिक्रमवइं ॥ सम्यग्कारणाइं कायाइंकरी पणिमनो
रथमात्रइंनहीं ॥ फासिया ॥ तेविसुद्ध परिणामनइं पडिवजवइं ॥ पालिया ॥ तेछेहडालगिइं परिणामघया नथी ॥ सोहिया
या ॥ निरतीचार पणाइं करी अथवा सोभा वडावीत पुरइम यिंपणिं त्यागपअनुष्ठाननाकरयाथकी ॥ तीरिया ॥ पालियाहोवा
डीत प्रतिज्ञाकालरूप रि अनुष्ठानना करवाथकी ॥ कीट्टीया ॥ तेनामथकीत्यएहमाहिं एहवो एहवोकर्तव्यछइ ॥ तेमइंकी
धु ॥ आराहि ॥ पुर्वोक्तसर्वसंपदनइं मेलवइं ॥ सुत्र ॥ ३ ॥ प्रतिमानउ अभ्यासातसंसारक्षयनइं अर्थिइं संसोरिइं कीज
इ ॥ जीवनाणसंसारीजीवनुइं सर्वजीवकहइछइ ॥ पढम ॥ एकेंद्रीपणुं पाम्याजेहनइं पहिलउ समयवर्त्तिइंछइ ॥ तथा विरीनते
अप्रथम ॥ इमबेइंद्रीतेइंद्री चउइंद्री ॥ पंचेंद्रीकेदेवा ॥ अणिंदिया ॥ सिद्ध ॥ अनइं अपर्याप्त ॥ अनइंकेपायागपकीकेवली ॥ २६३

अथवाविस्तारिउंसरागकरइ थासघणीकरइ ॥ ७ ॥ वनारा ॥ ८ ॥ स्पर्शरथीइंसुनमइं जेराइंकरीनइश्रीनइंवाहालउनघाइ ॥ ८ ॥ लगाइंकहीनइंसरीरघरनु ॥ मु ॥ मुकुं ॥ तप्रतिइ ॥ मुद्दी ॥ लअकच्चाइ सउमघाइ तमुंमुष

दलीइं ... इकइछइ ॥ या ... ॥ आदर सहुआऊ पातकालनइं विषइ वर्त्तइछइ ... सुखसहित ...
आऊ बार अ पुरुषनहीं ॥ बीजीपरिपुर्वीक्रीडा त्रिआऊबालकइंकालरकाय एकपुरुषनुंसीवरसनुं आऊ मुकुं ॥ ...
कुंमारपणानइं विषइ ॥ दसदसकानी ... ॥ तेनलपी ॥ दस ॥ दससंख्यांनी ॥ दसाऊ ॥ दसवर्षप्रमाणानी अ
... ॥ ईहांत्यासादसनुं आऊपुं दीऊ ॥ तेदसठाणमाटइ ॥ दसवरसप्रमाणानी एकअवस्था ॥ एहवी दसअवस्थाइं ॥
सोवरसइंमिलतुं दीसइ ॥ तिणकारणथकी अनाघा ॥ आउखापुर्णनादससागमीछइ ॥ बाला ॥ ... अवस्थातेइ प्र
थमदसा तेमांहिं सुखदुखघणुं नजाणइ ॥ बीजी कीडादसा तेमांहिं घणोरामतिरमइ ॥ २ ॥ त्रीजी दसा तेमंद लिसिइ
... बुद्धिकार्थ ... इवाअसमर्थ ॥ अनइं लागलाग विवासमघीऊअवस्थानइं विषइ तेमंदा ॥ ३ ॥ चउथीदसानुंना

बाला किड्डा मंदा बला पन्ना हायणी पवंचा पब्भारा मुम्मुही सायणी तहा दसविहा तणव
णस्सतिकाइया पं तं मुले कंदे खंधे तया साले पवाले पत्ते पुप्फे फले बीए ॥ सव्वाउ विज्जाहरसेढीउ दसदसजो
यणाइं विक्खंभेणं पन्नत्ता सव्वाउ विणं आभिउगसेढीउ दसदसजोयणाइं विक्खंभेणं पन्नत्ता

तनवमीदसा ॥ ९ ॥ सायणी ॥ दसमइंसूइरिहिइं हीणदीनस्वरनीसरिइं ॥ १० ॥ अनंतरपुरुषदसाकहीं ॥ तेपुरुषनउ नइंवन
स्पतीनउ सरीखोकहिउछइ ॥ तेतणे प्रकारांतरिइं वनस्पतीनीदसाकहइछइ ॥ दसविहातणव ॥ बादरवनस्पतीपतिसो
दीमनहीं ॥ मुलातजिटा ॥ कंदतस्कंधहेठलि ॥ जावमाहिं ॥ स्कंध ॥ छीवा ॥ सोषा ॥ प्रवाल तेअंकुर ॥ पत्र पुष्पफलबीज ॥ दसवि
णनाअधिकारनेलणं ॥ आनंककहइबइ ॥ सव्वाविणं ॥ सघलादीर्घ तिताढ्यनी ॥ विद्याधर विद्याधरनानगरनी श्रेणि ॥ दीर्घ
वेताढ्य २५ जोयणनाऊंचा छइ ॥ पंचासजोयणनामुलिपुहुला ॥ धरणीतलथीदसजोयणलिइं ॥ दसजोयणनीपुहुलीद
क्षिणश्रेणिमांनकुरु नगरनीगमानिथिलि छइ ॥ दक्षिणनी गमा ५० नगर ॥ उत्तरनी गमा ६० नगर ॥ ... श्रेणिनइं ...
आश्रीपघकी विपरीत ॥ अनइं विजयमइं विषइं पंचावनपंचावनैननगर छइं ॥ विद्याधरनी श्रेणिउपरिदस ... श्रेणि
... ॥ तिहांदसजोयणनी ... गमा ... अभिओगी ... छइ ॥ आभिओगी ॥ आ जाइं विचरइ ॥ ते स ...

मचलानु ॥ ते ... ॥ ४ ॥ पांचमीदसा तेपन्ना तेप्रज्ञा ॥ बोधिनामेनी पुजावितानी अनइं कुटंबवर्धमतिवानीबुद्धि छइ ॥ ५ ॥ हायणी ॥ इंद्रीकाइपकरीसाघाइ ते ... ॥ ६ ॥ ... प्रपंचावलषा दिकनइं ॥ प्रपंचा ॥ ७ ॥ प्रगट करइ ॥

दिकसंबधीया॥जेलोकपाल।सोम।यम।वरुण।वेसमण॥तेहनाविंनर तेआणीआजीया देवता तेहनं।श्रेणि॥
तेश्रेणिउपरिहं पाव जोयण पर्वतऊंचो छइ॥दससजोयणघुकुलो॥आलो उगो कातरे णि तउ देवतानाआवास छइ
तेहणाआवासनउजविसघकहइछइ॥पुर्वदेवतानाआवासकह्या॥तादेवतातो महर्द्धिक छइ॥तेलगा।देवतानुनइं
रुचिनुंमहर्द्धिकपणुं देषाडवा।तेजोलेस्या का दवानाप्रकार कहइछइ॥दसमइ प्रकारिंइं॥सहे०॥सहित॥तयसा०॥
णा वेछगा विमाणाणं दसजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पस्सत्ता दस दिवाणोहिं सह तेयसा ला
संकुछा॥तं।कतितहारुवंसमणंवा माहणंवा अच्चासातेछा सेय अच्चासा ति तस्समाणो
परिकुविते तस्सतेतं निसिरछा सेतंपरियाविति सेतंपरितावित्ता तामेवसह तेतंसा ला
संकुछा।कतितहारुवंसमणंवा माहणंवा अच्चासादेछा सेय अच्चासा ति तेसमणा देव
परिकुविते तस्सतेतंनिसिरछा सेतंपरितावितिसेतं २ तामेवसह तेतसा लासंकुछा॥२
कतितहारुवंसमणंवा माहणंवा अच्चासातेछा सेयअच्चासा ति तस्समाणो परिकुविए देवे
तेजोलेस्याइं करीसहितवर्त्ततानइं॥एहवाअनार्यनिइं॥लासं०॥रापनीपरिइंराष॥कुछा॥करइ॥श्रमणविना
स्पइंईत्पर्थः॥कोइएकअनार्यकर्मकारी।पापात्मा॥तहारुवं॥तेजोलेस्यावेतनइं॥समणं॥तपस्वीनइं।माहणं०॥
महणउमहणउमविणासउएहवानापरुपकनइं॥अच्चासाएछा०॥अतंतआसातना करइ॥सेय॥तेश्रमण॥आसी
आसादिए॥आसात्योछतउ॥परिकुविए॥सर्वथाकोपिउछतउ॥तस्स॥उपसर्गनाकरनारउपरिइं॥तयंनि
सिरछा॥तेजोलेस्याकाढइ॥से॥श्रमण।ते॥उपसर्गनाकरनारनइं॥परिता॥पीडइं॥तेहनइंपीडीनइं॥तामेव॥
तेजोलेस्याइंपीड्यानइं॥सतेयसा॥सहतेयसा॥तेजोलेस्यायुक्तसाधुना॥तेहुंअनाबलवंतपणाथकी॥लासंकुछा॥
वालीसस्मकरइ॥१॥अच्चासाइए॥तेसाधुआसात्योथकउ॥तिवारपछीतेहनउपक्षपातीदेवताकोपइ॥तादेवताऊ
पसर्गनाकरनारनइंसस्मकरइ॥२॥ २६४

मुनिदेवताबेऊकोपिइं॥उहउपडिमा॥एबेऊरूपनिइंदेव॥उपसर्गकेरनाकरणहारनइंसस्मकरवानीप्रतिज्ञाकी
धी॥उजेश्रम्हेबालवीऊ॥३॥चउथइसाधुकाप्योऊंतोतेजोलेस्यामुकइं॥पोतमइंदेवतामुकइं॥छयइंवेऊमुंकइ
॥केवलएविसष॥ऊपसर्गनाकरनारनइंआगिइंदाधनीपरिइंतेजोलेस्यामुंक्याछीफाडलानीसरिइं॥तेफाड
वितपरिकुवितउहतोपडिन्ना तस्सतेयंनिसिरछा सेतंपरितावेति तेतंपरितावित्ता ता
मेवसह तयसा लासंकुछा ३ कितितहारुवं समणं वा माहणं वा अच्चासादेछा सेयआ
च्चासा ति ते परिकुविए तस्स तेयं निसिरछा तत्थ फोडा संमुछंति फोडा लिछंति ते फोडा
लिन्ना समाणा तामेवसह ततसा लासंकुछा [illegible] ४ कतितहारुवंसमणंवा माह
णंवा अच्चासातेछा सेय अच्चासा ति ते देव परिकुविते तस्स तेतं निसिरछा तत्थ फोडा त
देवजावंतामेवसह ततसा ला संकुछा ५ कतितहारुवंसमणंवा माहणंवा अच्चासाएछा से
त अच्चासा ति ते परिकुविए देवय परिकुविए तेउहाता पडिन्ना तस्स तेतं निसिरछा तत्थ
फोडासमुछंति सेतंतं देवजाव लासंकुछा ६ कतितहारुवं समणंवा माहणंवा अच्चासा तेछा
सेय अच्चासा ति ते परिकुविए तस्सातयं निसिरछा तत्थ फोडा समुछंति ते फोडा लिछंति
ते फोडा लिन्ना समाणा तामेवसह तयसा लासंकुछा॥७॥ए
तत्थपुलासमुछंति तेपुला लिछंति तेपुला लिन्नासमाणा तामेवसह तयसा लासंकुछा॥७॥ए
ते ति न्नि आलावगा नाणियव्वा ८ लासंकुछा॥निपातइ॥६॥सातमइ।आवमइ॥नवमइंतिमइजि॥नवर॥तेजोलेस्या
घीफाडलानीसरिइं॥तेफाडलाफुटइं॥तिवारपछीतेहनइं॥फोलासमुछंति॥नान्हकेडीफाडीनीसरिइं॥तेपुलाफुटावता॥
नाभव॥तेउपसर्गनाकरणहारनइं॥सतियसा०॥तेजोलेस्यावेतनइंपणिसस्मकरइ॥एनवमुस्थानकसाधुदेवतेआश्रीजाणवो॥

लाफुटा
बता॥ते
उपसर्ग
नाकरना
रनइं॥स
तेयसा०॥
तेजोले
स्यासहि
तकुइ॥त
उद्दिपणि
श्रमणदे
वनीतेजो
लस्याना
बलवंत
पणाथकी
॥उपसर्ग
नाकरण
हारनीत
जोलेस्या
हणाइ।
तेसणो

दसमुं तवीतरागश्राम्रो ॥ श्रद्धासाई ॥ उपसर्गकिरतो ॥ तिय नि ॥ गोसालानी परिहिं ॥ तेजोलेस्या का ढई ॥ तेजोलेस्या श्रमणनइ विषइ काढी छती ॥ महावीरनी परिहिं ॥ नाहं कमइ ॥ थोडुं सुंश्राक्रमइ नही ॥ ना पहुमइ ॥ प्रकर्ष समर्थ नही ॥ केवल ॥ आविं ॥ आविं ॥ ते गीउ फरी जउ पाछ रिया ॥ तिवार पछी जिम राग मांची थुरि मोडी ॥ यउ पाछ फरा देतो त । प्रदक्षिणा प्रदक्षिणा करीनइ ॥ उर्द्ध ॥ ऊर्द्ध दिशिइं ॥ विहासं ॥ आकाशिं ॥ उप्पयंती ॥ ऊपनइं ऊपतीनइं ॥ सेणं ॥ तेः ॥ ति तेजोलेस्या तउ । ते श्रमणना शरीर नासमी पछइ का ॥ पडिहए ॥ श्रमणनइ महातपइं करी तेजोलेस्या पाछी हणी छती ॥ पडिनि ॥ पाछी जईनइं ॥ तामेव ॥ उपसर्गनाकरनारना सरीरनइं ॥ मणुदहमाणे ॥

केति तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेमाणे तेतं निसिरेज्जा । सेतं तत्थ णो कम्मइ णो पकमइ अंचि २ करेंति करेत्ता आयाहिणं पयाहिणं करेति २ त्ता उड्ढं वेहासं उप्पतेति २ त्ता से णं ततो पडिहते पडिनियत्ति २ त्ता तामेव सरीरगं अणुदहमाणे २ सह तेयसा भासं कुज्जा १ जहा वा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवे तेए दस अच्छेरगा पं० तं० उवसग्ग गब्भहरणं २ इत्थी तित्थं ३ अभाविया परिसा ४ कण्हस्स अवरकंका ५ उत्तरणं चंदसूराणं ६ हरिवंसकुलुप्पत्ती ७ चमरुप्पातो त ८ अट्ठसतसिद्धा ९ असंजएसु पूआ दस वि अणंतेण कालेणं ॥ १० ॥ इमीसे णं

व रि त्र धुरि घी मं पला नुं वारिइं क हिउं ॥ ७ ॥ देवतानी कोडि छतइं ॥ सगवंत महामहिमावंतनइं उपसर्ग छे ॥ स्वयण ॥ तथा केवली पणइं पमहीं ॥ १ ॥ गर्भहरणं ॥ २ ॥ इत्थीतित्थं ॥ ३ ॥ श्रीमहावीरनी प्रथम देसनाइं कुणइ व्रत पडिवज्यो नहीं ॥ ४ ॥ कृष्ण अमरकंकाइं गया ॥ ५ ॥ चंद्रमा सूर्य मूल गइं विमानइं वीर वांदवा आव्या ॥ ६ ॥ हरिवर्षक्षेत्रथी देवता इं युगल आण्यं । तेहथी हरिवंस कुल ॥ ७ ॥ चमरेंद्र सुधर्मि देवलोकिं गया ॥ ८ ॥ उत्कृष्टी अवगाहनाना एकइं समइं एकसो आठ सीध्या ॥ ९ ॥ आश्रव संयतीनी पूजा विस्तरी ए अश्चर्य ॥ १० ॥ ए अनंत काल ॥ इं आश्रव संयमीनइ विषइ हवा ॥ अनंतर सूत्रइं चमर उत्पातक हिउ ॥ ति तेह रत्नप्रभा पृथ्वीया ॥ तेह रत्नप्रभानी वक्तव्यता कहइ छइ ॥

२६५

एकरुप्रमाण लांबी पिहुलो । एक लाख असी सहस्र जोडी ॥ ऊपरम ॥ अनइं हेठली थइनइं षर कांड । पंकबहुल कांड ॥ अबहुल कांड नामइं आठ क्रमइं लाख सहस्र जोयण नउ पिहुलो ॥ तउ पली बुरासी सहस्र जोयण नउ बिलो ॥ हेठिलु असी सहस्र जोयणनउ जाडउ बिभाग छइ ॥ इमीसेणं ॥ एप्रत्यक्ष ढुंकडी ॥ रयण ॥ रत्ननी प्रभाय हनइ विषइं छइ ॥ अथवा रत्नइ करीनइं ॥ सा सहछइ ते रत्नप्रभा पृथ्वीना य षर कांड ॥ तेहस्या ल विछिरत्नमइ छइ ॥ तेह खरकांड सोल भाग तिहां । पहिलउ । भाग रत्नकांड नामइं समुच्चइ रत्नमय ॥ तेह दसमइं जोयणनी जाडउ अनइं सेषतिरत्न ॥

रयणप्पभाए पुढवीए रयणे कंडे दस जोयणसयाइं बाहल्लेणं पन्नत्ते । इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए वइरे कंडे दस जोयणसयाइं बाहल्लेणं पन्नत्ते एवं वेरुलिए लोहितक्खे मसारगल्ले हंसगब्भे पुलए सोगंधिए जोतिरसे अंजणे अंजणपुलए रयते जातरूवे अंके फलिहे रिट्ठे जहा रयणे तहा सोलसविहा णेयव्वा । सव्वे वि णं दीवसमुद्दा दस जोयणसताइं उव्वेहेणं पन्नत्ता । सव्वे वि णं महादहा दस जोयणाइं उव्वेहेणं पन्नत्ता । सव्वे वि णं सलिलकुंडा दस जोयणाइं उव्वेहेणं पन्नत्ता । सीतासीतोता णं महानतीतो मुहमूले दसदस जोयणाइं उव्वेहेणं पन्नत्ता । -

मयकु रुइ नामइं । तेह नामसुत्र १५ तिमइ जिरत्नकांडनी परिइं जाणवां । एवं पुर्वालि ला पइं सर्ववांचवां ॥ व ॥ विडुर्यकांड ॥ रयण ॥ रत्नपुं जायक वि ॥ सालु पणि । ए बिहुरत्न कपणि तेहवइ बर्लि ॥ रत्नप्रभाना प्रस्ताव थकी रत्नप्रभा नइ आश्रम रिइ । द्वीपानी हेवा छइ ॥ तेहनां तेहनी वक्तव्यता चारि सुत्रइं कहइ छइ ॥ उवेहेणं ॥ ऊंडपणइं ॥ जेइ सो द्वीपनइं ऊंडपणं कहि ॥ ऊंडपणइ कहइ छइ ॥ अधो दिसि सहस्र जो जिनलगिं द्वीपस कहवाइं ॥ अनइं जंबुद्वीपनइं विषइं ते पश्चिमविदेहि नइ विषइं जगतीनी दिसिइं सहस्र जोयण ऊंडा छइ ॥ अनइं महाद्रहा ते पद्मद्रहादिक नइ विषइं पद्मादिक । सलिलकुंड ते गंगा नदीना प्रपातकुंड आं नइं । ऊपजवानां कुंड । मुहमूले ॥ जिहां समुद्रमांहि पइसइ छइ ॥ तिहां द्वीपसमुद्र ना अधिकार थकी ॥ तिहां ना वर्तनि सूत्र लिषि कहइ छइ ॥

मंडलेः॰ मारग॥ ईहांसुर्यना एकसउचउरासीमांडलाछइ॥ चंद्रमाना पंनर॥ नक्षत्रनाआठ॥ तमांडलुं ष्पष्टतानाविमानतु ल्यपुद्गलो॥ तिहां जंबुद्वीपमाहिंएकसोऐसीओगणमा हिंपांसठिमांडलांसुर्यनाछइ॥ अनइ पांच चंद्रमानां॥ लवणक्षेत्र ना॥ लवणमाहिं त्रिणिसइं त्रीसओगणमाहिंसुर्यनामांडला ११९॥ चंद्रमा॥१०॥ नक्षत्रना॥६॥ एमाहिंसर्वबाहिरि लुंमांडलुं तमेरुथकी ४५ सहस्र त्रिणिसइं ओगणत्रीस छइ॥ सर्वअभ्यंतरनुंमांडलुंत॥ बत्रयालीससहस्रआठसइं नइंवीसजोयण छइ॥ इमकत्रिकानक्षत्रत॥ सव्वबाहि॰ सर्वबाहिरिलाचंद्रमानांमाहिलाथकी दसमइमांडलइ सर्वअभ्यंतर ७॥ ५ चंद्रमानामांडलाथकी छठइमांडलइं कृतिकानक्षत्र॥ चरिचरइ॰॥ अमणाआचरइ॥ अनुराधनक्षत्र॥ सर्वअभ्यंतर रना॥ चंद्रमांडलथकीदसमइ॥ चंद्रमंडलइ॥ अनइंसर्वबाह्यथकी छठइ अमणाआचरइ॥ विद्धिकराइं॰ एनक्षमइंविषइ

कत्तियाणक्खत्ते सव्वबाहिराओ मंडलाओ दसमे मंडले चारं चरति अणुराहा णक्खत्ते सव्वब्भं तराओ मंडलाओ दसमे मंडले चारं चरति दस णक्खत्ता णाणस्स विद्धिकरा पण्णत्ता तंजहा मिग सिर मद्दा पुस्सो तिन्नि य पुव्वाइं मूलमस्सेसा हत्थो चित्ता य तहा दसवुद्धिकराइं णाणस्स॥१॥ चउप्प यथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं दस जाइकुलकोडिजोणिपमुहसतसहस्सा पण्णत्ता उरप रिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं दस जातिकुलकोडिजोणिपमुहसतसहस्सा पण्णत्ता

चंद्रछतइं॥ नाणस्स॰॥ श्रुतज्ञाननागइंइसमुद्र माहि जिवा रिइंकीजइं तिवारिइं ज्ञानसमृद्धि पामइं॥ तनिर्विघ्नपणाइंलगाइं॥ सं लाइं॥ वषणाइं॥ धराइं॥ तथाविद्धिकायनइंविषइं॥ कालतिसुमहुपनुंकारण छइ॥ एयनाणीकालत हायाएसमादिकना हेतुछइ॥ यदाह॥ उदयरक्खयरक्खउवसमो॥ सम्मा जंचकम्मुणोत्त णिया॥ दव्वं खेत्तं कालं॥ भावं च भावं च संपप्प॥१॥ कर्मनउउदय क्षायापसमक्षयसम॥ जिकहाछइ ततीर्थंकरिइं॥ द्रव्यक्षेत्रकालभावनइंप्यामिइंघातीकह्याछइ॥ तनलामुकुलइंकुमुकुलइं॥ कार्यकरतां जीवनइं सुषदुष करइ॥ इमजिनमतनइंजाणइं मानवुं॥ द्रीपनाअधिकारथकी॥ जीवचारीजीवनीवक्तव्यताकहइंछइ॥ च्या रपगाछइ यहनइं तचउपद॥ थलिइंचालइ तथलचर॥ तहउअंपविंद्रीतिर्यग्जायानिकतहनीदस॥ जाई॰॥ पंचेंद्रीनीजातिमइ विषइं॥ २६६ जिकुलकोडि॰॥ जातिविषय नालखीनोसइं तहनीजानिप्रमुषकु त्पतिस्थानक नाहारनासउसहश्रातलाषतप्रहूझा॥ क्वि

लीइंकिह्यालिमछंगणतावेइदियनुंउत्पत्तिस्थानातत्यानिकहीइं॥ अनइंकुलतत्तिहां एकयोनमनाऊपंजतो बिइंद्री नाअनेक आकारप्रसिद्ध॥ हिइकरीवालइंतकुरपरिसर्प॥ जीवमइंविषइं दसवातनुंकहीनइं॥ अजीवस्वरूप पुद्गलनुंदसगाणुंकहइछ इं॥ अथवाजातियानिकुलादि विसेष॥ जीवनइंकर्मनासंबंधथकीथाइ॥ तसणं त्रिकालनावीदसथाणइंकरीकर्मचिण वादिकहइछइ॥ जीवा॰॥ आऊमाधर्मसहितपणिसिद्धनहीं॥ इतिभाव॰॥ दसठाणानिवत्तिए॰॥ प्रथमसमयपइणएकेंद्रीआ दिकपणाइंकरीबंधव्यागपणाइं॥ नोपजव्यां॥ पुद्गल॰॥ कर्म॥ वर्गणारूप॥ पापतथाकर्मअथवा घाती अघाती सर्वकर्म पणाइंकरी॥ चिणिंसु॰॥ चिणपां चिणइछइ॥ अनइंचिणस्पइं एणाइकरीनइं॥ आत्मानुं त्रिकालनइंविषइं॥ एतावपएणकहि

जीवाणं दसट्ठाणनिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा३ पढमसमयएगिंदियनिव्वत्ति ए जाव फासिंदियनिव्वत्तिए एवं चिण उवचिण बंध उदीर वेय तह णिज्जरा चेव दसपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता दसपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता दससमयट्ठितीता पोग्गला अ णंता पण्णत्ता दसगुणकालगा पोग्गला अणंता पन्नत्ता एवं वन्नेहिं गंधेहिं रसेहिं फासेहिं

ऊ॥ पढमसमय॰॥ प्रथमसमयउहनइंएकेंद्रीपणामउपजइछइ॥ तणाइंकरी॥ निव्वत्तिए॰॥ कर्मपणाइंअथ्या॥ इमातदथावि परीततिअप्रथमसमयनातथाकेंद्रीपणाइंकरी॥ पुद्गलग्रह्या॥ इमबिबिरति॥ बिइंद्री॥ तइंद्री॥ चउरिंद्री॥ पंचेंद्री कहिवा॥ ए वंचिण॰॥ जिमचणनुं त्रिणिकालइंग्रहिउ॥ तिमऊपचिण॥ बंध॥ उदीरणा॥ वेदना॥ निर्जरा॥ कहिवां॥ तिहांचिणनुंतकमा यपरिणाम्यानइंकर्मपुद्गलनुंग्रहिवु॥ उपचिणनुंतयह्यापुद्गलनइं ज्ञानावरणादिपणाइंसीचवु॥ बांधवुंतनिकाचवुं॥ उदीरवुं॰॥ तउदइंनइंअबसाविवउं॥ वेदवुंतलाग विवुं॥ निर्जरातिजीवप्रदेसथकीफाटकवुं॥ पुद्गलनाअधिकारथ की वलीकहइछइ॥ दसप्रदेसछइ जेहमइविषइं त॥ दसप्रदेसक तदसपरमाणुवीनउबंधएसमुद्दायइं॥ द्रव्य पंकीपुद्गलनीखिंनां॥ दसआकासनाप्रदेसनइंविषइं॥ एअवगाहा ततदसप्रदेसावगाढ॥ एहथकी॥ दसमयथि तिछइ एहनी तदससमय॥ थितिकएकालथकीएकगुणकालनीआपथाइं॥ तिथकी दसगुणउकालावर्णछइ एहनगात

Digitized with financial assistance from the Government of Maharashtra on 11 June. 2017

१ग

दस गुण कालक ॥ एमञ्जान राज्यार वर्ण ॥ वगंध ॥ पो वरस ॥ आव फरासिइं थिास्यपा गुरुल ॥ अनंता कहिवाए दस तणी
कहइछइ ॥ एवमित्यादि जावदसगुणालुरका पुग्गला अनंता पसत्ता ॥ एणाइसूत्र कइला वणी ॥ पुद्गलनी चिंतानइं विषइं
॥ बीसूमो आलावादिषाड्यो ॥ ईहांअं तिअनंत ॥ सबनइं यदि वइ अनइ व्यहादिक सइ करी अंत मांगलिक कहिउं ॥ ति
मसर्क अध्ययनवइं अंति ॥ अनंत अष्टक हीउछइ ॥ तिसर्वअध्ययननइं अंति मांगलिक जाणवुं ॥ तइम ॥ अनुगमद्वारनउ

दसगुणलुरका पोग्गला अणंता पसत्ता सम्मत्तं वट्ठाणं मिति दसमं वाणं सम्मत्तं ॥ दसम
यणं संमत्तं १० समाप्तं ठाणांगसूत्रं ॥ श्री सांगमहपुरी घई प्रति

ग्रंथाग्रंथ २७५०

श्रीबीदेवसानापर ७७

श्रीप्रेमजीउध्वाणीईस्त्क भंडारेंकस्या

अंसत्तुत ॥ सूत्रस्पर्शक निर्युक्ति द्वार पुर्ककीधउं ॥ सर्व अध्ययन नइं वि षइ पणि सघ द्वार प्रथमाध्ययननी परिइं जाणवा
॥ इति श्री भद्दत्तयदेवसूरि विरचित स्थानाख्य तृतीयांग विवरण दससथान कारव्यं दसमम ध्ययनं समाप्तं संपूर्ण ॥ ठ
नमस्कार हु श्रीवर्द्धमानस्वामी तीर्थनाथनइं ॥ नमस्कार हुऊं अतंग वेरीनासमुहनामथणहारी श्रीपार्श्वनाथनइं ॥ नमस्कार
हु प्रवचननाप्रति बाधणहारि श्री प्रवचनदेवीइं ॥ इति श्री ठाणांगनावालिकि ग्रंथः समाप्तः ॥ संपूर्ण ॥ ठ ॥ ठ ॥ ठ
संवत१६ [illegible] वर्षिइ मागसुरिसुदि ५ लाभ लषियतं ऋषि दवजी आत्मार्थि पठिनार्थि ऋषि दवजी ॥
यादृशं पुस्तके दृष्ट्वा ॥ तादृसं लिषितं [illegible] ॥ यदी सुद्धमसुद्धं वा ॥ मम दोषो न दीयते ॥ सुभं भवतु कल्याणमस्तुं

BHA… MEMORIAL
…सल्लाईस्वाल्पास्मारक